तौरेत

असल इबरानी मतन से नया उर्दू तरजुमा

उर्दू जियो वरझ़न

The Pentateuch in Modern Urdu
Translated from the Original Hebrew
Urdu Geo Version (Hindi script)

© 2021 Urdu Geo Version
www.urdugeoversion.com

This work is licensed under a Creative Commons Attribution - NonCommercial - NoDerivatives 4.0 International Public License.
https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/legalcode

For permissions & requests regarding printing & further formats contact info@urdugeoversion.com.

तौरेत

पैदाइश	**1**	**गिनती**	**155**
ख़ुरूज	**64**	**इस्तिसना**	**201**
अहबार	**118**		

हरफ़े-आग़ाज़

अज़ीज़ क़ारी! आपके हाथ में किताबे-मुक़द्दस का नया उर्दू तरजुमा है। यह इलाही किताब इनसान के लिए अल्लाह तआला का कलाम है। इसमें इनसान के साथ अल्लाह की मुहब्बत और उसके लिए उस की मरज़ी और मनशा का इज़हार है।

किताबे-मुक़द्दस पुराने और नए अहदनामे का मजमुआ है। पुराना अहदनामा तौरेत, तारीख़ी सहायफ़, हिकमत और ज़बूर के सहायफ़, और अंबिया के सहायफ़ पर मुश्तमिल है। नया अहदनामा इंजीले-मुक़द्दस का पाक कलाम है।

पुराने अहदनामे की असल ज़बान इबरानी और अरामी और नए अहदनामे की यूनानी है। ज़ेरे-नज़र मतन इन ज़बानों का बराहे-रास्त तरजुमा है। मुतरजिम ने हर मुमकिन कोशिश की है कि असल ज़बानों का सहीह सहीह मफ़हूम अदा करे।

पाक कलाम के तमाम मुतरजिमीन को दो सवालों का सामना है : पहला यह कि असल मतन का सहीह सहीह तरजुमा किया जाए। दूसरा यह कि जिस ज़बान में तरजुमा करना मक़सूद हो उस की ख़ूबसूरती और चाशनी भी बरक़रार रहे और पाक मतन के साथ वफ़ादारी भी मुतअस्सिर न हो। चुनाँचे हर मुतरजिम को फ़ैसला करना होता है कि कहाँतक वुह लफ़्ज़ बलफ़्ज़ तरजुमा करे और कहाँतक उर्दू ज़बान की सेहत, ख़ूबसूरती और चाशनी को मद्दे-नज़र रखते हुए क़दरे आज़ादाना तरजुमा करे। मुख़्तलिफ़ तरजुमों में जो बाज़ औक़ात थोड़ा-बहत फ़रक़ नज़र आता है उसका यही सबब है कि एक मुतरजिम असल अलफ़ाज़ का ज़्यादा पाबंद रहा है जबकि दूसरे ने मफ़हूम को अदा करने में उर्दू ज़बान की रिआयत करके क़दरे आज़ाद तरीक़े से मतलब को अदा करने की कोशिश की है। इस तरजुमे में जहाँ तक हो सका असल ज़बान के क़रीब रहने की कोशिश की गई है। याद रहे कि सुर्ख़ियाँ और उनवानात मतन का हिस्सा नहीं हैं। उनको महज़ क़ारी की सहूलत की ख़ातिर दिया गया है।

चूँकि असल ज़बानों में अंबिया के लिए इज़्ज़त के वुह अलक़ाब इस्तेमाल नहीं किए गए जिनका आज-कल रिवाज है, इसलिए इलहामी मतन के एहतराम को मलहूज़े-ख़ातिर रखते हुए तरजुमे में अलक़ाब का इज़ाफ़ा करने से गुरेज़ किया गया है।

किताबे-मुक़द्दस में मज़कूर जवाहरात का तरजुमा जदीद साइंसी तहक़ीक़ात के मुताबिक़ किया गया है।

चूँकि वक़्त के साथ साथ नाप-तोल की मिक़दारें क़दरे बदल गईं इसलिए तरजुमे में उनकी अदायगी में ख़ास मुश्किल पेश आई।

जहाँ रूह का लफ़्ज़ सीग़ाए-मुज़क्कर में अदा किया गया है वहाँउससे मुराद रूहुल-क़ुद्स यानी ख़ुदा का रूह है। जब वुह और मानों में मुस्तामल है तब मामूल के मुताबिक़ सीग़ाए-मुअन्नस इस्तेमाल हुआ है।

इंजीले-मुक़द्दस में बपतिस्मा देने का लुग़वी मतलब ग़ोता देना है। जिस शख़्स को बपतिस्मा दिया जाता है उसे पानी में ग़ोता दिया जाता है।

बारी तआला के फ़ज़्ल से इंजीले-मुक़द्दस के कई उर्दू तरजुमे दस्तयाब हैं। इन सबका मक़सद यही है कि असल ज़बान का मफ़हूम अदा किया जाए। इनका आपस में मुक़ाबला नहीं है बल्कि मुख़्तलिफ़ तरजुमों का एक दूसरे के साथ मुवाज़ना करने से असली ज़बान के मफ़हूम की गहराई और वुसअत सामने आती है और यों मुख़्तलिफ़ तरजुमे मिलकर कलामे-मुक़द्दस की पूरी तफ़्हीम में मुअविन साबित होते हैं।

अल्लाह करे कि यह तरजुमा भी उसके ज़िंदा कलाम का मतलब और मक़सद और उस की वुसअत और गहराई को ज़्यादा सफ़ाई से समझने में मदद का बाइस बने।

नाशिरीन

पैदाइश

दुनिया की तख़लीक़ का पहला दिन : रौशनी

1 इब्तिदा में अल्लाह ने आसमान और
ज़मीन को बनाया। 2अभी तक ज़मीन
वीरान और ख़ाली थी। वह गहरे पानी से ढकी हुई
थी जिसके ऊपर अंधेरा ही अंधेरा था। अल्लाह
का रूह पानी के ऊपर मँडला रहा था।

3फिर अल्लाह ने कहा, "रौशनी हो जाए" तो
रौशनी पैदा हो गई। 4अल्लाह ने देखा कि रौशनी
अच्छी है, और उसने रौशनी को तारीकी से अलग
कर दिया। 5अल्लाह ने रौशनी को दिन का नाम
दिया और तारीकी को रात का। शाम हुई, फिर
सुबह। यों पहला दिन गुज़र गया।

दूसरा दिन : आसमान

6अल्लाह ने कहा, "पानी के दरमियान एक
ऐसा गुंबद पैदा हो जाए जिससे निचला पानी
ऊपर के पानी से अलग हो जाए।" 7ऐसा ही
हुआ। अल्लाह ने एक ऐसा गुंबद बनाया जिससे
निचला पानी ऊपर के पानी से अलग हो गया।
8अल्लाह ने गुंबद को आसमान का नाम दिया।
शाम हुई, फिर सुबह। यों दूसरा दिन गुज़र गया।

तीसरा दिन : ख़ुश्क ज़मीन और पौदे

9अल्लाह ने कहा, "जो पानी आसमान के
नीचे है वह एक जगह जमा हो जाए ताकि दूसरी
तरफ़ ख़ुश्क जगह नज़र आए।" ऐसा ही हुआ।
10अल्लाह ने ख़ुश्क जगह को ज़मीन का नाम
दिया और जमाशुदा पानी को समुंदर का। और
अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। 11फिर उसने
कहा, "ज़मीन हरियावल पैदा करे, ऐसे पौदे जो
बीज रखते हों और ऐसे दरख़्त जिनके फल अपनी
अपनी क़िस्म के बीज रखते हों।" ऐसा ही हुआ।
12ज़मीन ने हरियावल पैदा की, ऐसे पौदे जो
अपनी अपनी क़िस्म के बीज रखते और ऐसे
दरख़्त जिनके फल अपनी अपनी क़िस्म के बीज
रखते थे। अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है।
13शाम हुई, फिर सुबह। यों तीसरा दिन गुज़र
गया।

चौथा दिन : सूरज, चाँद और सितारे

14अल्लाह ने कहा, "आसमान पर रौश-
नियाँ पैदा हो जाएँ ताकि दिन और रात में
इम्तियाज़ हो और इसी तरह मुख़्तलिफ़ मौसमों,
दिनों और सालों में भी। 15आसमान की यह
रौशनियाँ दुनिया को रौशन करें।" ऐसा ही हुआ।
16अल्लाह ने दो बड़ी रौशनियाँ बनाईं, सूरज जो
बड़ा था दिन पर हुकूमत करने को और चाँद जो
छोटा था रात पर। इनके अलावा उसने सितारों
को भी बनाया। 17उसने उन्हें आसमान पर रखा
ताकि वह दुनिया को रौशन करें, 18दिन और
रात पर हुकूमत करें और रौशनी और तारीकी
में इम्तियाज़ पैदा करें। अल्लाह ने देखा कि यह
अच्छा है। 19शाम हुई, फिर सुबह। यों चौथा दिन
गुज़र गया।

पाँचवाँ दिन : पानी और हवा के जानदार

20अल्लाह ने कहा, “पानी आबी जानदारों
से भर जाए और फ़िज़ा में परिंदे उड़ते फिरें।”
21अल्लाह ने बड़े बड़े समुंदरी जानवर बनाए,
पानी की तमाम दीगर मख़लूक़ात और हर क़िस्म
के पर रखनेवाले जानदार भी बनाए। अल्लाह
ने देखा कि यह अच्छा है। 22उसने उन्हें बरकत
दी और कहा, “फलो-फूलो और तादाद में बढ़ते
जाओ। समुंदर तुमसे भर जाए। इसी तरह परिंदे
ज़मीन पर तादाद में बढ़ जाएँ।” 23शाम हुई, फिर
सुबह। यों पाँचवाँ दिन गुज़र गया।

छटा दिन : ज़मीन पर चलनेवाले जानवर और इनसान

24अल्लाह ने कहा, “ज़मीन हर क़िस्म के
जानदार पैदा करे : मवेशी, रेंगनेवाले और जंगली
जानवर।” ऐसा ही हुआ। 25अल्लाह ने हर क़िस्म
के मवेशी, रेंगनेवाले और जंगली जानवर बनाए।
उसने देखा कि यह अच्छा है।

26अल्लाह ने कहा, “आओ अब हम इनसान
को अपनी सूरत पर बनाएँ, वह हमसे मुशाबहत
रखे। वह तमाम जानवरों पर हुकूमत करे, समुंदर
की मछलियों पर, हवा के परिंदों पर, मवेशियों
पर, जंगली जानवरों पर और ज़मीन पर के
तमाम रेंगनेवाले जानदारों पर।” 27यों अल्लाह
ने इनसान को अपनी सूरत पर बनाया, अल्लाह
की सूरत पर। उसने उन्हें मर्द और औरत बनाया।
28अल्लाह ने उन्हें बरकत दी और कहा, “फलो-
फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। दुनिया तुमसे
भर जाए और तुम उस पर इख़्तियार रखो। समुंदर
की मछलियों, हवा के परिंदों और ज़मीन पर के
तमाम रेंगनेवाले जानदारों पर हुकूमत करो।”

29अल्लाह ने उनसे मज़ीद कहा, “तमाम
बीजदार पौदे और फलदार दरख़्त तुम्हारे ही हैं।
मैं उन्हें तुमको खाने के लिए देता हूँ। 30इस तरह
मैं तमाम जानवरों को खाने के लिए हरियाली देता
हूँ। जिसमें भी जान है वह यह खा सकता है, ख़ाह
वह ज़मीन पर चलने-फिरनेवाला जानवर, हवा का
परिंदा या ज़मीन पर रेंगनेवाला क्यों न हो।” ऐसा
ही हुआ। 31अल्लाह ने सब पर नज़र की तो देखा
कि वह बहुत अच्छा बन गया है। शाम हुई, फिर
सुबह। छटा दिन गुज़र गया।

सातवाँ दिन : आराम

2 यों आसमानो-ज़मीन और उनकी तमाम
चीज़ों की तख़लीक़ मुकम्मल हुई। 2सातवें
दिन अल्लाह का सारा काम तकमील को
पहुँचा। इससे फ़ारिग़ होकर उसने आराम किया।
3अल्लाह ने सातवें दिन को बरकत दी और उसे
मख़सूसो-मुक़द्दस किया। क्योंकि उस दिन उसने
अपने तमाम तख़लीक़ी काम से फ़ारिग़ होकर
आराम किया।

आदम और हव्वा

4यह आसमानो-ज़मीन की तख़लीक़ का बयान
है। जब रब ख़ुदा ने आसमानो-ज़मीन को बनाया
5तो शुरू में झाड़ियाँ और पौदे नहीं उगते थे।
वजह यह थी कि अल्लाह ने बारिश का इंतज़ाम
नहीं किया था। और अभी इनसान भी पैदा नहीं
हुआ था कि ज़मीन की खेतीबाड़ी करता। 6इसकी
बजाए ज़मीन में से धुंध उठकर उस की पूरी सतह
को तर करती थी। 7फिर रब ख़ुदा ने ज़मीन से
मिट्टी लेकर इनसान को तश्कील दिया और उसके
नथनों में ज़िंदगी का दम फूँका तो वह जीती जान
हुआ।

8रब ख़ुदा ने मशरिक़ में मुल्के-अदन में एक
बाग़ लगाया। उसमें उसने उस आदमी को रखा
जिसे उसने बनाया था। 9रब ख़ुदा के हुक्म पर
ज़मीन में से तरह तरह के दरख़्त फूट निकले,
ऐसे दरख़्त जो देखने में दिलकश और खाने के
लिए अच्छे थे। बाग़ के बीच में दो दरख़्त थे।
एक का फल ज़िंदगी बख़्शता था जबकि दूसरे
का फल अच्छे और बुरे की पहचान दिलाता था।
10अदन में से एक दरिया निकलकर बाग़ की
आबपाशी करता था। वहाँ से बहकर वह चार
शाख़ों में तक़सीम हुआ। 11-12पहली शाख़ का

नाम फ़ीसून है। वह मुल्के-हवीला को घेरे हुए
बहती है जहाँ ख़ालिस सोना, गूगल का गूँद और
अक़ीक़े-अहमर[a] पाए जाते हैं। 13दूसरी का नाम
जैहून है जो कूश को घेरे हुए बहती है। 14तीसरी
का नाम दिजला है जो असूर के मशरिक़ को जाती
है और चौथी का नाम फ़ुरात है।

15रब ख़ुदा ने पहले आदमी को बाग़े-अदन में
रखा ताकि वह उस की बाग़बानी और हिफ़ाज़त
करे। 16लेकिन रब ख़ुदा ने उसे आगाह किया,
“तुझे हर दरख़्त का फल खाने की इजाज़त है।
17लेकिन जिस दरख़्त का फल अच्छे और बुरे
की पहचान दिलाता है उसका फल खाना मना
है। अगर उसे खाए तो यक़ीनन मरेगा।”

18रब ख़ुदा ने कहा, “अच्छा नहीं कि आदमी
अकेला रहे। मैं उसके लिए एक मुनासिब मददगार
बनाता हूँ।”

19रब ख़ुदा ने मिट्टी से ज़मीन पर चलने-
फिरनेवाले जानवर और हवा के परिंदे बनाए थे।
अब वह उन्हें आदमी के पास ले आया ताकि
मालूम हो जाए कि वह उनके क्या क्या नाम
रखेगा। यों हर जानवर को आदम की तरफ़ से
नाम मिल गया। 20आदमी ने तमाम मवेशियों,
परिंदों और ज़मीन पर फिरनेवाले जानदारों के
नाम रखे। लेकिन उसे अपने लिए कोई मुनासिब
मददगार न मिला।

21तब रब ख़ुदा ने उसे सुला दिया। जब वह
गहरी नींद सो रहा था तो उसने उस की पसलियों
में से एक निकालकर उस की जगह गोश्त भर
दिया। 22पसली से उसने औरत बनाई और उसे
आदमी के पास ले आया। 23उसे देखकर वह
पुकार उठा, “वाह! यह तो मुझ जैसी ही है, मेरी
हड्डियों में से हड्डी और मेरे गोश्त में से गोश्त है।
इसका नाम नारी रखा जाए क्योंकि वह नर से
निकाली गई है।” 24इसलिए मर्द अपने माँ-बाप
को छोड़कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता
है, और वह दोनों एक हो जाते हैं। 25दोनों, आदमी
और औरत नंगे थे, लेकिन यह उनके लिए शर्म का
बाइस नहीं था।

गुनाह का आग़ाज़

3 साँप ज़मीन पर चलने-फिरनेवाले उन
तमाम जानवरों से ज़्यादा चालाक था
जिनको रब ख़ुदा ने बनाया था। उसने औरत से
पूछा, “क्या अल्लाह ने वाक़ई कहा कि बाग़ के
किसी भी दरख़्त का फल न खाना?” 2औरत
ने जवाब दिया, “हरगिज़ नहीं। हम बाग़ का हर
फल खा सकते हैं, 3सिर्फ़ उस दरख़्त के फल से
गुरेज़ करना है जो बाग़ के बीच में है। अल्लाह
ने कहा कि उसका फल न खाओ बल्कि उसे
छूना भी नहीं, वरना तुम यक़ीनन मर जाओगे।”
4साँप ने औरत से कहा, “तुम हरगिज़ न मरोगे,
5बल्कि अल्लाह जानता है कि जब तुम उसका
फल खाओगे तो तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी और
तुम अल्लाह की मानिंद हो जाओगे, तुम जो भी
अच्छा और बुरा है उसे जान लोगे।”

6औरत ने दरख़्त पर ग़ौर किया कि खाने के
लिए अच्छा और देखने में भी दिलकश है। सबसे
दिलफ़रेब बात यह कि उससे समझ हासिल हो
सकती है! यह सोचकर उसने उसका फल लेकर
उसे खाया। फिर उसने अपने शौहर को भी दे
दिया, क्योंकि वह उसके साथ था। उसने भी खा
लिया। 7लेकिन खाते ही उनकी आँखें खुल गईं
और उनको मालूम हुआ कि हम नंगे हैं। चुनाँचे
उन्होंने अंजीर के पत्ते सीकर लुंगियाँ बना लीं।

8शाम के वक़्त जब ठंडी हवा चलने लगी तो
उन्होंने रब ख़ुदा को बाग़ में चलते-फिरते सुना। वह
डर के मारे दरख़्तों के पीछे छुप गए। 9रब ख़ुदा ने
पुकारकर कहा, “आदम, तू कहाँ है?” 10आदम
ने जवाब दिया, “मैंने तुझे बाग़ में चलते हुए सुना
तो डर गया, क्योंकि मैं नंगा हूँ। इसलिए मैं छुप
गया।” 11उसने पूछा, “किसने तुझे बताया कि
तू नंगा है? क्या तूने उस दरख़्त का फल खाया है
जिसे खाने से मैंने मना किया था?” 12आदम ने

[a] carnelian

कहा, “जो औरत तूने मेरे साथ रहने के लिए दी है
उसने मुझे फल दिया। इसलिए मैंने खा लिया।”
13अब रब ख़ुदा औरत से मुख़ातिब हुआ, “तूने
यह क्यों किया?” औरत ने जवाब दिया, “साँप
ने मुझे बहकाया तो मैंने खाया।”
14रब ख़ुदा ने साँप से कहा, “चूँकि तूने
यह किया, इसलिए तू तमाम मवेशियों और
जंगली जानवरों में लानती है। तू उम्र-भर पेट
के बल रेंगेगा और ख़ाक चाटेगा। 15मैं तेरे और
औरत के दरमियान दुश्मनी पैदा करूँगा। उस की
औलाद तेरी औलाद की दुश्मन होगी। वह तेरे सर
को कुचल डालेगी जबकि तू उस की एड़ी पर
काटेगा।”
16फिर रब ख़ुदा औरत से मुख़ातिब हुआ और
कहा, “जब तू उम्मीद से होगी तो मैं तेरी तकलीफ़
को बहुत बढ़ाऊँगा। जब तेरे बच्चे होंगे तो तू शदीद
दर्द का शिकार होगी। तू अपने शौहर की तमन्ना
करेगी लेकिन वह तुझ पर हुकूमत करेगा।”
17आदम से उसने कहा, “तूने अपनी बीवी की
बात मानी और उस दरख़्त का फल खाया जिसे
खाने से मैंने मना किया था। इसलिए तेरे सबब
से ज़मीन पर लानत है। उससे ख़ुराक हासिल
करने के लिए तुझे उम्र-भर मेहनत-मशक़्क़त
करनी पड़ेगी। 18तेरे लिए वह ख़ारदार पौदे और
ऊँटकटारे पैदा करेगी, हालाँकि तू उससे अपनी
ख़ुराक भी हासिल करेगा। 19पसीना बहा बहाकर
तुझे रोटी कमाने के लिए भाग-दौड़ करनी पड़ेगी।
और यह सिलसिला मौत तक जारी रहेगा। तू
मेहनत करते करते दुबारा ज़मीन में लौट जाएगा,
क्योंकि तू उसी से लिया गया है। तू ख़ाक है और
दुबारा ख़ाक में मिल जाएगा।”
20आदम ने अपनी बीवी का नाम हव्वा यानी
ज़िंदगी रखा, क्योंकि बाद में वह तमाम ज़िंदों
की माँ बन गई। 21रब ख़ुदा ने आदम और उस
की बीवी के लिए खालों से लिबास बनाकर उन्हें
पहनाया। 22उसने कहा, “इनसान हमारी मानिंद
हो गया है, वह अच्छे और बुरे का इल्म रखता
है। अब ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ाकर ज़िंदगी
बख़्शनेवाले दरख़्त के फल से ले और उससे
खाकर हमेशा तक ज़िंदा रहे।” 23इसलिए रब
ख़ुदा ने उसे बाग़े-अदन से निकालकर उस ज़मीन
की खेतीबाड़ी करने की ज़िम्मेदारी दी जिसमें से
उसे लिया गया था। 24इनसान को ख़ारिज करने
के बाद उसने बाग़े-अदन के मशरिक़ में करूबी
फ़रिश्ते खड़े किए और साथ साथ एक आतिशी
तलवार रखी जो इधर-उधर घूमती थी ताकि उस
रास्ते की हिफ़ाज़त करे जो ज़िंदगी बख़्शनेवाले
दरख़्त तक पहुँचाता था।

क़ाबील और हाबील

4 आदम हव्वा से हमबिसतर हुआ तो उनका
पहला बेटा क़ाबील पैदा हुआ। हव्वा ने
कहा, “रब की मदद से मैंने एक मर्द हासिल किया
है।” 2बाद में क़ाबील का भाई हाबील पैदा हुआ।
हाबील भेड़-बकरियों का चरवाहा बन गया जबकि
क़ाबील खेतीबाड़ी करने लगा।

पहला क़त्ल

3कुछ देर के बाद क़ाबील ने रब को अपनी
फ़सलों में से कुछ पेश किया। 4हाबील ने भी
नज़राना पेश किया, लेकिन उसने अपनी भेड़-
बकरियों के कुछ पहलौठे उनकी चरबी समेत
चढ़ाए। हाबील का नज़राना रब को पसंद आया,
5मगर क़ाबील का नज़राना मंज़ूर न हुआ। यह
देखकर क़ाबील बड़े ग़ुस्से में आ गया, और उसका
मुँह बिगड़ गया। 6रब ने पूछा, “तू ग़ुस्से में क्यों
आ गया है? तेरा मुँह क्यों लटका हुआ है? 7क्या
अगर तू अच्छी नीयत रखता है तो अपनी नज़र
उठाकर मेरी तरफ़ नहीं देख सकेगा? लेकिन
अगर अच्छी नीयत नहीं रखता तो ख़बरदार!
गुनाह दरवाज़े पर दबका बैठा है और तुझे चाहता
है। लेकिन तेरा फ़र्ज़ है कि उस पर ग़ालिब आए।”
8एक दिन क़ाबील ने अपने भाई से कहा,
“आओ, हम बाहर खुले मैदान में चलें।” और
जब वह खुले मैदान में थे तो क़ाबील ने अपने
भाई हाबील पर हमला करके उसे मार डाला।

9तब रब ने क़ाबील से पूछा, “तेरा भाई हाबील
कहाँ है?” क़ाबील ने जवाब दिया, “मुझे क्या
पता! क्या अपने भाई की देख-भाल करना मेरी
ज़िम्मेदारी है?” 10रब ने कहा, “तूने क्या किया
है? तेरे भाई का ख़ून ज़मीन में से पुकारकर मुझसे
फ़रियाद कर रहा है। 11इसलिए तुझ पर लानत
है और ज़मीन ने तुझे रद्द किया है, क्योंकि ज़मीन
को मुँह खोलकर तेरे हाथ से क़त्ल किए हुए भाई
का ख़ून पीना पड़ा। 12अब से जब तू खेतीबाड़ी
करेगा तो ज़मीन अपनी पैदावार देने से इनकार
करेगी। तू मफ़रूर होकर मारा मारा फिरेगा।”
13क़ाबील ने कहा, “मेरी सज़ा निहायत सख़्त
है। मैं इसे बरदाश्त नहीं कर पाऊँगा। 14आज तू
मुझे ज़मीन की सतह से भगा रहा है और मुझे तेरे
हुज़ूर से भी छुप जाना है। मैं मफ़रूर की हैसियत
से मारा मारा फिरता रहूँगा, इसलिए जिसको भी
पता चलेगा कि मैं कहाँ हूँ वह मुझे क़त्ल कर
डालेगा।” 15लेकिन रब ने उससे कहा, “हरगिज़
नहीं। जो क़ाबील को क़त्ल करे उससे सात गुना
बदला लिया जाएगा।” फिर रब ने उस पर एक
निशान लगाया ताकि जो भी क़ाबील को देखे वह
उसे क़त्ल न कर दे। 16इसके बाद क़ाबील रब
के हुज़ूर से चला गया और अदन के मशरिक़ की
तरफ़ नोद के इलाक़े में जा बसा।

क़ाबील का ख़ानदान

17क़ाबील की बीवी हामिला हुई। बेटा पैदा
हुआ जिसका नाम हनूक रखा गया। क़ाबील ने
एक शहर तामीर किया और अपने बेटे की ख़ुशी
में उसका नाम हनूक रखा। 18हनूक का बेटा ईराद
था, ईराद का बेटा महूयाएल, महूयाएल का बेटा
मतूसाएल और मतूसाएल का बेटा लमक था।
19लमक की दो बीवियाँ थीं, अदा और ज़िल्ला।
20अदा का बेटा याबल था। उस की नसल के लोग
ख़ैमों में रहते और मवेशी पालते थे। 21याबल का
भाई यूबल था। उस की नसल के लोग सरोद[a]
और बाँसरी बजाते थे। 22ज़िल्ला के भी बेटा पैदा
हुआ जिसका नाम तूबल-क़ाबील था। वह लोहार
था। उस की नसल के लोग पीतल और लोहे की
चीज़ें बनाते थे। तूबल-क़ाबील की बहन का नाम
नामा था। 23एक दिन लमक ने अपनी बीवियों
से कहा, “अदा और ज़िल्ला, मेरी बात सुनो!
लमक की बीवियो, मेरे अलफ़ाज़ पर ग़ौर करो!
24एक आदमी ने मुझे ज़ख़मी किया तो मैंने उसे
मार डाला। एक लड़के ने मेरे चोट लगाई तो मैंने
उसे क़त्ल कर दिया। जो क़ाबील को क़त्ल करे
उससे सात गुना बदला लिया जाएगा, लेकिन जो
लमक को क़त्ल करे उससे सतत्तर गुना बदला
लिया जाएगा।”

सेत और अनूस

25आदम और हव्वा का एक और बेटा पैदा
हुआ। हव्वा ने उसका नाम सेत रखकर कहा,
“अल्लाह ने मुझे हाबील की जगह जिसे क़ाबील
ने क़त्ल किया एक और बेटा बख़्शा है।” 26सेत
के हाँ भी बेटा पैदा हुआ। उसने उसका नाम अनूस
रखा।

उन दिनों में लोग रब का नाम लेकर इबादत
करने लगे।

आदम से नूह तक का नसबनामा

5 ज़ैल में आदम का नसबनामा दर्ज है।
जब अल्लाह ने इनसान को ख़लक़ किया
तो उसने उसे अपनी सूरत पर बनाया। 2उसने उन्हें
मर्द और औरत पैदा किया। और जिस दिन उसने
उन्हें ख़लक़ किया उसने उन्हें बरकत देकर उनका
नाम आदम यानी इनसान रखा।

3आदम की उम्र 130 साल थी जब उसका बेटा
सेत पैदा हुआ। सेत सूरत के लिहाज़ से अपने
बाप की मानिंद था, वह उससे मुशाबहत रखता

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : चंग। चूँकि यह साज़ बर्रे-सग़ीर में कम
ही इस्तेमाल होता है, इसलिए मुतरजिम ने इसकी जगह
लफ़्ज़ ‘सरोद’ इस्तेमाल किया है।

था। 4सेत की पैदाइश के बाद आदम मज़ीद 800 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। 5वह 930 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

6सेत 105 साल का था जब उसका बेटा अनूस पैदा हुआ। 7इसके बाद वह मज़ीद 807 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। 8वह 912 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

9अनूस 90 बरस का था जब उसका बेटा क़ीनान पैदा हुआ। 10इसके बाद वह मज़ीद 815 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। 11वह 905 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

12क़ीनान 70 साल का था जब उसका बेटा महललेल पैदा हुआ। 13इसके बाद वह मज़ीद 840 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। 14वह 910 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

15महललेल 65 साल का था जब उसका बेटा यारिद पैदा हुआ। 16इसके बाद वह मज़ीद 830 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। 17वह 895 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

18यारिद 162 साल का था जब उसका बेटा हनूक पैदा हुआ। 19इसके बाद वह मज़ीद 800 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। 20वह 962 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

21हनूक 65 साल का था जब उसका बेटा मतूसिलह पैदा हुआ। 22इसके बाद वह मज़ीद 300 साल अल्लाह के साथ चलता रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। 23वह कुल 365 साल दुनिया में रहा। 24हनूक अल्लाह के साथ साथ चलता था। 365 साल की उम्र में वह ग़ायब हुआ, क्योंकि अल्लाह ने उसे उठा लिया।

25मतूसिलह 187 साल का था जब उसका बेटा लमक पैदा हुआ। 26वह मज़ीद 782 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे और बेटियाँ भी पैदा हुए। 27वह 969 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

28लमक 182 साल का था जब उसका बेटा पैदा हुआ। 29उसने उसका नाम नूह या-नी तसल्ली रखा, क्योंकि उसने उसके बारे में कहा, “हमारा खेतीबाड़ी का काम निहायत तकलीफ़देह है, इसलिए कि अल्लाह ने ज़मीन पर लानत भेजी है। लेकिन अब हम बेटे की मारिफ़त तसल्ली पाएँगे।” 30इसके बाद वह मज़ीद 595 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। 31वह 777 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

32नूह 500 साल का था जब उसके बेटे सिम, हाम और याफ़त पैदा हुए।

लोगों की ज़्यादतियाँ

6 दुनिया में लोगों की तादाद बढ़ने लगी। उनके हाँ बेटियाँ पैदा हुईं। 2तब आसमानी हस्तियों ने देखा कि बनी नौ इनसान की बेटियाँ ख़ूबसूरत हैं, और उन्होंने उनमें से कुछ चुनकर उनसे शादी की। 3फिर रब ने कहा, “मेरी रूह हमेशा के लिए इनसान में न रहे क्योंकि वह फ़ानी मख़लूक़ है। अब से वह 120 साल से ज़्यादा ज़िंदा नहीं रहेगा।” 4उन दिनों में और बाद में भी दुनिया में देवक़ामत अफ़राद थे जो इनसानी औरतों और उन आसमानी हस्तियों की शादियों से पैदा हुए थे। यह देवक़ामत अफ़राद क़दीम ज़माने के मशहूर सूरमा थे।

5रब ने देखा कि इनसान निहायत बिगड़ गया है, कि उसके तमाम ख़यालात लगातार बुराई की तरफ़ मायल रहते हैं। 6वह पछताया कि मैंने इनसान को बनाकर दुनिया में रख दिया है, और उसे सख़्त दुख हुआ। 7उसने कहा, “गो मैं ही ने इनसान को ख़लक़ किया मैं उसे रूए-ज़मीन पर से मिटा डालूँगा। मैं न सिर्फ़ लोगों को बल्कि ज़मीन पर चलने-फिरने और रेंगनेवाले जानवरों और हवा के परिंदों को भी हलाक कर दूँगा, क्योंकि मैं पछताता हूँ कि मैंने उनको बनाया।”

बड़े सैलाब के लिए नूह की तैयारियाँ

8सिर्फ़ नूह पर रब की नज़रे-करम थी। 9यह उस की ज़िंदगी का बयान है।

नूह रास्तबाज़ था। उस ज़माने के लोगों में सिर्फ़ वही बेक़ुसूर था। वह अल्लाह के साथ साथ चलता था। 10नूह के तीन बेटे थे, सिम, हाम और याफ़त।

11लेकिन दुनिया अल्लाह की नज़र में बिगड़ी हुई
और ज़ुल्मो-तशद्दुद से भरी हुई थी। 12जहाँ भी
अल्लाह देखता दुनिया ख़राब थी, क्योंकि तमाम
जानदारों ने ज़मीन पर अपनी रविश को बिगाड़
दिया था।

13तब अल्लाह ने नूह से कहा, "मैंने तमाम
जानदारों को ख़त्म करने का फ़ैसला किया है,
क्योंकि उनके सबब से पूरी दुनिया ज़ुल्मो-तशद्दुद
से भर गई है। चुनाँचे मैं उनको ज़मीन समेत
तबाह कर दूँगा। 14अब अपने लिए सरो[a] की
लकड़ी की कश्ती बना ले। उसमें कमरे हों और
उसे अंदर और बाहर तारकोल लगा। 15उस की
लंबाई 450 फ़ुट, चौड़ाई 75 फ़ुट और ऊँचाई
45 फ़ुट हो। 16कश्ती की छत को यों बनाना कि
उसके नीचे 18 इंच खुला रहे। एक तरफ़ दरवाज़ा
हो, और उस की तीन मनज़िलें हों। 17मैं पानी
का इतना बड़ा सैलाब लाऊँगा कि वह ज़मीन के
तमाम जानदारों को हलाक कर डालेगा। ज़मीन
पर सब कुछ फ़ना हो जाएगा। 18लेकिन तेरे साथ
मैं अहद बाँधूँगा जिसके तहत तू अपने बेटों, अपनी
बीवी और बहुओं के साथ कश्ती में जाएगा। 19हर
क़िस्म के जानवर का एक नर और एक मादा भी
अपने साथ कश्ती में ले जाना ताकि वह तेरे साथ
जीते बचें। 20हर क़िस्म के पर रखनेवाले जानवर
और हर क़िस्म के ज़मीन पर फिरने या रेंगनेवाले
जानवर दो दो होकर तेरे पास आएँगे ताकि जीते
बच जाएँ। 21जो भी ख़ुराक दरकार है उसे अपने
और उनके लिए जमा करके कश्ती में महफ़ूज़ कर
लेना।"

22नूह ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा अल्लाह
ने उसे बताया।

सैलाब का अग़ाज़

7 फिर रब ने नूह से कहा, "अपने घराने
समेत कश्ती में दाख़िल हो जा, क्योंकि
इस दौर के लोगों में से मैंने सिर्फ़ तुझे रास्तबाज़
पाया है। 2हर क़िस्म के पाक जानवरों में से सात
सात नरो-मादा के जोड़े जबकि नापाक जानवरों
में से नरो-मादा का सिर्फ़ एक एक जोड़ा साथ ले
जाना। 3इसी तरह हर क़िस्म के पर रखनेवालों में
से सात सात नरो-मादा के जोड़े भी साथ ले जाना
ताकि उनकी नसलें बची रहें। 4एक हफ़ते के बाद
मैं चालीस दिन और चालीस रात मुतवातिर बारिश
बरसाऊँगा। इससे मैं तमाम जानदारों को रूए-
ज़मीन पर से मिटा डालूँगा, अगरचे मैं ही ने उन्हें
बनाया है।"

5नूह ने वैसा ही किया जैसा रब ने हुक्म दिया
था। 6वह 600 साल का था जब यह तूफ़ानी
सैलाब ज़मीन पर आया।

7तूफ़ानी सैलाब से बचने के लिए नूह अपने
बेटों, अपनी बीवी और बहुओं के साथ कश्ती
में सवार हुआ। 8ज़मीन पर फिरनेवाले पाक
और नापाक जानवर, पर रखनेवाले और तमाम
रेंगनेवाले जानवर भी आए। 9नरो-मादा की सूरत
में दो दो होकर वह नूह के पास आकर कश्ती में
सवार हुए। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा अल्लाह
ने नूह को हुक्म दिया था। 10एक हफ़ते के बाद
तूफ़ानी सैलाब ज़मीन पर आ गया।

11यह सब कुछ उस वक़्त हुआ जब नूह 600
साल का था। दूसरे महीने के 17वें दिन ज़मीन
की गहराइयों में से तमाम चश्मे फूट निकले और
आसमान पर पानी के दरीचे खुल गए। 12चालीस
दिन और चालीस रात तक मूसलाधार बारिश
होती रही। 13जब बारिश शुरू हुई तो नूह, उसके
बेटे सिम, हाम और याफ़त, उस की बीवी और
बहुएँ कश्ती में सवार हो चुके थे। 14उनके साथ हर
क़िस्म के जंगली जानवर, मवेशी, रेंगने और पर
रखनेवाले जानवर थे। 15हर क़िस्म के जानदार
दो दो होकर नूह के पास आकर कश्ती में सवार
हो चुके थे। 16नरो-मादा आए थे। सब कुछ वैसा
ही हुआ था जैसा अल्लाह ने नूह को हुक्म दिया
था। फिर रब ने दरवाज़े को बंद कर दिया।

[a]इबरानी लफ़्ज़ मतरूक है। शायद इसका मतलब सरो
या देवदार की लकड़ी हो।

17चालीस दिन तक तूफ़ानी सैलाब जारी रहा।
पानी चढ़ा तो उसने कश्ती को ज़मीन पर से उठा
लिया। 18पानी ज़ोर पकड़कर बहुत बढ़ गया,
और कश्ती उस पर तैरने लगी। 19आख़िरकार
पानी इतना ज़्यादा हो गया कि तमाम ऊँचे पहाड़
भी उसमें छुप गए, 20बल्कि सबसे ऊँची चोटी
पर पानी की गहराई 20 फ़ुट थी। 21ज़मीन
पर रहनेवाली हर मख़लूक़ हलाक हुई। परिंदे,
मवेशी, जंगली जानवर, तमाम जानदार जिनसे
ज़मीन भरी हुई थी और इनसान, सब कुछ मर
गया। 22ज़मीन पर हर जानदार मख़लूक़ हलाक
हुई। 23यों हर मख़लूक़ को रूए-ज़मीन पर से
मिटा दिया गया। इनसान, ज़मीन पर फिरने और
रेंगनेवाले जानवर और परिंदे, सब कुछ ख़त्म कर
दिया गया। सिर्फ़ नूह और कश्ती में सवार उसके
साथी बच गए।

24सैलाब डेढ़ सौ दिन तक ज़मीन पर ग़ालिब
रहा।

सैलाब का इख़्तिताम

8 लेकिन अल्लाह को नूह और तमाम
जानवर याद रहे जो कश्ती में थे। उसने हवा
चला दी जिससे पानी कम होने लगा। 2ज़मीन के
चश्मे और आसमान पर के पानी के दरीचे बंद हो
गए, और बारिश रुक गई। 3पानी घटता गया।
150 दिन के बाद वह काफ़ी कम हो गया था।
4सातवें महीने के 17वें दिन कश्ती अरारात के
एक पहाड़ पर टिक गई। 5दसवें महीने के पहले
दिन पानी इतना कम हो गया था कि पहाड़ों की
चोटियाँ नज़र आने लगी थीं।

6-7चालीस दिन के बाद नूह ने कश्ती की
खिड़की खोलकर एक कौवा छोड़ दिया, और
वह उड़कर चला गया। लेकिन जब तक ज़मीन
पर पानी था वह आता जाता रहा। 8फिर नूह ने
एक कबूतर छोड़ दिया ताकि पता चले कि ज़मीन
पानी से निकल आई है या नहीं। 9लेकिन कबूतर
को कहीं भी बैठने की जगह न मिली, क्योंकि
अब तक पूरी ज़मीन पर पानी ही पानी था। वह
कश्ती और नूह के पास वापस आ गया, और नूह
ने अपना हाथ बढ़ाया और कबूतर को पकड़कर
अपने पास कश्ती में रख लिया।

10उसने एक हफ़्ता और इंतज़ार करके कबूतर
को दुबारा छोड़ दिया। 11शाम के वक़्त वह लौट
आया। इस दफ़ा उस की चोंच में ज़ैतून का ताज़ा
पत्ता था। तब नूह को मालूम हुआ कि ज़मीन पानी
से निकल आई है।

12उसने मज़ीद एक हफ़्ते के बाद कबूतर को
छोड़ दिया। इस दफ़ा वह वापस न आया।

13जब नूह 601 साल का था तो पहले महीने
के पहले दिन ज़मीन की सतह पर पानी ख़त्म हो
गया। तब नूह ने कश्ती की छत खोल दी और देखा
कि ज़मीन की सतह पर पानी नहीं है। 14दूसरे
महीने के 27वें दिन ज़मीन बिलकुल ख़ुश्क हो
गई।

15फिर अल्लाह ने नूह से कहा, 16“अपनी
बीवी, बेटों और बहुओं के साथ कश्ती से निकल
आ। 17जितने भी जानवर साथ हैं उन्हें निकाल
दे, ख़ाह परिंदे हों, ख़ाह ज़मीन पर फिरने या
रेंगनेवाले जानवर। वह दुनिया में फैल जाएँ, नसल
बढ़ाएँ और तादाद में बढ़ते जाएँ।” 18चुनाँचे नूह
अपने बेटों, अपनी बीवी और बहुओं समेत निकल
आया। 19तमाम जानवर और परिंदे भी अपनी
अपनी क़िस्म के गुरोहों में कश्ती से निकले।

20उस वक़्त नूह ने रब के लिए क़ुरबानगाह
बनाई। उसने तमाम फिरने और उड़नेवाले पाक
जानवरों में से कुछ चुनकर उन्हें ज़बह किया
और क़ुरबानगाह पर पूरी तरह जला दिया। 21यह
क़ुरबानियाँ देखकर रब ख़ुश हुआ और अपने दिल
में कहा, “अब से मैं कभी ज़मीन पर इनसान की
वजह से लानत नहीं भेजूँगा, क्योंकि उसका दिल
बचपन ही से बुराई की तरफ़ मायल है। अब से मैं
कभी इस तरह तमाम जान रखनेवाली मख़लूक़ात
को रूए-ज़मीन पर से नहीं मिटाऊँगा। 22दुनिया
के मुक़र्ररा औक़ात जारी रहेंगे। बीज बोने और
फ़सल काटने का वक़्त, ठंड और तपिश, गरमियों

और सर्दियों का मौसम, दिन और रात, यह सब
कुछ दुनिया के अख़ीर तक क़ायम रहेगा।”

अल्लाह का नूह के साथ अहद

9 फिर अल्लाह ने नूह और उसके बेटों को
बरकत देकर कहा, “फलो-फूलो और
तादाद में बढ़ते जाओ। दुनिया तुमसे भर जाए।
2ज़मीन पर फिरने और रेंगनेवाले जानवर, परिंदे
और मछलियाँ सब तुमसे डरेंगे। उन्हें तुम्हारे
इख़्तियार में कर दिया गया है। 3जिस तरह मैंने
तुम्हारे खाने के लिए पौदों की पैदावार मुक़र्रर की
है उसी तरह अब से तुम्हें हर क़िस्म के जानवर
खाने की इजाज़त भी है। 4लेकिन ख़बरदार! ऐसा
गोश्त न खाना जिसमें ख़ून है, क्योंकि ख़ून में उस
की जान है।

5किसी की जान लेना मना है। जो ऐसा करेगा
उसे अपनी जान देनी पड़ेगी, ख़ाह वह इनसान हो
या हैवान। मैं ख़ुद इसका मुतालबा करूँगा। 6जो
भी किसी का ख़ून बहाए उसका ख़ून भी बहाया
जाएगा। क्योंकि अल्लाह ने इनसान को अपनी
सूरत पर बनाया है।

7अब फलो-फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ।
दुनिया में फैल जाओ।”

8तब अल्लाह ने नूह और उसके बेटों से कहा,
9“अब मैं तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के साथ
अहद क़ायम करता हूँ। 10यह अहद उन तमाम
जानवरों के साथ भी होगा जो कश्ती में से निकले
हैं यानी परिंदों, मवेशियों और ज़मीन पर के तमाम
जानवरों के साथ। 11मैं तुम्हारे साथ अहद बाँधकर
वादा करता हूँ कि अब से ऐसा कभी नहीं होगा
कि ज़मीन की तमाम ज़िंदगी सैलाब से ख़त्म
कर दी जाएगी। अब से ऐसा सैलाब कभी नहीं
आएगा जो पूरी ज़मीन को तबाह कर दे। 12इस
अबदी अहद का निशान जो मैं तुम्हारे और तमाम
जानदारों के साथ क़ायम कर रहा हूँ यह है कि
13मैं अपनी कमान बादलों में रखता हूँ। वह मेरे
दुनिया के साथ अहद का निशान होगा। 14जब
कभी मेरे कहने पर आसमान पर बादल छा जाएंगे
और क़ौसे-क़ुज़ह उनमें से नज़र आएगी 15तो
मैं यह अहद याद करूँगा जो तुम्हारे और तमाम
जानदारों के साथ किया गया है। अब कभी भी
ऐसा सैलाब नहीं आएगा जो तमाम ज़िंदगी को
हलाक कर दे। 16क़ौसे-क़ुज़ह नज़र आएगी तो
मैं उसे देखकर उस दायमी अहद को याद करूँगा
जो मेरे और दुनिया की तमाम जानदार मख़लूक़ात
के दरमियान है। 17यह उस अहद का निशान है
जो मैंने दुनिया के तमाम जानदारों के साथ किया
है।”

नूह के बेटे

18नूह के जो बेटे उसके साथ कश्ती से निकले
सिम, हाम और याफ़त थे। हाम कनान का बाप
था। 19दुनिया-भर के तमाम लोग इन तीनों की
औलाद हैं।

20नूह किसान था। शुरू में उसने अंगूर का बाग़
लगाया। 21अंगूर से मै बनाकर उसने इतनी पी
ली कि वह नशे में धुत अपने डेरे में नंगा पड़ा रहा।
22कनान के बाप हाम ने उसे यों पड़ा हुआ देखा तो
बाहर जाकर अपने दोनों भाइयों को उसके बारे में
बताया। 23यह सुनकर सिम और याफ़त ने अपने
कंधों पर कपड़ा रखा। फिर वह उलटे चलते हुए
डेरे में दाख़िल हुए और कपड़ा अपने बाप पर डाल
दिया। उनके मुँह दूसरी तरफ़ मुड़े रहे ताकि बाप
की बरहनगी नज़र न आए।

24जब नूह होश में आया तो उसको पता चला
कि सबसे छोटे बेटे ने क्या किया है। 25उसने
कहा, “कनान पर लानत! वह अपने भाइयों का
ज़लीलतरीन ग़ुलाम होगा।

26मुबारक हो रब जो सिम का ख़ुदा है। कनान
सिम का ग़ुलाम हो। 27अल्लाह करे कि याफ़त
की हुदूद बढ़ जाएँ। याफ़त सिम के डेरों में रहे और
कनान उसका ग़ुलाम हो।”

28सैलाब के बाद नूह मज़ीद 350 साल ज़िंदा
रहा। 29वह 950 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

नूह की औलाद

10 यह नूह के बेटों सिम, हाम और याफ़त
का नसबनामा है। उनके बेटे सैलाब के
बाद पैदा हुए।

याफ़त की नसल

2याफ़त के बेटे जुमर, माजूज, मादी, यावान,
तूबल, मसक और तीरास थे। 3जुमर के बेटे
अश्कनाज़, रीफ़त और तुजरमा थे। 4यावान के
बेटे इलीसा और तरसीस थे। कित्ती और दोदानी
भी उस की औलाद हैं। 5वह उन क़ौमों के आबा-
ओ-अजदाद हैं जो साहिली इलाक़ों और जज़ीरों
में फैल गईं। यह याफ़त की औलाद हैं जो अपने
अपने क़बीले और मुल्क में रहते हुए अपनी अपनी
ज़बान बोलते हैं।

हाम की नसल

6हाम के बेटे कूश, मिसर, फ़ूत और कनान थे।
7कूश के बेटे सिबा, हवीला, सबता, रामा और
सब्तका थे। रामा के बेटे सबा और ददान थे।

8कूश का एक और बेटा बनाम नमरूद था।
वह दुनिया में पहला ज़बरदस्त हाकिम था। 9रब
के नज़दीक वह ज़बरदस्त शिकारी था। इसलिए
आज भी किसी अच्छे शिकारी के बारे में कहा
जाता है, “वह नमरूद की मानिंद है जो रब
के नज़दीक ज़बरदस्त शिकारी था।” 10उस
की सलतनत के पहले मरकज़ मुल्के-सिनार में
बाबल, अरक, अक्काद और कलना के शहर थे।
11उस मुल्क से निकलकर वह असूर चला गया
जहाँ उसने नीनवा, रहोबोत-ईर, कलह 12और
रसन के शहर तामीर किए। बड़ा शहर रसन
नीनवा और कलह के दरमियान वाक़े है।

13मिसर इन क़ौमों का बाप था : लूदी,
अनामी, लिहाबी, नफ़तूही, 14फ़तरूसी,
कसलूही (जिनसे फ़िलिस्ती निकले) और
कफ़तूरी।

15कनान का पहलौठा सैदा था। कनान ज़ैल
की क़ौमों का बाप भी था : हित्ती 16यबूसी,
अमोरी, जिरजासी, 17हिव्वी, अरक़ी, सीनी,
18अरवादी, समारी और हमाती। बाद में कनानी
क़बीले इतने फैल गए 19कि उनकी हुदूद शिमाल
में सैदा से जुनूब की तरफ़ जिरार से होकर ग़ज़्ज़ा
तक और वहाँ से मशरिक़ की तरफ़ सदूम, अमूरा,
अदमा और ज़बोईम से होकर लसा तक थीं।

20यह सब हाम की औलाद हैं, जो उनके अपने
अपने क़बीले, अपनी अपनी ज़बान, अपने अपने
मुल्क और अपनी अपनी क़ौम के मुताबिक़ दर्ज
हैं।

सिम की नसल

21सिम याफ़त का बड़ा भाई था। उसके भी
बेटे पैदा हुए। सिम तमाम बनी इबर का बाप है।

22सिम के बेटे ऐलाम, असूर, अरफ़क्सद, लूद
और अराम थे।

23अराम के बेटे ऊज़, हूल, जतर और मस थे।

24अरफ़क्सद का बेटा सिलह और सिलह का
बेटा इबर था।

25इबर के हाँ दो बेटे पैदा हुए। एक का नाम
फ़लज यानी तक़सीम था, क्योंकि उन ऐयाम में
दुनिया तक़सीम हुई। फ़लज के भाई का नाम
युक़तान था।

26युक़तान के बेटे अलमूदाद, सलफ़,
हसरमावत, इराख़, 27हदूराम, ऊज़ाल, दिक़ला,
28ऊबाल, अबीमाएल, सबा, 29ओफ़ीर, हवीला
और यूबाब थे। यह सब युक़तान के बेटे थे। 30वह
मेसा से लेकर सफ़ार और मशरिक़ी पहाड़ी इलाक़े
तक आबाद थे।

31यह सब सिम की औलाद हैं, जो अपने अपने
क़बीले, अपनी अपनी ज़बान, अपने अपने मुल्क
और अपनी अपनी क़ौम के मुताबिक़ दर्ज हैं।

32यह सब नूह के बेटों के क़बीले हैं, जो अपनी
नसलों और क़ौमों के मुताबिक़ दर्ज किए गए हैं।
सैलाब के बाद तमाम क़ौमें इन्हीं से निकलकर
रूए-ज़मीन पर फैल गईं।

बाबल का बुर्ज

11 उस वक़्त तक पूरी दुनिया के लोग
एक ही ज़बान बोलते थे। 2मशरिक़
की तरफ़ बढ़ते बढ़ते वह सिनार के एक मैदान
में पहुँचकर वहाँ आबाद हुए। 3तब वह एक दूसरे
से कहने लगे, “आओ, हम मिट्टी से ईंटें बनाकर
उन्हें आग में ख़ूब पकाएँ।” उन्होंने तामीरी काम
के लिए पत्थर की जगह ईंटें और मसाले की जगह
तारकोल इस्तेमाल किया। 4फिर वह कहने लगे,
“आओ, हम अपने लिए शहर बना लें जिसमें ऐसा
बुर्ज हो जो आसमान तक पहुँच जाए फिर हमारा
नाम क़ायम रहेगा और हम रूए-ज़मीन पर बिखर
जाने से बच जाएंगे।”

5लेकिन रब उस शहर और बुर्ज को देखने के
लिए उतर आया जिसे लोग बना रहे थे। 6रब ने
कहा, “यह लोग एक ही क़ौम हैं और एक ही
ज़बान बोलते हैं। और यह सिर्फ़ उसका आग़ाज़
है जो वह करना चाहते हैं। अब से जो भी वह
मिलकर करना चाहेंगे उससे उन्हें रोका नहीं जा
सकेगा। 7इसलिए आओ, हम दुनिया में उतरकर
उनकी ज़बान को दरहम-बरहम कर दें ताकि वह
एक दूसरे की बात समझ न पाएँ।”

8इस तरीक़े से रब ने उन्हें तमाम रूए-ज़मीन
पर मुंतशिर कर दिया, और शहर की तामीर रुक
गई। 9इसलिए शहर का नाम बाबल यानी अबतरी
ठहरा, क्योंकि रब ने वहाँ तमाम लोगों की ज़बान
को दरहम-बरहम करके उन्हें तमाम रूए-ज़मीन
पर मुंतशिर कर दिया।

सिम से अब्राम तक का नसबनामा

10यह सिम का नसबनामा है :

सिम 100 साल का था जब उसका बेटा
अरफ़क्सद पैदा हुआ। यह सैलाब के दो साल बाद
हुआ। 11इसके बाद वह मज़ीद 500 साल ज़िंदा
रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

12अरफ़क्सद 35 साल का था जब सिलह पैदा
हुआ। 13इसके बाद वह मज़ीद 403 साल ज़िंदा
रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

14सिलह 30 साल का था जब इबर पैदा हुआ।
15इसके बाद वह मज़ीद 403 साल ज़िंदा रहा।
उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

16इबर 34 साल का था जब फ़लज पैदा हुआ।
17इसके बाद वह मज़ीद 430 साल ज़िंदा रहा।
उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

18फ़लज 30 साल का था जब रऊ पैदा हुआ।
19इसके बाद वह मज़ीद 209 साल ज़िंदा रहा।
उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

20रऊ 32 साल का था जब सरूज पैदा हुआ।
21इसके बाद वह मज़ीद 207 साल ज़िंदा रहा।
उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

22सरूज 30 साल का था जब नहूर पैदा हुआ।
23इसके बाद वह मज़ीद 200 साल ज़िंदा रहा।
उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

24नहूर 29 साल का था जब तारह पैदा हुआ।
25इसके बाद वह मज़ीद 119 साल ज़िंदा रहा।
उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

26तारह 70 साल का था जब उसके बेटे
अब्राम, नहूर और हारान पैदा हुए।

27यह तारह का नसबनामा है : अब्राम, नहूर
और हारान तारह के बेटे थे। लूत हारान का बेटा
था। 28अपने बाप तारह की ज़िंदगी में ही हारान
कसदियों के ऊर में इंतक़ाल कर गया जहाँ वह
पैदा भी हुआ था।

29बाक़ी दोनों बेटों की शादी हुई। अब्राम की
बीवी का नाम सारय था और नहूर की बीवी का
नाम मिलकाह। मिलकाह हारान की बेटी थी, और
उस की एक बहन बनाम इस्का थी। 30सारय
बाँझ थी, इसलिए उसके बच्चे नहीं थे।

31तारह कसदियों के ऊर से रवाना होकर
मुल्के-कनान की तरफ़ सफ़र करने लगा। उसके
साथ उसका बेटा अब्राम, उसका पोता लूत यानी
हारान का बेटा और उस की बहू सारय थे। जब
वह हारान पहुँचे तो वहाँ आबाद हो गए। 32तारह
205 साल का था जब उसने हारान में वफ़ात
पाई।

अब्राम की बुलाहट

12 रब ने अब्राम से कहा, “अपने
वतन, अपने रिश्तेदारों और अप-
ने बाप के घर को छोड़कर उस मुल्क में चला
जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा। 2मैं तुझसे एक बड़ी
क़ौम बनाऊँगा, तुझे बरकत दूँगा और तेरे नाम
को बहुत बढ़ाऊँगा। तू दूसरों के लिए बरकत का
बाइस होगा। 3जो तुझे बरकत देंगे उन्हें मैं भी
बरकत दूँगा। जो तुझ पर लानत करेगा उस पर मैं
भी लानत करूँगा। दुनिया की तमाम क़ौमें तुझसे
बरकत पाएँगी।”

4अब्राम ने रब की सुनी और हारान से रवाना
हुआ। लूत उसके साथ था। उस वक़्त अब्राम 75
साल का था। 5उसके साथ उस की बीवी सारय
और उसका भतीजा लूत थे। वह अपने नौकर-
चाकरों समेत अपनी पूरी मिलकियत भी साथ ले
गया जो उसने हारान में हासिल की थी। चलते
चलते वह कनान पहुँचे। 6अब्राम उस मुल्क में से
गुज़रकर सिकम के मक़ाम पर ठहर गया जहाँ
मोरिह के बलूत का दरख़्त था। उस ज़माने में
मुल्क में कनानी क़ौमें आबाद थीं।

7वहाँ रब अब्राम पर ज़ाहिर हुआ और उससे
कहा, “मैं तेरी औलाद को यह मुल्क दूँगा।”
इसलिए उसने वहाँ रब की ताज़ीम में क़ुरबानगाह
बनाई जहाँ वह उस पर ज़ाहिर हुआ था। 8वहाँ से
वह उस पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ गया जो बैतेल
के मशरिक़ में है। वहाँ उसने अपना ख़ैमा लगाया।
मग़रिब में बैतेल था और मशरिक़ में अई। इस
जगह पर भी उसने रब की ताज़ीम में क़ुरबानगाह
बनाई और रब का नाम लेकर इबादत की।

9फिर अब्राम दुबारा रवाना होकर जुनूब के
दश्ते-नजब की तरफ़ चल पड़ा।

अब्राम मिसर में

10उन दिनों में मुल्के-कनान में काल पड़ा।
काल इतना सख़्त था कि अब्राम उससे बचने की
ख़ातिर कुछ देर के लिए मिसर में जा बसा, लेकिन
परदेसी की हैसियत से। 11जब वह मिसर की
सरहद के क़रीब आए तो उसने अपनी बीवी सारय
से कहा, “मैं जानता हूँ कि तू कितनी ख़ूबसूरत
है। 12मिसरी तुझे देखेंगे, फिर कहेंगे, ‘यह इसका
शौहर है।’ नतीजे में वह मुझे मार डालेंगे और तुझे
ज़िंदा छोड़ेंगे। 13इसलिए लोगों से यह कहते रहना
कि मैं अब्राम की बहन हूँ। फिर मेरे साथ अच्छा
सुलूक किया जाएगा और मेरी जान तेरे सबब से
बच जाएगी।”

14जब अब्राम मिसर पहुँचा तो वाक़ई
मिसरियों ने देखा कि सारय निहायत ही
ख़ूबसूरत है। 15और जब फ़िरौन के अफ़-
सरान ने उसे देखा तो उन्होंने फ़िरौन के सामने
सारय की तारीफ़ की। आख़िरकार उसे महल में
पहुँचाया गया। 16फ़िरौन ने सारय की ख़ातिर
अब्राम पर एहसान करके उसे भेड़-बकरियाँ,
गाय-बैल, गधे-गधियाँ, नौकर-चाकर और ऊँट
दिए।

17लेकिन रब ने सारय के सबब से फ़िरौन और
उसके घराने में सख़्त क़िस्म के अमराज़ फैलाए।
18आख़िरकार फ़िरौन ने अब्राम को बुलाकर
कहा, “तूने मेरे साथ क्या किया? तूने मुझे क्यों
नहीं बताया कि सारय तेरी बीवी है? 19तूने क्यों
कहा कि वह मेरी बहन है? इस धोके की बिना
पर मैंने उसे घर में रख लिया ताकि उससे शादी
करूँ। देख, तेरी बीवी हाज़िर है। इसे लेकर यहाँ से
निकल जा!” 20फिर फ़िरौन ने अपने सिपाहियों
को हुक्म दिया, और उन्होंने अब्राम, उस की बीवी
और पूरी मिलकियत को रुख़सत करके मुल्क से
रवाना कर दिया।

अब्राम और लूत अलग हो जाते हैं

13 अब्राम अपनी बीवी, लूत और तमाम
जायदाद को साथ लेकर मिसर से
निकला और कनान के जुनूबी इलाक़े दश्ते-नजब
में वापस आया।

2अब्राम निहायत दौलतमंद हो गया था। उसके
पास बहुत-से मवेशी और सोना-चाँदी थी। 3वहाँ
से जगह बजगह चलते हुए वह आख़िरकार बैतेल

से होकर उस मक़ाम तक पहुँच गया जहाँ उसने शुरू में अपना डेरा लगाया था और जो बैतेल और अई के दरमियान था। 4वहाँ जहाँ उसने क़ुरबानगाह बनाई थी उसने रब का नाम लेकर उस की इबादत की।

5लूत के पास भी बहुत-सी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और ख़ैमे थे। 6नतीजा यह निकला कि आख़िरकार वह मिलकर न रह सके, क्योंकि इतनी जगह नहीं थी कि दोनों के रेवड़ एक ही जगह पर चर सकें। 7अब्राम और लूत के चरवाहे आपस में झगड़ने लगे। (उस ज़माने में कनानी और फ़रिज़्ज़ी भी मुल्क में आबाद थे।) 8तब अब्राम ने लूत से बात की, “ऐसा नहीं होना चाहिए कि तेरे और मेरे दरमियान झगड़ा हो या तेरे चरवाहों और मेरे चरवाहों के दरमियान। हम तो भाई हैं। 9क्या ज़रूरत है कि हम मिलकर रहें जबकि तू आसानी से इस मुल्क की किसी और जगह रह सकता है। बेहतर है कि तू मुझसे अलग होकर कहीं और रहे। अगर तू बाएँ हाथ जाए तो मैं दाएँ हाथ जाऊँगा, और अगर तू दाएँ हाथ जाए तो मैं बाएँ हाथ जाऊँगा।”

10लूत ने अपनी नज़र उठाकर देखा कि दरियाए-यरदन के पूरे इलाक़े में ज़ुग़र तक पानी की कसरत है। वह रब के बाग़ या मुल्के-मिसर की मानिंद था, क्योंकि उस वक़्त रब ने सदूम और अमूरा को तबाह नहीं किया था। 11चुनाँचे लूत ने दरियाए-यरदन के पूरे इलाक़े को चुन लिया और मशरिक़ की तरफ़ जा बसा। यों दोनों रिश्तेदार एक दूसरे से जुदा हो गए। 12अब्राम मुल्के-कनान में रहा जबकि लूत यरदन के इलाक़े के शहरों के दरमियान आबाद हो गया। वहाँ उसने अपने ख़ैमे सदूम के क़रीब लगा दिए। 13लेकिन सदूम के बाशिंदे निहायत शरीर थे, और उनके रब के ख़िलाफ़ गुनाह निहायत मकरूह थे।

रब का अब्राम के साथ दुबारा वादा

14लूत अब्राम से जुदा हुआ तो रब ने अब्राम से कहा, “अपनी नज़र उठाकर चारों तरफ़ यानी शिमाल, जुनूब, मशरिक़ और मग़रिब की तरफ़ देख। 15जो भी ज़मीन तुझे नज़र आए उसे मैं तुझे और तेरी औलाद को हमेशा के लिए देता हूँ। 16मैं तेरी औलाद को ख़ाक की तरह बेशुमार होने दूँगा। जिस तरह ख़ाक के ज़र्रे गिने नहीं जा सकते उसी तरह तेरी औलाद भी गिनी नहीं जा सकेगी। 17चुनाँचे उठकर इस मुल्क की हर जगह चल-फिर, क्योंकि मैं इसे तुझे देता हूँ।”

18अब्राम रवाना हुआ। चलते चलते उसने अपने डेरे हबरून के क़रीब ममरे के दरख़्तों के पास लगाए। वहाँ उसने रब की ताज़ीम में क़ुरबानगाह बनाई।

अब्राम लूत को छुड़ाता है

14 कनान में जंग हुई। बैरूने-मुल्क के चार बादशाहों ने कनान के पाँच बादशाहों से जंग की। बैरूने-मुल्क के बादशाह यह थे : सिनार से अमराफ़िल, इल्लासर से अरयूक, ऐलाम से किदरलाउमर और जोयम से तिदाल। 2कनान के बादशाह यह थे : सदूम से बिरा, अमूरा से बिरशा, अदमा से सिनियाब, ज़बोईम से शिमेबर और बाला यानी ज़ुग़र का बादशाह।

3कनान के इन पाँच बादशाहों का इत्तहाद हुआ था और वह वादीए-सिद्दीम में जमा हुए थे। (अब सिद्दीम नहीं है, क्योंकि उस की जगह बहीराए-मुरदार आ गया है)। 4किदरलाउमर ने बारह साल तक उन पर हुकूमत की थी, लेकिन तेरहवें साल वह बाग़ी हो गए थे।

5अब एक साल के बाद किदरलाउमर और उसके इत्तहादी अपनी फ़ौजों के साथ आए। पहले उन्होंने अस्तारात-क़रनैम में रफ़ाइयों को, हाम में ज़ूज़ियों को, सवी-क़िरियतायम में ऐमियों को 6और होरियों को उनके पहाड़ी इलाक़े सईर में शिकस्त दी। यों वह एल-फ़ारान तक पहुँच गए जो रेगिस्तान के किनारे पर है। 7फिर वह वापस आए और ऐन-मिसफ़ात यानी क़ादिस पहुँचे। उन्होंने अमालीक़ियों के पूरे इलाक़े को तबाह कर दिया

और हससून-तमर में आबाद अमोरियों को भी शिकस्त दी।

8उस वक़्त सदूम, अमूरा, अदमा, ज़बोईम और बाला यानी ज़ुग़र के बादशाह उनसे लड़ने के लिए सिद्दीम की वादी में जमा हुए। 9इन पाँच बादशाहों ने ऐलाम के बादशाह किदरलाउमर, जोयम के बादशाह तिदाल, सिनार के बादशाह अमराफ़िल और इल्लासर के बादशाह अरयूक का मुक़ाबला किया। 10इस वादी में तारकोल के मुतअद्दिद गढ़े थे। जब बाग़ी बादशाह शिकस्त खाकर भागने लगे तो सदूम और अमूरा के बादशाह इन गढ़ों में गिर गए जबकि बाक़ी तीन बादशाह बचकर पहाड़ी इलाक़े में फ़रार हुए। 11फ़तहमंद बादशाह सदूम और अमूरा का तमाम माल तमाम खानेवाली चीज़ों समेत लूटकर वापस चल दिए। 12अब्राम का भतीजा लूत सदूम में रहता था, इसलिए वह उसे भी उस की मिलकियत समेत छीनकर साथ ले गए।

13लेकिन एक आदमी ने जो बच निकला था इबरानी मर्द अब्राम के पास आकर उसे सब कुछ बता दिया। उस वक़्त वह ममरे के दरख़्तों के पास आबाद था। ममरे अमोरी था। वह और उसके भाई इसकाल और आनेर अब्राम के इत्तहादी थे। 14जब अब्राम को पता चला कि भतीजे को गिरिफ़्तार कर लिया गया है तो उसने अपने घर में पैदा हुए तमाम जंगआज़मूदा ग़ुलामों को जमा करके दान तक दुश्मन का ताक़्क़ुब किया। उसके साथ 318 अफ़राद थे। 15वहाँ उसने अपने बंदों को गुरोहों में तक़सीम करके रात के वक़्त दुश्मन पर हमला किया। दुश्मन शिकस्त खाकर भाग गया और अब्राम ने दमिश्क़ के शिमाल में वाक़े ख़ूबा तक उसका ताक़्क़ुब किया। 16वह उनसे लूटा हुआ तमाम माल वापस ले आया। लूत, उस की जायदाद, औरतें और बाक़ी क़ैदी भी दुश्मन के क़ब्ज़े से बच निकले।

मलिके-सिद्क़, सालिम का बादशाह

17जब अब्राम किदरलाउमर और उसके इत्तहादियों पर फ़तह पाने के बाद वापस पहुँचा तो सदूम का बादशाह उससे मिलने के लिए वादीए-सवी में आया। (इसे आजकल बादशाह की वादी कहा जाता है।) 18सालिम का बादशाह मलिके-सिद्क़ भी वहाँ पहुँचा। वह अपने साथ रोटी और मै ले आया। मलिके-सिद्क़ अल्लाह तआला का इमाम था। 19उसने अब्राम को बरकत देकर कहा, “अब्राम पर अल्लाह तआला की बरकत हो, जो आसमानो-ज़मीन का ख़ालिक़ है। 20अल्लाह तआला मुबारक हो जिसने तेरे दुश्मनों को तेरे हाथ में कर दिया है।” अब्राम ने उसे तमाम माल का दसवाँ हिस्सा दिया।

21सदूम के बादशाह ने अब्राम से कहा, “मुझे मेरे लोग वापस कर दें और बाक़ी चीज़ें अपने पास रख लें।” 22लेकिन अब्राम ने उससे कहा, “मैंने रब से क़सम खाई है, अल्लाह तआला से जो आसमानो-ज़मीन का ख़ालिक़ है 23कि मैं उसमें से कुछ नहीं लूँगा जो आपका है, चाहे वह धागा या जूती का तसमा ही क्यों न हो। ऐसा न हो कि आप कहें, ‘मैंने अब्राम को दौलतमंद बना दिया है।’ 24सिवाए उस खाने के जो मेरे आदमियों ने रास्ते में खाया है मैं कुछ क़बूल नहीं करूँगा। लेकिन मेरे इत्तहादी आनेर, इसकाल और ममरे ज़रूर अपना अपना हिस्सा लें।”

अब्राम के साथ रब का अहद

15 इसके बाद रब रोया में अब्राम से हमकलाम हुआ, “अब्राम, मत डर। मैं ही तेरी सिपर हूँ, मैं ही तेरा बहुत बड़ा अज्र हूँ।”

2लेकिन अब्राम ने एतराज़ किया, “ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, तू मुझे क्या देगा जबकि अभी तक मेरे हाँ कोई बच्चा नहीं है और इलियज़र दमिश्क़ी मेरी मीरास पाएगा। 3तूने मुझे औलाद नहीं बख़्शी, इसलिए मेरे घराने का नौकर मेरा वारिस होगा।” 4तब अब्राम को अल्लाह से एक

और कलाम मिला। “यह आदमी इलियज़र तेरा
वारिस नहीं होगा बल्कि तेरा अपना ही बेटा तेरा
वारिस होगा।” 5रब ने उसे बाहर ले जाकर कहा,
“आसमान की तरफ़ देख और सितारों को गिनने
की कोशिश कर। तेरी औलाद इतनी ही बेशुमार
होगी।”
6अब्राम ने रब पर भरोसा रखा। इस बिना पर
अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया।
7फिर रब ने उससे कहा, “मैं रब हूँ जो तुझे
कसदियों के ऊर से यहाँ ले आया ताकि तुझे
यह मुल्क मीरास में दे दूँ।” 8अब्राम ने पूछा,
“ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, मैं किस तरह जानूँ कि
इस मुल्क पर क़ब्ज़ा करूँगा?” 9जवाब में रब
ने कहा, “मेरे हुज़ूर एक तीन-साला गाय, एक
तीन-साला बकरी और एक तीन-साला मेंढा ले
आ। एक क़ुम्री और एक कबूतर का बच्चा भी ले
आना।” 10अब्राम ने ऐसा ही किया और फिर हर
एक जानवर को दो हिस्सों में काटकर उनको एक
दूसरे के आमने-सामने रख दिया। लेकिन परिंदों
को उसने सालिम रहने दिया। 11शिकारी परिंदे
उन पर उतरने लगे, लेकिन अब्राम उन्हें भगाता
रहा।
12जब सूरज डूबने लगा तो अब्राम पर गहरी
नींद तारी हुई। उस पर दहशत और अंधेरा ही
अंधेरा छा गया। 13फिर रब ने उससे कहा, “जान
ले कि तेरी औलाद ऐसे मुल्क में रहेगी जो उसका
नहीं होगा। वहाँ वह अजनबी और ग़ुलाम होगी,
और उस पर 400 साल तक बहुत ज़ुल्म किया
जाएगा। 14लेकिन मैं उस क़ौम की अदालत
करूँगा जिसने उसे ग़ुलाम बनाया होगा। इसके
बाद वह बड़ी दौलत पाकर उस मुल्क से निकलेंगे।
15तू ख़ुद उम्ररसीदा होकर सलामती के साथ
इंतक़ाल करके अपने बापदादा से जा मिलेगा और
दफ़नाया जाएगा। 16तेरी औलाद की चौथी पुश्त
ग़ैरवतन से वापस आएगी, क्योंकि उस वक़्त
तक मैं अमोरियों को बरदाश्त करूँगा। लेकिन
आख़िरकार उनके गुनाह इतने संगीन हो जाएंगे
कि मैं उन्हें मुल्के-कनान से निकाल दूँगा।”
17सूरज ग़ुरूब हुआ। अंधेरा छा गया। अचानक
एक धुआँदार तनूर और एक भड़कती हुई मशाल
नज़र आई और जानवरों के दो दो टुकड़ों के बीच
में से गुज़रे।
18उस वक़्त रब ने अब्राम के साथ अहद किया।
उसने कहा, “मैं यह मुल्क मिसर की सरहद से
फ़ुरात तक तेरी औलाद को दूँगा, 19अगरचे अभी
तक इसमें क़ीनी, क़निज़्ज़ी, कदमूनी, 20हित्ती,
फ़रिज़्ज़ी, रफ़ाई, 21अमोरी, कनानी, जिरजासी
और यबूसी आबाद हैं।”

हाजिरा और इसमाईल

16 अब तक अब्राम की बीवी सारय के
कोई बच्चा नहीं हुआ था। लेकिन
उन्होंने एक मिसरी लौंडी रखी थी जिसका नाम
हाजिरा था, 2और एक दिन सारय ने अब्राम से
कहा, “रब ने मुझे बच्चे पैदा करने से महरूम रखा
है, इसलिए मेरी लौंडी के साथ हमबिसतर हों।
शायद मुझे उस की मारिफ़त बच्चा मिल जाए।”
अब्राम ने सारय की बात मान ली। 3चुनाँचे
सारय ने अपनी मिसरी लौंडी हाजिरा को अपने
शौहर अब्राम को दे दिया ताकि वह उस की
बीवी बन जाए उस वक़्त अब्राम को कनान में
बसते हुए दस साल हो गए थे। 4अब्राम हाजिरा
से हमबिसतर हुआ तो वह उम्मीद से हो गई।
जब हाजिरा को यह मालूम हुआ तो वह अपनी
मालिकन को हक़ीर जानने लगी। 5तब सारय ने
अब्राम से कहा, “जो ज़ुल्म मुझ पर किया जा
रहा है वह आप ही पर आए। मैंने ख़ुद इसे आपके
बाज़ुओं में दे दिया था। अब जब इसे मालूम हुआ
है कि उम्मीद से है तो मुझे हक़ीर जानने लगी
है। रब मेरे और आपके दरमियान फ़ैसला करे।”
6अब्राम ने जवाब दिया, “देखो, यह तुम्हारी लौंडी
है और तुम्हारे इख़्तियार में है। जो तुम्हारा जी चाहे
उसके साथ करो।”
इस पर सारय उससे इतना बुरा सुलूक करने
लगी कि हाजिरा फ़रार हो गई। 7रब के फ़रिश्ते
को हाजिरा रेगिस्तान के उस चश्मे के क़रीब मिली

जो शूर के रास्ते पर है। 8उसने कहा, “सारय की
लौंडी हाजिरा, तू कहाँ से आ रही है और कहाँ
जा रही है?” हाजिरा ने जवाब दिया, “मैं अपनी
मालिकन सारय से फ़रार हो रही हूँ।” 9रब के
फ़रिश्ते ने उससे कहा, “अपनी मालिकन के पास
वापस चली जा और उसके ताबे रह। 10मैं तेरी
औलाद इतनी बढ़ाऊँगा कि उसे गिना नहीं जा
सकेगा।” 11रब के फ़रिश्ते ने मज़ीद कहा, “तू
उम्मीद से है। एक बेटा पैदा होगा। उसका नाम
इसमाईल यानी ‘अल्लाह सुनता है’ रख, क्योंकि
रब ने मुसीबत में तेरी आवाज़ सुनी। 12वह जंगली
गधे की मानिंद होगा। उसका हाथ हर एक के
ख़िलाफ़ और हर एक का हाथ उसके ख़िलाफ़
होगा। तो भी वह अपने तमाम भाइयों के सामने
आबाद रहेगा।”

13रब के उसके साथ बात करने के बाद हाजिरा
ने उसका नाम अत्ताएल-रोई यानी ‘तू एक माबूद
है जो मुझे देखता है’ रखा। उसने कहा, “क्या मैंने
वाक़ई उसके पीछे देखा है जिसने मुझे देखा है?”
14इसलिए उस जगह के कुएँ का नाम ‘बैर-लही-
रोई’ यानी ‘उस ज़िंदा हस्ती का कुआँ जो मुझे
देखता है’ पड़ गया। वह क़ादिस और बरद के
दरमियान वाक़े है।

15हाजिरा वापस गई, और उसके बेटा पैदा
हुआ। अब्राम ने उसका नाम इसमाईल रखा।
16उस वक़्त अब्राम 86 साल का था।

अहद का निशान : ख़तना

17 जब अब्राम 99 साल का था तो रब
उस पर ज़ाहिर हुआ। उसने कहा, “मैं
अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ हूँ। मेरे हुज़ूर चलता रह
और बेइलज़ाम हो। 2मैं तेरे साथ अपना अहद
बाँधूँगा और तेरी औलाद को बहुत ही ज़्यादा बढ़ा
दूँगा।”

3अब्राम मुँह के बल गिर गया, और अल्लाह
ने उससे कहा, 4“मेरा तेरे साथ अहद है कि तू
बहुत क़ौमों का बाप होगा। 5अब से तू अब्राम
यानी ‘अज़ीम बाप’ नहीं कहलाएगा बल्कि तेरा
नाम इब्राहीम यानी ‘बहुत क़ौमों का बाप’ होगा।
क्योंकि मैंने तुझे बहुत क़ौमों का बाप बना
दिया है। 6मैं तुझे बहुत ही ज़्यादा औलाद बख़्श
दूँगा, इतनी कि क़ौमें बनेंगी। तुझसे बादशाह भी
निकलेंगे। 7मैं अपना अहद तेरे और तेरी औलाद
के साथ नसल-दर-नसल क़ायम करूँगा, एक
अबदी अहद जिसके मुताबिक़ मैं तेरा और तेरी
औलाद का ख़ुदा हूँगा। 8तू इस वक़्त मुल्के-
कनान में परदेसी है, लेकिन मैं इस पूरे मुल्क को
तुझे और तेरी औलाद को देता हूँ। यह हमेशा तक
उनका ही रहेगा, और मैं उनका ख़ुदा हूँगा।”

9अल्लाह ने इब्राहीम से यह भी कहा, “तुझे
और तेरी औलाद को नसल-दर-नसल मेरे अहद
की शरायत पूरी करनी हैं। 10इसकी एक शर्त
यह है कि हर एक मर्द का ख़तना किया जाए।
11अपना ख़तना कराओ। यह हमारे आपस के
अहद का ज़ाहिरी निशान होगा। 12लाज़िम है कि
तू और तेरी औलाद नसल-दर-नसल अपने हर
एक बेटे का आठवें दिन ख़तना करवाएँ। यह
उसूल उस पर भी लागू है जो तेरे घर में रहता
है लेकिन तुझसे रिश्ता नहीं रखता, चाहे वह घर
में पैदा हुआ हो या किसी अजनबी से ख़रीदा
गया हो। 13घर के हर एक मर्द का ख़तना करना
लाज़िम है, ख़ाह वह घर में पैदा हुआ हो या किसी
अजनबी से ख़रीदा गया हो। यह इस बात का
निशान होगा कि मेरा तेरे साथ अहद हमेशा तक
क़ायम रहेगा। 14जिस मर्द का ख़तना न किया
गया उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाएगा,
क्योंकि उसने मेरे अहद की शरायत पूरी न कीं।”

15अल्लाह ने इब्राहीम से यह भी कहा, “अपनी
बीवी सारय का नाम भी बदल देना। अब से उसका
नाम सारय नहीं बल्कि सारा यानी शहज़ादी होगा।
16मैं उसे बरकत बख़्शूँगा और तुझे उस की
मारिफ़त बेटा दूँगा। मैं उसे यहाँ तक बरकत
दूँगा कि उससे क़ौमें बल्कि क़ौमों के बादशाह
निकलेंगे।”

17इब्राहीम मुँह के बल गिर गया। लेकिन दिल
ही दिल में वह हँस पड़ा और सोचा, “यह किस

तरह हो सकता है? मैं तो 100 साल का हूँ। ऐसे आदमी के हाँ बच्चा किस तरह पैदा हो सकता है? और सारा जैसी उम्ररसीदा औरत के बच्चा किस तरह पैदा हो सकता है? उस की उम्र तो 90 साल है।" 18उसने अल्लाह से कहा, "हाँ, इसमाईल ही तेरे सामने जीता रहे।"

19अल्लाह ने कहा, "नहीं, तेरी बीवी सारा के हाँ बेटा पैदा होगा। तू उसका नाम इसहाक़ यानी 'वह हँसता है' रखना। मैं उसके और उस की औलाद के साथ अबदी अहद बाँधूँगा। 20मैं इसमाईल के सिलसिले में भी तेरी दरख़ास्त पूरी करूँगा। मैं उसे भी बरकत देकर फलने-फूलने दूँगा और उस की औलाद बहुत ही ज़्यादा बढ़ा दूँगा। वह बारह रईसों का बाप होगा, और मैं उस की मारिफ़त एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा। 21लेकिन मेरा अहद इसहाक़ के साथ होगा, जो ऐन एक साल के बाद सारा के हाँ पैदा होगा।"

22अल्लाह की इब्राहीम के साथ बात ख़त्म हुई, और वह उसके पास से आसमान पर चला गया।

23उसी दिन इब्राहीम ने अल्लाह का हुक्म पूरा किया। उसने घर के हर एक मर्द का ख़तना करवाया, अपने बेटे इसमाईल का भी और उनका भी जो उसके घर में रहते लेकिन उससे रिश्ता नहीं रखते थे, चाहे वह उसके घर में पैदा हुए थे या ख़रीदे गए थे। 24इब्राहीम 99 साल का था जब उसका ख़तना हुआ, 25जबकि उसका बेटा इसमाईल 13 साल का था। 26दोनों का ख़तना उसी दिन हुआ। 27साथ साथ घराने के तमाम बाक़ी मर्दों का ख़तना भी हुआ, बशमूल उनके जिनका इब्राहीम के साथ रिश्ता नहीं था, चाहे वह घर में पैदा हुए या किसी अजनबी से ख़रीदे गए थे।

ममरे में इब्राहीम के तीन मेहमान

18 एक दिन रब ममरे के दरख़्तों के पास इब्राहीम पर ज़ाहिर हुआ। इब्राहीम अपने ख़ैमे के दरवाज़े पर बैठा था। दिन की गरमी उरूज पर थी। 2अचानक उसने देखा कि तीन मर्द मेरे सामने खड़े हैं। उन्हें देखते ही वह ख़ैमे से उनसे मिलने के लिए दौड़ा और मुँह के बल गिरकर सिजदा किया। 3उसने कहा, "मेरे आक़ा, अगर मुझ पर आपके करम की नज़र है तो आगे न बढ़ें बल्कि कुछ देर अपने बंदे के घर ठहरें। 4अगर इजाज़त हो तो मैं कुछ पानी ले आऊँ ताकि आप अपने पाँव धोकर दरख़्त के साये में आराम कर सकें। 5साथ साथ मैं आपके लिए थोड़ा-बहुत खाना भी ले आऊँ ताकि आप तक़वियत पाकर आगे बढ़ सकें। मुझे यह करने दें, क्योंकि आप अपने ख़ादिम के घर आ गए हैं।" उन्होंने कहा, "ठीक है। जो कुछ तूने कहा है वह कर।"

6इब्राहीम ख़ैमे की तरफ़ दौड़कर सारा के पास आया और कहा, "जल्दी करो! 16 किलोग्राम बेहतरीन मैदा ले और उसे गूँधकर रोटियाँ बना।" 7फिर वह भागकर बैलों के पास पहुँचा। उनमें से उसने एक मोटा-ताज़ा बछड़ा चुन लिया जिसका गोश्त नरम था और उसे अपने नौकर को दिया जिसने जल्दी से उसे तैयार किया। 8जब खाना तैयार था तो इब्राहीम ने उसे लेकर लस्सी और दूध के साथ अपने मेहमानों के आगे रख दिया। वह खाने लगे और इब्राहीम उनके सामने दरख़्त के साये में खड़ा रहा।

9उन्होंने पूछा, "तेरी बीवी सारा कहाँ है?" उसने जवाब दिया, "ख़ैमे में।" 10रब ने कहा, "ऐन एक साल के बाद मैं वापस आऊँगा तो तेरी बीवी सारा के बेटा होगा।"

सारा यह बातें सुन रही थी, क्योंकि वह उसके पीछे ख़ैमे के दरवाज़े के पास थी। 11दोनों मियाँ-बीवी बूढ़े हो चुके थे और सारा उस उम्र से गुज़र चुकी थी जिसमें औरतों के बच्चे पैदा होते हैं। 12इसलिए सारा अंदर ही अंदर हँस पड़ी और सोचा, "यह कैसे हो सकता है? क्या जब मैं बुढ़ापे के बाइस घिसे-फटे लिबास की मानिंद हूँ तो जवानी के जोबन का लुत्फ़ उठाऊँ? और मेरा शौहर भी बूढ़ा है।"

13रब ने इब्राहीम से पूछा, "सारा क्यों हँस रही है? वह क्यों कह रही है, 'क्या वाक़ई मेरे हाँ बच्चा

पैदा होगा जबकि मैं इतनी उम्रसीदा हूँ?' 14क्या
रब के लिए कोई काम नामुमकिन है? एक साल
के बाद मुक़र्ररा वक़्त पर मैं वापस आऊँगा तो
सारा के बेटा होगा।" 15सारा डर गई। उसने झूट
बोलकर इनकार किया, "मैं नहीं हँस रही थी।"
रब ने कहा, "नहीं, तू ज़रूर हँस रही थी।"

इब्राहीम सदूम के लिए मिन्नत करता है

16फिर मेहमान उठकर रवाना हुए और नीचे
वादी में सदूम की तरफ़ देखने लगे। इब्राहीम उन्हें
रुख़सत करने के लिए साथ साथ चल रहा था।
17रब ने दिल में कहा, "मैं इब्राहीम से वह काम
क्यों छुपाए रखूँ जो मैं करने के लिए जा रहा
हूँ? 18इसी से तो एक बड़ी और ताक़तवर क़ौम
निकलेगी और इसी से मैं दुनिया की तमाम क़ौमों
को बरकत दूँगा। 19उसी को मैंने चुन लिया है
ताकि वह अपनी औलाद और अपने बाद के घराने
को हुक्म दे कि वह रब की राह पर चलकर रास्त
और मुंसिफ़ाना काम करें। क्योंकि अगर वह ऐसा
करें तो रब इब्राहीम के साथ अपना वादा पूरा
करेगा।"

20फिर रब ने कहा, "सदूम और अमूरा की बदी
के बाइस लोगों की आहें बुलंद हो रही हैं, क्योंकि
उनसे बहुत संगीन गुनाह सरज़द हो रहे हैं। 21मैं
उतरकर उनके पास जा रहा हूँ ताकि देखूँ कि यह
इलज़ाम वाक़ई सच हैं जो मुझ तक पहुँचे हैं। अगर
ऐसा नहीं है तो मैं यह जानना चाहता हूँ।"

22दूसरे दो आदमी सदूम की तरफ़ आगे निकले
जबकि रब कुछ देर के लिए वहाँ ठहरा रहा और
इब्राहीम उसके सामने खड़ा रहा। 23फिर उसने
क़रीब आकर उससे बात की, "क्या तू रास्तबाज़ों
को भी शरीरों के साथ तबाह कर देगा? 24हो
सकता है कि शहर में 50 रास्तबाज़ हों। क्या तू
फिर भी शहर को बरबाद कर देगा और उसे उन
50 के सबब से मुआफ़ नहीं करेगा? 25यह कैसे
हो सकता है कि तू बेक़ुसूरों को शरीरों के साथ
हलाक कर दे? यह तो नामुमकिन है कि तू नेक
और शरीर लोगों से एक जैसा सुलूक करे। क्या
लाज़िम नहीं कि पूरी दुनिया का मुंसिफ़ इनसाफ़
करे?"

26रब ने जवाब दिया, "अगर मुझे शहर में 50
रास्तबाज़ मिल जाएँ तो उनके सबब से तमाम को
मुआफ़ कर दूँगा।"

27इब्राहीम ने कहा, "मैं मुआफ़ी चाहता हूँ कि
मैंने रब से बात करने की जुर्रत की है अगरचे मैं
ख़ाक और राख ही हूँ। 28लेकिन हो सकता है कि
सिर्फ़ 45 रास्तबाज़ उसमें हों। क्या तू फिर भी
उन पाँच लोगों की कमी के सबब से पूरे शहर को
तबाह करेगा?" उसने कहा, "अगर मुझे 45 भी
मिल जाएँ तो उसे बरबाद नहीं करूँगा।"

29इब्राहीम ने अपनी बात जारी रखी, "और
अगर सिर्फ़ 40 नेक लोग हों तो?" रब ने कहा,
"मैं उन 40 के सबब से उन्हें छोड़ दूँगा।"

30इब्राहीम ने कहा, "रब ग़ुस्सा न करे कि मैं
एक दफ़ा और बात करूँ। शायद वहाँ सिर्फ़ 30
हों।" उसने जवाब दिया, "फिर भी उन्हें छोड़
दूँगा।"

31इब्राहीम ने कहा, "मैं मुआफ़ी चाहता हूँ कि
मैंने रब से बात करने की जुर्रत की है। अगर सिर्फ़
20 पाए जाएँ?" रब ने कहा, "मैं 20 के सबब
से शहर को बरबाद करने से बाज़ रहूँगा।"

32इब्राहीम ने एक आख़िरी दफ़ा बात की, "रब
ग़ुस्सा न करे अगर मैं एक और बार बात करूँ।
शायद उसमें सिर्फ़ 10 पाए जाएँ।" रब ने कहा,
"मैं उसे उन 10 लोगों के सबब से भी बरबाद नहीं
करूँगा।"

33इन बातों के बाद रब चला गया और इब्राहीम
अपने घर को लौट आया।

सदूम और अमूरा की तबाही

19 शाम के वक़्त यह दो फ़रिश्ते
सदूम पहुँचे। लूत शहर के दर-
वाज़े पर बैठा था। जब उसने उन्हें देखा तो खड़े
होकर उनसे मिलने गया और मुँह के बल गिरकर
सिजदा किया। 2उसने कहा, "साहबो, अपने बंदे
के घर तशरीफ़ लाएँ ताकि अपने पाँव धोकर रात

को ठहरें और फिर कल सुबह-सवेरे उठकर अपना
सफ़र जारी रखें।" उन्होंने कहा, "कोई बात नहीं,
हम चौक में रात गुज़ारेंगे।" 3लेकिन लूत ने उन्हें
बहुत मजबूर किया, और आख़िरकार वह उसके
साथ उसके घर आए। उसने उनके लिए खाना
पकाया और बेख़मीरी रोटी बनाई। फिर उन्होंने
खाना खाया।
4वह अभी सोने के लिए लेटे नहीं थे कि शहर
के जवानों से लेकर बूढ़ों तक तमाम मर्दों ने लूत
के घर को घेर लिया। 5उन्होंने आवाज़ देकर लूत
से कहा, "वह आदमी कहाँ हैं जो रात के वक़्त
तेरे पास आए? उनको बाहर ले आ ताकि हम
उनके साथ हरामकारी करें।"
6लूत उनसे मिलने बाहर गया। उसने अपने
पीछे दरवाज़ा बंद कर लिया 7और कहा, "मेरे
भाइयो, ऐसा मत करो, ऐसी बदकारी न करो।
8देखो, मेरी दो कुँवारी बेटियाँ हैं। उन्हें मैं तुम्हारे
पास बाहर ले आता हूँ। फिर जो जी चाहे उनके
साथ करो। लेकिन इन आदमियों को छोड़ दो,
क्योंकि वह मेरे मेहमान हैं।"
9उन्होंने कहा, "रास्ते से हट जा! देखो, यह
शख़्स जब हमारे पास आया था तो अजनबी था,
और अब यह हम पर हाकिम बनना चाहता है।
अब तेरे साथ उनसे ज़्यादा बुरा सुलूक करेंगे।" वह
उसे मजबूर करते करते दरवाज़े को तोड़ने के लिए
आगे बढ़े। 10लेकिन ऐन वक़्त पर अंदर के आदमी
लूत को पकड़कर अंदर ले आए, फिर दरवाज़ा
दुबारा बंद कर दिया। 11उन्होंने छोटों से लेकर
बड़ों तक बाहर के तमाम आदमियों को अंधा कर
दिया, और वह दरवाज़े को ढूँडते ढूँडते थक गए।
12दोनों आदमियों ने लूत से कहा, "क्या तेरा
कोई और रिश्तेदार इस शहर में रहता है, मसलन
कोई दामाद या बेटा-बेटी? सबको साथ लेकर
यहाँ से चला जा, 13क्योंकि हम यह मक़ाम तबाह
करने को हैं। इसके बाशिंदों की बदी के बाइस
लोगों की आहें बुलंद होकर रब के हुज़ूर पहुँच गई
हैं, इसलिए उसने हमें इसको तबाह करने के लिए
भेजा है।"
14लूत घर से निकला और अपने दामादों से
बात की जिनका उस की बेटियों के साथ रिश्ता
हो चुका था। उसने कहा, "जल्दी करो, इस जगह
से निकलो, क्योंकि रब इस शहर को तबाह करने
को है।" लेकिन उसके दामादों ने इसे मज़ाक़ ही
समझा।
15जब पौ फटने लगी तो दोनों आदमियों ने
लूत को बहुत समझाया और कहा, "जल्दी कर!
अपनी बीवी और दोनों बेटियों को साथ लेकर
चला जा, वरना जब शहर को सज़ा दी जाएगी
तो तू भी हलाक हो जाएगा।" 16तो भी वह
झिजकता रहा। आख़िरकार दोनों ने लूत, उस की
बीवी और बेटियों के हाथ पकड़कर उन्हें शहर के
बाहर तक पहुँचा दिया, क्योंकि रब को लूत पर
तरस आता था।
17ज्योंही वह उन्हें बाहर ले आए उनमें से
एक ने कहा, "अपनी जान बचाकर चला जा।
पीछे मुड़कर न देखना। मैदान में कहीं न ठहरना
बल्कि पहाड़ों में पनाह लेना, वरना तू हलाक हो
जाएगा।"
18लेकिन लूत ने उनसे कहा, "नहीं मेरे आक़ा,
ऐसा न हो। 19तेरे बंदे को तेरी नज़रे-करम हासिल
हुई है और तूने मेरी जान बचाने में बहुत मेहरबानी
कर दिखाई है। लेकिन मैं पहाड़ों में पनाह नहीं ले
सकता। वहाँ पहुँचने से पहले यह मुसीबत मुझ पर
आन पड़ेगी और मैं हलाक हो जाऊँगा। 20देख,
क़रीब ही एक छोटा क़सबा है। वह इतना नज़दीक
है कि मैं उस तरफ़ हिजरत कर सकता हूँ। मुझे
वहाँ पनाह लेने दे। वह छोटा ही है, ना? फिर मेरी
जान बचेगी।"
21उसने कहा, "चलो, ठीक है। तेरी यह
दरख़ास्त भी मंज़ूर है। मैं यह क़सबा तबाह नहीं
करूँगा। 22लेकिन भागकर वहाँ पनाह ले, क्योंकि
जब तक तू वहाँ पहुँच न जाए मैं कुछ नहीं कर
सकता।" इसलिए क़सबे का नाम ज़ुग़र यानी
छोटा है।
23जब लूत ज़ुग़र पहुँचा तो सूरज निकला हुआ
था। 24तब रब ने आसमान से सदूम और अमूरा

पर गंधक और आग बरसाई। 25यों उसने उस
पूरे मैदान को उसके शहरों, बाशिंदों और तमाम
हरियाली समेत तबाह कर दिया। 26लेकिन फ़रार
होते वक़्त लूत की बीवी ने पीछे मुड़कर देखा तो
वह फ़ौरन नमक का सतून बन गई।

27इब्राहीम सुबह-सवेरे उठकर उस जगह
वापस आया जहाँ वह कल रब के सामने खड़ा
हुआ था। 28जब उसने नीचे सदूम, अमूरा और
पूरी वादी की तरफ़ नज़र की तो वहाँ से भट्टे का-
सा धुआँ उठ रहा था।

29यों अल्लाह ने इब्राहीम को याद किया जब
उसने उस मैदान के शहर तबाह किए। क्योंकि
वह उन्हें तबाह करने से पहले लूत को जो उनमें
आबाद था वहाँ से निकाल लाया।

लूत और उस की बेटियाँ

30लूत और उस की बेटियाँ ज़्यादा देर तक
ज़ुग़र में न ठहरे। वह रवाना होकर पहाड़ों में
आबाद हुए, क्योंकि लूत ज़ुग़र में रहने से डरता
था। वहाँ उन्होंने एक ग़ार को अपना घर बना
लिया।

31एक दिन बड़ी बेटी ने छोटी से कहा, "अब्बू
बूढ़ा है और यहाँ कोई मर्द है नहीं जिसके ज़रीए
हमारे बच्चे पैदा हो सकें। 32आओ, हम अब्बू को
मै पिलाएँ। जब वह नशे में धुत हो तो हम उसके
साथ हमबिसतर होकर अपने लिए औलाद पैदा
करें ताकि हमारी नसल क़ायम रहे।"

33उस रात उन्होंने अपने बाप को मै पिलाई।
जब वह नशे में था तो बड़ी बेटी अंदर जाकर उसके
साथ हमबिसतर हुई। चूँकि लूत होश में नहीं था
इसलिए उसे कुछ भी मालूम न हुआ। 34अगले
दिन बड़ी बहन ने छोटी बहन से कहा, "पिछली
रात मैं अब्बू से हमबिसतर हुई। आओ, आज
रात को हम उसे दुबारा मै पिलाएँ। जब वह नशे
में धुत हो तो तुम उसके साथ हमबिसतर होकर
अपने लिए औलाद पैदा करना ताकि हमारी नसल
क़ायम रहे।" 35चुनाँचे उन्होंने उस रात भी अपने
बाप को मै पिलाई। जब वह नशे में था तो छोटी
बेटी उठकर उसके साथ हमबिसतर हुई। इस बार
भी वह होश में नहीं था, इसलिए उसे कुछ भी
मालूम न हुआ।

36यों लूत की बेटियाँ अपने बाप से उम्मीद
से हुईं। 37बड़ी बेटी के हाँ बेटा पैदा हुआ। उसने
उसका नाम मोआब रखा। उससे मोआबी निकले
हैं। 38छोटी बेटी के हाँ भी बेटा पैदा हुआ। उसने
उसका नाम बिन-अम्मी रखा। उससे अम्मोनी
निकले हैं।

इब्राहीम और अबीमलिक

20 इब्राहीम वहाँ से जुनूब की तरफ़ दश्ते-
नजब में चला गया और क़ादिस और
शूर के दरमियान जा बसा। कुछ देर के लिए वह
जिरार में ठहरा, लेकिन अजनबी की हैसियत से।
2वहाँ उसने लोगों को बताया, "सारा मेरी बहन
है।" इसलिए जिरार के बादशाह अबीमलिक ने
किसी को भिजवा दिया कि उसे महल में ले आए।

3लेकिन रात के वक़्त अल्लाह ख़ाब में
अबीमलिक पर ज़ाहिर हुआ और कहा, "मौत तेरे
सर पर खड़ी है, क्योंकि जो औरत तू अपने घर
ले आया है वह शादीशुदा है।"

4असल में अबीमलिक अभी तक सारा के
क़रीब नहीं गया था। उसने कहा, "मेरे आक़ा,
क्या तू एक बेक़ुसूर क़ौम को भी हलाक करेगा?
5क्या इब्राहीम ने मुझसे नहीं कहा था कि सारा
मेरी बहन है? और सारा ने उस की हाँ में हाँ
मिलाई। मेरी नीयत अच्छी थी और मैंने ग़लत
काम नहीं किया।" 6अल्लाह ने कहा, "हाँ,
मैं जानता हूँ कि इसमें तेरी नीयत अच्छी थी।
इसलिए मैंने तुझे मेरा गुनाह करने और उसे छूने
से रोक दिया। 7अब उस औरत को उसके शौहर
को वापस कर दे, क्योंकि वह नबी है और तेरे लिए
दुआ करेगा। फिर तू नहीं मरेगा। लेकिन अगर तू
उसे वापस नहीं करेगा तो जान ले कि तेरी और
तेरे लोगों की मौत यक़ीनी है।"

8अबीमलिक ने सुबह-सवेरे उठकर अपने
तमाम कारिंदों को यह सब कुछ बताया। यह

सुनकर उन पर दहशत छा गई। 9फिर अबीमलिक
ने इब्राहीम को बुलाकर कहा, “आपने हमारे साथ
क्या किया है? मैंने आपके साथ क्या ग़लत काम
किया कि आपने मुझे और मेरी सलतनत को इतने
संगीन जुर्म में फँसा दिया है? जो सुलूक आपने
हमारे साथ कर दिखाया है वह किसी भी शख़्स
के साथ नहीं करना चाहिए। 10आपने यह क्यों
किया?”

11इब्राहीम ने जवाब दिया, “मैंने अपने दिल
में कहा कि यहाँ के लोग अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं
रखते होंगे, इसलिए वह मेरी बीवी को हासिल
करने के लिए मुझे क़त्ल कर देंगे। 12हक़ीक़त
में वह मेरी बहन भी है। वह मेरे बाप की बेटी है
अगरचे उस की और मेरी माँ फ़रक़ हैं। यों मैं उससे
शादी कर सका। 13फिर जब अल्लाह ने होने दिया
कि मैं अपने बाप के घराने से निकलकर इधर-
उधर फिरूँ तो मैंने अपनी बीवी से कहा, ‘मुझ पर
यह मेहरबानी कर कि जहाँ भी हम जाएँ मेरे बारे
में कह देना कि वह मेरा भाई है’।”

14फिर अबीमलिक ने इब्राहीम को भेड़-
बकरियाँ, गाय-बैल, ग़ुलाम और लौंडियाँ देकर
उस की बीवी सारा को उसे वापस कर दिया।
15उसने कहा, “मेरा मुल्क आपके लिए खुला है।
जहाँ जी चाहे उसमें जा बसें।” 16सारा से उसने
कहा, “मैं आपके भाई को चाँदी के हज़ार सिक्के
देता हूँ। इससे आप और आपके लोगों के सामने
आपके साथ किए गए नारवा सुलूक का इज़ाला
हो और आपको बेक़ुसूर क़रार दिया जाए।”

17-18तब इब्राहीम ने अल्लाह से दुआ की
और अल्लाह ने अबीमलिक, उस की बीवी और
उस की लौंडियों को शफ़ा दी, क्योंकि रब ने
अबीमलिक के घराने की तमाम औरतों को सारा
के सबब से बाँझ बना दिया था। लेकिन अब उनके
हाँ दुबारा बच्चे पैदा होने लगे।

इसहाक़ की पैदाइश

21 तब रब ने सारा के साथ वैसा ही किया
जैसा उसने फ़रमाया था। जो वादा
उसने सारा के बारे में किया था उसे उसने पूरा
किया। 2वह हामिला हुई और बेटा पैदा हुआ। ऐन
उस वक़्त बूढ़े इब्राहीम के हाँ बेटा पैदा हुआ जो
अल्लाह ने मुक़र्रर करके उसे बताया था।

3इब्राहीम ने अपने इस बेटे का नाम इसहाक़
यानी ‘वह हँसता है’ रखा। 4जब इसहाक़ आठ
दिन का था तो इब्राहीम ने उसका ख़तना कराया,
जिस तरह अल्लाह ने उसे हुक्म दिया था। 5जब
इसहाक़ पैदा हुआ उस वक़्त इब्राहीम 100 साल
का था। 6सारा ने कहा, “अल्लाह ने मुझे हँसाया,
और हर कोई जो मेरे बारे में यह सुनेगा हँसेगा।
7इससे पहले कौन इब्राहीम से यह कहने की जुर्रत
कर सकता था कि सारा अपने बच्चों को दूध
पिलाएगी? और अब मेरे हाँ बेटा पैदा हुआ है,
अगरचे इब्राहीम बूढ़ा हो गया है।”

8इसहाक़ बड़ा होता गया। जब उसका दूध
छुड़ाया गया तो इब्राहीम ने उसके लिए बड़ी
ज़ियाफ़त की।

इब्राहीम हाजिरा और इसमाईल को निकाल देता है

9एक दिन सारा ने देखा कि मिसरी लौंडी
हाजिरा का बेटा इसमाईल इसहाक़ का मज़ाक़
उड़ा रहा है। 10उसने इब्राहीम से कहा, “इस
लौंडी और उसके बेटे को घर से निकाल दें,
क्योंकि वह मेरे बेटे इसहाक़ के साथ मीरास नहीं
पाएगा।”

11इब्राहीम को यह बात बहुत बुरी लगी।
आख़िर इसमाईल भी उसका बेटा था। 12लेकिन
अल्लाह ने उससे कहा, “जो बात सारा ने अपनी
लौंडी और उसके बेटे के बारे में कही है वह तुझे
बुरी न लगे। सारा की बात मान ले, क्योंकि तेरी
नसल इसहाक़ ही से क़ायम रहेगी। 13लेकिन मैं
इसमाईल से भी एक क़ौम बनाऊँगा, क्योंकि वह
तेरा बेटा है।”

14इब्राहीम सुबह-सवेरे उठा। उसने रोटी और
पानी की मशक हाजिरा के कंधों पर रखकर उसे
लड़के के साथ घर से निकाल दिया। हाजिरा

चलते चलते बैर-सबा के रेगिस्तान में इधर-उधर
फिरने लगी। 15फिर पानी ख़त्म हो गया। हाजिरा
लड़के को किसी झाड़ी के नीचे छोड़कर 16कोई
300 फ़ुट दूर बैठ गई। क्योंकि उसने दिल में
कहा, “मैं उसे मरते नहीं देख सकती।” वह वहाँ
बैठकर रोने लगी।

17लेकिन अल्लाह ने बेटे की रोती हुई आवाज़
सुन ली। अल्लाह के फ़रिश्ते ने आसमान पर से
पुकारकर हाजिरा से बात की, “हाजिरा, क्या
बात है? मत डर, क्योंकि अल्लाह ने लड़के का
जो वहाँ पड़ा है रोना सुन लिया है। 18उठ, लड़के
को उठाकर उसका हाथ थाम ले, क्योंकि मैं उससे
एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा।”

19फिर अल्लाह ने हाजिरा की आँखें खोल दीं,
और उस की नज़र एक कुएँ पर पड़ी। वह वहाँ
गई और मशक को पानी से भरकर लड़के को
पिलाया।

20अल्लाह लड़के के साथ था। वह जवान हुआ
और तीरअंदाज़ बनकर बयाबान में रहने लगा।
21जब वह फ़ारान के रेगिस्तान में रहता था तो
उस की माँ ने उसे एक मिसरी औरत से ब्याह
दिया।

अबीमलिक के साथ अहद

22उन दिनों में अबीमलिक और उसके
सिपाहसालार फ़ीकुल ने इब्राहीम से कहा, “जो
कुछ भी आप करते हैं अल्लाह आपके साथ है।
23अब मुझसे अल्लाह की क़सम खाएँ कि आप
मुझे और मेरी आलो-औलाद को धोका नहीं देंगे।
मुझ पर और इस मुल्क पर जिसमें आप परदेसी
हैं वही मेहरबानी करें जो मैंने आप पर की है।”

24इब्राहीम ने जवाब दिया, “मैं क़सम खाता
हूँ।” 25फिर उसने अबीमलिक से शिकायत करते
हुए कहा, “आपके बंदों ने हमारे एक कुएँ पर
क़ब्ज़ा कर लिया है।” 26अबीमलिक ने कहा,
“मुझे नहीं मालूम कि किसने ऐसा किया है।
आपने भी मुझे नहीं बताया। आज मैं पहली दफ़ा
यह बात सुन रहा हूँ।”

27तब इब्राहीम ने अबीमलिक को भेड़-
बकरियाँ और गाय-बैल दिए, और दोनों ने एक
दूसरे के साथ अहद बाँधा। 28फिर इब्राहीम
ने भेड़ के सात मादा बच्चों को अलग कर
लिया। 29अबीमलिक ने पूछा, “आपने यह क्यों
किया?” 30इब्राहीम ने जवाब दिया, “भेड़ के इन
सात बच्चों को मुझसे ले लें। यह इसके गवाह हों
कि मैंने इस कुएँ को खोदा है।” 31इसलिए उस
जगह का नाम बैर-सबा यानी ‘क़सम का कुआँ’
रखा गया, क्योंकि वहाँ उन दोनों मर्दों ने क़सम
खाई।

32यों उन्होंने बैर-सबा में एक दूसरे से
अहद बाँधा। फिर अबीमलिक और फ़ीकुल
फ़िलिस्तियों के मुल्क वापस चले गए। 33इसके
बाद इब्राहीम ने बैर-सबा में झाऊ का दरख़्त
लगाया। वहाँ उसने रब का नाम लेकर उस की
इबादत की जो अबदी ख़ुदा है। 34इब्राहीम बहुत
अरसे तक फ़िलिस्तियों के मुल्क में आबाद रहा,
लेकिन अजनबी की हैसियत से।

इब्राहीम की आज़माइश

22 कुछ अरसे के बाद अल्लाह ने इब्राहीम
को आज़माया। उसने उससे कहा,
“इब्राहीम!” उसने जवाब दिया, “जी, मैं हाज़िर
हूँ।” 2अल्लाह ने कहा, “अपने इकलौते बेटे
इसहाक़ को जिसे तू प्यार करता है साथ लेकर
मोरियाह के इलाक़े में चला जा। वहाँ मैं तुझे एक
पहाड़ दिखाऊँगा। उस पर अपने बेटे को क़ुरबान
कर दे। उसे ज़बह करके क़ुरबानगाह पर जला
देना।”

3सुबह-सवेरे इब्राहीम उठा और अपने गधे पर
ज़ीन कसा। उसने अपने साथ दो नौकरों और
अपने बेटे इसहाक़ को लिया। फिर वह क़ुरबानी
को जलाने के लिए लकड़ी काटकर उस जगह की
तरफ़ रवाना हुआ जो अल्लाह ने उसे बताई थी।
4सफ़र करते करते तीसरे दिन क़ुरबानी की जगह
इब्राहीम को दूर से नज़र आई। 5उसने नौकरों
से कहा, “यहाँ गधे के पास ठहरो। मैं लड़के

के साथ वहाँ जाकर परस्तिश करूँगा। फिर हम
तुम्हारे पास वापस आ जाएंगे।”
6इब्राहीम ने क़ुरबानी को जलाने के लिए
लकड़ियाँ इसहाक़ के कंधों पर रख दीं और
ख़ुद छुरी और आग जलाने के लिए अंगारों का
बरतन उठाया। दोनों चल दिए। 7इसहाक़ बोला,
“अब्बू!” इब्राहीम ने कहा, “जी बेटा।” “अब्बू,
आग और लकड़ियाँ तो हमारे पास हैं, लेकिन
क़ुरबानी के लिए भेड़ या बकरी कहाँ है?”
8इब्राहीम ने जवाब दिया, “अल्लाह ख़ुद क़ुरबानी
के लिए जानवर मुहैया करेगा, बेटा।” वह आगे
बढ़ गए।
9चलते चलते वह उस मक़ाम पर पहुँचे जो
अल्लाह ने उस पर ज़ाहिर किया था। इब्राहीम
ने वहाँ क़ुरबानगाह बनाई और उस पर लकड़ियाँ
तरतीब से रख दीं। फिर उसने इसहाक़ को
बाँधकर लकड़ियों पर रख दिया 10और छुरी
पकड़ ली ताकि अपने बेटे को ज़बह करे। 11ऐन
उसी वक़्त रब के फ़रिश्ते ने आसमान पर से उसे
आवाज़ दी, “इब्राहीम, इब्राहीम!” इब्राहीम ने
कहा, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” 12फ़रिश्ते ने कहा,
“अपने बेटे पर हाथ न चला, न उसके साथ कुछ
कर। अब मैंने जान लिया है कि तू अल्लाह का
ख़ौफ़ रखता है, क्योंकि तू अपने इकलौते बेटे को
भी मुझे देने के लिए तैयार है।”
13अचानक इब्राहीम को एक मेंढा नज़र आया
जिसके सींग गुंजान झाड़ियों में फँसे हुए थे।
इब्राहीम ने उसे ज़बह करके अपने बेटे की जगह
क़ुरबानी के तौर पर जला दिया। 14उसने उस
मक़ाम का नाम “रब मुहैया करता है” रखा।
इसलिए आज तक कहा जाता है, “रब के पहाड़
पर मुहैया किया जाता है।”
15रब के फ़रिश्ते ने एक बार फिर आसमान पर
से पुकारकर उससे बात की। 16“रब का फ़रमान
है, मेरी ज़ात की क़सम, चूँकि तूने यह किया और
अपने इकलौते बेटे को मुझे पेश करने के लिए
तैयार था 17इसलिए मैं तुझे बरकत दूँगा और तेरी
औलाद को आसमान के सितारों और साहिल की
रेत की तरह बेशुमार होने दूँगा। तेरी औलाद अपने
दुश्मनों के शहरों के दरवाज़ों पर क़ब्ज़ा करेगी।
18चूँकि तूने मेरी सुनी इसलिए तेरी औलाद से
दुनिया की तमाम क़ौमें बरकत पाएँगी।”
19इसके बाद इब्राहीम अपने नौकरों के पास
वापस आया, और वह मिलकर बैर-सबा लौटे।
वहाँ इब्राहीम आबाद रहा।
20इन वाक़ियात के बाद इब्राहीम को इत्तला
मिली, “आपके भाई नहूर की बीवी मिलकाह के
हाँ भी बेटे पैदा हुए हैं। 21उसके पहलौठे ऊज़ के
बाद बूज़, क़मुएल (अराम का बाप), 22कसद,
हज़ू, फ़िलदास, इदलाफ़ और बतुएल पैदा हुए
हैं।” 23मिलकाह और नहूर के हाँ यह आठ बेटे
पैदा हुए। (बतुएल रिबक़ा का बाप था)। 24नहूर
की हरम का नाम रूमा था। उसके हाँ भी बेटे पैदा
हुए जिनके नाम तिबख़, जाहम, तख़स और माका
हैं।

सारा की वफ़ात

23 सारा 127 साल की उम्र में हबरून
में इंतक़ाल कर गई। 2उस ज़माने
में हबरून का नाम क़िरियत-अरबा था, और
वह मुल्के-कनान में था। इब्राहीम ने उसके पास
आकर मातम किया। 3फिर वह जनाज़े के पास
से उठा और हित्तियों से बात की। उसने कहा,
4“मैं आपके दरमियान परदेसी और ग़ैरशहरी की
हैसियत से रहता हूँ। मुझे क़ब्र के लिए ज़मीन
बेचें ताकि अपनी बीवी को अपने घर से ले जाकर
दफ़न कर सकूँ।” 5-6हित्तियों ने जवाब दिया,
“हमारे आक़ा, हमारी बात सुनें! आप हमारे
दरमियान अल्लाह के रईस हैं। अपनी बीवी को
हमारी बेहतरीन क़ब्र में दफ़न करें। हममें से कोई
नहीं जो आपसे अपनी क़ब्र का इनकार करेगा।”
7इब्राहीम उठा और मुल्क के बाशिंदों यानी
हित्तियों के सामने ताज़ीमन झुक गया। 8उसने
कहा, “अगर आप इसके लिए तैयार हैं कि मैं
अपनी बीवी को अपने घर से ले जाकर दफ़न
करूँतो सुहर के बेटे इफ़रोन से मेरी सिफ़ारिश

करें 9कि वह मुझे मकफ़ीला का ग़ार बेच दे। वह
उसका है और उसके खेत के किनारे पर है। मैं उस
की पूरी क़ीमत देने के लिए तैयार हूँ ताकि आपके
दरमियान रहते हुए मेरे पास क़ब्र भी हो।”
10इफ़रोन हित्तियों की जमात में मौजूद था।
इब्राहीम की दरख़ास्त पर उसने उन तमाम
हित्तियों के सामने जो शहर के दरवाज़े पर जमा
थे जवाब दिया, 11“नहीं, मेरे आक़ा! मेरी बात
सुनें। मैं आपको यह खेत और उसमें मौजूद ग़ार
दे देता हूँ। सब जो हाज़िर हैं मेरे गवाह हैं, मैं यह
आपको देता हूँ। अपनी बीवी को वहाँ दफ़न कर
दें।”
12इब्राहीम दुबारा मुल्क के बाशिंदों के सामने
अदबन झुक गया। 13उसने सबके सामने इफ़रोन
से कहा, “मेहरबानी करके मेरी बात पर ग़ौर करें।
मैं खेत की पूरी क़ीमत अदा करूँगा। उसे क़बूल
करें ताकि वहाँ अपनी बीवी को दफ़न कर सकूँ।”
14-15इफ़रोन ने जवाब दिया, “मेरे आक़ा, सुनें।
इस ज़मीन की क़ीमत सिर्फ़ 400 चाँदी के सिक्के
है।[a] आपके और मेरे दरमियान यह क्या है?
अपनी बीवी को दफ़न कर दें।”
16इब्राहीम ने इफ़रोन की मतलूबा क़ीमत मान
ली और सबके सामने चाँदी के 400 सिक्के
तोलकर इफ़रोन को दे दिए। इसके लिए उसने
उस वक़्त के रायज बाट इस्तेमाल किए। 17चुनाँचे
मकफ़ीला में इफ़रोन की ज़मीन इब्राहीम की
मिलकियत हो गई। यह ज़मीन ममरे के मशरिक़
में थी। उसमें खेत, खेत का ग़ार और खेत की हुदूद
में मौजूद तमाम दरख़्त शामिल थे। 18हित्तियों
की पूरी जमात ने जो शहर के दरवाज़े पर जमा
थी ज़मीन के इंतक़ाल की तसदीक़ की। 19फिर
इब्राहीम ने अपनी बीवी सारा को मुल्के-कनान के
उस ग़ार में दफ़न किया जो ममरे यानी हबरून के
मशरिक़ में वाक़े मकफ़ीला के खेत में था। 20इस
तरीक़े से यह खेत और उसका ग़ार हित्तियों से
इब्राहीम के नाम पर मुंतक़िल कर दिया गया ताकि
उसके पास क़ब्र हो।

इसहाक़ और रिबक़ा

24 इब्राहीम अब बहुत बूढ़ा हो गया था।
रब ने उसे हर लिहाज़ से बरकत दी
थी। 2एक दिन उसने अपने घर के सबसे बुज़ुर्ग
नौकर से जो उस की जायदाद का पूरा इंतज़ाम
चलाता था बात की। “क़सम के लिए अपना हाथ
मेरी रान के नीचे रखो। 3रब की क़सम खाओ
जो आसमानो-ज़मीन का ख़ुदा है कि तुम इन
कनानियों में से जिनके दरमियान मैं रहता हूँ मेरे
बेटे के लिए बीवी नहीं लाओगे 4बल्कि मेरे वतन
में मेरे रिश्तेदारों के पास जाओगे और उन्हीं में से
मेरे बेटे के लिए बीवी लाओगे।” 5उसके नौकर
ने कहा, “शायद वह औरत मेरे साथ यहाँ आना
न चाहे। क्या मैं इस सूरत में आपके बेटे को
उस वतन में वापस ले जाऊँ जिससे आप निकले
हैं?” 6इब्राहीम ने कहा, “ख़बरदार! उसे हरगिज़
वापस न ले जाना। 7रब जो आसमान का ख़ुदा है
अपना फ़रिश्ता तुम्हारे आगे भेजेगा, इसलिए तुम
वहाँ मेरे बेटे के लिए बीवी चुनने में ज़रूर कामयाब
होगे। क्योंकि वही मुझे मेरे बाप के घर और मेरे
वतन से यहाँ ले आया है, और उसी ने क़सम
खाकर मुझसे वादा किया है कि मैं कनान का यह
मुल्क तेरी औलाद को दूँगा। 8अगर वहाँ की औरत
यहाँ आना न चाहे तो फिर तुम अपनी क़सम से
आज़ाद होगे। लेकिन किसी सूरत में भी मेरे बेटे
को वहाँ वापस न ले जाना।”
9इब्राहीम के नौकर ने अपना हाथ उस की
रान के नीचे रखकर क़सम खाई कि मैं सब कुछ
ऐसा ही करूँगा। 10फिर वह अपने आक़ा के दस
ऊँटों पर क़ीमती तोह्फ़े लादकर मसोपुतामिया
की तरफ़ रवाना हुआ। चलते चलते वह नहूर के
शहर पहुँच गया।
11उसने ऊँटों को शहर के बाहर कुएँ के पास
बिठाया। शाम का वक़्त था जब औरतें कुएँ के

[a]तक़रीबन साढ़े चार किलोग्राम चाँदी।

पास आकर पानी भरती थीं। 12फिर उसने दुआ
की, “ऐ रब मेरे आक़ा इब्राहीम के ख़ुदा, मुझे
आज कामयाबी बख़्श और मेरे आक़ा इब्राहीम
पर मेहरबानी कर। 13अब मैं इस चश्मे पर खड़ा
हूँ, और शहर की बेटियाँ पानी भरने के लिए आ
रही हैं। 14मैं उनमें से किसी से कहूँगा, ‘ज़रा
अपना घड़ा नीचे करके मुझे पानी पिलाएँ।’ अगर
वह जवाब दे, ‘पी लें, मैं आपके ऊँटों को भी
पानी पिला देती हूँ,’ तो वह वही होगी जिसे तूने
अपने ख़ादिम इसहाक़ के लिए चुन रखा है। अगर
ऐसा हुआ तो मैं जान लूँगा कि तूने मेरे आक़ा पर
मेहरबानी की है।”

15वह अभी दुआ कर ही रहा था कि रिबक़ा
शहर से निकल आई। उसके कंधे पर घड़ा था।
वह बतुएल की बेटी थी (बतुएल इब्राहीम के भाई
नहूर की बीवी मिलकाह का बेटा थी)। 16रिबक़ा
निहायत ख़ूबसूरत जवान लड़की थी, और वह
कुँवारी भी थी। वह चश्मे तक उतरी, अपना घड़ा
भरा और फिर वापस ऊपर आई।

17इब्राहीम का नौकर दौड़कर उससे मिला।
उसने कहा, “ज़रा मुझे अपने घड़े से थोड़ा-सा
पानी पिलाएँ।” 18रिबक़ा ने कहा, “जनाब, पी
लें।” जल्दी से उसने अपने घड़े को कंधे पर
से उतारकर हाथ में पकड़ा ताकि वह पी सके।
19जब वह पीने से फ़ारिग़ हुआ तो रिबक़ा ने कहा,
“मैं आपके ऊँटों के लिए भी पानी ले आती हूँ। वह
भी पूरे तौर पर अपनी प्यास बुझाएँ।” 20जल्दी
से उसने अपने घड़े का पानी हौज़ में उंडेल दिया
और फिर भागकर कुएँ से इतना पानी लाती रही
कि तमाम ऊँटों की प्यास बुझ गई।

21इतने में इब्राहीम का आदमी ख़ामोशी से उसे
देखता रहा, क्योंकि वह जानना चाहता था कि
क्या रब मुझे सफ़र की कामयाबी बख़्शेगा या
नहीं। 22ऊँट पानी पीने से फ़ारिग़ हुए तो उसने
रिबक़ा को सोने की एक नथ और दो कंगन दिए।
नथ का वज़न तक़रीबन 6 ग्राम था और कंगनों
का 120 ग्राम।

23उसने पूछा, “आप किसकी बेटी हैं? क्या
उसके हाँ इतनी जगह है कि हम वहाँ रात गुज़ार
सकें?”

24रिबक़ा ने जवाब दिया, “मेरा बाप बतुएल
है। वह नहूर और मिलकाह का बेटा है। 25हमारे
पास भूसा और चारा है। रात गुज़ारने के लिए
भी काफ़ी जगह है।” 26यह सुनकर इब्राहीम के
नौकर ने रब को सिजदा किया। 27उसने कहा,
“मेरे आक़ा इब्राहीम के ख़ुदा की तमजीद हो
जिसके करम और वफ़ादारी ने मेरे आक़ा को नहीं
छोड़ा। रब ने मुझे सीधा मेरे मालिक के रिश्तेदारों
तक पहुँचाया है।”

28लड़की भागकर अपनी माँ के घर चली गई।
वहाँ उसने सब कुछ बता दिया जो हुआ था।
29-30जब रिबक़ा के भाई लाबन ने नथ और बहन
की कलाइयों में कंगनों को देखा और वह सब कुछ
सुना जो इब्राहीम के नौकर ने रिबक़ा को बताया
था तो वह फ़ौरन कुएँ की तरफ़ दौड़ा।

इब्राहीम का नौकर अब तक ऊँटों समेत वहाँ
खड़ा था। 31लाबन ने कहा, “रब के मुबारक बंदे,
मेरे साथ आएँ। आप यहाँ शहर के बाहर क्यों खड़े
हैं? मैंने अपने घर में आपके लिए सब कुछ तैयार
किया है। आपके ऊँटों के लिए भी काफ़ी जगह
है।” 32वह नौकर को लेकर घर पहुँचा। ऊँटों से
सामान उतारा गया, और उनको भूसा और चारा
दिया गया। पानी भी लाया गया ताकि इब्राहीम
का नौकर और उसके आदमी अपने पाँव धोएँ।

33लेकिन जब खाना आ गया तो इब्राहीम के
नौकर ने कहा, “इससे पहले कि मैं खाना खाऊँ
लाज़िम है कि अपना मामला पेश करूँ।” लाबन
ने कहा, “बताएँ अपनी बात।” 34उसने कहा,
“मैं इब्राहीम का नौकर हूँ। 35रब ने मेरे आक़ा
को बहुत बरकत दी है। वह बहुत अमीर बन गया
है। रब ने उसे कसरत से भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल,
सोना-चाँदी, ग़ुलाम और लौंडियाँ, ऊँट और गधे
दिए हैं। 36जब मेरे मालिक की बीवी बूढ़ी हो गई
थी तो उसके बेटा पैदा हुआ था। इब्राहीम ने उसे
अपनी पूरी मिलकियत दे दी है। 37लेकिन मेरे

आक़ा ने मुझसे कहा, 'क़सम खाओ कि तुम इन
कनानियों में से जिनके दरमियान मैं रहता हूँ मेरे
बेटे के लिए बीवी नहीं लाओगे 38बल्कि मेरे बाप
के घराने और मेरे रिश्तेदारों के पास जाकर उसके
लिए बीवी लाओगे।' 39मैंने अपने मालिक से
कहा, 'शायद वह औरत मेरे साथ आना न चाहे।'
40उसने कहा, 'रब जिसके सामने मैं चलता रहा
हूँ अपने फ़रिश्ते को तुम्हारे साथ भेजेगा और तुम्हें
कामयाबी बख़्शेगा। तुम्हें ज़रूर मेरे रिश्तेदारों और
मेरे बाप के घराने से मेरे बेटे के लिए बीवी मिलेगी।
41लेकिन अगर तुम मेरे रिश्तेदारों के पास जाओ
और वह इनकार करें तो फिर तुम अपनी क़सम
से आज़ाद होगे।' 42आज जब मैं कुएँ के पास
आया तो मैंने दुआ की, 'ऐ रब, मेरे आक़ा के
ख़ुदा, अगर तेरी मरज़ी हो तो मुझे इस मिशन में
कामयाबी बख़्श जिसके लिए मैं यहाँ आया हूँ।
43अब मैं इस कुएँ के पास खड़ा हूँ। जब कोई
जवान औरत शहर से निकलकर यहाँ आए तो
मैं उससे कहूँगा, "ज़रा मुझे अपने घड़े से थोड़ा-
सा पानी पिलाएँ।" 44अगर वह कहे, "पी लें, मैं
आपके ऊँटों के लिए भी पानी ले आऊँगी" तो
इसका मतलब यह हो कि तूने उसे मेरे आक़ा के
बेटे के लिए चुन लिया है कि उस की बीवी बन
जाए।'

45मैं अभी दिल में यह दुआ कर रहा था कि
रिबक़ा शहर से निकल आई। उसके कंधे पर घड़ा
था। वह चश्मे तक उतरी और अपना घड़ा भर
लिया। मैंने उससे कहा, 'ज़रा मुझे पानी पिलाएँ।'
46जवाब में उसने जल्दी से अपने घड़े को कंधे
पर से उतारकर कहा, 'पी लें, मैं आपके ऊँटों
को भी पानी पिलाती हूँ।' मैंने पानी पिया, और
उसने ऊँटों को भी पानी पिलाया। 47फिर मैंने
उससे पूछा, 'आप किसकी बेटी हैं?' उसने
जवाब दिया, 'मेरा बाप बतुएल है। वह नहूर और
मिलकाह का बेटा है।' फिर मैंने उस की नाक में
नथ और उस की कलाइयों में कंगन पहना दिए।
48तब मैंने रब को सिजदा करके अपने आक़ा
इब्राहीम के ख़ुदा की तमजीद की जिसने मुझे
सीधा मेरे मालिक की भतीजी तक पहुँचाया ताकि
वह इसहाक़ की बीवी बन जाए।

49अब मुझे बताएँ, क्या आप मेरे आक़ा पर
अपनी मेहरबानी और वफ़ादारी का इज़हार करना
चाहते हैं? अगर ऐसा है तो रिबक़ा की इसहाक़
के साथ शादी क़बूल करें। अगर आप मुत्तफ़िक़
नहीं हैं तो मुझे बताएँ ताकि मैं कोई और क़दम
उठा सकूँ।"

50लाबन और बतुएल ने जवाब दिया, "यह
बात रब की तरफ़ से है, इसलिए हम किसी तरह
भी इनकार नहीं कर सकते। 51रिबक़ा आपके
सामने है। उसे ले जाएँ। वह आपके मालिक के
बेटे की बीवी बन जाए जिस तरह रब ने फ़रमाया
है।" 52यह सुनकर इब्राहीम के नौकर ने रब को
सिजदा किया। 53फिर उसने सोने और चाँदी के
ज़ेवरात और महँगे मलबूसात अपने सामान में से
निकालकर रिबक़ा को दिए। रिबक़ा के भाई और
माँ को भी क़ीमती तोह्फ़े मिले।

54इसके बाद उसने अपने हमसफ़रों के साथ
शाम का खाना खाया। वह रात को वहीं ठहरे।
अगले दिन जब उठे तो नौकर ने कहा, "अब
हमें इजाज़त दें ताकि अपने आक़ा के पास लौट
जाएँ।" 55रिबक़ा के भाई और माँ ने कहा,
"रिबक़ा कुछ दिन और हमारे हाँ ठहरे। फिर आप
जाएँ।" 56लेकिन उसने उनसे कहा, "अब देर न
करें, क्योंकि रब ने मुझे मेरे मिशन में कामयाबी
बख़्शी है। मुझे इजाज़त दें ताकि अपने मालिक के
पास वापस जाऊँ।" 57उन्होंने कहा, "चलें, हम
लड़की को बुलाकर उसी से पूछ लेते हैं।"

58उन्होंने रिबक़ा को बुलाकर उससे पूछा,
"क्या तू अभी इस आदमी के साथ जाना चाहती
है?" उसने कहा, "जी, मैं जाना चाहती हूँ।"
59चुनाँचे उन्होंने अपनी बहन रिबक़ा, उस की
दाया, इब्राहीम के नौकर और उसके हमसफ़रों
को रुख़सत कर दिया। 60पहले उन्होंने रिबक़ा
को बरकत देकर कहा, "हमारी बहन, अल्लाह
करे कि तू करोड़ों की माँ बने। तेरी औलाद अपने
दुश्मनों के शहरों के दरवाज़ों पर क़ब्ज़ा करे।"

61फिर रिबक़ा और उस की नौकरानियाँ उठकर
ऊँटों पर सवार हुईं और इब्राहीम के नौकर के पीछे
हो लीं। चुनाँचे नौकर उन्हें साथ लेकर रवाना हो
गया।
62उस वक़्त इसहाक़ मुल्क के जुनूबी हिस्से,
दश्ते-नजब में रहता था। वह बैर-लही-रोई से
आया था। 63एक शाम वह निकलकर खुले मैदान
में अपनी सोचों में मगन टहल रहा था कि अचानक
ऊँट उस की तरफ़ आते हुए नज़र आए। 64जब
रिबक़ा ने अपनी नज़र उठाकर इसहाक़ को देखा
तो उसने ऊँट से उतरकर 65नौकर से पूछा, “वह
आदमी कौन है जो मैदान में हमसे मिलने आ रहा
है?” नौकर ने कहा, “मेरा मालिक है।” यह
सुनकर रिबक़ा ने चादर लेकर अपने चेहरे को ढाँप
लिया।
66नौकर ने इसहाक़ को सब कुछ बता दिया
जो उसने किया था। 67फिर इसहाक़ रिबक़ा को
अपनी माँ सारा के डेरे में ले गया। उसने उससे
शादी की, और वह उस की बीवी बन गई। इसहाक़
के दिल में उसके लिए बहुत मुहब्बत पैदा हुई। यों
उसे अपनी माँ की मौत के बाद सुकून मिला।

इब्राहीम की मज़ीद औलाद

25 इब्राहीम ने एक और शादी की। नई
बीवी का नाम क़तूरा था। 2क़तूरा के
छः बेटे पैदा हुए, ज़िमरान, युक़सान, मिदान,
मिदियान, इसबाक़ और सूख़। 3युक़सान के दो
बेटे थे, सबा और ददान। असूरी, लतूसी और लूमी
ददान की औलाद हैं। 4मिदियान के बेटे ऐफ़ा,
इफ़र, हनूक, अबीदा और इल्दआ थे। यह सब
क़तूरा की औलाद थे।
5इब्राहीम ने अपनी सारी मिलकियत इसहाक़
को दे दी। 6अपनी मौत से पहले उसने अपनी
दूसरी बीवियों के बेटों को तोह्फ़े देकर अपने बेटे
से दूर मशरिक़ की तरफ़ भेज दिया।

इब्राहीम की वफ़ात

7-8इब्राहीम 175 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।
ग़रज़ वह बहुत उम्ररसीदा और ज़िंदगी से आसूदा
होकर इंतक़ाल करके अपने बापदादा से जा
मिला। 9-10उसके बेटों इसहाक़ और इसमाईल ने
उसे मकफ़ीला के ग़ार में दफ़न किया जो ममरे के
मशरिक़ में है। यह वही ग़ार था जिसे खेत समेत
हित्ती आदमी इफ़रोन बिन सुहर से ख़रीदा गया
था। इब्राहीम और उस की बीवी सारा दोनों को
उसमें दफ़न किया गया।
11इब्राहीम की वफ़ात के बाद अल्लाह ने
इसहाक़ को बरकत दी। उस वक़्त इसहाक़ बैर-
लही-रोई के क़रीब आबाद था।

इसमाईल की औलाद

12इब्राहीम का बेटा इसमाईल जो सारा की
मिसरी लौंडी हाजिरा के हाँ पैदा हुआ उसका
नसबनामा यह है। 13इसमाईल के बेटे बड़े से
लेकर छोटे तक यह हैं : नबायोत, क़ीदार,
अदबियेल, मिबसाम, 14मिशमा, दूमा, मस्सा,
15हदद, तैमा, यतूर, नफ़ीस और क़िदमा।
16यह बेटे बारह क़बीलों के बानी बन गए, और
जहाँ जहाँ वह आबाद हुए उन जगहों का वही
नाम पड़ गया। 17इसमाईल 137 साल का था
जब वह कूच करके अपने बापदादा से जा मिला।
18उस की औलाद उस इलाक़े में आबाद थी जो
हवीला और शूर के दरमियान है और जो मिसर
के मशरिक़ में असूर की तरफ़ है। यों इसमाईल
अपने तमाम भाइयों के सामने ही आबाद हुआ।

एसौ और याक़ूब की पैदाइश

19यह इब्राहीम के बेटे इसहाक़ का बयान है।
20इसहाक़ 40 साल का था जब उस की
रिबक़ा से शादी हुई। रिबक़ा लाबन की बहन
और अरामी मर्द बतुएल की बेटी थी (बतुएल
मसोपुतामिया का था)। 21रिबक़ा के बच्चे पैदा
न हुए। लेकिन इसहाक़ ने अपनी बीवी के लिए
दुआ की तो रब ने उस की सुनी, और रिबक़ा

उम्मीद से हुई। 22उसके पेट में बच्चे एक दूसरे से ज़ोर-आज़माई करने लगे तो वह रब से पूछने गई, “अगर यह मेरी हालत रहेगी तो फिर मैं यहाँ तक क्यों पहुँच गई हूँ?” 23रब ने उससे कहा, “तेरे अंदर दो क़ौमें हैं। वह तुझसे निकलकर एक दूसरी से अलग अलग हो जाएँगी। उनमें से एक ज़्यादा ताक़तवर होगी, और बड़ा छोटे की ख़िदमत करेगा।”

24पैदाइश का वक़्त आ गया तो जुड़वाँ बेटे पैदा हुए। 25पहला बच्चा निकला तो सुर्ख़-सा था, और ऐसा लग रहा था कि वह घने बालों का कोट ही पहने हुए है। इसलिए उसका नाम एसौ यानी ‘बालोंवाला’ रखा गया। 26इसके बाद दूसरा बच्चा पैदा हुआ। वह एसौ की एड़ी पकड़े हुए निकला, इसलिए उसका नाम याक़ूब यानी ‘एड़ी पकड़नेवाला’ रखा गया। उस वक़्त इसहाक़ 60 साल का था।

27लड़के जवान हुए। एसौ माहिर शिकारी बन गया और खुले मैदान में ख़ुश रहता था। उसके मुक़ाबले में याक़ूब शायस्ता था और डेरे में रहना पसंद करता था। 28इसहाक़ एसौ को प्यार करता था, क्योंकि वह शिकार का गोश्त पसंद करता था। लेकिन रिबक़ा याक़ूब को प्यार करती थी।

29एक दिन याक़ूब सालन पका रहा था कि एसौ थकाहारा जंगल से आया। 30उसने कहा, “मुझे जल्दी से लाल सालन, हाँ इसी लाल सालन से कुछ खाने को दो। मैं तो बेदम हो रहा हूँ।” (इसी लिए बाद में उसका नाम अदोम यानी सुर्ख़ पड़ गया।) 31याक़ूब ने कहा, “पहले मुझे पहलौठे का हक़ बेच दो।” 32एसौ ने कहा, “मैं तो भूक से मर रहा हूँ, पहलौठे का हक़ मेरे किस काम का?” 33याक़ूब ने कहा, “पहले क़सम खाकर मुझे यह हक़ बेच दो।” एसौ ने क़सम खाकर उसे पहलौठे का हक़ मुंतक़िल कर दिया।

34तब याक़ूब ने उसे कुछ रोटी और दाल दे दी, और एसौ ने खाया और पिया। फिर वह उठकर चला गया। यों उसने पहलौठे के हक़ को हक़ीर जाना।

इसहाक़ और रिबक़ा जिरार में

26 उस मुल्क में दुबारा काल पड़ा, जिस तरह इब्राहीम के दिनों में भी पड़ गया था। इसहाक़ जिरार शहर गया जिस पर फ़िलिस्तियों के बादशाह अबीमलिक की हुकूमत थी। 2रब ने इसहाक़ पर ज़ाहिर होकर कहा, “मिसर न जा बल्कि उस मुल्क में बस जो मैं तुझे दिखाता हूँ। 3उस मुल्क में अजनबी रह तो मैं तेरे साथ हूँगा और तुझे बरकत दूँगा। क्योंकि मैं तुझे और तेरी औलाद को यह तमाम इलाक़ा दूँगा और वह वादा पूरा करूँगा जो मैंने क़सम खाकर तेरे बाप इब्राहीम से किया था। 4मैं तुझे इतनी औलाद दूँगा जितने आसमान पर सितारे हैं। और मैं यह तमाम मुल्क उन्हें दे दूँगा। तेरी औलाद से दुनिया की तमाम क़ौमें बरकत पाएँगी। 5मैं तुझे इसलिए बरकत दूँगा कि इब्राहीम मेरे ताबे रहा और मेरी हिदायात और अहकाम पर चलता रहा।” 6चुनाँचे इसहाक़ जिरार में आबाद हो गया।

7जब वहाँ के मर्दों ने रिबक़ा के बारे में पूछा तो इसहाक़ ने कहा, “यह मेरी बहन है।” वह उन्हें यह बताने से डरता था कि यह मेरी बीवी है, क्योंकि उसने सोचा, “रिबक़ा निहायत ख़ूबसूरत है। अगर उन्हें मालूम हो जाए कि रिबक़ा मेरी बीवी है तो वह उसे हासिल करने की ख़ातिर मुझे क़त्ल कर देंगे।”

8काफ़ी वक़्त गुज़र गया। एक दिन फ़िलिस्तियों के बादशाह ने अपनी खिड़की में से झाँककर देखा कि इसहाक़ अपनी बीवी को प्यार कर रहा है। 9उसने इसहाक़ को बुलाकर कहा, “वह तो आपकी बीवी है! आपने क्यों कहा कि मेरी बहन है?” इसहाक़ ने जवाब दिया, “मैंने सोचा कि अगर मैं बताऊँ कि यह मेरी बीवी है तो लोग मुझे क़त्ल कर देंगे।”

10अबीमलिक ने कहा, “आपने हमारे साथ कैसा सुलूक कर दिखाया! कितनी आसानी से मेरे आदमियों में से कोई आपकी बीवी से हमबिसतर हो जाता। इस तरह हम आपके सबब

से एक बड़े जुर्म के क़ुसूरवार ठहरते।” 11फिर अबीमलिक ने तमाम लोगों को हुक्म दिया, “जो भी इस मर्द या उस की बीवी को छेड़े उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी।”

इसहाक़ का फ़िलिस्तियों के साथ झगड़ा

12इसहाक़ ने उस इलाक़े में काश्तकारी की, और उसी साल उसे सौ गुना फल मिला। यों रब ने उसे बरकत दी, 13और वह अमीर हो गया। उस की दौलत बढ़ती गई, और वह निहायत दौलतमंद हो गया। 14उसके पास इतनी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और ग़ुलाम थे कि फ़िलिस्ती उससे हसद करने लगे। 15अब ऐसा हुआ कि उन्होंने उन तमाम कुओं को मिट्टी से भरकर बंद कर दिया जो उसके बाप के नौकरों ने खोदे थे।

16आख़िरकार अबीमलिक ने इसहाक़ से कहा, “कहीं और जाकर रहें, क्योंकि आप हमसे ज़्यादा ज़ोरावर हो गए हैं।”

17चुनाँचे इसहाक़ ने वहाँ से जाकर जिरार की वादी में अपने डेरे लगाए। 18वहाँ फ़िलिस्तियों ने इब्राहीम की मौत के बाद तमाम कुओं को मिट्टी से भर दिया था। इसहाक़ ने उनको दुबारा खुदवाया। उसने उनके वही नाम रखे जो उसके बाप ने रखे थे।

19इसहाक़ के नौकरों को वादी में खोदते खोदते ताज़ा पानी मिल गया। 20लेकिन जिरार के चरवाहे आकर इसहाक़ के चरवाहों से झगड़ने लगे। उन्होंने कहा, “यह हमारा कुआँ है!” इसलिए उसने उस कुएँ का नाम इसक यानी झगड़ा रखा। 21इसहाक़ के नौकरों ने एक और कुआँ खोद लिया। लेकिन उस पर भी झगड़ा हुआ, इसलिए उसने उसका नाम सितना यानी मुख़ालफ़त रखा। 22वहाँ से जाकर उसने एक तीसरा कुआँ खुदवाया। इस दफ़ा कोई झगड़ा न हुआ, इसलिए उसने उसका नाम रहोबोत यानी ‘खुली जगह’ रखा। क्योंकि उसने कहा, “रब ने हमें खुली जगह दी है, और अब हम मुल्क में फलें-फूलेंगे।”

23वहाँ से वह बैर-सबा चला गया। 24उसी रात रब उस पर ज़ाहिर हुआ और कहा, “मैं तेरे बाप इब्राहीम का ख़ुदा हूँ। मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। मैं तुझे बरकत दूँगा और तुझे अपने ख़ादिम इब्राहीम की ख़ातिर बहुत औलाद दूँगा।”

25वहाँ इसहाक़ ने क़ुरबानगाह बनाई और रब का नाम लेकर इबादत की। वहाँ उसने अपने ख़ैमे लगाए और उसके नौकरों ने कुआँ खोद लिया।

अबीमलिक के साथ अहद

26एक दिन अबीमलिक, उसका साथी अख़ूज़त और उसका सिपहसालार फ़ीकुल जिरार से उसके पास आए। 27इसहाक़ ने पूछा, “आप क्यों मेरे पास आए हैं? आप तो मुझसे नफ़रत रखते हैं। क्या आपने मुझे अपने दरमियान से ख़ारिज नहीं किया था?” 28उन्होंने जवाब दिया, “हमने जान लिया है कि रब आपके साथ है। इसलिए हमने कहा कि हमारा आपके साथ अहद होना चाहिए। आइए हम क़सम खाकर एक दूसरे से अहद बाँधें 29कि आप हमें नुक़सान नहीं पहुँचाएँगे, क्योंकि हमने भी आपको नहीं छेड़ा बल्कि आपसे सिर्फ़ अच्छा सुलूक किया और आपको सलामती के साथ रुख़सत किया है। और अब ज़ाहिर है कि रब ने आपको बरकत दी है।”

30इसहाक़ ने उनकी ज़ियाफ़त की, और उन्होंने खाया और पिया। 31फिर सुबह-सवेरे उठकर उन्होंने एक दूसरे के सामने क़सम खाई। इसके बाद इसहाक़ ने उन्हें रुख़सत किया और वह सलामती से रवाना हुए।

32उसी दिन इसहाक़ के नौकर आए और उसे उस कुएँ के बारे में इत्तला दी जो उन्होंने खोदा था। उन्होंने कहा, “हमें पानी मिल गया है।” 33उसने कुएँ का नाम सबा यानी ‘क़सम’ रखा। आज तक साथवाले शहर का नाम बैर-सबा है।

एसौ की अजनबी बीवियाँ

34जब एसौ 40 साल का था तो उसने दो हित्ती औरतों से शादी की, बैरी की बेटी यहूदित से और

ऐलोन की बेटी बासमत से। 35यह औरतें इसहाक़
और रिबक़ा के लिए बड़े दुख का बाइस बनीं।

इसहाक़ याक़ूब को बरकत देता है

27 इसहाक़ बूढ़ा हो गया तो उस की
नज़र धुँधला गई। उसने अपने बड़े
बेटे को बुलाकर कहा, “बेटा।” एसौ ने जवाब
दिया, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” 2इसहाक़ ने कहा,
“मैं बूढ़ा हो गया हूँ और ख़ुदा जाने कब मर
जाऊँ। 3इसलिए अपना तीर कमान लेकर जंगल
में निकल जा और मेरे लिए किसी जानवर का
शिकार कर। 4उसे तैयार करके ऐसा लज़ीज़
खाना पका जो मुझे पसंद है। फिर उसे मेरे पास
ले आ। मरने से पहले मैं वह खाना खाकर तुझे
बरकत देना चाहता हूँ।”

5रिबक़ा ने इसहाक़ की एसौ के साथ बातचीत
सुन ली थी। जब एसौ शिकार करने के लिए चला
गया तो उसने याक़ूब से कहा, 6“अभी अभी मैंने
तुम्हारे अब्बू को एसौ से यह बात करते हुए सुना
कि 7‘मेरे लिए किसी जानवर का शिकार करके
ले आ। उसे तैयार करके मेरे लिए लज़ीज़ खाना
पका। मरने से पहले मैं यह खाना खाकर तुझे रब
के सामने बरकत देना चाहता हूँ।’ 8अब सुनो, मेरे
बेटे! जो कुछ मैं बताती हूँ वह करो। 9जाकर रेवड़
में से बकरियों के दो अच्छे अच्छे बच्चे चुन लो।
फिर मैं वही लज़ीज़ खाना पकाऊँगी जो तुम्हारे
अब्बू को पसंद है। 10तुम यह खाना उसके पास
ले जाओगे तो वह उसे खाकर मरने से पहले तुम्हें
बरकत देगा।”

11लेकिन याक़ूब ने एतराज़ किया, “आप
जानती हैं कि एसौ के जिस्म पर घने बाल हैं
जबकि मेरे बाल कम हैं। 12कहीं मुझे छूने से
मेरे बाप को पता न चल जाए कि मैं उसे फ़रेब
दे रहा हूँ। फिर मुझ पर बरकत नहीं बल्कि
लानत आएगी।” 13उस की माँ ने कहा, “तुम
पर आनेवाली लानत मुझ पर आए, बेटा। बस
मेरी बात मान लो। जाओ और बकरियों के वह
बच्चे ले आओ।”

14चुनाँचे वह गया और उन्हें अपनी माँ के पास
ले आया। रिबक़ा ने ऐसा लज़ीज़ खाना पकाया
जो याक़ूब के बाप को पसंद था। 15एसौ के ख़ास
मौक़ों के लिए अच्छे लिबास रिबक़ा के पास घर में
थे। उसने उनमें से बेहतरीन लिबास चुनकर अपने
छोटे बेटे को पहना दिया। 16साथ साथ उसने
बकरियों की खालें उसके हाथों और गरदन पर
जहाँ बाल न थे लपेट दीं। 17फिर उसने अपने बेटे
याक़ूब को रोटी और वह लज़ीज़ खाना दिया जो
उसने पकाया था।

18याक़ूब ने अपने बाप के पास जाकर कहा,
“अब्बू जी।” इसहाक़ ने कहा, “जी, बेटा। तू
कौन है?” 19उसने कहा, “मैं आपका पहलौठा
एसौ हूँ। मैंने वह किया है जो आपने मुझे कहा
था। अब ज़रा उठें और बैठकर मेरे शिकार का
खाना खाएँ ताकि आप बाद में मुझे बरकत दें।”
20इसहाक़ ने पूछा, “बेटा, तुझे यह शिकार इतनी
जल्दी किस तरह मिल गया?” उसने जवाब
दिया, “रब आपके ख़ुदा ने उसे मेरे सामने से
गुज़रने दिया।”

21इसहाक़ ने कहा, “बेटा, मेरे क़रीब आ ताकि
मैं तुझे छू लूँ कि तू वाक़ई मेरा बेटा एसौ है कि
नहीं।” 22याक़ूब अपने बाप के नज़दीक आया।
इसहाक़ ने उसे छूकर कहा, “तेरी आवाज़ तो
याक़ूब की है लेकिन तेरे हाथ एसौ के हैं।” 23यों
उसने फ़रेब खाया। चूँकि याक़ूब के हाथ एसौ के
हाथ की मानिंद थे इसलिए उसने उसे बरकत दी।
24तो भी उसने दुबारा पूछा, “क्या तू वाक़ई मेरा
बेटा एसौ है?” याक़ूब ने जवाब दिया, “जी,
मैं वही हूँ।” 25आख़िरकार इसहाक़ ने कहा,
“शिकार का खाना मेरे पास ले आ, बेटा। उसे
खाने के बाद मैं तुझे बरकत दूँगा।” याक़ूब खाना
और मै ले आया। इसहाक़ ने खाया और पिया,
26फिर कहा, “बेटा, मेरे पास आ और मुझे बोसा
दे।” 27याक़ूब ने पास आकर उसे बोसा दिया।
इसहाक़ ने उसके लिबास को सूँघकर उसे बरकत
दी। उसने कहा,

“मेरे बेटे की ख़ुशबू उस खुले मैदान की ख़ुशबू
की मानिंद है जिसे रब ने बरकत दी है। 28अल्लाह
तुझे आसमान की ओस और ज़मीन की ज़रख़ेज़ी
दे। वह तुझे कसरत का अनाज और अंगूर का
रस दे। 29क़ौमें तेरी ख़िदमत करें, और उम्मतें तेरे
सामने झुक जाएँ। अपने भाइयों का हुक्मरान बन,
और तेरी माँ की औलाद तेरे सामने घुटने टेके। जो
तुझ पर लानत करे वह ख़ुद लानती हो और जो
तुझे बरकत दे वह ख़ुद बरकत पाए।”

एसौ भी बरकत माँगता है

30इसहाक़ की बरकत के बाद याक़ूब अभी
रुख़सत ही हुआ था कि उसका भाई एसौ शिकार
करके वापस आया। 31वह भी लज़ीज़ खाना
पकाकर उसे अपने बाप के पास ले आया। उसने
कहा, “अब्बू जी, उठें और मेरे शिकार का खाना
खाएँ ताकि आप मुझे बरकत दें।” 32इसहाक़ ने
पूछा, “तू कौन है?” उसने जवाब दिया, “मैं
आपका बड़ा बेटा एसौ हूँ।”

33इसहाक़ घबराकर शिद्दत से काँपने लगा।
उसने पूछा, “फिर वह कौन था जो किसी जानवर
का शिकार करके मेरे पास ले आया? तेरे आने
से ज़रा पहले मैंने उस शिकार का खाना खाकर
उस शख़्स को बरकत दी। अब वह बरकत उसी
पर रहेगी।”

34यह सुनकर एसौ ज़ोरदार और तलख़ चीख़ें
मारने लगा। “अब्बू, मुझे भी बरकत दें,” उसने
कहा। 35लेकिन इसहाक़ ने जवाब दिया, “तेरे
भाई ने आकर मुझे फ़रेब दिया। उसने तेरी बरकत
तुझसे छीन ली है।” 36एसौ ने कहा, “उसका
नाम याक़ूब ठीक ही रखा गया है, क्योंकि अब
उसने मुझे दूसरी बार धोका दिया है। पहले उसने
पहलौठे का हक़ मुझसे छीन लिया और अब मेरी
बरकत भी ज़बरदस्ती ले ली। क्या आपने मेरे लिए
कोई बरकत महफ़ूज़ नहीं रखी?” 37लेकिन
इसहाक़ ने कहा, “मैंने उसे तेरा हुक्मरान और
उसके तमाम भाइयों को उसके ख़ादिम बना दिया
है। मैंने उसे अनाज और अंगूर का रस मुहैया किया
है। अब मुझे बता बेटा, क्या कुछ रह गया है जो
मैं तुझे दूँ?” 38लेकिन एसौ ख़ामोश न हुआ
बल्कि कहा, “अब्बू, क्या आपके पास वाक़ई
सिर्फ़ यही बरकत थी? अब्बू, मुझे भी बरकत
दें।” वह ज़ारो-क़तार रोने लगा।

39फिर इसहाक़ ने कहा, “तू ज़मीन की
ज़रख़ेज़ी और आसमान की ओस से महरूम
रहेगा। 40तू सिर्फ़ अपनी तलवार के सहारे ज़िंदा
रहेगा और अपने भाई की ख़िदमत करेगा। लेकिन
एक दिन तू बेचैन होकर उसका जुआ अपनी
गरदन पर से उतार फेंकेगा।”

याक़ूब की हिजरत

41बाप की बरकत के सबब से एसौ याक़ूब का
दुश्मन बन गया। उसने दिल में कहा, “वह दिन
क़रीब आ गए हैं कि अब्बू इंतक़ाल कर जाएंगे
और हम उनका मातम करेंगे। फिर मैं अपने भाई
को मार डालूँगा।”

42रिबक़ा को अपने बड़े बेटे एसौ का यह इरादा
मालूम हुआ। उसने याक़ूब को बुलाकर कहा,
“तुम्हारा भाई बदला लेना चाहता है। वह तुम्हें
क़त्ल करने का इरादा रखता है। 43बेटा, अब मेरी
सुनो, यहाँ से हिजरत कर जाओ। हारान शहर
में मेरे भाई लाबन के पास चले जाओ। 44वहाँ
कुछ दिन ठहरे रहना जब तक तुम्हारे भाई का
ग़ुस्सा ठंडा न हो जाए। 45जब उसका ग़ुस्सा ठंडा
हो जाएगा और वह तुम्हारे उसके साथ किए गए
सुलूक को भूल जाएगा, तब मैं इत्तला दूँगी कि
तुम वहाँ से वापस आ सकते हो। मैं क्यों एक ही
दिन में तुम दोनों से महरूम हो जाऊँ?”

46फिर रिबक़ा ने इसहाक़ से बात की, “मैं
एसौ की बीवियों के सबब से अपनी ज़िंदगी से
तंग हूँ। अगर याक़ूब भी इस मुल्क की औरतों में
से किसी से शादी करे तो बेहतर है कि मैं पहले
ही मर जाऊँ।”

28 इसहाक़ ने याक़ूब को बुलाकर
उसे बरकत दी और कहा, “ला-
ज़िम है कि तू किसी कनानी औरत से शादी

न करे। 2अब सीधे मसोपुतामिया में अपने
नाना बतुएल के घर जा और वहाँ अपने मामूँ
लाबन की लड़कियों में से किसी एक से शादी
कर। 3अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ तुझे बरकत देकर
फलने-फूलने दे और तुझे इतनी औलाद दे कि तू
बहुत सारी क़ौमों का बाप बने। 4वह तुझे और तेरी
औलाद को इब्राहीम की बरकत दे जिसे उसने यह
मुल्क दिया जिसमें तू मेहमान के तौर पर रहता है।
यह मुल्क तुम्हारे क़ब्ज़े में आए।" 5यों इसहाक़ ने
याक़ूब को मसोपुतामिया में लाबन के घर भेजा।
लाबन अरामी मर्द बतुएल का बेटा और रिबक़ा
का भाई था।

एसौ एक और शादी करता है

6एसौ को पता चला कि इसहाक़ ने याक़ूब को
बरकत देकर मसोपुतामिया भेज दिया है ताकि
वहाँ शादी करे। उसे यह भी मालूम हुआ कि
इसहाक़ ने उसे कनानी औरत से शादी करने से
मना किया है 7और कि याक़ूब अपने माँ-बाप की
सुनकर मसोपुतामिया चला गया है। 8एसौ समझ
गया कि कनानी औरतें मेरे बाप को मंज़ूर नहीं
हैं। 9इसलिए वह इब्राहीम के बेटे इसमाईल के
पास गया और उस की बेटी महलत से शादी की।
वह नबायोत की बहन थी। यों उस की बीवियों में
इज़ाफ़ा हुआ।

बैतेल में याक़ूब का ख़ाब

10याक़ूब बैर-सबा से हारान की तरफ़ रवाना
हुआ। 11जब सूरज ग़ुरूब हुआ तो वह रात गुज़ारने
के लिए रुक गया और वहाँ के पत्थरों में से एक
को लेकर उसे अपने सिरहाने रखा और सो गया।
12जब वह सो रहा था तो ख़ाब में एक सीढ़ी
देखी जो ज़मीन से आसमान तक पहुँचती थी।
फ़रिश्ते उस पर चढ़ते और उतरते नज़र आते थे।
13रब उसके ऊपर खड़ा था। उसने कहा, "मैं
रब इब्राहीम और इसहाक़ का ख़ुदा हूँ। मैं तुझे
और तेरी औलाद को यह ज़मीन दूँगा जिस पर तू
लेटा है। 14तेरी औलाद ज़मीन पर ख़ाक की तरह
बेशुमार होगी, और तू चारों तरफ़ फैल जाएगा।
दुनिया की तमाम क़ौमें तेरे और तेरी औलाद के
वसीले से बरकत पाएँगी। 15मैं तेरे साथ हूँगा,
तुझे महफ़ूज़ रखूँगा और आख़िरकार तुझे इस
मुल्क में वापस लाऊँगा। मुमकिन ही नहीं कि मैं
तेरे साथ अपना वादा पूरा करने से पहले तुझे छोड़
दूँ।"

16तब याक़ूब जाग उठा। उसने कहा,
"यक़ीनन रब यहाँ हाज़िर है, और मुझे मालूम
नहीं था।" 17वह डर गया और कहा, "यह कितना
ख़ौफ़नाक मक़ाम है। यह तो अल्लाह ही का घर
और आसमान का दरवाज़ा है।"

18याक़ूब सुबह-सवेरे उठा। उसने वह पत्थर
लिया जो उसने अपने सिरहाने रखा था और उसे
सतून की तरह खड़ा किया। फिर उसने उस पर
ज़ैतून का तेल उंडेल दिया। 19उसने मक़ाम का
नाम बैतेल यानी 'अल्लाह का घर' रखा (पहले
साथवाले शहर का नाम लूज़ था)। 20उसने क़सम
खाकर कहा, "अगर रब मेरे साथ हो, सफ़र पर
मेरी हिफ़ाज़त करे, मुझे खाना और कपड़ा मुहैया
करे 21और मैं सलामती से अपने बाप के घर
वापस पहुँचूँ तो फिर वह मेरा ख़ुदा होगा। 22जहाँ
यह पत्थर सतून के तौर पर खड़ा है वहाँ अल्लाह
का घर होगा, और जो भी तू मुझे देगा उसका
दसवाँ हिस्सा तुझे दिया करूँगा।"

याक़ूब लाबन के घर पहुँचता है

29 याक़ूब ने अपना सफ़र जारी रखा और
चलते चलते मशरिक़ी क़ौमों के मुल्क
में पहुँच गया। 2वहाँ उसने खेत में कुआँ देखा
जिसके इर्दगिर्द भेड़-बकरियों के तीन रेवड़ जमा
थे। रेवड़ों को कुएँ का पानी पिलाया जाना था,
लेकिन उसके मुँह पर बड़ा पत्थर पड़ा था। 3वहाँ
पानी पिलाने का यह तरीक़ा था कि पहले चरवाहे
तमाम रेवड़ों का इंतज़ार करते और फिर पत्थर
को लुढ़काकर मुँह से हटा देते थे। पानी पिलाने
के बाद वह पत्थर को दुबारा मुँह पर रख देते थे।

4याक़ूब ने चरवाहों से पूछा, “मेरे भाइयो, आप
कहाँ के हैं?” उन्होंने जवाब दिया, “हारान के।”
5उसने पूछा, “क्या आप नहूर के पोते लाबन
को जानते हैं?” उन्होंने कहा, “जी हाँ।” 6उसने
पूछा, “क्या वह ख़ैरियत से है?” उन्होंने कहा,
“जी, वह ख़ैरियत से है। देखो, उधर उस की
बेटी राख़िल रेवड़ लेकर आ रही है।” 7याक़ूब ने
कहा, “अभी तो शाम तक बहुत वक़्त बाक़ी है।
रेवड़ों को जमा करने का वक़्त तो नहीं है। आप
क्यों उन्हें पानी पिलाकर दुबारा चरने नहीं देते?”
8उन्होंने जवाब दिया, “पहले ज़रूरी है कि तमाम
रेवड़ यहाँ पहुँचें। तब ही पत्थर को लुढ़काकर
एक तरफ़ हटाया जाएगा और हम रेवड़ों को पानी
पिलाएँगे।”

9याक़ूब अभी उनसे बात कर ही रहा था कि
राख़िल अपने बाप का रेवड़ लेकर आ पहुँची,
क्योंकि भेड़-बकरियों को चराना उसका काम था।
10जब याक़ूब ने राख़िल को मामूँ लाबन के रेवड़
के साथ आते देखा तो उसने कुएँ के पास जाकर
पत्थर को लुढ़काकर मुँह से हटा दिया और भेड़-
बकरियों को पानी पिलाया। 11फिर उसने उसे
बोसा दिया और ख़ूब रोने लगा। 12उसने कहा,
“मैं आपके अब्बू की बहन रिबक़ा का बेटा हूँ।”
यह सुनकर राख़िल ने भागकर अपने अब्बू को
इत्तला दी।

13जब लाबन ने सुना कि मेरा भानजा याक़ूब
आया है तो वह दौड़कर उससे मिलने गया और
उसे गले लगाकर अपने घर ले आया। याक़ूब ने
उसे सब कुछ बता दिया जो हुआ था। 14लाबन
ने कहा, “आप वाक़ई मेरे रिश्तेदार हैं।” याक़ूब
ने वहाँ एक पूरा महीना गुज़ारा।

अपनी बीवियों के लिए याक़ूब की मेहनत-मशक़्क़त

15फिर लाबन याक़ूब से कहने लगा, “बेशक
आप मेरे रिश्तेदार हैं, लेकिन आपको मेरे लिए
काम करने के बदले में कुछ मिलना चाहिए।
मैं आपको कितने पैसे दूँ?” 16लाबन की दो
बेटियाँ थीं। बड़ी का नाम लियाह था और छोटी
का राख़िल। 17लियाह की आँखें चुंधी थीं जबकि
राख़िल हर तरह से ख़ूबसूरत थी। 18याक़ूब को
राख़िल से मुहब्बत थी, इसलिए उसने कहा,
“अगर मुझे आपकी छोटी बेटी राख़िल मिल
जाए तो आपके लिए सात साल काम करूँगा।”
19लाबन ने कहा, “किसी और आदमी की
निसबत मुझे यह ज़्यादा पसंद है कि आप ही से
उस की शादी कराऊँ।”

20पस याक़ूब ने राख़िल को पाने के लिए सात
साल तक काम किया। लेकिन उसे ऐसा लगा
जैसा दो एक दिन ही गुज़रे हों क्योंकि वह राख़िल
को शिद्दत से प्यार करता था। 21इसके बाद उसने
लाबन से कहा, “मुद्दत पूरी हो गई है। अब मुझे
अपनी बेटी से शादी करने दें।” 22लाबन ने उस
मक़ाम के तमाम लोगों को दावत देकर शादी की
ज़ियाफ़त की। 23लेकिन उस रात वह राख़िल की
बजाए लियाह को याक़ूब के पास ले आया, और
याक़ूब उसी से हमबिसतर हुआ। 24(लाबन ने
लियाह को अपनी लौंडी ज़िलफ़ा दे दी थी ताकि
वह उस की ख़िदमत करे।)

25जब सुबह हुई तो याक़ूब ने देखा कि लियाह
ही मेरे पास है। उसने लाबन के पास जाकर कहा,
“यह आपने मेरे साथ क्या किया है? क्या मैंने
राख़िल के लिए काम नहीं किया? आपने मुझे
धोका क्यों दिया?” 26लाबन ने जवाब दिया,
“यहाँ दस्तूर नहीं है कि छोटी बेटी की शादी बड़ी
से पहले कर दी जाए। 27एक हफ़ते के बाद शादी
की रसूमात पूरी हो जाएँगी। उस वक़्त तक सब्र
करें। फिर मैं आपको राख़िल भी दे दूँगा। शर्त
यह है कि आप मज़ीद सात साल मेरे लिए काम
करें।”

28याक़ूब मान गया। चुनाँचे जब एक हफ़ते के
बाद शादी की रसूमात पूरी हुईं तो लाबन ने अपनी
बेटी राख़िल की शादी भी उसके साथ कर दी।
29(लाबन ने राख़िल को अपनी लौंडी बिलहाह
दे दी ताकि वह उस की ख़िदमत करे।) 30याक़ूब
राख़िल से भी हमबिसतर हुआ। वह लियाह की

निसबत उसे ज़्यादा प्यार करता था। फिर उसने राख़िल के एवज़ सात साल और लाबन की ख़िदमत की।

याक़ूब के बच्चे

31जब रब ने देखा कि लियाह से नफ़रत की जाती है तो उसने उसे औलाद दी जबकि राख़िल के हाँ बच्चे पैदा न हुए।

32लियाह हामिला हुई और उसके बेटा पैदा हुआ। उसने कहा, “रब ने मेरी मुसीबत देखी है और अब मेरा शौहर मुझे प्यार करेगा।” उसने उसका नाम रूबिन यानी ‘देखो एक बेटा’ रखा।

33वह दुबारा हामिला हुई। एक और बेटा पैदा हुआ। उसने कहा, “रब ने सुना कि मुझसे नफ़रत की जाती है, इसलिए उसने मुझे यह भी दिया है।” उसने उसका नाम शमाऊन यानी ‘रब ने सुना है’ रखा।

34वह एक और दफ़ा हामिला हुई। तीसरा बेटा पैदा हुआ। उसने कहा, “अब आख़िरकार शौहर के साथ मेरा बंधन मज़बूत हो जाएगा, क्योंकि मैंने उसके लिए तीन बेटों को जन्म दिया है।” उसने उसका नाम लावी यानी बंधन रखा।

35वह एक बार फिर हामिला हुई। चौथा बेटा पैदा हुआ। उसने कहा, “इस दफ़ा मैं रब की तमजीद करूँगी।” उसने उसका नाम यहूदाह यानी तमजीद रखा। इसके बाद उससे और बच्चे पैदा न हुए।

30 लेकिन राख़िल बेऔलाद ही रही, इसलिए वह अपनी बहन से हसद करने लगी। उसने याक़ूब से कहा, “मुझे भी औलाद दें वरना मैं मर जाऊँगी।” 2याक़ूब को ग़ुस्सा आया। उसने कहा, “क्या मैं अल्लाह हूँ जिसने तुझे औलाद से महरूम रखा है?” 3राख़िल ने कहा, “यहाँ मेरी लौंडी बिलहाह है। उसके साथ हमबिसतर हों ताकि वह मेरे लिए बच्चे को जन्म दे और मैं उस की मारिफ़त माँ बन जाऊँ।”

4यों उसने अपने शौहर को बिलहाह दी, और वह उससे हमबिसतर हुआ। 5बिलहाह हामिला हुई और बेटा पैदा हुआ। 6राख़िल ने कहा, “अल्लाह ने मेरे हक़ में फ़ैसला दिया है। उसने मेरी दुआ सुनकर मुझे बेटा दे दिया है।” उसने उसका नाम दान यानी ‘किसी के हक़ में फ़ैसला करनेवाला’ रखा।

7बिलहाह दुबारा हामिला हुई और एक और बेटा पैदा हुआ। 8राख़िल ने कहा, “मैंने अपनी बहन से सख़्त कुश्ती लड़ी है, लेकिन जीत गई हूँ।” उसने उसका नाम नफ़ताली यानी ‘कुश्ती में मुझसे जीता गया’ रखा।

9जब लियाह ने देखा कि मेरे और बच्चे पैदा नहीं हो रहे तो उसने याक़ूब को अपनी लौंडी ज़िलफ़ा दे दी ताकि वह भी उस की बीवी हो। 10ज़िलफ़ा के भी एक बेटा पैदा हुआ। 11लियाह ने कहा, “मैं कितनी ख़ुशक़िसमत हूँ!” चुनाँचे उसने उसका नाम जद यानी ख़ुशक़िसमती रखा।

12फिर ज़िलफ़ा के दूसरा बेटा पैदा हुआ। 13लियाह ने कहा, “मैं कितनी मुबारक हूँ। अब ख़वातीन मुझे मुबारक कहेंगी।” उसने उसका नाम आशर यानी मुबारक रखा।

14एक दिन अनाज की फ़सल की कटाई हो रही थी कि रूबिन बाहर निकलकर खेतों में चला गया। वहाँ उसे मर्दुमगयाह[a] मिल गए। वह उन्हें अपनी माँ लियाह के पास ले आया। यह देखकर राख़िल ने लियाह से कहा, “मुझे ज़रा अपने बेटे के मर्दुमगयाह में से कुछ दे दो।” 15लियाह ने जवाब दिया, “क्या यही काफ़ी नहीं कि तुमने मेरे शौहर को मुझसे छीन लिया है? अब मेरे बेटे के मर्दुमगयाह को भी छीनना चाहती हो।” राख़िल ने कहा, “अगर तुम मुझे अपने बेटे के मर्दुमगयाह में से दो तो आज रात याक़ूब के साथ सो सकती हो।”

[a]एक पौदा जिसके बारे में ख़याल किया जाता था कि उसे खाकर बाँझ औरत भी बच्चे को जन्म देगी।

16शाम को याक़ूब खेतों से वापस आ रहा था
कि लियाह आगे से उससे मिलने को गई और
कहा, “आज रात आपको मेरे साथ सोना है,
क्योंकि मैंने अपने बेटे के मर्दुमगयाह के एवज़
आपको उजरत पर लिया है।” चुनाँचे याक़ूब ने
लियाह के पास रात गुज़ारी।
17उस वक़्त अल्लाह ने लियाह की दुआ सुनी
और वह हामिला हुई। उसके पाँचवाँ बेटा पैदा
हुआ। 18लियाह ने कहा, “अल्लाह ने मुझे इसका
अज्र दिया है कि मैंने अपने शौहर को अपनी लौंडी
दी।” उसने उसका नाम इशकार यानी अज्र रखा।
19इसके बाद वह एक और दफ़ा हामिला
हुई। उसके छटा बेटा पैदा हुआ। 20उसने कहा,
“अल्लाह ने मुझे एक अच्छा-ख़ासा तोहफ़ा दिया
है। अब मेरा ख़ाविंद मेरे साथ रहेगा, क्योंकि
मुझसे उसके छः बेटे पैदा हुए हैं।” उसने उसका
नाम ज़बूलून यानी रिहाइश रखा।
21इसके बाद बेटी पैदा हुई। उसने उसका नाम
दीना रखा।
22फिर अल्लाह ने राख़िल को भी याद किया।
उसने उस की दुआ सुनकर उसे औलाद बख़्शी।
23वह हामिला हुई और एक बेटा पैदा हुआ। उसने
कहा, “मुझे बेटा अता करने से अल्लाह ने मेरी
इज़्ज़त बहाल कर दी है। 24रब मुझे एक और बेटा
दे।” उसने उसका नाम यूसुफ़ यानी ‘वह और दे’
रखा।

याक़ूब का लाबन के साथ सौदा

25यूसुफ़ की पैदाइश के बाद याक़ूब ने लाबन
से कहा, “अब मुझे इजाज़त दें कि मैं अपने वतन
और घर को वापस जाऊँ। 26मुझे मेरे बाल-बच्चे
दें जिनके एवज़ मैंने आपकी ख़िदमत की है। फिर
मैं चला जाऊँगा। आप तो ख़ुद जानते हैं कि मैंने
कितनी मेहनत के साथ आपके लिए काम किया
है।”
27लेकिन लाबन ने कहा, “मुझ पर मेहर-
बानी करें और यहीं रहें। मुझे ग़ैबदानी से पता चला
है कि रब ने मुझे आपके सबब से बरकत दी है।
28अपनी उजरत ख़ुद मुक़र्रर करें तो मैं वही दिया
करूँगा।”
29याक़ूब ने कहा, “आप जानते हैं कि मैंने
किस तरह आपके लिए काम किया, कि मेरे
वसीले से आपके मवेशी कितने बढ़ गए हैं। 30जो
थोड़ा-बहुत मेरे आने से पहले आपके पास था वह
अब बहुत ज़्यादा बढ़ गया है। रब ने मेरे काम से
आपको बहुत बरकत दी है। अब वह वक़्त आ
गया है कि मैं अपने घर के लिए कुछ करूँ।”
31लाबन ने कहा, “मैं आपको क्या दूँ?”
याक़ूब ने कहा, “मुझे कुछ न दें। मैं इस शर्त पर
आपकी भेड़-बकरियों की देख-भाल जारी रखूँगा
कि 32आज मैं आपके रेवड़ में से गुज़रकर उन
तमाम भेड़ों को अलग कर लूँगा जिनके जिस्म
पर छोटे या बड़े धब्बे हों या जो सफ़ेद न हों।
इसी तरह मैं उन तमाम बकरियों को भी अलग
कर लूँगा जिनके जिस्म पर छोटे या बड़े धब्बे हों।
यही मेरी उजरत होगी। 33आइंदा जिन बकरियों
के जिस्म पर छोटे या बड़े धब्बे होंगे या जिन भेड़ों
का रंग सफ़ेद नहीं होगा वह मेरा अज्र होंगी। जब
कभी आप उनका मुआयना करेंगे तो आप मालूम
कर सकेंगे कि मैं दियानतदार रहा हूँ। क्योंकि मेरे
जानवरों के रंग से ही ज़ाहिर होगा कि मैंने आपका
कुछ चुराया नहीं है।” 34लाबन ने कहा, “ठीक है।
ऐसा ही हो जैसा आपने कहा है।”
35उसी दिन लाबन ने उन बकरों को अलग कर
लिया जिनके जिस्म पर धारियाँ या धब्बे थे और
उन तमाम बकरियों को जिनके जिस्म पर छोटे या
बड़े धब्बे थे। जिसके भी जिस्म पर सफ़ेद निशान
था उसे उसने अलग कर लिया। इसी तरह उसने
उन तमाम भेड़ों को भी अलग कर लिया जो पूरे
तौर पर सफ़ेद न थे। फिर लाबन ने उन्हें अपने
बेटों के सुपुर्द कर दिया 36जो उनके साथ याक़ूब
से इतना दूर चले गए कि उनके दरमियान तीन
दिन का फ़ासला था। तब याक़ूब लाबन की बाक़ी
भेड़-बकरियों की देख-भाल करता गया।
37याक़ूब ने सफ़ेदा, बादाम और चनार की हरी
हरी शाख़ें लेकर उनसे कुछ छिलका यों उतार

दिया कि उस पर सफ़ेद धारियाँ नज़र आईं। 38उसने उन्हें भेड़-बकरियों के सामने उन हौज़ों में गाड़ दिया जहाँ वह पानी पीते थे, क्योंकि वहाँ यह जानवर मस्त होकर मिलाप करते थे। 39जब वह इन शाख़ों के सामने मिलाप करते तो जो बच्चे पैदा होते उनके जिस्म पर छोटे और बड़े धब्बे और धारियाँ होती थीं। 40फिर याक़ूब ने भेड़ के बच्चों को अलग करके अपने रेवड़ों को लाबन के उन जानवरों के सामने चरने दिया जिनके जिस्म पर धारियाँ थीं और जो सफ़ेद न थे। यों उसने अपने ज़ाती रेवड़ों को अलग कर लिया और उन्हें लाबन के रेवड़ के साथ चरने न दिया।

41लेकिन उसने यह शाख़ें सिर्फ़ उस वक़्त हौज़ों में खड़ी कीं जब ताक़तवर जानवर मस्त होकर मिलाप करते थे। 42कमज़ोर जानवरों के साथ उसने ऐसा न किया। इसी तरह लाबन को कमज़ोर जानवर और याक़ूब को ताक़तवर जानवर मिल गए। 43यों याक़ूब बहुत अमीर बन गया। उसके पास बहुत-से रेवड़, ग़ुलाम और लौंडियाँ, ऊँट और गधे थे।

याक़ूब की हिजरत

31 एक दिन याक़ूब को पता चला कि लाबन के बेटे मेरे बारे में कह रहे हैं, “याक़ूब ने हमारे अब्बू से सब कुछ छीन लिया है। उसने यह तमाम दौलत हमारे बाप की मिलकियत से हासिल की है।” 2याक़ूब ने यह भी देखा कि लाबन का मेरे साथ रवैया पहले की निसबत बिगड़ गया है। 3फिर रब ने उससे कहा, “अपने बाप के मुल्क और अपने रिश्तेदारों के पास वापस चला जा। मैं तेरे साथ हूँगा।”

4उस वक़्त याक़ूब खुले मैदान में अपने रेवड़ों के पास था। उसने वहाँ से राख़िल और लियाह को बुलाकर 5उनसे कहा, “मैंने देख लिया है कि आपके बाप का मेरे साथ रवैया पहले की निसबत बिगड़ गया है। लेकिन मेरे बाप का ख़ुदा मेरे साथ रहा है। 6आप दोनों जानती हैं कि मैंने आपके अब्बू के लिए कितनी जाँफ़िशानी से काम किया है। 7लेकिन वह मुझे फ़रेब देता रहा और मेरी उजरत दस बार बदली। ताहम अल्लाह ने उसे मुझे नुक़सान पहुँचाने न दिया। 8जब मामूँ लाबन कहते थे, ‘जिन जानवरों के जिस्म पर धब्बे हों वही आपको उजरत के तौर पर मिलेंगे’ तो तमाम भेड़-बकरियों के ऐसे बच्चे पैदा हुए जिनके जिस्मों पर धब्बे ही थे। जब उन्होंने कहा, ‘जिन जानवरों के जिस्म पर धारियाँ होंगी वही आपको उजरत के तौर पर मिलेंगे’ तो तमाम भेड़-बकरियों के ऐसे बच्चे पैदा हुए जिनके जिस्मों पर धारियाँ ही थीं। 9यों अल्लाह ने आपके अब्बू के मवेशी छीनकर मुझे दे दिए हैं। 10अब ऐसा हुआ कि हैवानों की मस्ती के मौसम में मैंने एक ख़ाब देखा। उसमें जो मेंढे और बकरे भेड़-बकरियों से मिलाप कर रहे थे उनके जिस्म पर बड़े और छोटे धब्बे और धारियाँ थीं। 11उस ख़ाब में अल्लाह के फ़रिश्ते ने मुझसे बात की, ‘याक़ूब!’ मैंने कहा, ‘जी, मैं हाज़िर हूँ।’ 12फ़रिश्ते ने कहा, ‘अपनी नज़र उठाकर उस पर ग़ौर कर जो हो रहा है। वह तमाम मेंढे और बकरे जो भेड़-बकरियों से मिलाप कर रहे हैं उनके जिस्म पर बड़े और छोटे धब्बे और धारियाँ हैं। मैं यह ख़ुद करवा रहा हूँ, क्योंकि मैंने वह सब कुछ देख लिया है जो लाबन ने तेरे साथ किया है। 13मैं वह ख़ुदा हूँ जो बैतेल में तुझ पर ज़ाहिर हुआ था, उस जगह जहाँ तूने सतून पर तेल उंडेलकर उसे मेरे लिए मख़सूस किया और मेरे हुज़ूर क़सम खाई थी। अब उठ और रवाना होकर अपने वतन वापस चला जा’।”

14राख़िल और लियाह ने जवाब में याक़ूब से कहा, “अब हमें अपने बाप की मीरास से कुछ मिलने की उम्मीद नहीं रही। 15उसका हमारे साथ अजनबी का-सा सुलूक है। पहले उसने हमें बेच दिया, और अब उसने वह सारे पैसे खा भी लिए हैं। 16चुनाँचे जो भी दौलत अल्लाह ने हमारे बाप से छीन ली है वह हमारी और हमारे बच्चों की ही है। अब जो कुछ भी अल्लाह ने आपको बताया है वह करें।”

17तब याक़ूब ने उठकर अपने बाल-बच्चों को
ऊँटों पर बिठाया 18और अपने तमाम मवेशी
और मसोपुतामिया से हासिल किया हुआ तमाम
सामान लेकर मुल्के-कनान में अपने बाप के हाँ
जाने के लिए रवाना हुआ। 19उस वक़्त लाबन
अपनी भेड़-बकरियों की पशम कतरने को गया
हुआ था। उस की ग़ैरमौजूदगी में राख़िल ने अपने
बाप के बुत चुरा लिए।
20याक़ूब ने लाबन को फ़रेब देकर उसे इत्तला
न दी कि मैं जा रहा हूँ 21बल्कि अपनी सारी
मिलकियत समेटकर फ़रार हुआ। दरियाए-फ़ुरात
को पार करके वह जिलियाद के पहाड़ी इलाक़े
की तरफ़ सफ़र करने लगा।

लाबन याक़ूब का ताक़्क़ुब करता है

22तीन दिन गुज़र गए। फिर लाबन को बताया
गया कि याक़ूब भाग गया है। 23अपने रिश्तेदारों
को साथ लेकर उसने उसका ताक़्क़ुब किया।
सात दिन चलते चलते उसने याक़ूब को आ लिया
जब वह जिलियाद के पहाड़ी इलाक़े में पहुँच गया
था। 24लेकिन उस रात अल्लाह ने ख़ाब में लाबन
के पास आकर उससे कहा, “ख़बरदार! याक़ूब
को बुरा-भला न कहना।”
25जब लाबन उसके पास पहुँचा तो याक़ूब
ने जिलियाद के पहाड़ी इलाक़े में अपने ख़ैमे
लगाए हुए थे। लाबन ने भी अपने रिश्तेदारों के
साथ वहीं अपने ख़ैमे लगाए। 26उसने याक़ूब से
कहा, “यह आपने क्या किया है? आप मुझे
धोका देकर मेरी बेटियों को क्यों जंगी क़ैदियों
की तरह हाँक लाए हैं? 27आप क्यों मुझे फ़रेब
देकर ख़ामोशी से भाग आए हैं? अगर आप
मुझे इत्तला देते तो मैं आपको ख़ुशी ख़ुशी दफ़
और सरोद के साथ गाते बजाते रुख़सत करता।
28आपने मुझे अपने नवासे-नवासियों और बेटियों
को बोसा देने का मौक़ा भी न दिया। आपकी यह
हरकत बड़ी अहमक़ाना थी। 29मैं आपको बहुत
नुक़सान पहुँचा सकता हूँ। लेकिन पिछली रात
आपके अब्बू के ख़ुदा ने मुझसे कहा, ‘ख़बरदार!
याक़ूब को बुरा-भला न कहना।’ 30ठीक है, आप
इसलिए चले गए कि अपने बाप के घर वापस
जाने के बड़े आरज़ूमंद थे। लेकिन यह आपने क्या
किया है कि मेरे बुत चुरा लाए हैं?”
31याक़ूब ने जवाब दिया, “मुझे डर था कि आप
अपनी बेटियों को मुझसे छीन लेंगे। 32लेकिन
अगर आपको यहाँ किसी के पास अपने बुत मिल
जाएँ तो उसे सज़ाए-मौत दी जाए हमारे रिश्तेदारों
की मौजूदगी में मालूम करें कि मेरे पास आपकी
कोई चीज़ है कि नहीं। अगर है तो उसे ले लें।”
याक़ूब को मालूम नहीं था कि राख़िल ने बुतों को
चुराया है।
33लाबन याक़ूब के ख़ैमे में दाख़िल हुआ और
ढूँडने लगा। वहाँ से निकलकर वह लियाह के ख़ैमे
में और दोनों लौंडियों के ख़ैमे में गया। लेकिन
उसके बुत कहीं नज़र न आए। आख़िर में वह
राख़िल के ख़ैमे में दाख़िल हुआ। 34राख़िल बुतों
को ऊँटों की एक काठी के नीचे छुपाकर उस पर
बैठ गई थी। लाबन टटोल टटोलकर पूरे ख़ैमे में
से गुज़रा लेकिन बुत न मिले। 35राख़िल ने अपने
बाप से कहा, “अब्बू, मुझसे नाराज़ न होना कि
मैं आपके सामने खड़ी नहीं हो सकती। मैं ऐयामे-
माहवारी के सबब से उठ नहीं सकती।” लाबन
उसे छोड़कर ढूँडता रहा, लेकिन कुछ न मिला।
36फिर याक़ूब को ग़ुस्सा आया और वह लाबन
से झगड़ने लगा। उसने पूछा, “मुझसे क्या जुर्म
सरज़द हुआ है? मैंने क्या गुनाह किया है कि
आप इतनी तुंदी से मेरे ताक़्क़ुब के लिए निकले
हैं? 37आपने टटोल टटोलकर मेरे सारे सामान
की तलाशी ली है। तो आपका क्या निकला है?
उसे यहाँ अपने और मेरे रिश्तेदारों के सामने रखें।
फिर वह फ़ैसला करें कि हममें से कौन हक़ पर
है। 38मैं बीस साल तक आपके साथ रहा हूँ।
उस दौरान आपकी भेड़-बकरियाँ बच्चों से महरूम
नहीं रहीं बल्कि मैंने आपका एक मेंढा भी नहीं
खाया। 39जब भी कोई भेड़ या बकरी किसी
जंगली जानवर ने फाड़ डाली तो मैं उसे आपके
पास न लाया बल्कि मुझे ख़ुद उसका नुक़सान

भरना पड़ा। आपका तक़ाज़ा था कि मैं ख़ुद चोरी हुए माल का एवज़ाना दूँ, ख़ाह वह दिन के वक़्त चोरी हुआ या रात को। 40मैं दिन की शदीद गरमी के बाइस पिघल गया और रात की शदीद सर्दी के बाइस जम गया। काम इतना सख़्त था कि मैं नींद से महरूम रहा। 41पूरे बीस साल इसी हालत में गुज़र गए। चौदह साल मैंने आपकी बेटियों के एवज़ काम किया और छः साल आपकी भेड़-बकरियों के लिए। उस दौरान आपने दस बार मेरी तनख़ाह बदल दी। 42अगर मेरे बाप इसहाक़ का ख़ुदा और मेरे दादा इब्राहीम का माबूद[a] मेरे साथ न होता तो आप मुझे ज़रूर ख़ाली हाथ रुख़सत करते। लेकिन अल्लाह ने मेरी मुसीबत और मेरी सख़्त मेहनत-मशक़्क़त देखी है, इसलिए उसने कल रात को मेरे हक़ में फ़ैसला दिया।”

याक़ूब और लाबन के दरमियान अहद

43तब लाबन ने याक़ूब से कहा, “यह बेटियाँ तो मेरी बेटियाँ हैं, और इनके बच्चे मेरे बच्चे हैं। यह भेड़-बकरियाँ भी मेरी ही हैं। लेकिन अब मैं अपनी बेटियों और उनके बच्चों के लिए कुछ नहीं कर सकता। 44इसलिए आओ, हम एक दूसरे के साथ अहद बाँधें। इसके लिए हम यहाँ पत्थरों का ढेर लगाएँ जो अहद की गवाही देता रहे।”

45चुनाँचे याक़ूब ने एक पत्थर लेकर उसे सतून के तौर पर खड़ा किया। 46उसने अपने रिश्तेदारों से कहा, “कुछ पत्थर जमा करें।” उन्होंने पत्थर जमा करके ढेर लगा दिया। फिर उन्होंने उस ढेर के पास बैठकर खाना खाया। 47लाबन ने उसका नाम यजर-शाहदूथा रखा जबकि याक़ूब ने जल-एद रखा। दोनों नामों का मतलब ‘गवाही का ढेर’ है यानी वह ढेर जो गवाही देता है। 48लाबन ने कहा, “आज हम दोनों के दरमियान यह ढेर अहद की गवाही देता है।” इसलिए उसका नाम जल-एद रखा गया। 49उसका एक और नाम मिसफ़ाह यानी ‘पहरेदारों का मीनार’ भी रखा गया। क्योंकि लाबन ने कहा, “रब हम पर पहरा दे जब हम एक दूसरे से अलग हो जाएंगे। 50मेरी बेटियों से बुरा सुलूक न करना, न उनके अलावा किसी और से शादी करना। अगर मुझे पता भी न चले लेकिन ज़रूर याद रखें कि अल्लाह मेरे और आपके सामने गवाह है। 51यहाँ यह ढेर है जो मैंने लगा दिया है और यहाँ यह सतून भी है। 52यह ढेर और सतून दोनों इसके गवाह हैं कि न मैं यहाँ से गुज़रकर आपको नुक़सान पहुँचाऊँगा और न आप यहाँ से गुज़रकर मुझे नुक़सान पहुँचाएँगे। 53इब्राहीम, नहूर और उनके बाप का ख़ुदा हम दोनों के दरमियान फ़ैसला करे अगर ऐसा कोई मामला हो।” जवाब में याक़ूब ने इसहाक़ के माबूद की क़सम खाई कि मैं यह अहद कभी नहीं तोड़ूँगा। 54उसने पहाड़ पर एक जानवर क़ुरबानी के तौर पर चढ़ाया और अपने रिश्तेदारों को खाना खाने की दावत दी। उन्होंने खाना खाकर वहीं पहाड़ पर रात गुज़ारी।

55अगले दिन सुबह-सवेरे लाबन ने अपने नवासे-नवासियों और बेटियों को बोसा देकर उन्हें बरकत दी। फिर वह अपने घर वापस चला गया।

याक़ूब एसौ से मिलने के लिए तैयार हो जाता है

32 याक़ूब ने भी अपना सफ़र जारी रखा। रास्ते में अल्लाह के फ़रिश्ते उससे मिले। 2उन्हें देखकर उसने कहा, “यह अल्लाह की लशकरगाह है।” उसने उस मक़ाम का नाम महनायम यानी ‘दो लशकरगाहें’ रखा।

3याक़ूब ने अपने भाई एसौ के पास अपने आगे आगे क़ासिद भेजे। एसौ सईर यानी अदोम के मुल्क में आबाद था। 4उन्हें एसौ को बताना था, “आपका ख़ादिम याक़ूब आपको इत्तला देता है कि मैं परदेस में जाकर अब तक लाबन का मेहमान रहा हूँ। 5वहाँ मुझे बैल, गधे, भेड़-

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : दहशत यानी इसहाक़ का वह ख़ुदा जिससे इनसान दहशत खाता है।

बकरियाँ, ग़ुलाम और लौंडियाँ हासिल हुए हैं। अब मैं अपने मालिक को इत्तला दे रहा हूँ कि वापस आ गया हूँ और आपकी नज़रे-करम का ख़ाहिशमंद हूँ।"

6जब क़ासिद वापस आए तो उन्होंने कहा, "हम आपके भाई एसौ के पास गए, और वह 400 आदमी साथ लेकर आपसे मिलने आ रहा है।"

7याक़ूब घबराकर बहुत परेशान हुआ। उसने अपने साथ के तमाम लोगों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों और ऊँटों को दो गुरोहों में तक़सीम किया। 8ख़याल यह था कि अगर एसौ आकर एक गुरोह पर हमला करे तो बाक़ी गुरोह शायद बच जाए। 9फिर याक़ूब ने दुआ की, "ऐ मेरे दादा इब्राहीम और मेरे बाप इसहाक़ के ख़ुदा, मेरी दुआ सुन! ऐ रब, तूने ख़ुद मुझे बताया, 'अपने मुल्क और रिश्तेदारों के पास वापस जा, और मैं तुझे कामयाबी दूँगा।' 10मैं उस तमाम मेहरबानी और वफ़ादारी के लायक़ नहीं जो तूने अपने ख़ादिम को दिखाई है। जब मैंने लाबन के पास जाते वक़्त दरियाए-यरदन को पार किया तो मेरे पास सिर्फ़ यह लाठी थी, और अब मेरे पास यह दो गुरोह हैं। 11मुझे अपने भाई एसौ से बचा, क्योंकि मुझे डर है कि वह मुझ पर हमला करके बाल-बच्चों समेत सब कुछ तबाह कर देगा। 12तूने ख़ुद कहा था, 'मैं तुझे कामयाबी दूँगा और तेरी औलाद इतनी बढ़ाऊँगा कि वह समुंदर की रेत की मानिंद बेशुमार होगी'।"

13याक़ूब ने वहाँ रात गुज़ारी। फिर उसने अपने माल में से एसौ के लिए तोह्फ़े चुन लिए : 14200 बकरियाँ, 20 बकरे, 200 भेड़ें, 20 मेंढे, 1530 दूध देनेवाली ऊँटनियाँ बच्चों समेत, 40 गाएँ, 10 बैल, 20 गधियाँ और 10 गधे। 16उसने उन्हें मुख़्तलिफ़ रेवड़ों में तक़सीम करके अपने मुख़्तलिफ़ नौकरों के सुपुर्द किया और उनसे कहा, "मेरे आगे आगे चलो लेकिन हर रेवड़ के दरमियान फ़ासला रखो।"

17जो नौकर पहले रेवड़ लेकर आगे निकला उससे याक़ूब ने कहा, "मेरा भाई एसौ तुमसे मिलेगा और पूछेगा, 'तुम्हारा मालिक कौन है? तुम कहाँ जा रहे हो? तुम्हारे सामने के जानवर किसके हैं?' 18जवाब में तुम्हें कहना है, 'यह आपके ख़ादिम याक़ूब के हैं। यह तोह्फ़ा हैं जो वह अपने मालिक एसौ को भेज रहे हैं। याक़ूब हमारे पीछे पीछे आ रहे हैं'।"

19याक़ूब ने यही हुक्म हर एक नौकर को दिया जिसे रेवड़ लेकर उसके आगे आगे जाना था। उसने कहा, "जब तुम एसौ से मिलोगे तो उससे यही कहना है। 20तुम्हें यह भी ज़रूर कहना है, आपके ख़ादिम याक़ूब हमारे पीछे आ रहे हैं।" क्योंकि याक़ूब ने सोचा, 'मैं इन तोह्फ़ों से उसके साथ सुलह करूँगा। फिर जब उससे मुलाक़ात होगी तो शायद वह मुझे क़बूल कर ले।' 21यों उसने यह तोह्फ़े अपने आगे आगे भेज दिए। लेकिन उसने ख़ुद ख़ैमागाह में रात गुज़ारी।

याक़ूब की कुश्ती

22उस रात वह उठा और अपनी दो बीवियों, दो लौंडियों और ग्यारह बेटों को लेकर दरियाए-यब्बोक़ को वहाँ से पार किया जहाँ कम गहराई थी। 23फिर उसने अपना सारा सामान भी वहाँ भेज दिया। 24लेकिन वह ख़ुद अकेला ही पीछे रह गया।

उस वक़्त एक आदमी आया और पौ फटने तक उससे कुश्ती लड़ता रहा। 25जब उसने देखा कि मैं याक़ूब पर ग़ालिब नहीं आ रहा तो उसने उसके कूल्हे को छुआ, और उसका जोड़ निकल गया। 26आदमी ने कहा, "मुझे जाने दे, क्योंकि पौ फटनेवाली है।"

याक़ूब ने कहा, "पहले मुझे बरकत दें, फिर ही आपको जाने दूँगा।" 27आदमी ने पूछा, "तेरा क्या नाम है?" उसने जवाब दिया, "याक़ूब।" 28आदमी ने कहा, "अब से तेरा नाम याक़ूब नहीं बल्कि इसराईल यानी 'वह अल्लाह से लड़ता है'

होगा। क्योंकि तू अल्लाह और आदमियों के साथ
लड़कर ग़ालिब आया है।”
29याक़ूब ने कहा, “मुझे अपना नाम बताएँ।”
उसने कहा, “तू क्यों मेरा नाम जानना चाहता
है?” फिर उसने याक़ूब को बरकत दी।
30याक़ूब ने कहा, “मैंने अल्लाह को रूबरू
देखा तो भी बच गया हूँ।” इसलिए उसने उस
मक़ाम का नाम फ़नियेल रखा। 31याक़ूब वहाँ से
चला तो सूरज तुलू हो रहा था। वह कूल्हे के सबब
से लँगड़ाता रहा।
32यही वजह है कि आज भी इसराईल की
औलाद कूल्हे के जोड़ पर की नस को नहीं खाते,
क्योंकि याक़ूब की इसी नस को छुआ गया था।

याक़ूब एसौ से मिलता है

33 फिर एसौ उनकी तरफ़ आता हुआ
नज़र आया। उसके साथ 400
आदमी थे। उन्हें देखकर याक़ूब ने बच्चों को
बाँटकर लियाह, राख़िल और दोनों लौंडियों के
हवाले कर दिया। 2उसने दोनों लौंडियों को उनके
बच्चों समेत आगे चलने दिया। फिर लियाह उसके
बच्चों समेत और आख़िर में राख़िल और यूसुफ़
आए। 3याक़ूब ख़ुद सबसे आगे एसौ से मिलने
गया। चलते चलते वह सात दफ़ा ज़मीन तक
झुका। 4लेकिन एसौ दौड़कर उससे मिलने आया
और उसे गले लगाकर बोसा दिया। दोनों रो पड़े।
5फिर एसौ ने औरतों और बच्चों को देखा।
उसने पूछा, “तुम्हारे साथ यह लोग कौन हैं?”
याक़ूब ने कहा, “यह आपके ख़ादिम के बच्चे हैं
जो अल्लाह ने अपने करम से नवाज़े हैं।”
6दोनों लौंडियाँ अपने बच्चों समेत आकर उसके
सामने झुक गईं। 7फिर लियाह अपने बच्चों के
साथ आई और आख़िर में यूसुफ़ और राख़िल
आकर झुक गए।
8एसौ ने पूछा, “जिस जानवरों के बड़े ग़ोल
से मेरी मुलाक़ात हुई उससे क्या मुराद है?”
याक़ूब ने जवाब दिया, “यह तोह्फ़ा है ताकि
आपका ख़ादिम आपकी नज़र में मक़बूल हो।”
9लेकिन एसौ ने कहा, “मेरे भाई, मेरे पास बहुत
कुछ है। यह अपने पास ही रखो।” 10याक़ूब ने
कहा, “नहीं जी, अगर मुझ पर आपके करम
की नज़र है तो मेरे इस तोह्फ़े को ज़रूर क़बूल
फ़रमाएँ। क्योंकि जब मैंने आपका चेहरा देखा
तो वह मेरे लिए अल्लाह के चेहरे की मानिंद था,
आपने मेरे साथ इस क़दर अच्छा सुलूक किया है।
11मेहरबानी करके यह तोह्फ़ा क़बूल करें जो मैं
आपके लिए लाया हूँ। क्योंकि अल्लाह ने मुझ पर
अपने करम का इज़हार किया है, और मेरे पास
बहुत कुछ है।”
याक़ूब इसरार करता रहा तो आख़िरकार एसौ
ने उसे क़बूल कर लिया। फिर एसौ कहने लगा,
12“आओ, हम रवाना हो जाएँ। मैं तुम्हारे आगे
आगे चलूँगा।” 13याक़ूब ने जवाब दिया, “मेरे
मालिक, आप जानते हैं कि मेरे बच्चे नाज़ुक हैं।
मेरे पास भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और उनके दूध
पीनेवाले बच्चे भी हैं। अगर मैं उन्हें एक दिन के
लिए भी हद से ज़्यादा हाँकूँ तो वह मर जाएंगे।
14मेरे मालिक, मेहरबानी करके मेरे आगे आगे
जाएँ। मैं आराम से उसी रफ़्तार से आपके पीछे
पीछे चलता रहूँगा जिस रफ़्तार से मेरे मवेशी और
मेरे बच्चे चल सकेंगे। यों हम आहिस्ता चलते
हुए आपके पास सईर पहुँचेंगे।” 15एसौ ने कहा,
“क्या मैं अपने आदमियों में से कुछ आपके पास
छोड़ दूँ?” लेकिन याक़ूब ने कहा, “क्या ज़रूरत
है? सबसे अहम बात यह है कि आपने मुझे क़बूल
कर लिया है।”
16उस दिन एसौ सईर के लिए और 17याक़ूब
सुक्कात के लिए रवाना हुआ। वहाँ उसने अपने
लिए मकान बना लिया और अपने मवेशियों के
लिए झोंपड़ियाँ। इसलिए उस मक़ाम का नाम
सुक्कात यानी झोंपड़ियाँ पड़ गया।
18फिर याक़ूब चलते चलते सलामती
से सिकम शहर पहुँचा। यों उसका मसो-
पुतामिया से मुल्के-कनान तक का सफ़र
इख़्तिताम तक पहुँच गया। उसने अपने ख़ैमे
शहर के सामने लगाए। 19उसके ख़ैमे हमोर

की औलाद की ज़मीन पर लगे थे। उसने यह ज़मीन चाँदी के 100 सिक्कों के बदले ख़रीद ली। 20वहाँ उसने क़ुरबानगाह बनाई जिसका नाम उसने 'एल ख़ुदाए-इसराईल' रखा।

दीना की इसमतदरी

34 एक दिन याक़ूब और लियाह की बेटी दीना कनानी औरतों से मिलने के लिए घर से निकली। 2शहर में एक आदमी बनाम सिकम रहता था। उसका वालिद हमोर उस इलाक़े का हुक्मरान था और हिव्वी क़ौम से ताल्लुक़ रखता था। जब सिकम ने दीना को देखा तो उसने उसे पकड़कर उस की इसमतदरी की। 3लेकिन उसका दिल दीना से लग गया। वह उससे मुहब्बत करने लगा और प्यार से उससे बातें करता रहा। 4उसने अपने बाप से कहा, "इस लड़की के साथ मेरी शादी करा दें।"

5जब याक़ूब ने अपनी बेटी की इसमतदरी की ख़बर सुनी तो उसके बेटे मवेशियों के साथ खुले मैदान में थे। इसलिए वह उनके वापस आने तक ख़ामोश रहा।

6सिकम का बाप हमोर शहर से निकलकर याक़ूब से बात करने के लिए आया। 7जब याक़ूब के बेटों को दीना की इसमतदरी की ख़बर मिली तो उनके दिल रंजिश और ग़ुस्से से भर गए कि सिकम ने याक़ूब की बेटी की इसमतदरी से इसराईल की इतनी बेइज़्ज़ती की है। वह सीधे खुले मैदान से वापस आए। 8हमोर ने याक़ूब से कहा, "मेरे बेटे का दिल आपकी बेटी से लग गया है। मेहरबानी करके उस की शादी मेरे बेटे के साथ कर दें। 9हमारे साथ रिश्ता बाँधें, हमारे बेटे-बेटियों के साथ शादियाँ कराएँ। 10फिर आप हमारे साथ इस मुल्क में रह सकेंगे और पूरा मुल्क आपके लिए खुला होगा। आप जहाँ भी चाहें आबाद हो सकेंगे, तिजारत कर सकेंगे और ज़मीन ख़रीद सकेंगे।" 11सिकम ने ख़ुद भी दीना के बाप और भाइयों से मिन्नत की, "अगर मेरी यह दरख़ास्त मंज़ूर हो तो मैं जो कुछ आप कहेंगे अदा कर दूँगा। 12जितना भी महर और तोह्फ़े आप मुक़र्रर करें मैं दे दूँगा। सिर्फ़ मेरी यह ख़ाहिश पूरी करें कि यह लड़की मेरे अक़द में आ जाए।"

13लेकिन दीना की इसमतदरी के सबब से याक़ूब के बेटों ने सिकम और उसके बाप हमोर से चालाकी करके 14कहा, "हम ऐसा नहीं कर सकते। हम अपनी बहन की शादी किसी ऐसे आदमी से नहीं करा सकते जिसका ख़तना नहीं हुआ। इससे हमारी बेइज़्ज़ती होती है। 15हम सिर्फ़ इस शर्त पर राज़ी होंगे कि आप अपने तमाम लड़कों और मर्दों का ख़तना करवाने से हमारी मानिंद हो जाएँ। 16फिर आपके बेटे-बेटियों के साथ हमारी शादियाँ हो सकेंगी और हम आपके साथ एक क़ौम बन जाएंगे। 17लेकिन अगर आप ख़तना कराने के लिए तैयार नहीं हैं तो हम अपनी बहन को लेकर चले जाएंगे।"

18यह बातें हमोर और उसके बेटे सिकम को अच्छी लगीं। 19नौजवान सिकम ने फ़ौरन उन पर अमल किया, क्योंकि वह दीना को बहुत पसंद करता था। सिकम अपने ख़ानदान में सबसे मुअज़्ज़ज़ था। 20हमोर अपने बेटे सिकम के साथ शहर के दरवाज़े पर गया जहाँ शहर के फ़ैसले किए जाते थे। वहाँ उन्होंने बाक़ी शहरियों से बात की। 21"यह आदमी हमसे झगड़नेवाले नहीं हैं, इसलिए क्यों न वह इस मुल्क में हमारे साथ रहें और हमारे दरमियान तिजारत करें? हमारे मुल्क में उनके लिए भी काफ़ी जगह है। आओ, हम उनकी बेटियों और बेटों से शादियाँ करें। 22लेकिन यह आदमी सिर्फ़ इस शर्त पर हमारे दरमियान रहने और एक ही क़ौम बनने के लिए तैयार हैं कि हम उनकी तरह अपने तमाम लड़कों और मर्दों का ख़तना कराएँ। 23अगर हम ऐसा करें तो उनके तमाम मवेशी और सारा माल हमारा ही होगा। चुनाँचे आओ, हम मुत्तफ़िक़ होकर फ़ैसला कर लें ताकि वह हमारे दरमियान रहें।"

24सिकम के शहरी हमोर और सिकम के मशवरे पर राज़ी हुए। तमाम लड़कों और मर्दों का ख़तना कराया गया। 25तीन दिन के बाद

जब ख़तने के सबब से लोगों की हालत बुरी थी तो दीना के दो भाई शमाऊन और लावी अपनी तलवारें लेकर शहर में दाख़िल हुए। किसी को शक तक नहीं था कि क्या कुछ होगा। अंदर जाकर उन्होंने बच्चों से लेकर बूढ़ों तक तमाम मर्दों को क़त्ल कर दिया 26जिनमें हमोर और उसका बेटा सिकम भी शामिल थे। फिर वह दीना को सिकम के घर से लेकर चले गए।

27इस क़त्ले-आम के बाद याक़ूब के बाक़ी बेटे शहर पर टूट पड़े और उसे लूट लिया। यों उन्होंने अपनी बहन की इसमतदरी का बदला लिया। 28वह भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, गधे और शहर के अंदर और बाहर का सब कुछ लेकर चलते बने। 29उन्होंने सारे माल पर क़ब्ज़ा किया, औरतों और बच्चों को क़ैदी बना लिया और तमाम घरों का सामान भी ले गए।

30फिर याक़ूब ने शमाऊन और लावी से कहा, “तुमने मुझे मुसीबत में डाल दिया है। अब कनानी, फ़रिज़्ज़ी और मुल्क के बाक़ी बाशिंदों में मेरी बदनामी हुई है। मेरे साथ कम आदमी हैं। अगर दूसरे मिलकर हम पर हमला करें तो हमारे पूरे ख़ानदान का सत्यानास हो जाएगा।” 31लेकिन उन्होंने कहा, “क्या यह ठीक था कि उसने हमारी बहन के साथ कसबी का-सा सुलूक किया?”

बैतेल में याक़ूब पर अल्लाह की बरकत

35 अल्लाह ने याक़ूब से कहा, “उठ, बैतेल जाकर वहाँ आबाद हो। वहीं अल्लाह के लिए जो तुझ पर ज़ाहिर हुआ जब तू अपने भाई एसौ से भाग रहा था क़ुरबानगाह बना।” 2चुनाँचे याक़ूब ने अपने घरवालों और बाक़ी सारे साथियों से कहा, “जो भी अजनबी बुत आपके पास हैं उन्हें फेंक दें। अपने आपको पाक-साफ़ करके अपने कपड़े बदलें, 3क्योंकि हमें यह जगह छोड़कर बैतेल जाना है। वहाँ मैं उस ख़ुदा के लिए क़ुरबानगाह बनाऊँगा जिसने मुसीबत के वक़्त मेरी दुआ सुनी। जहाँ भी मैं गया वहाँ वह मेरे साथ रहा है।” 4यह सुनकर उन्होंने याक़ूब को तमाम बुत दे दिए जो उनके पास थे और तमाम बालियाँ जो उन्होंने तावीज़ के तौर पर कानों में पहन रखी थीं। उसने सब कुछ सिकम के क़रीब बलूत के दरख़्त के नीचे ज़मीन में दबा दिया। 5फिर वह रवाना हुए। इर्दगिर्द के शहरों पर अल्लाह की तरफ़ से इतना शदीद ख़ौफ़ छा गया कि उन्होंने याक़ूब और उसके बेटों का ताक़्क़ुब न किया।

6चलते चलते याक़ूब अपने लोगों समेत लूज़ पहुँच गया जो मुल्के-कनान में था। आज लूज़ का नाम बैतेल है। 7याक़ूब ने वहाँ क़ुरबानगाह बनाकर मक़ाम का नाम बैतेल यानी ‘अल्लाह का घर’ रखा। क्योंकि वहाँ अल्लाह ने अपने आपको उस पर ज़ाहिर किया था जब वह अपने भाई से फ़रार हो रहा था।

8वहाँ रिबक़ा की दाया दबोरा मर गई। वह बैतेल के जुनूब में बलूत के दरख़्त के नीचे दफ़न हुई, इसलिए उसका नाम अल्लोन-बकूत यानी ‘रोने का बलूत का दरख़्त’ रखा गया।

9अल्लाह याक़ूब पर एक दफ़ा और ज़ाहिर हुआ और उसे बरकत दी। यह मसोपुतामिया से वापस आने पर दूसरी बार हुआ। 10अल्लाह ने उससे कहा, “अब से तेरा नाम याक़ूब नहीं बल्कि इसराईल होगा।” यों उसने उसका नया नाम इसराईल रखा। 11अल्लाह ने यह भी उससे कहा, “मैं अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ हूँ। फल-फूल और तादाद में बढ़ता जा। एक क़ौम नहीं बल्कि बहुत-सी क़ौमें तुझसे निकलेंगी। तेरी औलाद में बादशाह भी शामिल होंगे। 12मैं तुझे वही मुल्क दूँगा जो इब्राहीम और इसहाक़ को दिया है। और तेरे बाद उसे तेरी औलाद को दूँगा।”

13फिर अल्लाह वहाँ से आसमान पर चला गया। 14जहाँ अल्लाह याक़ूब से हमकलाम हुआ था वहाँ उसने पत्थर का सतून खड़ा किया और उस पर मै और तेल उंडेलकर उसे मख़सूस किया। 15उसने जगह का नाम बैतेल रखा।

राख़िल की मौत

16फिर याक़ूब अपने घरवालों के साथ बैतेल
को छोड़कर इफ़राता की तरफ़ चल पड़ा। राख़िल
उम्मीद से थी, और रास्ते में बच्चे की पैदाइश
का वक़्त आ गया। बच्चा बड़ी मुश्किल से पैदा
हुआ। 17जब दर्दे-ज़ह उरूज को पहुँच गया तो
दाई ने उससे कहा, “मत डरो, क्योंकि एक और
बेटा है।” 18लेकिन वह दम तोड़नेवाली थी, और
मरते मरते उसने उसका नाम बिन-ऊनी यानी
‘मेरी मुसीबत का बेटा’ रखा। लेकिन उसके बाप
ने उसका नाम बिनयमीन यानी ‘दहने हाथ या
ख़ुशक़िसमती का बेटा’ रखा। 19राख़िल फ़ौत
हुई, और वह इफ़राता के रास्ते में दफ़न हुई।
आजकल इफ़राता को बैत-लहम कहा जाता है।
20याक़ूब ने उस की क़ब्र पर पत्थर का सतून
खड़ा किया। वह आज तक राख़िल की क़ब्र की
निशानदेही करता है।

21वहाँ से याक़ूब ने अपना सफ़र जारी रखा
और मिजदल-इदर की परली तरफ़ अपने ख़ैमे
लगाए। 22जब वह वहाँ ठहरे थे तो रूबिन याक़ूब
की हरम बिलहाह से हमबिसतर हुआ। याक़ूब को
मालूम हो गया।

याक़ूब के बेटे

याक़ूब के बारह बेटे थे। 23लियाह के बेटे
यह थे : उसका सबसे बड़ा बेटा रूबिन, फिर
शमाऊन, लावी, यहूदाह, इशकार और ज़बूलून।
24राख़िल के दो बेटे थे, यूसुफ़ और बिनयमीन।
25राख़िल की लौंडी बिलहाह के दो बेटे थे, दान
और नफ़ताली। 26लियाह की लौंडी ज़िलफ़ा के
दो बेटे थे, जद और आशर। याक़ूब के यह बेटे
मसोपुतामिया में पैदा हुए।

इसहाक़ की मौत

27फिर याक़ूब अपने बाप इसहाक़ के पास
पहुँच गया जो हबरून के क़रीब ममरे में अजनबी
की हैसियत से रहता था (उस वक़्त हबरून का
नाम क़िरियत-अरबा था)। वहाँ इसहाक़ और
उससे पहले इब्राहीम रहा करते थे। 28-29इसहाक़
180 साल का था जब वह उम्ररसीदा और ज़िंदगी
से आसूदा होकर अपने बापदादा से जा मिला।
उसके बेटे एसौ और याक़ूब ने उसे दफ़न किया।

एसौ की औलाद

36 यह एसौ की औलाद का नसब-
नामा है (एसौ को अदोम भी कहा
जाता है) :

2एसौ ने तीन कनानी औरतों से शादी की :
हित्ती आदमी ऐलोन की बेटी अदा से, अना की
बेटी उहलीबामा से जो हिव्वी आदमी सिबोन की
नवासी थी 3और इसमाईल की बेटी बासमत से
जो नबायोत की बहन थी। 4अदा का एक बेटा
इलीफ़ज़ और बासमत का एक बेटा रऊएल पैदा
हुआ। 5उहलीबामा के तीन बेटे पैदा हुए, यऊस,
यालाम और क़ोरह। एसौ के यह तमाम बेटे मुल्के-
कनान में पैदा हुए।

6बाद में एसौ दूसरे मुल्क में चला गया। उसने
अपनी बीवियों, बेटे-बेटियों और घर के रहनेवालों
को अपने तमाम मवेशियों और मुल्के-कनान में
हासिल किए हुए माल समेत अपने साथ लिया।
7वह इस वजह से चला गया कि दोनों भाइयों के
पास इतने रेवड़ थे कि चराने की जगह कम पड़
गई। 8चुनाँचे एसौ पहाड़ी इलाक़े सईर में आबाद
हुआ। एसौ का दूसरा नाम अदोम है।

9यह एसौ यानी सईर के पहाड़ी इलाक़े में
आबाद अदोमियों का नसबनामा है : 10एसौ
की बीवी अदा का एक बेटा इलीफ़ज़ था जबकि
उस की बीवी बासमत का एक बेटा रऊएल था।
11इलीफ़ज़ के बेटे तेमान, ओमर, सफ़ो, जाताम,
क़नज़ 12और अमालीक़ थे। अमालीक़ इलीफ़ज़
की हरम तिमना का बेटा था। यह सब एसौ की
बीवी अदा की औलाद में शामिल थे। 13रऊएल के
बेटे नहत, ज़ारह, सम्मा और मिज़्ज़ा थे। यह सब
एसौ की बीवी बासमत की औलाद में शामिल थे।
14एसौ की बीवी उहलीबामा जो अना की बेटी

और सिबोन की नवासी थी के तीन बेटे यऊस,
यालाम और क़ोरह थे।
15एसौ से मुख़्तलिफ़ क़बीलों के सरदार
निकले। उसके पहलौठे इलीफ़ज़ से यह
क़बायली सरदार निकले : तेमान, ओमर,
सफ़ो, क़नज़, 16क़ोरह, जाताम और अमा-
लीक़। यह सब एसौ की बीवी अदा की औलाद थे।
17एसौ के बेटे रऊएल से यह क़बायली सरदार
निकले : नहत, ज़ारह, सम्मा और मिज़्ज़ा।
यह सब एसौ की बीवी बासमत की औलाद
थे। 18एसौ की बीवी उहलीबामा यानी अना की
बेटी से यह क़बायली सरदार निकले : यऊस,
यालाम और क़ोरह। 19यह तमाम सरदार एसौ
की औलाद हैं।

सईर की औलाद

20मुल्के-अदोम के कुछ बाशिंदे होरी आदमी
सईर की औलाद थे। उनके नाम लोतान, सोबल,
सिबोन, अना, 21दीसोन, एसर और दीसान थे।
सईर के यह बेटे मुल्के-अदोम में होरी क़बीलों के
सरदार थे।
22लोतान होरी और हेमाम का बाप था।
(तिमना लोतान की बहन थी।) 23सोबल के बेटे
अलवान, मानहत, ऐबाल, सफ़ो और ओनाम थे।
24सिबोन के बेटे ऐयाह और अना थे। इसी अना
को गरम चश्मे मिले जब वह बयाबान में अपने
बाप के गधे चरा रहा था। 25अना का एक बेटा
दीसोन और एक बेटी उहलीबामा थी। 26दीसोन
के चार बेटे हमदान, इशबान, यितरान और किरान
थे। 27एसर के तीन बेटे बिलहान, ज़ावान और
अक़ान थे। 28दीसान के दो बेटे ऊज़ और अरान
थे।
29-30यही यानी लोतान, सोबल, सिब-
ओन, अना, दीसोन, एसर और दीसान सईर के
मुल्क में होरी क़बायल के सरदार थे।

अदोम के बादशाह

31इससे पहले कि इसराईलियों का कोई
बादशाह था ज़ैल के बादशाह यके बाद दीगरे
मुल्के-अदोम में हुकूमत करते थे :
32बाला बिन बओर जो दिनहाबा शहर का था
मुल्के-अदोम का पहला बादशाह था।
33उस की मौत पर यूबाब बिन ज़ारह जो बुसरा
शहर का था।
34उस की मौत पर हुशाम जो तेमानियों के
मुल्क का था।
35उस की मौत पर हदद बिन बिदद जिसने
मुल्के-मोआब में मिदियानियों को शिकस्त दी।
वह अवीत का था।
36उस की मौत पर समला जो मसरिक़ा का
था।
37उस की मौत पर साऊल जो दरियाए-फ़ुरात
पर रहोबोत शहर का था।
38उस की मौत पर बाल-हनान बिन अकबोर।
39उस की मौत पर हदद जो फ़ाऊ शहर का
था (बीवी का नाम महेतबेल बिंत मतरिद बिंत
मेज़ाहाब था)।
40-43एसौ से अदोमी क़बीलों के यह
सरदार निकले : तिमना, अलवह, यतेत,
उहलीबामा, ऐला, फ़ीनोन, क़नज़, तेमान,
मिबसार, मजदियेल और इराम। अदोम के
सरदारों की यह फ़हरिस्त उनकी मौरूसी ज़मीन
की आबादियों और क़बीलों के मुताबिक़ ही बयान
की गई है। एसौ उनका बाप है।

यूसुफ़ के ख़ाब

37 याक़ूब मुल्के-कनान में रहता था जहाँ
पहले उसका बाप भी परदेसी था।
2यह याक़ूब के ख़ानदान का बयान है।
उस वक़्त याक़ूब का बेटा यूसुफ़ 17 साल
का था। वह अपने भाइयों यानी बिलहाह और
ज़िलफ़ा के बेटों के साथ भेड़-बकरियों की देख-
भाल करता था। यूसुफ़ अपने बाप को अपने

भाइयों की बुरी हरकतों की इत्तला दिया करता था।

3याक़ूब यूसुफ़ को अपने तमाम बेटों की निसबत ज़्यादा प्यार करता था। वजह यह थी कि वह तब पैदा हुआ जब बाप बूढ़ा था। इसलिए याक़ूब ने उसके लिए एक ख़ास रंगदार लिबास बनवाया। 4जब उसके भाइयों ने देखा कि हमारा बाप यूसुफ़ को हमसे ज़्यादा प्यार करता है तो वह उससे नफ़रत करने लगे और अदब से उससे बात नहीं करते थे।

5एक रात यूसुफ़ ने ख़ाब देखा। जब उसने अपने भाइयों को ख़ाब सुनाया तो वह उससे और भी नफ़रत करने लगे। 6उसने कहा, “सुनो, मैंने ख़ाब देखा। 7हम सब खेत में पूले बाँध रहे थे कि मेरा पूला खड़ा हो गया। आपके पूले मेरे पूले के इर्दगिर्द जमा होकर उसके सामने झुक गए।” 8उसके भाइयों ने कहा, “अच्छा, तू बादशाह बनकर हम पर हुकूमत करेगा?” उसके ख़ाबों और उस की बातों के सबब से उनकी उससे नफ़रत मज़ीद बढ़ गई।

9कुछ देर के बाद यूसुफ़ ने एक और ख़ाब देखा। उसने अपने भाइयों से कहा, “मैंने एक और ख़ाब देखा है। उसमें सूरज, चाँद और ग्यारह सितारे मेरे सामने झुक गए।” 10उसने यह ख़ाब अपने बाप को भी सुनाया तो उसने उसे डाँटा। उसने कहा, “यह कैसा ख़ाब है जो तूने देखा! यह कैसी बात है कि मैं, तेरी माँ और तेरे भाई आकर तेरे सामने ज़मीन तक झुक जाएँ?” 11नतीजे में उसके भाई उससे बहुत हसद करने लगे। लेकिन उसके बाप ने दिल में यह बात महफ़ूज़ रखी।

यूसुफ़ को बेचा जाता है

12एक दिन जब यूसुफ़ के भाई अपने बाप के रेवड़ चराने के लिए सिकम तक पहुँच गए थे 13तो याक़ूब ने यूसुफ़ से कहा, “तेरे भाई सिकम में रेवड़ों को चरा रहे हैं। आ, मैं तुझे उनके पास भेज देता हूँ।” यूसुफ़ ने जवाब दिया, “ठीक है।” 14याक़ूब ने कहा, “जाकर मालूम कर कि तेरे भाई और उनके साथ के रेवड़ ख़ैरियत से हैं कि नहीं। फिर वापस आकर मुझे बता देना।” चुनाँचे उसके बाप ने उसे वादीए-हबरून से भेज दिया, और यूसुफ़ सिकम पहुँच गया।

15वहाँ वह इधर-उधर फिरता रहा। आख़िरकार एक आदमी उससे मिला और पूछा, “आप क्या ढूँड रहे हैं?” 16यूसुफ़ ने जवाब दिया, “मैं अपने भाइयों को तलाश कर रहा हूँ। मुझे बताएँ कि वह अपने जानवरों को कहाँ चरा रहे हैं।” 17आदमी ने कहा, “वह यहाँ से चले गए हैं। मैंने उन्हें यह कहते सुना कि आओ, हम दूतैन जाएँ।” यह सुनकर यूसुफ़ अपने भाइयों के पीछे दूतैन चला गया। वहाँ उसे वह मिल गए।

18जब यूसुफ़ अभी दूर से नज़र आया तो उसके भाइयों ने उसके पहुँचने से पहले उसे क़त्ल करने का मनसूबा बनाया। 19उन्होंने कहा, “देखो, ख़ाब देखनेवाला आ रहा है। 20आओ, हम उसे मार डालें और उस की लाश किसी गढ़े में फेंक दें। हम कहेंगे कि किसी वहशी जानवर ने उसे फाड़ खाया है। फिर पता चलेगा कि उसके ख़ाबों की क्या हक़ीक़त है।”

21जब रूबिन ने उनकी बातें सुनीं तो उसने यूसुफ़ को बचाने की कोशिश की। उसने कहा, “नहीं, हम उसे क़त्ल न करें। 22उसका ख़ून न करना। बेशक उसे इस गढ़े में फेंक दें जो रेगिस्तान में है, लेकिन उसे हाथ न लगाएँ।” उसने यह इसलिए कहा कि वह उसे बचाकर बाप के पास वापस पहुँचाना चाहता था।

23ज्योंही यूसुफ़ अपने भाइयों के पास पहुँचा उन्होंने उसका रंगदार लिबास उतारकर 24यूसुफ़ को गढ़े में फेंक दिया। गढ़ा ख़ाली था, उसमें पानी नहीं था। 25फिर वह रोटी खाने के लिए बैठ गए। अचानक इसमाईलियों का एक क़ाफ़िला नज़र आया। वह जिलियाद से मिसर जा रहे थे, और उनके ऊँट क़ीमती मसालों यानी लादन, बलसान और मुर से लदे हुए थे। 26तब यहूदाह ने अपने भाइयों से कहा, “हमें क्या फ़ायदा है अगर अपने भाई को क़त्ल करके

उसके ख़ून को छुपा दें? 27आओ, हम उसे
इन इसमाईलियों के हाथ फ़रोख़्त कर दें। फिर
कोई ज़रूरत नहीं होगी कि हम उसे हाथ लगाएँ।
आख़िर वह हमारा भाई है।”

उसके भाई राज़ी हुए। 28चुनाँचे जब मिदियानी
ताजिर वहाँ से गुज़रे तो भाइयों ने यूसुफ़ को
खींचकर गढ़े से निकाला और चाँदी के 20
सिक्कों के एवज़ बेच डाला। इसमाईली उसे
लेकर मिसर चले गए।

29उस वक़्त रूबिन मौजूद नहीं था। जब वह गढ़े
के पास वापस आया तो यूसुफ़ उसमें नहीं था।
यह देखकर उसने परेशानी में अपने कपड़े फाड़
डाले। 30वह अपने भाइयों के पास वापस गया
और कहा, “लड़का नहीं है। अब मैं किस तरह
अब्बू के पास जाऊँ?” 31तब उन्होंने बकरा ज़बह
करके यूसुफ़ का लिबास उसके ख़ून में डुबोया,
32फिर रंगदार लिबास इस ख़बर के साथ अपने
बाप को भिजवा दिया कि “हमें यह मिला है।
इसे ग़ौर से देखें। यह आपके बेटे का लिबास तो
नहीं?”

33याक़ूब ने उसे पहचान लिया और कहा,
“बेशक उसी का है। किसी वहशी जानवर ने
उसे फाड़ खाया है। यक़ीनन यूसुफ़ को फाड़
दिया गया है।” 34याक़ूब ने ग़म के मारे अपने
कपड़े फाड़े और अपनी कमर से टाट ओढ़कर
बड़ी देर तक अपने बेटे के लिए मातम करता
रहा। 35उसके तमाम बेटे-बेटियाँ उसे तसल्ली
देने आए, लेकिन उसने तसल्ली पाने से इनकार
किया और कहा, “मैं पाताल में उतरते हुए भी
अपने बेटे के लिए मातम करूँगा।” इस हालत में
वह अपने बेटे के लिए रोता रहा।

36इतने में मिदियानी मिसर पहुँचकर यूसुफ़
को बेच चुके थे। मिसर के बादशाह फ़िरौन के
एक आला अफ़सर फ़ूतीफ़ार ने उसे ख़रीद लिया।
फ़ूतीफ़ार बादशाह के मुहाफ़िज़ों पर मुक़र्रर था।

यहूदाह और तमर

38 उन दिनों में यहूदाह अपने भाइयों को
छोड़कर एक आदमी के पास रहने
लगा जिसका नाम हीरा था और जो अदुल्लाम
शहर से था। 2वहाँ यहूदाह की मुलाक़ात एक
कनानी औरत से हुई जिसके बाप का नाम सुअ
था। उसने उससे शादी की। 3बेटा पैदा हुआ
जिसका नाम यहूदाह ने एर रखा। 4एक और बेटा
पैदा हुआ जिसका नाम बीवी ने ओनान रखा।
5उसके तीसरा बेटा भी पैदा हुआ। उसने उसका
नाम सेला रखा। यहूदाह क़ज़ीब में था जब वह
पैदा हुआ।

6यहूदाह ने अपने बड़े बेटे एर की शादी एक
लड़की से कराई जिसका नाम तमर था। 7रब के
नज़दीक एर शरीर था, इसलिए उसने उसे हलाक
कर दिया। 8इस पर यहूदाह ने एर के छोटे भाई
ओनान से कहा, “अपने बड़े भाई की बेवा के
पास जाओ और उससे शादी करो ताकि तुम्हारे
भाई की नसल क़ायम रहे।” 9ओनान ने ऐसा
किया, लेकिन वह जानता था कि जो भी बच्चे
पैदा होंगे वह क़ानून के मुताबिक़ मेरे बड़े भाई के
होंगे। इसलिए जब भी वह तमर से हमबिसतर
होता तो नुतफ़ा को ज़मीन पर गिरा देता, क्योंकि
वह नहीं चाहता था कि मेरी मारिफ़त मेरे भाई
के बच्चे पैदा हों। 10यह बात रब को बुरी लगी,
और उसने उसे भी सज़ाए-मौत दी। 11तब यहूदाह
ने अपनी बहू तमर से कहा, “अपने बाप के घर
वापस चली जाओ और उस वक़्त तक बेवा रहो
जब तक मेरा बेटा सेला बड़ा न हो जाए।” उसने
यह इसलिए कहा कि उसे डर था कि कहीं सेला
भी अपने भाइयों की तरह मर न जाए चुनाँचे तमर
अपने मैके चली गई।

12काफ़ी दिनों के बाद यहूदाह की बीवी जो
सुअ की बेटी थी मर गई। मातम का वक़्त गुज़र
गया तो यहूदाह अपने अदुल्लामी दोस्त हीरा के
साथ तिमनत गया जहाँ यहूदाह की भेड़ों की
पशम कतरी जा रही थी। 13तमर को बताया गया,

“आपका सुसर अपनी भेड़ों की पशम कतरने के
लिए तिमनत जा रहा है।” 14यह सुनकर तमर ने
बेवा के कपड़े उतारकर आम कपड़े पहन लिए।
फिर वह अपना मुँह चादर से लपेटकर ऐनीम शहर
के दरवाज़े पर बैठ गई जो तिमनत के रास्ते में था।
तमर ने यह हरकत इसलिए की कि यहूदाह का
बेटा सेला अब बालिग़ हो चुका था तो भी उस की
उसके साथ शादी नहीं की गई थी।
15जब यहूदाह वहाँ से गुज़रा तो उसने उसे
देखकर सोचा कि यह कसबी है, क्योंकि उसने
अपना मुँह छुपाया हुआ था। 16वह रास्ते से
हटकर उसके पास गया और कहा, “ज़रा मुझे
अपने हाँ आने दें।” (उसने नहीं पहचाना कि
यह मेरी बहू है)। तमर ने कहा, “आप मुझे
क्या देंगे?” 17उसने जवाब दिया, “मैं आपको
बकरी का बच्चा भेज दूँगा।” तमर ने कहा, “ठीक
है, लेकिन उसे भेजने तक मुझे ज़मानत दें।”
18उसने पूछा, “मैं आपको क्या दूँ?” तमर ने
कहा, “अपनी मुहर और उसे गले में लटकाने की
डोरी। वह लाठी भी दें जो आप पकड़े हुए हैं।”
चुनाँचे यहूदाह उसे यह चीज़ें देकर उसके साथ
हमबिसतर हुआ। नतीजे में तमर उम्मीद से हुई।
19फिर तमर उठकर अपने घर वापस चली गई।
उसने अपनी चादर उतारकर दुबारा बेवा के कपड़े
पहन लिए।
20यहूदाह ने अपने दोस्त हीरा अदुल्लामी के
हाथ बकरी का बच्चा भेज दिया ताकि वह चीज़ें
वापस मिल जाएँ जो उसने ज़मानत के तौर पर
दी थीं। लेकिन हीरा को पता न चला कि औरत
कहाँ है। 21उसने ऐनीम के बाशिंदों से पूछा, “वह
कसबी कहाँ है जो यहाँ सड़क पर बैठी थी?”
उन्होंने जवाब दिया, “यहाँ ऐसी कोई कसबी नहीं
थी।”
22उसने यहूदाह के पास वापस जाकर कहा,
“वह मुझे नहीं मिली बल्कि वहाँ के रहनेवालों
ने कहा कि यहाँ कोई ऐसी कसबी थी नहीं।”
23यहूदाह ने कहा, “फिर वह ज़मानत की चीज़ें
अपने पास ही रखे। उसे छोड़ दो वरना लोग हमारा
मज़ाक़ उड़ाएँगे। हमने तो पूरी कोशिश की कि उसे
बकरी का बच्चा मिल जाए, लेकिन खोज लगाने
के बावुजूद आपको पता न चला कि वह कहाँ है।”
24तीन माह के बाद यहूदाह को इत्तला दी गई,
“आपकी बहू तमर ने ज़िना किया है, और अब
वह हामिला है।” यहूदाह ने हुक्म दिया, “उसे
बाहर लाकर जला दो।” 25तमर को जलाने के
लिए बाहर लाया गया तो उसने अपने सुसर को
ख़बर भेज दी, “यह चीज़ें देखें। यह उस आदमी
की हैं जिसकी मारिफ़त मैं उम्मीद से हूँ। पता
करें कि यह मुहर, उस की डोरी और यह लाठी
किसकी हैं।” 26यहूदाह ने उन्हें पहचान लिया।
उसने कहा, “मैं नहीं बल्कि यह औरत हक़ पर है,
क्योंकि मैंने उस की अपने बेटे सेला से शादी नहीं
कराई।” लेकिन बाद में यहूदाह कभी भी तमर से
हमबिसतर न हुआ।
27जब जन्म देने का वक़्त आया तो मालूम
हुआ कि जुड़वाँ बच्चे हैं। 28एक बच्चे का हाथ
निकला तो दाई ने उसे पकड़कर उसमें सुर्ख़ धागा
बाँध दिया और कहा, “यह पहले पैदा हुआ।”
29लेकिन उसने अपना हाथ वापस खींच लिया,
और उसका भाई पहले पैदा हुआ। यह देखकर
दाई बोल उठी, “तू किस तरह फूट निकला है!”
उसने उसका नाम फ़ारस यानी फूट रखा। 30फिर
उसका भाई पैदा हुआ जिसके हाथ में सुर्ख़ धागा
बँधा हुआ था। उसका नाम ज़ारह यानी चमक
रखा गया।

यूसुफ़ और फ़ूतीफ़ार की बीवी

39 इसमाईलियों ने यूसुफ़ को मिसर
ले जाकर बेच दिया था। मिसर के
बादशाह के एक आला अफ़सर बनाम फ़ूतीफ़ार
ने उसे ख़रीद लिया। वह शाही मुहाफ़िज़ों का
कप्तान था। 2रब यूसुफ़ के साथ था। जो भी
काम वह करता उसमें कामयाब रहता। वह अपने
मिसरी मालिक के घर में रहता था 3जिसने देखा
कि रब यूसुफ़ के साथ है और उसे हर काम में
कामयाबी देता है। 4चुनाँचे यूसुफ़ को मालिक की

ख़ास मेहरबानी हासिल हुई, और फ़ूतीफ़ार ने उसे अपना ज़ाती नौकर बना लिया। उसने उसे अपने घराने के इंतज़ाम पर मुक़र्रर किया और अपनी पूरी मिलकियत उसके सुपुर्द कर दी। 5जिस वक़्त से फ़ूतीफ़ार ने अपने घराने का इंतज़ाम और पूरी मिलकियत यूसुफ़ के सुपुर्द की उस वक़्त से रब ने फ़ूतीफ़ार को यूसुफ़ के सबब से बरकत दी। उस की बरकत फ़ूतीफ़ार की हर चीज़ पर थी, ख़ाह घर में थी या खेत में। 6फ़ूतीफ़ार ने अपनी हर चीज़ यूसुफ़ के हाथ में छोड़ दी। और चूँकि यूसुफ़ सब कुछ अच्छी तरह चलाता था इसलिए फ़ूतीफ़ार को खाना खाने के सिवा किसी भी मामले की फ़िकर नहीं थी।

यूसुफ़ निहायत ख़ूबसूरत आदमी था। 7कुछ देर के बाद उसके मालिक की बीवी की आँख उस पर लगी। उसने उससे कहा, “मेरे साथ हमबिसतर हो!” 8यूसुफ़ इनकार करके कहने लगा, “मेरे मालिक को मेरे सबब से किसी मामले की फ़िकर नहीं है। उन्होंने सब कुछ मेरे सुपुर्द कर दिया है। 9घर के इंतज़ाम पर उनका इख़्तियार मेरे इख़्तियार से ज़्यादा नहीं है। आपके सिवा उन्होंने कोई भी चीज़ मुझसे बाज़ नहीं रखी। तो फिर मैं किस तरह इतना ग़लत काम करूँ? मैं किस तरह अल्लाह का गुनाह करूँ?”

10मालिक की बीवी रोज़ बरोज़ यूसुफ़ के पीछे पड़ी रही कि मेरे साथ हमबिसतर हो। लेकिन वह हमेशा इनकार करता रहा।

11एक दिन वह काम करने के लिए घर में गया। घर में और कोई नौकर नहीं था। 12फ़ूतीफ़ार की बीवी ने यूसुफ़ का लिबास पकड़कर कहा, “मेरे साथ हमबिसतर हो!” यूसुफ़ भागकर बाहर चला गया लेकिन उसका लिबास पीछे औरत के हाथ में ही रह गया। 13जब मालिक की बीवी ने देखा कि वह अपना लिबास छोड़कर भाग गया है 14तो उसने घर के नौकरों को बुलाकर कहा, “यह देखो! मेरे मालिक इस इबरानी को हमारे पास ले आए हैं ताकि वह हमें ज़लील करे। वह मेरी इसमतदरी करने के लिए मेरे कमरे में आ गया, लेकिन मैं ऊँची आवाज़ से चीख़ने लगी। 15जब मैं मदद के लिए ऊँची आवाज़ से चीख़ने लगी तो वह अपना लिबास छोड़कर भाग गया।” 16उसने मालिक के आने तक यूसुफ़ का लिबास अपने पास रखा। 17जब वह घर वापस आया तो उसने उसे यही कहानी सुनाई, “यह इबरानी ग़ुलाम जो आप ले आए हैं मेरी तज़लील के लिए मेरे पास आया। 18लेकिन जब मैं मदद के लिए चीख़ने लगी तो वह अपना लिबास छोड़कर भाग गया।”

यूसुफ़ क़ैदख़ाने में

19यह सुनकर फ़ूतीफ़ार बड़े ग़ुस्से में आ गया। 20उसने यूसुफ़ को गिरिफ़्तार करके उस जेल में डाल दिया जहाँ बादशाह के क़ैदी रखे जाते थे। वहीं वह रहा। 21लेकिन रब यूसुफ़ के साथ था। उसने उस पर मेहरबानी की और उसे क़ैदख़ाने के दारोग़े की नज़र में मक़बूल किया। 22यूसुफ़ यहाँ तक मक़बूल हुआ कि दारोग़े ने तमाम क़ैदियों को उसके सुपुर्द करके उसे पूरा इंतज़ाम चलाने की ज़िम्मेदारी दी। 23दारोग़े को किसी भी मामले की जिसे उसने यूसुफ़ के सुपुर्द किया था फ़िकर न रही, क्योंकि रब यूसुफ़ के साथ था और उसे हर काम में कामयाबी बख़्शी।

क़ैदियों के ख़ाब

40 कुछ देर के बाद यों हुआ कि मिसर के बादशाह के सरदार साक़ी और बेकरी के इंचार्ज ने अपने मालिक का गुनाह किया। 2फ़िरौन को दोनों अफ़सरों पर ग़ुस्सा आ गया। 3उसने उन्हें उस क़ैदख़ाने में डाल दिया जो शाही मुहाफ़िज़ों के कप्तान के सुपुर्द था और जिसमें यूसुफ़ था। 4मुहाफ़िज़ों के कप्तान ने उन्हें यूसुफ़ के हवाले किया ताकि वह उनकी ख़िदमत करे। वहाँ वह काफ़ी देर तक रहे।

5एक रात बादशाह के सरदार साक़ी और बेकरी के इंचार्ज ने ख़ाब देखा। दोनों का ख़ाब फ़रक़ फ़रक़ था, और उनका मतलब भी फ़रक़ फ़रक़ था। 6जब यूसुफ़ सुबह के वक़्त उनके

पास आया तो वह दबे हुए नज़र आए। 7उसने
उनसे पूछा, “आज आप क्यों इतने परेशान हैं?”
8उन्होंने जवाब दिया, “हम दोनों ने ख़ाब देखा है,
और कोई नहीं जो हमें उनका मतलब बताए।”
यूसुफ़ ने कहा, “ख़ाबों की ताबीर तो अल्लाह
का काम है। ज़रा मुझे अपने ख़ाब तो सुनाएँ।”

9सरदार साक़ी ने शुरू किया, “मैंने ख़ाब में
अपने सामने अंगूर की बेल देखी। 10उस की तीन
शाख़ें थीं। उसके पत्ते लगे, कोंपलें फूट निकलीं
और अंगूर पक गए। 11मेरे हाथ में बादशाह का
प्याला था, और मैंने अंगूरों को तोड़कर यों भींच
दिया कि उनका रस बादशाह के प्याले में आ
गया। फिर मैंने प्याला बादशाह को पेश किया।”

12यूसुफ़ ने कहा, “तीन शाख़ों से मुराद तीन
दिन हैं। 13तीन दिन के बाद फ़िरौन आपको
बहाल कर लेगा। आपको पहली ज़िम्मेदारी वापस
मिल जाएगी। आप पहले की तरह सरदार साक़ी
की हैसियत से बादशाह का प्याला सँभालेंगे।
14लेकिन जब आप बहाल हो जाएँ तो मेरा
ख़याल करें। मेहरबानी करके बादशाह के सामने
मेरा ज़िक्र करें ताकि मैं यहाँ से रिहा हो जाऊँ।
15क्योंकि मुझे इबरानियों के मुल्क से इग़वा
करके यहाँ लाया गया है, और यहाँ भी मुझसे
कोई ऐसी ग़लती नहीं हुई कि मुझे इस गढ़े में
फेंका जाता।”

16जब शाही बेकरी के इंचार्ज ने देखा कि
सरदार साक़ी के ख़ाब का अच्छा मतलब निकला
तो उसने यूसुफ़ से कहा, “मेरा ख़ाब भी सुनें। मैंने
सर पर तीन टोकरियाँ उठा रखी थीं जो बेकरी की
चीज़ों से भरी हुई थीं। 17सबसे ऊपरवाली टोकरी
में वह तमाम चीज़ें थीं जो बादशाह की मेज़ के
लिए बनाई जाती हैं। लेकिन परिंदे आकर उन्हें
खा रहे थे।”

18यूसुफ़ ने कहा, “तीन टोकरियों से मुराद
तीन दिन हैं। 19तीन दिन के बाद ही फ़िरौन
आपको क़ैदख़ाने से निकालकर दरख़्त से लटका
देगा। परिंदे आपकी लाश को खा जाएंगे।”

20तीन दिन के बाद बादशाह की साल-
गिरह थी। उसने अपने तमाम अफ़सरों की
ज़ियाफ़त की। इस मौक़े पर उसने सरदार साक़ी
और बेकरी के इंचार्ज को जेल से निकालकर
अपने हुज़ूर लाने का हुक्म दिया। 21सरदार साक़ी
को पहलेवाली ज़िम्मेदारी सौंप दी गई, 22लेकिन
बेकरी के इंचार्ज को सज़ाए-मौत देकर दरख़्त से
लटका दिया गया। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा
यूसुफ़ ने कहा था।

23लेकिन सरदार साक़ी ने यूसुफ़ का ख़याल
न किया बल्कि उसे भूल ही गया।

बादशाह के ख़ाब

41 दो साल गुज़र गए कि एक रात
बादशाह ने ख़ाब देखा। वह दरियाए-
नील के किनारे खड़ा था। 2अचानक दरिया में से
सात ख़ूबसूरत और मोटी गाएँ निकलकर सरकंडों
में चरने लगीं। 3उनके बाद सात और गाएँ निकल
आईं। लेकिन वह बदसूरत और दुबली-पतली थीं।
वह दरिया के किनारे दूसरी गायों के पास खड़ी
होकर 4पहली सात ख़ूबसूरत और मोटी मोटी
गायों को खा गईं। इसके बाद मिसर का बादशाह
जाग उठा। 5फिर वह दुबारा सो गया। इस दफ़ा
उसने एक और ख़ाब देखा। अनाज के एक पौदे
पर सात मोटी मोटी और अच्छी अच्छी बालें लगी
थीं। 6फिर सात और बालें फूट निकलीं जो दुबली-
पतली और मशरिक़ी हवा से झुलसी हुई थीं।
7अनाज की सात दुबली-पतली बालों ने सात
मोटी और ख़ूबसूरत बालों को निगल लिया। फिर
फ़िरौन जाग उठा तो मालूम हुआ कि मैंने ख़ाब ही
देखा है।

8सुबह हुई तो वह परेशान था, इसलिए उसने
मिसर के तमाम जादूगरों और आलिमों को
बुलाया। उसने उन्हें अपने ख़ाब सुनाए, लेकिन
कोई भी उनकी ताबीर न कर सका।

9फिर सरदार साक़ी ने फ़िरौन से कहा, “आज
मुझे अपनी ख़ताएँ याद आती हैं। 10एक दिन
फ़िरौन अपने ख़ादिमों से नाराज़ हुए। हुज़ूर ने मुझे

और बेकरी के इंचार्ज को क़ैदख़ाने में डलवा दिया
जिस पर शाही मुहाफ़िज़ों का कप्तान मुक़र्रर था।
11एक ही रात में हम दोनों ने मुख़्तलिफ़ ख़ाब
देखे जिनका मतलब फ़रक़ फ़रक़ था। 12वहाँ
जेल में एक इबरानी नौजवान था। वह मुहाफ़िज़ों
के कप्तान का ग़ुलाम था। हमने उसे अपने ख़ाब
सुनाए तो उसने हमें उनका मतलब बता दिया।
13और जो कुछ भी उसने बताया सब कुछ वैसा
ही हुआ। मुझे अपनी ज़िम्मेदारी वापस मिल गई
जबकि बेकरी के इंचार्ज को सज़ाए-मौत देकर
दरख़्त से लटका दिया गया।"

14यह सुनकर फ़िरौन ने यूसुफ़ को बुलाया,
और उसे जल्दी से क़ैदख़ाने से लाया गया।
उसने शेव करवाकर अपने कपड़े बदले और सीधे
बादशाह के हुज़ूर पहुँचा।

15बादशाह ने कहा, "मैंने ख़ाब देखा है, और
यहाँ कोई नहीं जो उस की ताबीर कर सके।
लेकिन सुना है कि तू ख़ाब को सुनकर उसका
मतलब बता सकता है।" 16यूसुफ़ ने जवाब
दिया, "यह मेरे इख़्तियार में नहीं है। लेकिन
अल्लाह ही बादशाह को सलामती का पैग़ाम
देगा।"

17फ़िरौन ने यूसुफ़ को अपने ख़ाब सुनाए,
"मैं ख़ाब में दरियाए-नील के किनारे खड़ा था।
18अचानक दरिया में से सात मोटी मोटी और
ख़ूबसूरत गाएँ निकलकर सरकंडों में चरने लगीं।
19इसके बाद सात और गाएँ निकलीं। वह
निहायत बदसूरत और दुबली-पतली थीं। मैंने
इतनी बदसूरत गाएँ मिसर में कहीं भी नहीं देखीं।
20दुबली और बदसूरत गाएँ पहली मोटी गायों
को खा गईं। 21और निगलने के बाद भी मालूम
नहीं होता था कि उन्होंने मोटी गायों को खाया
है। वह पहले की तरह बदसूरत ही थीं। इसके
बाद मैं जाग उठा। 22फिर मैंने एक और ख़ाब
देखा। सात मोटी और अच्छी बालें एक ही पौदे पर
लगी थीं। 23इसके बाद सात और बालें निकलीं
जो ख़राब, दुबली-पतली और मशरिक़ी हवा से
झुलसी हुई थीं। 24सात दुबली-पतली बालें सात
अच्छी बालों को निगल गईं। मैंने यह सब कुछ
अपने जादूगरों को बताया, लेकिन वह इसकी
ताबीर न कर सके।"

25यूसुफ़ ने बादशाह से कहा, "दोनों ख़ाबों
का एक ही मतलब है। इनसे अल्लाह ने हुज़ूर
पर ज़ाहिर किया है कि वह क्या कुछ करने को
है। 26सात अच्छी गायों से मुराद सात साल हैं।
इसी तरह सात अच्छी बालों से मुराद भी सात
साल हैं। दोनों ख़ाब एक ही बात बयान करते
हैं। 27जो सात दुबली और बदसूरत गाएँ बाद में
निकलें उनसे मुराद सात और साल हैं। यही सात
दुबली-पतली और मशरिक़ी हवा से झुलसी हुई
बालों का मतलब भी है। वह एक ही बात बयान
करती हैं कि सात साल तक काल पड़ेगा। 28यह
वही बात है जो मैंने हुज़ूर से कही कि अल्लाह
ने हुज़ूर पर ज़ाहिर किया है कि वह क्या करेगा।
29सात साल आएँगे जिनके दौरान मिसर के पूरे
मुल्क में कसरत से पैदावार होगी। 30उसके बाद
सात साल काल पड़ेगा। काल इतना शदीद होगा
कि लोग भूल जाएंगे कि पहले इतनी कसरत
थी। क्योंकि काल मुल्क को तबाह कर देगा।
31काल की शिद्दत के बाइस अच्छे सालों की
कसरत याद ही नहीं रहेगी। 32हुज़ूर को इसलिए
एक ही पैग़ाम दो मुख़्तलिफ़ ख़ाबों की सूरत में
मिला कि अल्लाह इसका पक्का इरादा रखता है,
और वह जल्द ही इस पर अमल करेगा। 33अब
बादशाह किसी समझदार और दानिशमंद आदमी
को मुल्के-मिसर का इंतज़ाम सौंपें। 34इसके
अलावा वह ऐसे आदमी मुक़र्रर करें जो सात अच्छे
सालों के दौरान हर फ़सल का पाँचवाँ हिस्सा लें।
35वह उन अच्छे सालों के दौरान ख़ुराक जमा
करें। बादशाह उन्हें इख़्तियार दें कि वह शहरों
में गोदाम बनाकर अनाज को महफ़ूज़ कर लें।
36यह ख़ुराक काल के उन सात सालों के लिए
मख़सूस की जाए जो मिसर में आनेवाले हैं। यों
मुल्क तबाह नहीं होगा।"

यूसुफ़ को मिसर पर हाकिम मुक़र्रर किया जाता है

37यह मनसूबा बादशाह और उसके अफ़सरान को अच्छा लगा। 38उसने उनसे कहा, “हमें इस काम के लिए यूसुफ़ से ज़्यादा लायक़ आदमी नहीं मिलेगा। उसमें अल्लाह की रूह है।” 39बादशाह ने यूसुफ़ से कहा, “अल्लाह ने यह सब कुछ तुझ पर ज़ाहिर किया है, इसलिए कोई भी तुझसे ज़्यादा समझदार और दानिशमंद नहीं है। 40मैं तुझे अपने महल पर मुक़र्रर करता हूँ। मेरी तमाम रिआया तेरे ताबे रहेगी। तेरा इख़्तियार सिर्फ़ मेरे इख़्तियार से कम होगा। 41अब मैं तुझे पूरे मुल्के-मिसर पर हाकिम मुक़र्रर करता हूँ।”

42बादशाह ने अपनी उँगली से वह अंगूठी उतारी जिससे मुहर लगाता था और उसे यूसुफ़ की उँगली में पहना दिया। उसने उसे कतान का बारीक लिबास पहनाया और उसके गले में सोने का गुलूबंद पहना दिया। 43फिर उसने उसे अपने दूसरे रथ में सवार किया और लोग उसके आगे आगे पुकारते रहे, “घुटने टेको! घुटने टेको!”

यों यूसुफ़ पूरे मिसर का हाकिम बना। 44फ़िरौन ने उससे कहा, “मैं तो बादशाह हूँ, लेकिन तेरी इजाज़त के बग़ैर पूरे मुल्क में कोई भी अपना हाथ या पाँव नहीं हिलाएगा।” 45-46उसने यूसुफ़ का मिसरी नाम साफ़नत-फ़ानेह रखा और ओन के पुजारी फ़ोतीफ़िरा की बेटी आसनत के साथ उस की शादी कराई।

यूसुफ़ 30 साल का था जब वह मिसर के बादशाह फ़िरौन की ख़िदमत करने लगा। उसने फ़िरौन के हुज़ूर से निकलकर मिसर का दौरा किया।

47सात अच्छे सालों के दौरान मुल्क में निहायत अच्छी फ़सलें उगीं। 48यूसुफ़ ने तमाम ख़ुराक जमा करके शहरों में महफ़ूज़ कर ली। हर शहर में उसने इर्दगिर्द के खेतों की पैदावार महफ़ूज़ रखी। 49जमाशुदा अनाज समुंदर की रेत की मानिंद बकसरत था। इतना अनाज था कि यूसुफ़ ने आख़िर-कार उस की पैमाइश करना छोड़ दिया।

50काल से पहले यूसुफ़ और आसनत के दो बेटे पैदा हुए। 51उसने पहले का नाम मनस्सी यानी ‘जो भुला देता है’ रखा। क्योंकि उसने कहा, “अल्लाह ने मेरी मुसीबत और मेरे बाप का घराना मेरी याददाश्त से निकाल दिया है।” 52दूसरे का नाम उसने इफ़राईम यानी ‘दुगना फलदार’ रखा। क्योंकि उसने कहा, “अल्लाह ने मुझे मेरी मुसीबत के मुल्क में फलने-फूलने दिया है।”

53सात अच्छे साल जिनमें कसरत की फ़सलें उगीं गुज़र गए। 54फिर काल के सात साल शुरू हुए जिस तरह यूसुफ़ ने कहा था। तमाम दीगर ममालिक में भी काल पड़ गया, लेकिन मिसर में वाफ़िर ख़ुराक पाई जाती थी। 55जब काल ने तमाम मिसर में ज़ोर पकड़ा तो लोग चीख़कर खाने के लिए बादशाह से मिन्नत करने लगे। तब फ़िरौन ने उनसे कहा, “यूसुफ़ के पास जाओ। जो कुछ वह तुम्हें बताएगा वही करो।” 56जब काल पूरी दुनिया में फैल गया तो यूसुफ़ ने अनाज के गोदाम खोलकर मिसरियों को अनाज बेच दिया। क्योंकि काल के बाइस मुल्क के हालात बहुत ख़राब हो गए थे। 57तमाम ममालिक से भी लोग अनाज ख़रीदने के लिए यूसुफ़ के पास आए, क्योंकि पूरी दुनिया सख़्त काल की गिरिफ़्त में थी।

यूसुफ़ के भाई मिसर में

42 जब याक़ूब को मालूम हुआ कि मिसर में अनाज है तो उसने अपने बेटों से कहा, “तुम क्यों एक दूसरे का मुँह तकते हो? 2सुना है कि मिसर में अनाज है। वहाँ जाकर हमारे लिए कुछ ख़रीद लाओ ताकि हम भूके न मरें।”

3तब यूसुफ़ के दस भाई अनाज ख़रीदने के लिए मिसर गए। 4लेकिन याक़ूब ने यूसुफ़ के सगे भाई बिनयमीन को साथ न भेजा, क्योंकि उसने कहा, “ऐसा न हो कि उसे जानी नुक़सान पहुँचे।”

5यों याक़ूब के बेटे बहुत सारे और लोगों के साथ
मिसर गए, क्योंकि मुल्के-कनान भी काल की
गिरिफ़्त में था।
6यूसुफ़ मिसर के हाकिम की हैसियत से लोगों
को अनाज बेचता था, इसलिए उसके भाई आकर
उसके सामने मुँह के बल झुक गए। 7जब यूसुफ़
ने अपने भाइयों को देखा तो उसने उन्हें पहचान
लिया लेकिन ऐसा किया जैसा उनसे नावाक़िफ़
हो और सख़्ती से उनसे बात की, “तुम कहाँ से
आए हो?” उन्होंने जवाब दिया, “हम मुल्के-
कनान से अनाज ख़रीदने के लिए आए हैं।” 8गो
यूसुफ़ ने अपने भाइयों को पहचान लिया, लेकिन
उन्होंने उसे न पहचाना। 9उसे वह ख़ाब याद आए
जो उसने उनके बारे में देखे थे। उसने कहा, “तुम
जासूस हो। तुम यह देखने आए हो कि हमारा
मुल्क किन किन जगहों पर ग़ैरमहफ़ूज़ है।”
10उन्होंने कहा, “जनाब, हरगिज़ नहीं। आपके
ग़ुलाम ग़ल्ला ख़रीदने आए हैं। 11हम सब एक
ही मर्द के बेटे हैं। आपके ख़ादिम शरीफ़ लोग
हैं, जासूस नहीं हैं।” 12लेकिन यूसुफ़ ने इसरार
किया, “नहीं, तुम देखने आए हो कि हमारा मुल्क
किन किन जगहों पर ग़ैरमहफ़ूज़ है।”
13उन्होंने अर्ज़ की, “आपके ख़ादिम कुल बारह
भाई हैं। हम एक ही आदमी के बेटे हैं जो कनान में
रहता है। सबसे छोटा भाई इस वक़्त हमारे बाप के
पास है जबकि एक मर गया है।” 14लेकिन यूसुफ़
ने अपना इलज़ाम दोहराया, “ऐसा ही है जैसा मैंने
कहा है कि तुम जासूस हो। 15मैं तुम्हारी बातें जाँच
लूँगा। फ़िरौन की हयात की क़सम, पहले तुम्हारा
सबसे छोटा भाई आए, वरना तुम इस जगह से
कभी नहीं जा सकोगे। 16एक भाई को उसे लाने
के लिए भेज दो। बाक़ी सब यहाँ गिरिफ़्तार रहेंगे।
फिर पता चलेगा कि तुम्हारी बातें सच हैं कि नहीं।
अगर नहीं तो फ़िरौन की हयात की क़सम, इसका
मतलब यह होगा कि तुम जासूस हो।”
17यह कहकर यूसुफ़ ने उन्हें तीन दिन के लिए
क़ैदख़ाने में डाल दिया। 18तीसरे दिन उसने उनसे
कहा, “मैं अल्लाह का ख़ौफ़ मानता हूँ, इसलिए
तुमको एक शर्त पर जीता छोड़ूँगा। 19अगर तुम
वाक़ई शरीफ़ लोग हो तो ऐसा करो कि तुममें
से एक यहाँ क़ैदख़ाने में रहे जबकि बाक़ी सब
अनाज लेकर अपने भूके घरवालों के पास वापस
जाएँ। 20लेकिन लाज़िम है कि तुम अपने सबसे
छोटे भाई को मेरे पास ले आओ। सिर्फ़ इससे
तुम्हारी बातें सच साबित होंगी और तुम मौत से
बच जाओगे।”
यूसुफ़ के भाई राज़ी हो गए। 21वह आपस में
कहने लगे, “बेशक यह हमारे अपने भाई पर ज़ुल्म
की सज़ा है। जब वह इल्तिजा कर रहा था कि
मुझ पर रहम करें तो हमने उस की बड़ी मुसीबत
देखकर भी उस की न सुनी। इसलिए यह मुसीबत
हम पर आ गई है।” 22और रूबिन ने कहा, “क्या
मैंने नहीं कहा था कि लड़के पर ज़ुल्म मत करो,
लेकिन तुमने मेरी एक न मानी। अब उस की मौत
का हिसाब-किताब किया जा रहा है।”
23उन्हें मालूम नहीं था कि यूसुफ़ हमारी बातें
समझ सकता है, क्योंकि वह मुतरजिम की
मारिफ़त उनसे बात करता था। 24यह बातें
सुनकर वह उन्हें छोड़कर रोने लगा। फिर वह
सँभलकर वापस आया। उसने शमाऊन को
चुनकर उसे उनके सामने ही बाँध लिया।

यूसुफ़ के भाई कनान वापस जाते हैं

25यूसुफ़ ने हुक्म दिया कि मुलाज़िम उनकी
बोरियाँ अनाज से भरकर हर एक भाई के पैसे
उस की बोरी में वापस रख दें और उन्हें सफ़र के
लिए खाना भी दें। उन्होंने ऐसा ही किया। 26फिर
यूसुफ़ के भाई अपने गधों पर अनाज लादकर
रवाना हो गए।
27जब वह रात के लिए किसी जगह पर ठहरे
तो एक भाई ने अपने गधे के लिए चारा निकालने
की ग़रज़ से अपनी बोरी खोली तो देखा कि बोरी
के मुँह में उसके पैसे पड़े हैं। 28उसने अपने भाइयों
से कहा, “मेरे पैसे वापस कर दिए गए हैं! वह
मेरी बोरी में हैं।” यह देखकर उनके होश उड़ गए।
काँपते हुए वह एक दूसरे को देखने और कहने

लगे, “यह क्या है जो अल्लाह ने हमारे साथ किया
है?”
29मुल्के-कनान में अपने बाप के पास पहुँचकर
उन्होंने उसे सब कुछ सुनाया जो उनके साथ हुआ
था। उन्होंने कहा, 30“उस मुल्क के मालिक ने
बड़ी सख़्ती से हमारे साथ बात की। उसने हमें
जासूस क़रार दिया। 31लेकिन हमने उससे कहा,
‘हम जासूस नहीं बल्कि शरीफ़ लोग हैं। 32हम
बारह भाई हैं, एक ही बाप के बेटे। एक तो मर
गया जबकि सबसे छोटा भाई इस वक़्त कनान में
बाप के पास है।’ 33फिर उस मुल्क के मालिक
ने हमसे कहा, ‘इससे मुझे पता चलेगा कि तुम
शरीफ़ लोग हो कि एक भाई को मेरे पास छोड़
दो और अपने भूके घरवालों के लिए ख़ुराक लेकर
चले जाओ। 34लेकिन अपने सबसे छोटे भाई को
मेरे पास ले आओ ताकि मुझे मालूम हो जाए कि
तुम जासूस नहीं बल्कि शरीफ़ लोग हो। फिर मैं
तुमको तुम्हारा भाई वापस कर दूँगा और तुम इस
मुल्क में आज़ादी से तिजारत कर सकोगे’।”
35उन्होंने अपनी बोरियों से अनाज निकाल
दिया तो देखा कि हर एक की बोरी में उसके
पैसों की थैली रखी हुई है। यह पैसे देखकर वह
ख़ुद और उनका बाप डर गए। 36उनके बाप ने
उनसे कहा, “तुमने मुझे मेरे बच्चों से महरूम कर
दिया है। यूसुफ़ नहीं रहा, शमाऊन भी नहीं रहा
और अब तुम बिनयमीन को भी मुझसे छीनना
चाहते हो। सब कुछ मेरे ख़िलाफ़ है।” 37फिर
रूबिन बोल उठा, “अगर मैं उसे सलामती से
आपके पास वापस न पहुँचाऊँ तो आप मेरे दो
बेटों को सज़ाए-मौत दे सकते हैं। उसे मेरे सुपुर्द
करें तो मैं उसे वापस ले आऊँगा।” 38लेकिन
याक़ूब ने कहा, “मेरा बेटा तुम्हारे साथ जाने का
नहीं। क्योंकि उसका भाई मर गया है और वह
अकेला ही रह गया है। अगर उसको रास्ते में जानी
नुक़सान पहुँचे तो तुम मुझ बूढ़े को ग़म के मारे
पाताल में पहुँचाओगे।”

बिनयमीन के हमराह दूसरा सफ़र

43 काल ने ज़ोर पकड़ा। 2जब मिसर से
लाया गया अनाज ख़त्म हो गया तो
याक़ूब ने कहा, “अब वापस जाकर हमारे लिए
कुछ और ग़ल्ला ख़रीद लाओ।” 3लेकिन यहूदाह
ने कहा, “उस मर्द ने सख़्ती से कहा था, ‘तुम
सिर्फ़ इस सूरत में मेरे पास आ सकते हो कि
तुम्हारा भाई साथ हो।’ 4अगर आप हमारे भाई
को साथ भेजें तो फिर हम जाकर आपके लिए
ग़ल्ला ख़रीदेंगे 5वरना नहीं। क्योंकि उस आदमी
ने कहा था कि हम सिर्फ़ इस सूरत में उसके पास
आ सकते हैं कि हमारा भाई साथ हो।” 6याक़ूब
ने कहा, “तुमने उसे क्यों बताया कि हमारा एक
और भाई भी है? इससे तुमने मुझे बड़ी मुसीबत
में डाल दिया है।” 7उन्होंने जवाब दिया, “वह
आदमी हमारे और हमारे ख़ानदान के बारे में पूछता
रहा, ‘क्या तुम्हारा बाप अब तक ज़िंदा है? क्या
तुम्हारा कोई और भाई है?’ फिर हमें जवाब
देना पड़ा। हमें क्या पता था कि वह हमें अपने
भाई को साथ लाने को कहेगा।” 8फिर यहूदाह
ने बाप से कहा, “लड़के को मेरे साथ भेज दें तो
हम अभी रवाना हो जाएंगे। वरना आप, हमारे
बच्चे बल्कि हम सब भूकों मर जाएंगे। 9मैं ख़ुद
उसका ज़ामिन हूँगा। आप मुझे उस की जान का
ज़िम्मेदार ठहरा सकते हैं। अगर मैं उसे सलामती
से वापस न पहुँचाऊँ तो फिर मैं ज़िंदगी के आख़िर
तक क़ुसूरवार ठहरूँगा। 10जितनी देर तक हम
झिजकते रहे हैं उतनी देर में तो हम दो दफ़ा मिसर
जाकर वापस आ सकते थे।”
11तब उनके बाप इसराईल ने कहा, “अगर
और कोई सूरत नहीं तो इस मुल्क की बेहतरीन
पैदावार में से कुछ तोह्फ़े के तौर पर लेकर उस
आदमी को दे दो यानी कुछ बलसान, शहद,
लादन, मुर, पिस्ता और बादाम। 12अपने साथ
दुगनी रक़म लेकर जाओ, क्योंकि तुम्हें वह पैसे
वापस करने हैं जो तुम्हारी बोरियों में रखे गए थे।
शायद किसी से ग़लती हुई हो। 13अपने भाई को

लेकर सीधे वापस पहुँचना। 14अल्लाह क़ादिरे-
मुतलक़ करे कि यह आदमी तुम पर रहम करके
बिनयमीन और तुम्हारे दूसरे भाई को वापस भेजे।
जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, अगर मुझे अपने बच्चों
से महरूम होना है तो ऐसा ही हो।"

15चुनाँचे वह तोह्फ़े, दुगनी रक़म और
बिनयमीन को साथ लेकर चल पड़े। मिसर
पहुँचकर वह यूसुफ़ के सामने हाज़िर हुए। 16जब
यूसुफ़ ने बिनयमीन को उनके साथ देखा तो उसने
अपने घर पर मुक़र्रर मुलाज़िम से कहा, "इन
आदमियों को मेरे घर ले जाओ ताकि वह दोपहर
का खाना मेरे साथ खाएँ। जानवर को ज़बह करके
खाना तैयार करो।"

17मुलाज़िम ने ऐसा ही किया और भाइयों को
यूसुफ़ के घर ले गया। 18जब उन्हें उसके घर
पहुँचाया जा रहा था तो वह डरकर सोचने लगे,
"हमें उन पैसों के सबब से यहाँ लाया जा रहा है
जो पहली दफ़ा हमारी बोरियों में वापस किए गए
थे। वह हम पर अचानक हमला करके हमारे गधे
छीन लेंगे और हमें ग़ुलाम बना लेंगे।"

19इसलिए घर के दरवाज़े पर पहुँचकर उन्होंने
घर पर मुक़र्रर मुलाज़िम से कहा, 20"जनाबे-
आली, हमारी बात सुन लीजिए। इससे पहले हम
अनाज ख़रीदने के लिए यहाँ आए थे। 21लेकिन
जब हम यहाँ से रवाना होकर रास्ते में रात के लिए
ठहरे तो हमने अपनी बोरियाँ खोलकर देखा कि
हर बोरी के मुँह में हमारे पैसों की पूरी रक़म पड़ी
है। हम यह पैसे वापस ले आए हैं। 22नीज़, हम
मज़ीद ख़ुराक ख़रीदने के लिए और पैसे ले आए
हैं। ख़ुदा जाने किसने हमारे यह पैसे हमारी बोरियों
में रख दिए।"

23मुलाज़िम ने कहा, "फ़िकर न करें। मत
डरें। आपके और आपके बाप के ख़ुदा ने आपके
लिए आपकी बोरियों में यह ख़ज़ाना रखा होगा।
बहरहाल मुझे आपके पैसे मिल गए हैं।"

मुलाज़िम शमाऊन को उनके पास बाहर ले
आया। 24फिर उसने भाइयों को यूसुफ़ के घर
में ले जाकर उन्हें पाँव धोने के लिए पानी और
गधों को चारा दिया। 25उन्होंने अपने तोह्फ़े तैयार
रखे, क्योंकि उन्हें बताया गया, "यूसुफ़ दोपहर
का खाना आपके साथ ही खाएगा।"

26जब यूसुफ़ घर पहुँचा तो वह अपने तोह्फ़े
लेकर उसके सामने आए और मुँह के बल झुक
गए। 27उसने उनसे ख़ैरियत दरियाफ़्त की और
फिर कहा, "तुमने अपने बूढ़े बाप का ज़िक्र
किया। क्या वह ठीक हैं? क्या वह अब तक
ज़िंदा हैं?" 28उन्होंने जवाब दिया, "जी, आपके
ख़ादिम हमारे बाप अब तक ज़िंदा हैं।" वह दुबारा
मुँह के बल झुक गए।

29जब यूसुफ़ ने अपने सगे भाई बिनयमीन
को देखा तो उसने कहा, "क्या यह तुम्हारा
सबसे छोटा भाई है जिसका तुमने ज़िक्र किया
था? बेटा, अल्लाह की नज़रे-करम तुम पर
हो।" 30यूसुफ़ अपने भाई को देखकर इतना
मुतअस्सिर हुआ कि वह रोने को था, इसलिए वह
जल्दी से वहाँ से निकलकर अपने सोने के कमरे
में गया और रो पड़ा। 31फिर वह अपना मुँह धोकर
वापस आया। अपने आप पर क़ाबू पाकर उसने
हुक्म दिया कि नौकर खाना ले आएँ।

32नौकरों ने यूसुफ़ के लिए खाने का अलग
इंतज़ाम किया और भाइयों के लिए अलग।
मिसरियों के लिए भी खाने का अलग इंतज़ाम था,
क्योंकि इबरानियों के साथ खाना खाना उनकी
नज़र में क़ाबिले-नफ़रत था। 33भाइयों को उनकी
उम्र की तरतीब के मुताबिक़ यूसुफ़ के सामने
बिठाया गया। यह देखकर भाई निहायत हैरान
हुए। 34नौकरों ने उन्हें यूसुफ़ की मेज़ पर से खाना
लेकर खिलाया। लेकिन बिनयमीन को दूसरों की
निसबत पाँच गुना ज़्यादा मिला। यों उन्होंने यूसुफ़
के साथ जी भरकर खाया और पिया।

गुमशुदा प्याला

44 यूसुफ़ ने घर पर मुक़र्रर मुलाज़िम को
हुक्म दिया, "उन मर्दों की बोरियाँ
ख़ुराक से इतनी भर देना जितनी वह उठाकर ले
जा सकें। हर एक के पैसे उस की अपनी बोरी के

मुँह में रख देना। 2सबसे छोटे भाई की बोरी में न
सिर्फ़ पैसे बल्कि मेरे चाँदी के प्याले को भी रख
देना।" मुलाज़िम ने ऐसा ही किया।
3अगली सुबह जब पौ फटने लगी तो भाइयों
को उनके गधों समेत रुख़सत कर दिया गया।
4वह अभी शहर से निकलकर दूर नहीं गए थे कि
यूसुफ़ ने अपने घर पर मुक़र्रर मुलाज़िम से कहा,
"जल्दी करो। उन आदमियों का ताक़्क़ुब करो।
उनके पास पहुँचकर यह पूछना, 'आपने हमारी
भलाई के जवाब में ग़लत काम क्यों किया है?
5आपने मेरे मालिक का चाँदी का प्याला क्यों
चुराया है? उससे वह न सिर्फ़ पीते हैं बल्कि उसे
ग़ैबदानी के लिए भी इस्तेमाल करते हैं। आप एक
निहायत संगीन जुर्म के मुरतकिब हुए हैं'।"
6जब मुलाज़िम भाइयों के पास पहुँचा तो उसने
उनसे यही बातें कीं। 7जवाब में उन्होंने कहा,
"हमारे मालिक ऐसी बातें क्यों करते हैं? कभी
नहीं हो सकता कि आपके ख़ादिम ऐसा करें।
8आप तो जानते हैं कि हम मुल्के-कनान से वह
पैसे वापस ले आए जो हमारी बोरियों में थे। तो
फिर हम क्यों आपके मालिक के घर से चाँदी या
सोना चुराएँगे? 9अगर वह आपके ख़ादिमों में से
किसी के पास मिल जाए तो उसे मार डाला जाए
और बाक़ी सब आपके ग़ुलाम बनें।"
10मुलाज़िम ने कहा, "ठीक है ऐसा ही होगा।
लेकिन सिर्फ़ वही मेरा ग़ुलाम बनेगा जिसने प्याला
चुराया है। बाक़ी सब आज़ाद हैं।" 11उन्होंने
जल्दी से अपनी बोरियाँ उतारकर ज़मीन पर रख
दीं। हर एक ने अपनी बोरी खोल दी। 12मुलाज़िम
बोरियों की तलाशी लेने लगा। वह बड़े भाई से
शुरू करके आख़िरकार सबसे छोटे भाई तक पहुँच
गया। और वहाँ बिनयमीन की बोरी में से प्याला
निकला। 13भाइयों ने यह देखकर परेशानी में
अपने लिबास फाड़ लिए। वह अपने गधों को
दुबारा लादकर शहर वापस आ गए।
14जब यहूदाह और उसके भाई यूसुफ़ के घर
पहुँचे तो वह अभी वहीं था। वह उसके सामने मुँह
के बल गिर गए। 15यूसुफ़ ने कहा, "यह तुमने
क्या किया है? क्या तुम नहीं जानते कि मुझ
जैसा आदमी ग़ैब का इल्म रखता है?" 16यहूदाह
ने कहा, "जनाबे-आली, हम क्या कहें? अब
हम अपने दिफ़ा में क्या कहें? अल्लाह ही ने
हमें क़ुसूरवार ठहराया है। अब हम सब आपके
ग़ुलाम हैं, न सिर्फ़ वह जिसके पास से प्याला मिल
गया।" 17यूसुफ़ ने कहा, "अल्लाह न करे कि
मैं ऐसा करूँ, बल्कि सिर्फ़ वही मेरा ग़ुलाम होगा
जिसके पास प्याला था। बाक़ी सब सलामती से
अपने बाप के पास वापस चले जाएँ।"

यहूदाह बिनयमीन की सिफ़ारिश करता है

18लेकिन यहूदाह ने यूसुफ़ के क़रीब आकर
कहा, "मेरे मालिक, मेहरबानी करके अपने बंदे
को एक बात करने की इजाज़त दें। मुझ पर
ग़ुस्सा न करें अगरचे आप मिसर के बादशाह जैसे
हैं। 19जनाबे-आली, आपने हमसे पूछा, 'क्या
तुम्हारा बाप या कोई और भाई है?' 20हमने
जवाब दिया, 'हमारा बाप है। वह बूढ़ा है। हमारा
एक छोटा भाई भी है जो उस वक़्त पैदा हुआ जब
हमारा बाप उम्ररसीदा था। उस लड़के का भाई
मर चुका है। उस की माँ के सिर्फ़ यह दो बेटे पैदा
हुए। अब वह अकेला ही रह गया है। उसका बाप
उसे शिद्दत से प्यार करता है।' 21जनाबे-आली,
आपने हमें बताया, 'उसे यहाँ ले आओ ताकि मैं
ख़ुद उसे देख सकूँ।' 22हमने जवाब दिया, 'यह
लड़का अपने बाप को छोड़ नहीं सकता, वरना
उसका बाप मर जाएगा।' 23फिर आपने कहा,
'तुम सिर्फ़ इस सूरत में मेरे पास आ सकोगे कि
तुम्हारा सबसे छोटा भाई तुम्हारे साथ हो।' 24जब
हम अपने बाप के पास वापस पहुँचे तो हमने उन्हें
सब कुछ बताया जो आपने कहा था। 25फिर
उन्होंने हमसे कहा, 'मिसर लौटकर कुछ ग़ल्ला
ख़रीद लाओ।' 26हमने जवाब दिया, 'हम जा नहीं
सकते। हम सिर्फ़ इस सूरत में उस मर्द के पास जा
सकते हैं कि हमारा सबसे छोटा भाई साथ हो। हम
तब ही जा सकते हैं जब वह भी हमारे साथ चले।'
27हमारे बाप ने हमसे कहा, 'तुम जानते हो कि

मेरी बीवी राख़िल से मेरे दो बेटे पैदा हुए। 28पहला
मुझे छोड़ चुका है। किसी जंगली जानवर ने उसे
फाड़ खाया होगा, क्योंकि उसी वक़्त से मैंने उसे
नहीं देखा। 29अगर इसको भी मुझसे ले जाने की
वजह से जानी नुक़सान पहुँचे तो तुम मुझ बूढ़े को
ग़म के मारे पाताल में पहुँचाओगे'।"

30-31यहूदाह ने अपनी बात जारी रखी,
"जनाबे-आली, अब अगर मैं अपने बाप के पास
जाऊँ और वह देखें कि लड़का मेरे साथ नहीं है तो
वह दम तोड़ देंगे। उनकी ज़िंदगी इस क़दर लड़के
की ज़िंदगी पर मुनहसिर है और वह इतने बूढ़े हैं
कि हम ऐसी हरकत से उन्हें क़ब्र तक पहुँचा देंगे।
32न सिर्फ़ यह बल्कि मैंने बाप से कहा, 'मैं ख़ुद
इसका ज़ामिन हूँगा। अगर मैं इसे सलामती से
वापस न पहुँचाऊँ तो फिर मैं ज़िंदगी के आख़िर
तक क़ुसूरवार ठहरूँगा।' 33अब अपने ख़ादिम की
गुज़ारिश सुनें। मैं यहाँ रहकर इस लड़के की जगह
ग़ुलाम बन जाता हूँ, और वह दूसरे भाइयों के साथ
वापस चला जाए। 34अगर लड़का मेरे साथ न
हुआ तो मैं किस तरह अपने बाप को मुँह दिखा
सकता हूँ? मैं बरदाश्त नहीं कर सकूँगा कि वह
इस मुसीबत में मुब्तला हो जाएँ।"

यूसुफ़ अपने आपको ज़ाहिर करता है

45 यह सुनकर यूसुफ़ अपने आप पर
क़ाबू न रख सका। उसने ऊँची
आवाज़ से हुक्म दिया कि तमाम मुलाज़िम कमरे
से निकल जाएँ। कोई और शख़्स कमरे में नहीं
था जब यूसुफ़ ने अपने भाइयों को बताया कि वह
कौन है। 2वह इतने ज़ोर से रो पड़ा कि मिसरियों
ने उस की आवाज़ सुनी और फ़िरौन के घराने को
पता चल गया। 3यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा,
"मैं यूसुफ़ हूँ। क्या मेरा बाप अब तक ज़िंदा है?"

लेकिन उसके भाई यह सुनकर इतने घबरा गए
कि वह जवाब न दे सके।

4फिर यूसुफ़ ने कहा, "मेरे क़रीब आओ।"
वह क़रीब आए तो उसने कहा, "मैं तुम्हारा भाई
यूसुफ़ हूँ जिसे तुमने बेचकर मिसर भिजवाया।
5अब मेरी बात सुनो। न घबराओ और न अपने
आपको इलज़ाम दो कि हमने यूसुफ़ को बेच
दिया। असल में अल्लाह ने ख़ुद मुझे तुम्हारे आगे
यहाँ भेज दिया ताकि हम सब बचे रहें। 6यह काल
का दूसरा साल है। पाँच और साल के दौरान न हल
चलेगा, न फ़सल कटेगी। 7अल्लाह ने मुझे तुम्हारे
आगे भेजा ताकि दुनिया में तुम्हारा एक बचा-खुचा
हिस्सा महफ़ूज़ रहे और तुम्हारी जान एक बड़ी
मख़लसी की मारिफ़त छूट जाए। 8चुनाँचे तुमने
मुझे यहाँ नहीं भेजा बल्कि अल्लाह ने। उसने मुझे
फ़िरौन का बाप, उसके पूरे घराने का मालिक
और मिसर का हाकिम बना दिया है। 9अब जल्दी
से मेरे बाप के पास वापस जाकर उनसे कहो,
'आपका बेटा यूसुफ़ आपको इत्तला देता है कि
अल्लाह ने मुझे मिसर का मालिक बना दिया है।
मेरे पास आ जाएँ, देर न करें। 10आप जुशन के
इलाक़े में रह सकते हैं। वहाँ आप मेरे क़रीब होंगे,
आप, आपकी आलो-औलाद, गाय-बैल, भेड़-
बकरियाँ और जो कुछ भी आपका है। 11वहाँ मैं
आपकी ज़रूरियात पूरी करूँगा, क्योंकि काल को
अभी पाँच साल और लगेंगे। वरना आप, आपके
घरवाले और जो भी आपके हैं बदहाल हो जाएंगे।'
12तुम ख़ुद और मेरा भाई बिनयमीन देख सकते
हो कि मैं यूसुफ़ ही हूँ जो तुम्हारे साथ बात कर
रहा हूँ। 13मेरे बाप को मिसर में मेरे असरो-रसूख़
के बारे में इत्तला दो। उन्हें सब कुछ बताओ जो
तुमने देखा है। फिर जल्द ही मेरे बाप को यहाँ ले
आओ।"

14यह कहकर वह अपने भाई बिनयमीन को
गले लगाकर रो पड़ा। बिनयमीन भी उसके गले
लगकर रोने लगा। 15फिर यूसुफ़ ने रोते हुए अपने
हर एक भाई को बोसा दिया। इसके बाद उसके
भाई उसके साथ बातें करने लगे।

16जब यह ख़बर बादशाह के महल तक पहुँची
कि यूसुफ़ के भाई आए हैं तो फ़िरौन और
उसके तमाम अफ़सरान ख़ुश हुए। 17उसने यूसुफ़
से कहा, "अपने भाइयों को बता कि अपने
जानवरों पर ग़ल्ला लादकर मुल्के-कनान वापस

चले जाओ। 18वहाँ अपने बाप और ख़ानदानों
को लेकर मेरे पास आ जाओ। मैं तुमको मिसर
की सबसे अच्छी ज़मीन दे दूँगा, और तुम इस
मुल्क की बेहतरीन पैदावार खा सकोगे। 19उन्हें
यह हिदायत भी दे कि अपने बाल-बच्चों के लिए
मिसर से गाड़ियाँ ले जाओ और अपने बाप को
भी बिठाकर यहाँ ले आओ। 20अपने माल की
ज़्यादा फ़िकर न करो, क्योंकि तुम्हें मुल्के-मिसर
का बेहतरीन माल मिलेगा।”

21यूसुफ़ के भाइयों ने ऐसा ही किया। यूसुफ़
ने उन्हें बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ गाड़ियाँ
और सफ़र के लिए ख़ुराक दी। 22उसने हर एक
भाई को कपड़ों का एक जोड़ा भी दिया। लेकिन
बिनयमीन को उसने चाँदी के 300 सिक्के और
पाँच जोड़े दिए। 23उसने अपने बाप को दस गधे
भिजवा दिए जो मिसर के बेहतरीन माल से लदे
हुए थे और दस गधियाँ जो अनाज, रोटी और बाप
के सफ़र के लिए खाने से लदी हुई थीं। 24यों
उसने अपने भाइयों को रुख़सत करके कहा,
“रास्ते में झगड़ा न करना।”

25वह मिसर से रवाना होकर मुल्के-कनान में
अपने बाप के पास पहुँचे। 26उन्होंने उससे कहा,
“यूसुफ़ ज़िंदा है! वह पूरे मिसर का हाकिम है।”
लेकिन याक़ूब हक्का-बक्का रह गया, क्योंकि
उसे यक़ीन न आया। 27ताहम उन्होंने उसे सब
कुछ बताया जो यूसुफ़ ने उनसे कहा था, और
उसने ख़ुद वह गाड़ियाँ देखीं जो यूसुफ़ ने उसे
मिसर ले जाने के लिए भिजवा दी थीं। फिर याक़ूब
की जान में जान आ गई, 28और उसने कहा,
“मेरा बेटा यूसुफ़ ज़िंदा है! यही काफ़ी है। मरने
से पहले मैं जाकर उससे मिलूँगा।”

याक़ूब मिसर जाता है

46 याक़ूब सब कुछ लेकर रवाना हुआ
और बैर-सबा पहुँचा। वहाँ उसने अपने
बाप इसहाक़ के ख़ुदा के हुज़ूर क़ुरबानियाँ चढ़ाईं।
2रात को अल्लाह रोया में उससे हमकलाम हुआ।
उसने कहा, “याक़ूब, याक़ूब!” याक़ूब ने जवाब
दिया, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” 3अल्लाह ने कहा,
“मैं अल्लाह हूँ, तेरे बाप इसहाक़ का ख़ुदा। मिसर
जाने से मत डर, क्योंकि वहाँ मैं तुझसे एक बड़ी
क़ौम बनाऊँगा। 4मैं तेरे साथ मिसर जाऊँगा और
तुझे इस मुल्क में वापस भी ले आऊँगा। जब तू
मरेगा तो यूसुफ़ ख़ुद तेरी आँखें बंद करेगा।”

5इसके बाद याक़ूब बैर-सबा से रवाना हुआ।
उसके बेटों ने उसे और अपने बाल-बच्चों को उन
गाड़ियों में बिठा दिया जो मिसर के बादशाह ने
भिजवाई थीं। 6यों याक़ूब और उस की तमाम
औलाद अपने मवेशी और कनान में हासिल किया
हुआ माल लेकर मिसर चले गए। 7याक़ूब के
बेटे-बेटियाँ, पोते-पोतियाँ और बाक़ी औलाद सब
साथ गए।

8इसराईल की औलाद के नाम जो मिसर चली
गई यह हैं :

याक़ूब के पहलौठे रूबिन 9के बेटे हनूक,
फ़ल्लू, हसरोन और करमी थे। 10शमाऊन के
बेटे यमुएल, यमीन, उहद, यकीन, सुहर और
साऊल थे (साऊल कनानी औरत का बच्चा था)।
11लावी के बेटे जैरसोन, क़िहात और मिरारी
थे। 12यहूदाह के बेटे एर, ओनान, सेला, फ़ारस
और ज़ारह थे (एर और ओनान कनान में मर
चुके थे)। फ़ारस के दो बेटे हसरोन और हमूल
थे। 13इशकार के बेटे तोला, फ़ुव्वा, योब और
सिमरोन थे। 14ज़बूलून के बेटे सरद, ऐलोन और
यहलियेल थे। 15इन बेटों की माँ लियाह थी, और
वह मसोपुतामिया में पैदा हुए। इनके अलावा दीना
उस की बेटी थी। कुल 33 मर्द लियाह की औलाद
थे।

16जद के बेटे सिफ़ियान, हज्जी, सूनी,
इसबून, एरी, अरूदी और अरेली थे। 17आशर
के बेटे यिमना, इसवाह, इसवी और बरिया थे।
आशर की बेटी सिरह थी, और बरिया के दो बेटे
थे, हिबर और मलकियेल। 18कुल 16 अफ़राद
ज़िलफ़ा की औलाद थे जिसे लाबन ने अपनी बेटी
लियाह को दिया था।

19राख़िल के बेटे यूसुफ़ और बिनयमीन थे।
20यूसुफ़ के दो बेटे मनस्सी और इफ़राईम मिसर
में पैदा हुए। उनकी माँ ओन के पुजारी फ़ोतीफ़िरा
की बेटी आसनत थी। 21बिनयमीन के बेटे बाला,
बकर, अशबेल, जीरा, नामान, इख़ी, रोस,
मुफ़्फ़ीम, हुफ़्फ़ीम और अर्द थे। 22कुल 14 मर्द
राख़िल की औलाद थे।

23दान का बेटा हुशीम था। 24नफ़ताली के
बेटे यहसियेल, जूनी, यिसर और सिल्लीम थे।
25कुल 7 मर्द बिलहाह की औलाद थे जिसे लाबन
ने अपनी बेटी राख़िल को दिया था।

26याक़ूब की औलाद के 66 अफ़राद उसके
साथ मिसर चले गए। इस तादाद में बेटों की
बीवियाँ शामिल नहीं थीं। 27जब हम याक़ूब,
यूसुफ़ और उसके दो बेटे इनमें शामिल करते हैं
तो याक़ूब के घराने के 70 अफ़राद मिसर गए।

याक़ूब और उसका ख़ानदान मिसर में

28याक़ूब ने यहूदाह को अपने आगे यूसुफ़ के
पास भेजा ताकि वह जुशन में उनसे मिले। जब
वह वहाँ पहुँचे 29तो यूसुफ़ अपने रथ पर सवार
होकर अपने बाप से मिलने के लिए जुशन गया।
उसे देखकर वह उसके गले लगकर काफ़ी देर
रोता रहा। 30याक़ूब ने यूसुफ़ से कहा, "अब मैं
मरने के लिए तैयार हूँ, क्योंकि मैंने ख़ुद देखा है
कि तू ज़िंदा है।"

31फिर यूसुफ़ ने अपने भाइयों और अपने बाप
के ख़ानदान के बाक़ी अफ़राद से कहा, "ज़रूरी
है कि मैं जाकर बादशाह को इत्तला दूँ कि मेरे
भाई और मेरे बाप का पूरा ख़ानदान जो कनान
के रहनेवाले हैं मेरे पास आ गए हैं। 32मैं उससे
कहूँगा, 'यह आदमी भेड़-बकरियों के चरवाहे
हैं। वह मवेशी पालते हैं, इसलिए अपनी भेड़-
बकरियाँ, गाय-बैल और बाक़ी सारा माल अपने
साथ ले आए हैं।' 33बादशाह तुम्हें बुलाकर पूछेगा
कि तुम क्या काम करते हो? 34फिर तुमको
जवाब देना है, 'आपके ख़ादिम बचपन से मवेशी
पालते आए हैं। यह हमारे बापदादा का पेशा
था और हमारा भी है।' अगर तुम यह कहो तो
तुम्हें जुशन में रहने की इजाज़त मिलेगी। क्योंकि
भेड़-बकरियों के चरवाहे मिसरियों की नज़र में
क़ाबिले-नफ़रत हैं।"

47 यूसुफ़ फ़िरौन के पास गया और
उसे इत्तला देकर कहा, "मेरा बाप
और भाई अपनी भेड़-बकरियों, गाय-बैलों और
सारे माल समेत मुल्के-कनान से आकर जुशन
में ठहरे हुए हैं।" 2उसने अपने भाइयों में से
पाँच को चुनकर फ़िरौन के सामने पेश किया।
3फ़िरौन ने भाइयों से पूछा, "तुम क्या काम करते
हो?" उन्होंने जवाब दिया, "आपके ख़ादिम भेड़-
बकरियों के चरवाहे हैं। यह हमारे बापदादा का
पेशा था और हमारा भी है। 4हम यहाँ आए हैं
ताकि कुछ देर अजनबी की हैसियत से आपके
पास ठहरें, क्योंकि काल ने कनान में बहुत ज़ोर
पकड़ा है। वहाँ आपके ख़ादिमों के जानवरों के
लिए चरागाहें ख़त्म हो गई हैं। इसलिए हमें जुशन
में रहने की इजाज़त दें।"

5बादशाह ने यूसुफ़ से कहा, "तेरा बाप और
भाई तेरे पास आ गए हैं। 6मुल्के-मिसर तेरे सामने
खुला है। उन्हें बेहतरीन जगह पर आबाद कर।
वह जुशन में रहें। और अगर उनमें से कुछ हैं जो
ख़ास क़ाबिलियत रखते हैं तो उन्हें मेरे मवेशियों
की निगहदाशत पर रख।"

7फिर यूसुफ़ अपने बाप याक़ूब को ले आया
और फ़िरौन के सामने पेश किया। याक़ूब ने
बादशाह को बरकत दी। 8बादशाह ने उससे पूछा,
"तुम्हारी उम्र क्या है?" 9याक़ूब ने जवाब दिया,
"मैं 130 साल से इस दुनिया का मेहमान हूँ। मेरी
ज़िंदगी मुख़तसर और तकलीफ़देह थी, और मेरे
बापदादा मुझसे ज़्यादा उम्ररसीदा हुए थे जब वह
इस दुनिया के मेहमान थे।" 10यह कहकर याक़ूब
फ़िरौन को दुबारा बरकत देकर चला गया।

11फिर यूसुफ़ ने अपने बाप और भाइयों को
मिसर में आबाद किया। उसने उन्हें रामसीस के
इलाक़े में बेहतरीन ज़मीन दी जिस तरह बादशाह
ने हुक्म दिया था। 12यूसुफ़ अपने बाप के पूरे

घराने को ख़ुराक मुहैया करता रहा। हर ख़ानदान को उसके बच्चों की तादाद के मुताबिक़ ख़ुराक मिलती रही।

काल का सख़्त असर

13काल इतना सख़्त था कि कहीं भी रोटी नहीं मिलती थी। मिसर और कनान में लोग निढाल हो गए।

14मिसर और कनान के तमाम पैसे अनाज ख़रीदने के लिए सर्फ़ हो गए। यूसुफ़ उन्हें जमा करके फ़िरौन के महल में ले आया। 15जब मिसर और कनान के पैसे ख़त्म हो गए तो मिसरियों ने यूसुफ़ के पास आकर कहा, “हमें रोटी दें! हम आपके सामने क्यों मरें? हमारे पैसे ख़त्म हो गए हैं।” 16यूसुफ़ ने जवाब दिया, “अगर आपके पैसे ख़त्म हैं तो मुझे अपने मवेशी दें। मैं उनके एवज़ रोटी देता हूँ।” 17चुनाँचे वह अपने घोड़े, भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और गधे यूसुफ़ के पास ले आए। इनके एवज़ उसने उन्हें ख़ुराक दी। उस साल उसने उन्हें उनके तमाम मवेशियों के एवज़ ख़ुराक मुहैया की।

18अगले साल वह दुबारा उसके पास आए। उन्होंने कहा, “जनाबे-आली, हम यह बात आपसे नहीं छुपा सकते कि अब हम सिर्फ़ अपने आप और अपनी ज़मीन को आपको दे सकते हैं। हमारे पैसे तो ख़त्म हैं और आप हमारे मवेशी भी ले चुके हैं। 19हम क्यों आपकी आँखों के सामने मर जाएँ? हमारी ज़मीन क्यों तबाह हो जाए? हमें रोटी दें तो हम और हमारी ज़मीन बादशाह की होगी। हम फ़िरौन के ग़ुलाम होंगे। हमें बीज दें ताकि हम जीते बचें और ज़मीन तबाह न हो जाए।”

20चुनाँचे यूसुफ़ ने फ़िरौन के लिए मिसर की पूरी ज़मीन ख़रीद ली। काल की सख़्ती के सबब से तमाम मिसरियों ने अपने खेत बेच दिए। इस तरीक़े से पूरा मुल्क फ़िरौन की मिलकियत में आ गया। 21यूसुफ़ ने मिसर के एक सिरे से दूसरे सिरे तक के लोगों को शहरों में मुंतक़िल कर दिया। 22सिर्फ़ पुजारियों की ज़मीन आज़ाद रही। उन्हें अपनी ज़मीन बेचने की ज़रूरत ही नहीं थी, क्योंकि उन्हें फ़िरौन से इतना वज़ीफ़ा मिलता था कि गुज़ारा हो जाता था।

23यूसुफ़ ने लोगों से कहा, “ग़ौर से सुनें। आज मैंने आपको और आपकी ज़मीन को बादशाह के लिए ख़रीद लिया है। अब यह बीज लेकर अपने खेतों में बोना। 24आपको फ़िरौन को फ़सल का पाँचवाँ हिस्सा देना है। बाक़ी पैदावार आपकी होगी। आप इससे बीज बो सकते हैं, और यह आपके और आपके घरानों और बच्चों के खाने के लिए होगा।” 25उन्होंने जवाब दिया, “आपने हमें बचाया है। हमारे मालिक हम पर मेहरबानी करें तो हम फ़िरौन के ग़ुलाम बनेंगे।”

26इस तरह यूसुफ़ ने मिसर में यह क़ानून नाफ़िज़ किया कि हर फ़सल का पाँचवाँ हिस्सा बादशाह का है। यह क़ानून आज तक जारी है। सिर्फ़ पुजारियों की ज़मीन बादशाह की मिलकियत में न आई।

याक़ूब की आख़िरी गुज़ारिश

27इसराईली मिसर में जुशन के इलाक़े में आबाद हुए। वहाँ उन्हें ज़मीन मिली, और वह फले-फूले और तादाद में बहुत बढ़ गए।

28याक़ूब 17 साल मिसर में रहा। वह 147 साल का था जब फ़ौत हुआ। 29जब मरने का वक़्त क़रीब आया तो उसने यूसुफ़ को बुलाकर कहा, “मेहरबानी करके अपना हाथ मेरी रान के नीचे रखकर क़सम खा कि तू मुझ पर शफ़क़त और वफ़ादारी का इस तरह इज़हार करेगा कि मुझे मिसर में दफ़न नहीं करेगा। 30जब मैं मरकर अपने बापदादा से जा मिलूँगा तो मुझे मिसर से ले जाकर मेरे बापदादा की क़ब्र में दफ़नाना।” यूसुफ़ ने जवाब दिया, “ठीक है।” 31याक़ूब ने कहा, “क़सम खा कि तू ऐसा ही करेगा।” यूसुफ़ ने क़सम खाई। तब इसराईल ने अपने बिस्तर के सिरहाने पर अल्लाह को सिजदा किया।

याक़ूब इफ़राईम और मनस्सी को बरकत देता है

48 कुछ देर के बाद यूसुफ़ को इत्तला दी गई कि आपका बाप बीमार है। वह अपने दो बेटों मनस्सी और इफ़राईम को साथ लेकर याक़ूब से मिलने गया।

2याक़ूब को बताया गया, “आपका बेटा आ गया है” तो वह अपने आपको सँभालकर अपने बिस्तर पर बैठ गया। 3उसने यूसुफ़ से कहा, “जब मैं कनानी शहर लूज़ में था तो अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ मुझ पर ज़ाहिर हुआ। उसने मुझे बरकत देकर 4कहा, ‘मैं तुझे फलने-फूलने दूँगा और तेरी औलाद बढ़ा दूँगा बल्कि तुझसे बहुत-सी क़ौमें निकलने दूँगा। और मैं तेरी औलाद को यह मुल्क हमेशा के लिए दे दूँगा।’ 5अब मेरी बात सुन। मैं चाहता हूँ कि तेरे बेटे जो मेरे आने से पहले मिसर में पैदा हुए मेरे बेटे हों। इफ़राईम और मनस्सी रूबिन और शमाऊन के बराबर ही मेरे बेटे हों। 6अगर इनके बाद तेरे हाँ और बेटे पैदा हो जाएँ तो वह मेरे बेटे नहीं बल्कि तेरे ठहरेंगे। जो मीरास वह पाएँगे वह उन्हें इफ़राईम और मनस्सी की मीरास में से मिलेगी। 7मैं यह तेरी माँ राख़िल के सबब से कर रहा हूँ जो मसोपुतामिया से वापसी के वक़्त कनान में इफ़राता के क़रीब मर गई। मैंने उसे वहीं रास्ते में दफ़न किया” (आज इफ़राता को बैत-लहम कहा जाता है)।

8फिर याक़ूब ने यूसुफ़ के बेटों पर नज़र डालकर पूछा, “यह कौन हैं?” 9यूसुफ़ ने जवाब दिया, “यह मेरे बेटे हैं जो अल्लाह ने मुझे यहाँ मिसर में दिए।” याक़ूब ने कहा, “उन्हें मेरे क़रीब ले आ ताकि मैं उन्हें बरकत दूँ।” 10बूढ़ा होने के सबब से याक़ूब की आँखें कमज़ोर थीं। वह अच्छी तरह देख नहीं सकता था। यूसुफ़ अपने बेटों को याक़ूब के पास ले आया तो उसने उन्हें बोसा देकर गले लगाया 11और यूसुफ़ से कहा, “मुझे तवक़्क़ो ही नहीं थी कि मैं कभी तेरा चेहरा देखूँगा, और अब अल्लाह ने मुझे तेरे बेटों को देखने का मौक़ा भी दिया है।”

12फिर यूसुफ़ उन्हें याक़ूब की गोद में से लेकर ख़ुद उसके सामने मुँह के बल झुक गया। 13यूसुफ़ ने इफ़राईम को याक़ूब के बाएँ हाथ रखा और मनस्सी को उसके दाएँ हाथ। 14लेकिन याक़ूब ने अपना दहना हाथ बाईं तरफ़ बढ़ाकर इफ़राईम के सर पर रखा अगरचे वह छोटा था। इस तरह उसने अपना बायाँ हाथ दाईं तरफ़ बढ़ाकर मनस्सी के सर पर रखा जो बड़ा था। 15फिर उसने यूसुफ़ को उसके बेटों की मारिफ़त बरकत दी, “अल्लाह जिसके हुज़ूर मेरे बापदादा इब्राहीम और इसहाक़ चलते रहे और जो शुरू से आज तक मेरा चरवाहा रहा है इन्हें बरकत दे। 16जिस फ़रिश्ते ने एवज़ाना देकर मुझे हर नुक़सान से बचाया है वह इन्हें बरकत दे। अल्लाह करे कि इनमें मेरा नाम और मेरे बापदादा इब्राहीम और इसहाक़ के नाम जीते रहें। दुनिया में इनकी औलाद की तादाद बहुत बढ़ जाए।”

17जब यूसुफ़ ने देखा कि बाप ने अपना दहना हाथ छोटे बेटे इफ़राईम के सर पर रखा है तो यह उसे बुरा लगा, इसलिए उसने बाप का हाथ पकड़ा ताकि उसे इफ़राईम के सर पर से उठाकर मनस्सी के सर पर रखे। 18उसने कहा, “अब्बू, ऐसे नहीं। दूसरा लड़का बड़ा है। उसी पर अपना दहना हाथ रखें।” 19लेकिन बाप ने इनकार करके कहा, “मुझे पता है बेटा, मुझे पता है। वह भी एक बड़ी क़ौम बनेगा। फिर भी उसका छोटा भाई उससे बड़ा होगा और उससे क़ौमों की बड़ी तादाद निकलेगी।”

20उस दिन उसने दोनों बेटों को बरकत देकर कहा, “इसराईली तुम्हारा नाम लेकर बरकत दिया करेंगे। जब वह बरकत देंगे तो कहेंगे, ‘अल्लाह आपके साथ वैसा करे जैसा उसने इफ़राईम और मनस्सी के साथ किया है’।” इस तरह याक़ूब ने इफ़राईम को मनस्सी से बड़ा बना दिया। 21यूसुफ़ से उसने कहा, “मैं तो मरनेवाला हूँ, लेकिन अल्लाह तुम्हारे साथ होगा और तुम्हें तुम्हारे

बापदादा के मुल्क में वापस ले जाएगा। 22एक बात में मैं तुझे तेरे भाइयों पर तरजीह देता हूँ, मैं तुझे कनान में वह क़ितआ देता हूँ जो मैंने अपनी तलवार और कमान से अमोरियों से छीना था।”

याक़ूब अपने बेटों को बरकत देता है

49 याक़ूब ने अपने बेटों को बुलाकर कहा, “मेरे पास जमा हो जाओ ताकि मैं तुम्हें बताऊँ कि मुस्तक़बिल में तुम्हारे साथ क्या क्या होगा। 2ऐ याक़ूब के बेटो, इकट्ठे होकर सुनो, अपने बाप इसराईल की बातों पर ग़ौर करो।

3रूबिन, तुम मेरे पहलौठे हो, मेरे ज़ोर और मेरी ताक़त का पहला फल। तुम इज़्ज़त और क़ुव्वत के लिहाज़ से बरतर हो। 4लेकिन चूँकि तुम बेकाबू सैलाब की मानिंद हो इसलिए तुम्हारी अव्वल हैसियत जाती रहे। क्योंकि तुमने मेरी हरम से हमबिसतर होकर अपने बाप की बेहुरमती की है।

5शमाऊन और लावी दोनों भाइयों की तलवारें ज़ुल्मो-तशद्दुद के हथियार रहे हैं। 6मेरी जान न उनकी मजलिस में शामिल और न उनकी जमात में दाख़िल हो, क्योंकि उन्होंने ग़ुस्से में आकर दूसरों को क़त्ल किया है, उन्होंने अपनी मरज़ी से बैलों की कोंचें काटी हैं। 7उनके ग़ुस्से पर लानत हो जो इतना ज़बरदस्त है और उनके तैश पर जो इतना सख़्त है। मैं उन्हें याक़ूब के मुल्क में तित्तर-बित्तर करूँगा, उन्हें इसराईल में मुंतशिर कर दूँगा।

8यहूदाह, तुम्हारे भाई तुम्हारी तारीफ़ करेंगे। तुम अपने दुश्मनों की गरदन पकड़े रहोगे, और तुम्हारे बाप के बेटे तुम्हारे सामने झुक जाएंगे। 9यहूदाह शेरबबर का बच्चा है। मेरे बेटे, तुम अभी अभी शिकार मारकर वापस आए हो। यहूदाह शेरबबर बल्कि शेरनी की तरह दबककर बैठ जाता है। कौन उसे छेड़ने की जुर्रत करेगा? 10शाही असा यहूदाह से दूर नहीं होगा बल्कि शाही इख़्तियार उस वक़्त तक उस की औलाद के पास रहेगा जब तक वह हाकिम न आए जिसके ताबे क़ौमें रहेंगी। 11वह अपना जवान गधा अंगूर की बेल से और अपनी गधी का बच्चा बेहतरीन अंगूर की बेल से बाँधेगा। वह अपना लिबास मै में और अपना कपड़ा अंगूर के ख़ून में धोएगा। 12उस की आँखें मै से ज़्यादा गदली और उसके दाँत दूध से ज़्यादा सफ़ेद होंगे।

13ज़बूलून साहिल पर आबाद होगा जहाँ बहरी जहाज़ होंगे। उस की हद सैदा तक होगी।

14इशकार ताक़तवर गधा है जो अपने ज़ीन के दो बोरों के दरमियान बैठा है। 15जब वह देखेगा कि उस की आरामगाह अच्छी और उसका मुल्क ख़ुशनुमा है तो वह बोझ उठाने के लिए तैयार हो जाएगा और उजरत के बग़ैर काम करने के लिए मजबूर किया जाएगा।

16दान अपनी क़ौम का इनसाफ़ करेगा अगरचे वह इसराईल के क़बीलों में से एक ही है। 17दान सड़क के साँप और रास्ते के अफ़ई की मानिंद होगा। वह घोड़े की एड़ियों को काटेगा तो उसका सवार पीछे गिर जाएगा।

18ऐ रब, मैं तेरी ही नजात के इंतज़ार में हूँ!

19जद पर डाकुओं का जत्था हमला करेगा, लेकिन वह पलटकर उसी पर हमला कर देगा।

20आशर को ग़िज़ाइयतवाली ख़ुराक हासिल होगी। वह लज़ीज़ शाही खाना मुहैया करेगा।

21नफ़ताली आज़ाद छोड़ी हुई हिरनी है। वह ख़ूबसूरत बातें करता है।[a]

22यूसुफ़ फलदार बेल है। वह चश्मे पर लगी हुई फलदार बेल है जिसकी शाख़ें दीवार पर चढ़ गई हैं। 23तीरअंदाज़ों ने उस पर तीर चलाकर उसे तंग किया और उसके पीछे पड़ गए, 24लेकिन उस की कमान मज़बूत रही, और उसके बाज़ू याक़ूब के ज़ोरावर ख़ुदा के सबब से ताक़तवर रहे, उस चरवाहे के सबब से जो इसराईल का ज़बरदस्त सूरमा है। 25क्योंकि तेरे बाप का ख़ुदा तेरी मदद करता है, अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ तुझे आसमान की बरकत, ज़मीन की गहराइयों की बरकत और

[a] या ख़ूबसूरत बच्चे पैदा करती है।

औलाद की बरकत देता है। 26तेरे बाप की बरकत क़दीम पहाड़ों और अबदी पहाड़ियों की मरग़ूब चीज़ों से ज़्यादा अज़ीम है। यह तमाम बरकत यूसुफ़ के सर पर हो, उस शख़्स के चाँद पर जो अपने भाइयों पर शहज़ादा है।

27बिनयमीन फाड़नेवाला भेड़िया है। सुबह वह अपना शिकार खा जाता और रात को अपना लूटा हुआ माल तक़सीम कर देता है।"

28यह इसराईल के कुल बारह क़बीले हैं। और यह वह कुछ है जो उनके बाप ने उनसे बरकत देते वक़्त कहा। उसने हर एक को उस की अपनी बरकत दी।

याक़ूब का इंतक़ाल

29फिर याक़ूब ने अपने बेटों को हुक्म दिया, "अब मैं कूच करके अपने बापदादा से जा मिलूँगा। मुझे मेरे बापदादा के साथ उस ग़ार में दफ़नाना जो हित्ती आदमी इफ़रोन के खेत में है। 30यानी उस ग़ार में जो मुल्के-कनान में ममरे के मशरिक़ में मकफ़ीला के खेत में है। इब्राहीम ने उसे खेत समेत अपने लोगों को दफ़नाने के लिए इफ़रोन हित्ती से ख़रीद लिया था। 31वहाँ इब्राहीम और उस की बीवी सारा दफ़नाए गए, वहाँ इसहाक़ और उस की बीवी रिबक़ा दफ़नाए गए और वहाँ मैंने लियाह को दफ़न किया। 32वह खेत और उसका ग़ार हित्तियों से ख़रीदा गया था।"

33इन हिदायात के बाद याक़ूब ने अपने पाँव बिस्तर पर समेट लिए और दम छोड़कर अपने बापदादा से जा मिला।

याक़ूब को दफ़न किया जाता है

50 यूसुफ़ अपने बाप के चेहरे से लिपट गया। उसने रोते हुए उसे बोसा दिया। 2उसके मुलाज़िमों में से कुछ डाक्टर थे। उसने उन्हें हिदायत दी कि मेरे बाप इसराईल की लाश को हनूत करें ताकि वह गल न जाए। उन्होंने ऐसा ही किया। 3इसमें 40 दिन लग गए। आम तौर पर हनूत करने के लिए इतने ही दिन लगते हैं। मिसरियों ने 70 दिन तक याक़ूब का मातम किया।

4जब मातम का वक़्त ख़त्म हुआ तो यूसुफ़ ने बादशाह के दरबारियों से कहा, "मेहरबानी करके यह ख़बर बादशाह तक पहुँचा दें 5कि मेरे बाप ने मुझे क़सम दिलाकर कहा था, 'मैं मरनेवाला हूँ। मुझे उस क़ब्र में दफ़न करना जो मैंने मुल्के-कनान में अपने लिए बनवाई।' अब मुझे इजाज़त दें कि मैं वहाँ जाऊँ और अपने बाप को दफ़न करके वापस आऊँ।" 6फ़िरौन ने जवाब दिया, "जा, अपने बाप को दफ़न कर जिस तरह उसने तुझे क़सम दिलाई थी।"

7चुनाँचे यूसुफ़ अपने बाप को दफ़नाने के लिए कनान रवाना हुआ। बादशाह के तमाम मुलाज़िम, महल के बुज़ुर्ग और पूरे मिसर के बुज़ुर्ग उसके साथ थे। 8यूसुफ़ के घराने के अफ़राद, उसके भाई और उसके बाप के घराने के लोग भी साथ गए। सिर्फ़ उनके बच्चे, उनकी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल जुशन में रहे। 9रथ और घुड़सवार भी साथ गए। सब मिलकर बड़ा लशकर बन गए।

10जब वह यरदन के क़रीब अतद के खलियान पर पहुँचे तो उन्होंने निहायत दिलसोज़ नोहा किया। वहाँ यूसुफ़ ने सात दिन तक अपने बाप का मातम किया। 11जब मक़ामी कनानियों ने अतद के खलियान पर मातम का यह नज़ारा देखा तो उन्होंने कहा, "यह तो मातम का बहुत बड़ा इंतज़ाम है जो मिसरी करवा रहे हैं।" इसलिए उस जगह का नाम अबील-मिसरीम यानी 'मिसरियों का मातम' पड़ गया। 12यों याक़ूब के बेटों ने अपने बाप का हुक्म पूरा किया। 13उन्होंने उसे मुल्के-कनान में ले जाकर मकफ़ीला के खेत के ग़ार में दफ़न किया जो ममरे के मशरिक़ में है। यह वही खेत है जो इब्राहीम ने इफ़रोन हित्ती से अपने लोगों को दफ़नाने के लिए ख़रीदा था।

14इसके बाद यूसुफ़, उसके भाई और बाक़ी तमाम लोग जो जनाज़े के लिए साथ गए थे मिसर को लौट आए।

यूसुफ़ अपने भाइयों को तसल्ली देता है

15जब याक़ूब इंतक़ाल कर गया तो यूसुफ़ के
भाई डर गए। उन्होंने कहा, “ख़तरा है कि अब
यूसुफ़ हमारा ताक़्क़ुब करके उस ग़लत काम का
बदला ले जो हमने उसके साथ किया था। फिर
क्या होगा?” 16यह सोचकर उन्होंने यूसुफ़ को
ख़बर भेजी, “आपके बाप ने मरने से पेशतर
हिदायत दी 17कि यूसुफ़ को बताना, ‘अपने
भाइयों के उस ग़लत काम को मुआफ़ कर देना जो
उन्होंने तुम्हारे साथ किया।’ अब हमें जो आपके
बाप के ख़ुदा के पैरोकार हैं मुआफ़ कर दें।”

यह ख़बर सुनकर यूसुफ़ रो पड़ा। 18फिर उसके
भाई ख़ुद आए और उसके सामने गिर गए। उन्होंने
कहा, “हम आपके ख़ादिम हैं।” 19लेकिन यूसुफ़
ने कहा, “मत डरो। क्या मैं अल्लाह की जगह हूँ?
हरगिज़ नहीं! 20तुमने मुझे नुक़सान पहुँचाने का
इरादा किया था, लेकिन अल्लाह ने उससे भलाई
पैदा की। और अब इसका मक़सद पूरा हो रहा है।
बहुत-से लोग मौत से बच रहे हैं। 21चुनाँचे अब
डरने की ज़रूरत नहीं है। मैं तुम्हें और तुम्हारे बच्चों
को ख़ुराक मुहैया करता रहूँगा।”

यों यूसुफ़ ने उन्हें तसल्ली दी और उनसे नरमी
से बात की।

यूसुफ़ का इंतक़ाल

22यूसुफ़ अपने बाप के ख़ानदान समेत मिसर
में रहा। वह 110 साल ज़िंदा रहा। 23मौत से
पहले उसने न सिर्फ़ इफ़राईम के बच्चों को बल्कि
उसके पोतों को भी देखा। मनस्सी के बेटे मकीर
के बच्चे भी उस की मौजूदगी में पैदा होकर उस
की गोद में रखे गए।[a]

24फिर एक वक़्त आया कि यूसुफ़ ने अपने
भाइयों से कहा, “मैं मरनेवाला हूँ। लेकिन
अल्लाह ज़रूर आपकी देख-भाल करके आपको
इस मुल्क से उस मुल्क में ले जाएगा जिसका
उसने इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से क़सम
खाकर वादा किया है।” 25फिर यूसुफ़ ने
इसराईलियों को क़सम दिलाकर कहा, “अल्लाह
यक़ीनन तुम्हारी देख-भाल करके वहाँ ले जाएगा।
उस वक़्त मेरी हड्डियों को भी उठाकर साथ ले
जाना।”

26फिर यूसुफ़ फ़ौत हो गया। वह 110 साल
का था। उसे हनूत करके मिसर में एक ताबूत में
रखा गया।

[a]ग़ालिबन इसका मतलब यह है कि उसने उन्हें लेपालक
बनाया।

ख़ुरूज

याक़ूब का ख़ानदान मिसर में

1 ज़ैल में उन बेटों के नाम हैं जो अपने
बाप याक़ूब और अपने ख़ानदानों समेत
मिसर में आए थे : 2रूबिन, शमाऊन,
लावी, यहूदाह, 3इशकार, ज़बूलून, बिन-
यमीन, 4दान, नफ़ताली, जद और आशर। 5उस
वक़्त याक़ूब की औलाद की तादाद 70 थी।
यूसुफ़ तो पहले ही मिसर आ चुका था।

6मिसर में रहते हुए बहुत दिन गुज़र गए। इतने
में यूसुफ़, उसके तमाम भाई और उस नसल के
तमाम लोग मर गए। 7इसराईली फले-फूले और
तादाद में बहुत बढ़ गए। नतीजे में वह निहायत ही
ताक़तवर हो गए। पूरा मुल्क उनसे भर गया।

इसराईलियों को दबाया जाता है

8होते होते एक नया बादशाह तख़्तनशीन हुआ
जो यूसुफ़ से नावाक़िफ़ था। 9उसने अपने लोगों
से कहा, "इसराईलियों को देखो। वह तादाद और
ताक़त में हमसे बढ़ गए हैं। 10आओ, हम हिकमत
से काम लें, वरना वह मज़ीद बढ़ जाएंगे। ऐसा न
हो कि वह किसी जंग के मौक़े पर दुश्मन का साथ
देकर हमसे लड़ें और मुल्क को छोड़ जाएँ।"

11चुनाँचे मिसरियों ने इसराईलियों पर निगरान
मुक़र्रर किए ताकि बेगार में उनसे काम करवाकर
उन्हें दबाते रहें। उस वक़्त उन्होंने पितोम और
रामसीस के शहर तामीर किए। इन शहरों
में फ़िरौन बादशाह के बड़े बड़े गोदाम थे।
12लेकिन जितना इसराईलियों को दबाया गया
उतना ही वह तादाद में बढ़ते और फैलते गए।
आख़िरकार मिसरी उनसे दहशत खाने लगे,
13और वह बड़ी बेरहमी से उनसे काम करवाते
रहे। 14इसराईलियों का गुज़ारा निहायत मुश्किल
हो गया। उन्हें गारा तैयार करके ईंटें बनाना और
खेतों में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के काम करना पड़े।
इसमें मिसरी उनसे बड़ी बेरहमी से पेश आते रहे।

दाइयाँ अल्लाह की राह पर चलती हैं

15इसराईलियों की दो दाइयाँ थीं जिनके नाम
सिफ़रा और फ़ुआ थे। मिसर के बादशाह ने उनसे
कहा, 16"जब इबरानी औरतें तुम्हें मदद के लिए
बुलाएँ तो ख़बरदार रहो। अगर लड़का पैदा हो
तो उसे जान से मार दो, अगर लड़की हो तो उसे
जीता छोड़ दो।" 17लेकिन दाइयाँ अल्लाह का
ख़ौफ़ मानती थीं। उन्होंने मिसर के बादशाह का
हुक्म न माना बल्कि लड़कों को भी जीने दिया।

18तब मिसर के बादशाह ने उन्हें दुबारा बुलाकर
पूछा, "तुमने यह क्यों किया? तुम लड़कों को
क्यों जीता छोड़ देती हो?" 19उन्होंने जवाब
दिया, "इबरानी औरतें मिसरी औरतों से ज़्यादा
मज़बूत हैं। बच्चे हमारे पहुँचने से पहले ही पैदा हो
जाते हैं।"

20चुनाँचे अल्लाह ने दाइयों को बरकत दी, और
इसराईली क़ौम तादाद में बढ़कर बहुत ताक़तवर
हो गई। 21और चूँकि दाइयाँ अल्लाह का ख़ौफ़

मानती थीं इसलिए उसने उन्हें औलाद देकर उनके ख़ानदानों को क़ायम रखा।

22आख़िरकार बादशाह ने अपने तमाम
हमवतनों से बात की, “जब भी इबरानियों के
लड़के पैदा हों तो उन्हें दरियाए-नील में फेंक देना।
सिर्फ़ लड़कियों को ज़िंदा रहने दो।”

मूसा की पैदाइश और बचाव

2 उन दिनों में लावी के एक आदमी ने अपने
ही क़बीले की एक औरत से शादी की।
2औरत हामिला हुई और बच्चा पैदा हुआ। माँ
ने देखा कि लड़का ख़ूबसूरत है, इसलिए उसने
उसे तीन माह तक छुपाए रखा। 3जब वह उसे
और ज़्यादा न छुपा सकी तो उसने आबी नरसल
से टोकरी बनाकर उस पर तारकोल चढ़ाया।
फिर उसने बच्चे को टोकरी में रखकर टोकरी को
दरियाए-नील के किनारे पर उगे हुए सरकंडों में
रख दिया। 4बच्चे की बहन कुछ फ़ासले पर खड़ी
देखती रही कि उसका क्या बनेगा।

5उस वक़्त फ़िरौन की बेटी नहाने के लिए
दरिया पर आई। उस की नौकरानियाँ दरिया के
किनारे टहलने लगीं। तब उसने सरकंडों में टोकरी
देखी और अपनी लौंडी को उसे लाने भेजा। 6उसे
खोला तो छोटा लड़का दिखाई दिया जो रो रहा
था। फ़िरौन की बेटी को उस पर तरस आया।
उसने कहा, “यह कोई इबरानी बच्चा है।”

7अब बच्चे की बहन फ़िरौन की बेटी के पास
गई और पूछा, “क्या मैं बच्चे को दूध पिलाने के
लिए कोई इबरानी औरत ढूँड लाऊँ?” 8फ़िरौन
की बेटी ने कहा, “हाँ, जाओ।” लड़की चली गई
और बच्चे की सगी माँ को लेकर वापस आई।
9फ़िरौन की बेटी ने माँ से कहा, “बच्चे को ले
जाओ और उसे मेरे लिए दूध पिलाया करो। मैं
तुम्हें इसका मुआवज़ा दूँगी।” चुनाँचे बच्चे की माँ
ने उसे दूध पिलाने के लिए ले लिया।

10जब बच्चा बड़ा हुआ तो उस की माँ उसे
फ़िरौन की बेटी के पास ले गई, और वह उसका
बेटा बन गया। फ़िरौन की बेटी ने उसका नाम मूसा
यानी ‘निकाला गया’ रखकर कहा, “मैं उसे पानी
से निकाल लाई हूँ।”

मूसा फ़रार होता है

11जब मूसा जवान हुआ तो एक दिन वह घर
से निकलकर अपने लोगों के पास गया जो जबरी
काम में मसरूफ़ थे। मूसा ने देखा कि एक मिसरी
मेरे एक इबरानी भाई को मार रहा है। 12मूसा
ने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई। जब मालूम हुआ कि
कोई नहीं देख रहा तो उसने मिसरी को जान से
मार दिया और उसे रेत में छुपा दिया।

13अगले दिन भी मूसा घर से निकला। इस
दफ़ा दो इबरानी मर्द आपस में लड़ रहे थे। जो
ग़लती पर था उससे मूसा ने पूछा, “तुम अपने
भाई को क्यों मार रहे हो?” 14आदमी ने जवाब
दिया, “किसने आपको हम पर हुक्मरान और
क़ाज़ी मुक़र्रर किया है? क्या आप मुझे भी क़त्ल
करना चाहते हैं जिस तरह मिसरी को मार डाला
था?” तब मूसा डर गया। उसने सोचा, “हाय,
मेरा भेद खुल गया है!”

15बादशाह को भी पता लगा तो उसने मूसा को
मरवाने की कोशिश की। लेकिन मूसा मिदियान
के मुल्क को भाग गया। वहाँ वह एक कुएँ के
पास बैठ गया। 16मिदियान में एक इमाम था
जिसकी सात बेटियाँ थीं। यह लड़कियाँ अपनी
भेड़-बकरियों को पानी पिलाने के लिए कुएँ पर
आईं और पानी निकालकर हौज़ भरने लगीं।
17लेकिन कुछ चरवाहों ने आकर उन्हें भगा दिया।
यह देखकर मूसा उठा और लड़कियों को चरवाहों
से बचाकर उनके रेवड़ को पानी पिलाया।

18जब लड़कियाँ अपने बाप रऊएल के पास
वापस आईं तो बाप ने पूछा, “आज तुम इतनी
जल्दी से क्यों वापस आ गई हो?” 19लड़कियों
ने जवाब दिया, “एक मिसरी आदमी ने हमें
चरवाहों से बचाया। न सिर्फ़ यह बल्कि उसने
हमारे लिए पानी भी निकालकर रेवड़ को पिला
दिया।” 20रऊएल ने कहा, “वह आदमी कहाँ है?

तुम उसे क्यों छोड़कर आई हो? उसे बुलाओ ताकि वह हमारे साथ खाना खाए।”

21मूसा रऊएल के घर में ठहरने के लिए राज़ी हो गया। बाद में उस की शादी रऊएल की बेटी सफ़्फ़ूरा से हुई। 22सफ़्फ़ूरा के बेटा पैदा हुआ तो मूसा ने कहा, “इसका नाम जैरसोम यानी ‘अजनबी मुल्क में परदेसी’ हो, क्योंकि मैं अजनबी मुल्क में परदेसी हूँ।”

23काफ़ी अरसा गुज़र गया। इतने में मिसर का बादशाह इंतक़ाल कर गया। इसराईली अपनी ग़ुलामी तले कराहते और मदद के लिए पुकारते रहे, और उनकी चीख़ें अल्लाह तक पहुँच गईं। 24अल्लाह ने उनकी आहें सुनीं और उस अहद को याद किया जो उसने इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से बाँधा था। 25अल्लाह इसराईलियों की हालत देखकर उनका ख़याल करने लगा।

जलती हुई झाड़ी

3 मूसा अपने सुसर यितरो की भेड़-बकरियों की निगहबानी करता था (मिदियान का इमाम रऊएल यितरो भी कहलाता था)। एक दिन मूसा रेवड़ को रेगिस्तान की परली जानिब ले गया और चलते चलते अल्लाह के पहाड़ होरिब यानी सीना तक पहुँच गया। 2वहाँ रब का फ़रिश्ता आग के शोले में उस पर ज़ाहिर हुआ। यह शोला एक झाड़ी में भड़क रहा था। मूसा ने देखा कि झाड़ी जल रही है लेकिन भस्म नहीं हो रही। 3मूसा ने सोचा, “यह तो अजीब बात है। क्या वजह है कि जलती हुई झाड़ी भस्म नहीं हो रही? मैं ज़रा वहाँ जाकर यह हैरतअंगेज़ मंज़र देखूँ।”

4जब रब ने देखा कि मूसा झाड़ी को देखने आ रहा है तो उसने उसे झाड़ी में से पुकारा, “मूसा, मूसा!” मूसा ने कहा, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” 5रब ने कहा, “इससे ज़्यादा क़रीब न आना। अपनी जूतियाँ उतार, क्योंकि तू मुक़द्दस ज़मीन पर खड़ा है। 6मैं तेरे बाप का ख़ुदा, इब्राहीम का ख़ुदा, इसहाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का ख़ुदा हूँ।” यह सुनकर मूसा ने अपना मुँह ढाँक लिया, क्योंकि वह अल्लाह को देखने से डरा।

7रब ने कहा, “मैंने मिसर में अपनी क़ौम की बुरी हालत देखी और ग़ुलामी में उनकी चीख़ें सुनी हैं, और मैं उनके दुखों को ख़ूब जानता हूँ। 8अब मैं उन्हें मिसरियों के क़ाबू से बचाने के लिए उतर आया हूँ। मैं उन्हें मिसर से निकालकर एक अच्छे वसी मुल्क में ले जाऊँगा, एक ऐसे मुल्क में जहाँ दूध और शहद की कसरत है, गो इस वक़्त कनानी, हित्ती, अमोरी, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी उसमें रहते हैं। 9इसराईलियों की चीख़ें मुझ तक पहुँची हैं। मैंने देखा है कि मिसरी उन पर किस तरह का ज़ुल्म ढा रहे हैं। 10चुनाँचे अब जा। मैं तुझे फ़िरौन के पास भेजता हूँ, क्योंकि तुझे मेरी क़ौम इसराईल को मिसर से निकालकर लाना है।”

11लेकिन मूसा ने अल्लाह से कहा, “मैं कौन हूँ कि फ़िरौन के पास जाकर इसराईलियों को मिसर से निकाल लाऊँ?” 12अल्लाह ने कहा, “मैं तो तेरे साथ हूँगा। और इसका सबूत कि मैं तुझे भेज रहा हूँ यह होगा कि लोगों के मिसर से निकलने के बाद तुम यहाँ आकर इस पहाड़ पर मेरी इबादत करोगे।”

13लेकिन मूसा ने एतराज़ किया, “अगर मैं इसराईलियों के पास जाकर उन्हें बताऊँ कि तुम्हारे बापदादा के ख़ुदा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है तो वह पूछेंगे, ‘उसका नाम क्या है?’ फिर मैं उनको क्या जवाब दूँ?”

14अल्लाह ने कहा, “मैं जो हूँ सो मैं हूँ। उनसे कहना, ‘मैं हूँ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। 15रब जो तुम्हारे बापदादा का ख़ुदा, इब्राहीम का ख़ुदा, इसहाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का ख़ुदा है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।’ यह अबद तक मेरा नाम रहेगा। लोग यही नाम लेकर मुझे नसल-दर-नसल याद करेंगे।

16अब जा और इसराईल के बुज़ुर्गों को जमा करके उनको बता दे कि रब तुम्हारे बापदादा इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब का ख़ुदा मुझ पर

ज़ाहिर हुआ है। वह फ़रमाता है, 'मैंने ख़ूब देख लिया है कि मिसर में तुम्हारे साथ क्या सुलूक हो रहा है। 17इसलिए मैंने फ़ैसला किया है कि तुम्हें मिसर की मुसीबत से निकालकर कनानियों, हित्तियों, अमोरियों, फ़रिज़्ज़ियों, हिव्वियों और यबूसियों के मुल्क में ले जाऊँ, ऐसे मुल्क में जहाँ दूध और शहद की कसरत है।' 18बुज़ुर्ग तेरी सुनेंगे। फिर उनके साथ मिसर के बादशाह के पास जाकर उससे कहना, 'रब इबरानियों का ख़ुदा हम पर ज़ाहिर हुआ है। इसलिए हमें इजाज़त दें कि हम तीन दिन का सफ़र करके रेगिस्तान में रब अपने ख़ुदा के लिए क़ुरबानियाँ चढ़ाएँ।'

19लेकिन मुझे मालूम है कि मिसर का बादशाह सिर्फ़ इस सूरत में तुम्हें जाने देगा कि कोई ज़बरदस्ती तुम्हें ले जाए। 20इसलिए मैं अपनी क़ुदरत ज़ाहिर करके अपने मोजिज़ों की मारिफ़त मिसरियों को मारूँगा। फिर वह तुम्हें जाने देगा। 21उस वक़्त मैं मिसरियों के दिलों को तुम्हारे लिए नरम कर दूँगा। तुम्हें ख़ाली हाथ नहीं जाना पड़ेगा। 22तमाम इबरानी औरतें अपनी मिसरी पड़ोसनों और अपने घर में रहनेवाली मिसरी औरतों से चाँदी और सोने के ज़ेवरात और नफ़ीस कपड़े माँगकर अपने बच्चों को पहनाएँगी। यों मिसरियों को लूट लिया जाएगा।"

4 मूसा ने एतराज़ किया, "लेकिन इसराईली न मेरी बात का यक़ीन करेंगे, न मेरी सुनेंगे। वह तो कहेंगे, 'रब तुम पर ज़ाहिर नहीं हुआ'।" 2जवाब में रब ने मूसा से कहा, "तूने हाथ में क्या पकड़ा हुआ है?" मूसा ने कहा, "लाठी।" 3रब ने कहा, "उसे ज़मीन पर डाल दे।" मूसा ने ऐसा किया तो लाठी साँप बन गई, और मूसा डरकर भागा। 4रब ने कहा, "अब साँप की दुम को पकड़ ले।" मूसा ने ऐसा किया तो साँप फिर लाठी बन गया।

5रब ने कहा, "यह देखकर लोगों को यक़ीन आएगा कि रब जो उनके बापदादा का ख़ुदा, इब्राहीम का ख़ुदा, इसहाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का ख़ुदा है तुझ पर ज़ाहिर हुआ है। 6अब अपना हाथ अपने लिबास में डाल दे।" मूसा ने ऐसा किया। जब उसने अपना हाथ निकाला तो वह बर्फ़ की मानिंद सफ़ेद हो गया था। कोढ़ जैसी बीमारी लग गई थी। 7तब रब ने कहा, "अब अपना हाथ दुबारा अपने लिबास में डाल।" मूसा ने ऐसा किया। जब उसने अपना हाथ दुबारा निकाला तो वह फिर सेहतमंद था।

8रब ने कहा, "अगर लोगों को पहला मोजिज़ा देखकर यक़ीन न आए और वह तेरी न सुनें तो शायद उन्हें दूसरा मोजिज़ा देखकर यक़ीन आए। 9अगर उन्हें फिर भी यक़ीन न आए और वह तेरी न सुनें तो दरियाए-नील से कुछ पानी निकालकर उसे ख़ुश्क ज़मीन पर उंडेल दे। यह पानी ज़मीन पर गिरते ही ख़ून बन जाएगा।"

10लेकिन मूसा ने कहा, "मेरे आक़ा, मैं माज़रत चाहता हूँ, मैं अच्छी तरह बात नहीं कर सकता बल्कि मैं कभी भी यह लियाक़त नहीं रखता था। इस वक़्त भी जब मैं तुझसे बात कर रहा हूँ मेरी यही हालत है। मैं रुक रुककर बोलता हूँ।" 11रब ने कहा, "किसने इनसान का मुँह बनाया? कौन एक को गूँगा और दूसरे को बहरा बना देता है? कौन एक को देखने की क़ाबिलियत देता है और दूसरे को इससे महरूम रखता है? क्या मैं जो रब हूँ यह सब कुछ नहीं करता? 12अब जा! तेरे बोलते वक़्त मैं ख़ुद तेरे साथ हूँगा और तुझे वह कुछ सिखाऊँगा जो तुझे कहना है।"

13लेकिन मूसा ने इल्तिजा की, "मेरे आक़ा, मेहरबानी करके किसी और को भेज दे।"

14तब रब मूसा से सख़्त ख़फ़ा हुआ। उसने कहा, "क्या तेरा लावी भाई हारून ऐसे काम के लिए हाज़िर नहीं है? मैं जानता हूँ कि वह अच्छी तरह बोल सकता है। देख, वह तुझसे मिलने के लिए निकल चुका है। तुझे देखकर वह निहायत ख़ुश होगा। 15उसे वह कुछ बता जो उसे कहना है। तुम्हारे बोलते वक़्त मैं तेरे और उसके साथ हूँगा और तुम्हें वह कुछ सिखाऊँगा जो तुम्हें करना होगा। 16हारून तेरी जगह क़ौम से बात करेगा जबकि तू मेरी तरह उसे वह कुछ बताएगा जो उसे

कहना है। 17लेकिन यह लाठी भी साथ ले जाना,
क्योंकि इसी के ज़रीए तू यह मोजिज़े करेगा।”

मूसा मिसर को लौट जाता है

18फिर मूसा अपने सुसर यितरो के घर वापस
चला गया। उसने कहा, “मुझे ज़रा अपने अज़ीज़ों
के पास वापस जाने दें जो मिसर में हैं। मैं मालूम
करना चाहता हूँ कि वह अभी तक ज़िंदा हैं कि
नहीं।” यितरो ने जवाब दिया, “ठीक है, सलामती
से जाएँ।” 19मूसा अभी मिदियान में था कि रब ने
उससे कहा, “मिसर को वापस चला जा, क्योंकि
जो आदमी तुझे क़त्ल करना चाहते थे वह मर गए
हैं।” 20चुनाँचे मूसा अपनी बीवी और बेटों को गधे
पर सवार करके मिसर को लौटने लगा। अल्लाह
की लाठी उसके हाथ में थी।

21रब ने उससे यह भी कहा, “मिसर जाकर
फ़िरौन के सामने वह तमाम मोजिज़े दिखा
जिनका मैंने तुझे इख़्तियार दिया है। लेकिन मेरे
कहने पर वह अड़ा रहेगा। वह इसराईलियों को
जाने की इजाज़त नहीं देगा। 22उस वक़्त फ़िरौन
को बता देना, ‘रब फ़रमाता है कि इसराईल मेरा
पहलौठा है। 23मैं तुझे बता चुका हूँ कि मेरे बेटे
को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत करे। अगर तू
मेरे बेटे को जाने से मना करे तो मैं तेरे पहलौठे
को जान से मार दूँगा’।”

24एक दिन जब मूसा अपने ख़ानदान के साथ
रास्ते में किसी सराय में ठहरा हुआ था तो रब ने
उस पर हमला करके उसे मार देने की कोशिश
की। 25यह देखकर सफ़्फ़ूरा ने एक तेज़ पत्थर से
अपने बेटे का ख़तना किया और काटे हुए हिस्से
से मूसा के पैर छुए। उसने कहा, “यक़ीनन तुम
मेरे ख़ूनी दूल्हा हो।” 26तब अल्लाह ने मूसा को
छोड़ दिया। सफ़्फ़ूरा ने उसे ख़तने के बाइस ही
‘ख़ूनी दूल्हा’ कहा था।

27रब ने हारून से भी बात की, “रेगिस्तान
में मूसा से मिलने जा।” हारून चल पड़ा और
अल्लाह के पहाड़ के पास मूसा से मिला। उसने
उसे बोसा दिया। 28मूसा ने हारून को सब कुछ
सुना दिया जो रब ने उसे कहने के लिए भेजा था।
उसने उसे उन मोजिज़ों के बारे में भी बताया जो
उसे दिखाने थे।

29फिर दोनों मिलकर मिसर गए। वहाँ पहुँचकर
उन्होंने इसराईल के तमाम बुज़ुर्गों को जमा किया।
30हारून ने उन्हें वह तमाम बातें सुनाईं जो रब
ने मूसा को बताई थीं। उसने मज़कूरा मोजिज़े
भी लोगों के सामने दिखाए। 31फिर उन्हें यक़ीन
आया। और जब उन्होंने सुना कि रब को तुम्हारा
ख़याल है और वह तुम्हारी मुसीबत से आगाह है
तो उन्होंने रब को सिजदा किया।

मूसा और हारून फ़िरौन के दरबार में

5 फिर मूसा और हारून फ़िरौन के पास
गए। उन्होंने कहा, “रब इसराईल का ख़ुदा
फ़रमाता है, ‘मेरी क़ौम को रेगिस्तान में जाने
दे ताकि वह मेरे लिए ईद मनाएँ’।” 2फ़िरौन ने
जवाब दिया, “यह रब कौन है? मैं क्यों उसका
हुक्म मानकर इसराईलियों को जाने दूँ? न मैं रब
को जानता हूँ, न इसराईलियों को जाने दूँगा।”

3हारून और मूसा ने कहा, “इबरानियों का
ख़ुदा हम पर ज़ाहिर हुआ है। इसलिए मेहरबानी
करके हमें इजाज़त दें कि रेगिस्तान में तीन
दिन का सफ़र करके रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर
क़ुरबानियाँ पेश करें। कहीं वह हमें किसी बीमारी
या तलवार से न मारे।”

4लेकिन मिसर के बादशाह ने इनकार किया,
“मूसा और हारून, तुम लोगों को काम से क्यों
रोक रहे हो? जाओ, जो काम हमने तुमको दिया
है उस पर लग जाओ! 5इसराईली वैसे भी तादाद
में बहुत बढ़ गए हैं, और तुम उन्हें काम करने से
रोक रहे हो।”

जवाब में फ़िरौन का सख़्त दबाव

6उसी दिन फ़िरौन ने मिसरी निगरानों और
उनके तहत के इसराईली निगरानों को हुक्म दिया,
7“अब से इसराईलियों को ईंटें बनाने के लिए
भूसा मत देना, बल्कि वह ख़ुद जाकर भूसा जमा

करें। 8तो भी वह उतनी ही ईंटें बनाएँ जितनी पहले बनाते थे। वह सुस्त हो गए हैं और इसी लिए चीख़ रहे हैं कि हमें जाने दें ताकि अपने ख़ुदा को क़ुरबानियाँ पेश करें। 9उनसे और ज़्यादा सख़्त काम कराओ, उन्हें काम में लगाए रखो। उनके पास इतना वक़्त ही न हो कि वह झूटी बातों पर ध्यान दें।”

10मिसरी निगरान और उनके तहत के इसराईली निगरानों ने लोगों के पास जाकर उनसे कहा, “फ़िरौन का हुक्म है कि तुम्हें भूसा न दिया जाए। 11इसलिए ख़ुद जाओ और भूसा ढूँडकर जमा करो। लेकिन ख़बरदार! उतनी ही ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाते थे।”

12यह सुनकर इसराईली भूसा जमा करने के लिए पूरे मुल्क में फैल गए। 13मिसरी निगरान यह कहकर उन पर दबाव डालते रहे कि उतनी ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाते थे। 14जो इसराईली निगरान उन्होंने मुक़र्रर किए थे उन्हें वह पीटते और कहते रहे, “तुमने कल और आज उतनी ईंटें क्यों नहीं बनवाईं जितनी पहले बनवाते थे?”

15फिर इसराईली निगरान फ़िरौन के पास गए। उन्होंने शिकायत करके कहा, “आप अपने ख़ादिमों के साथ ऐसा सुलूक क्यों कर रहे हैं? 16हमें भूसा नहीं दिया जा रहा और साथ साथ यह कहा गया है कि उतनी ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाते थे। नतीजे में हमें मारा-पीटा भी जा रहा है हालाँकि ऐसा करने में आपके अपने लोग ग़लती पर हैं।”

17फ़िरौन ने जवाब दिया, “तुम लोग सुस्त हो, तुम काम करना नहीं चाहते। इसलिए तुम यह जगह छोड़ना और रब को क़ुरबानियाँ पेश करना चाहते हो। 18अब जाओ, काम करो। तुम्हें भूसा नहीं दिया जाएगा, लेकिन ख़बरदार! उतनी ही ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाते थे।”

19जब इसराईली निगरानों को बताया गया कि ईंटों की मतलूबा तादाद कम न करो तो वह समझ गए कि हम फँस गए हैं। 20फ़िरौन के महल से निकलकर उनकी मुलाक़ात मूसा और हारून से हुई जो उनके इंतज़ार में थे। 21उन्होंने मूसा और हारून से कहा, “रब ख़ुद आपकी अदालत करे। क्योंकि आपके सबब से फ़िरौन और उसके मुलाज़िमों को हमसे घिन आती है। आपने उन्हें हमें मार देने का मौक़ा दे दिया है।”

मूसा की शिकायत और रब का जवाब

22यह सुनकर मूसा रब के पास वापस आया और कहा, “ऐ आक़ा, तूने इस क़ौम से ऐसा बुरा सुलूक क्यों किया? क्या तूने इसी मक़सद से मुझे यहाँ भेजा है? 23जब से मैंने फ़िरौन के पास जाकर उसे तेरी मरज़ी बताई है वह इसराईली क़ौम से बुरा सुलूक कर रहा है। और तूने अब तक उन्हें बचाने का कोई क़दम नहीं उठाया।”

6 रब ने जवाब दिया, “अब तू देखेगा कि मैं फ़िरौन के साथ क्या कुछ करता हूँ। मेरी अज़ीम क़ुदरत का तजरबा करके वह मेरे लोगों को जाने देगा बल्कि उन्हें जाने पर मजबूर करेगा।”

2अल्लाह ने मूसा से यह भी कहा, “मैं रब हूँ। 3मैं इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब पर ज़ाहिर हुआ। वह मेरे नाम अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़[a] से वाक़िफ़ हुए, लेकिन मैंने उन पर अपने नाम रब[b] का इनकिशाफ़ नहीं किया। 4मैंने उनसे अहद करके वादा किया कि उन्हें मुल्के-कनान दूँगा जिसमें वह अजनबी के तौर पर रहते थे। 5अब मैंने सुना है कि इसराईली किस तरह मिसरियों की ग़ुलामी में कराह रहे हैं, और मैंने अपना अहद याद किया है। 6चुनाँचे इसराईलियों को बताना, ‘मैं रब हूँ। मैं तुम्हें मिसरियों के जुए से आज़ाद करूँगा और उनकी ग़ुलामी से बचाऊँगा। मैं बड़ी क़ुदरत के साथ तुम्हें छुड़ाऊँगा और उनकी अदालत करूँगा। 7मैं तुम्हें अपनी क़ौम बनाऊँगा और तुम्हारा ख़ुदा हूँगा। तब तुम जान लोगे कि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ जिसने तुम्हें मिसरियों के

[a]इबरानी में एल-शदई।

[b]इबरानी में यहवे।

जुए से आज़ाद कर दिया है। 8मैं तुम्हें उस मुल्क
में ले जाऊँगा जिसका वादा मैंने क़सम खाकर
इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से किया है। वह
मुल्क तुम्हारी अपनी मिलकियत होगा। मैं रब
हूँ'।"
9मूसा ने यह सब कुछ इसराईलियों को बता
दिया, लेकिन उन्होंने उस की बात न मानी,
क्योंकि वह सख़्त काम के बाइस हिम्मत हार गए
थे। 10तब रब ने मूसा से कहा, 11"जा, मिसर
के बादशाह फ़िरौन को बता देना कि इसराईलियों
को अपने मुल्क से जाने दे।" 12लेकिन मूसा ने
एतराज़ किया, "इसराईली मेरी बात सुनना नहीं
चाहते तो फ़िरौन क्यों मेरी बात माने जबकि मैं
रुक रुककर बोलता हूँ?"
13लेकिन रब ने मूसा और हारून को हुक्म
दिया, "इसराईलियों और मिसर के बादशाह
फ़िरौन से बात करके इसराईलियों को मिसर से
निकालो।"

मूसा और हारून के आबा-ओ-अजदाद

14इसराईल के आबाई घरानों के सरबराह यह
थे : इसराईल के पहलौठे रूबिन के चार बेटे हनूक,
फ़ल्लू, हसरोन और करमी थे। इनसे रूबिन की
चार शाख़ें निकलीं।
15शमाऊन के पाँच बेटे यमुएल, यमीन, उहद,
यकीन, सुहर और साऊल थे। (साऊल कनानी
औरत का बच्चा था)। इनसे शमाऊन की पाँच
शाख़ें निकलीं।
16लावी के तीन बेटे जैरसोन, क़िहात और
मिरारी थे। (लावी 137 साल की उम्र में फ़ौत
हुआ)।
17जैरसोन के दो बेटे लिबनी और सिमई थे।
इनसे जैरसोन की दो शाख़ें निकलीं। 18क़िहात के
चार बेटे अमराम, इज़हार, हबरून और उज़्ज़ियेल
थे। (क़िहात 133 साल की उम्र में फ़ौत हुआ)।
19मिरारी के दो बेटे महली और मूशी थे। इन
सबसे लावी की मुख़्तलिफ़ शाख़ें निकलीं।
20अमराम ने अपनी फूफी यूकबिद से शादी
की। उनके दो बेटे हारून और मूसा पैदा हुए।
(अमराम 137 साल की उम्र में फ़ौत हुआ)।
21इज़हार के तीन बेटे क़ोरह, नफ़ज और ज़िकरी
थे। 22उज़्ज़ियेल के तीन बेटे मीसाएल, इल्सफ़न
और सितरी थे।
23हारून ने इलीसिबा से शादी की। (इलीसिबा
अम्मीनदाब की बेटी और नहसोन की बहन
थी)। उनके चार बेटे नदब, अबीहू, इलियज़र
और इतमर थे। 24क़ोरह के तीन बेटे अस्सीर,
इलक़ाना और अबियासफ़ थे। उनसे क़ोरहियों की
तीन शाख़ें निकलीं। 25हारून के बेटे इलियज़र ने
फ़ूतियेल की एक बेटी से शादी की। उनका एक
बेटा फ़ीनहास था।
यह सब लावी के आबाई घरानों के सरबराह
थे।
26रब ने अमराम के दो बेटों हारून और मूसा को
हुक्म दिया कि मेरी क़ौम को उसके ख़ानदानों की
तरतीब के मुताबिक़ मिसर से निकालो। 27इन्हीं
दो आदमियों ने मिसर के बादशाह फ़िरौन से बात
की कि इसराईलियों को मिसर से जाने दे।

रब दुबारा मूसा से हमकलाम होता है

28मिसर में रब ने मूसा से कहा, 29"मैं रब हूँ।
मिसर के बादशाह को वह सब कुछ बता देना जो
मैं तुझे बताता हूँ।" 30मूसा ने एतराज़ किया, "मैं
तो रुक रुककर बोलता हूँ। फ़िरौन किस तरह मेरी
बात मानेगा?"
7 लेकिन रब ने कहा, "देख, मेरे कहने पर
तू फ़िरौन के लिए अल्लाह की हैसियत
रखेगा और तेरा भाई हारून तेरा पैग़ंबर होगा।
2जो भी हुक्म मैं तुझे दूँगा उसे तू हारून को बता
दे। फिर वह सब कुछ फ़िरौन को बताए ताकि
वह इसराईलियों को अपने मुल्क से जाने दे।
3लेकिन मैं फ़िरौन को अड़ जाने दूँगा। अगरचे
मैं मिसर में बहुत-से निशानों और मोजिज़ों से
अपनी क़ुदरत का मुज़ाहरा करूँगा 4तो भी फ़िरौन
तुम्हारी नहीं सुनेगा। तब मिसरियों पर मेरा हाथ

भारी हो जाएगा, और मैं उनको सख़्त सज़ा देकर
अपनी क़ौम इसराईल को ख़ानदानों की तरतीब
के मुताबिक़ मिसर से निकाल लाऊँगा। 5जब
मैं मिसर के ख़िलाफ़ अपनी क़ुदरत का इज़हार
करके इसराईलियों को वहाँ से निकालूँगा तो
मिसरी जान लेंगे कि मैं रब हूँ।”
6मूसा और हारून ने सब कुछ वैसा ही किया
जैसा रब ने उन्हें हुक्म दिया। 7फ़िरौन से बात
करते वक़्त मूसा 80 साल का और हारून 83
साल का था।

मूसा की लाठी साँप बन जाती है

8रब ने मूसा और हारून से कहा, 9“जब फ़िरौन
तुम्हें मोजिज़ा दिखाने को कहेगा तो मूसा हारून
से कहे कि अपनी लाठी ज़मीन पर डाल दे। इस
पर वह साँप बन जाएगी।”
10मूसा और हारून ने फ़िरौन के पास जाकर
ऐसा ही किया। हारून ने अपनी लाठी फ़िरौन और
उसके ओहदेदारों के सामने डाल दी तो वह साँप
बन गई। 11यह देखकर फ़िरौन ने अपने आलिमों
और जादूगरों को बुलाया। जादूगरों ने भी अपने
जादू से ऐसा ही किया। 12हर एक ने अपनी लाठी
ज़मीन पर फेंकी तो वह साँप बन गई। लेकिन
हारून की लाठी ने उनकी लाठियों को निगल
लिया।
13ताहम फ़िरौन इससे मुतअस्सिर न हुआ।
उसने मूसा और हारून की बात सुनने से इनकार
किया। वैसा ही हुआ जैसा रब ने कहा था।

पानी ख़ून में बदल जाता है

14फिर रब ने मूसा से कहा, “फ़िरौन अड़ गया
है। वह मेरी क़ौम को मिसर छोड़ने से रोकता
है। 15कल सुबह-सवेरे जब वह दरियाए-नील पर
आएगा तो उससे मिलने के लिए दरिया के किनारे
पर खड़े हो जाना। उस लाठी को थामे रखना
जो साँप बन गई थी। 16जब वह वहाँ पहुँचे तो
उससे कहना, ‘रब इबरानियों के ख़ुदा ने मुझे
आपको यह बताने के लिए भेजा है कि मेरी क़ौम
को मेरी इबादत करने के लिए रेगिस्तान में जाने
दे। लेकिन आपने अभी तक उस की नहीं सुनी।
17चुनाँचे अब आप जान लेंगे कि वह रब है। मैं इस
लाठी को जो मेरे हाथ में है लेकर दरियाए-नील के
पानी को मारूँगा। फिर वह ख़ून में बदल जाएगा।
18दरियाए-नील की मछलियाँ मर जाएँगी, दरिया
से बदबू उठेगी और मिसरी दरिया का पानी नहीं
पी सकेंगे’।”
19रब ने मूसा से कहा, “हारून को बता देना
कि वह अपनी लाठी लेकर अपना हाथ उन तमाम
जगहों की तरफ़ बढ़ाए जहाँ पानी जमा होता
है। तब मिसर की तमाम नदियों, नहरों, जोहड़ों
और तालाबों का पानी ख़ून में बदल जाएगा। पूरे
मुल्क में ख़ून ही ख़ून होगा, यहाँ तक कि लकड़ी
और पत्थर के बरतनों का पानी भी ख़ून में बदल
जाएगा।”
20चुनाँचे मूसा और हारून ने फ़िरौन और
उसके ओहदेदारों के सामने अपनी लाठी उठाकर
दरियाए-नील के पानी पर मारी। इस पर दरिया
का सारा पानी ख़ून में बदल गया। 21दरिया की
मछलियाँ मर गईं, और उससे इतनी बदबू उठने
लगी कि मिसरी उसका पानी न पी सके। मिसर
में चारों तरफ़ ख़ून ही ख़ून था।
22लेकिन जादूगरों ने भी अपने जादू के ज़रीए
ऐसा ही किया। इसलिए फ़िरौन अड़ गया और
मूसा और हारून की बात न मानी। वैसा ही हुआ
जैसा रब ने कहा था। 23फ़िरौन पलटकर अपने
घर वापस चला गया। उसे उस की परवा नहीं
थी जो मूसा और हारून ने किया था। 24लेकिन
मिसरी दरिया से पानी न पी सके, और उन्होंने
पीने का पानी हासिल करने के लिए दरिया के
किनारे किनारे गढ़े खोदे। 25पानी के बदल जाने
के बाद सात दिन गुज़र गए।

मेंढक

8 फिर रब ने मूसा से कहा, “फ़िरौन के
पास जाकर उसे बता देना कि रब फ़रमाता
है, ‘मेरी क़ौम को मेरी इबादत करने के लिए

जाने दे, 2वरना मैं पूरे मिसर को मेंढकों से सज़ा
दूँगा। 3दरियाए-नील मेंढकों से इतना भर जाएगा
कि वह दरिया से निकलकर तेरे महल, तेरे सोने
के कमरे और तेरे बिस्तर में जा घुसेंगे। वह तेरे
ओहदेदारों और तेरी रिआया के घरों में आएँगे
बल्कि तेरे तनूरों और आटा गूँधने के बरतनों में
भी फुदकते फिरेंगे। 4मेंढक तुझ पर, तेरी क़ौम
पर और तेरे ओहदेदारों पर चढ़ जाएंगे'।"

5रब ने मूसा से कहा, "हारून को बता देना कि
वह अपनी लाठी को हाथ में लेकर उसे दरियाओं,
नहरों और जोहड़ों के ऊपर उठाए ताकि मेंढक
बाहर निकलकर मिसर के मुल्क में फैल जाएँ।"
6हारून ने मुल्के-मिसर के पानी के ऊपर अपनी
लाठी उठाई तो मेंढकों के ग़ोल पानी से निकलकर
पूरे मुल्क पर छा गए। 7लेकिन जादूगरों ने भी
अपने जादू से ऐसा ही किया। वह भी दरिया से
मेंढक निकाल लाए।

8फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलाकर कहा,
"रब से दुआ करो कि वह मुझसे और मेरी क़ौम से
मेंढकों को दूर करे। फिर मैं तुम्हारी क़ौम को जाने
दूँगा ताकि वह रब को क़ुरबानियाँ पेश करें।"

9मूसा ने जवाब दिया, "वह वक़्त मुक़र्रर करें
जब मैं आपके ओहदेदारों और आपकी क़ौम के
लिए दुआ करूँ। फिर जो मेंढक आपके पास और
आपके घरों में हैं उसी वक़्त ख़त्म हो जाएंगे।
मेंढक सिर्फ़ दरिया में पाए जाएंगे।"

10फ़िरौन ने कहा, "ठीक है, कल उन्हें ख़त्म
करो।" मूसा ने कहा, "जैसा आप कहते हैं वैसा
ही होगा। इस तरह आपको मालूम होगा कि हमारे
ख़ुदा की मानिंद कोई नहीं है। 11मेंढक आप,
आपके घरों, आपके ओहदेदारों और आपकी
क़ौम को छोड़कर सिर्फ़ दरिया में रह जाएंगे।"

12मूसा और हारून फ़िरौन के पास से चले गए,
और मूसा ने रब से मिन्नत की कि वह मेंढकों के
वह ग़ोल दूर करे जो उसने फ़िरौन के ख़िलाफ़
भेजे थे। 13रब ने उस की दुआ सुनी। घरों, सहनों
और खेतों में मेंढक मर गए। 14लोगों ने उन्हें जमा
करके उनके ढेर लगा दिए। उनकी बदबू पूरे मुल्क
में फैल गई।

15लेकिन जब फ़िरौन ने देखा कि मसला हल
हो गया है तो वह फिर अकड़ गया और उनकी न
सुनी। यों रब की बात दुरुस्त निकली।

जुएँ

16फिर रब ने मूसा से कहा, "हारून से कहना
कि वह अपनी लाठी से ज़मीन की गर्द को मारे।
जब वह ऐसा करेगा तो पूरे मिसर की गर्द जुओं
में बदल जाएगी।"

17उन्होंने ऐसा ही किया। हारून ने अपनी लाठी
से ज़मीन की गर्द को मारा तो पूरे मुल्क की
गर्द जुओं में बदल गई। उनके ग़ोल जानवरों और
आदमियों पर छा गए। 18जादूगरों ने भी अपने
जादू से ऐसा करने की कोशिश की, लेकिन वह
गर्द से जुएँ न बना सके। जुएँ आदमियों और
जानवरों पर छा गईं। 19जादूगरों ने फ़िरौन से
कहा, "अल्लाह की क़ुदरत ने यह किया है।"
लेकिन फ़िरौन ने उनकी न सुनी। यों रब की बात
दुरुस्त निकली।

काटनेवाली मक्खियाँ

20फिर रब ने मूसा से कहा, "जब फ़िरौन
सुबह-सवेरे दरिया पर जाए तो तू उसके रास्ते में
खड़ा हो जाना। उसे कहना कि रब फ़रमाता है,
'मेरी क़ौम को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत कर
सकें। 21वरना मैं तेरे और तेरे ओहदेदारों के पास,
तेरी क़ौम के पास और तेरे घरों में काटनेवाली
मक्खियाँ भेज दूँगा। मिसरियों के घर मक्खियों
से भर जाएंगे बल्कि जिस ज़मीन पर वह खड़े हैं
वह भी मक्खियों से ढाँकी जाएगी। 22लेकिन उस
वक़्त मैं अपनी क़ौम के साथ जो जुशन में रहती
है फ़रक़ सुलूक करूँगा। वहाँ एक भी काटनेवाली
मक्खी नहीं होगी। इस तरह तुझे पता लगेगा कि
इस मुल्क में मैं ही रब हूँ। 23मैं अपनी क़ौम
और तेरी क़ौम में इम्तियाज़ करूँगा। कल ही मेरी
क़ुदरत का इज़हार होगा'।"

24रब ने ऐसा ही किया। काटनेवाली मक्खियों
के ग़ोल फ़िरौन के महल, उसके ओहदेदारों के
घरों और पूरे मिसर में फैल गए। मुल्क का
सत्यानास हो गया।
25फिर फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलाकर
कहा, "चलो, इसी मुल्क में अपने ख़ुदा को
क़ुरबानियाँ पेश करो।" 26लेकिन मूसा ने कहा,
"यह मुनासिब नहीं है। जो क़ुरबानियाँ हम रब
अपने ख़ुदा को पेश करेंगे वह मिसरियों की नज़र
में घिनौनी हैं। अगर हम यहाँ ऐसा करें तो क्या
वह हमें संगसार नहीं करेंगे? 27इसलिए लाज़िम
है कि हम तीन दिन का सफ़र करके रेगिस्तान में
ही रब अपने ख़ुदा को क़ुरबानियाँ पेश करें जिस
तरह उसने हमें हुक्म भी दिया है।"
28फ़िरौन ने जवाब दिया, "ठीक है, मैं तुम्हें
जाने दूँगा ताकि तुम रेगिस्तान में रब अपने ख़ुदा
को क़ुरबानियाँ पेश करो। लेकिन तुम्हें ज़्यादा दूर
नहीं जाना है। और मेरे लिए भी दुआ करना।"
29मूसा ने कहा, "ठीक, मैं जाते ही रब से
दुआ करूँगा। कल ही मक्खियाँ फ़िरौन, उसके
ओहदेदारों और उस की क़ौम से दूर हो जाएँगी।
लेकिन हमें दुबारा फ़रेब न देना बल्कि हमें जाने
देना ताकि हम रब को क़ुरबानियाँ पेश कर सकें।"
30फिर मूसा फ़िरौन के पास से चला गया और
रब से दुआ की। 31रब ने मूसा की दुआ सुनी।
काटनेवाली मक्खियाँ फ़िरौन, उसके ओहदेदारों
और उस की क़ौम से दूर हो गईं। एक भी मक्खी
न रही। 32लेकिन फ़िरौन फिर अकड़ गया। उसने
इसराईलियों को जाने न दिया।

मवेशियों में वबा

9 फिर रब ने मूसा से कहा, "फ़िरौन के पास
जाकर उसे बता कि रब इबरानियों का ख़ुदा
फ़रमाता है, 'मेरी क़ौम को जाने दे ताकि वह
मेरी इबादत कर सकें।' 2अगर आप इनकार करें
और उन्हें रोकते रहें 3तो रब अपनी क़ुदरत का
इज़हार करके आपके मवेशियों में भयानक वबा
फैला देगा जो आपके घोड़ों, गधों, ऊँटों, गाय-
बैलों, भेड़-बकरियों और मेंढों में फैल जाएगी।
4लेकिन रब इसराईल और मिसर के मवेशियों
में इम्तियाज़ करेगा। इसराईलियों का एक भी
जानवर नहीं मरेगा। 5रब ने फ़ैसला कर लिया है
कि वह कल ही ऐसा करेगा।"
6अगले दिन रब ने ऐसा ही किया। मिसर के
तमाम मवेशी मर गए, लेकिन इसराईलियों का
एक भी जानवर न मरा। 7फ़िरौन ने कुछ लोगों
को उनके पास भेज दिया तो पता चला कि एक
भी जानवर नहीं मरा। ताहम फ़िरौन अड़ा रहा।
उसने इसराईलियों को जाने न दिया।

फोड़े-फुंसियाँ

8फिर रब ने मूसा और हारून से कहा, "अपनी
मुट्ठियाँ किसी भट्टी की राख से भरकर फ़िरौन के
पास जाओ। फिर मूसा फ़िरौन के सामने यह राख
हवा में उड़ा दे। 9यह राख बारीक धूल का बादल
बन जाएगी जो पूरे मुल्क पर छा जाएगा। उसके
असर से लोगों और जानवरों के जिस्मों पर फोड़े-
फुंसियाँ फूट निकलेंगे।"
10मूसा और हारून ने ऐसा ही किया। वह किसी
भट्टी से राख लेकर फ़िरौन के सामने खड़े हो गए।
मूसा ने राख को हवा में उड़ा दिया तो इनसानों
और जानवरों के जिस्मों पर फोड़े-फुंसियाँ निकल
आए। 11इस मरतबा जादूगर मूसा के सामने खड़े
भी न हो सके क्योंकि उनके जिस्मों पर भी फोड़े
निकल आए थे। तमाम मिसरियों का यही हाल
था। 12लेकिन रब ने फ़िरौन को ज़िद्दी बनाए रखा,
इसलिए उसने मूसा और हारून की न सुनी। यों
वैसा ही हुआ जैसा रब ने मूसा को बताया था।

ओले

13इसके बाद रब ने मूसा से कहा, "सुबह-सवेरे
उठ और फ़िरौन के सामने खड़े होकर उसे बता कि
रब इबरानियों का ख़ुदा फ़रमाता है, 'मेरी क़ौम को
जाने दे ताकि वह मेरी इबादत कर सकें। 14वरना
मैं अपनी तमाम आफ़तें तुझ पर, तेरे ओहदेदारों
पर और तेरी क़ौम पर आने दूँगा। फिर तू जान

लेगा कि तमाम दुनिया में मुझ जैसा कोई नहीं है। 15अगर मैं चाहता तो अपनी क़ुदरत से ऐसी वबा फैला सकता कि तुझे और तेरी क़ौम को दुनिया से मिटा दिया जाता। 16लेकिन मैंने तुझे इसलिए बरपा किया है कि तुझ पर अपनी क़ुदरत का इज़हार करूँ और यों तमाम दुनिया में मेरे नाम का प्रचार किया जाए। 17तू अभी तक अपने आपको सरफ़राज़ करके मेरी क़ौम के ख़िलाफ़ है और उन्हें जाने नहीं देता। 18इसलिए कल मैं इसी वक़्त भयानक क़िस्म के ओलों का तूफ़ान भेज दूँगा। मिसरी क़ौम की इब्तिदा से लेकर आज तक मिसर में ओलों का ऐसा तूफ़ान कभी नहीं आया होगा। 19अपने बंदों को अभी भेजना ताकि वह तेरे मवेशियों को और खेतों में पड़े तेरे माल को लाकर महफ़ूज़ कर लें। क्योंकि जो भी खुले मैदान में रहेगा वह ओलों से मर जाएगा, ख़ाह इनसान हो या हैवान'।"

20फ़िरौन के कुछ ओहदेदार रब का पैग़ाम सुनकर डर गए और भागकर अपने जानवरों और ग़ुलामों को घरों में ले आए। 21लेकिन दूसरों ने रब के पैग़ाम की परवा न की। उनके जानवर और ग़ुलाम बाहर खुले मैदान में रहे।

22रब ने मूसा से कहा, "अपना हाथ आसमान की तरफ़ बढ़ा दे। फिर मिसर के तमाम इनसानों, जानवरों और खेतों के पौदों पर ओले पड़ेंगे।" 23मूसा ने अपनी लाठी आसमान की तरफ़ उठाई तो रब ने एक ज़बरदस्त तूफ़ान भेज दिया। ओले पड़े, बिजली गिरी और बादल गरजते रहे। 24ओले पड़ते रहे और बिजली चमकती रही। मिसरी क़ौम की इब्तिदा से लेकर अब तक ऐसे ख़तरनाक ओले कभी नहीं पड़े थे। 25इनसानों से लेकर हैवानों तक खेतों में सब कुछ बरबाद हो गया। ओलों ने खेतों में तमाम पौदे और दरख़्त भी तोड़ दिए। 26वह सिर्फ़ जुशन के इलाक़े में न पड़े जहाँ इसराईली आबाद थे।

27तब फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलाया। उसने कहा, "इस मरतबा मैंने गुनाह किया है। रब हक़ पर है। मुझसे और मेरी क़ौम से ग़लती हुई है। 28ओले और अल्लाह की गरजती आवाज़ें हद से ज़्यादा हैं। रब से दुआ करो ताकि ओले रुक जाएँ। अब मैं तुम्हें जाने दूँगा। अब से तुम्हें यहाँ रहना नहीं पड़ेगा।"

29मूसा ने फ़िरौन से कहा, "मैं शहर से निकलकर दोनों हाथ रब की तरफ़ उठाकर दुआ करूँगा। फिर गरज और ओले रुक जाएंगे और आप जान लेंगे कि पूरी दुनिया रब की है। 30लेकिन मैं जानता हूँ कि आप और आपके ओहदेदार अभी तक रब ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं मानते।"

31उस वक़्त सन के फूल निकल चुके थे और जौ की बालें लग गई थीं। इसलिए यह फ़सलें तबाह हो गईं। 32लेकिन गेहूँ और एक और क़िस्म की गंदुम जो बाद में पकती है बरबाद न हुई।

33मूसा फ़िरौन को छोड़कर शहर से निकला। उसने रब की तरफ़ अपने हाथ उठाए तो गरज, ओले और बारिश का तूफ़ान रुक गया। 34जब फ़िरौन ने देखा कि तूफ़ान ख़त्म हो गया है तो वह और उसके ओहदेदार दुबारा गुनाह करके अकड़ गए। 35फ़िरौन अड़ा रहा और इसराईलियों को जाने न दिया। वैसा ही हुआ जैसा रब ने मूसा से कहा था।

टिड्डियाँ

10 फिर रब ने मूसा से कहा, "फ़िरौन के पास जा, क्योंकि मैंने उसका और उसके दरबारियों का दिल सख़्त कर दिया है ताकि उनके दरमियान अपने मोजिज़ों और अपनी क़ुदरत का इज़हार कर सकूँ 2और तुम अपने बेटे-बेटियों और पोते-पोतियों को सुना सको कि मैंने मिसरियों के साथ क्या सुलूक किया है और उनके दरमियान किस तरह के मोजिज़े करके अपनी क़ुदरत का इज़हार किया है। यों तुम जान लोगे कि मैं रब हूँ।"

3मूसा और हारून फ़िरौन के पास गए। उन्होंने उससे कहा, "रब इबरानियों के ख़ुदा का फ़रमान है, 'तू कब तक मेरे सामने हथियार डालने से

इनकार करेगा? मेरी क़ौम को मेरी इबादत करने
के लिए जाने दे, 4वरना मैं कल तेरे मुल्क में
टिड्डियाँ लाऊँगा। 5उनके ग़ोल ज़मीन पर यों छा
जाएंगे कि ज़मीन नज़र ही नहीं आएगी। जो
कुछ ओलों ने तबाह नहीं किया उसे वह चट कर
जाएँगी। बचे हुए दरख़्तों के पत्ते भी ख़त्म हो
जाएंगे। 6तेरे महल, तेरे ओहदेदारों और बाक़ी
लोगों के घर उनसे भर जाएंगे। जब से मिसरी
इस मुल्क में आबाद हुए हैं तुमने कभी टिड्डियों का
ऐसा सख़्त हमला नहीं देखा होगा'।" यह कहकर
मूसा पलटकर वहाँ से चला गया।

7इस पर दरबारियों ने फ़िरौन से बात की,
"हम कब तक इस मर्द के जाल में फँसे रहें?
इसराईलियों को रब अपने ख़ुदा की इबादत करने
के लिए जाने दें। क्या आपको अभी तक मालूम
नहीं कि मिसर बरबाद हो गया है?"

8तब मूसा और हारून को फ़िरौन के पास
बुलाया गया। उसने उनसे कहा, "जाओ, अपने
ख़ुदा की इबादत करो। लेकिन यह बताओ कि
कौन कौन साथ जाएगा?" 9मूसा ने जवाब
दिया, "हमारे जवान और बूढ़े साथ जाएंगे। हम
अपने बेटे-बेटियों, भेड़-बकरियों और गाय-बैलों
को भी साथ लेकर जाएंगे। हम सबके सब जाएंगे,
क्योंकि हमें रब की ईद मनानी है।"

10फ़िरौन ने तंज़न कहा, "ठीक है, जाओ
और रब तुम्हारे साथ हो। नहीं, मैं किस तरह
तुम सबको बाल-बच्चों समेत जाने दे सकता हूँ?
तुमने कोई बुरा मनसूबा बनाया है। 11नहीं, सिर्फ़
मर्द जाकर रब की इबादत कर सकते हैं। तुमने तो
यही दरख़ास्त की थी।" तब मूसा और हारून को
फ़िरौन के सामने से निकाल दिया गया।

12फिर रब ने मूसा से कहा, "मिसर पर
अपना हाथ उठा ताकि टिड्डियाँ आकर मिसर की
सरज़मीन पर फैल जाएँ। जो कुछ भी खेतों में
ओलों से बच गया है उसे वह खा जाएँगी।"

13मूसा ने अपनी लाठी मिसर पर उठाई तो
रब ने मशरिक़ से आँधी चलाई जो सारा दिन
और सारी रात चलती रही और अगली सुबह तक
मिसर में टिड्डियाँ पहुँचाईं। 14बेशुमार टिड्डियाँ पूरे
मुल्क पर हमला करके हर जगह बैठ गईं। इससे
पहले या बाद में कभी भी टिड्डियों का इतना सख़्त
हमला न हुआ था। 15उन्होंने ज़मीन को यों ढाँक
लिया कि वह काली नज़र आने लगी। जो कुछ
भी ओलों से बच गया था चाहे खेतों के पौदे या
दरख़्तों के फल थे उन्होंने खा लिया। मिसर में एक
भी दरख़्त या पौदा न रहा जिसके पत्ते बच गए हों।

16तब फ़िरौन ने मूसा और हारून को जल्दी से
बुलवाया। उसने कहा, "मैंने तुम्हारे ख़ुदा का और
तुम्हारा गुनाह किया है। 17अब एक और मरतबा
मेरा गुनाह मुआफ़ करो और रब अपने ख़ुदा से
दुआ करो ताकि मौत की यह हालत मुझसे दूर हो
जाए।"

18मूसा ने महल से निकलकर रब से दुआ की।
19जवाब में रब ने हवा का रुख़ बदल दिया। उसने
मग़रिब से तेज़ आँधी चलाई जिसने टिड्डियों को
उड़ाकर बहरे-क़ुलज़ुम में डाल दिया। मिसर में
एक भी टिड्डी न रही। 20लेकिन रब ने होने दिया
कि फ़िरौन फिर अड़ गया। उसने इसराईलियों को
जाने न दिया।

अंधेरा

21इसके बाद रब ने मूसा से कहा, "अपना
हाथ आसमान की तरफ़ उठा तो मिसर पर अंधेरा
छा जाएगा। इतना अंधेरा होगा कि बंदा उसे छू
सकेगा।" 22मूसा ने अपना हाथ आसमान की
तरफ़ उठाया तो तीन दिन तक मिसर पर गहरा
अंधेरा छाया रहा। 23तीन दिन तक लोग न एक
दूसरे को देख सके, न कहीं जा सके। लेकिन जहाँ
इसराईली रहते थे वहाँ रौशनी थी।

24तब फ़िरौन ने मूसा को फिर बुलवाया और
कहा, "जाओ, रब की इबादत करो! तुम अपने
साथ बाल-बच्चों को भी ले जा सकते हो। सिर्फ़
अपनी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल पीछे छोड़
देना।" 25मूसा ने जवाब दिया, "क्या आप ही
हमें क़ुरबानियों के लिए जानवर देंगे ताकि उन्हें
रब अपने ख़ुदा को पेश करें? 26यक़ीनन नहीं।

इसलिए लाज़िम है कि हम अपने जानवरों को साथ लेकर जाएँ। एक खुर भी पीछे नहीं छोड़ा जाएगा, क्योंकि अभी तक हमें मालूम नहीं कि रब की इबादत के लिए किन किन जानवरों की ज़रूरत होगी। यह उस वक़्त ही पता चलेगा जब हम मनज़िले-मक़सूद पर पहुँचेंगे। इसलिए ज़रूरी है कि हम सबको अपने साथ लेकर जाएँ।"

27लेकिन रब की मरज़ी के मुताबिक़ फ़िरौन अड़ गया। उसने उन्हें जाने न दिया। 28उसने मूसा से कहा, "दफ़ा हो जा। ख़बरदार! फिर कभी अपनी शक्ल न दिखाना, वरना तुझे मौत के हवाले कर दिया जाएगा।" 29मूसा ने कहा, "ठीक है, आपकी मरज़ी। मैं फिर कभी आपके सामने नहीं आऊँगा।"

आख़िरी सज़ा का एलान

11 तब रब ने मूसा से कहा, "अब मैं फ़िरौन और मिसर पर आख़िरी आफ़त लाने को हूँ। इसके बाद वह तुम्हें जाने देगा बल्कि तुम्हें ज़बरदस्ती निकाल देगा। 2इसराईलियों को बता देना कि हर मर्द अपने पड़ोसी और हर औरत अपनी पड़ोसन से सोने-चाँदी की चीज़ें माँग ले।" 3(रब ने मिसरियों के दिल इसराईलियों की तरफ़ मायल कर दिए थे। वह फ़िरौन के ओहदेदारों समेत ख़ासकर मूसा की बड़ी इज़्ज़त करते थे)।

4मूसा ने कहा, "रब फ़रमाता है, 'आज आधी रात के वक़्त मैं मिसर में से गु-ज़रूँगा। 5तब बादशाह के पहलौठे से लेकर चक्की पीसनेवाली नौकरानी के पहलौठे तक मिसरियों का हर पहलौठा मर जाएगा। चौपाइयों के पहलौठे भी मर जाएंगे। 6मिसर की सरज़मीन पर ऐसा रोना पीटना होगा कि न माज़ी में कभी हुआ, न मुस्तक़बिल में कभी होगा। 7लेकिन इसराईली और उनके जानवर बचे रहेंगे। कुत्ता भी उन पर नहीं भौंकेगा। इस तरह तुम जान लोगे कि रब इसराईलियों की निसबत मिसरियों से फ़रक़ सुलूक करता है'।" 8मूसा ने यह कुछ फ़िरौन को बताया फिर कहा, "उस वक़्त आपके तमाम ओहदेदार आकर मेरे सामने झुक जाएंगे और मिन्नत करेंगे, 'अपने पैरोकारों के साथ चले जाएँ।' तब मैं चला ही जाऊँगा।" यह कहकर मूसा फ़िरौन के पास से चला गया। वह बड़े ग़ुस्से में था।

9रब ने मूसा से कहा था, "फ़िरौन तुम्हारी नहीं सुनेगा। क्योंकि लाज़िम है कि मैं मिसर में अपनी क़ुदरत का मज़ीद इज़हार करूँ।" 10गो मूसा और हारून ने फ़िरौन के सामने यह तमाम मोजिज़े दिखाए, लेकिन रब ने फ़िरौन को ज़िद्दी बनाए रखा, इसलिए उसने इसराईलियों को मुल्क छोड़ने न दिया।

फ़सह की ईद

12 फिर रब ने मिसर में मूसा और हारून से कहा, 2"अब से यह महीना तुम्हारे लिए साल का पहला महीना हो।" 3इसराईल की पूरी जमात को बताना कि इस महीने के दसवें दिन हर ख़ानदान का सरपरस्त अपने घराने के लिए लेला यानी भेड़ या बकरी का बच्चा हासिल करे। 4अगर घराने के अफ़राद पूरा जानवर खाने के लिए कम हों तो वह अपने सबसे क़रीबी पड़ोसी के साथ मिलकर लेला हासिल करें। इतने लोग उसमें से खाएँ कि सबके लिए काफ़ी हो और पूरा जानवर खाया जाए। 5इसके लिए एक साल का नर बच्चा चुन लेना जिसमें नुक़्स न हो। वह भेड़ या बकरी का बच्चा हो सकता है।

6महीने के 14वें दिन तक उस की देख-भाल करो। उस दिन तमाम इसराईली सूरज के ग़ुरूब होते वक़्त अपने लेले ज़बह करें। 7हर ख़ानदान अपने जानवर का कुछ ख़ून जमा करके उसे उस घर के दरवाज़े की चौखट पर लगाए जहाँ लेला खाया जाएगा। यह ख़ून चौखट के ऊपरवाले हिस्से और 1दाएँ-बाएँ के बाज़ुओं पर लगाया जाए। 8लाज़िम है कि लोग जानवर को भूनकर उसी रात खाएँ। साथ ही वह कड़वा साग-पात और बेख़मीरी रोटियाँ भी खाएँ। 9लेले का गोश्त

कच्चा न खाना, न उसे पानी में उबालना बल्कि पूरे जानवर को सर, पैरों और अंदरूनी हिस्सों समेत आग पर भूनना। 10लाज़िम है कि पूरा गोश्त उसी रात खाया जाए। अगर कुछ सुबह तक बच जाए तो उसे जलाना है। 11खाना खाते वक़्त ऐसा लिबास पहनना जैसे तुम सफ़र पर जा रहे हो। अपने जूते पहने रखना और हाथ में सफ़र के लिए लाठी लिए हुए तुम उसे जल्दी जल्दी खाना। रब के फ़सह की ईद यों मनाना।

12मैं आज रात मिसर में से गुज़रूँगा और हर पहलौठे को जान से मार दूँगा, ख़ाह इनसान का हो या हैवान का। यों मैं जो रब हूँ मिसर के तमाम देवताओं की अदालत करूँगा। 13लेकिन तुम्हारे घरों पर लगा हुआ ख़ून तुम्हारा ख़ास निशान होगा। जिस जिस घर के दरवाज़े पर मैं वह ख़ून देखूँगा उसे छोड़ता जाऊँगा। जब मैं मिसर पर हमला करूँगा तो मोहलक वबा तुम तक नहीं पहुँचेगी। 14आज की रात को हमेशा याद रखना। इसे नसल-दर-नसल और हर साल रब की ख़ास ईद के तौर पर मनाना।

बेख़मीरी रोटी की ईद

15सात दिन तक बेख़मीरी रोटी खाना है। पहले दिन अपने घरों से तमाम ख़मीर निकाल देना। अगर कोई इन सात दिनों के दौरान ख़मीर खाए तो उसे क़ौम में से मिटाया जाए। 16इस ईद के पहले और आख़िरी दिन मुक़द्दस इजतिमा मुनअक़िद करना। इन तमाम दिनों के दौरान काम न करना। सिर्फ़ एक काम की इजाज़त है और वह है अपना खाना तैयार करना। 17बेख़मीरी रोटी की ईद मनाना लाज़िम है, क्योंकि उस दिन मैं तुम्हारे मुतअद्दिद ख़ानदानों को मिसर से निकाल लाया। इसलिए यह दिन नसल-दर-नसल हर साल याद रखना। 18पहले महीने के 14वें दिन की शाम से लेकर 21वें दिन की शाम तक सिर्फ़ बेख़मीरी रोटी खाना। 19सात दिन तक तुम्हारे घरों में ख़मीर न पाया जाए। जो भी इस दौरान ख़मीर खाए उसे इसराईल की जमात में से मिटाया जाए, ख़ाह वह इसराईली शहरी हो या अजनबी। 20ग़रज़, इस ईद के दौरान ख़मीर न खाना। जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ बेख़मीरी रोटी ही खाना है।

पहलौठों की हलाकत

21फिर मूसा ने तमाम इसराईली बुज़ुर्गों को बुलाकर उनसे कहा, “जाओ, अपने ख़ानदानों के लिए भेड़ या बकरी के बच्चे चुनकर उन्हें फ़सह की ईद के लिए ज़बह करो। 22ज़ूफ़े का गुच्छा लेकर उसे ख़ून से भरे हुए बासन में डुबो देना। फिर उसे लेकर ख़ून को चौखट के ऊपरवाले हिस्से और दाएँ-बाएँ के बाज़ुओं पर लगा देना। सुबह तक कोई अपने घर से न निकले। 23जब रब मिसरियों को मार डालने के लिए मुल्क में से गुज़रेगा तो वह चौखट के ऊपरवाले हिस्से और दाएँ-बाएँ के बाज़ुओं पर लगा हुआ ख़ून देखकर उन घरों को छोड़ देगा। वह हलाक करनेवाले फ़रिश्ते को इजाज़त नहीं देगा कि वह तुम्हारे घरों में जाकर तुम्हें हलाक करे।

24तुम अपनी औलाद समेत हमेशा इन हिदायात पर अमल करना। 25यह रस्म उस वक़्त भी अदा करना जब तुम उस मुल्क में पहुँचोगे जो रब तुम्हें देगा। 26और जब तुम्हारे बच्चे तुमसे पूछें कि हम यह ईद क्यों मनाते हैं 27तो उनसे कहो, ‘यह फ़सह की क़ुरबानी है जो हम रब को पेश करते हैं। क्योंकि जब रब मिसरियों को हलाक कर रहा था तो उसने हमारे घरों को छोड़ दिया था’।”

यह सुनकर इसराईलियों ने अल्लाह को सिजदा किया। 28फिर उन्होंने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा और हारून को बताया था।

29आधी रात को रब ने बादशाह के पहलौठे से लेकर जेल के क़ैदी के पहलौठे तक मिसरियों के तमाम पहलौठों को जान से मार दिया। चौपाइयों के पहलौठे भी मर गए। 30उस रात मिसर के हर घर में कोई न कोई मर गया। फ़िरौन, उसके ओहदेदार और मिसर के तमाम लोग जाग उठे और ज़ोर ज़ोर से रोने और चीख़ने लगे।

इसराईलियों की हिजरत

31अभी रात थी कि फ़िरौन ने मूसा और
हारून को बुलाकर कहा, “अब तुम और बाक़ी
इसराईली मेरी क़ौम में से निकल जाओ। अपनी
दरख़ास्त के मुताबिक़ रब की इबादत करो।
32जिस तरह तुम चाहते हो अपनी भेड़-बकरियों
को भी अपने साथ ले जाओ। और मुझे भी बरकत
देना।” 33बाक़ी मिसरियों ने भी इसराईलियों पर
ज़ोर देकर कहा, “जल्दी जल्दी मुल्क से निकल
जाओ, वरना हम सब मर जाएंगे।”

34इसराईलियों के गूँधे हुए आटे में ख़मीर नहीं
था। उन्होंने उसे गूँधने के बरतनों में रखकर अपने
कपड़ों में लपेट लिया और सफ़र करते वक़्त
अपने कंधों पर रख लिया। 35इसराईली मूसा की
हिदायत पर अमल करके अपने मिसरी पड़ोसियों
के पास गए और उनसे कपड़े और सोने-चाँदी
की चीज़ें माँगीं। 36रब ने मिसरियों के दिलों
को इसराईलियों की तरफ़ मायल कर दिया था,
इसलिए उन्होंने उनकी हर दरख़ास्त पूरी की। यों
इसराईलियों ने मिसरियों को लूट लिया।

37इसराईली रामसीस से रवाना होकर
सुक्कात पहुँच गए। औरतों और बच्चों को
छोड़कर उनके 6 लाख मर्द थे। 38वह अपने
भेड़-बकरियों और गाय-बैलों के बड़े बड़े रेवड़ भी
साथ ले गए। बहुत-से ऐसे लोग भी उनके साथ
निकले जो इसराईली नहीं थे। 39रास्ते में उन्होंने
उस बेख़मीरी आटे से रोटियाँ बनाईं जो वह साथ
लेकर निकले थे। आटे में इसलिए ख़मीर नहीं था
कि उन्हें इतनी जल्दी से मिसर से निकाल दिया
गया था कि खाना तैयार करने का वक़्त ही न
मिला था।

40इसराईली 430 साल तक मिसर में रहे थे।
41430 साल के ऐन बाद, उसी दिन रब के यह
तमाम ख़ानदान मिसर से निकले। 42उस ख़ास
रात रब ने ख़ुद पहरा दिया ताकि इसराईली मिसर
से निकल सकें। इसलिए तमाम इसराईलियों के
लिए लाज़िम है कि वह नसल-दर-नसल इस रात
रब की ताज़ीम में जागते रहें, वह भी और उनके
बाद की औलाद भी।

फ़सह की ईद की हिदायात

43रब ने मूसा और हारून से कहा, “फ़सह की
ईद के यह उसूल हैं :

किसी भी परदेसी को फ़सह की ईद का खाना
खाने की इजाज़त नहीं है। 44अगर तुमने किसी
ग़ुलाम को ख़रीदकर उसका ख़तना किया है तो
वह फ़सह का खाना खा सकता है। 45लेकिन
ग़ैरशहरी या मज़दूर को फ़सह का खाना खाने
की इजाज़त नहीं है। 46यह खाना एक ही घर
के अंदर खाना है। न गोश्त घर से बाहर ले जाना,
न लेले की किसी हड्डी को तोड़ना। 47लाज़िम
है कि इसराईल की पूरी जमात यह ईद मनाए।
48अगर कोई परदेसी तुम्हारे साथ रहता है जो
फ़सह की ईद में शिरकत करना चाहे तो लाज़िम
है कि पहले उसके घराने के हर मर्द का ख़तना
किया जाए। तब वह इसराईली की तरह खाने में
शरीक हो सकता है। लेकिन जिसका ख़तना न
हुआ उसे फ़सह का खाना खाने की इजाज़त नहीं
है। 49यही उसूल हर एक पर लागू होगा, ख़ाह वह
इसराईली हो या परदेसी।”

50तमाम इसराईलियों ने वैसा ही किया जैसा
रब ने मूसा और हारून से कहा था। 51उसी दिन
रब तमाम इसराईलियों को ख़ानदानों की तरतीब
के मुताबिक़ मिसर से निकाल लाया।

यह ईद नजात की याद दिलाती है

13 रब ने मूसा से कहा, 2“इसराई-
लियों के हर पहलौठे को मेरे लिए
मख़सूसो-मुक़द्दस करना है। हर पहला नर बच्चा
मेरा ही है, ख़ाह इनसान का हो या हैवान का।”
3फिर मूसा ने लोगों से कहा, “इस दिन को याद
रखो जब तुम रब की अज़ीम क़ुदरत के बाइस
मिसर की ग़ुलामी से निकले। इस दिन कोई चीज़

[a]मार्च ता अप्रैल।

न खाना जिसमें ख़मीर हो। 4आज ही अबीब के महीने[a] में तुम मिसर से रवाना हो रहे हो। 5रब ने तुम्हारे बापदादा से क़सम खाकर वादा किया है कि वह तुमको कनानी, हित्ती, अमोरी, हिव्वी और यबूसी क़ौमों का मुल्क देगा, एक ऐसा मुल्क जिसमें दूध और शहद की कसरत है। जब रब तुम्हें उस मुल्क में पहुँचा देगा तो लाज़िम है कि तुम इसी महीने में यह रस्म मनाओ। 6सात दिन बेख़मीरी रोटी खाओ। सातवें दिन रब की ताज़ीम में ईद मनाओ। 7सात दिन ख़मीरी रोटी न खाना। कहीं भी ख़मीर न पाया जाए। पूरे मुल्क में ख़मीर का नामो-निशान तक न हो।

8उस दिन अपने बेटे से यह कहो, 'मैं यह ईद उस काम की ख़ुशी में मनाता हूँ जो रब ने मेरे लिए किया जब मैं मिसर से निकला।' 9यह ईद तुम्हारे हाथ या पेशानी पर निशान की मानिंद हो जो तुम्हें याद दिलाए कि रब की शरीअत को तुम्हारे होंटों पर रहना है। क्योंकि रब तुम्हें अपनी अज़ीम क़ुदरत से मिसर से निकाल लाया। 10इस दिन की याद हर साल ठीक वक़्त पर मनाना।

पहलौठों की मख़सूसियत

11रब तुम्हें कनानियों के उस मुल्क में ले जाएगा जिसका वादा उसने क़सम खाकर तुम और तुम्हारे बापदादा से किया है। 12लाज़िम है कि वहाँ पहुँचकर तुम अपने तमाम पहलौठों को रब के लिए मख़सूस करो। तुम्हारे मवेशियों के तमाम पहलौठे भी रब की मिलकियत हैं। 13अगर तुम अपना पहलौठा गधा ख़ुद रखना चाहो तो रब को उसके बदले भेड़ या बकरी का बच्चा पेश करो। लेकिन अगर तुम उसे रखना नहीं चाहते तो उस की गरदन तोड़ डालो। लेकिन इनसान के पहलौठों के लिए हर सूरत में एवज़ी देना है।

14आनेवाले दिनों में जब तुम्हारा बेटा पूछे कि इसका क्या मतलब है तो उसे जवाब देना, 'रब अपनी अज़ीम क़ुदरत से हमें मिसर की ग़ुलामी से निकाल लाया। 15जब फ़िरौन ने अकड़कर हमें जाने न दिया तो रब ने मिसर के तमाम इनसानों और हैवानों के पहलौठों को मार डाला। इस वजह से मैं अपने जानवरों का हर पहला बच्चा रब को क़ुरबान करता और अपने हर पहलौठे के लिए एवज़ी देता हूँ'। 16यह दस्तूर तुम्हारे हाथ और पेशानी पर निशान की मानिंद हो जो तुम्हें याद दिलाए कि रब हमें अपनी क़ुदरत से मिसर से निकाल लाया।"

मिसर से निकलने का रास्ता

17जब फ़िरौन ने इसराईली क़ौम को जाने दिया तो अल्लाह उन्हें फ़िलिस्तियों के इलाक़े में से गुज़रनेवाले रास्ते से लेकर न गया, अगरचे उस पर चलते हुए वह जल्द ही मुल्के-कनान पहुँच जाते। बल्कि रब ने कहा, "अगर उस रास्ते पर चलेंगे तो उन्हें दूसरों से लड़ना पड़ेगा। ऐसा न हो कि वह इस वजह से अपना इरादा बदलकर मिसर लौट जाएँ।" 18इसलिए अल्लाह उन्हें दूसरे रास्ते से लेकर गया, और वह रेगिस्तान के रास्ते से बहरे-क़ुलज़ुम की तरफ़ बढ़े। मिसर से निकलते वक़्त मर्द मुसल्लह थे। 19मूसा यूसुफ़ का ताबूत भी अपने साथ ले गया, क्योंकि यूसुफ़ ने इसराईलियों को क़सम दिलाकर कहा था, "अल्लाह यक़ीनन तुम्हारी देख-भाल करके वहाँ ले जाएगा। उस वक़्त मेरी हड्डियों को भी उठाकर साथ ले जाना।"

20इसराईलियों ने सुक्कात को छोड़कर एताम में अपने ख़ैमे लगाए। एताम रेगिस्तान के किनारे पर था। 21रब उनके आगे आगे चलता गया, दिन के वक़्त बादल के सतून में ताकि उन्हें रास्ते का पता लगे और रात के वक़्त आग के सतून में ताकि उन्हें रौशनी मिले। यों वह दिन और रात सफ़र कर सकते थे। 22दिन के वक़्त बादल का सतून और रात के वक़्त आग का सतून उनके सामने रहा। वह कभी भी अपनी जगह से न हटा।

इसराईल समुंदर में से गुज़रता है

14 तब रब ने मूसा से कहा, 2"इसराईलियों को कह देना कि वह

पीछे मुड़कर मिजदाल और समुंदर के बीच यानी फ़ी-हख़ीरोत के नज़दीक रुक जाएँ। वह बाल-सफ़ोन के मुक़ाबिल साहिल पर अपने ख़ैमे लगाएँ। 3यह देखकर फ़िरौन समझेगा कि इसराईली रास्ता भूलकर आवारा फिर रहे हैं और कि रेगिस्तान ने चारों तरफ़ उन्हें घेर रखा है। 4फिर मैं फ़िरौन को दुबारा अड़ जाने दूँगा, और वह इसराईलियों का पीछा करेगा। लेकिन मैं फ़िरौन और उस की पूरी फ़ौज पर अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा। मिसरी जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।" इसराईलियों ने ऐसा ही किया।

5जब मिसर के बादशाह को इत्तला दी गई कि इसराईली हिजरत कर गए हैं तो उसने और उसके दरबारियों ने अपना ख़याल बदलकर कहा, "हमने क्या किया है? हमने उन्हें जाने दिया है, और अब हम उनकी ख़िदमत से महरूम हो गए हैं।" 6चुनाँचे बादशाह ने अपना जंगी रथ तैयार करवाया और अपनी फ़ौज को लेकर निकला। 7वह 600 बेहतरीन क़िस्म के रथ और मिसर के बाक़ी तमाम रथों को साथ ले गया। तमाम रथों पर अफ़सरान मुक़र्रर थे। 8रब ने मिसर के बादशाह फ़िरौन को दुबारा अड़ जाने दिया था, इसलिए जब इसराईली बड़े इख़्तियार के साथ निकल रहे थे तो वह उनका ताक़्क़ुब करने लगा। 9इसराईलियों का पीछा करते करते फ़िरौन के तमाम घोड़े, रथ, सवार और फ़ौजी उनके क़रीब पहुँचे। इसराईली बहरे-क़ुलज़ुम के साहिल पर बाल-सफ़ोन के मुक़ाबिल फ़ी-हख़ीरोत के नज़दीक ख़ैमे लगा चुके थे।

10जब इसराईलियों ने फ़िरौन और उस की फ़ौज को अपनी तरफ़ बढ़ते देखा तो वह सख़्त घबरा गए और मदद के लिए रब के सामने चीख़ने-चिल्लाने लगे। 11उन्होंने मूसा से कहा, "क्या मिसर में क़ब्रों की कमी थी कि आप हमें रेगिस्तान में ले आए हैं? हमें मिसर से निकालकर आपने हमारे साथ क्या किया है? 12क्या हमने मिसर में आपसे दरख़ास्त नहीं की थी कि मेहरबानी करके हमें छोड़ दें, हमें मिसरियों की ख़िदमत करने दें? यहाँ आकर रेगिस्तान में मर जाने की निसबत बेहतर होता कि हम मिसरियों के ग़ुलाम रहते।"

13लेकिन मूसा ने जवाब दिया, "मत घबराओ। आराम से खड़े रहो और देखो कि रब तुम्हें आज किस तरह बचाएगा। आज के बाद तुम इन मिसरियों को फिर कभी नहीं देखोगे। 14रब तुम्हारे लिए लड़ेगा। तुम्हें बस, चुप रहना है।"

15फिर रब ने मूसा से कहा, "तू मेरे सामने क्यों चीख़ रहा है? इसराईलियों को आगे बढ़ने का हुक्म दे। 16अपनी लाठी को पकड़कर उसे समुंदर के ऊपर उठा तो वह दो हिस्सों में बट जाएगा। इसराईली ख़ुश्क ज़मीन पर समुंदर में से गुज़रेंगे। 17मैं मिसरियों को अड़े रहने दूँगा ताकि वह इसराईलियों का पीछा करें। फिर मैं फ़िरौन, उस की सारी फ़ौज, उसके रथों और उसके सवारों पर अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा। 18जब मैं फ़िरौन, उसके रथों और उसके सवारों पर अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा तो मिसरी जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।"

19अल्लाह का फ़रिश्ता इसराईली लशकर के आगे आगे चल रहा था। अब वह वहाँ से हटकर उनके पीछे खड़ा हो गया। बादल का सतून भी लोगों के आगे से हटकर उनके पीछे जा खड़ा हुआ। 20इस तरह बादल मिसरियों और इसराईलियों के लशकरों के दरमियान आ गया। पूरी रात मिसरियों की तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा था जबकि इसराईलियों की तरफ़ रौशनी थी। इसलिए मिसरी पूरी रात के दौरान इसराईलियों के क़रीब न आ सके।

21मूसा ने अपना हाथ समुंदर के ऊपर उठाया तो रब ने मशरिक़ से तेज़ आँधी चलाई। आँधी तमाम रात चलती रही। उसने समुंदर को पीछे हटाकर उस की तह ख़ुश्क कर दी। समुंदर दो हिस्सों में बट गया 22तो इसराईली समुंदर में से ख़ुश्क ज़मीन पर चलते हुए गुज़र गए। उनके दाईं और बाईं तरफ़ पानी दीवार की तरह खड़ा रहा।

23जब मिसरियों को पता चला तो फ़िरौन के तमाम घोड़े, रथ और घुड़सवार भी उनके पीछे

पीछे समुंदर में चले गए। 24सुबह-सवेरे ही रब ने बादल और आग के सतून से मिसर की फ़ौज पर निगाह की और उसमें अबतरी पैदा कर दी। 25उनके रथों के पहिये निकल गए तो उन पर क़ाबू पाना मुश्किल हो गया। मिसरियों ने कहा, “आओ, हम इसराईलियों से भाग जाएँ, क्योंकि रब उनके साथ है। वही मिसर का मुक़ाबला कर रहा है।”

26तब रब ने मूसा से कहा, “अपना हाथ समुंदर के ऊपर उठा। फिर पानी वापस आकर मिसरियों, उनके रथों और घुड़सवारों को डुबो देगा।” 27मूसा ने अपना हाथ समुंदर के ऊपर उठाया तो दिन निकलते वक़्त पानी मामूल के मुताबिक़ बहने लगा, और जिस तरफ़ मिसरी भाग रहे थे वहाँ पानी ही पानी था। यों रब ने उन्हें समुंदर में बहाकर ग़रक़ कर दिया। 28पानी वापस आ गया। उसने रथों और घुड़सवारों को ढाँक लिया। फ़िरौन की पूरी फ़ौज जो इसराईलियों का ताक़्क़ुब कर रही थी डूबकर तबाह हो गई। उनमें से एक भी न बचा। 29लेकिन इसराईली ख़ुश्क ज़मीन पर समुंदर में से गुज़रे। उनके दाईं और बाईं तरफ़ पानी दीवार की तरह खड़ा रहा।

30उस दिन रब ने इसराईलियों को मिसरियों से बचाया। मिसरियों की लाशें उन्हें साहिल पर नज़र आईं। 31जब इसराईलियों ने रब की यह अज़ीम क़ुदरत देखी जो उसने मिसरियों पर ज़ाहिर की थी तो रब का ख़ौफ़ उन पर छा गया। वह उस पर और उसके ख़ादिम मूसा पर एतमाद करने लगे।

मूसा का गीत

15 तब मूसा और इसराईलियों ने रब के लिए यह गीत गाया,

“मैं रब की तमजीद में गीत गाऊँगा, क्योंकि वह निहायत अज़ीम है। घोड़े और उसके सवार को उसने समुंदर में पटख़ दिया है।

2रब मेरी क़ुव्वत और मेरा गीत है, वह मेरी नजात बन गया है। वही मेरा ख़ुदा है, और मैं उस की तारीफ़ करूँगा। वही मेरे बाप का ख़ुदा है, और मैं उस की ताज़ीम करूँगा।

3रब सूरमा है, रब उसका नाम है।

4फ़िरौन के रथों और फ़ौज को उसने समुंदर में पटख़ दिया तो बादशाह के बेहतरीन अफ़सरान बहरे-क़ुलज़ुम में डूब गए।

5गहरे पानी ने उन्हें ढाँक लिया, और वह पत्थर की तरह समुंदर की तह तक उतर गए।

6ऐ रब, तेरे दहने हाथ का जलाल बड़ी क़ुदरत से ज़ाहिर होता है। ऐ रब, तेरा दहना हाथ दुश्मन को चकनाचूर कर देता है।

7जो तेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े होते हैं उन्हें तू अपनी अज़मत का इज़हार करके ज़मीन पर पटख़ देता है। तेरा ग़ज़ब उन पर आन पड़ता है तो वह आग में भूसे की तरह जल जाते हैं।

8तूने ग़ुस्से में आकर फूँक मारी तो पानी ढेर की सूरत में जमा हो गया। बहता पानी ठोस दीवार बन गया, समुंदर गहराई तक जम गया।

9दुश्मन ने डींग मारकर कहा, ‘मैं उनका पीछा करके उन्हें पकड़ लूँगा, मैं उनका लूटा हुआ माल तक़सीम करूँगा। मेरी लालची जान उनसे सेर हो जाएगी, मैं अपनी तलवार खींचकर उन्हें हलाक करूँगा।’

10लेकिन तूने उन पर फूँक मारी तो समुंदर ने उन्हें ढाँक लिया, और वह सीसे की तरह ज़ोरदार मौजों में डूब गए।

11ऐ रब, कौन-सा माबूद तेरी मानिंद है? कौन तेरी तरह जलाली और क़ुद्दूस है? कौन तेरी तरह हैरतअंगेज़ काम करता और अज़ीम मोजिज़े दिखाता है? कोई भी नहीं।

12तूने अपना दहना हाथ उठाया तो ज़मीन हमारे दुश्मनों को निगल गई।

13अपनी शफ़क़त से तूने एवज़ाना देकर अपनी क़ौम को छुटकारा दिया और उस की राहनुमाई

की है, अपनी क़ुदरत से तूने उसे अपनी मुक़द्दस
सुकूनतगाह तक पहुँचाया है।
14यह सुनकर दीगर क़ौमें काँप उठीं, फ़िलिस्ती
डर के मारे पेचो-ताब खाने लगे।
15अदोम के रईस सहम गए, मोआब के
राहनुमाओं पर कपकपी तारी हो गई, और कनान
के तमाम बाशिंदे हिम्मत हार गए।
16दहशत और ख़ौफ़ उन पर छा गया। तेरी
अज़ीम क़ुदरत के बाइस वह पत्थर की तरह जम
गए। ऐ रब, वह न हिले जब तक तेरी क़ौम गुज़र न
गई। वह बेहिसो-हरकत रहे जब तक तेरी ख़रीदी
हुई क़ौम गुज़र न गई।
17ऐ रब, तू अपने लोगों को लेकर पौदों की
तरह अपने मौरूसी पहाड़ पर लगाएगा, उस जगह
पर जो तूने अपनी सुकूनत के लिए चुन ली है,
जहाँ तूने अपने हाथों से अपना मक़दिस तैयार
किया है।
18रब अबद तक बादशाह है!”

19जब फ़िरौन के घोड़े, रथ और घुड़सवार
समुंदर में चले गए तो रब ने उन्हें समुंदर के पानी से
ढाँक लिया। लेकिन इसराईली ख़ुश्क ज़मीन पर
समुंदर में से गुज़र गए। 20तब हारून की बहन
मरियम जो नबिया थी ने दफ़ लिया, और बाक़ी
तमाम औरतें भी दफ़ लेकर उसके पीछे हो लीं।
सब गाने और नाचने लगीं। मरियम ने यह गाकर
उनकी राहनुमाई की,
21“रब की तमजीद में गीत गाओ, क्योंकि वह
निहायत अज़ीम है। घोड़े और उसके सवार को
उसने समुंदर में पटख़ दिया है।”

मारा और एलीम के चश्मे

22मूसा के कहने पर इसराईली बहरे-क़ुलज़ुम
से रवाना होकर दश्ते-शूर में चले गए। वहाँ
वह तीन दिन तक सफ़र करते रहे। इस दौरान
उन्हें पानी न मिला। 23आख़िरकार वह मारा
पहुँचे जहाँ पानी दस्तयाब था। लेकिन वह
कड़वा था, इसलिए मक़ाम का नाम मारा यानी
कड़वाहट पड़ गया। 24यह देखकर लोग मूसा
के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाकर कहने लगे, “हम क्या
पिएँ?” 25मूसा ने मदद के लिए रब से इल्तिजा
की तो उसने उसे लकड़ी का एक टुकड़ा दिखाया।
जब मूसा ने यह लकड़ी पानी में डाली तो पानी
की कड़वाहट ख़त्म हो गई।

मारा में रब ने अपनी क़ौम को क़वानीन दिए।
वहाँ उसने उन्हें आज़माया भी। 26उसने कहा,
“ग़ौर से रब अपने ख़ुदा की आवाज़ सुनो! जो
कुछ उस की नज़र में दुरुस्त है वही करो।
उसके अहकाम पर ध्यान दो और उस की तमाम
हिदायात पर अमल करो। फिर मैं तुम पर वह
बीमारियाँ नहीं लाऊँगा जो मिसरियों पर लाया
था, क्योंकि मैं रब हूँ जो तुझे शफ़ा देता हूँ।”
27फिर इसराईली रवाना होकर एलीम पहुँचे जहाँ
12 चश्मे और खजूर के 70 दरख़्त थे। वहाँ उन्होंने
पानी के क़रीब अपने ख़ैमे लगाए।

मन और बटेरें

16 इसके बाद इसराईल की पूरी जमात
एलीम से सफ़र करके सीन के
रेगिस्तान में पहुँची जो एलीम और सीना के
दरमियान है। वह मिसर से निकलने के बाद दूसरे
महीने के 15वें दिन पहुँचे। 2रेगिस्तान में तमाम
लोग फिर मूसा और हारून के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने
लगे। 3उन्होंने कहा, “काश रब हमें मिसर में ही
मार डालता! वहाँ हम कम अज़ कम जी भरकर
गोश्त और रोटी तो खा सकते थे। आप हमें सिर्फ़
इसलिए रेगिस्तान में ले आए हैं कि हम सब भूके
मर जाएँ।”
4तब रब ने मूसा से कहा, “मैं आसमान से
तुम्हारे लिए रोटी बरसाऊँगा। हर रोज़ लोग बाहर
जाकर उसी दिन की ज़रूरत के मुताबिक़ खाना
जमा करें। इससे मैं उन्हें आज़माकर देखूँगा कि
आया वह मेरी सुनते हैं कि नहीं। 5हर रोज़ वह
सिर्फ़ उतना खाना जमा करें जितना कि एक दिन
के लिए काफ़ी हो। लेकिन छटे दिन जब वह खाना

तैयार करेंगे तो वह अगले दिन के लिए भी काफ़ी होगा।”

6मूसा और हारून ने इसराईलियों से कहा, “आज शाम को तुम जान लोगे कि रब ही तुम्हें मिसर से निकाल लाया है। 7और कल सुबह तुम रब का जलाल देखोगे। उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं, क्योंकि असल में तुम हमारे ख़िलाफ़ नहीं बल्कि रब के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ा रहे हो। 8फिर भी रब तुमको शाम के वक़्त गोश्त और सुबह के वक़्त वाफ़िर रोटी देगा, क्योंकि उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं। तुम्हारी शिकायतें हमारे ख़िलाफ़ नहीं बल्कि रब के ख़िलाफ़ हैं।”

9मूसा ने हारून से कहा, “इसराईलियों को बताना, ‘रब के सामने हाज़िर हो जाओ, क्योंकि उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं’।” 10जब हारून पूरी जमात के सामने बात करने लगा तो लोगों ने पलटकर रेगिस्तान की तरफ़ देखा। वहाँ रब का जलाल बादल में ज़ाहिर हुआ। 11रब ने मूसा से कहा, 12“मैंने इसराईलियों की शिकायत सुन ली है। उन्हें बता, ‘आज जब सूरज ग़ुरूब होने लगेगा तो तुम गोश्त खाओगे और कल सुबह पेट भरकर रोटी। फिर तुम जान लोगे कि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ’।”

13उसी शाम बटेरों के ग़ोल आए जो पूरी ख़ैमागाह पर छा गए। और अगली सुबह ख़ैमे के चारों तरफ़ ओस पड़ी थी। 14जब ओस सूख गई तो बर्फ़ के गालों जैसे पतले दाने पाले की तरह ज़मीन पर पड़े थे। 15जब इसराईलियों ने उसे देखा तो एक दूसरे से पूछने लगे, “मन हू?” यानी “यह क्या है?” क्योंकि वह नहीं जानते थे कि यह क्या चीज़ है। मूसा ने उनको समझाया, “यह वह रोटी है जो रब ने तुम्हें खाने के लिए दी है। 16रब का हुक्म है कि हर एक उतना जमा करे जितना उसके ख़ानदान को ज़रूरत हो। अपने ख़ानदान के हर फ़रद के लिए दो लिटर जमा करो।”

17इसराईलियों ने ऐसा ही किया। बाज़ ने ज़्यादा और बाज़ ने कम जमा किया। 18लेकिन जब उसे नापा गया तो हर एक आदमी के लिए काफ़ी था। जिसने ज़्यादा जमा किया था उसके पास कुछ न बचा। लेकिन जिसने कम जमा किया था उसके पास भी काफ़ी था। 19मूसा ने हुक्म दिया, “अगले दिन के लिए खाना न बचाना।”

20लेकिन लोगों ने मूसा की बात न मानी बल्कि बाज़ ने खाना बचा लिया। लेकिन अगली सुबह मालूम हुआ कि बचे हुए खाने में कीड़े पड़ गए हैं और उससे बहुत बदबू आ रही है। यह सुनकर मूसा उनसे नाराज़ हुआ।

21हर सुबह हर कोई उतना जमा कर लेता जितनी उसे ज़रूरत होती थी। जब धूप तेज़ होती तो जो कुछ ज़मीन पर रह जाता वह पिघलकर ख़त्म हो जाता था।

22छटे दिन जब लोग यह ख़ुराक जमा करते तो वह मिक़दार में दुगनी होती थी यानी हर फ़रद के लिए चार लिटर। जब जमात के बुज़ुर्गों ने मूसा के पास आकर उसे इत्तला दी 23तो उसने उनसे कहा, “रब का फ़रमान है कि कल आराम का दिन है, मुक़द्दस सबत का दिन जो अल्लाह की ताज़ीम में मनाना है। आज तुम जो तनूर में पकाना चाहते हो पका लो और जो उबालना चाहते हो उबाल लो। जो बच जाए उसे कल के लिए महफ़ूज़ रखो।”

24लोगों ने मूसा के हुक्म के मुताबिक़ अगले दिन के लिए खाना महफ़ूज़ कर लिया तो न खाने से बदबू आई, न उसमें कीड़े पड़े। 25मूसा ने कहा, “आज यही बचा हुआ खाना खाओ, क्योंकि आज सबत का दिन है, रब की ताज़ीम में आराम का दिन। आज तुम्हें रेगिस्तान में कुछ नहीं मिलेगा। 26छः दिन के दौरान यह ख़ुराक जमा करना है, लेकिन सातवाँ दिन आराम का दिन है। उस दिन ज़मीन पर खाने के लिए कुछ नहीं होगा।”

27तो भी कुछ लोग हफ़्ते को खाना जमा करने के लिए निकले, लेकिन उन्हें कुछ न मिला। 28तब रब ने मूसा से कहा, “तुम लोग कब तक मेरे अहकाम और हिदायात पर अमल करने से इनकार करोगे? 29देखो, रब ने तुम्हारे लिए मुक़र्रर किया है कि सबत का दिन आराम का

दिन है। इसलिए वह तुम्हें जुमे को दो दिन के लिए ख़ुराक देता है। हफ़्ते को सबको अपने ख़ैमों में रहना है। कोई भी अपने घर से बाहर न निकले।”
30चुनाँचे लोग सबत के दिन आराम करते थे।
31इसराईलियों ने इस ख़ुराक का नाम ‘मन’ रखा। उसके दाने धनिये की मानिंद सफ़ेद थे, और उसका ज़ायक़ा शहद से बने केक की मानिंद था।
32मूसा ने कहा, “रब फ़रमाता है, ‘दो लिटर मन एक मरतबान में रखकर उसे आनेवाली नसलों के लिए महफ़ूज़ रखना। फिर वह देख सकेंगे कि मैं तुम्हें क्या खाना खिलाता रहा जब तुम्हें मिसर से निकाल लाया’।” 33मूसा ने हारून से कहा, “एक मरतबान लो और उसे दो लिटर मन से भरकर रब के सामने रखो ताकि वह आनेवाली नसलों के लिए महफ़ूज़ रहे।” 34हारून ने ऐसा ही किया। उसने मन के इस मरतबान को अहद के संदूक़ के सामने रखा ताकि वह महफ़ूज़ रहे।
35इसराईलियों को 40 साल तक मन मिलता रहा। वह उस वक़्त तक मन खाते रहे जब तक रेगिस्तान से निकलकर कनान की सरहद पर न पहुँचे। 36(जो पैमाना इसराईली मन के लिए इस्तेमाल करते थे वह दो लिटर का एक बरतन था जिसका नाम ओमर था।)

चट्टान से पानी

17 फिर इसराईल की पूरी जमात सीन के रेगिस्तान से निकली। रब जिस तरह हुक्म देता रहा वह एक जगह से दूसरी जगह सफ़र करते रहे। रफ़ीदीम में उन्होंने ख़ैमे लगाए। वहाँ पीने के लिए पानी न मिला। 2इसलिए वह मूसा के साथ यह कहकर झगड़ने लगे, “हमें पीने के लिए पानी दो।” मूसा ने जवाब दिया, “तुम मुझसे क्यों झगड़ रहे हो? रब को क्यों आज़मा रहे हो?” 3लेकिन लोग बहुत प्यासे थे। वह मूसा के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने से बाज़ न आए बल्कि कहा, “आप हमें मिसर से क्यों लाए हैं? क्या इसलिए कि हम अपने बच्चों और रेवड़ों समेत प्यासे मर जाएँ?”
4तब मूसा ने रब के हुज़ूर फ़रियाद की, “मैं इन लोगों के साथ क्या करूँ? हालात ज़रा भी और बिगड़ जाएँ तो वह मुझे संगसार कर देंगे।” 5रब ने मूसा से कहा, “कुछ बुज़ुर्ग साथ लेकर लोगों के आगे आगे चल। वह लाठी भी साथ ले जा जिससे तूने दरियाए-नील को मारा था। 6मैं होरिब यानी सीना पहाड़ की एक चट्टान पर तेरे सामने खड़ा हूँगा। लाठी से चट्टान को मारना तो उससे पानी निकलेगा और लोग पी सकेंगे।”
मूसा ने इसराईल के बुज़ुर्गों के सामने ऐसा ही किया। 7उसने उस जगह का नाम मस्सा और मरीबा यानी ‘आज़माना और झगड़ना’ रखा, क्योंकि वहाँ इसराईली बुड़बुड़ाए और यह पूछकर रब को आज़माया कि क्या रब हमारे दरमियान है कि नहीं?

अमालीक़ियों की शिकस्त

8रफ़ीदीम वह जगह भी थी जहाँ अमालीक़ी इसराईलियों से लड़ने आए। 9मूसा ने यशुअ से कहा, “लड़ने के क़ाबिल आदमियों को चुन लो और निकलकर अमालीक़ियों का मुक़ाबला करो। कल मैं अल्लाह की लाठी पकड़े हुए पहाड़ की चोटी पर खड़ा हो जाऊँगा।”
10यशुअ मूसा की हिदायत के मुताबिक़ अमालीक़ियों से लड़ने गया जबकि मूसा, हारून और हूर पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए। 11और यों हुआ कि जब मूसा के हाथ उठाए हुए थे तो इसराईली जीतते रहे, और जब वह नीचे थे तो अमालीक़ी जीतते रहे। 12कुछ देर के बाद मूसा के बाज़ू थक गए। इसलिए हारून और हूर एक चट्टान ले आए ताकि वह उस पर बैठ जाए। फिर उन्होंने उसके दाईं और बाईं तरफ़ खड़े होकर उसके बाज़ुओं को ऊपर उठाए रखा। सूरज के ग़ुरूब होने तक उन्होंने यों मूसा की मदद की। 13इस तरह यशुअ ने अमालीक़ियों से लड़ते लड़ते उन्हें शिकस्त दी।

14तब रब ने मूसा से कहा, “यह वाक़िया
यादगारी के लिए किताब में लिख ले। लाज़िम
है कि यह सब कुछ यशुअ की याद में रहे, क्योंकि
मैं दुनिया से अमालीक़ियों का नामो-निशान मिटा
दूँगा।” 15उस वक़्त मूसा ने क़ुरबानगाह बनाकर
उसका नाम ‘रब मेरा झंडा है’ रखा। 16उसने
कहा, “रब के तख़्त के ख़िलाफ़ हाथ उठाया गया
है, इसलिए रब की अमालीक़ियों से हमेशा तक
जंग रहेगी।”

यितरो से मुलाक़ात

18 मूसा का सुसर यितरो अब तक
मिदियान में इमाम था। जब उसने सब
कुछ सुना जो अल्लाह ने मूसा और अपनी क़ौम
के लिए किया है, कि वह उन्हें मिसर से निकाल
लाया है 2तो वह मूसा के पास आया। वह उस
की बीवी सफ़्फ़ूरा को अपने साथ लाया, क्योंकि
मूसा ने उसे अपने बेटों समेत मैके भेज दिया था।
3यितरो मूसा के दोनों बेटों को भी साथ लाया।
पहले बेटे का नाम जैरसोम यानी ‘अजनबी मुल्क
में परदेसी’ था, क्योंकि जब वह पैदा हुआ तो मूसा
ने कहा था, “मैं अजनबी मुल्क में परदेसी हूँ।”
4दूसरे बेटे का नाम इलियज़र यानी ‘मेरा ख़ुदा
मददगार है’ था, क्योंकि जब वह पैदा हुआ तो
मूसा ने कहा था, “मेरे बाप के ख़ुदा ने मेरी मदद
करके मुझे फ़िरौन की तलवार से बचाया है।”

5यितरो मूसा की बीवी और बेटे साथ लेकर उस
वक़्त मूसा के पास पहुँचा जब उसने रेगिस्तान
में अल्लाह के पहाड़ यानी सीना के क़रीब ख़ैमा
लगाया हुआ था। 6उसने मूसा को पैग़ाम भेजा
था, “मैं, आपका सुसर यितरो आपकी बीवी और
दो बेटों को साथ लेकर आपके पास आ रहा हूँ।”

7मूसा अपने सुसर के इस्तक़बाल के लिए
बाहर निकला, उसके सामने झुका और उसे बोसा
दिया। दोनों ने एक दूसरे का हाल पूछा, फिर ख़ैमे
में चले गए। 8मूसा ने यितरो को तफ़सील से
बताया कि रब ने इसराईलियों की ख़ातिर फ़िरौन
और मिसरियों के साथ क्या कुछ किया है। उसने
रास्ते में पेश आई तमाम मुश्किलात का ज़िक्र भी
किया कि रब ने हमें किस तरह उनसे बचाया है।

9यितरो उन सारे अच्छे कामों के बारे में सुनकर
ख़ुश हुआ जो रब ने इसराईलियों के लिए किए
थे जब उसने उन्हें मिसरियों के हाथ से बचाया
था। 10उसने कहा, “रब की तमजीद हो जिसने
आपको मिसरियों और फ़िरौन के क़ब्ज़े से नजात
दिलाई है। उसी ने क़ौम को ग़ुलामी से छुड़ाया है!
11अब मैंने जान लिया है कि रब तमाम माबूदों से
अज़ीम है, क्योंकि उसने यह सब कुछ उन लोगों
के साथ किया जिन्होंने अपने ग़ुरूर में इसराईलियों
के साथ बुरा सुलूक किया था।” 12फिर यितरो ने
अल्लाह को भस्म होनेवाली क़ुरबानी और दीगर
कई क़ुरबानियाँ पेश कीं। तब हारून और तमाम
बुज़ुर्ग मूसा के सुसर यितरो के साथ अल्लाह के
हुज़ूर खाना खाने बैठे।

70 बुज़ुर्गों को मुक़र्रर किया जाता है

13अगले दिन मूसा लोगों का इनसाफ़ करने के
लिए बैठ गया। उनकी तादाद इतनी ज़्यादा थी कि
वह सुबह से लेकर शाम तक मूसा के सामने खड़े
रहे। 14जब यितरो ने यह सब कुछ देखा तो उसने
पूछा, “यह क्या है जो आप लोगों के साथ कर
रहे हैं? सारा दिन वह आपको घेरे रहते और आप
उनकी अदालत करते रहते हैं। आप यह सब कुछ
अकेले ही क्यों कर रहे हैं?”

15मूसा ने जवाब दिया, “लोग मेरे पास आकर
अल्लाह की मरज़ी मालूम करते हैं। 16जब कभी
कोई तनाज़ा या झगड़ा होता है तो दोनों पार्टियाँ
मेरे पास आती हैं। मैं फ़ैसला करके उन्हें अल्लाह
के अहकाम और हिदायात बताता हूँ।”

17मूसा के सुसर ने उससे कहा, “आपका
तरीक़ा अच्छा नहीं है। 18काम इतना वसी है कि
आप उसे अकेले नहीं सँभाल सकते। इससे आप
और वह लोग जो आपके पास आते हैं बुरी तरह
थक जाते हैं। 19मेरी बात सुनें! मैं आपको एक
मशवरा देता हूँ। अल्लाह उसमें आपकी मदद करे।
लाज़िम है कि आप अल्लाह के सामने क़ौम के

नुमाइंदे रहें और उनके मामलात उसके सामने पेश
करें। 20यह भी ज़रूरी है कि आप उन्हें अल्लाह
के अहकाम और हिदायात सिखाएँ, कि वह किस
तरह ज़िंदगी गुज़ारें और क्या क्या करें। 21लेकिन
साथ साथ क़ौम में से क़ाबिले-एतमाद आदमी
चुनें। वह ऐसे लोग हों जो अल्लाह का ख़ौफ़
मानते हों, रास्तदिल हों और रिश्वत से नफ़रत
करते हों। उन्हें हज़ार हज़ार, सौ सौ, पचास पचास
और दस दस आदमियों पर मुक़र्रर करें। 22उन
आदमियों की ज़िम्मेदारी यह होगी कि वह हर
वक़्त लोगों का इनसाफ़ करें। अगर कोई बहुत ही
पेचीदा मामला हो तो वह फ़ैसले के लिए आपके
पास आएँ, लेकिन दीगर मामलों का फ़ैसला वह
ख़ुद करें। यों वह काम में आपका हाथ बटाएँगे
और आपका बोझ हलका हो जाएगा।

23अगर मेरा यह मशवरा अल्लाह की मरज़ी
के मुताबिक़ हो और आप ऐसा करें तो आप
अपनी ज़िम्मेदारी निभा सकेंगे और यह तमाम
लोग इनसाफ़ के मिलने पर सलामती के साथ
अपने अपने घर जा सकेंगे।"

24मूसा ने अपने सुसर का मशवरा मान
लिया और ऐसा ही किया। 25उसने इसराई-
लियों में से क़ाबिले-एतमाद आदमी चुने और उन्हें
हज़ार हज़ार, सौ सौ, पचास पचास और दस दस
आदमियों पर मुक़र्रर किया। 26यह मर्द क़ाज़ी
बनकर मुस्तक़िल तौर पर लोगों का इनसाफ़
करने लगे। आसान मसलों का फ़ैसला वह ख़ुद
करते और मुश्किल मामलों को मूसा के पास ले
आते थे।

27कुछ अरसे बाद मूसा ने अपने सुसर को
रुख़सत किया तो यितरो अपने वतन वापस चला
गया।

कोहे-सीना

19 इसराईलियों को मिसर से सफ़र करते
हुए दो महीने हो गए थे। तीसरे महीने
के पहले ही दिन वह सीना के रेगिस्तान में पहुँचे।
2उस दिन वह रफ़ीदीम को छोड़कर दश्ते-सीना
में आ पहुँचे। वहाँ उन्होंने रेगिस्तान में पहाड़ के
क़रीब डेरे डाले।

3तब मूसा पहाड़ पर चढ़कर अल्लाह के पास
गया। अल्लाह ने पहाड़ पर से मूसा को पुकारकर
कहा, "याक़ूब के घराने बनी इसराईल को बता,
4'तुमने देखा है कि मैंने मिसरियों के साथ क्या
कुछ किया, और कि मैं तुमको उक़ाब के परों पर
उठाकर यहाँ अपने पास लाया हूँ। 5चुनाँचे अगर
तुम मेरी सुनो और मेरे अहद के मुताबिक़ चलो
तो फिर तमाम क़ौमों में से मेरी ख़ास मिलकियत
होगे। गो पूरी दुनिया मेरी ही है, 6लेकिन तुम
मेरे लिए मख़सूस इमामों की बादशाही और
मुक़द्दस क़ौम होगे।' अब जाकर यह सारी बातें
इसराईलियों को बता।"

7मूसा ने पहाड़ से उतरकर और क़ौम के बुज़ुर्गों
को बुलाकर उन्हें वह तमाम बातें बताईं जो कहने
के लिए रब ने उसे हुक्म दिया था। 8जवाब में पूरी
क़ौम ने मिलकर कहा, "हम रब की हर बात पूरी
करेंगे जो उसने फ़रमाई है।" मूसा ने पहाड़ पर
लौटकर रब को क़ौम का जवाब बताया। 9जब वह
पहुँचा तो रब ने मूसा से कहा, "मैं घने बादल में तेरे
पास आऊँगा ताकि लोग मुझे तुझसे हमकलाम
होते हुए सुनें। फिर वह हमेशा तुझ पर भरोसा
रखेंगे।" तब मूसा ने रब को वह तमाम बातें बताईं
जो लोगों ने की थीं।

10रब ने मूसा से कहा, "अब लोगों के पास
लौटकर आज और कल उन्हें मेरे लिए मख़सूसो-
मुक़द्दस कर। वह अपने लिबास धोकर 11तीसरे
दिन के लिए तैयार हो जाएँ, क्योंकि उस दिन
रब लोगों के देखते देखते कोहे-सीना पर उतरेगा।
12लोगों की हिफ़ाज़त के लिए चारों तरफ़ पहाड़
की हद्दें मुक़र्रर कर। उन्हें ख़बरदार कर कि हुदूद
को पार न करो। न पहाड़ पर चढ़ो, न उसके दामन
को छुओ। जो भी उसे छुए वह ज़रूर मारा जाए।
13और उसे हाथ से छूकर नहीं मारना है बल्कि
पत्थरों या तीरों से। ख़ाह इनसान हो या हैवान,
वह ज़िंदा नहीं रह सकता। जब तक नरसिंगा देर

तक फूँका न जाए उस वक़्त तक लोगों को पहाड़ पर चढ़ने की इजाज़त नहीं है।”

14मूसा ने पहाड़ से उतरकर लोगों को अल्लाह के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस किया। उन्होंने अपने लिबास भी धोए। 15उसने उनसे कहा, “तीसरे दिन के लिए तैयार हो जाओ। मर्द औरतों से हमबिसतर न हों।”

16तीसरे दिन सुबह पहाड़ पर घना बादल छा गया। बिजली चमकने लगी, बादल गरजने लगा और नरसिंगे की निहायत ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी। ख़ैमागाह में लोग लरज़ उठे। 17तब मूसा लोगों को अल्लाह से मिलने के लिए ख़ैमागाह से बाहर पहाड़ की तरफ़ ले गया, और वह पहाड़ के दामन में खड़े हुए। 18सीना पहाड़ धुएँ से ढका हुआ था, क्योंकि रब आग में उस पर उतर आया। पहाड़ से धुआँ इस तरह उठ रहा था जैसे किसी भट्टे से उठता है। पूरा पहाड़ शिद्दत से लरज़ने लगा। 19नरसिंगे की आवाज़ तेज़ से तेज़तर होती गई। मूसा बोलने लगा और अल्लाह उसे ऊँची आवाज़ में जवाब देता रहा।

20रब सीना पहाड़ की चोटी पर उतरा और मूसा को ऊपर आने के लिए कहा। मूसा ऊपर चढ़ा। 21रब ने मूसा से कहा, “फ़ौरन नीचे उतरकर लोगों को ख़बरदार कर कि वह मुझे देखने के लिए पहाड़ की हुदूद में ज़बरदस्ती दाख़िल न हों। अगर वह ऐसा करें तो बहुत-से हलाक हो जाएंगे। 22इमाम भी जो रब के हुज़ूर आते हैं अपने आपको मख़सूसो-मुक़द्दस करें, वरना मेरा ग़ज़ब उन पर टूट पड़ेगा।”

23लेकिन मूसा ने रब से कहा, “लोग पहाड़ पर नहीं आ सकते, क्योंकि तूने ख़ुद ही हमें ख़बरदार किया कि हम पहाड़ की हद्दें मुक़र्रर करके उसे मख़सूसो-मुक़द्दस करें।”

24रब ने जवाब दिया, “तो भी उतर जा और हारून को साथ लेकर वापस आ। लेकिन इमामों और लोगों को मत आने दे। अगर वह ज़बरदस्ती मेरे पास आएँ तो मेरा ग़ज़ब उन पर टूट पड़ेगा।”

25मूसा ने लोगों के पास उतरकर उन्हें यह बातें बता दीं।

दस अहकाम

20 तब अल्लाह ने यह तमाम बातें फ़रमाईं, 2“मैं रब तेरा ख़ुदा हूँ जो तुझे मुल्के-मिसर की ग़ुलामी से निकाल लाया। 3मेरे सिवा किसी और माबूद की परस्तिश न करना। 4अपने लिए बुत न बनाना। किसी भी चीज़ की मूरत न बनाना, चाहे वह आसमान में, ज़मीन पर या समुंदर में हो। 5न बुतों की परस्तिश, न उनकी ख़िदमत करना, क्योंकि मैं तेरा रब ग़यूर ख़ुदा हूँ। जो मुझसे नफ़रत करते हैं उन्हें मैं तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा दूँगा। 6लेकिन जो मुझसे मुहब्बत रखते और मेरे अहकाम पूरे करते हैं उन पर मैं हज़ार पुश्तों तक मेहरबानी करूँगा।

7रब अपने ख़ुदा का नाम बेमक़सद या ग़लत मक़सद के लिए इस्तेमाल न करना। जो भी ऐसा करता है उसे रब सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ेगा।

8सबत के दिन का ख़याल रखना। उसे इस तरह मनाना कि वह मख़सूसो-मुक़द्दस हो। 9हफ़्ते के पहले छः दिन अपना काम-काज कर, 10लेकिन सातवाँ दिन रब तेरे ख़ुदा का आराम का दिन है। उस दिन किसी तरह का काम न करना। न तू, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा नौकर, न तेरी नौकरानी और न तेरे मवेशी। जो परदेसी तेरे दरमियान रहता है वह भी काम न करे। 11क्योंकि रब ने पहले छः दिन में आसमानो-ज़मीन, समुंदर और जो कुछ उनमें है बनाया लेकिन सातवें दिन आराम किया। इसलिए रब ने सबत के दिन को बरकत देकर मुक़र्रर किया कि वह मख़सूस और मुक़द्दस हो।

12अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना। फिर तू उस मुल्क में जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देनेवाला है देर तक जीता रहेगा।

13क़त्ल न करना।

14ज़िना न करना।

15चोरी न करना।

16अपने पड़ोसी के बारे में झूटी गवाही न देना।
17अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना।
न उस की बीवी का, न उसके नौकर का, न उस
की नौकरानी का, न उसके बैल और न उसके गधे
का बल्कि उस की किसी भी चीज़ का लालच न
करना।"

लोग घबरा जाते हैं

18जब बाक़ी तमाम लोगों ने बादल की गरज
और नरसिंगे की आवाज़ सुनी और बिजली की
चमक और पहाड़ से उठते हुए धुएँ को देखा तो
वह ख़ौफ़ के मारे काँपने लगे और पहाड़ से दूर
खड़े हो गए। 19उन्होंने मूसा से कहा, "आप ही
हमसे बात करें तो हम सुनेंगे। लेकिन अल्लाह को
हमसे बात न करने दें वरना हम मर जाएंगे।"
20लेकिन मूसा ने उनसे कहा, "मत डरो,
क्योंकि रब तुम्हें जाँचने के लिए आया है, ताकि
उसका ख़ौफ़ तुम्हारी आँखों के सामने रहे और तुम
गुनाह न करो।" 21लोग दूर ही रहे जबकि मूसा
उस गहरी तारीकी के क़रीब गया जहाँ अल्लाह
था।

22तब रब ने मूसा से कहा, "इसराईलियों को
बता, 'तुमने ख़ुद देखा कि मैंने आसमान पर से
तुम्हारे साथ बातें की हैं। 23चुनाँचे मेरी परस्तिश
के साथ साथ अपने लिए सोने या चाँदी के बुत
न बनाओ। 24मेरे लिए मिट्टी की क़ुरबानगाह
बनाकर उस पर अपनी भेड़-बकरियों और गाय-
बैलों की भस्म होनेवाली और सलामती की
क़ुरबानियाँ चढ़ाना। मैं तुझे वह जगहें दिखाऊँगा
जहाँ मेरे नाम की ताज़ीम में क़ुरबानियाँ पेश करनी
हैं। ऐसी तमाम जगहों पर मैं तेरे पास आकर तुझे
बरकत दूँगा।

25अगर तू मेरे लिए क़ुरबानगाह बनाने की
ख़ातिर पत्थर इस्तेमाल करना चाहे तो तराशे हुए
पत्थर इस्तेमाल न करना। क्योंकि तू तराशने
के लिए इस्तेमाल होनेवाले औज़ार से उस की
बेहुरमती करेगा। 26क़ुरबानगाह को सीढ़ियों के
बग़ैर बनाना है ताकि उस पर चढ़ने से तेरे लिबास
के नीचे से तेरा नंगापन नज़र न आए।'

21 इसराईलियों को यह अहकाम बता,

इबरानी ग़ुलाम के हुक़ूक़

2'अगर तू इबरानी ग़ुलाम ख़रीदे तो वह छः
साल तेरा ग़ुलाम रहे। इसके बाद लाज़िम है कि
उसे आज़ाद कर दिया जाए। आज़ाद होने के लिए
उसे पैसे देने की ज़रूरत नहीं होगी।
3अगर ग़ुलाम ग़ैरशादीशुदा हालत में मालिक
के घर आया हो तो वह आज़ाद होकर अकेला ही
चला जाए। अगर वह शादीशुदा हालत में आया हो
तो लाज़िम है कि वह अपनी बीवी समेत आज़ाद
होकर जाए। 4अगर मालिक ने ग़ुलाम की शादी
कराई और बच्चे पैदा हुए हैं तो उस की बीवी और
बच्चे मालिक की मिलकियत होंगे। छः साल के
बाद जब ग़ुलाम आज़ाद होकर जाए तो उस की
बीवी और बच्चे मालिक ही के पास रहें।
5अगर ग़ुलाम कहे, "मैं अपने मालिक और
अपने बीवी-बच्चों से मुहब्बत रखता हूँ, मैं आज़ाद
नहीं होना चाहता" 6तो ग़ुलाम का मालिक उसे
अल्लाह के सामने लाए। वह उसे दरवाज़े या उस
की चौखट के पास ले जाए और सुताली यानी
तेज़ औज़ार से उसके कान की लौ छेद दे। तब
वह ज़िंदगी-भर उसका ग़ुलाम बना रहेगा।
7अगर कोई अपनी बेटी को ग़ुलामी में बेच डाले
तो उसके लिए आज़ादी मिलने की शरायत मर्द से
फ़रक़ हैं। 8अगर उसके मालिक ने उसे मुंतख़ब
किया कि वह उस की बीवी बन जाए, लेकिन
बाद में वह उसे पसंद न आए तो लाज़िम है कि वह
मुनासिब मुआवज़ा लेकर उसे उसके रिश्तेदारों को
वापस कर दे। उसे औरत को ग़ैरमुल्कियों के हाथ
बेचने का इख़्तियार नहीं है, क्योंकि उसने उसके
साथ बेवफ़ा सुलूक किया है।
9अगर लौंडी का मालिक उस की अपने बेटे के
साथ शादी कराए तो औरत को बेटी के हुक़ूक़
हासिल होंगे।

10अगर मालिक ने उससे शादी करके बाद में
दूसरी औरत से भी शादी की तो लाज़िम है कि वह
पहली को भी खाना और कपड़े देता रहे। इसके
अलावा उसके साथ हमबिसतर होने का फ़र्ज़ भी
अदा करना है। 11अगर वह यह तीन फ़रायज़ अदा
न करे तो उसे औरत को आज़ाद करना पड़ेगा।
इस सूरत में उसे मुफ़्त आज़ाद करना होगा।

ज़ख़मी करने की सज़ा

12जो किसी को जान-बूझकर इतना सख़्त
मारता हो कि वह मर जाए तो उसे ज़रूर सज़ाए-
मौत देना है। 13लेकिन अगर उसने उसे जान-
बूझकर न मारा बल्कि यह इत्तफ़ाक़ से हुआ और
अल्लाह ने यह होने दिया, तो मारनेवाला एक
ऐसी जगह पनाह ले सकता है जो मैं मुक़र्रर
करूँगा। वहाँ उसे क़त्ल किए जाने की इजाज़त
नहीं होगी। 14लेकिन जो दीदा-दानिस्ता और
चालाकी से किसी को मार डालता है उसे मेरी
क़ुरबानगाह से भी छीनकर सज़ाए-मौत देना है।

15जो अपने बाप या अपनी माँ को मारता-
पीटता है उसे सज़ाए-मौत दी जाए।

16जिसने किसी को इग़वा कर लिया है उसे
सज़ाए-मौत दी जाए, चाहे वह उसे ग़ुलाम बनाकर
बेच चुका हो या उसे अब तक अपने पास रखा
हुआ हो।

17जो अपने बाप या माँ पर लानत करे उसे
सज़ाए-मौत दी जाए।

18हो सकता है कि आदमी झगड़ें और एक
शख़्स दूसरे को पत्थर या मुक्के से इतना ज़ख़मी
कर दे कि गो वह बच जाए वह बिस्तर से उठ न
सकता हो। 19अगर बाद में मरीज़ यहाँ तक शफ़ा
पाए कि दुबारा उठकर लाठी के सहारे चल-फिर
सके तो चोट पहुँचानेवाले को सज़ा नहीं मिलेगी।
उसे सिर्फ़ उस वक़्त के लिए मुआवज़ा देना पड़ेगा
जब तक मरीज़ पैसे न कमा सके। साथ ही उसे
उसका पूरा इलाज करवाना है।

20जो अपने ग़ुलाम या लौंडी को लाठी से
यों मारे कि वह मर जाए उसे सज़ा दी जाए।
21लेकिन अगर ग़ुलाम या लौंडी पिटाई के बाद
एक या दो दिन ज़िंदा रहे तो मालिक को सज़ा न
दी जाए। क्योंकि जो रक़म उसने उसके लिए दी
थी उसका नुक़सान उसे ख़ुद उठाना पड़ेगा।

22हो सकता है कि लोग आपस में लड़ रहे
हों और लड़ते लड़ते किसी हामिला औरत से यों
टकरा जाएँ कि उसका बच्चा ज़ाया हो जाए।
अगर कोई और नुक़सान न हुआ हो तो ज़रब
पहुँचानेवाले को जुरमाना देना पड़ेगा। औरत का
शौहर यह जुरमाना मुक़र्रर करे, और अदालत में
इसकी तसदीक़ हो।

23लेकिन अगर उस औरत को और नुक़-
सान भी पहुँचा हो तो फिर ज़रब पहुँचानेवाले को
इस उसूल के मुताबिक़ सज़ा दी जाए कि जान
के बदले जान, 24आँख के बदले आँख, दाँत के
बदले दाँत, हाथ के बदले हाथ, पाँव के बदले पाँव,
25जलने के ज़ख़म के बदले जलने का ज़ख़म,
मार के बदले मार, काट के बदले काट।

26अगर कोई मालिक अपने ग़ुलाम की आँख
पर यों मारे कि वह ज़ाया हो जाए तो उसे ग़ुलाम
को आँख के बदले आज़ाद करना पड़ेगा, चाहे
ग़ुलाम मर्द हो या औरत। 27अगर मालिक के
पीटने से ग़ुलाम का दाँत टूट जाए तो उसे ग़ुलाम
को दाँत के बदले आज़ाद करना पड़ेगा, चाहे
ग़ुलाम मर्द हो या औरत।

नुक़सान का मुआवज़ा

28अगर कोई बैल किसी मर्द या औरत को ऐसा
मारे कि वह मर जाए तो उस बैल को संगसार
किया जाए। उसका गोश्त खाने की इजाज़त नहीं
है। इस सूरत में बैल के मालिक को सज़ा न दी
जाए। 29लेकिन हो सकता है कि मालिक को
पहले आगाह किया गया था कि बैल लोगों को
मारता है, तो भी उसने बैल को खुला छोड़ा था
जिसके नतीजे में उसने किसी को मार डाला।
ऐसी सूरत में न सिर्फ़ बैल को बल्कि उसके
मालिक को भी संगसार करना है। 30लेकिन अगर
फ़ैसला किया जाए कि वह अपनी जान का फ़िद्या

दे तो जितना मुआवज़ा भी मुक़र्रर किया जाए उसे देना पड़ेगा।

31सज़ा में कोई फ़रक़ नहीं है, चाहे बेटे को मारा जाए या बेटी को। 32लेकिन अगर बैल किसी ग़ुलाम या लौंडी को मार दे तो उसका मालिक ग़ुलाम के मालिक को चाँदी के 30 सिक्के दे और बैल को संगसार किया जाए।

33हो सकता है कि किसी ने अपने हौज़ को खुला रहने दिया या हौज़ बनाने के लिए गढ़ा खोदकर उसे खुला रहने दिया और कोई बैल या गधा उसमें गिरकर मर गया। 34ऐसी सूरत में हौज़ का मालिक मुरदा जानवर के लिए पैसे दे। वह जानवर के मालिक को उस की पूरी क़ीमत अदा करे और मुरदा जानवर ख़ुद ले ले।

35अगर किसी का बैल किसी दूसरे के बैल को ऐसे मारे कि वह मर जाए तो दोनों मालिक ज़िंदा बैल को बेचकर उसके पैसे आपस में बराबर बाँट लें। इसी तरह वह मुरदा बैल को भी बराबर तक़सीम करें। 36लेकिन हो सकता है कि मालिक को मालूम था कि मेरा बैल दूसरे जानवरों पर हमला करता है, इसके बावुजूद उसने उसे आज़ाद छोड़ दिया था। ऐसी सूरत में उसे मुरदा बैल के एवज़ उसके मालिक को नया बैल देना पड़ेगा, और वह मुरदा बैल ख़ुद ले ले।

मिलकियत की हिफ़ाज़त

22 जिसने कोई बैल या भेड़ चोरी करके उसे ज़बह किया या बेच डाला है उसे हर चोरी के बैल के एवज़ पाँच बैल और हर चोरी की भेड़ के एवज़ चार भेड़ें वापस करना है।

2हो सकता है कि कोई चोर नक़ब लगा रहा हो और लोग उसे पकड़कर यहाँ तक मारते-पीटते रहें कि वह मर जाए। अगर रात के वक़्त ऐसा हुआ हो तो वह उसके ख़ून के ज़िम्मेदार नहीं ठहर सकते। 3लेकिन अगर सूरज के तुलू होने के बाद ऐसा हुआ हो तो जिसने उसे मारा वह क़ातिल ठहरेगा।

चोर को हर चुराई हुई चीज़ का एवज़ाना देना है। अगर उसके पास देने के लिए कुछ न हो तो उसे ग़ुलाम बनाकर बेचना है। जो पैसे उसे बेचने के एवज़ मिलें वह चुराई हुई चीज़ों के बदले में दिए जाएँ।

4अगर चोरी का जानवर चोर के पास ज़िंदा पाया जाए तो उसे हर जानवर के एवज़ दो देने पड़ेंगे, चाहे वह बैल, भेड़, बकरी या गधा हो।

5हो सकता है कि कोई अपने मवेशी को अपने खेत या अंगूर के बाग़ में छोड़कर चरने दे और होते होते वह किसी दूसरे के खेत या अंगूर के बाग़ में जाकर चरने लगे। ऐसी सूरत में लाज़िम है कि मवेशी का मालिक नुक़सान के एवज़ अपने अंगूर के बाग़ और खेत की बेहतरीन पैदावार में से दे।

6हो सकता है कि किसी ने आग जलाई हो और वह काँटेदार झाड़ियों के ज़रीए पड़ोसी के खेत तक फैलकर उसके अनाज के पूलों को, उस की पकी हुई फ़सल को या खेत की किसी और पैदावार को बरबाद कर दे। ऐसी सूरत में जिसने आग जलाई हो उसे उस की पूरी क़ीमत अदा करनी है।

7हो सकता है कि किसी ने कुछ पैसे या कोई और माल अपने किसी वाक़िफ़कार के सुपुर्द कर दिया हो ताकि वह उसे महफ़ूज़ रखे। अगर यह चीज़ें उसके घर से चोरी हो जाएँ और बाद में चोर को पकड़ा जाए तो चोर को उस की दुगनी क़ीमत अदा करनी पड़ेगी। 8लेकिन अगर चोर पकड़ा न जाए तो लाज़िम है कि उस घर का मालिक जिसके सुपुर्द यह चीज़ें की गई थीं अल्लाह के हुज़ूर खड़ा हो ताकि मालूम किया जाए कि उसने ख़ुद यह माल चोरी किया है या नहीं।

9हो सकता है कि दो लोगों का आपस में झगड़ा हो, और दोनों किसी चीज़ के बारे में दावा करते हों कि यह मेरी है। अगर कोई क़ीमती चीज़ हो मसलन बैल, गधा, भेड़, बकरी, कपड़े या कोई खोई हुई चीज़ तो मामला अल्लाह के हुज़ूर लाया जाए। जिसे अल्लाह क़ुसूरवार क़रार दे उसे दूसरे को ज़ेरे-बहस चीज़ की दुगनी क़ीमत अदा करनी है।

10हो सकता है कि किसी ने अपना कोई गधा,
बैल, भेड़, बकरी या कोई और जानवर किसी
वाक़िफ़कार के सुपुर्द कर दिया ताकि वह उसे
महफ़ूज़ रखे। वहाँ जानवर मर जाए या ज़ख़मी
हो जाए, या कोई उस पर क़ब्ज़ा करके उसे उस
वक़्त ले जाए जब कोई न देख रहा हो। 11यह
मामला यों हल किया जाए कि जिसके सुपुर्द
जानवर किया गया था वह रब के हुज़ूर क़सम
खाकर कहे कि मैंने अपने वाक़िफ़कार के जानवर
के लालच में यह काम नहीं किया। जानवर के
मालिक को यह क़बूल करना पड़ेगा, और दूसरे
को इसके बदले कुछ नहीं देना होगा। 12लेकिन
अगर वाक़ई जानवर को चोरी किया गया है तो
जिसके सुपुर्द जानवर किया गया था उसे उस की
क़ीमत अदा करनी पड़ेगी। 13अगर किसी जंगली
जानवर ने उसे फाड़ डाला हो तो वह सबूत के तौर
पर फाड़ी हुई लाश को ले आए। फिर उसे उस की
क़ीमत अदा नहीं करनी पड़ेगी।

14हो सकता है कि कोई अपने वाक़िफ़-
कार से इजाज़त लेकर उसका जानवर इस्तेमाल
करे। अगर जानवर को मालिक की ग़ैरमौजूदगी
में चोट लगे या वह मर जाए तो उस शख़्स
को जिसके पास जानवर उस वक़्त था उसका
मुआवज़ा देना पड़ेगा। 15लेकिन अगर जानवर का
मालिक उस वक़्त साथ था तो दूसरे को मुआवज़ा
देने की ज़रूरत नहीं होगी। अगर उसने जानवर को
किराए पर लिया हो तो उसका नुक़सान किराए
से पूरा हो जाएगा।

लड़की को वरग़लाने का जुर्म

16अगर किसी कुँवारी की मँगनी नहीं हुई
और कोई मर्द उसे वरग़लाकर उससे हमबिसतर
हो जाए तो वह महर देकर उससे शादी करे।
17लेकिन अगर लड़की का बाप उस की उस मर्द
के साथ शादी करने से इनकार करे, इस सूरत
में भी मर्द को कुँवारी के लिए मुक़र्ररा रक़म देनी
पड़ेगी।

सज़ाए-मौत के लायक़ जरायम

18जादूगरनी को जीने न देना।

19जो शख़्स किसी जानवर के साथ जिंसी
ताल्लुक़ात रखता हो उसे सज़ाए-मौत दी जाए।

20जो न सिर्फ़ रब को क़ुरबानियाँ पेश करे
बल्कि दीगर माबूदों को भी उसे क़ौम से
निकालकर हलाक किया जाए।

कमज़ोरों की हिफ़ाज़त के लिए अहकाम

21जो परदेसी तेरे मुल्क में मेहमान है उसे न
दबाना और न उससे बुरा सुलूक करना, क्योंकि
तुम भी मिसर में परदेसी थे।

22किसी बेवा या यतीम से बुरा सुलूक न
करना। 23अगर तू ऐसा करे और वह चिल्लाकर
मुझसे फ़रियाद करें तो मैं ज़रूर उनकी सुनूँगा।
24मैं बड़े ग़ुस्से में आकर तुम्हें तलवार से मार
डालूँगा। फिर तुम्हारी बीवियाँ ख़ुद बेवाएँ और
तुम्हारे बच्चे ख़ुद यतीम बन जाएंगे।

25अगर तूने मेरी क़ौम के किसी ग़रीब को क़र्ज़
दिया है तो उससे सूद न लेना।

26अगर तुझे किसी से उस की चादर गिरवी के
तौर पर मिली हो तो उसे सूरज डूबने से पहले ही
वापस कर देना है, 27क्योंकि इसी को वह सोने
के लिए इस्तेमाल करता है। वरना वह क्या चीज़
ओढ़कर सोएगा? अगर तू चादर वापस न करे
और वह शख़्स चिल्लाकर मुझसे फ़रियाद करे तो
मैं उस की सुनूँगा, क्योंकि मैं मेहरबान हूँ।

अल्लाह से मुताल्लिक़ फ़रायज़

28अल्लाह को न कोसना, न अपनी क़ौम के
किसी सरदार पर लानत करना।

29मुझे वक़्त पर अपने खेत और कोल्हुओं की
पैदावार में से नज़राने पेश करना। अपने पहलौठे
मुझे देना। 30अपने बैलों, भेड़ों और बकरियों के
पहलौठों को भी मुझे देना। जानवर का पहलौठा
पहले सात दिन अपनी माँ के साथ रहे। आठवें
दिन वह मुझे दिया जाए।

31अपने आपको मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस
रखना। इसलिए ऐसे जानवर का गोश्त मत खाना
जिसे किसी जंगली जानवर ने फाड़ डाला है। ऐसे
गोश्त को कुत्तों को खाने देना।

अदालत में इनसाफ़ और दूसरों से मुहब्बत

23 ग़लत अफ़वाहें न फैलाना। कि-
सी शरीर आदमी का साथ देकर
झूटी गवाही देना मना है। 2अगर अकसरियत
ग़लत काम कर रही हो तो उसके पीछे
न हो लेना। अदालत में गवाही देते वक़्त
अकसरियत के साथ मिलकर ऐसी बात न
करना जिससे ग़लत फ़ैसला किया जाए।
3लेकिन अदालत में किसी ग़रीब की तरफ़-
दारी भी न करना।

4अगर तुझे तेरे दुश्मन का बैल या गधा आवारा
फिरता हुआ नज़र आए तो उसे हर सूरत में वापस
कर देना। 5अगर तुझसे नफ़रत करनेवाले का
गधा बोझ तले गिर गया हो और तुझे पता लगे तो
उसे न छोड़ना बल्कि ज़रूर उस की मदद करना।

6अदालत में ग़रीब के हुक़ूक़ न मारना। 7ऐसे
मामले से दूर रहना जिसमें लोग झूट बोलते हैं।
जो बेगुनाह और हक़ पर है उसे सज़ाए-मौत
न देना, क्योंकि मैं क़ुसूरवार को हक़-बजानिब
नहीं ठहराऊँगा। 8रिश्वत न लेना, क्योंकि रिश्वत
देखनेवाले को अंधा कर देती है और उस की बात
बनने नहीं देती जो हक़ पर है।

9जो परदेसी तेरे मुल्क में मेहमान है उस पर
दबाव न डालना। तुम ऐसे लोगों की हालत से ख़ूब
वाक़िफ़ हो, क्योंकि तुम ख़ुद मिसर में परदेसी रहे
हो।

सबत का साल और सबत

10छः साल तक अपनी ज़मीन में बीज बो-
कर उस की पैदावार जमा करना। 11लेकिन
सातवें साल ज़मीन को इस्तेमाल न करना बल्कि
उसे पड़े रहने देना। जो कुछ भी उगे वह क़ौम के
ग़रीब लोग खाएँ। जो उनसे बच जाए उसे जंगली
जानवर खाएँ। अपने अंगूर और ज़ैतून के बाग़ों के
साथ भी ऐसा ही करना है।

12छः दिन अपना काम-काज करना, लेकिन
सातवें दिन आराम करना। फिर तेरा बैल और तेरा
गधा भी आराम कर सकेंगे, तेरी लौंडी का बेटा
और तेरे साथ रहनेवाला परदेसी भी ताज़ादम हो
जाएंगे।

13जो भी हिदायत मैंने दी है उस पर अमल
कर। दीगर माबूदों की परस्तिश न करना। मैं तेरे
मुँह से उनके नामों तक का ज़िक्र न सुनूँ।

तीन ख़ास ईदें

14साल में तीन दफ़ा मेरी ताज़ीम में ईद
मनाना। 15पहले, बेख़मीरी रोटी की ईद मनाना।
अबीब के महीने[a] में सात दिन तक तेरी रोटी में
ख़मीर न हो जिस तरह मैंने हुक्म दिया है, क्योंकि
इस महीने में तू मिसर से निकला। इन दिनों
में कोई मेरे हुज़ूर ख़ाली हाथ न आए। 16दूसरे,
फ़सलकटाई की ईद उस वक़्त मनाना जब तू
अपने खेत में बोई हुई पहली फ़सल काटेगा।
तीसरे, जमा करने की ईद फ़सल की कटाई के
इख़्तिताम[b] पर मनाना है जब तूने अंगूर और
बाक़ी बाग़ों के फल जमा किए होंगे। 17यों तेरे
तमाम मर्द तीन मरतबा रब क़ादिरे-मुतलक़ के
हुज़ूर हाज़िर हुआ करें।

18जब तू किसी जानवर को ज़बह करके
क़ुरबानी के तौर पर पेश करे तो उसके ख़ून के
साथ ऐसी रोटी पेश न करना जिसमें ख़मीर हो।
और जो जानवर तू मेरी ईदों पर चढ़ाए उनकी
चरबी अगली सुबह तक बाक़ी न रहे।

19अपनी ज़मीन की पहली पैदावार का
बेहतरीन हिस्सा रब अपने ख़ुदा के घर में लाना।

भेड़ या बकरी के बच्चे को उस की माँ के दूध
में न पकाना।

[a]मार्च ता अप्रैल।

[b]सितंबर ता अक्तूबर।

रब का फ़रिश्ता राहनुमाई करेगा

20मैं तेरे आगे आगे फ़रिश्ता भेजता हूँ जो
रास्ते में तेरी हिफ़ाज़त करेगा और तुझे उस जगह
तक ले जाएगा जो मैंने तेरे लिए तैयार की है।
21उस की मौजूदगी में एहतियात बरतना। उस
की सुनना, और उस की ख़िलाफ़वरज़ी न करना।
अगर तू सरकश हो जाए तो वह तुझे मुआफ़
नहीं करेगा, क्योंकि मेरा नाम उसमें हाज़िर होगा।
22लेकिन अगर तू उस की सुने और सब कुछ करे
जो मैं तुझे बताता हूँ तो मैं तेरे दुश्मनों का दुश्मन
और तेरे मुख़ालिफ़ों का मुख़ालिफ़ हूँगा।
23क्योंकि मेरा फ़रिश्ता तेरे आगे आगे चलेगा
और तुझे मुल्के-कनान तक पहुँचा देगा जहाँ
अमोरी, हित्ती, फ़रिज़्ज़ी, कनानी, हिव्वी और
यबूसी आबाद हैं। तब मैं उन्हें रूए-ज़मीन पर से
मिटा दूँगा। 24उनके माबूदों को सिजदा न करना,
न उनकी ख़िदमत करना। उनके रस्मो-रिवाज भी
न अपनाना बल्कि उनके बुतों को तबाह कर देना।
जिन सतूनों के सामने वह इबादत करते हैं उनको
भी टुकड़े टुकड़े कर डालना। 25रब अपने ख़ुदा की
ख़िदमत करना। फिर मैं तेरी ख़ुराक और पानी को
बरकत देकर तमाम बीमारियाँ तुझसे दूर करूँगा।
26फिर तेरे मुल्क में न किसी का बच्चा ज़ाया
होगा, न कोई बाँझ होगी। साथ ही मैं तुझे तवील
ज़िंदगी अता करूँगा।
27मैं तेरे आगे आगे दहशत फैलाऊँगा। जहाँ
भी तू जाएगा वहाँ मैं तमाम क़ौमों में अबतरी पैदा
करूँगा। मेरे सबब से तेरे सारे दुश्मन पलटकर
भाग जाएंगे। 28मैं तेरे आगे ज़ंबूर भेज दूँगा जो
हिव्वी, कनानी और हित्ती को मुल्क छोड़ने पर
मजबूर करेंगे। 29लेकिन जब तू वहाँ पहुँचेगा तो
मैं उन्हें एक ही साल में मुल्क से नहीं निकालूँगा।
वरना पूरा मुल्क वीरान हो जाएगा और जंगली
जानवर फैलकर तेरे लिए नुक़सान का बाइस बन
जाएंगे। 30इसलिए मैं तेरे पहुँचने पर मुल्क के
बाशिंदों को थोड़ा थोड़ा करके निकालता जाऊँगा।
इतने में तेरी तादाद बढ़ेगी और तू रफ़्ता रफ़्ता
मुल्क पर क़ब्ज़ा कर सकेगा।
31मैं तेरी सरहदें मुक़र्रर करूँगा। बहरे-क़ुलज़ुम
एक हद होगी और फ़िलिस्तियों का समुंदर दूसरी,
जुनूब का रेगिस्तान एक होगी और दरियाए-फ़ुरात
दूसरी। मैं मुल्क के बाशिंदों को तेरे क़ब्ज़े में कर
दूँगा, और तू उन्हें अपने आगे आगे मुल्क से दूर
करता जाएगा। 32लाज़िम है कि तू उनके साथ या
उनके माबूदों के साथ अहद न बाँधे। 33उनका तेरे
मुल्क में रहना मना है, वरना तू उनके सबब से मेरा
गुनाह करेगा। अगर तू उनके माबूदों की इबादत
करेगा तो यह तेरे लिए फंदा बन जाएगा'।"

रब इसराईल से अहद बाँधता है

24 रब ने मूसा से कहा, "तू, हारून,
नदब, अबीहू और इसराईल के 70
बुज़ुर्ग मेरे पास ऊपर आएँ। कुछ फ़ासले पर खड़े
होकर मुझे सिजदा करो। 2सिर्फ़ तू अकेला ही मेरे
क़रीब आ, दूसरे दूर रहें। और क़ौम के बाक़ी लोग
तेरे साथ पहाड़ पर न चढ़ें।"
3तब मूसा ने क़ौम के पास जाकर रब की तमाम
बातें और अहकाम पेश किए। जवाब में सबने
मिलकर कहा, "हम रब की इन तमाम बातों पर
अमल करेंगे।"
4तब मूसा ने रब की तमाम बातें लिख लीं।
अगले दिन वह सुबह-सवेरे उठा और पहाड़ के
पास गया। उसके दामन में उसने क़ुरबानगाह
बनाई। साथ ही उसने इसराईल के हर एक
क़बीले के लिए एक एक पत्थर का सतून खड़ा
किया। 5फिर उसने कुछ इसराईली नौजवानों को
क़ुरबानी पेश करने के लिए बुलाया ताकि वह रब
की ताज़ीम में भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ चढ़ाएँ
और जवान बैलों को सलामती की क़ुरबानी के
तौर पर पेश करें। 6मूसा ने क़ुरबानियों का ख़ून
जमा किया। उसका आधा हिस्सा उसने बासनों
में डाल दिया और आधा हिस्सा क़ुरबानगाह पर
छिड़क दिया।

7फिर उसने वह किताब ली जिसमें रब के साथ
अहद की तमाम शरायत दर्ज थीं और उसे क़ौम
को पढ़कर सुनाया। जवाब में उन्होंने कहा, “हम
रब की इन तमाम बातों पर अमल करेंगे। हम उस
की सुनेंगे।” 8इस पर मूसा ने बासनों में से ख़ून
लेकर उसे लोगों पर छिड़का और कहा, “यह ख़ून
उस अहद की तसदीक़ करता है जो रब ने तुम्हारे
साथ किया है और जो उस की तमाम बातों पर
मबनी है।”

9इसके बाद मूसा, हारून, नदब, अबीहू और
इसराईल के 70 बुज़ुर्ग सीना पहाड़ पर चढ़े।
10वहाँ उन्होंने इसराईल के ख़ुदा को देखा। लगता
था कि उसके पाँवों के नीचे संगे-लाजवर्द का-
सा तख़्ता था। वह आसमान की मानिंद साफ़ो-
शफ़्फ़ाफ़ था। 11अगरचे इसराईल के राहनुमाओं
ने यह सब कुछ देखा तो भी रब ने उन्हें हलाक
न किया, बल्कि वह अल्लाह को देखते रहे और
उसके हुज़ूर अहद का खाना खाते और पीते रहे।

पत्थर की तख़्तियाँ

12पहाड़ से उतरने के बाद रब ने मूसा से कहा,
“मेरे पास पहाड़ पर आकर कुछ देर के लिए ठहरे
रहना। मैं तुझे पत्थर की तख़्तियाँ दूँगा जिन पर
मैंने अपनी शरीअत और अहकाम लिखे हैं और जो
इसराईल की तालीमो-तरबियत के लिए ज़रूरी
हैं।”

13मूसा अपने मददगार यशुअ के साथ चल
पड़ा और अल्लाह के पहाड़ पर चढ़ गया। 14पहले
उसने बुज़ुर्गों से कहा, “हमारी वापसी के इंतज़ार
में यहाँ ठहरे रहो। हारून और हूर तुम्हारे पास
रहेंगे। कोई भी मामला हो तो लोग उन्हीं के पास
जाएँ।”

मूसा रब से मिलता है

15जब मूसा चढ़ने लगा तो पहाड़ पर बादल
छा गया। 16रब का जलाल कोहे-सीना पर उतर
आया। छः दिन तक बादल उस पर छाया रहा।
सातवें दिन रब ने बादल में से मूसा को बुलाया।
17रब का जलाल इसराईलियों को भी नज़र आता
था। उन्हें यों लगा जैसा कि पहाड़ की चोटी पर
तेज़ आग भड़क रही हो। 18चढ़ते चढ़ते मूसा
बादल में दाख़िल हुआ। वहाँ वह चालीस दिन और
चालीस रात रहा।

मुलाक़ात का ख़ैमा बनाने के लिए हदिये

25 रब ने मूसा से कहा, 2“इसराई-
लियों को बता कि वह हदिये लाकर
मुझे उठानेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश करें।
लेकिन सिर्फ़ उनसे हदिये क़बूल करो जो दिली
ख़ुशी से दें। 3उनसे यह चीज़ें हदिये के तौर
पर क़बूल करो : सोना, चाँदी, पीतल; 4नीले,
अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग का धागा, बारीक
कतान, बकरी के बाल, 5मेंढों की सुर्ख़ रँगी हुई
खालें, तख़स[a] की खालें, कीकर की लकड़ी,
6शमादान के लिए ज़ैतून का तेल, मसह करने के
लिए तेल और ख़ुशबूदार बख़ूर के लिए मसाले,
7अक़ीक़े-अहमर और दीगर जवाहिर जो इमामे-
आज़म के बालापोश और सीने के कीसे में जड़े
जाएंगे। 8इन चीज़ों से लोग मेरे लिए मक़दिस
बनाएँ ताकि मैं उनके दरमियान रहूँ। 9मैं तुझे
मक़दिस और उसके तमाम सामान का नमूना
दिखाऊँगा, क्योंकि तुम्हें सब कुछ ऐन उसी के
मुताबिक़ बनाना है।

अहद का संदूक़

10-12लोग कीकर की लकड़ी का संदूक़
बनाएँ। उस की लंबाई पौने चार फ़ुट हो जबकि
उस की चौड़ाई और ऊँचाई सवा दो दो फ़ुट हो।
पूरे संदूक़ पर अंदर और बाहर से ख़ालिस सोना
चढ़ाना। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द सोने की
झालर लगाना। संदूक़ को उठाने के लिए सोने
के चार कड़े ढालकर उन्हें संदूक़ के चारपाइयों

[a]ग़ालिबन इस मतरूक इबरानी लफ़्ज़ से मुराद कोई समुंदरी जानवर है।

पर लगाना। दोनों तरफ़ दो दो कड़े हों। 13फिर कीकर की दो लकड़ियाँ संदूक़ को उठाने के लिए तैयार करना। उन पर सोना चढ़ाकर 14उनको दोनों तरफ़ के कड़ों में डालना ताकि उनसे संदूक़ को उठाया जाए। 15यह लकड़ियाँ संदूक़ के इन कड़ों में पड़ी रहें। उन्हें कभी भी दूर न किया जाए। 16संदूक़ में शरीअत की वह दो तख़्तियाँ रखना जो मैं तुझे दूँगा।

17संदूक़ का ढकना ख़ालिस सोने का बनाना। उस की लंबाई पौने चार फ़ुट और चौड़ाई सवा दो फ़ुट हो। उसका नाम कफ़्फ़ारे का ढकना है। 18-19सोने से घड़कर दो करूबी फ़रिश्ते बनाए जाएँ जो ढकने के दोनों सिरों पर खड़े हों। यह दो फ़रिश्ते और ढकना एक ही टुकड़े से बनाने हैं। 20फ़रिश्तों के पर यों ऊपर की तरफ़ फैले हुए हों कि वह ढकने को पनाह दें। उनके मुँह एक दूसरे की तरफ़ किए हुए हों, और वह ढकने की तरफ़ देखें।

21ढकने को संदूक़ पर लगा, और संदूक़ में शरीअत की वह दो तख़्तियाँ रख जो मैं तुझे दूँगा। 22वहाँ ढकने के ऊपर दोनों फ़रिश्तों के दरमियान से मैं अपने आपको तुझ पर ज़ाहिर करके तुझसे हमकलाम हूँगा और तुझे इसराईलियों के लिए तमाम अहकाम दूँगा।

मख़सूस रोटियों की मेज़

23कीकर की लकड़ी की मेज़ बनाना। उस की लंबाई तीन फ़ुट, चौड़ाई डेढ़ फ़ुट और ऊँचाई सवा दो फ़ुट हो। 24उस पर ख़ालिस सोना चढ़ाना, और उसके इर्दगिर्द सोने की झालर लगाना। 25मेज़ की ऊपर की सतह पर चौखटा लगाना जिसकी ऊँचाई तीन इंच हो और जिस पर सोने की झालर लगी हो। 26सोने के चार कड़े ढालकर उन्हें चारों कोनों पर लगाना जहाँ मेज़ के पाए लगे हैं। 27यह कड़े मेज़ की सतह पर लगे चौखटे के नीचे लगाए जाएँ। उनमें वह लकड़ियाँ डालनी हैं जिनसे मेज़ को उठाया जाएगा। 28यह लकड़ियाँ भी कीकर की हों और उन पर सोना चढ़ाया जाए। उनसे मेज़ को उठाना है।

29उसके थाल, प्याले, मरतबान और मै की नज़रें पेश करने के बरतन ख़ालिस सोने से बनाना है। 30मेज़ पर वह रोटियाँ हर वक़्त मेरे हुज़ूर पड़ी रहें जो मेरे लिए मख़सूस हैं।

शमादान

31ख़ालिस सोने का शमादान भी बनाना। उसका पाया और डंडी घड़कर बनाना है। उस की प्यालियाँ जो फूलों और कलियों की शक्ल की होंगी पाए और डंडी के साथ एक ही टुकड़ा हों। 32डंडी से दाईं और बाईं तरफ़ तीन तीन शाख़ें निकलें। 33हर शाख़ पर तीन प्यालियाँ लगी हों जो बादाम की कलियों और फूलों की शक्ल की हों। 34शमादान की डंडी पर भी इस क़िस्म की प्यालियाँ लगी हों, लेकिन तादाद में चार। 35इनमें से तीन प्यालियाँ दाएँ-बाएँ की छः शाख़ों के नीचे लगी हों। वह यों लगी हों कि हर प्याली से दो शाख़ें निकलें। 36शाख़ें और प्यालियाँ बल्कि पूरा शमादान ख़ालिस सोने के एक ही टुकड़े से घड़कर बनाना है।

37शमादान के लिए सात चराग़ बनाकर उन्हें यों शाख़ों पर रखना कि वह सामने की जगह रौशन करें। 38बत्ती कतरने की क़ैंचियाँ और जलते कोयले के लिए छोटे बरतन भी ख़ालिस सोने से बनाए जाएँ। 39शमादान और उस सारे सामान के लिए पूरे 34 किलोग्राम ख़ालिस सोना इस्तेमाल किया जाए। 40ग़ौर कर कि सब कुछ ऐन उस नमूने के मुताबिक़ बनाया जाए जो मैं तुझे यहाँ पहाड़ पर दिखाता हूँ।

मुलाक़ात का ख़ैमा

26 मुक़द्दस ख़ैमे के लिए दस परदे बनाना। उनके लिए बारीक कतान और नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग का धागा इस्तेमाल करना। परदों में किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से करूबी फ़रिश्तों का

डिज़ायन बनवाना। 2हर परदे की लंबाई 42 फ़ुट
और चौड़ाई 6 फ़ुट हो। 3पाँच परदों के लंबे हाशिये
एक दूसरे के साथ जोड़े जाएँ और इसी तरह बाक़ी
पाँच भी। यों दो बड़े टुकड़े बन जाएंगे। 4दोनों
टुकड़ों को एक दूसरे के साथ मिलाने के लिए नीले
धागे के हलक़े बनाना। यह हलक़े हर टुकड़े के
42 फ़ुटवाले एक किनारे पर लगाए जाएँ, 5एक
टुकड़े के हाशिये पर 50 हलक़े और दूसरे पर भी
उतने ही हलक़े। इन दो हाशियों के हलक़े एक
दूसरे के आमने-सामने हों। 6फिर सोने की 50
हुकें बनाकर उनसे आमने-सामने के हलक़े एक
दूसरे के साथ मिलाना। यों दोनों टुकड़े जुड़कर
ख़ैमे का काम देंगे।

7बकरी के बालों से भी 11 परदे बनाना जिन्हें
कपड़ेवाले ख़ैमे के ऊपर रखा जाए। 8हर परदे
की लंबाई 45 फ़ुट और चौड़ाई 6 फ़ुट हो। 9पाँच
परदों के लंबे हाशिये एक दूसरे के साथ जोड़े जाएँ
और इसी तरह बाक़ी छः भी। इन छः परदों के छटे
परदे को एक दफ़ा तह करना। यह सामनेवाले
हिस्से से लटके।

10बकरी के बाल के इन दोनों टुकड़ों को
भी मिलाना है। इसके लिए हर टुकड़े के 45
फ़ुटवाले एक किनारे पर पचास पचास हलक़े
लगाना। 11फिर पीतल की 50 हुकें बनाकर उनसे
दोनों हिस्से मिलाना। 12जब बकरियों के बालों
का यह ख़ैमा कपड़े के ख़ैमे के ऊपर लगाया
जाएगा तो आधा परदा बाक़ी रहेगा। वह ख़ैमे की
पिछली तरफ़ लटका रहे। 13ख़ैमे के दाईं और
बाईं तरफ़ बकरी के बालों का ख़ैमा कपड़े के
ख़ैमे की निसबत डेढ़ डेढ़ फ़ुट लंबा होगा। यों वह
दोनों तरफ़ लटके हुए कपड़े के ख़ैमे को महफ़ूज़
रखेगा।

14एक दूसरे के ऊपर के इन दोनों ख़ैमों की
हिफ़ाज़त के लिए दो ग़िलाफ़ बनाने हैं। बकरी के
बालों के ख़ैमे पर मेंढों की सुर्ख़ रँगी हुई खालें
जोड़कर रखी जाएँ और उन पर तख़स की खालें
मिलाकर रखी जाएँ।

15कीकर की लकड़ी के तख़्ते बनाना जो खड़े
किए जाएँ ताकि ख़ैमे की दीवारों का काम दें।
16हर तख़्ते की ऊँचाई 15 फ़ुट हो और चौड़ाई
सवा दो फ़ुट। 17हर तख़्ते के नीचे दो दो चूलें
हों। यह चूलें हर तख़्ते को उसके पाइयों के साथ
जोड़ेंगी ताकि तख़्ता खड़ा रहे। 18ख़ैमे की जुनूबी
दीवार के लिए 20 तख़्तों की ज़रूरत है 19और
साथ ही चाँदी के 40 पाइयों की। उन पर तख़्ते
खड़े किए जाएंगे। हर तख़्ते के नीचे दो पाए होंगे,
और हर पाए में एक चूल लगेगी। 20इसी तरह
ख़ैमे की शिमाली दीवार के लिए भी 20 तख़्तों
की ज़रूरत है 21और साथ ही चाँदी के 40 पाइयों
की। वह भी तख़्तों को खड़ा करने के लिए हैं। हर
तख़्ते के नीचे दो पाए होंगे। 22ख़ैमे की पिछली
यानी मग़रिबी दीवार के लिए छः तख़्ते बनाना।
23इस दीवार को शिमाली और जुनूबी दीवारों के
साथ जोड़ने के लिए कोनेवाले दो तख़्ते बनाना।
24इन दो तख़्तों में नीचे से लेकर ऊपर तक कोना
हो ताकि एक से शिमाली दीवार मग़रिबी दीवार
के साथ जुड़ जाए और दूसरे से जुनूबी दीवार
मग़रिबी दीवार के साथ। इनके ऊपर के सिरे कड़ों
से मज़बूत किए जाएँ। 25यों पिछले यानी मग़रिबी
तख़्तों की पूरी तादाद 8 होगी और इनके लिए
चाँदी के पाइयों की तादाद 16, हर तख़्ते के नीचे
दो दो पाए होंगे।

26-27इसके अलावा कीकर की लकड़ी के
शहतीर बनाना, तीनों दीवारों के लिए पाँच पाँच
शहतीर। वह हर दीवार के तख़्तों पर यों लगाए
जाएँ कि वह उन्हें एक दूसरे के साथ मिलाएँ।
28दरमियानी शहतीर दीवार की आधी ऊँचाई पर
दीवार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लगाया
जाए। 29शहतीरों को तख़्तों के साथ लगाने के
लिए सोने के कड़े बनाकर तख़्तों में लगाना।
तमाम तख़्तों और शहतीरों पर सोना चढ़ाना।

30पूरे मुक़द्दस ख़ैमे को उसी नमूने के मुताबिक़
बनाना जो मैं तुझे पहाड़ पर दिखाता हूँ। 31अब
एक और परदा बनाना। इसके लिए भी बारीक
कतान और नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग

का धागा इस्तेमाल करना। उस पर भी किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से करूबी फ़रिश्तों का डिज़ायन बनवाना। 32इसे सोने की हुकों से कीकर की लकड़ी के चार सतूनों से लटकाना। इन सतूनों पर सोना चढ़ाया जाए और वह चाँदी के पाइयों पर खड़े हों। 33यह परदा मुक़द्दस कमरे को मुक़द्दसतरीन कमरे से अलग करेगा जिसमें अहद का संदूक़ पड़ा रहेगा। परदे को लटकाने के बाद उसके पीछे मुक़द्दसतरीन कमरे में अहद का संदूक़ रखना। 34फिर अहद के संदूक़ पर कफ़्फ़ारे का ढकना रखना।

35जिस मेज़ पर मेरे लिए मख़सूस की गई रोटियाँ पड़ी रहती हैं वह परदे के बाहर मुक़द्दस कमरे में शिमाल की तरफ़ रखी जाए। उसके मुक़ाबिल जुनूब की तरफ़ शमादान रखा जाए।

36फिर ख़ैमे के दरवाज़े के लिए भी परदा बनाया जाए। इसके लिए भी बारीक कतान और नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग का धागा इस्तेमाल किया जाए। इस पर कढ़ाई का काम किया जाए। 37इस परदे को सोने की हुकों से कीकर की लकड़ी के पाँच सतूनों से लटकाना। इन सतूनों पर भी सोना चढ़ाया जाए, और वह पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

जानवरों को चढ़ाने की क़ुरबानगाह

27 कीकर की लकड़ी की क़ुरबानगाह बनाना। उस की ऊँचाई साढ़े चार फ़ुट हो जबकि उस की लंबाई और चौड़ाई साढ़े सात सात फ़ुट हो। 2उसके ऊपर चारों कोनों में से एक एक सींग निकले। सींग और क़ुरबानगाह एक ही टुकड़े के हों। सब पर पीतल चढ़ाना। 3उसका तमाम साज़ो-सामान और बरतन भी पीतल के हों यानी राख को उठाकर ले जाने की बालटियाँ, बेलचे, काँटे, जलते हुए कोयले के लिए बरतन और छिड़काव के कटोरे।

4क़ुरबानगाह को उठाने के लिए पीतल का जंगला बनाना जो ऊपर से खुला हो। जंगले के चारों कोनों पर कड़े लगाए जाएँ। 5क़ुरबानगाह की आधी ऊँचाई पर किनारा लगाना, और क़ुरबानगाह को जंगले में इस किनारे तक रखा जाए। 6उसे उठाने के लिए कीकर की दो लकड़ियाँ बनाना जिन पर पीतल चढ़ाना है। 7उनको क़ुरबानगाह के दोनों तरफ़ के कड़ों में डाल देना।

8पूरी क़ुरबानगाह लकड़ी की हो, लेकिन अंदर से खोखली हो। उसे ऐन उस नमूने के मुताबिक़ बनाना जो मैं तुझे पहाड़ पर दिखाता हूँ।

ख़ैमे का सहन

9मुक़द्दस ख़ैमे के लिए सहन बनाना। उस की चारदीवारी बारीक कतान के कपड़े से बनाई जाए। चारदीवारी की लंबाई जुनूब की तरफ़ 150 फ़ुट हो। 10कपड़े को चाँदी की हुकों और पट्टियों से लकड़ी के 20 खंबों के साथ लगाया जाए। हर खंबा पीतल के पाए पर खड़ा हो। 11चारदीवारी शिमाल की तरफ़ भी इसी की मानिंद हो। 12ख़ैमे के पीछे मग़रिब की तरफ़ चारदीवारी की चौड़ाई 75 फ़ुट हो और कपड़ा लकड़ी के 10 खंबों के साथ लगाया जाए। यह खंबे भी पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

13सामने, मशरिक़ की तरफ़ जहाँ से सूरज तुलू होता है चारदीवारी की चौड़ाई भी 75 फ़ुट हो। 14-15यहाँ चारदीवारी का दरवाज़ा हो। कपड़ा दरवाज़े के दाईं तरफ़ साढ़े 22 फ़ुट चौड़ा हो और उसके बाईं तरफ़ भी उतना ही चौड़ा। उसे दोनों तरफ़ तीन तीन लकड़ी के खंबों के साथ लगाया जाए जो पीतल के पाइयों पर खड़े हों। 16दरवाज़े का परदा 30 फ़ुट चौड़ा बनाना। वह नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से बनाया जाए, और उस पर कढ़ाई का काम हो। यह कपड़ा लकड़ी के चार खंबों के साथ लगाया जाए। वह भी पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

17तमाम खंबे पीतल के पाइयों पर खड़े हों और कपड़ा चाँदी की हुकों और पट्टियों से हर खंबे के साथ लगाया जाए। 18चारदीवारी की लंबाई

150 फ़ुट, चौड़ाई 75 फ़ुट और ऊँचाई साढ़े
7 फ़ुट हो। खंबों के तमाम पाए पीतल के हों।
19जो भी साज़ो-सामान मुक़द्दस ख़ैमे में इस्तेमाल
किया जाता है वह सब पीतल का हो। ख़ैमे और
चारदीवारी की मेख़ें भी पीतल की हों।

शमादान का तेल

20इसराईलियों को हुक्म देना कि वह तेरे पास
कूटे हुए ज़ैतूनों का ख़ालिस तेल लाएँ ताकि
मुक़द्दस कमरे के शमादान के चराग़ मुतवातिर
जलते रहें। 21हारून और उसके बेटे शमादान को
मुलाक़ात के ख़ैमे के मुक़द्दस कमरे में रखें, उस
परदे के सामने जिसके पीछे अहद का संदूक़ है।
उसमें वह तेल डालते रहें ताकि वह रब के सामने
शाम से लेकर सुबह तक जलता रहे। इसराईलियों
का यह उसूल अबद तक क़ायम रहे।

इमामों के लिबास

28 अपने भाई हारून और उसके बेटों
नदब, अबीहू, इलियज़र और इतमर
को बुला। मैंने उन्हें इसराईलियों में से चुन लिया
है ताकि वह इमामों की हैसियत से मेरी ख़िदमत
करें। 2अपने भाई हारून के लिए मुक़द्दस लिबास
बनवाना जो पुरवक़ार और शानदार हों। 3लिबास
बनाने की ज़िम्मेदारी उन तमाम लोगों को देना जो
ऐसे कामों में माहिर हैं और जिनको मैंने हिकमत
की रूह से भर दिया है। क्योंकि जब हारून को
मख़सूस किया जाएगा और वह मुक़द्दस ख़ैमे की
ख़िदमत सरंजाम देगा तो उसे इन कपड़ों की
ज़रूरत होगी।

4उसके लिए यह लिबास बनाने हैं : सीने का
कीसा, बालापोश, चोग़ा, बुना हुआ ज़ेरजामा,
पगड़ी और कमरबंद। यह कपड़े अपने भाई
हारून और उसके बेटों के लिए बनवाने हैं ताकि
वह इमाम के तौर पर ख़िदमत कर सकें। 5इन
कपड़ों के लिए सोना और नीले, अरग़वानी
और क़िरमिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान
इस्तेमाल किया जाए।

हारून का बालापोश

6बालापोश को भी सोने और नीले, अरग़वानी
और क़िरमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान
से बनाना है। उस पर किसी माहिर कारीगर से
कढ़ाई का काम करवाया जाए। 7उस की दो
पट्टियाँ हों जो कंधों पर रखकर सामने और पीछे से
बालापोश के साथ लगी हों। 8इसके अलावा एक
पटका बुनना है जिससे बालापोश को बाँधा जाए
और जो बालापोश के साथ एक टुकड़ा हो। उसके
लिए भी सोना, नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी
रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल किया
जाए।

9फिर अक़ीक़े-अहमर के दो पत्थर चुनकर उन
पर इसराईल के बारह बेटों के नाम कंदा करना।
10हर जौहर पर छः छः नाम उनकी पैदाइश की
तरतीब के मुताबिक़ कंदा किए जाएँ। 11यह नाम
उस तरह जौहरों पर कंदा किए जाएँ जिस तरह
मुहर कंदा की जाती है। फिर दोनों जौहर सोने के
ख़ानों में जड़कर 12बालापोश की दो पट्टियों पर
ऐसे लगाना कि कंधों पर आ जाएँ। जब हारून
मेरे हुज़ूर आएगा तो जौहरों पर के यह नाम उसके
कंधों पर होंगे और मुझे इसराईलियों की याद
दिलाएँगे।

13सोने के ख़ाने बनाना 14और ख़ालिस सोने
की दो ज़ंजीरें जो डोरी की तरह गुँधी हुई हों। फिर
इन दो ज़ंजीरों को सोने के ख़ानों के साथ लगाना।

सीने का कीसा

15सीने के लिए कीसा बनाना। उसमें वह क़ुरे
पड़े रहें जिनकी मारिफ़त मेरी मरज़ी मालूम की
जाएगी। माहिर कारीगर उसे उन्हीं चीज़ों से बनाए
जिनसे हारून का बालापोश बनाया गया है यानी
सोने और नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग के
धागे और बारीक कतान से। 16जब कपड़े को एक
दफ़ा तह किया गया हो तो कीसे की लंबाई और
चौड़ाई नौ नौ इंच हो।

17उस पर चार क़तारों में जवाहिर जड़-
ना। हर क़तार में तीन तीन जौहर हों। पहली

क़तार में लाल,[a] ज़बरजद[b] और ज़ुमुर्रद। 18दूसरी
में फ़ीरोज़ा, संगे-लाजवर्द[c] और हजरुल-क़मर।[d]
19तीसरी में ज़रक़ोन,[e] अक़ीक़[f] और याक़ूते-
अरग़वानी।[g] 20चौथी में पुखराज,[h] अक़ीक़े-
अहमर[i] और यशब।[j] हर जौहर सोने के ख़ाने में
जड़ा हुआ हो। 21यह बारह जवाहिर इसराईल के
बारह क़बीलों की नुमाइंदगी करते हैं। एक एक
जौहर पर एक क़बीले का नाम कंदा किया जाए।
यह नाम उस तरह कंदा किए जाएँ जिस तरह मुहर
कंदा की जाती है।

22सीने के कीसे पर ख़ालिस सोने की दो
ज़ंजीरें लगाना जो डोरी की तरह गुँधी हुई हों।
23उन्हें लगाने के लिए दो कड़े बनाकर कीसे
के ऊपर के दो कोनों पर लगाना। 24अब दोनों
ज़ंजीरें उन दो कड़ों से लगाना। 25उनके दूसरे सिरे
बालापोश की कंधोंवाली पट्टियों के दो ख़ानों के
साथ जोड़ देना, फिर सामने की तरफ़ लगाना।
26कीसे के निचले दो कोनों पर भी सोने के दो
कड़े लगाना। वह अंदर, बालापोश की तरफ़ लगे
हों। 27अब दो और कड़े बनाकर बालापोश की
कंधोंवाली पट्टियों पर लगाना। यह भी सामने की
तरफ़ लगे हों लेकिन नीचे, बालापोश के पटके के
ऊपर ही। 28सीने के कीसे के निचले कड़े नीली
डोरी से बालापोश के इन निचले कड़ों के साथ
बाँधे जाएँ। यों कीसा पटके के ऊपर अच्छी तरह
सीने के साथ लगा रहेगा।

29जब भी हारून मक़दिस में दाख़िल होकर रब
के हुज़ूर आएगा वह इसराईली क़बीलों के नाम
अपने दिल पर सीने के कीसे की सूरत में साथ ले
जाएगा। यों वह क़ौम की याद दिलाता रहेगा।

30सीने के कीसे में दोनों क़ुरे बनाम ऊरीम और
तुम्मीम रखे जाएँ। वह भी मक़दिस में रब के
सामने आते वक़्त हारून के दिल पर हों। यों जब
हारून रब के हुज़ूर होगा तो रब की मरज़ी पूछने
का वसीला हमेशा उसके दिल पर होगा।

हारून का चोग़ा

31चोग़ा भी बुनना। वह पूरी तरह नीले धागे से
बनाया जाए। चोग़े को बालापोश से पहले पहना
जाए। 32उसके गरेबान को बुने हुए कालर से
मज़बूत किया जाए ताकि वह न फटे। 33नीले,
अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग के धागे से अनार
बनाकर उन्हें चोग़े के दामन में लगा देना। उनके
दरमियान सोने की घंटियाँ लगाना। 34दामन में
अनार और घंटियाँ बारी बारी लगाना।

35हारून ख़िदमत करते वक़्त हमेशा चोग़ा
पहने। जब वह मक़दिस में रब के हुज़ूर आएगा
और वहाँ से निकलेगा तो घंटियाँ सुनाई देंगी। फिर
वह नहीं मरेगा।

माथे पर छोटी तख़्ती, ज़ेरजामा और पगड़ी

36ख़ालिस सोने की तख़्ती बनाकर उस पर यह
अलफ़ाज़ कंदा करना, 'रब के लिए मख़सूसो-
मुक़द्दस।' यह अलफ़ाज़ यों कंदा किए जाएँ जिस
तरह मुहर कंदा की जाती है। 37उसे नीली डोरी
से पगड़ी के सामनेवाले हिस्से से लगाया जाए
38ताकि वह हारून के माथे पर पड़ी रहे। जब
भी वह मक़दिस में जाए तो यह तख़्ती साथ
हो। जब इसराईली अपने नज़राने लाकर रब
के लिए मख़सूस करें लेकिन किसी ग़लती के
बाइस क़ुसूरवार हों तो उनका यह क़ुसूर हारून
पर मुंतक़िल होगा। इसलिए यह तख़्ती हर वक़्त
उसके माथे पर हो ताकि रब इसराईलियों को
क़बूल कर ले।

---

[a] या एक क़िस्म का सुर्ख़ अक़ीक़। याद रहे कि चूँकि क़दीम ज़माने के अकसर जवाहिरात के नाम मतरूक हैं या उनका मतलब बदल गया है, इसलिए उनका मुख़्तलिफ़ तरजुमा हो सकता है।

[b] peridot
[c] lapis lazuli
[d] moonstone
[e] hyacinth
[f] agate
[g] amethyst
[h] topas
[i] carnelian
[j] jasper

39ज़ेरजामे को बारीक कतान से बुनना और
इस तरह पगड़ी भी। फिर कमरबंद बनाना। उस
पर कढ़ाई का काम किया जाए।

बाक़ी लिबास

40हारून के बेटों के लिए भी ज़ेरजामे, कमरबंद
और पगड़ियाँ बनाना ताकि वह पुरवक़ार और
शानदार नज़र आएँ। 41यह सब अपने भाई हारून
और उसके बेटों को पहनाना। उनके सरों पर तेल
उंडेलकर उन्हें मसह करना। यों उन्हें उनके ओहदे
पर मुक़र्रर करके मेरी ख़िदमत के लिए मख़सूस
करना।

42उनके लिए कतान के पाजामे भी बनाना
ताकि वह ज़ेरजामे के नीचे नंगे न हों। उनकी
लंबाई कमर से रान तक हो। 43जब भी हारून
और उसके बेटे मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल हों
तो उन्हें यह पाजामे पहनने हैं। इसी तरह जब
उन्हें मुक़द्दस कमरे में ख़िदमत करने के लिए
क़ुरबानगाह के पास आना होता है तो वह यह
पहनें, वरना वह क़ुसूरवार ठहरकर मर जाएंगे। यह
हारून और उस की औलाद के लिए एक अबदी
उसूल है।

इमामों की मख़सूसियत

29 इमामों को मक़दिस में मेरी ख़िदमत
के लिए मख़सूस करने का यह तरीक़ा
है :

एक जवान बैल और दो बेऐब मेंढे चुन लेना।
2बेहतरीन मैदे से तीन क़िस्म की चीज़ें पकाना
जिनमें ख़मीर न हो। पहले, सादा रोटी। दूसरे,
रोटी जिसमें तेल डाला गया हो। तीसरे, रोटी जिस
पर तेल लगाया गया हो। 3यह चीज़ें टोकरी में
रखकर जवान बैल और दो मेंढों के साथ रब को
पेश करना। 4फिर हारून और उसके बेटों को
मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर लाकर ग़ुस्ल
कराना। 5इसके बाद ज़ेरजामा, चोग़ा, बालापोश
और सीने का कीसा लेकर हारून को पहनाना।
बालापोश को उसके महारत से बुने हुए पटके के
ज़रीए बाँधना। 6उसके सर पर पगड़ी बाँधकर उस
पर सोने की मुक़द्दस तख़्ती लगाना। 7हारून के
सर पर मसह का तेल उंडेलकर उसे मसह करना।

8फिर उसके बेटों को आगे लाकर ज़ेर-
जामा पहनाना। 9उनके पगड़ियाँ और कमर-
बंद बाँधना। यों तू हारून और उसके बेटों को उनके
मंसब पर मुक़र्रर करना। सिर्फ़ वह और उनकी
औलाद हमेशा तक मक़दिस में मेरी ख़िदमत करते
रहें।

10बैल को मुलाक़ात के ख़ैमे के सामने लाना।
हारून और उसके बेटे उसके सर पर अपने हाथ
रखें। 11उसे ख़ैमे के दरवाज़े के सामने रब के
हुज़ूर ज़बह करना। 12बैल के ख़ून में से कुछ
लेकर अपनी उँगली से क़ुरबानगाह के सींगों पर
लगाना और बाक़ी ख़ून क़ुरबानगाह के पाए पर
उंडेल देना। 13अंतड़ियों पर की तमाम चरबी,
जोड़कलेजी और दोनों गुरदे उनकी चरबी समेत
लेकर क़ुरबानगाह पर जला देना। 14लेकिन बैल
के गोश्त, खाल और अंतड़ियों के गोबर को
ख़ैमागाह के बाहर जला देना। यह गुनाह की
क़ुरबानी है।

15इसके बाद पहले मेंढे को ले आना। हारून
और उसके बेटे अपने हाथ मेंढे के सर पर रखें।
16उसे ज़बह करके उसका ख़ून क़ुरबानगाह के
चार पहलुओं पर छिड़कना। 17मेंढे को टुकड़े
टुकड़े करके उस की अंतड़ियों और पिंडलियों को
धोना। फिर उन्हें सर और बाक़ी टुकड़ों के साथ
मिलाकर 18पूरे मेंढे को क़ुरबानगाह पर जला
देना। जलनेवाली यह क़ुरबानी रब के लिए भस्म
होनेवाली क़ुरबानी है, और उस की ख़ुशबू रब को
पसंद है।

19अब दूसरे मेंढे को ले आना। हारून और
उसके बेटे अपने हाथ मेंढे के सर पर रखें।
20उसको ज़बह करना। उसके ख़ून में से कुछ
लेकर हारून और उसके बेटों के दहने कान की लौ
पर लगाना। इसी तरह ख़ून को उनके दहने हाथ
और दहने पाँव के अंगूठों पर भी लगाना। बाक़ी
ख़ून क़ुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कना।

21जो ख़ून क़ुरबानगाह पर पड़ा है उसमें से कुछ
लेकर और मसह के तेल के साथ मिलाकर हारून
और उसके कपड़ों पर छिड़कना। इसी तरह उसके
बेटों और उनके कपड़ों पर भी छिड़कना। यों
वह और उसके बेटे ख़िदमत के लिए मख़सूसो-
मुक़द्दस हो जाएंगे।
22इस मेंढे का ख़ास मक़सद यह है कि हारून
और उसके बेटों को मक़दिस में ख़िदमत करने का
इख़्तियार और ओहदा दिया जाए। मेंढे की चरबी,
दुम, अंतड़ियों पर की सारी चरबी, जोड़कलेजी,
दोनों गुरदे उनकी चरबी समेत और दहनी रान
अलग करनी है। 23उस टोकरी में से जो रब
के हुज़ूर यानी ख़ैमे के दरवाज़े पर पड़ी है एक
सादा रोटी, एक रोटी जिसमें तेल डाला गया
हो और एक रोटी जिस पर तेल लगाया गया
हो निकालना। 24मेंढे से अलग की गई चीज़ें
और बेख़मीरी रोटी की टोकरी की यह चीज़ें
लेकर हारून और उसके बेटों के हाथों में देना,
और वह उन्हें हिलानेवाली क़ुरबानी के तौर पर
रब के सामने हिलाएँ। 25फिर यह चीज़ें उनसे
वापस लेकर भस्म होनेवाली क़ुरबानी के साथ
क़ुरबानगाह पर जला देना। यह रब के लिए
जलनेवाली क़ुरबानी है, और उस की ख़ुशबू रब
को पसंद है।
26अब उस मेंढे का सीना लेना जिस-
की मारिफ़त हारून को इमामे-आज़म का
इख़्तियार दिया जाता है। सीने को भी हिलानेवाली
क़ुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाना। यह
सीना क़ुरबानी का तेरा हिस्सा होगा। 27यों तुझे
हारून और उसके बेटों की मख़सूसियत के लिए
मुस्तामल मेंढे के टुकड़े मख़सूसो-मुक़द्दस करने
हैं। उसके सीने को रब के सामने हिलानेवाली
क़ुरबानी के तौर पर हिलाया जाए और उस
की रान को उठानेवाली क़ुरबानी के तौर पर
उठाया जाए। 28हारून और उस की औलाद को
इसराईलियों की तरफ़ से हमेशा तक यह मिलने
का हक़ है। जब भी इसराईली रब को अपनी
सलामती की क़ुरबानियाँ पेश करें तो इमामों को
यह दो टुकड़े मिलेंगे।
29जब हारून फ़ौत हो जाएगा तो उसके
मुक़द्दस लिबास उस की औलाद में से उस मर्द को
देने हैं जिसे मसह करके हारून की जगह मुक़र्रर
किया जाएगा। 30जो बेटा उस की जगह मुक़र्रर
किया जाएगा और मक़दिस में ख़िदमत करने के
लिए मुलाक़ात के ख़ैमे में आएगा वह यह लिबास
सात दिन तक पहने रहे।
31जो मेंढा हारून और उसके बेटों की
मख़सूसियत के लिए ज़बह किया गया है उसे
मुक़द्दस जगह पर उबालना है। 32फिर हारून और
उसके बेटे मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर मेंढे
का गोश्त और टोकरी की बेख़मीरी रोटियाँ खाएँ।
33वह यह चीज़ें खाएँ जिनसे उन्हें गुनाहों का
कफ़्फ़ारा और इमाम का ओहदा मिला है। लेकिन
कोई और यह न खाए, क्योंकि यह मख़सूसो-
मुक़द्दस हैं। 34और अगर अगली सुबह तक इस
गोश्त या रोटी में से कुछ बच जाए तो उसे जलाया
जाए। उसे खाना मना है, क्योंकि वह मुक़द्दस है।
35जब तू हारून और उसके बेटों को इमाम
मुक़र्रर करेगा तो ऐन मेरी हिदायत पर अमल
करना। यह तक़रीब सात दिन तक मनाई जाए।
36इसके दौरान गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर
रोज़ाना एक जवान बैल ज़बह करना। इससे तू
क़ुरबानगाह का कफ़्फ़ारा देकर उसे हर तरह
की नापाकी से पाक करेगा। इसके अलावा उस
पर मसह का तेल उंडेलना। इससे वह मेरे लिए
मख़सूसो-मुक़द्दस हो जाएगा। 37सात दिन तक
क़ुरबानगाह का कफ़्फ़ारा देकर उसे पाक-साफ़
करना और उसे तेल से मख़सूसो-मुक़द्दस करना।
फिर क़ुरबानगाह निहायत मुक़द्दस होगी। जो भी
उसे छुएगा वह भी मख़सूसो-मुक़द्दस हो जाएगा।

रोज़मर्रा की क़ुरबानियाँ

38रोज़ाना एक एक साल के दो भेड़ के नर
बच्चे क़ुरबानगाह पर जला देना, 39एक को सुबह
के वक़्त, दूसरे को सूरज के ग़ुरूब होने के ऐन

बाद। 40पहले जानवर के साथ डेढ़ किलोग्राम
बेहतरीन मैदा पेश किया जाए जो कूटे हुए ज़ैतूनों
के एक लिटर तेल के साथ मिलाया गया हो। मै
की नज़र के तौर पर एक लिटर मै भी क़ुरबानगाह
पर उंडेलना। 41दूसरे जानवर के साथ भी ग़ल्ला
और मै की यह दो नज़रें पेश की जाएँ। ऐसी
क़ुरबानी की ख़ुशबू रब को पसंद है।

42लाज़िम है कि आनेवाली तमाम नसलें भस्म
होनेवाली यह क़ुरबानी बाक़ायदगी से मुक़द्दस
ख़ैमे के दरवाज़े पर रब के हुज़ूर चढ़ाएँ। वहाँ
मैं तुमसे मिला करूँगा और तुमसे हमकलाम
हूँगा। 43वहाँ मैं इसराईलियों से भी मिला करूँगा,
और वह जगह मेरे जलाल से मख़सूसो-मुक़द्दस
हो जाएगी। 44यों मैं मुलाक़ात के ख़ैमे और
क़ुरबानगाह को मख़सूस करूँगा और हारून और
उसके बेटों को मख़सूस करूँगा ताकि वह इमामों
की हैसियत से मेरी ख़िदमत करें।

45तब मैं इसराईलियों के दरमियान रहूँगा और
उनका ख़ुदा हूँगा। 46वह जान लेंगे कि मैं रब
उनका ख़ुदा हूँ, कि मैं उन्हें मिसर से निकाल लाया
ताकि उनके दरमियान सुकूनत करूँ। मैं रब उनका
ख़ुदा हूँ।

बख़ूर जलाने की क़ुरबानगाह

30 कीकर की लकड़ी की क़ुरबान-
गाह बनाना जिस पर बख़ूर जलाया
जाए। 2वह डेढ़ फ़ुट लंबी, इतनी ही चौड़ी और
तीन फ़ुट ऊँची हो। उसके चारों कोनों में से सींग
निकलें जो क़ुरबानगाह के साथ एक ही टुकड़े
से बनाए गए हों। 3उस की ऊपर की सतह,
उसके चार पहलुओं और उसके सींगों पर ख़ालिस
सोना चढ़ाना। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द सोने की
झालर हो। 4सोने के दो कड़े बनाकर इन्हें उस
झालर के नीचे एक दूसरे के मुक़ाबिल पहलुओं
पर लगाना। इन कड़ों में क़ुरबानगाह को उठाने की
लकड़ियाँ डाली जाएँगी। 5यह लकड़ियाँ कीकर
की हों, और उन पर भी सोना चढ़ाना।

6इस क़ुरबानगाह को ख़ैमे के मुक़द्दस कमरे में
उस परदे के सामने रखना जिसके पीछे अहद का
संदूक़ और उसका ढकना होंगे, वह ढकना जहाँ
मैं तुझसे मिला करूँगा। 7जब हारून हर सुबह
शमादान के चराग़ तैयार करे उस वक़्त वह उस
पर ख़ुशबूदार बख़ूर जलाए। 8सूरज के ग़ुरूब होने
के बाद भी जब वह दुबारा चराग़ों की देख-भाल
करेगा तो वह साथ साथ बख़ूर जलाए। यों रब के
सामने बख़ूर मुतवातिर जलता रहे। लाज़िम है कि
बाद की नसलें भी इस उसूल पर क़ायम रहें।

9इस क़ुरबानगाह पर सिर्फ़ जायज़ बख़ूर
इस्तेमाल किया जाए। इस पर न तो जानवरों की
क़ुरबानियाँ चढ़ाई जाएँ, न ग़ल्ला या मै की नज़रें
पेश की जाएँ। 10हारून साल में एक दफ़ा उसका
कफ़्फ़ारा देकर उसे पाक करे। इसके लिए वह
कफ़्फ़ारे के दिन उस क़ुरबानी का कुछ ख़ून सींगों
पर लगाए। यह उसूल भी अबद तक क़ायम रहे।
यह क़ुरबानगाह रब के लिए निहायत मुक़द्दस है।”

मर्दुमशुमारी के पैसे

11रब ने मूसा से कहा, 12“जब भी तू
इसराईलियों की मर्दुमशुमारी करे तो लाज़िम है
कि जिनका शुमार किया गया हो वह रब को
अपनी जान का फ़िद्या दें ताकि उनमें वबा न फैले।
13जिस जिसका शुमार किया गया हो वह चाँदी के
आधे सिक्के के बराबर रक़म उठानेवाली क़ुरबानी
के तौर पर दे। सिक्के का वज़न मक़दिस के
सिक्कों के बराबर हो। यानी चाँदी के सिक्के का
वज़न 11 ग्राम हो, इसलिए छः ग्राम चाँदी देनी
है। 14जिसकी भी उम्र 20 साल या इससे ज़ायद
हो वह रब को यह रक़म उठानेवाली क़ुरबानी के
तौर पर दे। 15अमीर और ग़रीब दोनों इतना ही दें,
क्योंकि यही नज़राना रब को पेश करने से तुम्हारी
जान का कफ़्फ़ारा दिया जाता है। 16कफ़्फ़ारे
की यह रक़म मुलाक़ात के ख़ैमे की ख़िदमत के
लिए इस्तेमाल करना। फिर यह नज़राना रब को
याद दिलाता रहेगा कि तुम्हारी जानों का कफ़्फ़ारा
दिया गया है।”

धोने का हौज़

17रब ने मूसा से कहा, 18“पीतल का ढाँचा
बनाना जिस पर पीतल का हौज़ बनाकर रखना है।
यह हौज़ धोने के लिए है। उसे सहन में मुलाक़ात
के ख़ैमे और जानवरों को चढ़ाने की क़ुरबानगाह
के दरमियान रखकर पानी से भर देना। 19हारून
और उसके बेटे अपने हाथ-पाँव धोने के लिए
उसका पानी इस्तेमाल करें। 20मुलाक़ात के ख़ैमे
में दाख़िल होने से पहले ही वह अपने आपको
धोएँ वरना वह मर जाएंगे। इसी तरह जब भी
वह ख़ैमे के बाहर की क़ुरबानगाह पर जानवरों
की क़ुरबानियाँ चढ़ाएँ 21तो लाज़िम है कि पहले
हाथ-पाँव धो लें, वरना वह मर जाएंगे। यह उसूल
हारून और उस की औलाद के लिए हमेशा तक
क़ायम रहे।”

मसह का तेल

22रब ने मूसा से कहा, 23“मसह के तेल के
लिए उम्दा क़िस्म के मसाले इस्तेमाल करना।
6 किलोग्राम आबे-मुर, 3 किलोग्राम ख़ुशबूदार
दारचीनी, 3 किलोग्राम ख़ुशबूदार बेद 24और 6
किलोग्राम तेजपात। यह चीज़ें मक़दिस के बाटों
के हिसाब से तोलकर चार लिटर ज़ैतून के तेल
में डालना। 25सब कुछ मिलाकर ख़ुशबूदार तेल
तैयार करना। वह मुक़द्दस है और सिर्फ़ उस वक़्त
इस्तेमाल किया जाए जब कोई चीज़ या शख़्स मेरे
लिए मख़सूसो-मुक़द्दस किया जाए।

26यही तेल लेकर मुलाक़ात का ख़ैमा और
उसका सारा सामान मसह करना यानी ख़ैमा,
अहद का संदूक़, 27मेज़ और उसका सामान,
शमादान और उसका सामान, बख़ूर जलाने
की क़ुरबानगाह, 28जानवरों को चढ़ाने की
क़ुरबानगाह और उसका सामान, धोने का हौज़
और उसका ढाँचा। 29यों तू यह तमाम चीज़ें
मख़सूसो-मुक़द्दस करेगा। इससे वह निहायत
मुक़द्दस हो जाएँगी। जो भी उन्हें छुएगा वह
मुक़द्दस हो जाएगा।

30हारून और उसके बेटों को भी इस तेल से
मसह करना ताकि वह मुक़द्दस होकर मेरे लिए
इमाम का काम सरंजाम दे सकें। 31इसराईलियों
को कह दे कि यह तेल हमेशा तक मेरे लिए
मख़सूसो-मुक़द्दस है। 32इसलिए इसे अपने लिए
इस्तेमाल न करना और न इस तरकीब से अपने
लिए तेल बनाना। यह तेल मख़सूसो-मुक़द्दस है
और तुम्हें भी इसे यों ठहराना है। 33जो इस
तरकीब से आम इस्तेमाल के लिए तेल बनाता
है या किसी आम शख़्स पर लगाता है उसे उस
की क़ौम में से मिटा डालना है।”

बख़ूर की क़ुरबानी

34रब ने मूसा से कहा, “बख़ूर इस तरकीब
से बनाना है : मस्तकी, ओनिका,[a] बिरीजा और
ख़ालिस लुबान बराबर के हिस्सों में 35मिलाकर
ख़ुशबूदार बख़ूर बनाना। इत्रसाज़ का यह काम
नमकीन, ख़ालिस और मुक़द्दस हो। 36इसमें से
कुछ पीसकर पाउडर बनाना और मुलाक़ात के
ख़ैमे में अहद के संदूक़ के सामने डालना जहाँ मैं
तुझसे मिला करूँगा।

इस बख़ूर को मुक़द्दसतरीन ठहराना। 37इसी
तरकीब के मुताबिक़ अपने लिए बख़ूर न बनाना।
इसे रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस ठहराना है।
38जो भी अपने ज़ाती इस्तेमाल के लिए इस
क़िस्म का बख़ूर बनाए उसे उस की क़ौम में से
मिटा डालना है।”

बज़लियेल और उहलियाब

31 फिर रब ने मूसा से कहा, 2“मैंने
यहूदाह के क़बीले के बज़लियेल बिन
ऊरी बिन हूर को चुन लिया है ताकि वह मुक़द्दस
ख़ैमे की तामीर में राहनुमाई करे। 3मैंने उसे इलाही
रूह से मामूर करके हिकमत, समझ और तामीर
के हर काम के लिए दरकार इल्म दे दिया है। 4वह
नक़्शे बनाकर उनके मुताबिक़ सोने, चाँदी और
पीतल की चीज़ें बना सकता है। 5वह जवाहिर

[a] onycha (unguis odoratus)

को काटकर जड़ने की क़ाबिलियत रखता है। वह लकड़ी को तराशकर उससे मुख़्तलिफ़ चीज़ें बना सकता है। वह बहुत सारे और कामों में भी महारत रखता है।

6साथ ही मैंने दान के क़बीले के उहलियाब बिन अख़ी-समक को मुक़र्रर किया है ताकि वह हर काम में उस की मदद करे। इसके अलावा मैंने तमाम समझदार कारीगरों को महारत दी है ताकि वह सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ बना सकें जो मैंने तुझे दी हैं। 7यानी मुलाक़ात का ख़ैमा, कफ़्फ़ारे के ढकने समेत अहद का संदूक़ और ख़ैमे का सारा दूसरा सामान, 8मेज़ और उसका सामान, ख़ालिस सोने का शमादान और उसका सामान, बख़ूर जलाने की क़ुरबानगाह, 9जानवरों को चढ़ाने की क़ुरबानगाह और उसका सामान, धोने का हौज़ उस ढाँचे समेत जिस पर वह रखा जाता है, 10वह लिबास जो हारून और उसके बेटे मक़दिस में ख़िदमत करने के लिए पहनते हैं, 11मसह का तेल और मक़दिस के लिए ख़ुशबूदार बख़ूर। यह सब कुछ वह वैसे ही बनाएँ जैसे मैंने तुझे हुक्म दिया है।”

सबत यानी हफ़्ते का दिन

12रब ने मूसा से कहा, 13“इसराईलियों को बता कि हर सबत का दिन ज़रूर मनाओ। क्योंकि सबत का दिन एक नुमायाँ निशान है जिससे जान लिया जाएगा कि मैं रब हूँ जो तुम्हें मख़सूसो-मुक़द्दस करता हूँ। और यह निशान मेरे और तुम्हारे दरमियान नसल-दर-नसल क़ायम रहेगा। 14सबत का दिन ज़रूर मनाना, क्योंकि वह तुम्हारे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस है। जो भी उस की बेहुरमती करे वह ज़रूर जान से मारा जाए। जो भी इस दिन काम करे उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए। 15छः दिन काम करना, लेकिन सातवाँ दिन आराम का दिन है। वह रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस है।

16इसराईलियों को हाल में और मुस्तक़बिल में सबत का दिन अबदी अहद समझकर मनाना है। 17वह मेरे और इसराईलियों के दरमियान अबदी निशान होगा। क्योंकि रब ने छः दिन के दौरान आसमानो-ज़मीन को बनाया जबकि सातवें दिन उसने आराम किया और ताज़ादम हो गया।”

रब शरीअत की तख़्तियाँ देता है

18यह सब कुछ मूसा को बताने के बाद रब ने उसे सीना पहाड़ पर शरीअत की दो तख़्तियाँ दीं। अल्लाह ने ख़ुद पत्थर की इन तख़्तियों पर तमाम बातें लिखी थीं।

सोने का बछड़ा

32 पहाड़ के दामन में लोग मूसा के इंतज़ार में रहे, लेकिन बहुत देर हो गई। एक दिन वह हारून के गिर्द जमा होकर कहने लगे, “आएँ, हमारे लिए देवता बना दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें। क्योंकि क्या मालूम कि उस बंदे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिसर से निकाल लाया।”

2जवाब में हारून ने कहा, “आपकी बीवियाँ, बेटे और बेटियाँ अपनी सोने की बालियाँ उतारकर मेरे पास ले आएँ।” 3सब लोग अपनी बालियाँ उतार उतारकर हारून के पास ले आए 4तो उसने यह ज़ेवरात लेकर बछड़ा ढाल दिया। बछड़े को देखकर लोग बोल उठे, “ऐ इसराईल, यह तेरे देवता हैं जो तुझे मिसर से निकाल लाए।”

5जब हारून ने यह देखा तो उसने बछड़े के सामने क़ुरबानगाह बनाकर एलान किया, “कल हम रब की ताज़ीम में ईद मनाएँगे।” 6अगले दिन लोग सुबह-सवेरे उठे और भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ और सलामती की क़ुरबानियाँ चढ़ाईं। वह खाने-पीने के लिए बैठ गए और फिर उठकर रंगरलियों में अपने दिल बहलाने लगे।

मूसा अपनी क़ौम की शफ़ाअत करता है

7उस वक़्त रब ने मूसा से कहा, “पहाड़ से उतर जा। तेरे लोग जिन्हें तू मिसर से निकाल लाया

बड़ी शरारतें कर रहे हैं। 8वह कितनी जल्दी से
उस रास्ते से हट गए हैं जिस पर चलने के लिए
मैंने उन्हें हुक्म दिया था। उन्होंने अपने लिए ढाला
हुआ बछड़ा बनाकर उसे सिजदा किया है। उन्होंने
उसे क़ुरबानियाँ पेश करके कहा है, 'ऐ इसराईल,
यह तेरे देवता हैं। यही तुझे मिसर से निकाल लाए
हैं'।" 9अल्लाह ने मूसा से कहा, "मैंने देखा है कि
यह क़ौम बड़ी हटधर्म है। 10अब मुझे रोकने की
कोशिश न कर। मैं उन पर अपना ग़ज़ब उंडेलकर
उनको रूए-ज़मीन पर से मिटा दूँगा। उनकी जगह
मैं तुझसे एक बड़ी क़ौम बना दूँगा।"

11लेकिन मूसा ने कहा, "ऐ रब, तू अपनी क़ौम
पर अपना ग़ुस्सा क्यों उतारना चाहता है? तू ख़ुद
अपनी अज़ीम क़ुदरत से उसे मिसर से निकाल
लाया है। 12मिसरी क्यों कहें, 'रब इसराईलियों
को सिर्फ़ इस बुरे मक़सद से हमारे मुल्क से
निकाल ले गया है कि उन्हें पहाड़ी इलाक़े में मार
डाले और यों उन्हें रूए-ज़मीन पर से मिटाए'?
अपना ग़ुस्सा ठंडा होने दे और अपनी क़ौम के
साथ बुरा सुलूक करने से बाज़ रह। 13याद रख
कि तूने अपने ख़ादिमों इब्राहीम, इसहाक़ और
याक़ूब से अपनी ही क़सम खाकर कहा था, 'मैं
तुम्हारी औलाद की तादाद यों बढ़ाऊँगा कि वह
आसमान के सितारों के बराबर हो जाएगी। मैं उन्हें
वह मुल्क दूँगा जिसका वादा मैंने किया है, और
वह उसे हमेशा के लिए मीरास में पाएँगे'।"

14मूसा के कहने पर रब ने वह नहीं किया
जिसका एलान उसने कर दिया था बल्कि वह
अपनी क़ौम से बुरा सुलूक करने से बाज़ रहा।

बुतपरस्ती के नतायज

15मूसा मुड़कर पहाड़ से उतरा। उसके हाथों में
शरीअत की दोनों तख़्तियाँ थीं। उन पर आगे पीछे
लिखा गया था। 16अल्लाह ने ख़ुद तख़्तियों को
बनाकर उन पर अपने अहकाम कंदा किए थे।

17उतरते उतरते यशुअ ने लोगों का शोर सुना
और मूसा से कहा, "ख़ैमागाह में जंग का शोर
मच रहा है!" 18मूसा ने जवाब दिया, "न तो यह
फ़तहमंदों के नारे हैं, न शिकस्त खाए हुओं की
चीख़-पुकार। मुझे गानेवालों की आवाज़ सुनाई दे
रही है।"

19जब वह ख़ैमागाह के नज़दीक पहुँचा तो
उसने लोगों को सोने के बछड़े के सामने नाचते
हुए देखा। बड़े ग़ुस्से में आकर उसने तख़्तियों
को ज़मीन पर पटख़ दिया, और वह टुकड़े टुकड़े
होकर पहाड़ के दामन में गिर गईं। 20मूसा ने
इसराईलियों के बनाए हुए बछड़े को जला दिया।
जो कुछ बच गया उसे उसने पीस पीसकर पाउडर
बना डाला और पाउडर पानी पर छिड़ककर
इसराईलियों को पिला दिया।

21उसने हारून से पूछा, "इन लोगों ने तुम्हारे
साथ क्या किया कि तुमने उन्हें ऐसे बड़े गुनाह में
फँसा दिया?" 22हारून ने कहा, "मेरे आक़ा।
ग़ुस्से न हों। आप ख़ुद जानते हैं कि यह लोग बदी
पर तुले रहते हैं। 23उन्होंने मुझसे कहा, 'हमारे
लिए देवता बना दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए
हमारी राहनुमाई करें। क्योंकि क्या मालूम कि उस
बंदे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिसर से निकाल
लाया।' 24इसलिए मैंने उनको बताया, 'जिसके
पास सोने के ज़ेवरात हैं वह उन्हें उतार लाए।' जो
कुछ उन्होंने मुझे दिया उसे मैंने आग में फेंक दिया
तो होते होते सोने का यह बछड़ा निकल आया।"

25मूसा ने देखा कि लोग बेकाबू हो गए हैं।
क्योंकि हारून ने उन्हें बेलगाम छोड़ दिया था,
और यों वह इसराईल के दुश्मनों के लिए मज़ाक़
का निशाना बन गए थे। 26मूसा ख़ैमागाह के
दरवाज़े पर खड़े होकर बोला, "जो भी रब का
बंदा है वह मेरे पास आए।" जवाब में लावी के
क़बीले के तमाम लोग उसके पास जमा हो गए।
27फिर मूसा ने उनसे कहा, "रब इसराईल का
ख़ुदा फ़रमाता है, 'हर एक अपनी तलवार लेकर
ख़ैमागाह में से गुज़रे। एक सिरे के दरवाज़े से शुरू
करके दूसरे सिरे के दरवाज़े तक चलते चलते हर
मिलनेवाले को जान से मार दो, चाहे वह तुम्हारा
भाई, दोस्त या रिश्तेदार ही क्यों न हो। फिर

मुड़कर मारते मारते पहले दरवाज़े पर वापस आ जाओ'।"

28लावियों ने मूसा की हिदायत पर अमल किया तो उस दिन तक़रीबन 3,000 मर्द हलाक हुए। 29यह देखकर मूसा ने लावियों से कहा, "आज अपने आपको मक़दिस में रब की ख़िदमत करने के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करो, क्योंकि तुम अपने बेटों और भाइयों के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए तैयार थे। इसलिए रब तुमको आज बरकत देगा।"

30अगले दिन मूसा ने इसराईलियों से बात की, "तुमने निहायत संगीन गुनाह किया है। तो भी मैं अब रब के पास पहाड़ पर जा रहा हूँ। शायद मैं तुम्हारे गुनाह का कफ़्फ़ारा दे सकूँ।"

31चुनाँचे मूसा ने रब के पास वापस जाकर कहा, "हाय, इस क़ौम ने निहायत संगीन गुनाह किया है। उन्होंने अपने लिए सोने का देवता बना लिया। 32मेहरबानी करके उन्हें मुआफ़ कर। लेकिन अगर तू उन्हें मुआफ़ न करे तो फिर मुझे भी अपनी उस किताब में से मिटा दे जिसमें तूने अपने लोगों के नाम दर्ज किए हैं।" 33रब ने जवाब दिया, "मैं सिर्फ़ उसको अपनी किताब में से मिटाता हूँ जो मेरा गुनाह करता है। 34अब जा, लोगों को उस जगह ले चल जिसका ज़िक्र मैंने किया है। मेरा फ़रिश्ता तेरे आगे आगे चलेगा। लेकिन जब सज़ा का मुक़र्ररा दिन आएगा तब मैं उन्हें सज़ा दूँगा।"

35फिर रब ने इसराईलियों के दरमियान वबा फैलने दी, इसलिए कि उन्होंने उस बछड़े की पूजा की थी जो हारून ने बनाया था।

33 रब ने मूसा से कहा, "इस जगह से रवाना हो जा। उन लोगों को लेकर जिनको तू मिसर से निकाल लाया है उस मुल्क को जा जिसका वादा मैंने इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से किया है। उन्हीं से मैंने क़सम खाकर कहा था, 'मैं यह मुल्क तुम्हारी औलाद को दूँगा।' 2मैं तेरे आगे आगे फ़रिश्ता भेजकर कनानी, अमोरी, हित्ती, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी अक़वाम को उस मुल्क से निकाल दूँगा। 3उठ, उस मुल्क को जा जहाँ दूध और शहद की कसरत है। लेकिन मैं साथ नहीं जाऊँगा। तुम इतने हटधर्म हो कि अगर मैं साथ जाऊँ तो ख़तरा है कि तुम्हें वहाँ पहुँचने से पहले ही बरबाद कर दूँ।"

4जब इसराईलियों ने यह सख़्त अलफ़ाज़ सुने तो वह मातम करने लगे। किसी ने भी अपने ज़ेवर न पहने, 5क्योंकि रब ने मूसा से कहा था, "इसराईलियों को बता कि तुम हटधर्म हो। अगर मैं एक लमहा भी तुम्हारे साथ चलूँ तो ख़तरा है कि मैं तुम्हें तबाह कर दूँ। अब अपने ज़ेवरात उतार डालो। फिर मैं फ़ैसला करूँगा कि तुम्हारे साथ क्या किया जाए।"

6इन अलफ़ाज़ पर इसराईलियों ने होरिब यानी सीना पहाड़ पर अपने ज़ेवर उतार दिए।

मुलाक़ात का ख़ैमा

7उस वक़्त मूसा ने ख़ैमा लेकर उसे कुछ फ़ासले पर ख़ैमागाह के बाहर लगा दिया। उसने उसका नाम 'मुलाक़ात का ख़ैमा' रखा। जो भी रब की मरज़ी दरियाफ़्त करना चाहता वह ख़ैमागाह से निकलकर वहाँ जाता। 8जब भी मूसा ख़ैमागाह से निकलकर वहाँ जाता तो तमाम लोग अपने ख़ैमों के दरवाज़ों पर खड़े होकर मूसा के पीछे देखने लगते। उसके मुलाक़ात के ख़ैमे में ओझल होने तक वह उसे देखते रहते।

9मूसा के ख़ैमे में दाख़िल होने पर बादल का सतून उतरकर ख़ैमे के दरवाज़े पर ठहर जाता। जितनी देर तक रब मूसा से बातें करता उतनी देर तक वह वहाँ ठहरा रहता। 10जब इसराईली मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर बादल का सतून देखते तो वह अपने अपने ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़े होकर सिजदा करते। 11रब मूसा से रूबरू बातें करता था, ऐसे शख़्स की तरह जो अपने दोस्त से बातें करता है। इसके बाद मूसा निकलकर ख़ैमागाह को वापस चला जाता। लेकिन उसका

जवान मददगार यशुअ बिन नून ख़ैमे को नहीं छोड़ता था।

मूसा रब का जलाल देखता है

12मूसा ने रब से कहा, “देख, तू मुझसे कहता आया है कि इस क़ौम को कनान ले चल। लेकिन तू मेरे साथ किस को भेजेगा? तूने अब तक यह बात मुझे नहीं बताई हालाँकि तूने कहा है, ‘मैं तुझे बनाम जानता हूँ, तुझे मेरा करम हासिल हुआ है।’ 13अगर मुझे वाक़ई तेरा करम हासिल है तो मुझे अपने रास्ते दिखा ताकि मैं तुझे जान लूँ और तेरा करम मुझे हासिल होता रहे। इस बात का ख़याल रख कि यह क़ौम तेरी ही उम्मत है।”

14रब ने जवाब दिया, “मैं ख़ुद तेरे साथ चलूँगा और तुझे आराम दूँगा।” 15मूसा ने कहा, “अगर तू ख़ुद साथ नहीं चलेगा तो फिर हमें यहाँ से रवाना न करना। 16अगर तू हमारे साथ न जाए तो किस तरह पता चलेगा कि मुझे और तेरी क़ौम को तेरा करम हासिल हुआ है? हम सिर्फ़ इसी वजह से दुनिया की दीगर क़ौमों से अलग और मुमताज़ हैं।”

17रब ने मूसा से कहा, “मैं तेरी यह दरख़ास्त भी पूरी करूँगा, क्योंकि तुझे मेरा करम हासिल हुआ है और मैं तुझे बनाम जानता हूँ।”

18फिर मूसा बोला, “बराहे-करम मुझे अपना जलाल दिखा।” 19रब ने जवाब दिया, “मैं अपनी पूरी भलाई तेरे सामने से गुज़रने दूँगा और तेरे सामने ही अपने नाम रब का एलान करूँगा। मैं जिस पर मेहरबान होना चाहूँ उस पर मेहरबान होता हूँ, और जिस पर रहम करना चाहूँ उस पर रहम करता हूँ। 20लेकिन तू मेरा चेहरा नहीं देख सकता, क्योंकि जो भी मेरा चेहरा देखे वह ज़िंदा नहीं रह सकता।” 21फिर रब ने फ़रमाया, “देख, मेरे पास एक जगह है। वहाँ की चट्टान पर खड़ा हो जा। 22जब मेरा जलाल वहाँ से गुज़रेगा तो मैं तुझे चट्टान के एक शिगाफ़ में रखूँगा और अपना हाथ तेरे ऊपर फैलाऊँगा ताकि तू मेरे गुज़रने के दौरान महफ़ूज़ रहे। 23इसके बाद मैं अपना हाथ हटाऊँगा और तू मेरे पीछे देख सकेगा। लेकिन मेरा चेहरा देखा नहीं जा सकता।”

पत्थर की नई तख़्तियाँ

34 रब ने मूसा से कहा, “अपने लिए पत्थर की दो तख़्तियाँ तराश ले जो पहली दो की मानिंद हों। फिर मैं उन पर वह अलफ़ाज़ लिखूँगा जो पहली तख़्तियों पर लिखे थे जिन्हें तूने पटख़ दिया था। 2सुबह तक तैयार होकर सीना पहाड़ पर चढ़ना। चोटी पर मेरे सामने खड़ा हो जा। 3तेरे साथ कोई भी न आए बल्कि पूरे पहाड़ पर कोई और शख़्स नज़र न आए, यहाँ तक कि भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल भी पहाड़ के दामन में न चरें।”

4चुनाँचे मूसा ने दो तख़्तियाँ तराश लीं जो पहली की मानिंद थीं। फिर वह सुबह-सवेरे उठकर सीना पहाड़ पर चढ़ गया जिस तरह रब ने उसे हुक्म दिया था। उसके हाथों में पत्थर की दोनों तख़्तियाँ थीं। 5जब वह चोटी पर पहुँचा तो रब बादल में उतर आया और उसके पास खड़े होकर अपने नाम रब का एलान किया। 6मूसा के सामने से गुज़रते हुए उसने पुकारा, “रब, रब, रहीम और मेहरबान ख़ुदा। तहम्मुल, शफ़क़त और वफ़ा से भरपूर। 7वह हज़ारों पर अपनी शफ़क़त क़ायम रखता और लोगों का क़ुसूर, नाफ़रमानी और गुनाह मुआफ़ करता है। लेकिन वह हर एक को उस की मुनासिब सज़ा भी देता है। जब वालिदैन गुनाह करें तो उनकी औलाद को भी तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा के नतायज भुगतने पड़ेंगे।”

8मूसा ने जल्दी से झुककर सिजदा किया। 9उसने कहा, “ऐ रब, अगर मुझ पर तेरा करम हो तो हमारे साथ चल। बेशक यह क़ौम हटधर्म है, तो भी हमारा क़ुसूर और गुनाह मुआफ़ कर और बख़्श दे कि हम दुबारा तेरे ही बन जाएँ।”

10तब रब ने कहा, “मैं तुम्हारे साथ अहद बाँधूँगा। तेरी क़ौम के सामने ही मैं ऐसे मोजिज़े करूँगा जो अब तक दुनिया-भर की किसी भी क़ौम में नहीं किए गए। पूरी क़ौम जिसके

दरमियान तू रहता है रब का काम देखेगी और उससे डर जाएगी जो मैं तेरे साथ करूँगा। 11जो अहकाम मैं आज देता हूँ उन पर अमल करता रह। मैं अमोरी, कनानी, हित्ती, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी अक़वाम को तेरे आगे आगे मुल्क से निकाल दूँगा। 12ख़बरदार, जो उस मुल्क में रहते हैं जहाँ तू जा रहा है उनसे अहद न बाँधना। वरना वह तेरे दरमियान रहते हुए तुझे गुनाहों में फँसाते रहेंगे। 13उनकी क़ुरबानगाहें ढा देना, उनके बुतों के सतून टुकड़े टुकड़े कर देना और उनकी देवी यसीरत के खंबे काट डालना।

14किसी और माबूद की परस्तिश न करना, क्योंकि रब का नाम ग़यूर है, अल्लाह ग़ैरतमंद है। 15ख़बरदार, उस मुल्क के बाशिंदों से अहद न करना, क्योंकि तेरे दरमियान रहते हुए भी वह अपने माबूदों की पैरवी करके ज़िना करेंगे और उन्हें क़ुरबानियाँ चढ़ाएँगे। आख़िरकार वह तुझे भी अपनी क़ुरबानियों में शिरकत की दावत देंगे। 16ख़तरा है कि तू उनकी बेटियों का अपने बेटों के साथ रिश्ता बाँधे। फिर जब यह अपने माबूदों की पैरवी करके ज़िना करेंगी तो उनके सबब से तेरे बेटे भी उनकी पैरवी करने लगेंगे।

17अपने लिए देवता न ढालना।

सालाना ईदें

18बेख़मीरी रोटी की ईद मनाना। अबीब के महीने[a] में सात दिन तक तेरी रोटी में ख़मीर न हो जिस तरह मैंने हुक्म दिया है। क्योंकि इस महीने में तू मिसर से निकला।

19हर पहलौठा मेरा है। तेरे माल मवेशियों का हर पहलौठा मेरा है, चाहे बछड़ा हो या लेला। 20लेकिन पहलौठे गधे के एवज़ भेड़ देना। अगर यह मुमकिन न हो तो उस की गरदन तोड़ डालना। अपने पहलौठे बेटों के लिए भी एवज़ी देना। कोई मेरे पास ख़ाली हाथ न आए।

21छ: दिन काम-काज करना, लेकिन सातवें दिन आराम करना। ख़ाह हल चलाना हो या फ़सल काटनी हो तो भी सातवें दिन आराम करना।

22गंदुम की फ़सल की कटाई की ईद[b] उस वक़्त मनाना जब तू गेहूँ की पहली फ़सल काटेगा। अंगूर और फल जमा करने की ईद इसराईली साल के इख़्तिताम पर मनानी है। 23लाज़िम है कि तेरे तमाम मर्द साल में तीन मरतबा रब क़ादिरे-मुतलक़ के सामने जो इसराईल का ख़ुदा है हाज़िर हों। 24मैं तेरे आगे आगे क़ौमों को मुल्क से निकाल दूँगा और तेरी सरहदें बढ़ाता जाऊँगा। फिर जब तू साल में तीन मरतबा रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर आएगा तो कोई भी तेरे मुल्क का लालच नहीं करेगा।

25जब तू किसी जानवर को ज़बह करके क़ुरबानी के तौर पर पेश करता है तो उसके ख़ून के साथ ऐसी रोटी पेश न करना जिसमें ख़मीर हो। ईदे-फ़सह की क़ुरबानी से अगली सुबह तक कुछ बाक़ी न रहे।

26अपनी ज़मीन की पहली पैदावार में से बेहतरीन हिस्सा रब अपने ख़ुदा के घर में ले आना।

बकरी या भेड़ के बच्चे को उस की माँ के दूध में न पकाना।”

मूसा के चेहरे पर चमक

27रब ने मूसा से कहा, “यह तमाम बातें लिख ले, क्योंकि यह उस अहद की बुनियाद हैं जो मैंने तेरे और इसराईल के साथ बाँधा है।”

28मूसा चालीस दिन और चालीस रात वहीं रब के हुज़ूर रहा। इस दौरान न उसने कुछ खाया न पिया। उसने पत्थर की तख़्तियों पर अहद के दस अहकाम लिखे।

29इसके बाद मूसा शरीअत की दोनों तख़्तियों को हाथ में लिए हुए सीना पहाड़ से उतरा। उसके चेहरे की जिल्द चमक रही थी, क्योंकि उसने रब से बात की थी। लेकिन उसे ख़ुद इसका इल्म नहीं था। 30जब हारून और तमाम इसराईलियों ने देखा कि मूसा का चेहरा चमक रहा है तो वह

[a]मार्च ता अप्रैल।

[b]सितंबर ता अक्तूबर।

उसके पास आने से डर गए। 31लेकिन उसने उन्हें
बुलाया तो हारून और जमात के तमाम सरदार
उसके पास आए, और उसने उनसे बात की।
32बाद में बाक़ी इसराईली भी आए, और मूसा ने
उन्हें तमाम अहकाम सुनाए जो रब ने उसे कोहे-
सीना पर दिए थे।
33यह सब कुछ कहने के बाद मूसा ने अपने
चेहरे पर निक़ाब डाल लिया। 34जब भी वह रब
से बात करने के लिए मुलाक़ात के ख़ैमे में जाता
तो निक़ाब को ख़ैमे से निकलते वक़्त तक उतार
लेता। और जब वह निकलकर इसराईलियों को
रब से मिले हुए अहकाम सुनाता 35तो वह देखते
कि उसके चेहरे की जिल्द चमक रही है। इसके
बाद मूसा दुबारा निक़ाब को अपने चेहरे पर डाल
लेता, और वह उस वक़्त तक चेहरे पर रहता जब
तक मूसा रब से बात करने के लिए मुलाक़ात के
ख़ैमे में न जाता था।

सबत का दिन

35 मूसा ने इसराईल की पूरी जमात को
इकट्ठा करके कहा, “रब ने तुमको यह
हुक्म दिए हैं : 2छः दिन काम-काज किया जाए,
लेकिन सातवाँ दिन मख़सूसो-मुक़द्दस हो। वह रब
के लिए आराम का सबत है। जो भी इस दिन
काम करे उसे सज़ाए-मौत दी जाए। 3हफ़ते के
दिन अपने तमाम घरों में आग तक न जलाना।”

मुलाक़ात के ख़ैमे के लिए सामान

4मूसा ने इसराईल की पूरी जमात से कहा,
“रब ने हिदायत दी है 5कि जो कुछ तुम्हारे पास है
उसमें से हदिये लाकर रब को उठानेवाली क़ुरबानी
के तौर पर पेश करो। जो भी दिली ख़ुशी से देना
चाहे वह इन चीज़ों में से कुछ दे : सोना, चाँदी,
पीतल; 6नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग का
धागा, बारीक कतान, बकरी के बाल, 7मेंढों की
सुर्ख़ रँगी हुई खालें, तख़स की खालें, कीकर की
लकड़ी, 8शमादान के लिए ज़ैतून का तेल, मसह
करने के लिए तेल और ख़ुशबूदार बख़ूर के लिए
मसाले, 9अक़ीक़े-अहमर और दीगर जवाहिर जो
इमामे-आज़म के बालापोश और सीने के कीसे में
जड़े जाएंगे।
10तुममें से जितने माहिर कारीगर हैं वह आकर
वह कुछ बनाएँ जो रब ने फ़रमाया 11यानी ख़ैमा
और वह ग़िलाफ़ जो उसके ऊपर लगाए जाएंगे,
हुकें, दीवारों के तख़्ते, शहतीर, सतून और पाए,
12अहद का संदूक़, उसे उठाने की लकड़ियाँ,
उसके कफ़्फ़ारे का ढकना, मुक़द्दसतरीन कमरे के
दरवाज़े का परदा, 13मख़सूस रोटियों की मेज़,
उसे उठाने की लकड़ियाँ, उसका सारा सामान
और रोटियाँ, 14शमादान और उस पर रखने के
चराग़ उसके सामान समेत, शमादान के लिए
तेल, 15बख़ूर जलाने की क़ुरबानगाह, उसे उठाने
की लकड़ियाँ, मसह का तेल, ख़ुशबूदार बख़ूर,
मुक़द्दस ख़ैमे के दरवाज़े का परदा, 16जानवरों
को चढ़ाने की क़ुरबानगाह, उसका पीतल का
जंगला, उसे उठाने की लकड़ियाँ और बाक़ी सारा
सामान, धोने का हौज़ और वह ढाँचा जिस पर
हौज़ रखा जाता है, 17चारदीवारी के परदे उनके
खंबों और पाइयों समेत, सहन के दरवाज़े का
परदा, 18ख़ैमे और चारदीवारी की मेख़ें और रस्से,
19और वह मुक़द्दस लिबास जो हारून और उसके
बेटे मक़दिस में ख़िदमत करने के लिए पहनते हैं।”
20यह सुनकर इसराईल की पूरी जमात मूसा
के पास से चली गई। 21और जो जो दिली ख़ुशी
से देना चाहता था वह मुलाक़ात के ख़ैमे, उसके
सामान या इमामों के कपड़ों के लिए कोई हदिया
लेकर वापस आया। 22रब के हदिये के लिए
मर्द और ख़वातीन दिली ख़ुशी से अपने सोने के
ज़ेवरात मसलन जड़ाऊ पिनें, बालियाँ और छल्ले
ले आए। 23जिस जिसके पास दरकार चीज़ों में
से कुछ था वह उसे मूसा के पास ले आया यानी
नीले, क़िरमिज़ी और अरग़वानी रंग का धागा,
बारीक कतान, बकरी के बाल, मेंढों की सुर्ख़
रँगी हुई खालें और तख़स की खालें। 24चाँदी,
पीतल और कीकर की लकड़ी भी हदिये के तौर
पर लाई गई। 25और जितनी औरतें कातने में

माहिर थीं वह अपनी काती हुई चीज़ें ले आईं यानी नीले, क़िरमिज़ी और अरग़वानी रंग का धागा और बारीक कतान। 26इसी तरह जो जो औरत बकरी के बाल कातने में माहिर थी और दिली ख़ुशी से मक़दिस के लिए काम करना चाहती थी वह यह कातकर ले आई। 27सरदार अक़ीक़े-अहमर और दीगर जवाहिर ले आए जो इमामे-आज़म के बालापोश और सीने के कीसे के लिए दरकार थे। 28वह शमादान, मसह के तेल और ख़ुशबूदार बख़ूर के लिए मसाले और ज़ैतून का तेल भी ले आए।

29यों इसराईल के तमाम मर्द और ख़वातीन जो दिली ख़ुशी से रब को कुछ देना चाहते थे उस सारे काम के लिए हदिये ले आए जो रब ने मूसा की मारिफ़त करने को कहा था।

बज़लियेल और उहलियाब

30फिर मूसा ने इसराईलियों से कहा, “रब ने यहूदाह के क़बीले के बज़लियेल बिन ऊरी बिन हूर को चुन लिया है। 31उसने उसे इलाही रूह से मामूर करके हिकमत, समझ और तामीर के हर काम के लिए दरकार इल्म दे दिया है। 32वह नक़्शे बनाकर उनके मुताबिक़ सोने, चाँदी और पीतल की चीज़ें बना सकता है। 33वह जवाहिर को काटकर जड़ने की क़ाबिलियत रखता है। वह लकड़ी को तराशकर उससे मुख़्तलिफ़ चीज़ें बना सकता है। वह बहुत सारे और कामों में भी महारत रखता है। 34साथ ही रब ने उसे और दान के क़बीले के उहलियाब बिन अख़ी-समक को दूसरों को सिखाने की क़ाबिलियत भी दी है। 35उसने उन्हें वह महारत और हिकमत दी है जो हर काम के लिए दरकार है यानी कारीगरी के हर काम के लिए, कढ़ाई के काम के लिए, नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से कपड़ा बनाने के लिए और बुनाई के काम के लिए। वह माहिर कारीगर हैं और नक़्शे भी बना सकते हैं।

36 लाज़िम है कि बज़लियेल, उहलियाब और बाक़ी कारीगर जिनको रब ने मक़दिस की तामीर के लिए हिकमत और समझ दी है सब कुछ ऐन उन हिदायात के मुताबिक़ बनाएँ जो रब ने दी हैं।”

इसराईली दिली ख़ुशी से देते हैं

2मूसा ने बज़लियेल और उहलियाब को बुलाया। साथ ही उसने हर उस कारीगर को भी बुलाया जिसे रब ने मक़दिस की तामीर के लिए हिकमत और महारत दी थी और जो ख़ुशी से आना और यह काम करना चाहता था। 3उन्हें मूसा से तमाम हदिये मिले जो इसराईली मक़दिस की तामीर के लिए लाए थे।द

इसके बाद भी लोग रोज़ बरोज़ सुबह के वक़्त हदिये लाते रहे। 4आख़िरकार तमाम कारीगर जो मक़दिस बनाने के काम में लगे थे अपना काम छोड़कर मूसा के पास आए। 5उन्होंने कहा, “लोग हद से ज़्यादा ला रहे हैं। जिस काम का हुक्म रब ने दिया है उसके लिए इतने सामान की ज़रूरत नहीं है।” 6तब मूसा ने पूरी ख़ैमागाह में एलान करवा दिया कि कोई मर्द या औरत मक़दिस की तामीर के लिए अब कुछ न लाए।

यों उन्हें मज़ीद चीज़ें लाने से रोका गया, 7क्योंकि काम के लिए सामान ज़रूरत से ज़्यादा हो गया था।

मुलाक़ात का ख़ैमा

8जो कारीगर महारत रखते थे उन्होंने ख़ैमे को बनाया। उन्होंने बारीक कतान और नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी धागे से दस परदे बनाए। परदों पर किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से करूबी फ़रिश्तों का डिज़ायन बनाया गया। 9हर परदे की लंबाई 42 फ़ुट और चौड़ाई 6 फ़ुट थी। 10पाँच परदों के लंबे हाशिये एक दूसरे के साथ जोड़े गए और इसी तरह बाक़ी पाँच

भी। यों दो बड़े टुकड़े बन गए। 11दोनों टुकड़ों को
एक दूसरे के साथ मिलाने के लिए उन्होंने नीले
धागे के हलक़े बनाए। यह हलक़े हर टुकड़े के 42
फ़ुटवाले एक किनारे पर लगाए गए, 12एक टुकड़े
के हाशिये पर 50 हलक़े और दूसरे पर भी उतने
ही हलक़े। इन दो हाशियों के हलक़े एक दूसरे के
आमने-सामने थे। 13फिर बज़लियेल ने सोने की
50 हुकें बनाकर उनसे आमने-सामने के हलक़ों
को एक दूसरे के साथ मिलाया। यों दोनों टुकड़ों
के जोड़ने से ख़ैमा बन गया।

14उसने बकरी के बालों से भी 11 परदे बनाए
जिन्हें कपड़ेवाले ख़ैमे के ऊपर रखना था। 15हर
परदे की लंबाई 45 फ़ुट और चौड़ाई 6 फ़ुट थी।
16पाँच परदों के लंबे हाशिये एक दूसरे के साथ
जोड़े गए और इस तरह बाक़ी छः भी। 17इन दोनों
टुकड़ों को मिलाने के लिए उसने हर टुकड़े के
45 फ़ुटवाले एक किनारे पर पचास पचास हलक़े
लगाए। 18फिर पीतल की 50 हुकें बनाकर उसने
दोनों हिस्से मिलाए।

19एक दूसरे के ऊपर के दोनों ख़ैमों की
हिफ़ाज़त के लिए बज़लियेल ने दो और ग़िलाफ़
बनाए। बकरी के बालों के ख़ैमे पर रखने के
लिए उसने मेंढों की सुर्ख़ रँगी हुई खालें जोड़ दीं
और उसके ऊपर रखने के लिए तख़स की खालें
मिलाईं।

20इसके बाद उसने कीकर की लकड़ी के तख़्ते
बनाए जो ख़ैमे की दीवारों का काम देते थे। 21हर
तख़्ते की ऊँचाई 15 फ़ुट थी और चौड़ाई सवा
दो फ़ुट। 22हर तख़्ते के नीचे दो दो चूलें थीं।
इन चूलों से हर तख़्ते को उसके पाइयों के साथ
जोड़ा जाता था ताकि तख़्ता खड़ा रहे। 23ख़ैमे
की जुनूबी दीवार के लिए 20 तख़्ते बनाए गए
24और साथ ही चाँदी के 40 पाए भी जिन पर
तख़्ते खड़े किए जाते थे। हर तख़्ते के नीचे दो
पाए थे, और हर पाए में एक चूल लगती थी।
25इसी तरह ख़ैमे की शिमाली दीवार के लिए भी
20 तख़्ते बनाए गए 26और साथ ही चाँदी के
40 पाए जो तख़्तों को खड़ा करने के लिए थे।
हर तख़्ते के नीचे दो पाए थे। 27ख़ैमे की पिछली
यानी मग़रिबी दीवार के लिए छः तख़्ते बनाए गए।
28इस दीवार को शिमाली और जुनूबी दीवारों के
साथ जोड़ने के लिए कोनेवाले दो तख़्ते बनाए
गए। 29इन दो तख़्तों में नीचे से लेकर ऊपर तक
कोना था ताकि एक से शिमाली दीवार मग़रिबी
दीवार के साथ जुड़ जाए और दूसरे से जुनूबी
दीवार मग़रिबी दीवार के साथ। इनके ऊपर के
सिरे कड़ों से मज़बूत किए गए। 30यों पिछले
यानी मग़रिबी तख़्तों की पूरी तादाद 8 थी और
इनके लिए चाँदी के पाइयों की तादाद 16, हर
तख़्ते के नीचे दो पाए।

31-32फिर बज़लियेल ने कीकर की लकड़ी के
शहतीर बनाए, तीनों दीवारों के लिए पाँच पाँच
शहतीर। वह हर दीवार के तख़्तों पर यों लगाने के
लिए थे कि उनसे तख़्ते एक दूसरे के साथ मिलाए
जाएँ। 33दरमियानी शहतीर यों बनाया गया कि
वह दीवार की आधी ऊँचाई पर दीवार के एक सिरे
से दूसरे सिरे तक लग सकता था। 34उसने तमाम
तख़्तों और शहतीरों पर सोना चढ़ाया। शहतीरों
को तख़्तों के साथ लगाने के लिए उसने सोने के
कड़े बनाए जो तख़्तों में लगाने थे।

मुक़द्दस ख़ैमे के परदे

35अब बज़लियेल ने एक और परदा बनाया।
उसके लिए भी बारीक कतान और नीले,
अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग का धागा इस्तेमाल
हुआ। उस पर भी किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई
के काम से करूबी फ़रिश्तों का डिज़ायन बनाया
गया। 36फिर उसने परदे को लटकाने के लिए
कीकर की लकड़ी के चार सतून, सोने की हुकें
और चाँदी के चार पाए बनाए। सतूनों पर सोना
चढ़ाया गया।

37बज़लियेल ने ख़ैमे के दरवाज़े के लिए भी
परदा बनाया। वह भी बारीक कतान और नीले,
अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग के धागे से बनाया
गया, और उस पर कढ़ाई का काम किया गया।
38इस परदे को लटकाने के लिए उसने सोने की

हुकें और कीकर की लकड़ी के पाँच सतून बनाए। सतूनों के ऊपर के सिरों और पट्टियों पर सोना चढ़ाया गया जबकि उनके पाए पीतल के थे।

अहद का संदूक़

37 बज़लियेल ने कीकर की लकड़ी का संदूक़ बनाया। उस की लंबाई पौने चार फ़ुट थी जबकि उस की चौड़ाई और ऊँचाई सवा दो दो फ़ुट थी। 2उसने पूरे संदूक़ पर अंदर और बाहर से ख़ालिस सोना चढ़ाया। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द उसने सोने की झालर लगाई। 3संदूक़ को उठाने के लिए उसने सोने के चार कड़े ढालकर उन्हें संदूक़ के चारपाइयों पर लगाया। दोनों तरफ़ दो दो कड़े थे। 4फिर उसने कीकर की दो लकड़ियाँ संदूक़ को उठाने के लिए तैयार कीं और उन पर सोना चढ़ाया। 5उसने इन लकड़ियों को दोनों तरफ़ के कड़ों में डाल दिया ताकि उनसे संदूक़ को उठाया जा सके।

6बज़लियेल ने संदूक़ का ढकना ख़ालिस सोने का बनाया। उस की लंबाई पौने चार फ़ुट और चौड़ाई सवा दो फ़ुट थी। 7-8फिर उसने दो करूबी फ़रिश्ते सोने से घड़कर बनाए जो ढकने के दोनों सिरों पर खड़े थे। यह दो फ़रिश्ते और ढकना एक ही टुकड़े से बनाए गए। 9फ़रिश्तों के पर यों ऊपर की तरफ़ फैले हुए थे कि वह ढकने को पनाह देते थे। उनके मुँह एक दूसरे की तरफ़ किए हुए थे, और वह ढकने की तरफ़ देखते थे।

मख़सूस रोटियों की मेज़

10इसके बाद बज़लियेल ने कीकर की लकड़ी की मेज़ बनाई। उस की लंबाई तीन फ़ुट, चौड़ाई डेढ़ फ़ुट और ऊँचाई सवा दो फ़ुट थी। 11उसने उस पर ख़ालिस सोना चढ़ाकर उसके इर्दगिर्द सोने की झालर लगाई। 12मेज़ की ऊपर की सतह पर उसने चौखटा भी लगाया जिसकी ऊँचाई तीन इंच थी और जिस पर सोने की झालर लगी थी। 13अब उसने सोने के चार कड़े ढालकर उन्हें चारों कोनों पर लगाया जहाँ मेज़ के पाए लगे थे। 14यह कड़े मेज़ की सतह पर लगे चौखटे के नीचे लगाए गए। उनमें वह लकड़ियाँ डालनी थीं जिनसे मेज़ को उठाना था। 15बज़लियेल ने यह लकड़ियाँ भी कीकर से बनाईं और उन पर सोना चढ़ाया।

16आख़िरकार उसने ख़ालिस सोने के वह थाल, प्याले, मै की नज़रें पेश करने के बरतन और मरतबान बनाए जो उस पर रखे जाते थे।

शमादान

17फिर बज़लियेल ने ख़ालिस सोने का शमादान बनाया। उसका पाया और डंडी घड़कर बनाए गए। उस की प्यालियाँ जो फूलों और कलियों की शक्ल की थीं पाए और डंडी के साथ एक ही टुकड़ा थीं। 18डंडी से दाईं और बाईं तरफ़ तीन तीन शाख़ें निकलती थीं। 19हर शाख़ पर तीन प्यालियाँ लगी थीं जो बादाम की कलियों और फूलों की शक्ल की थीं। 20शमादान की डंडी पर भी इस क़िस्म की प्यालियाँ लगी थीं, लेकिन तादाद में चार। 21इनमें से तीन प्यालियाँ दाएँ-बाएँ की छः शाख़ों के नीचे लगी थीं। वह यों लगी थीं कि हर प्याली से दो शाख़ें निकलती थीं। 22शाख़ें और प्यालियाँ बल्कि पूरा शमादान ख़ालिस सोने के एक ही टुकड़े से घड़कर बनाया गया।

23बज़लियेल ने शमादान के लिए ख़ालिस सोने के सात चराग़ बनाए। उसने बत्ती कतरने की क़ैंचियाँ और जलते कोयले के लिए छोटे बरतन भी ख़ालिस सोने से बनाए। 24शमादान और उसके तमाम सामान के लिए पूरे 34 किलोग्राम ख़ालिस सोना इस्तेमाल हुआ।

बख़ूर जलाने की क़ुरबानगाह

25बज़लियेल ने कीकर की लकड़ी की क़ुरबानगाह बनाई जो बख़ूर जलाने के लिए थी। वह डेढ़ फ़ुट लंबी, इतनी ही चौड़ी और तीन फ़ुट ऊँची थी। उसके चार कोनों में से सींग निकलते थे जो क़ुरबानगाह के साथ एक ही टुकड़े से बनाए गए थे। 26उस की ऊपर की सतह,

उसके चार पहलुओं और उसके सींगों पर ख़ालिस सोना चढ़ाया गया। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द बज़लियेल ने सोने की झालर बनाई। 27सोने के दो कड़े बनाकर उसने उन्हें इस झालर के नीचे एक दूसरे के मुक़ाबिल पहलुओं पर लगाया। इन कड़ों में क़ुरबानगाह को उठाने की लकड़ियाँ डाली गईं। 28यह लकड़ियाँ कीकर की थीं, और उन पर भी सोना चढ़ाया गया।

29बज़लियेल ने मसह करने का मुक़द्दस तेल और ख़ुशबूदार ख़ालिस बख़ूर भी बनाया। यह इत्रसाज़ का काम था।

जानवरों को पेश करने की क़ुरबानगाह

38 बज़लियेल ने कीकर की लकड़ी की एक और क़ुरबानगाह बनाई जो भस्म होनेवाली क़ुरबानियों के लिए थी। उस की ऊँचाई साढ़े चार फ़ुट, उस की लंबाई और चौड़ाई साढ़े सात सात फ़ुट थी। 2उसके ऊपर चारों कोनों में से सींग निकलते थे। सींग और क़ुरबानगाह एक ही टुकड़े के थे, और उस पर पीतल चढ़ाया गया। 3उसका तमाम साज़ो-सामान और बरतन भी पीतल के थे यानी राख को उठाकर ले जाने की बालटियाँ, बेलचे, काँटे, जलते हुए कोयले के लिए बरतन और छिड़काव के कटोरे।

4क़ुरबानगाह को उठाने के लिए उसने पीतल का जंगला बनाया। वह ऊपर से खुला था और यों बनाया गया कि जब क़ुरबानगाह उसमें रखी जाए तो वह उस किनारे तक पहुँचे जो क़ुरबानगाह की आधी ऊँचाई पर लगी थी। 5उसने क़ुरबानगाह को उठाने के लिए चार कड़े बनाकर उन्हें जंगले के चार कोनों पर लगाया। 6फिर उसने कीकर की दो लकड़ियाँ बनाकर उन पर पीतल चढ़ाया 7और क़ुरबानगाह के दोनों तरफ़ लगे इन कड़ों में डाल दीं। यों उसे उठाया जा सकता था। क़ुरबानगाह लकड़ी की थी लेकिन खोखली थी।

8बज़लियेल ने धोने का हौज़ और उसका ढाँचा भी पीतल से बनाया। उसका पीतल उन औरतों के आईनों से मिला था जो मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर ख़िदमत करती थीं।

ख़ैमे का सहन

9फिर बज़लियेल ने सहन बनाया। उस की चारदीवारी बारीक कतान के कपड़े से बनाई गई। चारदीवारी की लंबाई जुनूब की तरफ़ 150 फ़ुट थी। 10कपड़े को लगाने के लिए चाँदी की हुकें, पट्टियाँ, लकड़ी के खंबे और उनके पाए बनाए गए। 11चारदीवारी शिमाल की तरफ़ भी इसी तरह बनाई गई। 12ख़ैमे के पीछे मग़रिब की तरफ़ चारदीवारी की चौड़ाई 75 फ़ुट थी। कपड़े के अलावा उसके लिए 10 खंबे, 10 पाए और कपड़ा लगाने के लिए चाँदी की हुकें और पट्टियाँ बनाई गईं। 13सामने, मशरिक़ की तरफ़ जहाँ से सूरज तुलू होता है चारदीवारी की चौड़ाई भी 75 फ़ुट थी। 14-15कपड़ा दरवाज़े के दाईं तरफ़ साढ़े 22 फ़ुट चौड़ा था और उसके बाईं तरफ़ भी उतना ही चौड़ा। उसे दोनों तरफ़ तीन तीन खंबों के साथ लगाया गया जो पीतल के पाइयों पर खड़े थे। 16चारदीवारी के तमाम परदों के लिए बारीक कतान इस्तेमाल हुआ। 17खंबे पीतल के पाइयों पर खड़े थे, और परदे चाँदी की हुकों और पट्टियों से खंबों के साथ लगे थे। खंबों के ऊपर के सिरों पर चाँदी चढ़ाई गई थी। सहन के तमाम खंबों पर चाँदी की पट्टियाँ लगी थीं।

18चारदीवारी के दरवाज़े का परदा नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से बनाया गया, और उस पर कढ़ाई का काम किया गया। वह 30 फ़ुट चौड़ा और चारदीवारी के दूसरे परदों की तरह साढ़े सात फ़ुट ऊँचा था। 19उसके चार खंबे और पीतल के चार पाए थे। उस की हुकें और पट्टियाँ चाँदी की थीं, और खंबों के ऊपर के सिरों पर चाँदी चढ़ाई गई थी। 20ख़ैमे और चारदीवारी की तमाम मेख़ें पीतल की थीं।

ख़ैमे का तामीरी सामान

21ज़ैल में उस सामान की फ़हरिस्त है जो
मक़दिस की तामीर के लिए इस्तेमाल हुआ। मूसा
के हुक्म पर इमामे-आज़म हारून के बेटे इतमर ने
लावियों की मारिफ़त यह फ़हरिस्त तैयार की।
22(यहूदाह के क़बीले के बज़लियेल बिन ऊरी
बिन हूर ने वह सब कुछ बनाया जो रब ने मूसा
को बताया था। 23उसके साथ दान के क़बीले का
उहलियाब बिन अख़ी-समक था जो कारीगरी के
हर काम और कढ़ाई के काम में माहिर था। वह
नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग के धागे और
बारीक कतान से कपड़ा बनाने में भी माहिर था।)
24उस सोने का वज़न जो लोगों के हदियों
से जमा हुआ और मक़दिस की तामीर के लिए
इस्तेमाल हुआ तक़रीबन 1,000 किलोग्राम था
(उसे मक़दिस के बाटों के हिसाब से तोला गया)।
25तामीर के लिए चाँदी जो मर्दुमशुमारी के
हिसाब से वसूल हुई, उसका वज़न तक़रीबन
3,430 किलोग्राम था (उसे भी मक़दिस के बाटों
के हिसाब से तोला गया)। 26जिन मर्दों की उम्र
20 साल या इससे ज़ायद थी उन्हें चाँदी का आधा
आधा सिक्का देना पड़ा। मर्दों की कुल तादाद
6,03,550 थी। 27चूँकि दीवारों के तख़्तों के
पाए और मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े के सतूनों
के पाए चाँदी के थे इसलिए तक़रीबन पूरी चाँदी
इन 100 पाइयों के लिए सर्फ़ हुई। 28तक़रीबन
30 किलोग्राम चाँदी बच गई। इससे चारदीवारी
के खंबों की हुकें और पट्टियाँ बनाई गईं, और यह
खंबों के ऊपर के सिरों पर भी चढ़ाई गई।
29जो पीतल हदियों से जमा हुआ उसका
वज़न तक़रीबन 2,425 किलोग्राम था। 30ख़ैमे
के दरवाज़े के पाए, जानवरों को चढ़ाने की
क़ुरबानगाह, उसका जंगला, बरतन और साज़ो-
सामान, 31चारदीवारी के पाए, सहन के दरवाज़े
के पाए और ख़ैमे और चारदीवारी की तमाम मेख़ें
इसी से बनाई गईं।

हारून का बालापोश

39 बज़लियेल की हिदायत पर का-
रीगरों ने नीले, अरग़वानी और
क़िरमिज़ी रंग का धागा लेकर मक़दिस में ख़िदमत
के लिए लिबास बनाए। उन्होंने हारून के मुक़द्दस
कपड़े उन हिदायात के ऐन मुताबिक़ बनाए जो
रब ने मूसा को दी थीं। 2उन्होंने इमामे-आज़म का
बालापोश बनाने के लिए सोना, नीले, अरग़वानी
और क़िरमिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान
इस्तेमाल किया। 3उन्होंने सोने को कूट कूटकर
वर्क़ बनाया और फिर उसे काटकर धागे बनाए।
जब नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग के धागे
और बारीक कतान से कपड़ा बनाया गया तो
सोने का यह धागा महारत से कढ़ाई के काम
में इस्तेमाल हुआ। 4उन्होंने बालापोश के लिए
दो पट्टियाँ बनाईं और उन्हें बालापोश के कंधों
पर रखकर सामने और पीछे से बालापोश के
साथ लगाइं। 5पटका भी बनाया गया जिससे
बालापोश को बाँधा जाता था। इसके लिए भी
सोना, नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग का
धागा और बारीक कतान इस्तेमाल हुआ। यह उन
हिदायात के ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब ने मूसा को
दी थीं। 6फिर उन्होंने अक़ीक़े-अहमर के दो पत्थर
चुन लिए और उन्हें सोने के ख़ानों में जड़कर उन
पर इसराईल के बारह बेटों के नाम कंदा किए।
यह नाम जौहरों पर उस तरह कंदा किए गए जिस
तरह मुहर कंदा की जाती है। 7उन्होंने पत्थरों को
बालापोश की दो पट्टियों पर यों लगाया कि वह
हारून के कंधों पर रब को इसराईलियों की याद
दिलाते रहें। यह सब कुछ रब की दी गई हिदायात
के ऐन मुताबिक़ हुआ।

सीने का कीसा

8इसके बाद उन्होंने सीने का कीसा बनाया।
यह माहिर कारीगर का काम था और उन्हीं चीज़ों
से बना जिनसे हारून का बालापोश भी बना था
यानी सोने और नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी
रंग के धागे और बारीक कतान से। 9जब कपड़े

को एक दफ़ा तह किया गया तो कीसे की लंबाई और चौड़ाई नौ नौ इंच थी। 10उन्होंने उस पर चार क़तारों में जवाहिर जड़े। हर क़तार में तीन तीन जौहर थे। पहली क़तार में लाल, ज़बरजद और ज़ुमुर्रद। 11दूसरी में फ़ीरोज़ा, संगे-लाजवर्द और हजरुल-क़मर। 12तीसरी में ज़रक़ोन, अक़ीक़ और याक़ूते-अरग़वानी। 13चौथी में पुखराज, अक़ीक़े-अहमर और यशब। हर जौहर सोने के ख़ाने में जड़ा हुआ था। 14यह बारह जवाहिर इसराईल के बारह क़बीलों की नुमाइंदगी करते थे। एक एक जौहर पर एक क़बीले का नाम कंदा किया गया, और यह नाम उस तरह कंदा किए गए जिस तरह मुहर कंदा की जाती है।

15अब उन्होंने सीने के कीसे के लिए ख़ालिस सोने की दो ज़ंजीरें बनाईं जो डोरी की तरह गुँधी हुई थीं। 16साथ साथ उन्होंने सोने के दो ख़ाने और दो कड़े भी बनाए। उन्होंने यह कड़े कीसे के ऊपर के दो कोनों पर लगाए। 17फिर दोनों ज़ंजीरें उन दो कड़ों के साथ लगाई गईं। 18उनके दूसरे सिरे बालापोश की कंधोंवाली पट्टियों के दो ख़ानों के साथ जोड़ दिए गए, फिर सामने की तरफ़ लगाए गए। 19उन्होंने कीसे के निचले दो कोनों पर भी सोने के दो कड़े लगाए। वह अंदर, बालापोश की तरफ़ लगे थे। 20अब उन्होंने दो और कड़े बनाकर बालापोश की कंधोंवाली पट्टियों पर लगाए। यह भी सामने की तरफ़ लगे थे लेकिन नीचे, बालापोश के पटके के ऊपर ही। 21उन्होंने सीने के कीसे के निचले कड़े नीली डोरी से बालापोश के इन निचले कड़ों के साथ बाँधे। यों कीसा पटके के ऊपर अच्छी तरह सीने के साथ लगा रहा। यह उन हिदायात के ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब ने मूसा को दी थीं।

हारून का चोग़ा

22फिर कारीगरों ने चोग़ा बुना। वह पूरी तरह नीले धागे से बनाया गया। चोग़े को बालापोश से पहले पहनना था। 23उसके गरेबान को बुने हुए कालर से मज़बूत किया गया ताकि वह न फटे। 24उन्होंने नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग के धागे से अनार बनाकर उन्हें चोग़े के दामन में लगा दिया। 25उनके दरमियान ख़ालिस सोने की घंटियाँ लगाई गईं। 26दामन में अनार और घंटियाँ बारी बारी लगाई गईं। लाज़िम था कि हारून ख़िदमत करने के लिए हमेशा यह चोग़ा पहने। रब ने मूसा को यही हुक्म दिया था।

ख़िदमत के लिए दीगर लिबास

27कारीगरों ने हारून और उसके बेटों के लिए बारीक कतान के ज़ेरजामे बनाए। यह बुननेवाले का काम था। 28साथ साथ उन्होंने बारीक कतान की पगड़ियाँ और बारीक कतान के पाजामे बनाए। 29कमरबंद को बारीक कतान और नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग के धागे से बनाया गया। कढ़ाई करनेवालों ने इस पर काम किया। सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ बनाया गया जो रब ने मूसा को दी थीं।

30उन्होंने मुक़द्दस ताज यानी ख़ालिस सोने की तख़्ती बनाई और उस पर यह अलफ़ाज़ कंदा किए, 'रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस।' 31फिर उन्होंने इसे नीली डोरी से पगड़ी के सामनेवाले हिस्से से लगा दिया। यह भी उन हिदायात के मुताबिक़ बनाया गया जो रब ने मूसा को दी थीं।

सारा सामान मूसा को दिखाया जाता है

32आख़िरकार मक़दिस का काम मुकम्मल हुआ। इसराईलियों ने सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ बनाया था जो रब ने मूसा को दी थीं। 33वह मक़दिस की तमाम चीज़ें मूसा के पास ले आए यानी मुक़द्दस ख़ैमा और उसका सारा सामान, उस की हुकें, दीवारों के तख़्ते, शहतीर, सतून और पाए, 34ख़ैमे पर मेंढों की सुर्ख़ रँगी हुई खालों का ग़िलाफ़ और तख़स की खालों का ग़िलाफ़, मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े का परदा, 35अहद का संदूक़ जिसमें शरीअत की तख़्तियाँ रखनी थीं, उसे उठाने की लकड़ियाँ और उसका ढकना, 36मख़सूस रोटियों की मेज़,

उसका सारा सामान और रोटियाँ, 37ख़ालिस सोने का शमादान और उस पर रखने के चराग़ उसके सारे सामान समेत, शमादान के लिए तेल, 38बख़ूर जलाने की सोने की क़ुरबानगाह, मसह का तेल, ख़ुशबूदार बख़ूर, मुक़द्दस ख़ैमे के दरवाज़े का परदा, 39जानवरों को चढ़ाने की पीतल की क़ुरबानगाह, उसका पीतल का जंगला, उसे उठाने की लकड़ियाँ और बाक़ी सारा सामान, धोने का हौज़ और वह ढाँचा जिस पर हौज़ रखना था, 40चारदीवारी के परदे उनके खंबों और पाइयों समेत, सहन के दरवाज़े का परदा, चारदीवारी के रस्से और मेख़ें, मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत करने का बाक़ी सारा सामान 41और मक़दिस में ख़िदमत करने के वह मुक़द्दस लिबास जो हारून और उसके बेटों को पहनने थे।

42सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ बनाया गया था जो रब ने मूसा को दी थीं। 43मूसा ने तमाम चीज़ों का मुआयना किया और मालूम किया कि उन्होंने सब कुछ रब की हिदायात के मुताबिक़ बनाया था। तब उसने उन्हें बरकत दी।

मक़दिस को खड़ा करने की हिदायात

40 फिर रब ने मूसा से कहा, 2“पहले महीने की पहली तारीख़ को मुलाक़ात का ख़ैमा खड़ा करना। 3अहद का संदूक़ जिसमें शरीअत की तख़्तियाँ हैं मुक़द्दसतरीन कमरे में रखकर उसके दरवाज़े का परदा लगाना। 4इसके बाद मख़सूस रोटियों की मेज़ मुक़द्दस कमरे में लाकर उस पर तमाम ज़रूरी सामान रखना। उस कमरे में शमादान भी ले आना और उस पर उसके चराग़ रखना। 5बख़ूर की सोने की क़ुरबानगाह उस परदे के सामने रखना जिसके पीछे अहद का संदूक़ है। फिर ख़ैमे में दाख़िल होने के दरवाज़े पर परदा लगाना। 6जानवरों को चढ़ाने की क़ुरबानगाह सहन में ख़ैमे के दरवाज़े के सामने रखी जाए। 7ख़ैमे और इस क़ुरबानगाह के दरमियान धोने का हौज़ रखकर उसमें पानी डालना। 8सहन की चारदीवारी खड़ी करके उसके दरवाज़े का परदा लगाना।

9फिर मसह का तेल लेकर उसे ख़ैमे और उसके सारे सामान पर छिड़क देना। यों तू उसे मेरे लिए मख़सूस करेगा और वह मुक़द्दस होगा। 10फिर जानवरों को चढ़ाने की क़ुरबानगाह और उसके सामान पर मसह का तेल छिड़कना। यों तू उसे मेरे लिए मख़सूस करेगा और वह निहायत मुक़द्दस होगा। 11इसी तरह हौज़ और उस ढाँचे को भी मख़सूस करना जिस पर हौज़ रखा गया है।

12हारून और उसके बेटों को मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर लाकर ग़ुस्ल कराना। 13फिर हारून को मुक़द्दस लिबास पहनाना और उसे मसह करके मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करना ताकि इमाम के तौर पर मेरी ख़िदमत करे। 14उसके बेटों को लाकर उन्हें ज़ेरजामे पहना देना। 15उन्हें उनके वालिद की तरह मसह करना ताकि वह भी इमामों के तौर पर मेरी ख़िदमत करें। जब उन्हें मसह किया जाएगा तो वह और बाद में उनकी औलाद हमेशा तक मक़दिस में इस ख़िदमत के लिए मख़सूस होंगे।”

मक़दिस को खड़ा किया जाता है

16मूसा ने सब कुछ रब की हिदायात के मुताबिक़ किया। 17पहले महीने की पहली तारीख़ को मुक़द्दस ख़ैमा खड़ा किया गया। उन्हें मिसर से निकले पूरा एक साल हो गया था। 18मूसा ने दीवार के तख़्तों को उनके पाइयों पर खड़ा करके उनके साथ शहतीर लगाए। इसी तरह उसने सतूनों को भी खड़ा किया। 19उसने रब की हिदायात के ऐन मुताबिक़ दीवारों पर कपड़े का ख़ैमा लगाया और उस पर दूसरे ग़िलाफ़ रखे।

20उसने शरीअत की दोनों तख़्तियाँ लेकर अहद के संदूक़ में रख दीं, उठाने के लिए लकड़ियाँ संदूक़ के कड़ों में डाल दीं और कफ़्फ़ारे का ढकना उस पर लगा दिया। 21फिर उसने रब की हिदायात के ऐन मुताबिक़ संदूक़ को मुक़द्दसतरीन कमरे में रखकर उसके दरवाज़े का

परदा लगा दिया। यों अहद के संदूक़ पर परदा पड़ा रहा। 22मूसा ने मख़सूस रोटियों की मेज़ मुक़द्दस कमरे के शिमाली हिस्से में उस परदे के सामने रख दी जिसके पीछे अहद का संदूक़ था। 23उसने रब की हिदायत के ऐन मुताबिक़ रब के लिए मख़सूस की हुई रोटियाँ मेज़ पर रखीं। 24उसी कमरे के जुनूबी हिस्से में उसने शमादान को मेज़ के मुक़ाबिल रख दिया। 25उस पर उसने रब की हिदायत के ऐन मुताबिक़ रब के सामने चराग़ रख दिए। 26उसने बख़ूर की सोने की क़ुरबानगाह भी उसी कमरे में रखी, उस परदे के बिलकुल सामने जिसके पीछे अहद का संदूक़ था। 27उसने उस पर रब की हिदायत के ऐन मुताबिक़ ख़ुशबूदार बख़ूर जलाया।

28फिर उसने ख़ैमे का दरवाज़ा लगा दिया। 29बाहर जाकर उसने जानवरों को चढ़ाने की क़ुरबानगाह ख़ैमे के दरवाज़े के सामने रख दी। उस पर उसने रब की हिदायत के ऐन मुताबिक़ भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ और ग़ल्ला की नज़रें चढ़ाईं।

30उसने धोने के हौज़ को ख़ैमे और उस क़ुरबानगाह के दरमियान रखकर उसमें पानी डाल दिया। 31मूसा, हारून और उसके बेटे उसे अपने हाथ-पाँव धोने के लिए इस्तेमाल करते थे। 32जब भी वह मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल होते या जानवरों को चढ़ाने की क़ुरबानगाह के पास आते तो रब की हिदायत के ऐन मुताबिक़ पहले ग़ुस्ल करते।

33आख़िर में मूसा ने ख़ैमा, क़ुरबानगाह और चारदीवारी खड़ी करके सहन के दरवाज़े का परदा लगा दिया। यों मूसा ने मक़दिस की तामीर मुकम्मल की।

ख़ैमे में रब का जलाल

34फिर मुलाक़ात के ख़ैमे पर बादल छा गया और मक़दिस रब के जलाल से भर गया। 35मूसा ख़ैमे में दाख़िल न हो सका, क्योंकि बादल उस पर ठहरा हुआ था और मक़दिस रब के जलाल से भर गया था।

36तमाम सफ़र के दौरान जब भी मक़दिस के ऊपर से बादल उठता तो इसराईली सफ़र के लिए तैयार हो जाते। 37अगर वह न उठता तो वह उस वक़्त तक ठहरे रहते जब तक बादल उठ न जाता। 38दिन के वक़्त बादल मक़दिस के ऊपर ठहरा रहता और रात के वक़्त वह तमाम इसराईलियों को आग की सूरत में नज़र आता था। यह सिलसिला पूरे सफ़र के दौरान जारी रहा।

अहबार

भस्म होनेवाली क़ुरबानी

1 रब ने मुलाक़ात के ख़ैमे में से मूसा को
बुलाकर कहा 2कि इसराईलियों को इत्तला
दे,
“अगर तुममें से कोई रब को क़ुरबानी पेश
करना चाहे तो वह अपने गाय-बैलों या भेड़-
बकरियों में से जानवर चुन ले।
3अगर वह अपने गाय-बैलों में से भस्म
होनेवाली क़ुरबानी चढ़ाना चाहे तो वह बेऐब बैल
चुनकर उसे मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर पेश
करे ताकि रब उसे क़बूल करे। 4क़ुरबानी पेश
करनेवाला अपना हाथ जानवर के सर पर रखे
तो यह क़ुरबानी मक़बूल होकर उसका कफ़्फ़ारा
देगी। 5क़ुरबानी पेश करनेवाला बैल को वहाँ रब
के सामने ज़बह करे। फिर हारून के बेटे जो
इमाम हैं उसका ख़ून रब को पेश करके उसे
दरवाज़े पर की क़ुरबानगाह के चार पहलुओं पर
छिड़कें। 6इसके बाद क़ुरबानी पेश करनेवाला
खाल उतारकर जानवर के टुकड़े टुकड़े करे।
7इमाम क़ुरबानगाह पर आग लगाकर उस पर
तरतीब से लकड़ियाँ चुनें। 8उस पर वह जानवर
के टुकड़े सर और चरबी समेत रखें। 9लाज़िम
है कि क़ुरबानी पेश करनेवाला पहले जानवर
की अंतड़ियाँ और पिंडलियाँ धोए, फिर इमाम
पूरे जानवर को क़ुरबानगाह पर जला दे। इस
जलनेवाली क़ुरबानी की ख़ुशबू रब को पसंद है।
10अगर भस्म होनेवाली क़ुरबानी भेड़-बकरियों
में से चुनी जाए तो वह बेऐब नर हो। 11पेश
करनेवाला उसे रब के सामने क़ुरबानगाह की
शिमाली सिम्त में ज़बह करे। फिर हारून के
बेटे जो इमाम हैं उसका ख़ून क़ुरबानगाह के
चार पहलुओं पर छिड़कें। 12इसके बाद पेश
करनेवाला जानवर के टुकड़े टुकड़े करे और इमाम
यह टुकड़े सर और चरबी समेत क़ुरबानगाह
की जलती हुई लकड़ियों पर तरतीब से रखे।
13लाज़िम है कि क़ुरबानी पेश करनेवाला पहले
जानवर की अंतड़ियाँ और पिंडलियाँ धोए, फिर
इमाम पूरे जानवर को रब को पेश करके
क़ुरबानगाह पर जला दे। इस जलनेवाली क़ुरबानी
की ख़ुशबू रब को पसंद है।
14अगर भस्म होनेवाली क़ुरबानी परिंदा हो तो
वह क़ुम्री या जवान कबूतर हो। 15इमाम उसे
क़ुरबानगाह के पास ले आए और उसका सर
मरोड़कर क़ुरबानगाह पर जला दे। वह उसका ख़ून
यों निकलने दे कि वह क़ुरबानगाह की एक तरफ़
से नीचे टपके। 16वह उसका पोटा और जो उसमें
है दूर करके क़ुरबानगाह की मशरिक़ी सिम्त में
फेंक दे, वहाँ जहाँ राख फेंकी जाती है। 17उसे
पेश करते वक़्त इमाम उसके पर पकड़कर परिंदे
को फाड़ डाले, लेकिन यों कि वह बिलकुल टुकड़े
टुकड़े न हो जाए। फिर इमाम उसे क़ुरबानगाह पर
जलती हुई लकड़ियों पर जला दे। इस जलनेवाली
क़ुरबानी की ख़ुशबू रब को पसंद है।

ग़ल्ला की नज़र

2 अगर कोई रब को ग़ल्ला की नज़र पेश
करना चाहे तो वह इसके लिए बेहतरीन
मैदा इस्तेमाल करे। उस पर वह ज़ैतून का तेल
उंडेले और लुबान रखकर 2उसे हारून के बेटों
के पास ले आए जो इमाम हैं। इमाम तेल से
मिलाया गया मुट्ठी-भर मैदा और तमाम लुबान
लेकर क़ुरबानगाह पर जला दे। यह यादगार का
हिस्सा है, और उस की ख़ुशबू रब को पसंद है।
3बाक़ी मैदा और तेल हारून और उसके बेटों का
हिस्सा है। वह रब की जलनेवाली क़ुरबानियों में
से एक निहायत मुक़द्दस हिस्सा है।

4अगर यह क़ुरबानी तनूर में पकाई हुई रोटी हो
तो उसमें ख़मीर न हो। इसकी दो क़िस्में हो सकती
हैं, रोटियाँ जो बेहतरीन मैदे और तेल से बनी हुई
हों और रोटियाँ जिन पर तेल लगाया गया हो।

5अगर यह क़ुरबानी तवे पर पकाई हुई रोटी हो
तो वह बेहतरीन मैदे और तेल की हो। उसमें ख़मीर
न हो। 6चूँकि वह ग़ल्ला की नज़र है इसलिए रोटी
को टुकड़े टुकड़े करना और उस पर तेल डालना।

7अगर यह क़ुरबानी कड़ाही में पकाई हुई रोटी
हो तो वह बेहतरीन मैदे और तेल की हो।

8अगर तू इन चीज़ों की बनी हुई ग़ल्ला की नज़र
रब के हुज़ूर लाना चाहे तो उसे इमाम को पेश
करना। वही उसे क़ुरबानगाह के पास ले आए।
9फिर इमाम यादगार का हिस्सा अलग करके
उसे क़ुरबानगाह पर जला दे। ऐसी क़ुरबानी की
ख़ुशबू रब को पसंद है। 10क़ुरबानी का बाक़ी
हिस्सा हारून और उसके बेटों के लिए है। वह
रब की जलनेवाली क़ुरबानियों में से एक निहायत
मुक़द्दस हिस्सा है।

11ग़ल्ला की जितनी नज़रें तुम रब को पेश
करते हो उनमें ख़मीर न हो, क्योंकि लाज़िम है कि
तुम रब को जलनेवाली क़ुरबानी पेश करते वक़्त
न ख़मीर, न शहद जलाओ। 12यह चीज़ें फ़सल
के पहले फलों के साथ रब को पेश की जा सकती
हैं, लेकिन उन्हें क़ुरबानगाह पर न जलाया जाए,
क्योंकि वहाँ रब को उनकी ख़ुशबू पसंद नहीं है।
13ग़ल्ला की हर नज़र में नमक हो, क्योंकि नमक
उस अहद की नुमाइंदगी करता है जो तेरे ख़ुदा
ने तेरे साथ बाँधा है। तुझे हर क़ुरबानी में नमक
डालना है।

14अगर तू ग़ल्ला की नज़र के लिए फ़सल के
पहले फल पेश करना चाहे तो कुचली हुई कच्ची
बालियाँ भूनकर पेश करना। 15चूँकि वह ग़ल्ला
की नज़र है इसलिए उस पर तेल उंडेलना और
लुबान रखना। 16कुचले हुए दानों और तेल का
जो हिस्सा रब का है यानी यादगार का हिस्सा
उसे इमाम तमाम लुबान के साथ जला दे। यह
नज़र रब के लिए जलनेवाली क़ुरबानी है।

सलामती की क़ुरबानी

3 अगर कोई रब को सलामती की क़ुरबानी
पेश करने के लिए गाय या बैल चढ़ाना
चाहे तो वह जानवर बेऐब हो। 2वह अपना हाथ
जानवर के सर पर रखकर उसे मुलाक़ात के
ख़ैमे के दरवाज़े पर ज़बह करे। हारून के बेटे जो
इमाम हैं उसका ख़ून क़ुरबानगाह के चार पहलुओं
पर छिड़कें। 3-4पेश करनेवाला अंतड़ियों पर की
सारी चरबी, गुरदे उस चरबी समेत जो उन पर
और कमर के क़रीब होती है और जोड़कलेजी
जलनेवाली क़ुरबानी के तौर पर रब को पेश करे।
इन चीज़ों को गुरदों के साथ ही अलग करना है।
5फिर हारून के बेटे यह सब कुछ भस्म होनेवाली
क़ुरबानी के साथ क़ुरबानगाह की लकड़ियों पर
जला दें। यह जलनेवाली क़ुरबानी है, और इसकी
ख़ुशबू रब को पसंद है।

6अगर सलामती की क़ुरबानी के लिए भेड़-
बकरियों में से जानवर चुना जाए तो वह बेऐब नर
या मादा हो।

7अगर वह भेड़ का बच्चा चढ़ाना चाहे तो वह
उसे रब के सामने ले आए। 8वह अपना हाथ
उसके सर पर रखकर उसे मुलाक़ात के ख़ैमे
के सामने ज़बह करे। हारून के बेटे उसका ख़ून
क़ुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कें। 9-10पेश

करनेवाला चरबी, पूरी दुम, अंतड़ियों पर की सारी चरबी, गुरदे उस चरबी समेत जो उन पर और कमर के क़रीब होती है और जोड़कलेजी जलनेवाली क़ुरबानी के तौर पर रब को पेश करे। इन चीज़ों को गुरदों के साथ ही अलग करना है। 11इमाम यह सब कुछ रब को पेश करके क़ुरबानगाह पर जला दे। यह ख़ुराक जलनेवाली क़ुरबानी है।

12अगर सलामती की क़ुरबानी बकरी की हो 13तो पेश करनेवाला उस पर हाथ रखकर उसे मुलाक़ात के ख़ैमे के सामने ज़बह करे। हारून के बेटे जानवर का ख़ून क़ुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कें। 14-15पेश करनेवाला अंतड़ियों पर की सारी चरबी, गुरदे उस चरबी समेत जो उन पर और कमर के क़रीब होती है और जोड़कलेजी जलनेवाली क़ुरबानी के तौर पर रब को पेश करे। इन चीज़ों को गुरदों के साथ ही अलग करना है। 16इमाम यह सब कुछ रब को पेश करके क़ुरबानगाह पर जला दे। यह ख़ुराक जलनेवाली क़ुरबानी है, और इसकी ख़ुशबू रब को पसंद है।

सारी चरबी रब की है। 17तुम्हारे लिए ख़ून या चरबी खाना मना है। यह न सिर्फ़ तुम्हारे लिए मना है बल्कि तुम्हारी औलाद के लिए भी, न सिर्फ़ यहाँ बल्कि हर जगह जहाँ तुम रहते हो।”

गुनाह की क़ुरबानी

4 रब ने मूसा से कहा, 2“इसराईलियों को बताना कि जो भी ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म को तोड़े वह यह करे :

इमाम के लिए गुनाह की क़ुरबानी

3अगर इमामे-आज़म गुनाह करे और नतीजे में पूरी क़ौम क़ुसूरवार ठहरे तो फिर वह रब को एक बेऐब जवान बैल लेकर गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर पेश करे। 4वह जवान बैल को मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े के पास ले आए और अपना हाथ उसके सर पर रखकर उसे रब के सामने ज़बह करे। 5फिर वह जानवर के ख़ून में से कुछ लेकर ख़ैमे में जाए। 6वहाँ वह अपनी उँगली उसमें डालकर उसे सात बार रब के सामने यानी मुक़द्दसतरीन कमरे के परदे पर छिड़के। 7फिर वह ख़ैमे के अंदर की उस क़ुरबानगाह के चारों सींगों पर ख़ून लगाए जिस पर बख़ूर जलाया जाता है। बाक़ी ख़ून वह बाहर ख़ैमे के दरवाज़े पर की उस क़ुरबानगाह के पाए पर उंडेले जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। 8जवान बैल की सारी चरबी, अंतड़ियों पर की सारी चरबी, 9गुरदे उस चरबी समेत जो उन पर और कमर के क़रीब होती है और जोड़कलेजी को गुरदों के साथ ही अलग करना है। 10यह बिलकुल उसी तरह किया जाए जिस तरह उस बैल के साथ किया गया जो सलामती की क़ुरबानी के लिए पेश किया जाता है। इमाम यह सब कुछ उस क़ुरबानगाह पर जला दे जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। 11लेकिन वह उस की खाल, उसका सारा गोश्त, सर और पिंडलियाँ, अंतड़ियाँ और उनका गोबर 12ख़ैमागाह के बाहर ले जाए। यह चीज़ें उस पाक जगह पर जहाँ क़ुरबानियों की राख फेंकी जाती है लकड़ियों पर रखकर जला देनी हैं।

क़ौम के लिए गुनाह की क़ुरबानी

13अगर इसराईल की पूरी जमात ने ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म से तजावुज़ किया है और जमात को मालूम नहीं था तो भी वह क़ुसूरवार है। 14जब लोगों को पता लगे कि हमने गुनाह किया है तो जमात मुलाक़ात के ख़ैमे के पास एक जवान बैल ले आए और उसे गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर पेश करे। 15जमात के बुज़ुर्ग रब के सामने अपने हाथ उसके सर पर रखें, और वह वहीं ज़बह किया जाए। 16फिर इमामे-आज़म जानवर के ख़ून में से कुछ लेकर मुलाक़ात के ख़ैमे में जाए। 17वहाँ वह अपनी उँगली उसमें डालकर उसे सात बार रब के सामने यानी मुक़द्दसतरीन कमरे के परदे पर छिड़के। 18फिर वह ख़ैमे के अंदर की उस क़ुरबानगाह के चारों सींगों पर ख़ून लगाए जिस पर बख़ूर

जलाया जाता है। बाक़ी ख़ून वह बाहर ख़ैमे के दरवाज़े की उस क़ुरबानगाह के पाए पर उंडेले जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। 19इसके बाद वह उस की तमाम चरबी निकालकर क़ुरबानगाह पर जला दे। 20उस बैल के साथ वह सब कुछ करे जो उसे अपने ज़ाती ग़ैरइरादी गुनाह के लिए करना होता है। यों वह लोगों का कफ़्फ़ारा देगा और उन्हें मुआफ़ी मिल जाएगी। 21आख़िर में वह बैल को ख़ैमागाह के बाहर ले जाकर उस तरह जला दे जिस तरह उसे अपने लिए बैल को जला देना होता है। यह जमात का गुनाह दूर करने की क़ुरबानी है।

क़ौम के राहनुमा के लिए गुनाह की क़ुरबानी

22अगर कोई सरदार ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म से तजावुज़ करे और यों क़ुसूरवार ठहरे तो 23जब भी उसे पता लगे कि मुझसे गुनाह हुआ है तो वह क़ुरबानी के लिए एक बेऐब बकरा ले आए। 24वह अपना हाथ बकरे के सर पर रखकर उसे वहाँ ज़बह करे जहाँ भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ ज़बह की जाती हैं। यह गुनाह की क़ुरबानी है। 25इमाम अपनी उँगली ख़ून में डालकर उसे उस क़ुरबानगाह के चारों सींगों पर लगाए जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। बाक़ी ख़ून वह क़ुरबानगाह के पाए पर उंडेले। 26फिर वह उस की सारी चरबी क़ुरबानगाह पर उस तरह जला दे जिस तरह वह सलामती की क़ुरबानियों की चरबी जला देता है। यों इमाम उस आदमी का कफ़्फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी हासिल हो जाएगी।

आम लोगों के लिए गुनाह की क़ुरबानी

27अगर कोई आम शख़्स ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म से तजावुज़ करे और यों क़ुसूरवार ठहरे तो 28जब भी उसे पता लगे कि मुझसे गुनाह हुआ है तो वह क़ुरबानी के लिए एक बेऐब बकरी ले आए। 29वह अपना हाथ बकरी के सर पर रखकर उसे वहाँ ज़बह करे जहाँ भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ ज़बह की जाती हैं। 30इमाम अपनी उँगली ख़ून में डालकर उसे उस क़ुरबानगाह के चारों सींगों पर लगाए जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। बाक़ी ख़ून वह क़ुरबानगाह के पाए पर उंडेले। 31फिर वह उस की सारी चरबी उस तरह निकाले जिस तरह वह सलामती की क़ुरबानियों की चरबी निकालता है। इसके बाद वह उसे क़ुरबानगाह पर जला दे। ऐसी क़ुरबानी की ख़ुशबू रब को पसंद है। यों इमाम उस आदमी का कफ़्फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी हासिल हो जाएगी।

32अगर वह गुनाह की क़ुरबानी के लिए भेड़ का बच्चा लाना चाहे तो वह बेऐब मादा हो। 33वह अपना हाथ उसके सर पर रखकर उसे वहाँ ज़बह करे जहाँ भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ ज़बह की जाती हैं। 34इमाम अपनी उँगली ख़ून में डालकर उसे उस क़ुरबानगाह के चारों सींगों पर लगाए जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। बाक़ी ख़ून वह क़ुरबानगाह के पाए पर उंडेले। 35फिर वह उस की तमाम चरबी उस तरह निकाले जिस तरह सलामती की क़ुरबानी के लिए ज़बह किए गए जवान मेंढे की चरबी निकाली जाती है। इसके बाद इमाम चरबी को क़ुरबानगाह पर उन क़ुरबानियों समेत जला दे जो रब के लिए जलाई जाती हैं। यों इमाम उस आदमी का कफ़्फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।

गुनाह की क़ुरबानियों के बारे में ख़ास हिदायात

5 हो सकता है कि किसी ने यों गुनाह किया कि उसने कोई जुर्म देखा या वह उसके बारे में कुछ जानता है। तो भी जब गवाहों को क़सम के लिए बुलाया जाता है तो वह गवाही देने के लिए सामने नहीं आता। इस सूरत में वह क़ुसूरवार ठहरता है।

2हो सकता है कि किसी ने ग़ैरइरादी तौर पर किसी नापाक चीज़ को छू लिया है, ख़ाह वह किसी जंगली जानवर, मवेशी या रेंगनेवाले

जानवर की लाश क्यों न हो। इस सूरत में वह नापाक है और क़ुसूरवार ठहरता है।

3हो सकता है कि किसी ने ग़ैरइरादी तौर पर किसी शख़्स की नापाकी को छू लिया है यानी उस की कोई ऐसी चीज़ जिससे वह नापाक हो गया है। जब उसे मालूम हो जाता है तो वह क़ुसूरवार ठहरता है।

4हो सकता है कि किसी ने बेपरवाई से कुछ करने की क़सम खाई है, चाहे वह अच्छा काम था या ग़लत। जब वह जान लेता है कि उसने क्या किया है तो वह क़ुसूरवार ठहरता है।

5जो इस तरह के किसी गुनाह की बिना पर क़ुसूरवार हो, लाज़िम है कि वह अपना गुनाह तसलीम करे। 6फिर वह गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर एक भेड़ या बकरी पेश करे। यों इमाम उसका कफ़्फ़ारा देगा।

7अगर क़ुसूरवार शख़्स ग़ुरबत के बाइस भेड़ या बकरी न दे सके तो वह रब को दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर पेश करे, एक गुनाह की क़ुरबानी के लिए और एक भस्म होनेवाली क़ुरबानी के लिए। 8वह उन्हें इमाम के पास ले आए। इमाम पहले गुनाह की क़ुरबानी के लिए परिंदा पेश करे। वह उस की गरदन मरोड़ डाले लेकिन ऐसे कि सर जुदा न हो जाए। 9फिर वह उसके ख़ून में से कुछ क़ुरबानगाह के एक पहलू पर छिड़के। बाक़ी ख़ून वह यों निकलने दे कि वह क़ुरबानगाह के पाए पर टपके। यह गुनाह की क़ुरबानी है। 10फिर इमाम दूसरे परिंदे को क़वायद के मुताबिक़ भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश करे। यों इमाम उस आदमी का कफ़्फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।

11अगर वह शख़्स ग़ुरबत के बाइस दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर भी न दे सके तो फिर वह गुनाह की क़ुरबानी के लिए डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा पेश करे। वह उस पर न तेल उंडेले, न लुबान रखे, क्योंकि यह ग़ल्ला की नज़र नहीं बल्कि गुनाह की क़ुरबानी है। 12वह उसे इमाम के पास ले आए जो यादगार का हिस्सा यानी मुट्ठी-भर उन क़ुरबानियों के साथ जला दे जो रब के लिए जलाई जाती हैं। यह गुनाह की क़ुरबानी है। 13यों इमाम उस आदमी का कफ़्फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी मिल जाएगी। ग़ल्ला की नज़र की तरह बाक़ी मैदा इमाम का हिस्सा है।”

क़ुसूर की क़ुरबानी

14रब ने मूसा से कहा, 15“अगर किसी ने बेईमानी करके ग़ैरइरादी तौर पर रब की मख़सूस और मुक़द्दस चीज़ों के सिलसिले में गुनाह किया हो, ऐसा शख़्स क़ुसूर की क़ुरबानी के तौर पर रब को बेऐब और क़ीमत के लिहाज़ से मुनासिब मेंढा या बकरा पेश करे। उस की क़ीमत मक़दिस की शरह के मुताबिक़ मुक़र्रर की जाए। 16जितना नुक़सान मक़दिस को हुआ है उतना ही वह दे। इसके अलावा वह मज़ीद 20 फ़ीसद अदा करे। वह उसे इमाम को दे दे और इमाम जानवर को क़ुसूर की क़ुरबानी के तौर पर पेश करके उसका कफ़्फ़ारा दे। यों उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।

17अगर कोई ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म से तजावुज़ करे तो वह क़ुसूरवार है, और वह उसका ज़िम्मेदार ठहरेगा। 18वह क़ुसूर की क़ुरबानी के तौर पर इमाम के पास एक बेऐब और क़ीमत के लिहाज़ से मुनासिब मेंढा ले आए। उस की क़ीमत मक़दिस की शरह के मुताबिक़ मुक़र्रर की जाए। फिर इमाम यह क़ुरबानी उस गुनाह के लिए चढ़ाए जो क़ुसूरवार शख़्स ने ग़ैरइरादी तौर पर किया है। यों उसे मुआफ़ी मिल जाएगी। 19यह क़ुसूर की क़ुरबानी है, क्योंकि वह रब का गुनाह करके क़ुसूरवार ठहरा है।”

6 रब ने मूसा से कहा, 2“हो सकता है किसी ने गुनाह करके बेईमानी की है, मसलन उसने अपने पड़ोसी की कोई चीज़ वापस नहीं की जो उसके सुपुर्द की गई थी या जो उसे गिरवी के तौर पर मिली थी, या उसने उस की कोई चीज़ चोरी की, या उसने किसी से कोई चीज़ छीन ली, 3या उसने किसी की गुमशुदा चीज़ के बारे में झूट

बोला जब उसे मिल गई, या उसने क़सम खाकर
झूट बोला है, या इस तरह का कोई और गुनाह
किया है। 4अगर वह इस तरह का गुनाह करके
क़ुसूरवार ठहरे तो लाज़िम है कि वह वही चीज़
वापस करे जो उसने चोरी की या छीन ली या जो
उसके सुपुर्द की गई या जो गुमशुदा होकर उसके
पास आ गई है 5या जिसके बारे में उसने क़सम
खाकर झूट बोला है। वह उसका उतना ही वापस
करके 20 फ़ीसद ज़्यादा दे। और वह यह सब
कुछ उस दिन वापस करे जब वह अपनी क़ुसूर
की क़ुरबानी पेश करता है। 6क़ुसूर की क़ुरबानी
के तौर पर वह एक बेऐब और क़ीमत के लिहाज़
से मुनासिब मेंढा इमाम के पास ले आए और रब
को पेश करे। उस की क़ीमत मक़दिस की शरह
के मुताबिक़ मुक़र्रर की जाए। 7फिर इमाम रब
के सामने उसका कफ़्फ़ारा देगा तो उसे मुआफ़ी
मिल जाएगी।"

भस्म होनेवाली क़ुरबानी

8रब ने मूसा से कहा, 9"हारून और उसके
बेटों को भस्म होनेवाली क़ुरबानियों के बारे में
ज़ैल की हिदायात देना : भस्म होनेवाली क़ुरबानी
पूरी रात सुबह तक क़ुरबानगाह की उस जगह पर
रहे जहाँ आग जलती है। आग को बुझने न देना।
10सुबह को इमाम कतान का लिबास और कतान
का पाजामा पहनकर क़ुरबानी से बची हुई राख
क़ुरबानगाह के पास ज़मीन पर डाले। 11फिर वह
अपने कपड़े बदलकर राख को ख़ैमागाह के बाहर
किसी पाक जगह पर छोड़ आए। 12क़ुरबानगाह
पर आग जलती रहे। वह कभी भी न बुझे।
हर सुबह इमाम लकड़ियाँ चुनकर उस पर भस्म
होनेवाली क़ुरबानी तरतीब से रखे और उस पर
सलामती की क़ुरबानी की चरबी जला दे। 13आग
हमेशा जलती रहे। वह कभी न बुझने पाए।

ग़ल्ला की नज़र

14ग़ल्ला की नज़र के बारे में हिदायात यह हैं :
हारून के बेटे उसे क़ुरबानगाह के सामने रब को
पेश करें। 15फिर इमाम यादगार का हिस्सा यानी
तेल से मिलाया गया मुट्ठी-भर बेहतरीन मैदा और
क़ुरबानी का तमाम लुबान लेकर क़ुरबानगाह पर
जला दे। इसकी ख़ुशबू रब को पसंद है। 16हारून
और उसके बेटे क़ुरबानी का बाक़ी हिस्सा खा लें।
लेकिन वह उसे मुक़द्दस जगह पर यानी मुलाक़ात
के ख़ैमे की चारदीवारी के अंदर खाएँ, और उसमें
ख़मीर न हो। 17उसे पकाने के लिए उसमें ख़मीर
न डाला जाए। मैंने जलनेवाली क़ुरबानियों में
से यह हिस्सा उनके लिए मुक़र्रर किया है। यह
गुनाह की क़ुरबानी और क़ुसूर की क़ुरबानी की
तरह निहायत मुक़द्दस है। 18हारून की औलाद के
तमाम मर्द उसे खाएँ। यह उसूल अबद तक क़ायम
रहे। जो भी उसे छुएगा वह मख़सूसो-मुक़द्दस हो
जाएगा।"

19रब ने मूसा से कहा, 20"जब हारून और
उसके बेटों को इमाम की ज़िम्मेदारी उठाने के
लिए मख़सूस करके तेल से मसह किया जाएगा
तो वह डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा पेश करें।
उसका आधा हिस्सा सुबह को और आधा हिस्सा
शाम के वक़्त पेश किया जाए। वह ग़ल्ला की
यह नज़र रोज़ाना पेश करें। 21उसे तेल के साथ
मिलाकर तवे पर पकाना है। फिर उसे टुकड़े टुकड़े
करके ग़ल्ला की नज़र के तौर पर पेश करना। उस
की ख़ुशबू रब को पसंद है। 22यह क़ुरबानी हमेशा
हारून की नसल का वह आदमी पेश करे जिसे
मसह करके इमामे-आज़म का ओहदा दिया गया
है, और वह उसे पूरे तौर पर रब के लिए जला दे।
23इमाम की ग़ल्ला की नज़र हमेशा पूरे तौर पर
जलाना। उसे न खाना।"

गुनाह की क़ुरबानी

24रब ने मूसा से कहा, 25"हारून और उसके
बेटों को गुनाह की क़ुरबानी के बारे में ज़ैल की
हिदायात देना : गुनाह की क़ुरबानी को रब के
सामने वहीं ज़बह करना है जहाँ भस्म होनेवाली
क़ुरबानी ज़बह की जाती है। वह निहायत मुक़द्दस
है। 26उसे पेश करनेवाला इमाम उसे मुक़द्दस

जगह पर यानी मुलाक़ात के ख़ैमे की चारदीवारी के अंदर खाए। 27जो भी इस क़ुरबानी के गोश्त को छू लेता है वह मख़सूसो-मुक़द्दस हो जाता है। अगर क़ुरबानी के ख़ून के छींटे किसी लिबास पर पड़ जाएँ तो उसे मुक़द्दस जगह पर धोना है। 28अगर गोश्त को हंडिया में पकाया गया हो तो उस बरतन को बाद में तोड़ देना है। अगर उसके लिए पीतल का बरतन इस्तेमाल किया गया हो तो उसे ख़ूब माँझकर पानी से साफ़ करना। 29इमामों के ख़ानदानों में से तमाम मर्द उसे खा सकते हैं। यह खाना निहायत मुक़द्दस है। 30लेकिन गुनाह की हर वह क़ुरबानी खाई न जाए जिसका ख़ून मुलाक़ात के ख़ैमे में इसलिए लाया गया है कि मक़दिस में किसी का कफ़्फ़ारा दिया जाए। उसे जलाना है।

क़ुसूर की क़ुरबानी

7 क़ुसूर की क़ुरबानी जो निहायत मुक़द्दस है उसके बारे में हिदायात यह हैं :

2क़ुसूर की क़ुरबानी वहीं ज़बह करनी है जहाँ भस्म होनेवाली क़ुरबानी ज़बह की जाती है। उसका ख़ून क़ुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़का जाए। 3उस की तमाम चरबी निकालकर क़ुरबानगाह पर चढ़ानी है यानी उस की दुम, अंतड़ियों पर की चरबी, 4गुरदे उस चरबी समेत जो उन पर और कमर के क़रीब होती है और जोड़कलेजी। इन चीज़ों को गुरदों के साथ ही अलग करना है। 5इमाम यह सब कुछ रब को क़ुरबानगाह पर जलनेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश करे। यह क़ुसूर की क़ुरबानी है। 6इमामों के ख़ानदानों में से तमाम मर्द उसे खा सकते हैं। लेकिन उसे मुक़द्दस जगह पर खाया जाए। यह निहायत मुक़द्दस है।

7गुनाह और क़ुसूर की क़ुरबानी के लिए एक ही उसूल है, जो इमाम क़ुरबानी को पेश करके कफ़्फ़ारा देता है उसको उसका गोश्त मिलता है। 8इस तरह जो इमाम किसी जानवर को भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर चढ़ाता है उसी को जानवर की खाल मिलती है। 9और इसी तरह तनूर में, कड़ाही में या तवे पर पकाई गई ग़ल्ला की हर नज़र उस इमाम को मिलती है जिसने उसे पेश किया है। 10लेकिन हारून के तमाम बेटों को ग़ल्ला की बाक़ी नज़रें बराबर बराबर मिलती रहें, ख़ाह उनमें तेल मिलाया गया हो या वह ख़ुश्क हों।

सलामती की क़ुरबानी

11सलामती की क़ुरबानी जो रब को पेश की जाती है उसके बारे में ज़ैल की हिदायात हैं :

12अगर कोई इस क़ुरबानी से अपनी शुक्रगुज़ारी का इज़हार करना चाहे तो वह जानवर के साथ बेख़मीरी रोटी जिसमें तेल डाला गया हो, बेख़मीरी रोटी जिस पर तेल लगाया गया हो और रोटी जिसमें बेहतरीन मैदा और तेल मिलाया गया हो पेश करे। 13इसके अलावा वह ख़मीरी रोटी भी पेश करे। 14पेश करनेवाला क़ुरबानी की हर चीज़ का एक हिस्सा उठाकर रब के लिए मख़सूस करे। यह उस इमाम का हिस्सा है जो जानवर का ख़ून क़ुरबानगाह पर छिड़कता है। 15गोश्त उसी दिन खाया जाए जब जानवर को ज़बह किया गया हो। अगली सुबह तक कुछ नहीं बचना चाहिए।

16इस क़ुरबानी का गोश्त सिर्फ़ इस सूरत में अगले दिन खाया जा सकता है जब किसी ने मन्नत मानकर या अपनी ख़ुशी से उसे पेश किया है। 17अगर कुछ गोश्त तीसरे दिन तक बच जाए तो उसे जलाना है। 18अगर उसे तीसरे दिन भी खाया जाए तो रब यह क़ुरबानी क़बूल नहीं करेगा। उसका कोई फ़ायदा नहीं होगा बल्कि उसे नापाक क़रार दिया जाएगा। जो भी उससे खाएगा वह क़ुसूरवार ठहरेगा। 19अगर यह गोश्त किसी नापाक चीज़ से लग जाए तो उसे नहीं खाना है बल्कि उसे जलाया जाए। अगर गोश्त पाक है तो हर शख़्स जो ख़ुद पाक है उसे खा सकता है। 20लेकिन अगर नापाक शख़्स रब को पेश की गई सलामती की क़ुरबानी का यह गोश्त खाए तो उसे उस की क़ौम में से मिटा डालना है। 21हो सकता है कि किसी ने किसी नापाक चीज़ को छू

लिया है चाहे वह नापाक शख़्स, जानवर या कोई और घिनौनी और नापाक चीज़ हो। अगर ऐसा शख़्स रब को पेश की गई सलामती की क़ुरबानी का गोश्त खाए तो उसे उस की क़ौम में से मिटा डालना है।”

चरबी और ख़ून खाना मना है

22रब ने मूसा से कहा, 23“इसराईलियों को बता देना कि गाय-बैल और भेड़-बकरियों की चरबी खाना तुम्हारे लिए मना है। 24तुम फ़ितरी तौर पर मरे हुए जानवरों और फाड़े हुए जानवरों की चरबी दीगर कामों के लिए इस्तेमाल कर सकते हो, लेकिन उसे खाना मना है। 25जो भी उस चरबी में से खाए जो जलाकर रब को पेश की जाती है उसे उस की क़ौम में से मिटा डालना है। 26जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ परिंदों या दीगर जानवरों का ख़ून खाना मना है। 27जो भी ख़ून खाए उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए।”

क़ुरबानियों में से इमाम का हिस्सा

28रब ने मूसा से कहा, 29“इसराईलियों को बताना कि जो रब को सलामती की क़ुरबानी पेश करे वह रब के लिए एक हिस्सा मख़सूस करे। 30वह जलनेवाली यह क़ुरबानी अपने हाथों से रब को पेश करे। इसके लिए वह जानवर की चरबी और सीना रब के सामने पेश करे। सीना हिलानेवाली क़ुरबानी हो। 31इमाम चरबी को क़ुरबानगाह पर जला दे जबकि सीना हारून और उसके बेटों का हिस्सा है। 32क़ुरबानी की दहनी रान इमाम को उठानेवाली क़ुरबानी के तौर पर दी जाए। 33वह उस इमाम का हिस्सा है जो सलामती की क़ुरबानी का ख़ून और चरबी चढ़ाता है।

34इसराईलियों की सलामती की क़ुरबानियों में से मैंने हिलानेवाला सीना और उठानेवाली रान इमामों को दी है। यह चीज़ें हमेशा के लिए इसराईलियों की तरफ़ से इमामों का हक़ हैं।”

35यह उस दिन जलनेवाली क़ुरबानियों में से हारून और उसके बेटों का हिस्सा बन गईं जब उन्हें मक़दिस में रब की ख़िदमत में पेश किया गया। 36रब ने उस दिन जब उन्हें तेल से मसह किया गया हुक्म दिया था कि इसराईली यह हिस्सा हमेशा इमामों को दिया करें।

37ग़रज़ यह हिदायात तमाम क़ुरबानियों के बारे में हैं यानी भस्म होनेवाली क़ुरबानी, ग़ल्ला की नज़र, गुनाह की क़ुरबानी, क़ुसूर की क़ुरबानी, इमाम को मक़दिस में ख़िदमत के लिए मख़सूस करने की क़ुरबानी और सलामती की क़ुरबानी के बारे में। 38रब ने मूसा को यह हिदायात सीना पहाड़ पर दीं, उस दिन जब उसने इसराईलियों को हुक्म दिया कि वह दश्ते-सीना में रब को अपनी क़ुरबानियाँ पेश करें।

हारून और उसके बेटों की मख़सूसियत

8 रब ने मूसा से कहा, 2“हारून और उसके बेटों को मेरे हुज़ूर ले आना। नीज़ इमामों के लिबास, मसह का तेल, गुनाह की क़ुरबानी के लिए जवान बैल, दो मेंढे और बेख़मीरी रोटियों की टोकरी ले आना। 3फिर पूरी जमात को ख़ैमे के दरवाज़े पर जमा करना।”

4मूसा ने ऐसा ही किया। जब पूरी जमात इकट्ठी हो गई तो 5उसने उनसे कहा, “अब मैं वह कुछ करता हूँ जिसका हुक्म रब ने दिया है।” 6मूसा ने हारून और उसके बेटों को सामने लाकर ग़ुस्ल कराया। 7उसने हारून को कतान का ज़ेरजामा पहनाकर कमरबंद लपेटा। फिर उसने चोग़ा पहनाया जिस पर उसने बालापोश को महारत से बुने हुए पटके से बाँधा। 8इसके बाद उसने सीने का कीसा लगाकर उसमें दोनों क़ुरे बनाम ऊरीम और तुम्मीम रखे। 9फिर उसने हारून के सर पर पगड़ी रखी जिसके सामनेवाले हिस्से पर उसने मुक़द्दस ताज यानी सोने की तख़्ती लगा दी। सब कुछ उस हुक्म के ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब ने मूसा को दिया था।

10इसके बाद मूसा ने मसह के तेल से मक़दिस
को और जो कुछ उसमें था मसह करके उसे
मख़सूसो-मुक़द्दस किया। 11उसने यह तेल सात
बार जानवर चढ़ाने की क़ुरबानगाह और उसके
सामान पर छिड़क दिया। इसी तरह उसने सात
बार धोने के हौज़ और उस ढाँचे पर तेल छिड़क
दिया जिस पर हौज़ रखा हुआ था। यों यह चीज़ें
मख़सूसो-मुक़द्दस हुईं। 12उसने हारून के सर पर
मसह का तेल उंडेलकर उसे मसह किया। यों वह
मख़सूसो-मुक़द्दस हुआ।

13फिर मूसा ने हारून के बेटों को सामने लाकर
उन्हें ज़ेरजामे पहनाए, कमरबंद लपेटे और उनके
सरों पर पगड़ियाँ बाँधीं। सब कुछ उस हुक्म के
ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब ने मूसा को दिया था।

14अब मूसा ने गुनाह की क़ुरबानी के लिए
जवान बैल को पेश किया। हारून और उसके
बेटों ने अपने हाथ उसके सर पर रखे। 15मूसा
ने उसे ज़बह करके उसके ख़ून में से कुछ लेकर
अपनी उँगली से क़ुरबानगाह के सींगों पर लगा
दिया ताकि वह गुनाहों से पाक हो जाए। बाक़ी
ख़ून उसने क़ुरबानगाह के पाए पर उंडेल दिया।
यों उसने उसे मख़सूसो-मुक़द्दस करके उसका
कफ़्फ़ारा दिया। 16मूसा ने अंतड़ियों पर की
तमाम चरबी, जोड़कलेजी और दोनों गुरदे उनकी
चरबी समेत लेकर क़ुरबानगाह पर जला दिए।
17लेकिन बैल की खाल, गोश्त और अंतड़ियों के
गोबर को उसने ख़ैमागाह के बाहर ले जाकर जला
दिया। सब कुछ उस हुक्म के मुताबिक़ हुआ जो
रब ने मूसा को दिया था।

18इसके बाद उसने भस्म होनेवाली क़ुर-
बानी के लिए पहला मेंढा पेश किया। हारून
और उसके बेटों ने अपने हाथ उसके सर पर
रख दिए। 19मूसा ने उसे ज़बह करके उसका
ख़ून क़ुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़क
दिया। 20उसने मेंढे को टुकड़े टुकड़े करके सर,
टुकड़े और चरबी जला दी। 21उसने अंतड़ियाँ
और पिंडलियाँ पानी से साफ़ करके पूरे मेंढे को
क़ुरबानगाह पर जला दिया। सब कुछ उस हुक्म
के ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब ने मूसा को दिया
था। रब के लिए जलनेवाली यह क़ुरबानी भस्म
होनेवाली क़ुरबानी थी, और उस की ख़ुशबू रब
को पसंद थी।

22इसके बाद मूसा ने दूसरे मेंढे को पेश किया।
इस क़ुरबानी का मक़सद इमामों को मक़दिस में
ख़िदमत के लिए मख़सूस करना था। हारून और
उसके बेटों ने अपने हाथ मेंढे के सर पर रख दिए।
23मूसा ने उसे ज़बह करके उसके ख़ून में से कुछ
लेकर हारून के दहने कान की लौ पर और उसके
दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर लगाया।
24यही उसने हारून के बेटों के साथ भी किया।
उसने उन्हें सामने लाकर उनके दहने कान की लौ
पर और उनके दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों
पर ख़ून लगाया। बाक़ी ख़ून उसने क़ुरबानगाह
के चार पहलुओं पर छिड़क दिया। 25उसने मेंढे
की चरबी, दुम, अंतड़ियों पर की सारी चरबी,
जोड़कलेजी, दोनों गुरदे उनकी चरबी समेत और
दहनी रान अलग की। 26फिर वह रब के सामने
पड़ी बेख़मीरी रोटियों की टोकरी में से एक सादा
रोटी, एक रोटी जिसमें तेल डाला गया था और
एक रोटी जिस पर तेल लगाया गया था लेकर
चरबी और रान पर रख दी। 27उसने यह सब
कुछ हारून और उसके बेटों के हाथों पर रखकर
उसे हिलानेवाली क़ुरबानी के तौर पर रब को
पेश किया। 28फिर उसने यह चीज़ें उनसे वापस
लेकर क़ुरबानगाह पर जला दीं जिस पर पहले
भस्म होनेवाली क़ुरबानी रखी गई थी। रब के
लिए जलनेवाली यह क़ुरबानी इमामों को मख़सूस
करने के लिए चढ़ाई गई, और उस की ख़ुशबू रब
को पसंद थी।

29मूसा ने सीना भी लिया और उसे
हिलानेवाली क़ुरबानी के तौर पर रब के सामने
हिलाया। यह मख़सूसियत के मेंढे में से मूसा का
हिस्सा था। मूसा ने इसमें भी सब कुछ रब के हुक्म
के ऐन मुताबिक़ किया।

30फिर उसने मसह के तेल और क़ुरबान-
गाह पर के ख़ून में से कुछ लेकर हारून, उसके

बेटों और उनके कपड़ों पर छिड़क दिया। यों उसने उन्हें और उनके कपड़ों को मख़सूसो-मुक़द्दस किया।

31मूसा ने उनसे कहा, “गोश्त को मुला-क़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर उबालकर उसे उन रोटियों के साथ खाना जो मख़सूसियत की क़ुरबानियों की टोकरी में पड़ी हैं। क्योंकि रब ने मुझे यही हुक्म दिया है। 32गोश्त और रोटियों का बक़ाया जला देना। 33सात दिन तक मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े में से न निकलना, क्योंकि मक़दिस में ख़िदमत के लिए तुम्हारी मख़सूसियत के इतने ही दिन हैं। 34जो कुछ आज हुआ है वह रब के हुक्म के मुताबिक़ हुआ ताकि तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया जाए। 35तुम्हें सात रात और दिन तक ख़ैमे के दरवाज़े के अंदर रहना है। रब की इस हिदायत को मानो वरना तुम मर जाओगे, क्योंकि यह हुक्म मुझे रब की तरफ़ से दिया गया है।”

36हारून और उसके बेटों ने उन तमाम हिदायात पर अमल किया जो रब ने मूसा की मारिफ़त उन्हें दी थीं।

हारून क़ुरबानियाँ चढ़ाता है

9 मख़सूसियत के सात दिन के बाद मूसा ने आठवें दिन हारून, उसके बेटों और इसराईल के बुज़ुर्गों को बुलाया। 2उसने हारून से कहा, “एक बेऐब बछड़ा और एक बेऐब मेंढा चुनकर रब को पेश कर। बछड़ा गुनाह की क़ुरबानी के लिए और मेंढा भस्म होनेवाली क़ुरबानी के लिए हो। 3फिर इसराईलियों को कह देना कि गुनाह की क़ुरबानी के लिए एक बकरा जबकि भस्म होनेवाली क़ुरबानी के लिए एक बेऐब यकसाला बछड़ा और एक बेऐब यकसाला भेड़ का बच्चा पेश करो। 4साथ ही सलामती की क़ुरबानी के लिए एक बैल और एक मेंढा चुनो। तेल के साथ मिलाई हुई ग़ल्ला की नज़र भी लेकर सब कुछ रब को पेश करो। क्योंकि आज ही रब तुम पर ज़ाहिर होगा।”

5इसराईली मूसा की मतलूबा तमाम चीज़ें मुलाक़ात के ख़ैमे के सामने ले आए। पूरी जमात क़रीब आकर रब के सामने खड़ी हो गई। 6मूसा ने उनसे कहा, “तुम्हें वही करना है जिसका हुक्म रब ने तुम्हें दिया है। क्योंकि आज ही रब का जलाल तुम पर ज़ाहिर होगा।”

7फिर उसने हारून से कहा, “क़ुरबानगाह के पास जाकर गुनाह की क़ुरबानी और भस्म होनेवाली क़ुरबानी चढ़ाकर अपना और अपनी क़ौम का कफ़्फ़ारा देना। रब के हुक्म के मुताबिक़ क़ौम के लिए भी क़ुरबानी पेश करना ताकि उसका कफ़्फ़ारा दिया जाए।”

8हारून क़ुरबानगाह के पास आया। उसने बछड़े को ज़बह किया। यह उसके लिए गुनाह की क़ुरबानी था। 9उसके बेटे बछड़े का ख़ून उसके पास ले आए। उसने अपनी उँगली ख़ून में डुबोकर उसे क़ुरबानगाह के सींगों पर लगाया। बाक़ी ख़ून को उसने क़ुरबानगाह के पाए पर उंडेल दिया। 10फिर उसने उस की चरबी, गुरदों और जोड़कलेजी को क़ुरबानगाह पर जला दिया। जैसे रब ने मूसा को हुक्म दिया था वैसे ही हारून ने किया। 11बछड़े का गोश्त और खाल उसने ख़ैमागाह के बाहर ले जाकर जला दी।

12इसके बाद हारून ने भस्म होनेवाली क़ुरबानी को ज़बह किया। उसके बेटों ने उसे उसका ख़ून दिया, और उसने उसे क़ुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़क दिया। 13उन्होंने उसे क़ुरबानी के मुख़्तलिफ़ टुकड़े सर समेत दिए, और उसने उन्हें क़ुरबानगाह पर जला दिया। 14फिर उसने उस की अंतड़ियाँ और पिंडलियाँ धोकर भस्म होनेवाली क़ुरबानी की बाक़ी चीज़ों पर रखकर जला दीं।

15अब हारून ने क़ौम के लिए क़ुरबानी चढ़ाई। उसने गुनाह की क़ुरबानी के लिए बकरा ज़बह करके उसे पहली क़ुरबानी की तरह चढ़ाया। 16उसने भस्म होनेवाली क़ुरबानी भी क़वायद के मुताबिक़ चढ़ाई। 17उसने ग़ल्ला की नज़र पेश की और उसमें से मुट्ठी-भर क़ुरबानगाह पर जला दिया। यह ग़ल्ला की उस नज़र के अलावा थी जो

सुबह को भस्म होनेवाली क़ुरबानी के साथ चढ़ाई गई थी। 18फिर उसने सलामती की क़ुरबानी के लिए बैल और मेंढे को ज़बह किया। यह भी क़ौम के लिए थी। उसके बेटों ने उसे जानवरों का ख़ून दिया, और उसने उसे क़ुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़क दिया। 19लेकिन उन्होंने बैल और मेंढे को चरबी, दुम, अंतड़ियों पर की चरबी और जोड़कलेजी निकालकर 20सीने के टुकड़ों पर रख दिया। हारून ने चरबी का हिस्सा क़ुरबानगाह पर जला दिया। 21सीने के टुकड़े और दहनी रानें उसने हिलानेवाली क़ुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाईं। उसने सब कुछ मूसा के हुक्म के मुताबिक़ ही किया।

22तमाम क़ुरबानियाँ पेश करने के बाद हारून ने अपने हाथ उठाकर क़ौम को बरकत दी। फिर वह क़ुरबानगाह से उतरकर 23मूसा के साथ मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल हुआ। जब दोनों बाहर आए तो उन्होंने क़ौम को बरकत दी। तब रब का जलाल पूरी क़ौम पर ज़ाहिर हुआ। 24रब के हुज़ूर से आग निकलकर क़ुरबानगाह पर उतरी और भस्म होनेवाली क़ुरबानी और चरबी के टुकड़े भस्म कर दिए। यह देखकर लोग ख़ुशी के नारे मारने लगे और मुँह के बल गिर गए।

नदब और अबीहू का गुनाह

10 हारून के बेटे नदब और अबीहू ने अपने अपने बख़ूरदान लेकर उनमें जलते हुए कोयले डाले। उन पर बख़ूर डालकर वह रब के सामने आए ताकि उसे पेश करें। लेकिन यह आग नाजायज़ थी। रब ने यह पेश करने का हुक्म नहीं दिया था। 2अचानक रब के हुज़ूर से आग निकली जिसने उन्हें भस्म कर दिया। वहीं रब के सामने वह मर गए।

3मूसा ने हारून से कहा, “अब वही हुआ है जो रब ने फ़रमाया था कि जो मेरे क़रीब हैं उनसे मैं अपनी क़ुद्दूसियत ज़ाहिर करूँगा, मैं तमाम क़ौम के सामने ही अपने जलाल का इज़हार करूँगा।”

हारून ख़ामोश रहा। 4मूसा ने हारून के चचा उज़्ज़ियेल के बेटों मीसाएल और इल्सफ़न को बुलाकर कहा, “इधर आओ और अपने रिश्तेदारों को मक़दिस के सामने से उठाकर ख़ैमागाह के बाहर ले जाओ।” 5वह आए और मूसा के हुक्म के ऐन मुताबिक़ उन्हें उनके ज़ेरजामों समेत उठाकर ख़ैमागाह के बाहर ले गए।

6मूसा ने हारून और उसके दीगर बेटों इलियज़र और इतमर से कहा, “मातम का इज़हार न करो। न अपने बाल बिखरने दो, न अपने कपड़े फाड़ो। वरना तुम मर जाओगे और रब पूरी जमात से नाराज़ हो जाएगा। लेकिन तुम्हारे रिश्तेदार और बाक़ी तमाम इसराईली ज़रूर इनका मातम करें जिनको रब ने आग से हलाक कर दिया है। 7मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े के बाहर न निकलो वरना तुम मर जाओगे, क्योंकि तुम्हें रब के तेल से मसह किया गया है।” चुनाँचे उन्होंने ऐसा ही किया।

इमामों के लिए हिदायात

8रब ने हारून से कहा, 9“जब भी तुझे या तेरे बेटों को मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल होना है तो मै या कोई और नशा-आवर चीज़ पीना मना है, वरना तुम मर जाओगे। यह उसूल आनेवाली नसलों के लिए भी अबद तक अनमिट है। 10यह भी लाज़िम है कि तुम मुक़द्दस और ग़ैरमुक़द्दस चीज़ों में, पाक और नापाक चीज़ों में इम्तियाज़ करो। 11तुम्हें इसराईलियों को तमाम पाबंदियाँ सिखानी हैं जो मैंने तुम्हें मूसा की मारिफ़त बताई हैं।”

12मूसा ने हारून और उसके बचे हुए बेटों इलियज़र और इतमर से कहा, “ग़ल्ला की नज़र का जो हिस्सा रब के सामने जलाया नहीं जाता उसे अपने लिए लेकर बेख़मीरी रोटी पकाना और क़ुरबानगाह के पास ही खाना। क्योंकि वह निहायत मुक़द्दस है। 13उसे मुक़द्दस जगह पर खाना, क्योंकि वह रब की जलनेवाली क़ुरबानियों में से तुम्हारे और तुम्हारे बेटों का हिस्सा है। क्योंकि

मुझे इसका हुक्म दिया गया है। 14जो सीना
हिलानेवाली क़ुरबानी और दहनी रान उठानेवाली
क़ुरबानी के तौर पर पेश की गई है, वह तुम
और तुम्हारे बेटे-बेटियाँ खा सकते हैं। उन्हें मुक़द्दस
जगह पर खाना है। इसराईलियों की सलामती
की क़ुरबानियों में से यह टुकड़े तुम्हारा हिस्सा
हैं। 15लेकिन पहले इमाम रान और सीने को
जलनेवाली क़ुरबानियों की चरबी के साथ पेश
करें। वह उन्हें हिलानेवाली क़ुरबानी के तौर पर रब
के सामने हिलाएँ। रब फ़रमाता है कि यह टुकड़े
अबद तक तुम्हारे और तुम्हारे बेटों का हिस्सा हैं।”
16मूसा ने दरियाफ़्त किया कि उस बकरे के
गोश्त का क्या हुआ जो गुनाह की क़ुरबानी के
तौर पर चढ़ाया गया था। उसे पता चला कि वह
भी जल गया था। यह सुनकर उसे हारून के बेटों
इलियज़र और इतमर पर ग़ुस्सा आया। उसने
पूछा, 17“तुमने गुनाह की क़ुरबानी का गोश्त क्यों
नहीं खाया? तुम्हें उसे मुक़द्दस जगह पर खाना
था। यह एक निहायत मुक़द्दस हिस्सा है जो रब ने
तुम्हें दिया ताकि तुम जमात का क़ुसूर दूर करके
रब के सामने लोगों का कफ़्फ़ारा दो। 18चूँकि इस
बकरे का ख़ून मक़दिस में न लाया गया इसलिए
तुम्हें उसका गोश्त मक़दिस में खाना था जिस तरह
मैंने तुम्हें हुक्म दिया था।”
19हारून ने मूसा को जवाब देकर कहा, “देखें,
आज लोगों ने अपने लिए गुनाह की क़ुरबानी और
भस्म होनेवाली क़ुरबानी रब को पेश की है जबकि
मुझ पर यह आफ़त गुज़री है। अगर मैं आज गुनाह
की क़ुरबानी से खाता तो क्या यह रब को अच्छा
लगता?” 20यह बात मूसा को अच्छी लगी।

पाक और नापाक जानवर

11 रब ने मूसा और हारून से कहा,
2“इसराईलियों को बताना कि तुम्हें
ज़मीन पर रहनेवाले जानवरों में से ज़ैल के
जानवरों को खाने की इजाज़त है : 3जिनके खुर
या पाँव बिलकुल चिरे हुए हैं और जो जुगाली
करते हैं उन्हें खाने की इजाज़त है। 4-6ऊँट, बिज्जू
या ख़रगोश खाना मना है। वह तुम्हारे लिए नापाक
हैं, क्योंकि वह जुगाली तो करते हैं लेकिन उनके
खुर या पाँव चिरे हुए नहीं हैं। 7सुअर न खाना। वह
तुम्हारे लिए नापाक है, क्योंकि उसके खुर तो चिरे
हुए हैं लेकिन वह जुगाली नहीं करता। 8न उनका
गोश्त खाना, न उनकी लाशों को छूना। वह तुम्हारे
लिए नापाक हैं।
9समुंदरी और दरियाई जानवर खाने के लिए
जायज़ हैं अगर उनके पर और छिलके हों।
10लेकिन जिनके पर या छिलके नहीं हैं वह सब
तुम्हारे लिए मकरूह हैं, ख़ाह वह बड़ी तादाद में
मिलकर रहते हैं या नहीं। 11इसलिए उनका गोश्त
खाना मना है, और उनकी लाशों से भी घिन खाना
है। 12पानी में रहनेवाले तमाम जानवर जिनके पर
या छिलके न हों तुम्हारे लिए मकरूह हैं।
13ज़ैल के परिंदे तुम्हारे लिए क़ाबिले-घिन हों।
इन्हें खाना मना है, क्योंकि वह मकरूह हैं :
उक़ाब, दढ़ियल गिद्ध, काला गिद्ध, 14लाल चील,
हर क़िस्म की काली चील, 15हर क़िस्म का
कौवा, 16उक़ाबी उल्लू, छोटे कानवाला उल्लू,
बड़े कानवाला उल्लू, हर क़िस्म का बाज़, 17छोटा
उल्लू, कूक़, चिंघाड़नेवाला उल्लू, 18सफ़ेद उल्लू,
दश्ती उल्लू, मिसरी गिद्ध, 19लक़लक़, हर क़िस्म
का बूतीमार, हुदहुद और चमगादड़।[a]
20तमाम पर रखनेवाले कीड़े जो चार पाँवों पर
चलते हैं तुम्हारे लिए मकरूह हैं, 21सिवाए उनके
जिनकी टाँगों के दो हिस्से हैं और जो फुदकते
हैं। उनको तुम खा सकते हो। 22इस नाते से तुम
मुख़्तलिफ़ क़िस्म के टिड्डे खा सकते हो। 23बाक़ी
सब पर रखनेवाले कीड़े जो चार पाँवों पर चलते
हैं तुम्हारे लिए मकरूह हैं।

[a]याद रहे कि क़दीम ज़माने के इन परिंदों के अकसर नाम मतरूक हैं या उनका मतलब बदल गया है, इसलिए उनका मुख़्तलिफ़ तरजुमा हो सकता है।

24-28जो भी ज़ैल के जानवरों की लाशें छुए
वह शाम तक नापाक रहेगा : (अलिफ़) खुर
रखनेवाले तमाम जानवर सिवाए उनके जिनके
खुर या पाँव पूरे तौर पर चिरे हुए हैं और जो
जुगाली करते हैं, (बे) तमाम जानवर जो अपने
चार पंजों पर चलते हैं। यह जानवर तुम्हारे लिए
नापाक हैं, और जो भी उनकी लाशें उठाए या
छुए लाज़िम है कि वह अपने कपड़े धो ले। इसके
बावुजूद भी वह शाम तक नापाक रहेगा।

29-30ज़मीन पर रेंगनेवाले जानवरों में से
छछूँदर, मुख़्तलिफ़ क़िस्म के चूहे और मुख़्तलिफ़
क़िस्म की छिपकलियाँ तुम्हारे लिए नापाक हैं।
31जो भी उन्हें और उनकी लाशें छू लेता है वह
शाम तक नापाक रहेगा। 32अगर उनमें से किसी
की लाश किसी चीज़ पर गिर पड़े तो वह भी
नापाक हो जाएगी। इससे कोई फ़रक़ नहीं पड़ता
कि वह लकड़ी, कपड़े, चमड़े या टाट की बनी
हो, न इससे कोई फ़रक़ पड़ता है कि वह किस
काम के लिए इस्तेमाल की जाती है। उसे हर
सूरत में पानी में डुबोना है। तो भी वह शाम तक
नापाक रहेगी। 33अगर ऐसी लाश मिट्टी के बरतन
में गिर जाए तो जो कुछ भी उसमें है नापाक हो
जाएगा और तुम्हें उस बरतन को तोड़ना है। 34हर
खानेवाली चीज़ जिस पर ऐसे बरतन का पानी
डाला गया है नापाक है। इसी तरह उस बरतन
से निकली हुई हर पीनेवाली चीज़ नापाक है।
35जिस पर भी ऐसी लाश गिर पड़े वह नापाक
हो जाता है। अगर वह तनूर या चूल्हे पर गिर पड़े
तो उनको तोड़ देना है। वह नापाक हैं और तुम्हारे
लिए नापाक रहेंगे। 36लेकिन जिस चश्मे या हौज़
में ऐसी लाश गिरे वह पाक रहता है। सिर्फ़ वह जो
लाश को छू लेता है नापाक हो जाता है। 37अगर
ऐसी लाश बीजों पर गिर पड़े जिनको अभी बोना
है तो वह पाक रहते हैं। 38लेकिन अगर बीजों पर
पानी डाला गया हो और फिर लाश उन पर गिर
पड़े तो वह नापाक हैं।

39अगर ऐसा जानवर जिसे खाने की इजाज़त
है मर जाए तो जो भी उस की लाश छुए शाम तक
नापाक रहेगा। 40जो उसमें से कुछ खाए या उसे
उठाकर ले जाए उसे अपने कपड़ों को धोना है।
तो भी वह शाम तक नापाक रहेगा।

41हर जानवर जो ज़मीन पर रेंगता है क़ाबिले-
घिन है। उसे खाना मना है, 42चाहे वह अपने पेट
पर चाहे चार या इससे ज़ायद पाँवों पर चलता हो।
43इन तमाम रेंगनेवालों से अपने आपको घिन
का बाइस और नापाक न बनाना, 44क्योंकि मैं
रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। लाज़िम है कि तुम अपने
आपको मख़सूसो-मुक़द्दस रखो, क्योंकि मैं क़ुद्दूस
हूँ। अपने आपको ज़मीन पर रेंगनेवाले तमाम
जानवरों से नापाक न बनाना। 45मैं रब हूँ। मैं तुम्हें
मिसर से निकाल लाया हूँ ताकि तुम्हारा ख़ुदा बनूँ।
लिहाज़ा मुक़द्दस रहो, क्योंकि मैं क़ुद्दूस हूँ।

46ज़मीन पर चलनेवाले जानवरों, परिंदों, आबी
जानवरों और ज़मीन पर रेंगनेवाले जानवरों के बारे
में शरअ यही है। 47लाज़िम है कि तुम नापाक
और पाक में इम्तियाज़ करो, ऐसे जानवरों में जो
खाने के लिए जायज़ हैं और ऐसों में जो नाजायज़
हैं।”

बच्चे की पैदाइश के बाद माँ पर पाबंदियाँ

12 रब ने मूसा से कहा, 2“इसराई-
लियों को बता कि जब किसी औरत
के लड़का पैदा हो तो वह माहवारी के ऐयाम की
तरह सात दिन तक नापाक रहेगी। 3आठवें दिन
लड़के का ख़तना करवाना है। 4फिर माँ मज़ीद
33 दिन इंतज़ार करे। इसके बाद उस की वह
नापाकी दूर हो जाएगी जो ख़ून बहने से पैदा हुई
है। इस दौरान वह कोई मख़सूस और मुक़द्दस
चीज़ न छुए, न मक़दिस के पास जाए।

5अगर उसके लड़की पैदा हो जाए तो वह
माहवारी के ऐयाम की तरह नापाक है। यह
नापाकी 14 दिन तक रहेगी। फिर वह मज़ीद 66
दिन इंतज़ार करे। इसके बाद उस की वह नापाकी
दूर हो जाएगी जो ख़ून बहने से पैदा हुई है।

6जब लड़के या लड़की के सिलसिले में यह
दिन गुज़र जाएँ तो वह मुलाक़ात के ख़ैमे के

दरवाज़े पर इमाम को ज़ैल की चीज़ें दे : भस्म होनेवाली क़ुरबानी के लिए एक यकसाला भेड़ का बच्चा और गुनाह की क़ुरबानी के लिए एक जवान कबूतर या क़ुम्री। 7इमाम यह जानवर रब को पेश करके उसका कफ़्फ़ारा दे। फिर ख़ून बहने के बाइस पैदा होनेवाली नापाकी दूर हो जाएगी। उसूल एक ही है, चाहे लड़का हो या लड़की।

8अगर वह ग़ुरबत के बाइस भेड़ का बच्चा न दे सके तो फिर वह दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर ले आए, एक भस्म होनेवाली क़ुरबानी के लिए और दूसरा गुनाह की क़ुरबानी के लिए। यों इमाम उसका कफ़्फ़ारा दे और वह पाक हो जाएगी।”

जिल्दी बीमारियाँ

13 रब ने मूसा और हारून से कहा, 2“अगर किसी की जिल्द में सूजन या पपड़ी या सफ़ेद दाग़ हो और ख़तरा है कि वबाई जिल्दी बीमारी हो तो उसे इमामों यानी हारून या उसके बेटों के पास ले आना है। 3इमाम उस जगह का मुआयना करे। अगर उसके बाल सफ़ेद हो गए हों और वह जिल्द में धँसी हुई हो तो वबाई बीमारी है। जब इमाम को यह मालूम हो तो वह उसे नापाक क़रार दे। 4लेकिन हो सकता है कि जिल्द की जगह सफ़ेद तो है लेकिन जिल्द में धँसी हुई नहीं है, न उसके बाल सफ़ेद हुए हैं। इस सूरत में इमाम उस शख़्स को सात दिन के लिए अलहदगी में रखे। 5सातवें दिन इमाम दुबारा उसका मुआयना करे। अगर वह देखे कि मुतअस्सिरा जगह वैसी ही है और फैली नहीं तो वह उसे मज़ीद सात दिन अलहदगी में रखे। 6सातवें दिन वह एक और मरतबा उसका मुआयना करे। अगर उस जगह का रंग दुबारा सेहतमंद जिल्द के रंग की मानिंद हो रहा हो और फैली न हो तो वह उसे पाक क़रार दे। इसका मतलब है कि यह मरज़ आम पपड़ी से ज़्यादा नहीं है। मरीज़ अपने कपड़े धो ले तो वह पाक हो जाएगा। 7लेकिन अगर इसके बाद मुतअस्सिरा जगह फैलने लगे तो वह दुबारा अपने आपको इमाम को दिखाए। 8इमाम उसका मुआयना करे। अगर जगह वाक़ई फैल गई हो तो इमाम उसे नापाक क़रार दे, क्योंकि यह वबाई जिल्दी मरज़ है।

9अगर किसी के जिस्म पर वबाई जिल्दी मरज़ नज़र आए तो उसे इमाम के पास लाया जाए। 10इमाम उसका मुआयना करे। अगर मुतअस्सिरा जिल्द में सफ़ेद सूजन हो, उसके बाल भी सफ़ेद हो गए हों, और उसमें कच्चा गोश्त मौजूद हो 11तो इसका मतलब है कि वबाई जिल्दी बीमारी पुरानी है। इमाम उस शख़्स को सात दिन के लिए अलहदगी में रखकर इंतज़ार न करे बल्कि उसे फ़ौरन नापाक क़रार दे, क्योंकि यह उस की नापाकी का सबूत है। 12लेकिन अगर बीमारी जल्दी से फैल गई हो, यहाँ तक कि सर से लेकर पाँव तक पूरी जिल्द मुतअस्सिर हुई हो 13तो इमाम यह देखकर मरीज़ को पाक क़रार दे। चूँकि पूरी जिल्द सफ़ेद हो गई है इसलिए वह पाक है। 14लेकिन जब भी कहीं कच्चा गोश्त नज़र आए उस वक़्त वह नापाक हो जाता है। 15इमाम यह देखकर मरीज़ को नापाक क़रार दे। कच्चा गोश्त हर सूरत में नापाक है, क्योंकि इसका मतलब है कि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। 16अगर कच्चे गोश्त का यह ज़ख़्म भर जाए और मुतअस्सिरा जगह की जिल्द सफ़ेद हो जाए तो मरीज़ इमाम के पास जाए। 17अगर इमाम देखे कि वाक़ई ऐसा ही हुआ है और मुतअस्सिरा जिल्द सफ़ेद हो गई है तो वह उसे पाक क़रार दे।

18अगर किसी की जिल्द पर फोड़ा हो लेकिन वह ठीक हो जाए 19और उस की जगह सफ़ेद सूजन या सुर्ख़ी-मायल सफ़ेद दाग़ नज़र आए तो मरीज़ अपने आपको इमाम को दिखाए। 20अगर वह उसका मुआयना करके देखे कि मुतअस्सिरा जगह जिल्द के अंदर धँसी हुई है और उसके बाल सफ़ेद हो गए हैं तो वह मरीज़ को नापाक क़रार दे। क्योंकि इसका मतलब है कि जहाँ पहले फोड़ा था वहाँ वबाई जिल्दी बीमारी पैदा हो गई है। 21लेकिन अगर इमाम देखे कि मुतअस्सिरा

जगह के बाल सफ़ेद नहीं हैं, वह जिल्द में धँसी हुई
नज़र नहीं आती और उसका रंग दुबारा सेहतमंद
जिल्द की मानिंद हो रहा है तो वह उसे सात दिन
के लिए अलहदगी में रखे। 22अगर इस दौरान
बीमारी मज़ीद फैल जाए तो इमाम मरीज़ को
नापाक क़रार दे, क्योंकि इसका मतलब है कि
वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। 23लेकिन अगर
दाग़ न फैले तो इसका मतलब है कि यह सिर्फ़
उस भरे हुए ज़ख़्म का निशान है जो फोड़े से पैदा
हुआ था। इमाम मरीज़ को पाक क़रार दे।

24अगर किसी की जिल्द पर जलने का ज़ख़्म
लग जाए और मुतअस्सिरा जगह पर सुर्ख़ी-मायल
सफ़ेद दाग़ या सफ़ेद दाग़ पैदा हो जाए 25तो
इमाम मुतअस्सिरा जगह का मुआयना करे। अगर
मालूम हो जाए कि मुतअस्सिरा जगह के बाल
सफ़ेद हो गए हैं और वह जिल्द में धँसी हुई है तो
इसका मतलब है कि चोट की जगह पर वबाई
जिल्दी मरज़ लग गया है। इमाम उसे नापाक
क़रार दे, क्योंकि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई
है। 26लेकिन अगर इमाम ने मालूम किया है कि
दाग़ में बाल सफ़ेद नहीं हैं, वह जिल्द में धँसा
हुआ नज़र नहीं आता और उसका रंग सेहतमंद
जिल्द की मानिंद हो रहा है तो वह मरीज़ को सात
दिन तक अलहदगी में रखे। 27अगर वह सातवें
दिन मालूम करे कि मुतअस्सिरा जगह फैल गई
है तो वह उसे नापाक क़रार दे। क्योंकि इसका
मतलब है कि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है।
28लेकिन अगर दाग़ फैला हुआ नज़र नहीं आता
और मुतअस्सिरा जिल्द का रंग सेहतमंद जिल्द
के रंग की मानिंद हो गया है तो इसका मतलब है
कि यह सिर्फ़ उस भरे हुए ज़ख़्म का निशान है
जो जलने से पैदा हुआ था। इमाम मरीज़ को पाक
क़रार दे।

29अगर किसी के सर या दाढ़ी की जिल्द में
निशान नज़र आए 30तो इमाम मुतअस्सिरा जगह
का मुआयना करे। अगर वह धँसी हुई नज़र आए
और उसके बाल रंग के लिहाज़ से चमकते हुए
सोने की मानिंद और बारीक हों तो इमाम मरीज़
को नापाक क़रार दे। इसका मतलब है कि ऐसी
वबाई जिल्दी बीमारी सर या दाढ़ी की जिल्द पर
लग गई है जो ख़ारिश पैदा करती है। 31लेकिन
अगर इमाम ने मालूम किया कि मुतअस्सिरा जगह
जिल्द में धँसी हुई नज़र नहीं आती अगरचे उसके
बालों का रंग बदल गया है तो वह उसे सात
दिन के लिए अलहदगी में रखे। 32सातवें दिन
इमाम जिल्द की मुतअस्सिरा जगह का मुआयना
करे। अगर वह फैली हुई नज़र नहीं आती और
उसके बालों का रंग चमकदार सोने की मानिंद
नहीं है, साथ ही वह जगह जिल्द में धँसी हुई
भी दिखाई नहीं देती, 33तो मरीज़ अपने बाल
मुँडवाए। सिर्फ़ वह बाल रह जाएँ जो मुतअस्सिरा
जगह से निकलते हैं। इमाम मरीज़ को मज़ीद सात
दिन अलहदगी में रखे। 34सातवें दिन वह उसका
मुआयना करे। अगर मुतअस्सिरा जगह नहीं फैली
और वह जिल्द में धँसी हुई नज़र नहीं आती
तो इमाम उसे पाक क़रार दे। वह अपने कपड़े
धो ले तो वह पाक हो जाएगा। 35लेकिन अगर
इसके बाद जिल्द की मुतअस्सिरा जगह फैलना
शुरू हो जाए 36तो इमाम दुबारा उसका मुआयना
करे। अगर वह जगह वाक़ई फैली हुई नज़र आए
तो मरीज़ नापाक है, चाहे मुतअस्सिरा जगह के
बालों का रंग चमकते सोने की मानिंद हो या न
हो। 37लेकिन अगर उसके ख़याल में मुतअस्सिरा
जगह फैली हुई नज़र नहीं आती बल्कि उसमें से
काले रंग के बाल निकल रहे हैं तो इसका मतलब
है कि मरीज़ की सेहत बहाल हो गई है। इमाम
उसे पाक क़रार दे।

38अगर किसी मर्द या औरत की जिल्द पर
सफ़ेद दाग़ पैदा हो जाएँ 39तो इमाम उनका
मुआयना करे। अगर उनका सफ़ेद रंग हलका-
सा हो तो यह सिर्फ़ बेज़रर पपड़ी है। मरीज़ पाक
है।

40-41अगर किसी मर्द का सर माथे की तरफ़
या पीछे की तरफ़ गंजा है तो वह पाक है।
42लेकिन अगर उस जगह जहाँ वह गंजा है सुर्ख़ी-
मायल सफ़ेद दाग़ हो तो इसका मतलब है कि वहाँ

वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। 43इमाम उसका
मुआयना करे। अगर गंजी जगह पर सुर्ख़ी-मायल
सफ़ेद सूजन हो जो वबाई जिल्दी बीमारी की
मानिंद नज़र आए 44तो मरीज़ को वबाई जिल्दी
बीमारी लग गई है। इमाम उसे नापाक क़रार दे।

नापाक मरीज़ का सुलूक

45वबाई जिल्दी बीमारी का मरीज़ फटे कपड़े
पहने। उसके बाल बिखरे रहें। वह अपनी मूँछों
को किसी कपड़े से छुपाए और पुकारता रहे,
'नापाक, नापाक।' 46जिस वक़्त तक वबाई
जिल्दी बीमारी लगी रहे वह नापाक है। वह इस
दौरान ख़ैमागाह के बाहर जाकर तनहाई में रहे।

फफूँदी से निपटने का तरीक़ा

47हो सकता है कि ऊन या कतान के किसी
लिबास पर फफूँदी लग गई है, 48या कि फफूँदी
ऊन या कतान के किसी कपड़े के टुकड़े या किसी
चमड़े या चमड़े की किसी चीज़ पर लग गई है।
49अगर फफूँदी का रंग हरा या लाल-सा हो तो
वह फैलनेवाली फफूँदी है, और लाज़िम है कि
उसे इमाम को दिखाया जाए। 50इमाम उसका
मुआयना करके उसे सात दिन के लिए अलहदगी
में रखे। 51सातवें दिन वह दुबारा उसका मुआयना
करे। अगर फफूँदी फैल गई हो तो इसका मतलब
है कि वह नुक़सानदेह है। मुतअस्सिरा चीज़
नापाक है। 52इमाम उसे जला दे, क्योंकि यह
फफूँदी नुक़सानदेह है। लाज़िम है कि उसे जला
दिया जाए। 53लेकिन अगर इन सात दिनों के बाद
फफूँदी फैली हुई नज़र नहीं आती 54तो इमाम
हुक्म दे कि मुतअस्सिरा चीज़ को धुलवाया जाए।
फिर वह उसे मज़ीद सात दिन के लिए अलहदगी
में रखे। 55इसके बाद वह दुबारा उसका मुआयना
करे। अगर वह मालूम करे कि फफूँदी तो फैली हुई
नज़र नहीं आती लेकिन उसका रंग वैसे का वैसा
है तो वह नापाक है। उसे जला देना, चाहे फफूँदी
मुतअस्सिरा चीज़ के सामनेवाले हिस्से या पिछले
हिस्से में लगी हो। 56लेकिन अगर मालूम हो जाए
कि फफूँदी का रंग माँद पड़ गया है तो इमाम कपड़े
या चमड़े में से मुतअस्सिरा जगह फाड़कर निकाल
दे। 57तो भी हो सकता है कि फफूँदी दुबारा उसी
कपड़े या चमड़े पर नज़र आए। इसका मतलब है
कि वह फैल रही है और उसे जला देना लाज़िम
है। 58लेकिन अगर फफूँदी धोने के बाद ग़ायब
हो जाए तो उसे एक और दफ़ा धोना है। फिर
मुतअस्सिरा चीज़ पाक होगी।

59इसी तरह फफूँदी से निपटना है, चाहे वह
ऊन या कतान के किसी लिबास को लग गई हो,
चाहे ऊन या कतान के किसी टुकड़े या चमड़े की
किसी चीज़ को लग गई हो। इन्हीं उसूलों के तहत
फ़ैसला करना है कि मुतअस्सिरा चीज़ पाक है या
नापाक।"

वबाई जिल्दी बीमारी के मरीज़ की शफ़ा पर क़ुरबानी

14 रब ने मूसा से कहा, 2"अगर कोई
शख़्स जिल्दी बीमारी से शफ़ा पाए
और उसे पाक-साफ़ कराना है तो उसे इमाम के
पास लाया जाए 3जो ख़ैमागाह के बाहर जाकर
उसका मुआयना करे। अगर वह देखे कि मरीज़
की सेहत वाक़ई बहाल हो गई है 4तो इमाम
उसके लिए दो ज़िंदा और पाक परिंदे, देवदार
की लकड़ी, क़िरमिज़ी रंग का धागा और ज़ूफ़ा
मँगवाए। 5इमाम के हुक्म पर परिंदों में से एक को
ताज़ा पानी से भरे हुए मिट्टी के बरतन के ऊपर
ज़बह किया जाए। 6इमाम ज़िंदा परिंदे को देवदार
की लकड़ी, क़िरमिज़ी रंग के धागे और ज़ूफ़ा के
साथ ज़बह किए गए परिंदे के उस ख़ून में डुबो
दे जो मिट्टी के बरतन के पानी में आ गया है।
7वह पानी से मिलाया हुआ ख़ून सात बार पाक
होनेवाले शख़्स पर छिड़ककर उसे पाक क़रार दे,
फिर ज़िंदा परिंदे को खुले मैदान में छोड़ दे। 8जो
अपने आपको पाक-साफ़ करा रहा है वह अपने
कपड़े धोए, अपने तमाम बाल मुँडवाए और नहा
ले। इसके बाद वह पाक है। अब वह ख़ैमागाह
में दाख़िल हो सकता है अगरचे वह मज़ीद सात

दिन अपने डेरे में नहीं जा सकता। 9सातवें दिन वह दुबारा अपने सर के बाल, अपनी दाढ़ी, अपने अबरू और बाक़ी तमाम बाल मुँडवाए। वह अपने कपड़े धोए और नहा ले। तब वह पाक है।

10आठवें दिन वह दो भेड़ के नर बच्चे और एक यकसाला भेड़ चुन ले जो बेऐब हों। साथ ही वह ग़ल्ला की नज़र के लिए तेल के साथ मिलाया गया साढ़े 4 किलोग्राम बेहतरीन मैदा और 300 मिलीलिटर तेल ले। 11फिर जिस इमाम ने उसे पाक क़रार दिया वह उसे इन क़ुरबानियों समेत मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर रब को पेश करे। 12भेड़ का एक नर बच्चा और 300 मिलीलिटर तेल क़ुसूर की क़ुरबानी के लिए है। इमाम उन्हें हिलानेवाली क़ुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाए। 13फिर वह भेड़ के इस बच्चे को ख़ैमे के दरवाज़े पर ज़बह करे जहाँ गुनाह की क़ुरबानियाँ और भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ ज़बह की जाती हैं। गुनाह की क़ुरबानियों की तरह क़ुसूर की यह क़ुरबानी इमाम का हिस्सा है और निहायत मुक़द्दस है। 14इमाम ख़ून में से कुछ लेकर पाक होनेवाले के दहने कान की लौ पर और उसके दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर लगाए। 15अब वह 300 मिलीलिटर तेल में से कुछ लेकर अपने बाएँ हाथ की हथेली पर डाले। 16अपने दहने हाथ के अंगूठे के साथवाली उँगली इस तेल में डुबोकर वह उसे सात बार रब के सामने छिड़के। 17वह अपनी हथेली पर के तेल में से कुछ और लेकर पाक होनेवाले के दहने कान की लौ पर और उसके दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर लगा दे यानी उन जगहों पर जहाँ वह क़ुसूर की क़ुरबानी का ख़ून लगा चुका है। 18इमाम अपनी हथेली पर का बाक़ी तेल पाक होनेवाले के सर पर डालकर रब के सामने उसका कफ़्फ़ारा दे।

19इसके बाद इमाम गुनाह की क़ुरबानी चढ़ाकर पाक होनेवाले का कफ़्फ़ारा दे। आख़िर में वह भस्म होनेवाली क़ुरबानी का जानवर ज़बह करे। 20वह उसे ग़ल्ला की नज़र के साथ क़ुरबानगाह पर चढ़ाकर उसका कफ़्फ़ारा दे। तब वह पाक है।

21अगर शफ़ायाब शख़्स ग़ुरबत के बाइस यह क़ुरबानियाँ नहीं चढ़ा सकता तो फिर वह क़ुसूर की क़ुरबानी के लिए भेड़ का सिर्फ़ एक नर बच्चा ले आए। काफ़ी है कि कफ़्फ़ारा देने के लिए यही रब के सामने हिलाया जाए। साथ साथ ग़ल्ला की नज़र के लिए डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा तेल के साथ मिलाकर पेश किया जाए और 300 मिलीलिटर तेल। 22इसके अलावा वह दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर पेश करे, एक को गुनाह की क़ुरबानी के लिए और दूसरे को भस्म होनेवाली क़ुरबानी के लिए। 23आठवें दिन वह उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर इमाम के पास और रब के सामने ले आए ताकि वह पाक-साफ़ हो जाए। 24इमाम भेड़ के बच्चे को 300 मिलीलिटर तेल समेत लेकर हिलानेवाली क़ुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाए। 25वह क़ुसूर की क़ुरबानी के लिए भेड़ के बच्चे को ज़बह करे और उसके ख़ून में से कुछ लेकर पाक होनेवाले के दहने कान की लौ पर और उसके दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर लगाए। 26अब वह 300 मिलीलिटर तेल में से कुछ अपने बाएँ हाथ की हथेली पर डाले 27और अपने दहने हाथ के अंगूठे के साथवाली उँगली इस तेल में डुबोकर उसे सात बार रब के सामने छिड़क दे। 28वह अपनी हथेली पर के तेल में से कुछ और लेकर पाक होनेवाले के दहने कान की लौ पर और उसके दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर लगा दे यानी उन जगहों पर जहाँ वह क़ुसूर की क़ुरबानी का ख़ून लगा चुका है। 29अपनी हथेली पर का बाक़ी तेल वह पाक होनेवाले के सर पर डाल दे ताकि रब के सामने उसका कफ़्फ़ारा दे। 30इसके बाद वह शफ़ायाब शख़्स की गुंजाइश के मुताबिक़ दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर चढ़ाए, 31एक को गुनाह की क़ुरबानी के लिए और दूसरे को भस्म होनेवाली क़ुरबानी के लिए। साथ ही वह ग़ल्ला की नज़र पेश करे। यों इमाम रब के सामने

उसका कफ़्फ़ारा देता है। 32यह उसूल ऐसे शख़्स के लिए है जो वबाई जिल्दी बीमारी से शफ़ा पा गया है लेकिन अपनी ग़ुरबत के बाइस पाक हो जाने के लिए पूरी क़ुरबानी पेश नहीं कर सकता।”

घरों में फफूँदी

33रब ने मूसा और हारून से कहा, 34“जब तुम मुल्के-कनान में दाख़िल होगे जो मैं तुम्हें दूँगा तो वहाँ ऐसे मकान होंगे जिनमें मैंने फफूँदी फैलने दी है। 35ऐसे घर का मालिक जाकर इमाम को बताए कि मैंने अपने घर में फफूँदी जैसी कोई चीज़ देखी है। 36तब इमाम हुक्म दे कि घर का मुआयना करने से पहले घर का पूरा सामान निकाला जाए। वरना अगर घर को नापाक क़रार दिया जाए तो सामान को भी नापाक क़रार दिया जाएगा। इसके बाद इमाम अंदर जाकर मकान का मुआयना करे। 37वह दीवारों के साथ लगी हुई फफूँदी का मुआयना करे। अगर मुतअस्सिरा जगहें हरी या लाल-सी हों और दीवार के अंदर धँसी हुई नज़र आएँ 38तो फिर इमाम घर से निकलकर सात दिन के लिए ताला लगाए। 39सातवें दिन वह वापस आकर मकान का मुआयना करे। अगर फफूँदी फैली हुई नज़र आए 40तो वह हुक्म दे कि मुतअस्सिरा पत्थरों को निकालकर आबादी के बाहर किसी नापाक जगह पर फेंका जाए। 41नीज़ वह हुक्म दे कि अंदर की दीवारों को कुरेदा जाए और कुरेदी हुई मिट्टी को आबादी के बाहर किसी नापाक जगह पर फेंका जाए। 42फिर लोग नए पत्थर लगाकर घर को नए गारे से पलस्तर करें। 43लेकिन अगर इसके बावुजूद फफूँदी दुबारा पैदा हो जाए 44तो इमाम आकर दुबारा उसका मुआयना करे। अगर वह देखे कि फफूँदी घर में फैल गई है तो इसका मतलब है कि फफूँदी नुक़सानदेह है, इसलिए घर नापाक है। 45लाज़िम है कि उसे पूरे तौर पर ढा दिया जाए और सब कुछ यानी उसके पत्थर, लकड़ी और पलस्तर को आबादी के बाहर किसी नापाक जगह पर फेंका जाए।

46अगर इमाम ने किसी घर का मुआयना करके ताला लगा दिया है और फिर भी कोई उस घर में दाख़िल हो जाए तो वह शाम तक नापाक रहेगा। 47जो ऐसे घर में सोए या खाना खाए लाज़िम है कि वह अपने कपड़े धो ले। 48लेकिन अगर घर को नए सिरे से पलस्तर करने के बाद इमाम आकर उसका दुबारा मुआयना करे और देखे कि फफूँदी दुबारा नहीं निकली तो इसका मतलब है कि फफूँदी ख़त्म हो गई है। वह उसे पाक क़रार दे। 49उसे गुनाह से पाक-साफ़ कराने के लिए वह दो परिंदे, देवदार की लकड़ी, क़िरमिज़ी रंग का धागा और ज़ूफ़ा ले ले। 50वह परिंदों में से एक को ताज़ा पानी से भरे हुए मिट्टी के बरतन के ऊपर ज़बह करे। 51इसके बाद वह देवदार की लकड़ी, ज़ूफ़ा, क़िरमिज़ी रंग का धागा और ज़िंदा परिंदा लेकर उस ताज़ा पानी में डुबो दे जिसके साथ ज़बह किए हुए परिंदे का ख़ून मिलाया गया है और इस पानी को सात बार घर पर छिड़क दे। 52इन चीज़ों से वह घर को गुनाह से पाक-साफ़ करता है। 53आख़िर में वह ज़िंदा परिंदे को आबादी के बाहर खुले मैदान में छोड़ दे। यों वह घर का कफ़्फ़ारा देगा, और वह पाक-साफ़ हो जाएगा।

54-56लाज़िम है कि हर क़िस्म की वबाई बीमारी से ऐसे निपटो जैसे बयान किया गया है, चाहे वह वबाई जिल्दी बीमारियाँ हों (मसलन ख़ारिश, सूजन, पपड़ी या सफ़ेद दाग़), चाहे कपड़ों या घरों में फफूँदी हो। 57इन उसूलों के तहत फ़ैसला करना है कि कोई शख़्स या चीज़ पाक है या नापाक।”

मर्दों की नापाकी

15 रब ने मूसा और हारून से कहा, 2“इसराईलियों को बताना कि अगर किसी मर्द को जरयान का मरज़ हो तो वह ख़ारिज होनेवाले माए के सबब से नापाक है, 3चाहे माए बहता रहता हो या रुक गया हो। 4जिस चीज़ पर भी मरीज़ लेटता या बैठता है वह नापाक है।

5-6जो भी उसके लेटने की जगह को छुए या
उसके बैठने की जगह पर बैठ जाए वह अपने
कपड़े धोकर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा।
7इसी तरह जो भी ऐसे मरीज़ को छुए वह अपने
कपड़े धोकर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा।
8अगर मरीज़ किसी पाक शख़्स पर थूके तो यही
कुछ करना है और वह शख़्स शाम तक नापाक
रहेगा। 9जब ऐसा मरीज़ किसी जानवर पर सवार
होता है तो हर चीज़ जिस पर वह बैठ जाता है
नापाक है। 10जो भी ऐसी चीज़ छुए या उसे
उठाकर ले जाए वह अपने कपड़े धोकर नहा ले।
वह शाम तक नापाक रहेगा। 11जिस किसी को
भी मरीज़ अपने हाथ धोए बग़ैर छुए वह अपने
कपड़े धोकर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा।
12मिट्टी का जो बरतन ऐसा मरीज़ छुए उसे तोड़
दिया जाए। लकड़ी का जो बरतन वह छुए उसे
ख़ूब धोया जाए।

13जिसे इस मरज़ से शफ़ा मिली है वह सात
दिन इंतज़ार करे। इसके बाद वह ताज़ा पानी से
अपने कपड़े धोकर नहा ले। फिर वह पाक हो
जाएगा। 14आठवें दिन वह दो क़ुम्रियाँ या दो
जवान कबूतर लेकर मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े
पर रब के सामने इमाम को दे। 15इमाम उनमें से
एक को गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर और दूसरे
को भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर चढ़ाए।
यों वह रब के सामने उसका कफ़्फ़ारा देगा।

16अगर किसी मर्द का नुतफ़ा ख़ारिज हो जाए
तो वह अपने पूरे जिस्म को धो ले। वह शाम तक
नापाक रहेगा। 17हर कपड़ा या चमड़ा जिससे
नुतफ़ा लग गया हो उसे धोना है। वह भी शाम
तक नापाक रहेगा। 18अगर मर्द और औरत के
हमबिसतर होने पर नुतफ़ा ख़ारिज हो जाए तो
लाज़िम है कि दोनों नहा लें। वह शाम तक नापाक
रहेंगे।

औरतों की नापाकी

19माहवारी के वक़्त औरत सात दिन तक
नापाक है। जो भी उसे छुए वह शाम तक नापाक
रहेगा। 20इस दौरान जिस चीज़ पर भी वह लेटती
या बैठती है वह नापाक है। 21-23जो भी उसके
लेटने की जगह को छुए या उसके बैठने की जगह
पर बैठ जाए वह अपने कपड़े धोकर नहा ले। वह
शाम तक नापाक रहेगा। 24अगर मर्द औरत से
हमबिसतर हो और उसी वक़्त माहवारी के दिन
शुरू हो जाएँ तो मर्द ख़ून लगने के बाइस सात
दिन तक नापाक रहेगा। जिस चीज़ पर भी वह
लेटता है वह नापाक हो जाएगी।

25अगर किसी औरत को माहवारी के दिन
छोड़कर किसी और वक़्त कई दिनों तक ख़ून
आए या ख़ून माहवारी के दिनों के बाद भी जारी
रहे तो वह माहवारी के दिनों की तरह उस वक़्त
तक नापाक रहेगी जब तक ख़ून रुक न जाए।
26जिस चीज़ पर भी वह लेटती या बैठती है
वह नापाक है। 27जो भी ऐसी चीज़ को छुए
वह अपने कपड़े धोकर नहा ले। वह शाम तक
नापाक रहेगा। 28ख़ून के रुक जाने पर औरत
मज़ीद सात दिन इंतज़ार करे। फिर वह पाक
होगी। 29आठवें दिन वह दो क़ुम्रियाँ या दो जवान
कबूतर लेकर मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर
इमाम के पास आए। 30इमाम उनमें से एक को
गुनाह की क़ुरबानी के लिए और दूसरे को भस्म
होनेवाली क़ुरबानी के लिए चढ़ाए। यों वह रब के
सामने उस की नापाकी का कफ़्फ़ारा देगा।

31लाज़िम है कि इसराईलियों को ऐसी चीज़ों
से दूर रखा जाए जिनसे वह नापाक हो जाएँ।
वरना मेरा वह मक़दिस जो उनके दरमियान है
उनसे नापाक हो जाएगा और वह हलाक हो
जाएंगे।

32लाज़िम है कि इस क़िस्म के मामलों से
ऐसे निपटो जैसे बयान किया गया है। इसमें वह
मर्द शामिल है जो जरयान का मरीज़ है और
वह जो नुतफ़ा ख़ारिज होने के बाइस नापाक है।
33इसमें वह औरत भी शामिल है जिसके माहवारी
के ऐयाम हैं और वह मर्द जो नापाक औरत से
हमबिसतर हो जाता है।”

यौमे-कफ़्फ़ारा

16 जब हारून के दो बेटे रब के क़रीब
आकर हलाक हुए तो इसके बाद रब
मूसा से हमकलाम हुआ। 2उसने कहा,

“अपने भाई हारून को बताना कि वह सिर्फ़
मुक़र्ररा वक़्त पर परदे के पीछे मुक़द्दसतरीन कमरे
में दाख़िल होकर अहद के संदूक़ के ढकने के
सामने खड़ा हो जाए, वरना वह मर जाएगा।
क्योंकि मैं ख़ुद उस ढकने के ऊपर बादल की
सूरत में ज़ाहिर होता हूँ। 3और जब भी वह
दाख़िल हो तो गुनाह की क़ुरबानी के लिए एक
जवान बैल और भस्म होनेवाली क़ुरबानी के
लिए एक मेंढा पेश करे। 4पहले वह नहाकर
इमाम के कतान के मुक़द्दस कपड़े पहन ले यानी
ज़ेरजामा, उसके नीचे पाजामा, फिर कमरबंद
और पगड़ी। 5इसराईल की जमात हारून को
गुनाह की क़ुरबानी के लिए दो बकरे और भस्म
होनेवाली क़ुरबानी के लिए एक मेंढा दे।

6पहले हारून अपने और अपने घराने के लिए
जवान बैल को गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर
चढ़ाए। 7फिर वह दोनों बकरों को मुलाक़ात के
ख़ैमे के दरवाज़े पर रब के सामने ले आए। 8वहाँ
वह क़ुरा डालकर एक को रब के लिए चुने और
दूसरे को अज़ाज़ेल के लिए। 9जो बकरा रब के
लिए है उसे वह गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर पेश
करे। 10दूसरा बकरा जो क़ुरे के ज़रीए अज़ाज़ेल
के लिए चुना गया उसे ज़िंदा हालत में रब के
सामने खड़ा किया जाए ताकि वह जमात का
कफ़्फ़ारा दे। वहाँ से उसे रेगिस्तान में अज़ाज़ेल
के पास भेजा जाए।

11लेकिन पहले हारून जवान बैल को गुनाह
की क़ुरबानी के तौर पर चढ़ाकर अपना और
अपने घराने का कफ़्फ़ारा दे। उसे ज़बह करने के
बाद 12वह बख़ूर की क़ुरबानगाह से जलते हुए
कोयलों से भरा हुआ बरतन लेकर अपनी दोनों
मुट्ठियाँ बारीक ख़ुशबूदार बख़ूर से भर ले और
मुक़द्दसतरीन कमरे में दाख़िल हो जाए। 13वहाँ
वह रब के हुज़ूर बख़ूर को जलते हुए कोयलों
पर डाल दे। इससे पैदा होनेवाला धुआँ अहद
के संदूक़ का ढकना छुपा देगा ताकि हारून मर
न जाए। 14अब वह जवान बैल के ख़ून में से
कुछ लेकर अपनी उँगली से ढकने के सामनेवाले
हिस्से पर छिड़के, फिर कुछ अपनी उँगली से सात
बार उसके सामने ज़मीन पर छिड़के। 15इसके
बाद वह उस बकरे को ज़बह करे जो क़ौम के
लिए गुनाह की क़ुरबानी है। वह उसका ख़ून
मुक़द्दसतरीन कमरे में ले आए और उसे बैल के
ख़ून की तरह अहद के संदूक़ के ढकने पर और
सात बार उसके सामने ज़मीन पर छिड़के। 16यों
वह मुक़द्दसतरीन कमरे का कफ़्फ़ारा देगा जो
इसराईलियों की नापाकियों और तमाम गुनाहों से
मुतअस्सिर होता रहता है। इससे वह मुलाक़ात
के पूरे ख़ैमे का भी कफ़्फ़ारा देगा जो ख़ैमागाह
के दरमियान होने के बाइस इसराईलियों की
नापाकियों से मुतअस्सिर होता रहता है।

17जितना वक़्त हारून अपना, अपने घराने
का और इसराईल की पूरी जमात का कफ़्फ़ारा
देने के लिए मुक़द्दसतरीन कमरे में रहेगा इस
दौरान किसी दूसरे को मुलाक़ात के ख़ैमे में ठहरने
की इजाज़त नहीं है। 18फिर वह मुक़द्दसतरीन
कमरे से निकलकर ख़ैमे में रब के सामने पड़ी
क़ुरबानगाह का कफ़्फ़ारा दे। वह बैल और बकरे
के ख़ून में से कुछ लेकर उसे क़ुरबानगाह के
चारों सींगों पर लगाए। 19कुछ ख़ून वह अपनी
उँगली से सात बार उस पर छिड़क दे। यों वह
उसे इसराईलियों की नापाकियों से पाक करके
मख़सूसो-मुक़द्दस करेगा।

20मुक़द्दसतरीन कमरे, मुलाक़ात के ख़ैमे और
क़ुरबानगाह का कफ़्फ़ारा देने के बाद हारून ज़िंदा
बकरे को सामने लाए। 21वह अपने दोनों हाथ
उसके सर पर रखे और इसराईलियों के तमाम
क़ुसूर यानी उनके तमाम जरायम और गुनाहों का
इक़रार करके उन्हें बकरे के सर पर डाल दे। फिर
वह उसे रेगिस्तान में भेज दे। इसके लिए वह बकरे
को एक आदमी के सुपुर्द करे जिसे यह ज़िम्मेदारी

दी गई है। 22बकरा अपने आप पर उनका तमाम क़ुसूर उठाकर किसी वीरान जगह में ले जाएगा। वहाँ साथवाला आदमी उसे छोड़ आए।

23इसके बाद हारून मुलाक़ात के ख़ैमे में जाए और कतान के वह कपड़े जो उसने मुक़द्दसतरीन कमरे में दाख़िल होने से पेशतर पहन लिए थे उतारकर वहीं छोड़ दे। 24वह मुक़द्दस जगह पर नहाकर अपनी ख़िदमत के आम कपड़े पहन ले। फिर वह बाहर आकर अपने और अपनी क़ौम के लिए भस्म होनेवाली क़ुरबानी पेश करे ताकि अपना और अपनी क़ौम का कफ़्फ़ारा दे। 25इसके अलावा वह गुनाह की क़ुरबानी की चरबी क़ुरबानगाह पर जला दे।

26जो आदमी अज़ाज़ेल के लिए बकरे को रेगिस्तान में छोड़ आया है वह अपने कपड़े धोकर नहा ले। इसके बाद वह ख़ैमागाह में आ सकता है।

27जिस बैल और बकरे को गुनाह की क़ुरबानी के लिए पेश किया गया और जिनका ख़ून कफ़्फ़ारा देने के लिए मुक़द्दसतरीन कमरे में लाया गया, लाज़िम है कि उनकी खालें, गोश्त और गोबर ख़ैमागाह के बाहर जला दिया जाए। 28यह चीज़ें जलानेवाला बाद में अपने कपड़े धोकर नहा ले। फिर वह ख़ैमागाह में आ सकता है।

29लाज़िम है कि सातवें महीने के दसवें दिन इसराईली और उनके दरमियान रहनेवाले परदेसी अपनी जान को दुख दें और काम न करें। यह उसूल तुम्हारे लिए अबद तक क़ायम रहे। 30इस दिन तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया जाएगा ताकि तुम्हें पाक किया जाए। तब तुम रब के सामने अपने तमाम गुनाहों से पाक ठहरोगे। 31पूरा दिन आराम करो और अपनी जान को दुख दो। यह उसूल अबद तक क़ायम रहे।

32इस दिन इमामे-आज़म तुम्हारा कफ़्फ़ारा दे, वह इमाम जिसे उसके बाप की जगह मसह किया गया और इख़्तियार दिया गया है। वह कतान के मुक़द्दस कपड़े पहनकर 33मुक़द्दसतरीन कमरे, मुलाक़ात के ख़ैमे, क़ुरबानगाह, इमामों और जमात के तमाम लोगों का कफ़्फ़ारा दे। 34लाज़िम है कि साल में एक दफ़ा इसराईलियों के तमाम गुनाहों का कफ़्फ़ारा दिया जाए। यह उसूल तुम्हारे लिए अबद तक क़ायम रहे।"

सब कुछ वैसे ही किया गया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

क़ुरबानी चढ़ाने का मक़ाम

17 रब ने मूसा से कहा, 2"हारून, उसके बेटों और तमाम इसराईलियों को हिदायत देना 3-4कि जो भी इसराईली अपनी गाय या भेड़-बकरी मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर रब को क़ुरबानी के तौर पर पेश न करे बल्कि ख़ैमागाह के अंदर या बाहर किसी और जगह पर ज़बह करे वह ख़ून बहाने का क़ुसूरवार ठहरेगा। उसने ख़ून बहाया है, और लाज़िम है कि उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए। 5इस हिदायत का मक़सद यह है कि इसराईली अब से अपनी क़ुरबानियाँ खुले मैदान में ज़बह न करें बल्कि रब को पेश करें। वह अपने जानवरों को मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर इमाम के पास लाकर उन्हें रब को सलामती की क़ुरबानी के तौर पर पेश करें। 6इमाम उनका ख़ून मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर की क़ुरबानगाह पर छिड़के और उनकी चरबी उस पर जला दे। ऐसी क़ुरबानी की ख़ुशबू रब को पसंद है। 7अब से इसराईली अपनी क़ुरबानियाँ उन बकरों के देवताओं को पेश न करें जिनकी पैरवी करके उन्होंने ज़िना किया है। यह उनके लिए और उनके बाद आनेवाली नसलों के लिए एक दायमी उसूल है।

8लाज़िम है कि हर इसराईली और तुम्हारे दरमियान रहनेवाला परदेसी अपनी भस्म होनेवाली क़ुरबानी या कोई और क़ुरबानी 9मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर लाकर रब को पेश करे। वरना उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाएगा।

ख़ून खाना मना है

10ख़ून खाना बिलकुल मना है। जो भी
इसराईली या तुम्हारे दरमियान रहनेवाला परदेसी
ख़ून खाए मैं उसके ख़िलाफ़ हो जाऊँगा और उसे
उस की क़ौम में से मिटा डालूँगा। 11क्योंकि हर
मख़लूक़ के ख़ून में उस की जान है। मैंने उसे
तुम्हें दे दिया है ताकि वह क़ुरबानगाह पर तुम्हारा
कफ़्फ़ारा दे। क्योंकि ख़ून ही उस जान के ज़रीए
जो उसमें है तुम्हारा कफ़्फ़ारा देता है। 12इसलिए
मैं कहता हूँ कि न कोई इसराईली न कोई परदेसी
ख़ून खाए।

13अगर कोई भी इसराईली या परदेसी किसी
जानवर या परिंदे का शिकार करके पकड़े जिसे
खाने की इजाज़त है तो वह उसे ज़बह करने के
बाद उसका पूरा ख़ून ज़मीन पर बहने दे और ख़ून
पर मिट्टी डाले। 14क्योंकि हर मख़लूक़ का ख़ून
उस की जान है। इसलिए मैंने इसराईलियों को
कहा है कि किसी भी मख़लूक़ का ख़ून न खाओ।
हर मख़लूक़ का ख़ून उस की जान है, और जो भी
उसे खाए उसे क़ौम में से मिटा देना है।

15अगर कोई भी इसराईली या परदेसी ऐसे
जानवर का गोश्त खाए जो फ़ितरी तौर पर मर
गया या जिसे जंगली जानवरों ने फाड़ डाला हो
तो वह अपने कपड़े धोकर नहा ले। वह शाम तक
नापाक रहेगा। 16जो ऐसा नहीं करता उसे अपने
क़ुसूर की सज़ा भुगतनी पड़ेगी।”

नाजायज़ जिंसी ताल्लुक़ात

18 रब ने मूसा से कहा, 2“इसराई-
लियों को बताना कि मैं रब तुम्हारा
ख़ुदा हूँ। 3मिसरियों की तरह ज़िंदगी न गुज़ारना
जिनमें तुम रहते थे। मुल्के-कनान के लोगों की
तरह भी ज़िंदगी न गुज़ारना जिनके पास मैं तुम्हें ले
जा रहा हूँ। उनके रस्मो-रिवाज न अपनाना। 4मेरे
ही अहकाम पर अमल करो और मेरी हिदायात
के मुताबिक़ चलो। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। 5मेरी
हिदायात और अहकाम के मुताबिक़ चलना,
क्योंकि जो यों करेगा वह जीता रहेगा। मैं रब हूँ।

6तुममें से कोई भी अपनी क़रीबी रिश्तेदार से
हमबिसतर न हो। मैं रब हूँ।

7अपनी माँ से हमबिसतर न होना, वरना तेरे
बाप की बेहुरमती हो जाएगी। वह तेरी माँ है,
इसलिए उससे हमबिसतर न होना।

8अपने बाप की किसी भी बीवी से हमबिसतर
न होना, वरना तेरे बाप की बेहुरमती हो जाएगी।

9अपनी बहन से हमबिसतर न होना, चाहे वह
तेरे बाप या तेरी माँ की बेटी हो, चाहे वह तेरे ही
घर में या कहीं और पैदा हुई हो।

10अपनी पोती या नवासी से हमबिसतर न
होना, वरना तेरी अपनी बेहुरमती हो जाएगी।

11अपने बाप की बीवी की बेटी से हमबिसतर
न होना। वह तेरी बहन है।

12अपनी फूफी से हमबिसतर न होना। वह तेरे
बाप की क़रीबी रिश्तेदार है।

13अपनी ख़ाला से हमबिसतर न होना। वह तेरी
माँ की क़रीबी रिश्तेदार है।

14अपने बाप के भाई की बीवी से हम-
बिसतर न होना, वरना तेरे बाप के भाई की
बेहुरमती हो जाएगी। उस की बीवी तेरी चची है।

15अपनी बहू से हमबिसतर न होना। वह तेरे
बेटे की बीवी है।

16अपनी भाबी से हमबिसतर न होना, वरना
तेरे भाई की बेहुरमती हो जाएगी।

17अगर तेरा जिंसी ताल्लुक़ किसी औरत से हो
तो उस की बेटी, पोती या नवासी से हमबिसतर
होना मना है, क्योंकि वह उस की क़रीबी रिश्तेदार
हैं। ऐसा करना बड़ी शर्मनाक हरकत है।

18अपनी बीवी के जीते-जी उस की बहन से
शादी न करना।

19किसी औरत से उस की माहवारी के दिनों में
हमबिसतर न होना। इस दौरान वह नापाक है।

20किसी दूसरे मर्द की बीवी से हमबिसतर न
होना, वरना तू अपने आपको नापाक करेगा।

21अपने किसी भी बच्चे को मलिक देवता को
क़ुरबानी के तौर पर पेश करके जला देना मना है।

ऐसी हरकत से तू अपने ख़ुदा के नाम को दाग़ लगाएगा। मैं रब हूँ।

22मर्द दूसरे मर्द के साथ जिंसी ताल्लुक़ात न रखे। ऐसी हरकत क़ाबिले-घिन है।

23किसी जानवर से जिंसी ताल्लुक़ात न रखना, वरना तू नापाक हो जाएगा। औरतों के लिए भी ऐसा करना मना है। यह बड़ी शर्मनाक हरकत है।

24ऐसी हरकतों से अपने आपको नापाक न करना। क्योंकि जो क़ौमें मैं तुम्हारे आगे मुल्क से निकालूँगा वह इसी तरह नापाक होती रहीं। 25मुल्क ख़ुद भी नापाक हुआ। इसलिए मैंने उसे उसके क़ुसूर के सबब से सज़ा दी, और नतीजे में उसने अपने बाशिंदों को उगल दिया। 26लेकिन तुम मेरी हिदायात और अहकाम के मुताबिक़ चलो। न देसी और न परदेसी ऐसी कोई घिनौनी हरकत करें। 27क्योंकि यह तमाम क़ाबिले-घिन बातें उनसे हुईं जो तुमसे पहले इस मुल्क में रहते थे। यों मुल्क नापाक हुआ। 28लिहाज़ा अगर तुम भी मुल्क को नापाक करोगे तो वह तुम्हें इसी तरह उगल देगा जिस तरह उसने तुमसे पहले मौजूद क़ौमों को उगल दिया। 29जो भी मज़कूरा घिनौनी हरकतों में से एक करे उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए। 30मेरे अहकाम के मुताबिक़ चलते रहो और ऐसे क़ाबिले-घिन रस्मो-रिवाज न अपनाना जो तुम्हारे आने से पहले रायज थे। इनसे अपने आपको नापाक न करना। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”

मुक़द्दस क़ौम के लिए हिदायात

19 रब ने मूसा से कहा, 2“इसराईलियों की पूरी जमात को बताना कि मुक़द्दस रहो, क्योंकि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा क़ुद्दूस हूँ।

3तुममें से हर एक अपने माँ-बाप की इज़्ज़त करे। हफ़्ते के दिन काम न करना। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। 4न बुतों की तरफ़ रुजू करना, न अपने लिए देवता ढालना। मैं ही रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

5जब तुम रब को सलामती की क़ुरबानी पेश करते हो तो उसे यों चढ़ाओ कि तुम मंज़ूर हो जाओ। 6उसका गोश्त उसी दिन या अगले दिन खाया जाए। जो भी तीसरे दिन तक बच जाता है उसे जलाना है। 7अगर कोई उसे तीसरे दिन खाए तो उसे इल्म होना चाहिए कि यह क़ुरबानी नापाक है और रब को पसंद नहीं है। 8ऐसे शख़्स को अपने क़ुसूर की सज़ा उठानी पड़ेगी, क्योंकि उसने उस चीज़ की मुक़द्दस हालत ख़त्म की है जो रब के लिए मख़सूस की गई थी। उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए।

9कटाई के वक़्त अपनी फ़सल पूरे तौर पर न काटना बल्कि खेत के किनारों पर कुछ छोड़ देना। इस तरह जो कुछ कटाई करते वक़्त खेत में बच जाए उसे छोड़ना। 10अंगूर के बाग़ों में भी जो कुछ अंगूर तोड़ते वक़्त बच जाए उसे छोड़ देना। जो अंगूर ज़मीन पर गिर जाएँ उन्हें उठाकर न ले जाना। उन्हें ग़रीबों और परदेसियों के लिए छोड़ देना। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

11चोरी न करना, झूट न बोलना, एक दूसरे को धोका न देना।

12मेरे नाम की क़सम खाकर धोका न देना, वरना तुम मेरे नाम को दाग़ लगाओगे। मैं रब हूँ।

13एक दूसरे को न दबाना और न लूटना। किसी की मज़दूरी उसी दिन की शाम तक दे देना और उसे अगली सुबह तक रोके न रखना।

14बहरे को न कोसना, न अंधे के रास्ते में कोई चीज़ रखना जिससे वह ठोकर खाए। इसमें भी अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना। मैं रब हूँ।

15अदालत में किसी की हक़तलफ़ी न करना। फ़ैसला करते वक़्त किसी की भी जानिबदारी न करना, चाहे वह ग़रीब या असरो-रसूख़वाला हो। इनसाफ़ से अपने पड़ोसी की अदालत कर।

16अपनी क़ौम में इधर-उधर फिरते हुए किसी पर बुहतान न लगाना। कोई भी ऐसा काम न करना जिससे किसी की जान ख़तरे में पड़ जाए। मैं रब हूँ।

17दिल में अपने भाई से नफ़रत न करना। अगर
किसी की सरज़निश करनी है तो रूबरू करना,
वरना तू उसके सबब से क़ुसूरवार ठहरेगा।
18इंतक़ाम न लेना। अपनी क़ौम के किसी
शख़्स पर देर तक तेरा ग़ुस्सा न रहे बल्कि अपने
पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने
आपसे रखता है। मैं रब हूँ।
19मेरी हिदायात पर अमल करो। दो मुख़्तलिफ़
क़िस्म के जानवरों को मिलाप न करने देना। अपने
खेत में दो क़िस्म के बीज न बोना। ऐसा कपड़ा
न पहनना जो दो मुख़्तलिफ़ क़िस्म के धागों का
बुना हुआ हो।
20अगर कोई आदमी किसी लौंडी से जिसकी
मँगनी किसी और से हो चुकी हो हमबिसतर हो
जाए और लौंडी को अब तक न पैसों से न वैसे ही
आज़ाद किया गया हो तो मुनासिब सज़ा दी जाए।
लेकिन उन्हें सज़ाए-मौत न दी जाए, क्योंकि उसे
अब तक आज़ाद नहीं किया गया। 21क़ुसूरवार
आदमी मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर एक मेंढा
ले आए ताकि वह रब को क़ुसूर की क़ुरबानी के
तौर पर पेश किया जाए। 22इमाम इस क़ुरबानी
से रब के सामने उसके गुनाह का कफ़्फ़ारा दे।
यों उसका गुनाह मुआफ़ किया जाएगा। 23जब
मुल्के-कनान में दाख़िल होने के बाद तुम फलदार
दरख़्त लगाओगे तो पहले तीन साल उनका फल
न खाना बल्कि उसे ममनू[a] समझना। 24चौथे
साल उनका तमाम फल ख़ुशी के मुक़द्दस नज़राने
के तौर पर रब के लिए मख़सूस किया जाए।
25पाँचवें साल तुम उनका फल खा सकते हो।
यों तुम्हारी फ़सल बढ़ाई जाएगी। मैं रब तुम्हारा
ख़ुदा हूँ।
26ऐसा गोश्त न खाना जिसमें ख़ून हो। फ़ाल
या शुगून न निकालना।
27अपने सर के बाल गोल शक्ल में न कटवाना,
न अपनी दाढ़ी को तराशना। 28अपने आपको
मुरदों के सबब से काटकर ज़ख़मी न करना, न
अपनी जिल्द पर नुक़ूश गुदवाना। मैं रब हूँ।
29अपनी बेटी को कसबी न बनाना, वरना
उस की मुक़द्दस हालत जाती रहेगी और मुल्क
ज़िनाकारी के बाइस हरामकारी से भर जाएगा।
30हफ़्ते के दिन आराम करना और मेरे
मक़दिस का एहतराम करना। मैं रब हूँ।
31ऐसे लोगों के पास न जाना जो मुरदों से
राबिता करते हैं, न ग़ैबदानों की तरफ़ रुजू करना,
वरना तुम उनसे नापाक हो जाओगे। मैं रब तुम्हारा
ख़ुदा हूँ।
32बूढ़े लोगों के सामने उठकर खड़ा हो जाना,
बुज़ुर्गों की इज़्ज़त करना और अपने ख़ुदा का
एहतराम करना। मैं रब हूँ।
33जो परदेसी तुम्हारे मुल्क में तुम्हारे दरमियान
रहता है उसे न दबाना। 34उसके साथ ऐसा सुलूक
कर जैसा अपने हमवतनों के साथ करता है। जिस
तरह तू अपने आपसे मुहब्बत रखता है उसी तरह
उससे भी मुहब्बत रखना। याद रहे कि तुम ख़ुद
मिसर में परदेसी थे। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।
35नाइनसाफ़ी न करना। न अदालत में, न
लंबाई नापते वक़्त, न तोलते वक़्त और न किसी
चीज़ की मिक़दार नापते वक़्त। 36सहीह तराज़ू,
सहीह बाट और सहीह पैमाना इस्तेमाल करना।
मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ जो तुम्हें मिसर से निकाल
लाया हूँ।
37मेरी तमाम हिदायात और तमाम अह-
काम मानो और उन पर अमल करो। मैं रब हूँ।”

जरायम की सज़ाएँ

20 रब ने मूसा से कहा, 2“इसराई-
लियों को बताना कि तुममें से जो भी
अपने बच्चे को मलिक देवता को क़ुरबानी के
तौर पर पेश करे उसे सज़ाए-मौत देनी है। इसमें
कोई फ़रक़ नहीं कि वह इसराईली है या परदेसी।
जमात के लोग उसे संगसार करें। 3मैं ख़ुद ऐसे
शख़्स के ख़िलाफ़ हो जाऊँगा और उसे उस की

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : नामख़तून।

क़ौम में से मिटा डालूँगा। क्योंकि अपने बच्चों को मलिक को पेश करने से उसने मेरे मक़दिस को नापाक किया और मेरे नाम को दाग़ लगाया है। 4अगर जमात के लोग अपनी आँखें बंद करके ऐसे शख़्स की हरकतें नज़रंदाज़ करें और उसे सज़ाए-मौत न दें 5तो फिर मैं ख़ुद ऐसे शख़्स और उसके घराने के ख़िलाफ़ खड़ा हो जाऊँगा। मैं उसे और उन तमाम लोगों को क़ौम में से मिटा डालूँगा जिन्होंने उसके पीछे लगकर मलिक देवता को सिजदा करने से ज़िना किया है।

6जो शख़्स मुरदों से राबिता करने और ग़ैबदानी करनेवालों की तरफ़ रुजू करता है मैं उसके ख़िलाफ़ हो जाऊँगा। उनकी पैरवी करने से वह ज़िना करता है। मैं उसे उस की क़ौम में से मिटा डालूँगा। 7अपने आपको मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस रखो, क्योंकि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। 8मेरी हिदायात मानो और उन पर अमल करो। मैं रब हूँ जो तुम्हें मख़सूसो-मुक़द्दस करता हूँ।

9जिसने भी अपने बाप या माँ पर लानत भेजी है उसे सज़ाए-मौत दी जाए। इस हरकत से वह अपनी मौत का ख़ुद ज़िम्मेदार है।

10अगर किसी मर्द ने किसी की बीवी के साथ ज़िना किया है तो दोनों को सज़ाए-मौत देनी है।

11जो मर्द अपने बाप की बीवी से हम-बिसतर हुआ है उसने अपने बाप की बेहुरमती की है। दोनों को सज़ाए-मौत देनी है। वह अपनी मौत के ख़ुद ज़िम्मेदार हैं।

12अगर कोई मर्द अपनी बहू से हमबिसतर हुआ है तो दोनों को सज़ाए-मौत देनी है। जो कुछ उन्होंने किया है वह निहायत शर्मनाक है। वह अपनी मौत के ख़ुद ज़िम्मेदार हैं।

13अगर कोई मर्द किसी दूसरे मर्द से जिंसी ताल्लुक़ात रखे तो दोनों को इस घिनौनी हरकत के बाइस सज़ाए-मौत देनी है। वह अपनी मौत के ख़ुद ज़िम्मेदार हैं।

14अगर कोई आदमी अपनी बीवी के अलावा उस की माँ से भी शादी करे तो यह एक निहायत शर्मनाक बात है। दोनों को जला देना है ताकि तुम्हारे दरमियान कोई ऐसी ख़बीस बात न रहे।

15जो मर्द किसी जानवर से जिंसी ताल्लु-क़ात रखे उसे सज़ाए-मौत देना है। उस जानवर को भी मार दिया जाए। 16जो औरत किसी जानवर से जिंसी ताल्लुक़ात रखे उसे सज़ाए-मौत देनी है। उस जानवर को भी मार दिया जाए। वह अपनी मौत के ख़ुद ज़िम्मेदार हैं।

17जिस मर्द ने अपनी बहन से शादी की है उसने शर्मनाक हरकत की है, चाहे वह बाप की बेटी हो या माँ की। उन्हें इसराईली क़ौम की नज़रों से मिटाया जाए। ऐसे शख़्स ने अपनी बहन की बेहुरमती की है। इसलिए उसे ख़ुद अपने क़ुसूर के नतीजे बरदाश्त करने पड़ेंगे।

18अगर कोई मर्द माहवारी के ऐयाम में किसी औरत से हमबिसतर हुआ है तो दोनों को उनकी क़ौम में से मिटाना है। क्योंकि दोनों ने औरत के ख़ून के मंबा से परदा उठाया है।

19अपनी ख़ाला या फूफी से हमबिसतर न होना। क्योंकि जो ऐसा करता है वह अपनी क़रीबी रिश्तेदार की बेहुरमती करता है। दोनों को अपने क़ुसूर के नतीजे बरदाश्त करने पड़ेंगे।

20जो अपनी चची या ताई से हमबिसतर हुआ है उसने अपने चचा या ताया की बेहुरमती की है। दोनों को अपने क़ुसूर के नतीजे बरदाश्त करने पड़ेंगे। वह बेऔलाद मरेंगे।

21जिसने अपनी भाबी से शादी की है उसने एक नजिस हरकत की है। उसने अपने भाई की बेहुरमती की है। वह बेऔलाद रहेंगे।

22मेरी तमाम हिदायात और अहकाम को मानो और उन पर अमल करो। वरना जिस मुल्क में मैं तुम्हें ले जा रहा हूँ वह तुम्हें उगल देगा। 23उन क़ौमों के रस्मो-रिवाज के मुताबिक़ ज़िंदगी न गुज़ारना जिन्हें मैं तुम्हारे आगे से निकाल दूँगा। मुझे इस सबब से उनसे घिन आने लगी कि वह यह सब कुछ करते थे। 24लेकिन तुमसे मैंने कहा, ‘तुम ही उनकी ज़मीन पर क़ब्ज़ा करोगे। मैं ही उसे तुम्हें दे दूँगा, ऐसा मुल्क जिसमें कसरत

का दूध और शहद है।' मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ,
जिसने तुमको दीगर क़ौमों में से चुनकर अलग
कर दिया है। 25इसलिए लाज़िम है कि तुम
ज़मीन पर चलनेवाले जानवरों और परिंदों में पाक
और नापाक का इम्तियाज़ करो। अपने आपको
नापाक जानवर खाने से क़ाबिले-घिन न बनाना,
चाहे वह ज़मीन पर चलते या रेंगते हैं, चाहे हवा में
उड़ते हैं। मैं ही ने उन्हें तुम्हारे लिए नापाक क़रार
दिया है। 26तुम्हें मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस होना
है, क्योंकि मैं क़ुद्दूस हूँ, और मैंने तुम्हें दीगर क़ौमों
में से चुनकर अपने लिए अलग कर लिया है।

27तुममें से जो मुरदों से राबिता या ग़ैबदानी
करता है उसे सज़ाए-मौत देनी है, ख़ाह औरत हो
या मर्द। उन्हें संगसार करना। वह अपनी मौत के
ख़ुद ज़िम्मेदार हैं।"

इमामों के लिए हिदायात

21 रब ने मूसा से कहा, "हारून के बेटों
को जो इमाम हैं बता देना कि इमाम
अपने आपको किसी इसराईली की लाश के
क़रीब जाने से नापाक न करे 2सिवाए अपने
क़रीबी रिश्तेदारों के यानी माँ, बाप, बेटा, बेटी,
भाई 3और जो ग़ैरशादीशुदा बहन उसके घर में
रहती है। 4वह अपनी क़ौम में किसी और के
बाइस अपने आपको नापाक न करे, वरना उस
की मुक़द्दस हालत जाती रहेगी।

5इमाम अपने सर को न मुँडवाएँ। वह न अपनी
दाढ़ी को तराशें और न काटने से अपने आपको
ज़ख़मी करें।

6वह अपने ख़ुदा के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस रहें
और अपने ख़ुदा के नाम को दाग़ न लगाएँ। चूँकि
वह रब को जलनेवाली क़ुरबानियाँ यानी अपने
ख़ुदा की रोटी पेश करते हैं इसलिए लाज़िम है
कि वह मुक़द्दस रहें। 7इमाम ज़िनाकार औरत,
मंदिर की कसबी या तलाक़याफ़्ता औरत से शादी
न करें, क्योंकि वह अपने रब के लिए मख़सूसो-
मुक़द्दस हैं। 8इमाम को मुक़द्दस समझना, क्योंकि
वह तेरे ख़ुदा की रोटी को क़ुरबानगाह पर चढ़ाता
है। वह तेरे लिए मुक़द्दस ठहरे क्योंकि मैं रब क़ुद्दूस
हूँ। मैं ही तुम्हें मुक़द्दस करता हूँ।

9किसी इमाम की जो बेटी ज़िनाकारी से अपनी
मुक़द्दस हालत को ख़त्म कर देती है वह अपने बाप
की मुक़द्दस हालत को भी ख़त्म कर देती है। उसे
जला दिया जाए।

10इमामे-आज़म के सर पर मसह का तेल
उंडेला गया है और उसे इमामे-आज़म के मुक़द्दस
कपड़े पहनने का इख़्तियार दिया गया है। इसलिए
वह रंज के आलम में अपने बालों को बिखरने न
दे, न कभी अपने कपड़ों को फाड़े। 11वह किसी
लाश के क़रीब न जाए, चाहे वह उसके बाप या
माँ की लाश क्यों न हो, वरना वह नापाक हो
जाएगा। 12जब तक कोई लाश उसके घर में पड़ी
रहे वह मक़दिस को छोड़कर अपने घर न जाए,
वरना वह मक़दिस को नापाक करेगा। क्योंकि
उसे उसके ख़ुदा के तेल से मख़सूस किया गया
है। मैं रब हूँ। 13इमामे-आज़म को सिर्फ़ कुँवारी से
शादी की इजाज़त है। 14वह बेवा, तलाक़याफ़्ता
औरत, मंदिर की कसबी या ज़िनाकार औरत से
शादी न करे बल्कि सिर्फ़ अपने क़बीले की कुँवारी
से, 15वरना उस की औलाद मख़सूसो-मुक़द्दस
नहीं होगी। क्योंकि मैं रब हूँ जो उसे अपने लिए
मख़सूसो-मुक़द्दस करता हूँ।"

16रब ने मूसा से यह भी कहा, 17"हारून को
बताना कि तेरी औलाद में से कोई भी जिसके
जिस्म में नुक़्स हो मेरे हुज़ूर आकर अपने ख़ुदा
की रोटी न चढ़ाए। यह उसूल आनेवाली नसलों के
लिए भी अटल है। 18क्योंकि कोई भी माज़ूर मेरे
हुज़ूर न आए, न अंधा, न लँगड़ा, न वह जिसकी
नाक चिरी हुई हो या जिसके किसी अज़ु में कमी
बेशी हो, 19न वह जिसका पाँव या हाथ टूटा हुआ
हो, 20न कुबड़ा, न बौना, न वह जिसकी आँख
में नुक़्स हो या जिसे वबाई जिल्दी बीमारी हो या
जिसके ख़ुसिये कुचले हुए हों। 21हारून इमाम
की कोई भी औलाद जिसके जिस्म में नुक़्स हो
मेरे हुज़ूर आकर रब को जलनेवाली क़ुरबानियाँ
पेश न करे। चूँकि उसमें नुक़्स है इसलिए वह

मेरे हुज़ूर आकर अपने ख़ुदा की रोटी न चढ़ाए। 22उसे अल्लाह की मुक़द्दस बल्कि मुक़द्दसतरीन क़ुरबानियों में से भी इमामों का हिस्सा खाने की इजाज़त है। 23लेकिन चूँकि उसमें नुक़्स है इसलिए वह मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े के परदे के क़रीब न जाए, न क़ुरबानगाह के पास आए। वरना वह मेरी मुक़द्दस चीज़ों को नापाक करेगा। क्योंकि मैं रब हूँ जो उन्हें अपने लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करता हूँ।”

24मूसा ने यह हिदायात हारून, उसके बेटों और तमाम इसराईलियों को दीं।

क़ुरबानी का गोश्त खाने की हिदायात

22 रब ने मूसा से कहा, 2“हारून और उसके बेटों को बताना कि इसराईलियों की उन क़ुरबानियों का एहतराम करो जो तुमने मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस की हैं, वरना तुम मेरे नाम को दाग़ लगाओगे। मैं रब हूँ। 3जो इमाम नापाक होने के बावुजूद उन क़ुरबानियों के पास आ जाए जो इसराईलियों ने मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस की हैं उसे मेरे सामने से मिटाना है। यह उसूल आनेवाली नसलों के लिए भी अटल है। मैं रब हूँ।

4हारून की औलाद में से जो भी वबाई जिल्दी बीमारी या जरयान का मरीज़ हो उसे मुक़द्दस क़ुरबानियों में से अपना हिस्सा खाने की इजाज़त नहीं है। पहले वह पाक हो जाए। जो ऐसी कोई भी चीज़ छुए जो लाश से नापाक हो गई हो या ऐसे आदमी को छुए जिसका नुतफ़ा निकला हो वह नापाक हो जाता है। 5वह नापाक रेंगनेवाले जानवर या नापाक शख़्स को छूने से भी नापाक हो जाता है, ख़ाह वह किसी भी सबब से नापाक क्यों न हुआ हो। 6जो ऐसी कोई भी चीज़ छुए वह शाम तक नापाक रहेगा। इसके अलावा लाज़िम है कि वह मुक़द्दस क़ुरबानियों में से अपना हिस्सा खाने से पहले नहा ले। 7सूरज के ग़ुरूब होने पर वह पाक होगा और मुक़द्दस क़ुरबानियों में से अपना हिस्सा खा सकेगा। क्योंकि वह उस की रोज़ी हैं। 8इमाम ऐसे जानवरों का गोश्त न खाए जो फ़ितरी तौर पर मर गए या जिन्हें जंगली जानवरों ने फाड़ डाला हो, वरना वह नापाक हो जाएगा। मैं रब हूँ।

9इमाम मेरी हिदायात के मुताबिक़ चलें, वरना वह क़ुसूरवार बन जाएंगे और मुक़द्दस चीज़ों की बेहुरमती करने के सबब से मर जाएंगे। मैं रब हूँ जो उन्हें अपने लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करता हूँ।

10सिर्फ़ इमाम के ख़ानदान के अफ़राद मुक़द्दस क़ुरबानियों में से खा सकते हैं। ग़ैरशहरी या मज़दूर को इजाज़त नहीं है। 11लेकिन इमाम का ग़ुलाम या लौंडी उसमें से खा सकते हैं, चाहे उन्हें ख़रीदा गया हो या वह उसके घर में पैदा हुए हों। 12अगर इमाम की बेटी ने किसी ऐसे शख़्स से शादी की है जो इमाम नहीं है तो उसे मुक़द्दस क़ुरबानियों में से खाने की इजाज़त नहीं है। 13लेकिन हो सकता है कि वह बेवा या तलाक़याफ़्ता हो और उसके बच्चे न हों। जब वह अपने बाप के घर लौटकर वहाँ ऐसे रहेगी जैसे अपनी जवानी में तो वह अपने बाप के उस खाने में से खा सकती है जो क़ुरबानियों में से बाप का हिस्सा है। लेकिन जो इमाम के ख़ानदान का फ़रद नहीं है उसे खाने की इजाज़त नहीं है।

14जिस शख़्स ने नादानिस्ता तौर पर मुक़द्दस क़ुरबानियों में से इमाम के हिस्से से कुछ खाया है वह इमाम को सब कुछ वापस करने के अलावा 20 फ़ीसद ज़्यादा दे। 15इमाम रब को पेश की हुई क़ुरबानियों की मुक़द्दस हालत यों ख़त्म न करें 16कि वह दूसरे इसराईलियों को यह मुक़द्दस चीज़ें खाने दें। ऐसी हरकत से वह उनको बड़ा क़ुसूरवार बना देंगे। मैं रब हूँ जो उन्हें अपने लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करता हूँ।”

जानवरों की क़ुरबानियों के बारे में हिदायात

17रब ने मूसा से कहा, 18“हारून, उसके बेटों और इसराईलियों को बताना कि अगर तुममें से कोई इसराईली या परदेसी रब को भस्म होनेवाली क़ुरबानी पेश करना चाहे तो तरीक़े-कार में कोई फ़रक़ नहीं है, चाहे वह यह मन्नत मानकर या

वैसे ही दिली ख़ुशी से कर रहा हो। 19इसके लिए
लाज़िम है कि तुम एक बेऐब बैल, मेंढा या बकरा
पेश करो। फिर ही उसे क़बूल किया जाएगा।
20क़ुरबानी के लिए कभी भी ऐसा जानवर पेश न
करना जिसमें नुक़्स हो, वरना तुम उसके बाइस
मंज़ूर नहीं होगे। 21अगर कोई रब को सलामती
की क़ुरबानी पेश करना चाहे तो तरीक़े-कार में
कोई फ़रक़ नहीं है, चाहे वह यह मन्नत मानकर
या वैसे ही दिली ख़ुशी से कर रहा हो। इसके लिए
लाज़िम है कि वह गाय-बैलों या भेड़-बकरियों
में से बेऐब जानवर चुने। फिर उसे क़बूल किया
जाएगा। 22रब को ऐसे जानवर पेश न करना जो
अंधे हों, जिनके आज़ा टूटे या कटे हुए हों, जिनको
रसौली हो या जिन्हें वबाई जिल्दी बीमारी लग गई
हो। रब को उन्हें जलनेवाली क़ुरबानी के तौर पर
क़ुरबानगाह पर पेश न करना। 23लेकिन जिस
गाय-बैल या भेड़-बकरी के किसी अज़ु में कमी
बेशी हो उसे पेश किया जा सकता है। शर्त यह
है कि पेश करनेवाला उसे वैसे ही दिली ख़ुशी से
चढ़ाए। अगर वह उसे अपनी मन्नत मानकर पेश
करे तो वह क़बूल नहीं किया जाएगा। 24रब को
ऐसा जानवर पेश न करना जिसके ख़ुसिये कुचले,
तोड़े या कटे हुए हों। अपने मुल्क में जानवरों को
इस तरह ख़सी न बनाना, 25न ऐसे जानवर किसी
ग़ैरमुल्की से ख़रीदकर अपने ख़ुदा की रोटी के तौर
पर पेश करना। तुम ऐसे जानवरों के बाइस मंज़ूर
नहीं होगे, क्योंकि उनमें ख़राबी और नुक़्स है।”

26रब ने मूसा से यह भी कहा, 27“जब किसी
गाय, भेड़ या बकरी का बच्चा पैदा होता है तो
लाज़िम है कि वह पहले सात दिन अपनी माँ के
पास रहे। आठवें दिन से पहले रब उसे जलनेवाली
क़ुरबानी के तौर पर क़बूल नहीं करेगा। 28किसी
गाय, भेड़ या बकरी के बच्चे को उस की माँ
समेत एक ही दिन ज़बह न करना। 29जब तुम
रब को सलामती की कोई क़ुरबानी चढ़ाना चाहते
हो तो उसे यों पेश करना कि तुम मंज़ूर हो जाओ।
30अगली सुबह तक कुछ बचा न रहे बल्कि उसे
उसी दिन खाना है। मैं रब हूँ।

31मेरे अहकाम मानो और उन पर अमल करो।
मैं रब हूँ। 32मेरे नाम को दाग़ न लगाना। लाज़िम
है कि मुझे इसराईलियों के दरमियान क़ुद्दूस माना
जाए। मैं रब हूँ जो तुम्हें अपने लिए मख़सूसो-
मुक़द्दस करता हूँ। 33मैं तुम्हें मिसर से निकाल
लाया हूँ ताकि तुम्हारा ख़ुदा हूँ। मैं रब हूँ।”

23 रब ने मूसा से कहा, 2“इसराई-
लियों को बताना कि यह मेरी, रब की
ईदें हैं जिन पर तुम्हें लोगों को मुक़द्दस इजतिमा
के लिए जमा करना है।

सबत का दिन

3हफ़्ते में छ: दिन काम करना, लेकिन सातवाँ
दिन हर तरह से आराम का दिन है। उस दिन
मुक़द्दस इजतिमा हो। जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ
काम न करना। यह दिन रब के लिए मख़सूस
सबत है।

फ़सह की ईद और बेख़मीरी रोटी की ईद

4यह रब की ईदें हैं जिन पर तुम्हें लोगों को
मुक़द्दस इजतिमा के लिए जमा करना है।

5फ़सह की ईद पहले महीने के चौधवें दिन शुरू
होती है। उस दिन सूरज के ग़ुरूब होने पर रब की
ख़ुशी मनाई जाए। 6अगले दिन रब की याद में
बेख़मीरी रोटी की ईद शुरू होती है। सात दिन तक
तुम्हारी रोटी में ख़मीर न हो। 7इन सात दिनों के
पहले दिन मुक़द्दस इजतिमा हो और लोग अपना
हर काम छोड़ें। 8इन सात दिनों में रोज़ाना रब को
जलनेवाली क़ुरबानी पेश करो। सातवें दिन भी
मुक़द्दस इजतिमा हो और लोग अपना हर काम
छोड़ें।”

पहले पूले की ईद

9रब ने मूसा से कहा, 10“इसराईलियों को
बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाख़िल होगे जो
मैं तुम्हें दूँगा और वहाँ अनाज की फ़सल काटोगे
तो तुम्हें इमाम को पहला पूला देना है। 11इतवार
को इमाम यह पूला रब के सामने हिलाए ताकि

तुम मंज़ूर हो जाओ। 12उस दिन भेड़ का एक
यकसाला बेऐब बच्चा भी रब को पेश करना। उसे
क़ुरबानगाह पर भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर
पर चढ़ाना। 13साथ ही ग़ल्ला की नज़र के लिए
तेल से मिलाया गया 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा
भी पेश करना। जलनेवाली यह क़ुरबानी रब को
पसंद है। इसके अलावा मै की नज़र के लिए एक
लिटर मै भी पेश करना। 14पहले यह सब कुछ
करो, फिर ही तुम्हें नई फ़सल के अनाज से खाने
की इजाज़त होगी, ख़ाह वह भुना हुआ हो, ख़ाह
कच्चा या रोटी की सूरत में पकाया गया हो। जहाँ
भी तुम रहते हो वहाँ ऐसा ही करना है। यह उसूल
अबद तक क़ायम रहे।

हफ़्तों की ईद यानी पंतिकुस्त

15जिस दिन तुमने अनाज का पूला पेश किया
उस दिन से पूरे सात हफ़्ते गिनो। 16पचासवें दिन
यानी सातवें इतवार को रब को नए अनाज की
क़ुरबानी चढ़ाना। 17हर घराने की तरफ़ से रब
को हिलानेवाली क़ुरबानी के तौर पर दो रोटियाँ
पेश की जाएँ। हर रोटी के लिए 3 किलोग्राम
बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। उनमें ख़मीर
डालकर पकाना है। यह फ़सल की पहली पैदावार
की क़ुरबानी हैं। 18इन रोटियों के साथ एक
जवान बैल, दो मेंढे और भेड़ के सात बेऐब और
यकसाला बच्चे पेश करो। उन्हें रब के हुज़ूर भस्म
होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर चढ़ाना। इसके
अलावा ग़ल्ला की नज़र और मै की नज़र भी पेश
करनी है। जलनेवाली इस क़ुरबानी की ख़ुशबू रब
को पसंद है। 19फिर गुनाह की क़ुरबानी के लिए
एक बकरा और सलामती की क़ुरबानी के लिए दो
यकसाला भेड़ के बच्चे चढ़ाओ। 20इमाम भेड़ के
यह दो बच्चे मज़कूरा रोटियों समेत हिलानेवाली
क़ुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाए। यह
रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस हैं और क़ुरबानियों
में से इमाम का हिस्सा हैं। 21उसी दिन लोगों को
मुक़द्दस इजतिमा के लिए जमा करो। कोई भी
काम न करना। यह उसूल अबद तक क़ायम रहे,
और इसे हर जगह मानना है।

22कटाई के वक़्त अपनी फ़सल पूरे तौर पर न
काटना बल्कि खेत के किनारों पर कुछ छोड़ देना।
इस तरह जो कुछ कटाई करते वक़्त खेत में बच
जाए उसे छोड़ना। बचा हुआ अनाज ग़रीबों और
परदेसियों के लिए छोड़ देना। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा
हूँ।”

नए साल की ईद

23रब ने मूसा से कहा, 24“इसराईलियों को
बताना कि सातवें महीने का पहला दिन आराम
का दिन है। उस दिन मुक़द्दस इजतिमा हो जिस पर
याद दिलाने के लिए नरसिंगा फूँका जाए। 25कोई
भी काम न करना। रब को जलनेवाली क़ुरबानी
पेश करना।”

कफ़्फ़ारा का दिन

26रब ने मूसा से कहा, 27“सातवें महीने का
दसवाँ दिन कफ़्फ़ारा का दिन है। उस दिन मुक़द्दस
इजतिमा हो। अपनी जान को दुख देना और रब
को जलनेवाली क़ुरबानी पेश करना। 28उस दिन
काम न करना, क्योंकि यह कफ़्फ़ारा का दिन है,
जब रब तुम्हारे ख़ुदा के सामने तुम्हारा कफ़्फ़ारा
दिया जाता है। 29जो उस दिन अपनी जान को
दुख नहीं देता उसे उस की क़ौम में से मिटाया
जाए। 30जो उस दिन काम करता है उसे मैं उस
की क़ौम में से निकालकर हलाक करूँगा। 31कोई
भी काम न करना। यह उसूल अबद तक क़ायम
रहे, और इसे हर जगह मानना है। 32यह दिन
आराम का ख़ास दिन है जिसमें तुम्हें अपनी जान
को दुख देना है। इसे महीने के नवें दिन की शाम
से लेकर अगली शाम तक मनाना।”

झोंपड़ियों की ईद

33रब ने मूसा से कहा, 34“इसराईलियों को
बताना कि सातवें महीने के पंद्रहवें दिन झोंपड़ियों
की ईद शुरू होती है। इसका दौरानिया सात दिन

है। 35पहले दिन मुक़द्दस इजतिमा हो। इस दिन
कोई काम न करना। 36इन सात दिनों के दौरान
रब को जलनेवाली क़ुरबानियाँ पेश करना। आठवें
दिन मुक़द्दस इजतिमा हो। रब को जलनेवाली
क़ुरबानी पेश करो। इस ख़ास इजतिमा के दिन
भी काम नहीं करना है।

37यह रब की ईदें हैं जिन पर तुम्हें मुक़द्दस
इजतिमा करना है ताकि रब को रोज़मर्रा की
मतलूबा जलनेवाली क़ुरबानियाँ और मै की नज़रें
पेश की जाएँ यानी भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ,
ग़ल्ला की नज़रें, ज़बह की क़ुरबानियाँ और मै
की नज़रें। 38यह क़ुरबानियाँ उन क़ुरबानियों के
अलावा हैं जो सबत के दिन चढ़ाई जाती हैं और
जो तुमने हदिये के तौर पर या मन्नत मानकर या
अपनी दिली ख़ुशी से पेश की हैं।

39चुनाँचे सातवें महीने के पंद्रहवें दिन फ़सल
की कटाई के इख़्तिताम पर रब की यह ईद
यानी झोंपड़ियों की ईद मनाओ। इसे सात दिन
मनाना। पहला और आख़िरी दिन आराम के दिन
हैं। 40पहले दिन अपने लिए दरख़्तों के बेहतरीन
फल, खजूर की डालियाँ और घने दरख़्तों और
सफ़ेदा की शाख़ें तोड़ना। सात दिन तक रब अपने
ख़ुदा के सामने ख़ुशी मनाओ। 41हर साल सातवें
महीने में रब की ख़ुशी में यह ईद मनाना। यह
उसूल अबद तक क़ायम रहे। 42ईद के हफ़्ते के
दौरान झोंपड़ियों में रहना। तमाम मुल्क में आबाद
इसराईली ऐसा करें। 43फिर तुम्हारी औलाद
जानेगी कि इसराईलियों को मिसर से निकालते
वक़्त मैंने उन्हें झोंपड़ियों में बसाया। मैं रब तुम्हारा
ख़ुदा हूँ।"

44मूसा ने इसराईलियों को रब की ईदों के बारे
में यह बातें बताईं।

रब के सामने शमादान और रोटियाँ

24 रब ने मूसा से कहा, 2"इसराई-
लियों को हुक्म दे कि वह तेरे पास
कूटे हुए ज़ैतूनों का ख़ालिस तेल ले आएँ ताकि
मुक़द्दस कमरे के शमादान के चराग़ मुतवातिर
जलते रहें। 3हारून उन्हें मुसलसल, शाम से लेकर
सुबह तक रब के हुज़ूर सँभाले यानी वहाँ जहाँ वह
मुक़द्दसतरीन कमरे के परदे के सामने पड़े हैं, उस
परदे के सामने जिसके पीछे अहद का संदूक़ है।
यह उसूल अबद तक क़ायम रहे। 4वह ख़ालिस
सोने के शमादान पर लगे चराग़ों की देख-भाल
यों करे कि यह हमेशा रब के सामने जलते रहें।

5बारह रोटियाँ पकाना। हर रोटी के लिए 3
किलोग्राम बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए।
6उन्हें दो क़तारों में रब के सामने ख़ालिस सोने की
मेज़ पर रखना। 7हर क़तार पर ख़ालिस लुबान
डालना। यह लुबान रोटी के लिए यादगारी की
क़ुरबानी है जिसे बाद में रब के लिए जलाना है।
8हर हफ़्ते को रब के सामने ताज़ा रोटियाँ इसी
तरतीब से मेज़ पर रखनी हैं। यह इसराईलियों
के लिए अबदी अहद की लाज़िमी शर्त है। 9मेज़
की रोटियाँ हारून और उसके बेटों का हिस्सा हैं,
और वह उन्हें मुक़द्दस जगह पर खाएँ, क्योंकि वह
जलनेवाली क़ुरबानियों का मुक़द्दसतरीन हिस्सा
हैं। यह अबद तक उनका हक़ रहेगा।"

अल्लाह की तौहीन, ख़ूनरेज़ी और ज़ख़मी करने की सज़ाएँ

10-11ख़ैमागाह में एक आदमी था जिसका
बाप मिसरी और माँ इसराईली थी। माँ का नाम
सलूमीत था। वह दिबरी की बेटी और दान के
क़बीले की थी। एक दिन यह आदमी ख़ैमागाह
में किसी इसराईली से झगड़ने लगा। लड़ते लड़ते
उसने रब के नाम पर कुफ़र बककर उस पर लानत
भेजी। यह सुनकर लोग उसे मूसा के पास ले
आए। 12वहाँ उन्होंने उसे पहरे में बिठाकर रब की
हिदायत का इंतज़ार किया।

13तब रब ने मूसा से कहा, 14"लानत
करनेवाले को ख़ैमागाह के बाहर ले जाओ।
जिन्होंने उस की यह बातें सुनी हैं वह सब अपने
हाथ उसके सर पर रखें। फिर पूरी जमात उसे
संगसार करे। 15इसराईलियों से कहना कि जो
भी अपने ख़ुदा पर लानत भेजे उसे अपने क़ुसूर

के नतीजे बरदाश्त करने पड़ेंगे। 16जो भी रब के
नाम पर कुफ़र बके उसे सज़ाए-मौत दी जाए।
पूरी जमात उसे संगसार करे। जिसने रब के नाम
पर कुफ़र बका हो उसे ज़रूर सज़ाए-मौत देनी है,
ख़ाह देसी हो या परदेसी।
17जिसने किसी को मार डाला है उसे सज़ाए-
मौत दी जाए। 18जिसने किसी के जानवर को मार
डाला है वह उसका मुआवज़ा दे। जान के बदले
जान दी जाए। 19अगर किसी ने किसी को ज़ख़मी
कर दिया है तो वही कुछ उसके साथ किया जाए
जो उसने दूसरे के साथ किया है। 20अगर दूसरे
की कोई हड्डी टूट जाए तो उस की वही हड्डी तोड़ी
जाए। अगर दूसरे की आँख ज़ाया हो जाए तो उस
की आँख ज़ाया कर दी जाए। अगर दूसरे का दाँत
टूट जाए तो उसका वही दाँत तोड़ा जाए। जो भी
ज़ख़म उसने दूसरे को पहुँचाया वही ज़ख़म उसे
पहुँचाया जाए। 21जिसने किसी जानवर को मार
डाला है वह उसका मुआवज़ा दे, लेकिन जिसने
किसी इनसान को मार दिया है उसे सज़ाए-मौत
देनी है। 22देसी और परदेसी के लिए तुम्हारा एक
ही क़ानून हो। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।"
23फिर मूसा ने इसराईलियों से बात की, और
उन्होंने रब पर लानत भेजनेवाले को ख़ैमागाह से
बाहर ले जाकर उसे संगसार किया। उन्होंने वैसा
ही किया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

ज़मीन के लिए सबत का साल

25 रब ने सीना पहाड़ पर मूसा से कहा,
2"इसराईलियों को बताना कि जब
तुम उस मुल्क में दाख़िल होगे जो मैं तुम्हें दूँगा तो
लाज़िम है कि रब की ताज़ीम में ज़मीन एक साल
आराम करे। 3छः साल के दौरान अपने खेतों में
बीज बोना, अपने अंगूर के बाग़ों की काँट-छाँट
करना और उनकी फ़सलें जमा करना। 4लेकिन
सातवाँ साल ज़मीन के लिए आराम का साल है,
रब की ताज़ीम में सबत का साल। उस साल न
अपने खेतों में बीज बोना, न अपने अंगूर के बाग़ों
की काँट-छाँट करना। 5जो अनाज ख़ुद बख़ुद
उगता है उस की कटाई न करना और जो अंगूर
उस साल लगते हैं उनको तोड़कर जमा न करना,
क्योंकि ज़मीन को एक साल के लिए आराम
करना है। 6अलबत्ता जो भी यह ज़मीन आराम
के साल में पैदा करेगी उससे तुम अपनी रोज़ाना
की ज़रूरियात पूरी कर सकते हो यानी तू, तेरे
ग़ुलाम और लौंडियाँ, तेरे मज़दूर, तेरे ग़ैरशहरी,
तेरे साथ रहनेवाले परदेसी, 7तेरे मवेशी और तेरी
ज़मीन पर रहनेवाले जंगली जानवर। जो कुछ भी
यह ज़मीन पैदा करती है वह खाया जा सकता है।

बहाली का साल

8सात सबत के साल यानी 49 साल के बाद
एक और काम करना है। 9पचासवें साल के
सातवें महीने के दसवें दिन यानी कफ़्फ़ारा के
दिन अपने मुल्क की हर जगह नरसिंगा बजाना।
10पचासवाँ साल मख़सूसो-मुक़द्दस करो और
पूरे मुल्क में एलान करो कि तमाम बाशिंदों को
आज़ाद कर दिया जाए। यह बहाली का साल हो
जिसमें हर शख़्स को उस की मिलकियत वापस
की जाए और हर ग़ुलाम को आज़ाद किया जाए
ताकि वह अपने रिश्तेदारों के पास वापस जा
सके। 11यह पचासवाँ साल बहाली का साल हो,
इसलिए न अपने खेतों में बीज बोना, न ख़ुद
बख़ुद उगनेवाले अनाज की कटाई करना, और न
अंगूर तोड़कर जमा करना। 12क्योंकि यह बहाली
का साल है जो तुम्हारे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस है।
रोज़ाना उतनी ही पैदावार लेना कि एक दिन की
ज़रूरियात पूरी हो जाएँ। 13बहाली के साल में हर
शख़्स को उस की मिलकियत वापस की जाए।
14चुनाँचे जब कभी तुम अपने किसी हमवतन
भाई को ज़मीन बेचते या उससे ख़रीदते हो तो
उससे नाजायज़ फ़ायदा न उठाना। 15ज़मीन की
क़ीमत इस हिसाब से मुक़र्रर की जाए कि वह
अगले बहाली के साल तक कितने साल फ़सलें
पैदा करेगी। 16अगर बहुत साल रह गए हों तो उस
की क़ीमत ज़्यादा होगी, और अगर कम साल रह
गए हों तो उस की क़ीमत कम होगी। क्योंकि उन

फ़सलों की तादाद बिक रही है जो ज़मीन अगले बहाली के साल तक पैदा कर सकती है।

17अपने हमवतन से नाजायज़ फ़ायदा न उठाना बल्कि रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना, क्योंकि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

18मेरी हिदायात पर अमल करना और मेरे अहकाम को मानकर उनके मुताबिक़ चलना। तब तुम अपने मुल्क में महफ़ूज़ रहोगे। 19ज़मीन अपनी पूरी पैदावार देगी, तुम सेर हो जाओगे और महफ़ूज़ रहोगे। 20हो सकता है कोई पूछे, 'हम सातवें साल में क्या खाएँगे जबकि हम बीज नहीं बोएँगे और फ़सल नहीं काटेंगे?' 21जवाब यह है कि मैं छटे साल में ज़मीन को इतनी बरकत दूँगा कि उस साल की पैदावार तीन साल के लिए काफ़ी होगी। 22जब तुम आठवें साल बीज बोओगे तो तुम्हारे पास छटे साल की इतनी पैदावार बाक़ी होगी कि तुम फ़सल की कटाई तक गुज़ारा कर सकोगे।

मौरूसी ज़मीन के हुक़ूक़

23कोई ज़मीन भी हमेशा के लिए न बेची जाए, क्योंकि मुल्क की तमाम ज़मीन मेरी ही है। तुम मेरे हुज़ूर सिर्फ़ परदेसी और ग़ैरशहरी हो। 24मुल्क में जहाँ भी ज़मीन बिक जाए वहाँ मौरूसी मालिक का यह हक़ माना जाए कि वह अपनी ज़मीन वापस ख़रीद सकता है।

25अगर तेरा कोई हमवतन भाई ग़रीब होकर अपनी कुछ ज़मीन बेचने पर मजबूर हो जाए तो लाज़िम है कि उसका सबसे क़रीबी रिश्तेदार उसे वापस ख़रीद ले। 26हो सकता है कि ऐसे शख़्स का कोई क़रीबी रिश्तेदार न हो जो उस की ज़मीन वापस ख़रीद सके, लेकिन वह ख़ुद कुछ देर के बाद इतने पैसे जमा करता है कि वह अपनी ज़मीन वापस ख़रीद सकता है। 27इस सूरत में वह हिसाब करे कि ख़रीदनेवाले के लिए अगले बहाली के साल तक कितने साल रह गए हैं। जितना नुक़सान ख़रीदनेवाले को ज़मीन को बहाली के साल से पहले वापस देने से पहुँचेगा उतने ही पैसे उसे देने हैं। 28लेकिन अगर उसके पास इतने पैसे न हों तो ज़मीन अगले बहाली के साल तक ख़रीदनेवाले के हाथ में रहेगी। फिर उसे मौरूसी मालिक को वापस दिया जाएगा।

29अगर किसी का घर फ़सीलदार शहर में है तो जब वह उसे बेचेगा तो अपना घर वापस ख़रीदने का हक़ सिर्फ़ एक साल तक रहेगा। 30अगर पहला मालिक उसे पहले साल के अंदर अंदर न ख़रीदे तो वह हमेशा के लिए ख़रीदनेवाले की मौरूसी मिलकियत बन जाएगा। वह बहाली के साल में भी वापस नहीं किया जाएगा।

31लेकिन जो घर ऐसी आबादी में है जिसकी फ़सील न हो वह देहात में शुमार किया जाता है। उसके मौरूसी मालिक को हक़ हासिल है कि हर वक़्त अपना घर वापस ख़रीद सके। बहाली के साल में इस घर को लाज़िमन वापस कर देना है।

32लेकिन लावियों को यह हक़ हासिल है कि वह अपने वह घर हर वक़्त ख़रीद सकते हैं जो उनके लिए मुक़र्रर किए हुए शहरों में हैं। 33अगर ऐसा घर किसी लावी के हाथ फ़रोख़्त किया जाए और वापस न ख़रीदा जाए तो उसे लाज़िमन बहाली के साल में वापस करना है। क्योंकि लावी के जो घर उनके मुक़र्ररा शहरों में होते हैं वह इसराईलियों में उनकी मौरूसी मिलकियत हैं। 34लेकिन जो ज़मीनें शहरों के इर्दगिर्द मवेशी चराने के लिए मुक़र्रर हैं उन्हें बेचने की इजाज़त नहीं है। वह उनकी दायमी मिलकियत हैं।

ग़रीबों के लिए क़र्ज़ा

35अगर तेरा कोई हमवतन भाई ग़रीब हो जाए और गुज़ारा न कर सके तो उस की मदद कर। उस तरह उस की मदद करना जिस तरह परदेसी या ग़ैरशहरी की मदद करनी होती है ताकि वह तेरे साथ रहते हुए ज़िंदगी गुज़ार सके। 36उससे किसी तरह का सूद न लेना बल्कि अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना ताकि तेरा भाई तेरे साथ ज़िंदगी गुज़ार सके। 37अगर वह तेरा क़र्ज़दार हो तो उससे सूद न लेना। इसी तरह ख़ुराक बेचते वक़्त

उससे नफ़ा न लेना। 38मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। मैं तुम्हें इसलिए मिसर से निकाल लाया कि तुम्हें मुल्के-कनान दूँ और तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

इसराईली ग़ुलामों के हुक़ूक़

39अगर तेरा कोई इसराईली भाई ग़रीब होकर अपने आपको तेरे हाथ बेच डाले तो उससे ग़ुलाम का-सा काम न कराना। 40उसके साथ मज़दूर या ग़ैरशहरी का-सा सुलूक करना। वह तेरे लिए बहाली के साल तक काम करे। 41फिर वह और उसके बाल-बच्चे आज़ाद होकर अपने रिश्तेदारों और मौरूसी ज़मीन के पास वापस जाएँ। 42चूँकि इसराईली मेरे ख़ादिम हैं जिन्हें मैं मिसर से निकाल लाया इसलिए उन्हें ग़ुलामी में न बेचा जाए। 43ऐसे लोगों पर सख़्ती से हुक्मरानी न करना बल्कि अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना।

44तुम पड़ोसी ममालिक से अपने लिए ग़ुलाम और लौंडियाँ हासिल कर सकते हो। 45जो परदेसी ग़ैरशहरी के तौर पर तुम्हारे मुल्क में आबाद हैं उन्हें भी तुम ख़रीद सकते हो। उनमें वह भी शामिल हैं जो तुम्हारे मुल्क में पैदा हुए हैं। वही तुम्हारी मिलकियत बनकर 46तुम्हारे बेटों की मीरास में आ जाएँ और वही हमेशा तुम्हारे ग़ुलाम रहें। लेकिन अपने हमवतन भाइयों पर सख़्त हुक्मरानी न करना।

47अगर तेरे मुल्क में रहनेवाला कोई परदेसी या ग़ैरशहरी अमीर हो जाए जबकि तेरा कोई हमवतन भाई ग़रीब होकर अपने आपको उस परदेसी या ग़ैरशहरी या उसके ख़ानदान के किसी फ़रद को बेच डाले 48तो बिक जाने के बाद उसे आज़ादी ख़रीदने का हक़ हासिल है। कोई भाई, 49चचा, ताया, चचा या ताया का बेटा या कोई और क़रीबी रिश्तेदार उसे वापस ख़रीद सकता है। वह ख़ुद भी अपनी आज़ादी ख़रीद सकता है अगर उसके पास पैसे काफ़ी हों। 50इस सूरत में वह अपने मालिक से मिलकर वह साल गिने जो उसके ख़रीदने से लेकर अगले बहाली के साल तक बाक़ी हैं। उस की आज़ादी के पैसे उस क़ीमत पर मबनी हों जो मज़दूर को इतने सालों के लिए दिए जाते हैं। 51-52जितने साल बाक़ी रह गए हैं उनके मुताबिक़ उस की बिक जाने की क़ीमत में से पैसे वापस कर दिए जाएँ। 53उसके साथ साल बसाल मज़दूर का-सा सुलूक किया जाए। उसका मालिक उस पर सख़्त हुक्मरानी न करे। 54अगर वह इस तरह के किसी तरीक़े से आज़ाद न हो जाए तो उसे और उसके बच्चों को हर हालत में अगले बहाली के साल में आज़ाद कर देना है, 55क्योंकि इसराईली मेरे ही ख़ादिम हैं। वह मेरे ही ख़ादिम हैं जिन्हें मैं मिसर से निकाल लाया। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

फ़रमाँबरदारी का अज्र

26 अपने लिए बुत न बनाना। न अपने लिए देवता के मुजस्समे या पत्थर के मख़सूस किए हुए सतून खड़े करना, न सिजदा करने के लिए अपने मुल्क में ऐसे पत्थर रखना जिनमें देवता की तस्वीर कंदा की गई हो। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। 2सबत का दिन मनाना और मेरे मक़दिस की ताज़ीम करना। मैं रब हूँ।

3अगर तुम मेरी हिदायात पर चलो और मेरे अहकाम मानकर उन पर अमल करो 4तो मैं वक़्त पर बारिश भेजूँगा, ज़मीन अपनी पैदावार देगी और दरख़्त अपने अपने फल लाएँगे। 5कसरत के बाइस अनाज की फ़सल की कटाई अंगूर तोड़ते वक़्त तक जारी रहेगी और अंगूर की फ़सल उस वक़्त तक तोड़ी जाएगी जब तक बीज बोने का मौसम आएगा। इतनी ख़ुराक मिलेगी कि तुम कभी भूके नहीं होगे। और तुम अपने मुल्क में महफ़ूज़ रहोगे।

6मैं मुल्क को अमनो-अमान बख़्शूँगा। तुम आराम से लेट जाओगे, क्योंकि किसी ख़तरे से डरने की ज़रूरत नहीं होगी। मैं वहशी जानवर मुल्क से दूर कर दूँगा, और वह तलवार की क़त्लो-ग़ारत से बचा रहेगा। 7तुम अपने दुश्मनों पर ग़ालिब आकर उनका ताक़्क़ुब करोगे, और वह तुम्हारी तलवार से मारे जाएंगे। 8तुम्हारे पाँच

आदमी सौ दुश्मनों का पीछा करेंगे, और तुम्हारे सौ आदमी उनके दस हज़ार आदमियों को भगा देंगे। तुम्हारे दुश्मन तुम्हारी तलवार से मारे जाएंगे।

9मेरी नज़रे-करम तुम पर होगी। मैं तुम्हारी औलाद की तादाद बढ़ाऊँगा और तुम्हारे साथ अपना अहद क़ायम रखूँगा। 10एक साल इतनी फ़सल होगी कि जब अगली फ़सल की कटाई होगी तो नए अनाज के लिए जगह बनाने की ख़ातिर पुराने अनाज को फेंक देना पड़ेगा। 11मैं तुम्हारे दरमियान अपना मसकन क़ायम करूँगा और तुमसे घिन नहीं खाऊँगा। 12मैं तुममें फिरूँगा, और तुम मेरी क़ौम होगे।

13मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ जो तुम्हें मिसर से निकाल लाया ताकि तुम्हारी ग़ुलामी की हालत ख़त्म हो जाए। मैंने तुम्हारे जुए को तोड़ डाला, और अब तुम आज़ाद और सीधे होकर चल सकते हो।

फ़रमाँबरदार न होने की सज़ा

14लेकिन अगर तुम मेरी नहीं सुनोगे और इन तमाम अहकाम पर नहीं चलोगे, 15अगर तुम मेरी हिदायात को रद्द करके मेरे अहकाम से घिन खाओगे और उन पर अमल न करके मेरा अहद तोड़ोगे 16तो मैं जवाब में तुम पर अचानक दहशत तारी कर दूँगा। जिस्म को ख़त्म करनेवाली बीमारियों और बुख़ार से तुम्हारी आँखें ज़ाया हो जाएँगी और तुम्हारी जान छिन जाएगी। जब तुम बीज बोओगे तो बेफ़ायदा, क्योंकि दुश्मन उस की फ़सल खा जाएगा। 17मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ हो जाऊँगा, इसलिए तुम अपने दुश्मनों के हाथ से शिकस्त खाओगे। तुमसे नफ़रत रखनेवाले तुम पर हुकूमत करेंगे। उस वक़्त भी जब कोई तुम्हारा ताक़्क़ुब नहीं करेगा तुम भाग जाओगे।

18अगर तुम इसके बाद भी मेरी न सुनो तो मैं तुम्हारे गुनाहों के सबब से तुम्हें सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा। 19मैं तुम्हारा सख़्त ग़ुरूर ख़ाक में मिला दूँगा। तुम्हारे ऊपर आसमान लोहे जैसा और तुम्हारे नीचे ज़मीन पीतल जैसी होगी। 20जितनी भी मेहनत करोगे वह बेफ़ायदा होगी, क्योंकि तुम्हारे खेतों में फ़सलें नहीं पकेंगी और तुम्हारे दरख़्त फल नहीं लाएँगे।

21अगर तुम फिर भी मेरी मुख़ालफ़त करोगे और मेरी नहीं सुनोगे तो मैं इन गुनाहों के जवाब में तुम्हें इससे भी सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा। 22मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ जंगली जानवर भेज दूँगा जो तुम्हारे बच्चों को फाड़ खाएँगे और तुम्हारे मवेशी बरबाद कर देंगे। आख़िर में तुम्हारी तादाद इतनी कम हो जाएगी कि तुम्हारी सड़कें वीरान हो जाएँगी।

23अगर तुम फिर भी मेरी तरबियत क़बूल न करो बल्कि मेरे मुख़ालिफ़ रहो 24तो मैं ख़ुद तुम्हारे ख़िलाफ़ हो जाऊँगा। इन गुनाहों के जवाब में मैं तुम्हें सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा। 25मैं तुम पर तलवार चलाकर इसका बदला लूँगा कि तुमने मेरे अहद को तोड़ा है। जब तुम अपनी हिफ़ाज़त के लिए शहरों में भागकर जमा होगे तो मैं तुम्हारे दरमियान वबाई बीमारियाँ फैलाऊँगा और तुम्हें दुश्मनों के हाथ में दे दूँगा। 26अनाज की इतनी कमी होगी कि दस औरतें तुम्हारी पूरी रोटी एक ही तनूर में पका सकेंगी, और वह उसे बड़ी एहतियात से तोल तोलकर तक़सीम करेंगी। तुम खाकर भी भूके रहोगे।

27अगर तुम फिर भी मेरी नहीं सुनोगे बल्कि मेरे मुख़ालिफ़ रहोगे 28तो मेरा ग़ुस्सा भड़केगा और मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ होकर तुम्हारे गुनाहों के जवाब में तुम्हें सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा। 29तुम मुसीबत के बाइस अपने बेटे-बेटियों का गोश्त खाओगे। 30मैं तुम्हारी ऊँची जगहों की क़ुरबानगाहें और तुम्हारी बख़ूर की क़ुरबानगाहें बरबाद कर दूँगा। मैं तुम्हारी लाशों के ढेर तुम्हारे बेजान बुतों पर लगाऊँगा और तुमसे घिन खाऊँगा। 31मैं तुम्हारे शहरों को खंडरात में बदलकर तुम्हारे मंदिरों को बरबाद करूँगा। तुम्हारी क़ुरबानियों की ख़ुशबू मुझे पसंद नहीं आएगी। 32मैं तुम्हारे मुल्क का सत्यानास यों करूँगा कि जो दुश्मन उसमें आबाद हो जाएंगे उनके रोंगटे खड़े हो जाएंगे। 33मैं तुम्हें

मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुंतशिर कर दूँगा, लेकिन वहाँ भी अपनी तलवार को हाथ में लिए तुम्हारा पीछा करूँगा। तुम्हारी ज़मीन वीरान होगी और तुम्हारे शहर खंडरात बन जाएंगे। 34उस वक़्त जब तुम अपने दुश्मनों के मुल्क में रहोगे तुम्हारी ज़मीन वीरान हालत में आराम के वह साल मना सकेगी जिनसे वह महरूम रही है। 35उन तमाम दिनों में जब वह बरबाद रहेगी उसे वह आराम मिलेगा जो उसे न मिला जब तुम मुल्क में रहते थे।

36तुममें से जो बचकर अपने दुश्मनों के ममालिक में रहेंगे उनके दिलों पर मैं दहशत तारी करूँगा। वह हवा के झोंकों से गिरनेवाले पत्ते की आवाज़ से चौंककर भाग जाएंगे। वह फ़रार होंगे गोया कोई हाथ में तलवार लिए उनका ताक़्क़ुब कर रहा हो। और वह गिरकर मर जाएंगे हालाँकि कोई उनका पीछा नहीं कर रहा होगा। 37वह एक दूसरे से टकराकर लड़खड़ाएँगे गोया कोई तलवार लेकर उनके पीछे चल रहा हो हालाँकि कोई नहीं है। चुनाँचे तुम अपने दुश्मनों का सामना नहीं कर सकोगे। 38तुम दीगर क़ौमों में मुंतशिर होकर हलाक हो जाओगे, और तुम्हारे दुश्मनों की ज़मीन तुम्हें हड़प कर लेगी।

39तुममें से बाक़ी लोग अपने और अपने बापदादा के क़ुसूर के बाइस अपने दुश्मनों के ममालिक में गल-सड़ जाएंगे। 40लेकिन एक वक़्त आएगा कि वह अपने और अपने बापदादा का क़ुसूर मान लेंगे। वह मेरे साथ अपनी बेवफ़ाई और वह मुख़ालफ़त तसलीम करेंगे 41जिसके सबब से मैं उनके ख़िलाफ़ हुआ और उन्हें उनके दुश्मनों के मुल्क में धकेल दिया था। पहले उनका ख़तना सिर्फ़ ज़ाहिरी तौर पर हुआ था, लेकिन अब उनका दिल आजिज़ हो जाएगा और वह अपने क़ुसूर की क़ीमत अदा करेंगे। 42फिर मैं इब्राहीम के साथ अपना अहद, इसहाक़ के साथ अपना अहद और याक़ूब के साथ अपना अहद याद करूँगा। मैं मुल्के-कनान भी याद करूँगा। 43लेकिन पहले वह ज़मीन को छोड़ेंगे ताकि वह उनकी ग़ैरमौजूदगी में वीरान होकर आराम के साल मनाए। यों इसराईली अपने क़ुसूर के नतीजे भुगतेंगे, इस सबब से कि उन्होंने मेरे अहकाम रद्द किए और मेरी हिदायात से घिन खाई। 44इसके बावुजूद भी मैं उन्हें दुश्मनों के मुल्क में छोड़कर रद्द नहीं करूँगा, न यहाँ तक उनसे घिन खाऊँगा कि वह बिलकुल तबाह हो जाएँ। क्योंकि मैं उनके साथ अपना अहद नहीं तोड़ने का। मैं रब उनका ख़ुदा हूँ। 45मैं उनकी ख़ातिर उनके बापदादा के साथ बँधा हुआ अहद याद करूँगा, उन लोगों के साथ अहद जिन्हें मैं दूसरी क़ौमों के देखते देखते मिसर से निकाल लाया ताकि उनका ख़ुदा हूँ। मैं रब हूँ।”

46रब ने मूसा को इसराईलियों के लिए यह तमाम हिदायात और अहकाम सीना पहाड़ पर दिए।

मख़सूस की हुई चीज़ों की वापसी

27 रब ने मूसा से कहा, 2“इसराईलियों को बताना कि अगर किसी ने मन्नत मानकर किसी को रब के लिए मख़सूस किया हो तो वह उसे ज़ैल की रक़म देकर आज़ाद कर सकता है (मुस्तामल सिक्के मक़दिस के सिक्कों के बराबर हों) : 3उस आदमी के लिए जिसकी उम्र 20 और 60 साल के दरमियान है चाँदी के 50 सिक्के, 4इसी उम्र की औरत के लिए चाँदी के 30 सिक्के, 5उस लड़के के लिए जिसकी उम्र 5 और 20 साल के दरमियान हो चाँदी के 20 सिक्के, इसी उम्र की लड़की के लिए चाँदी के 10 सिक्के, 6एक माह से लेकर 5 साल तक के लड़के के लिए चाँदी के 5 सिक्के, इसी उम्र की लड़की के लिए चाँदी के 3 सिक्के, 7साठ साल से बड़े आदमी के लिए चाँदी के 15 सिक्के और इसी उम्र की औरत के लिए चाँदी के 10 सिक्के।

8अगर मन्नत माननेवाला मुक़र्ररा रक़म अदा न कर सके तो वह मख़सूस किए हुए शख़्स को इमाम के पास ले आए। फिर इमाम ऐसी रक़म मुक़र्रर करे जो मन्नत माननेवाला अदा कर सके।

9अगर किसी ने मन्नत मानकर ऐसा जान-
वर मख़सूस किया जो रब की क़ुरबानियों के
लिए इस्तेमाल हो सकता है तो ऐसा जानवर
मख़सूसो-मुक़द्दस हो जाता है। 10वह उसे बदल
नहीं सकता। न वह अच्छे जानवर की जगह
नाक़िस, न नाक़िस जानवर की जगह अच्छा
जानवर दे। अगर वह एक जानवर दूसरे की जगह
दे तो दोनों मख़सूसो-मुक़द्दस हो जाते हैं।
11अगर किसी ने मन्नत मानकर कोई नापाक
जानवर मख़सूस किया जो रब की क़ुरबानियों
के लिए इस्तेमाल नहीं हो सकता तो वह उसको
इमाम के पास ले आए। 12इमाम उस की रक़म
उस की अच्छी और बुरी सिफ़्तों का लिहाज़ करके
मुक़र्ररर करे। इस मुक़र्ररा क़ीमत में कमी बेशी नहीं
हो सकती। 13अगर मन्नत माननेवाला उसे वापस
ख़रीदना चाहे तो वह मुक़र्ररा क़ीमत जमा 20
फ़ीसद अदा करे।
14अगर कोई अपना घर रब के लिए मख़सूसो-
मुक़द्दस करे तो इमाम उस की अच्छी और बुरी
सिफ़्तों का लिहाज़ करके उस की रक़म मुक़र्ररर
करे। इस मुक़र्ररा क़ीमत में कमी बेशी नहीं हो
सकती। 15अगर घर को मख़सूस करनेवाला उसे
वापस ख़रीदना चाहे तो वह मुक़र्ररा रक़म जमा
20 फ़ीसद अदा करे।
16अगर कोई अपनी मौरूसी ज़मीन में से कुछ
रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करे तो उस की
क़ीमत उस बीज की मिक़दार के मुताबिक़ मुक़र्ररर
की जाए जो उसमें बोना होता है। जिस खेत में
135 किलोग्राम जौ का बीज बोया जाए उस
की क़ीमत चाँदी के 50 सिक्के होगी। 17शर्त
यह है कि वह अपनी ज़मीन बहाली के साल
के ऐन बाद मख़सूस करे। फिर उस की यही
क़ीमत मुक़र्ररर की जाए। 18अगर ज़मीन का
मालिक उसे बहाली के साल के कुछ देर बाद
मख़सूस करे तो इमाम अगले बहाली के साल तक
रहनेवाले सालों के मुताबिक़ ज़मीन की क़ीमत
मुक़र्ररर करे। जितने कम साल बाक़ी हैं उतनी
कम उस की क़ीमत होगी। 19अगर मख़सूस
करनेवाला अपनी ज़मीन वापस ख़रीदना चाहे तो
वह मुक़र्ररा क़ीमत जमा 20 फ़ीसद अदा करे।
20अगर मख़सूस करनेवाला अपनी ज़मीन को
रब से वापस ख़रीदे बग़ैर उसे किसी और को बेचे
तो उसे वापस ख़रीदने का हक़ ख़त्म हो जाएगा।
21अगले बहाली के साल यह ज़मीन मख़सूसो-
मुक़द्दस रहेगी और रब की दायमी मिलकियत हो
जाएगी। चुनाँचे वह इमाम की मिलकियत होगी।
22अगर कोई अपना मौरूसी खेत नहीं बल्कि
अपना ख़रीदा हुआ खेत रब के लिए मख़सूस करे
23तो इमाम अगले बहाली के साल तक रहनेवाले
सालों का लिहाज़ करके उस की क़ीमत मुक़र्ररर
करे। खेत का मालिक उसी दिन उसके पैसे अदा
करे। यह पैसे रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस होंगे।
24बहाली के साल में यह खेत उस शख़्स के पास
वापस आएगा जिसने उसे बेचा था।
25वापस ख़रीदने के लिए मुस्तामल सिक्के
मक़दिस के सिक्कों के बराबर हों। उसके चाँदी
के सिक्कों का वज़न 11 ग्राम है।
26लेकिन कोई भी किसी मवेशी का पहलौठा
रब के लिए मख़सूस नहीं कर सकता। वह तो
पहले से रब के लिए मख़सूस है। इसमें कोई
फ़रक़ नहीं कि वह गाय, बैल या भेड़ हो। 27अगर
उसने कोई नापाक जानवर मख़सूस किया हो तो
वह उसे मुक़र्ररा क़ीमत जमा 20 फ़ीसद के लिए
वापस ख़रीद सकता है। अगर वह उसे वापस न
ख़रीदे तो वह मुक़र्ररा क़ीमत के लिए बेचा जाए।
28लेकिन अगर किसी ने अपनी मिल-
कियत में से कुछ ग़ैरमशरूत तौर पर रब के लिए
मख़सूस किया है तो उसे बेचा या वापस नहीं
ख़रीदा जा सकता, ख़ाह वह इनसान, जानवर
या ज़मीन हो। जो इस तरह मख़सूस किया गया
हो वह रब के लिए निहायत मुक़द्दस है। 29इसी
तरह जिस शख़्स को तबाही के लिए मख़सूस
किया गया है उसका फ़िद्या नहीं दिया जा सकता।
लाज़िम है कि उसे सज़ाए-मौत दी जाए।
30हर फ़सल का दसवाँ हिस्सा रब का है,
चाहे वह अनाज हो या फल। वह रब के लिए

मख़सूसो-मुक़द्दस है। 31अगर कोई अपनी फ़सल
का दसवाँ हिस्सा छुड़ाना चाहता है तो वह इसके
लिए उस की मुक़र्ररा क़ीमत जमा 20 फ़ीसद
दे। 32इसी तरह गाय-बैलों और भेड़-बकरियों का
दसवाँ हिस्सा भी रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस
है, हर दसवाँ जानवर जो गल्लाबान के डंडे के नीचे
से गुज़रेगा। 33यह जानवर चुनने से पहले उनका
मुआयना न किया जाए कि कौन-से जानवर अच्छे
या कमज़ोर हैं। यह भी न करना कि दसवें हिस्से
के किसी जानवर के बदले कोई और जानवर दिया
जाए। अगर फिर भी उसे बदला जाए तो दोनों
जानवर रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस होंगे। और
उन्हें वापस ख़रीदा नहीं जा सकता।”

34यह वह अहकाम हैं जो रब ने सीना पहाड़
पर मूसा को इसराईलियों के लिए दिए।

गिनती

इसराईलियों की पहली मर्दुमशुमारी

1 इसराईलियों को मिसर से निकले हुए एक
साल से ज़्यादा अरसा गुज़र गया था। अब
तक वह दश्ते-सीना में थे। दूसरे साल के दूसरे
महीने के पहले दिन रब मुलाक़ात के ख़ैमे में मूसा
से हमकलाम हुआ। उसने कहा,
2 “तू और हारून तमाम इसराईलियों की
मर्दुमशुमारी कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़
करना। उन तमाम मर्दों की फ़हरिस्त बनाना 3 जो
कम अज़ कम बीस साल के और जंग लड़ने के
क़ाबिल हों। 4 इसमें हर क़बीले के एक ख़ानदान
का सरपरस्त तुम्हारी मदद करे। 5 यह उनके नाम
हैं :
रूबिन के क़बीले से इलीसूर बिन शदियूर,
6 शमाऊन के क़बीले से सलूमियेल बिन
सूरीशद्दी,
7 यहूदाह के क़बीले से नहसोन बिन
अम्मीनदाब,
8 इशकार के क़बीले से नतनियेल बिन ज़ुग़र,
9 ज़बूलून के क़बीले से इलियाब बिन हेलोन,
10 यूसुफ़ के बेटे इफ़राईम के क़बीले से
इलीसमा बिन अम्मीहूद,
यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के क़बीले से जमलियेल
बिन फ़दाहसूर,
11 बिनयमीन के क़बीले से अबिदान बिन
जिदाऊनी,
12 दान के क़बीले से अख़ियज़र बिन
अम्मीशद्दी,
13 आशर के क़बीले से फ़जियेल बिन अकरान,
14 जद के क़बीले से इलियासफ़ बिन दऊएल,
15 नफ़ताली के क़बीले से अख़ीरा बिन
एनान।”
16 यही मर्द जमात से इस काम के लिए बुलाए
गए। वह अपने क़बीलों के राहनुमा और कुंबों के
सरपरस्त थे। 17 इनकी मदद से मूसा और हारून
ने 18 उसी दिन पूरी जमात को इकट्ठा किया। हर
इसराईली मर्द जो कम अज़ कम 20 साल का था
रजिस्टर में दर्ज किया गया। रजिस्टर की तरतीब
उनके कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़ थी।
19 सब कुछ वैसा ही किया गया जैसा रब ने
हुक्म दिया था। मूसा ने सीना के रेगिस्तान में लोगों
की मर्दुमशुमारी की। नतीजा यह निकला :
20-21 रूबिन के क़बीले के 46,500 मर्द,
22-23 शमाऊन के क़बीले के 59,300 मर्द,
24-25 जद के क़बीले के 45,650 मर्द,
26-27 यहूदाह के क़बीले के 74,600 मर्द,
28-29 इशकार के क़बीले के 54,400 मर्द,
30-31 ज़बूलून के क़बीले के 57,400 मर्द,
32-33 यूसुफ़ के बेटे इफ़राईम के क़बीले के
40,500 मर्द,
34-35 यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के क़बीले के
32,200 मर्द,
36-37 बिनयमीन के क़बीले के 35,400 मर्द,

38-39दान के क़बीले के 62,700 मर्द,
40-41आशर के क़बीले के 41,500 मर्द,
42-43नफ़ताली के क़बीले के 53,400 मर्द।
44मूसा, हारून और क़बीलों के बारह
राहनुमाओं ने इन तमाम आदमियों को गिना।
45-46उनकी पूरी तादाद 6,03,550 थी।
47लेकिन लावियों की मर्दुमशुमारी न
हुई, 48क्योंकि रब ने मूसा से कहा था,
49"इसराईलियों की मर्दुमशुमारी में लावियों
को शामिल न करना। 50इसके बजाए उन्हें
शरीअत की सुकूनतगाह और उसका सारा
सामान सँभालने की ज़िम्मेदारी देना। वह सफ़र
करते वक़्त यह ख़ैमा और उसका सारा सामान
उठाकर ले जाएँ, उस की ख़िदमत के लिए हाज़िर
रहें और रुकते वक़्त उसे अपने ख़ैमों से घेरे
रखें। 51रवाना होते वक़्त वही ख़ैमे को समेटें
और रुकते वक़्त वही उसे लगाएँ। अगर कोई
और उसके क़रीब आए तो उसे सज़ाए-मौत दी
जाएगी। 52बाक़ी इसराईली ख़ैमागाह में अपने
अपने दस्ते के मुताबिक़ और अपने अपने अलम
के इर्दगिर्द अपने ख़ैमे लगाएँ। 53लेकिन लावी
अपने ख़ैमों से शरीअत की सुकूनतगाह को घेर लें
ताकि मेरा ग़ज़ब किसी ग़लत शख़्स के नज़दीक
आने से इसराईलियों की जमात पर नाज़िल न हो
जाए। यों लावियों को शरीअत की सुकूनतगाह
को सँभालना है।"
54इसराईलियों ने वैसा ही किया जैसा रब ने
मूसा को हुक्म दिया था।

ख़ैमागाह में क़बीलों की तरतीब

2 रब ने मूसा और हारून से कहा 2कि
इसराईली अपने ख़ैमे कुछ फ़ासले पर
मुलाक़ात के ख़ैमे के इर्दगिर्द लगाएँ। हर एक
अपने अपने अलम और अपने अपने आबाई घराने
के निशान के साथ ख़ैमाज़न हो।
3इन हिदायात के मुताबिक़ मक़दिस के
मशरिक़ में यहूदाह का अलम था जिसके
इर्दगिर्द तीन दस्ते ख़ैमाज़न थे। पहले, यहू-
दाह का क़बीला जिसका कमाँडर नहसोन
बिन अम्मीनदाब था, 4और जिसके लशकर
के 74,600 फ़ौजी थे। 5दूसरे, इशकार का
क़बीला जिसका कमाँडर नतनियेल बिन ज़ुग़र
था, 6और जिसके लशकर के 54,400 फ़ौजी
थे। 7तीसरे, ज़बूलून का क़बीला जिसका कमाँडर
इलियाब बिन हेलोन था 8और जिसके लशकर के
57,400 फ़ौजी थे। 9तीनों क़बीलों के फ़ौजियों
की कुल तादाद 1,86,400 थी। रवाना होते
वक़्त यह आगे चलते थे।
10मक़दिस के जुनूब में रूबिन का अलम था
जिसके इर्दगिर्द तीन दस्ते ख़ैमाज़न थे। पहले,
रूबिन का क़बीला जिसका कमाँडर इलीसूर बिन
शदियूर था, 11और जिसके 46,500 फ़ौजी थे।
12दूसरे, शमाऊन का क़बीला जिसका कमाँडर
सलूमियेल बिन सूरीशद्दी था, 13और जिसके
59,300 फ़ौजी थे। 14तीसरे, जद का क़बीला
जिसका कमाँडर इलियासफ़ बिन दऊएल था,
15और जिसके 45,650 फ़ौजी थे। 16तीनों
क़बीलों के फ़ौजियों की कुल तादाद 1,51,450
थी। रवाना होते वक़्त यह मशरिक़ी क़बीलों के
पीछे चलते थे।
17इन जुनूबी क़बीलों के बाद लावी मुलाक़ात
का ख़ैमा उठाकर क़बीलों के ऐन बीच में चलते
थे। क़बीले उस तरतीब से रवाना होते थे जिस
तरतीब से वह अपने ख़ैमे लगाते थे। हर क़बीला
अपने अलम के पीछे चलता था।
18मक़दिस के मग़रिब में इफ़राईम का अलम
था जिसके इर्दगिर्द तीन दस्ते ख़ैमाज़न थे। पहले,
इफ़राईम का क़बीला जिसका कमाँडर इलीसमा
बिन अम्मीहूद था, 19और जिसके 40,500
फ़ौजी थे। 20दूसरे, मनस्सी का क़बीला जिसका
कमाँडर जमलियेल बिन फ़दाहसूर था, 21और
जिसके 32,200 फ़ौजी थे। 22तीसरे, बिनयमीन
का क़बीला जिसका कमाँडर अबिदान बिन
जिदाऊनी था, 23और जिसके 35,400 फ़ौजी
थे। 24तीनों क़बीलों के फ़ौजियों की कुल तादाद

1,08,100 थी। रवाना होते वक़्त यह जुनूबी क़बीलों के पीछे चलते थे।

25मक़दिस के शिमाल में दान का अलम था जिसके इर्दगिर्द तीन दस्ते ख़ैमाज़न थे। पहले, दान का क़बीला जिसका कमाँडर अख़ियज़र बिन अम्मीशद्दी था, 26और जिसके 62,700 फ़ौजी थे। 27दूसरे, आशर का क़बीला जिसका कमाँडर फ़जियेल बिन अकरान था, 28और जिसके 41,500 फ़ौजी थे। 29तीसरे, नफ़ताली का क़बीला जिसका कमाँडर अख़ीरा बिन एनान था, 30और जिसके 53,400 फ़ौजी थे। 31तीनों क़बीलों की कुल तादाद 1,57,600 थी। वह आख़िर में अपना अलम उठाकर रवाना होते थे।

32पूरी ख़ैमागाह के फ़ौजियों की कुल तादाद 6,03,550 थी। 33सिर्फ़ लावी इस तादाद में शामिल नहीं थे, क्योंकि रब ने मूसा को हुक्म दिया था कि उनकी भरती न की जाए।

34यों इसराईलियों ने सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ किया जो रब ने मूसा को दी थीं। उनके मुताबिक़ ही वह अपने झंडों के इर्दगिर्द अपने ख़ैमे लगाते थे और उनके मुताबिक़ ही अपने कुंबों और आबाई घरानों के साथ रवाना होते थे।

हारून के बेटे

3 यह हारून और मूसा के ख़ानदान का बयान है। उस वक़्त का ज़िक्र है जब रब ने सीना पहाड़ पर मूसा से बात की। 2हारून के चार बेटे थे। बड़ा बेटा नदब था, फिर अबीहू, इलियज़र और इतमर। 3यह इमाम थे जिनको मसह करके इस ख़िदमत का इख़्तियार दिया गया था। 4लेकिन नदब और अबीहू उस वक़्त मर गए जब उन्होंने दश्ते-सीना में रब के हुज़ूर नाजायज़ आग पेश की। चूँकि वह बेऔलाद थे इसलिए हारून के जीते-जी सिर्फ़ इलियज़र और इतमर इमाम की ख़िदमत सरंजाम देते थे।

लावियों की मक़दिस में ज़िम्मेदारी

5रब ने मूसा से कहा, 6“लावी के क़बीले को लाकर हारून की ख़िदमत करने की ज़िम्मेदारी दे। 7उन्हें उसके लिए और पूरी जमात के लिए मुलाक़ात के ख़ैमे की ख़िदमात सँभालना है। 8वह मुलाक़ात के ख़ैमे का सामान सँभालें और तमाम इसराईलियों के लिए मक़दिस के फ़रायज़ अदा करें। 9तमाम इसराईलियों में से सिर्फ़ लावियों को हारून और उसके बेटों की ख़िदमत के लिए मुक़र्रर कर। 10लेकिन सिर्फ़ हारून और उसके बेटों को इमाम की हैसियत हासिल है। जो भी बाक़ियों में से उनकी ज़िम्मेदारियाँ उठाने की कोशिश करेगा उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी।”

11रब ने मूसा से यह भी कहा, 12“मैंने इसराईलियों में से लावियों को चुन लिया है। वह तमाम इसराईली पहलौठों के एवज़ मेरे लिए मख़सूस हैं, 13क्योंकि तमाम पहलौठे मेरे ही हैं। जिस दिन मैंने मिसर में तमाम पहलौठों को मार दिया उस दिन मैंने इसराईल के पहलौठों को अपने लिए मख़सूस किया, ख़ाह वह इनसान के थे या हैवान के। वह मेरे ही हैं। मैं रब हूँ।”

लावियों की मर्दुमशुमारी

14रब ने सीना के रेगिस्तान में मूसा से कहा, 15“लावियों को गिनकर उनके आबाई घरानों और कुंबों के मुताबिक़ रजिस्टर में दर्ज करना। हर बेटे को गिनना है जो एक माह या इससे ज़ायद का है।” 16मूसा ने ऐसा ही किया।

17लावी के तीन बेटे जैरसोन, क़िहात और मिरारी थे। 18जैरसोन के दो कुंबे उसके बेटों लिबनी और सिमई के नाम रखते थे। 19क़िहात के चार कुंबे उसके बेटों अमराम, इज़हार, हबरून और उज़्ज़ियेल के नाम रखते थे। 20मिरारी के दो कुंबे उसके बेटों महली और मूशी के नाम रखते थे। ग़रज़ लावी के क़बीले के कुंबे उसके पोतों के नाम रखते थे।

21जैरसोन के दो कुंबों बनाम लिबनी और सिमई 22के 7,500 मर्द थे जो एक माह या

इससे ज़ायद के थे। 23उन्हें अपने ख़ैमे मग़रिब
में मक़दिस के पीछे लगाने थे। 24उनका राहनुमा
इलियासफ़ बिन लाएल था, 25और वह ख़ैमे
को सँभालते थे यानी उस की पोशिशें, ख़ैमे के
दरवाज़े का परदा, 26ख़ैमे और क़ुरबानगाह की
चारदीवारी के परदे, चारदीवारी के दरवाज़े का
परदा और तमाम रस्से। इन चीज़ों से मुताल्लिक़
सारी ख़िदमत उनकी ज़िम्मेदारी थी।

27क़िहात के चार कुंबों बनाम अमराम,
इज़हार, हबरून और उज़्ज़ियेल 28के 8,600
मर्द थे जो एक माह या इससे ज़ायद के थे
और जिनको मक़दिस की ख़िदमत करनी थी।
29उन्हें अपने डेरे मक़दिस के जुनूब में डालने थे।
30उनका राहनुमा इलीसफ़न बिन उज़्ज़ियेल था,
31और वह यह चीज़ें सँभालते थे : अहद का
संदूक़, मेज़, शमादान, क़ुरबानगाहें, वह बरतन
और साज़ो-सामान जो मक़दिस में इस्तेमाल होता
था और मुक़द्दसतरीन कमरे का परदा। इन चीज़ों
से मुताल्लिक़ सारी ख़िदमत उनकी ज़िम्मेदारी
थी। 32हारून इमाम का बेटा इलियज़र लावियों के
तमाम राहनुमाओं पर मुक़र्रर था। वह उन तमाम
लोगों का इंचार्ज था जो मक़दिस की देख-भाल
करते थे।

33मिरारी के दो कुंबों बनाम महली और मूशी
34के 6,200 मर्द थे जो एक माह या इससे ज़ायद
के थे। 35उनका राहनुमा सूरियेल बिन अबीख़ैल
था। उन्हें अपने डेरे मक़दिस के शिमाल में डालने
थे, 36और वह यह चीज़ें सँभालते थे : ख़ैमे के
तख़्ते, उसके शहतीर, खंबे, पाए और इस तरह
का सारा सामान। इन चीज़ों से मुताल्लिक़ सारी
ख़िदमत उनकी ज़िम्मेदारी थी। 37वह चारदीवारी
के खंबे, पाए, मेख़ें और रस्से भी सँभालते थे।

38मूसा, हारून और उनके बेटों को अपने
डेरे मशरिक़ में मक़दिस के सामने डालने थे।
उनकी ज़िम्मेदारी मक़दिस में बनी इसराईल के
लिए ख़िदमत करना थी। उनके अलावा जो भी
मक़दिस में दाख़िल होने की कोशिश करता उसे
सज़ाए-मौत देनी थी।

39उन लावी मर्दों की कुल तादाद जो एक माह
या इससे ज़ायद के थे 22,000 थी। रब के कहने
पर मूसा और हारून ने उन्हें कुंबों के मुताबिक़
गिनकर रजिस्टर में दर्ज किया।

लावी के क़बीले के मर्द पहलौठों के एवज़ी हैं

40रब ने मूसा से कहा, “तमाम इसराईली
पहलौठों को गिनना जो एक माह या इससे ज़ायद
के हैं और उनके नाम रजिस्टर में दर्ज करना।
41उन तमाम पहलौठों की जगह लावियों को मेरे
लिए मख़सूस करना। इसी तरह इसराईलियों के
मवेशियों के पहलौठों की जगह लावियों के मवेशी
मेरे लिए मख़सूस करना। मैं रब हूँ।” 42मूसा
ने ऐसा ही किया जैसा रब ने उसे हुक्म दिया।
उसने तमाम इसराईली पहलौठे 43जो एक माह
या इससे ज़ायद के थे गिन लिए। उनकी कुल
तादाद 22,273 थी।

44रब ने मूसा से कहा, 45“मुझे तमाम
इसराईली पहलौठों की जगह लावियों को पेश
करना। इसी तरह मुझे इसराईलियों के मवेशियों
की जगह लावियों के मवेशी पेश करना। लावी
मेरे ही हैं। मैं रब हूँ। 46लावियों की निसबत बाक़ी
इसराईलियों के 273 पहलौठे ज़्यादा हैं। उनमें
से 47हर एक के एवज़ चाँदी के पाँच सिक्के
ले जो मक़दिस के वज़न के मुताबिक़ हों (फ़ी
सिक्का तक़रीबन 11 ग्राम)। 48यह पैसे हारून
और उसके बेटों को देना।”

49मूसा ने ऐसा ही किया। 50यों उसने चाँदी के
1,365 सिक्के (तक़रीबन 16 किलोग्राम) जमा
करके 51हारून और उसके बेटों को दिए, जिस
तरह रब ने उसे हुक्म दिया था।

क़िहातियों की ज़िम्मेदारियाँ

4 रब ने मूसा और हारून से कहा, 2“लावी
के क़बीले में से क़िहातियों की मर्दुमशुमारी
उनके कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़
करना। 3उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज
करना जो 30 से लेकर 50 साल के हैं और

मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत करने के लिए आ सकते हैं। 4क़िहातियों की ख़िदमत मुक़द्दसतरीन कमरे की देख-भाल है।

5जब ख़ैमे को सफ़र के लिए समेटना है तो हारून और उसके बेटे दाख़िल होकर मुक़द्दसतरीन कमरे का परदा उतारें और उसे शरीअत के संदूक़ पर डाल दें। 6इस पर वह तख़स की खालों का ग़िलाफ़ और आख़िर में पूरी तरह नीले रंग का कपड़ा बिछाएँ। इसके बाद वह संदूक़ को उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ।

7वह उस मेज़ पर भी नीले रंग का कपड़ा बिछाएँ जिस पर रब को रोटी पेश की जाती है। उस पर थाल, प्याले, मै की नज़रें पेश करने के बरतन और मरतबान रखे जाएँ। जो रोटी हमेशा मेज़ पर होती है वह भी उस पर रहे। 8हारून और उसके बेटे इन तमाम चीज़ों पर क़िरमिज़ी रंग का कपड़ा बिछाकर आख़िर में उनके ऊपर तख़स की खालों का ग़िलाफ़ डालें। इसके बाद वह मेज़ को उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ।

9वह शमादान और उसके सामान पर यानी उसके चराग़, बत्ती कतरने की क़ैंचियों, जलते कोयले के छोटे बरतनों और तेल के बरतनों पर नीले रंग का कपड़ा रखें। 10यह सब कुछ वह तख़स की खालों के ग़िलाफ़ में लपेटें और उसे उठाकर ले जाने के लिए एक चौखटे पर रखें।

11वह बख़ूर जलाने की सोने की क़ुरबान-गाह पर भी नीले रंग का कपड़ा बिछाकर उस पर तख़स की खालों का ग़िलाफ़ डालें और फिर उसे उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ। 12वह सारा सामान जो मुक़द्दस कमरे में इस्तेमाल होता है लेकर नीले रंग के कपड़े में लपेटें, उस पर तख़स की खालों का ग़िलाफ़ डालें और उसे उठाकर ले जाने के लिए एक चौखटे पर रखें।

13फिर वह जानवरों को जलाने की क़ुरबानगाह को राख से साफ़ करके उस पर अरग़वानी रंग का कपड़ा बिछाएँ। 14उस पर वह क़ुरबानगाह की ख़िदमत के लिए सारा ज़रूरी सामान रखें यानी छिड़काव के कटोरे, जलते हुए कोयले के बरतन, बेलचे और काँटे। इस सामान पर वह तख़स की खालों का ग़िलाफ़ डालकर क़ुरबानगाह को उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ।

15सफ़र के लिए रवाना होते वक़्त यह सब कुछ उठाकर ले जाना क़िहातियों की ज़िम्मेदारी है। लेकिन लाज़िम है कि पहले हारून और उसके बेटे यह तमाम मुक़द्दस चीज़ें ढाँपें। क़िहाती इनमें से कोई भी चीज़ न छुएँ वरना मर जाएंगे।

16हारून इमाम का बेटा इलियज़र पूरे मुक़द्दस ख़ैमे और उसके सामान का इंचार्ज हो। इसमें चराग़ों का तेल, बख़ूर, ग़ल्ला की रोज़ाना नज़र और मसह का तेल भी शामिल है।”

17रब ने मूसा और हारून से कहा, 18“ख़बरदार रहो कि क़िहात के कुंबे लावी के क़बीले में से मिटने न पाएँ। 19चुनाँचे जब वह मुक़द्दसतरीन चीज़ों के पास आएँ तो हारून और उसके बेटे हर एक को उस सामान के पास ले जाएँ जो उसे उठाकर ले जाना है ताकि वह न मरें बल्कि जीते रहें। 20क़िहाती एक लमहे के लिए भी मुक़द्दस चीज़ें देखने के लिए अंदर न जाएँ, वरना वह मर जाएंगे।”

जैरसोनियों की ज़िम्मेदारियाँ

21फिर रब ने मूसा से कहा, 22“जैरसोन की औलाद की मर्दुमशुमारी भी उनके आबाई घरानों और कुंबों के मुताबिक़ करना। 23उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज करना जो 30 से लेकर 50 साल के हैं और मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत के लिए आ सकते हैं। 24वह यह चीज़ें उठाकर ले जाने के ज़िम्मेदार हैं : 25मुलाक़ात का ख़ैमा, उस की छत, छत पर रखी हुई तख़स की खाल की पोशिश, ख़ैमे के दरवाज़े का परदा, 26ख़ैमे और क़ुरबानगाह की चारदीवारी के परदे, चारदीवारी के दरवाज़े का परदा, उसके रस्से और उसे लगाने का बाक़ी सामान। वह उन तमाम कामों के ज़िम्मेदार हैं जो इन चीज़ों से मुंसलिक हैं। 27जैरसोनियों की पूरी ख़िदमत हारून और उसके बेटों की हिदायात के मुताबिक़ हो। ख़बरदार रहो कि वह

सब कुछ ऐन हिदायात के मुताबिक़ उठाकर ले जाएँ। 28यह सब मुलाक़ात के ख़ैमे में जैरसोनियों की ज़िम्मेदारियाँ हैं। इस काम में हारून इमाम का बेटा इतमर उन पर मुक़र्रर है।”

मिरारियों की ज़िम्मेदारियाँ

29रब ने कहा, “मिरारी की औलाद की मर्दुमशुमारी भी उनके आबाई घरानों और कुंबों के मुताबिक़ करना। 30उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज करना जो 30 से लेकर 50 साल के हैं और मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत के लिए आ सकते हैं। 31वह मुलाक़ात के ख़ैमे की यह चीज़ें उठाकर ले जाने के ज़िम्मेदार हैं : दीवार के तख़्ते, शहतीर, खंबे और पाए, 32फिर ख़ैमे की चारदीवारी के खंबे, पाए, मेख़ें, रस्से और यह चीज़ें लगाने का सामान। हर एक को तफ़सील से बताना कि वह क्या क्या उठाकर ले जाए। 33यह सब कुछ मिरारियों की मुलाक़ात के ख़ैमे में ज़िम्मेदारियों में शामिल है। इस काम में हारून इमाम का बेटा इतमर उन पर मुक़र्रर हो।”

लावियों की मर्दुमशुमारी

34मूसा, हारून और जमात के राहनुमाओं ने क़िहातियों की मर्दुमशुमारी उनके कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़ की। 35-37उन्होंने उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज किया जो 30 से लेकर 50 साल के थे और जो मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत कर सकते थे। उनकी कुल तादाद 2,750 थी। मूसा और हारून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा की मारिफ़त फ़रमाया था। 38-41फिर जैरसोनियों की मर्दुमशुमारी उनके कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़ हुई। ख़िदमत के लायक़ मर्दों की कुल तादाद 2,630 थी। मूसा और हारून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा के ज़रीए फ़रमाया था। 42-45फिर मिरारियों की मर्दुमशुमारी उनके कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़ हुई। ख़िदमत के लायक़ मर्दों की कुल तादाद 3,200 थी। मूसा और हारून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा के ज़रीए फ़रमाया था। 46-48लावियों के उन मर्दों की कुल तादाद 8,580 थी जिन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत करना और सफ़र करते वक़्त उसे उठाकर ले जाना था।

49मूसा ने रब के हुक्म के मुताबिक़ हर एक को उस की अपनी अपनी ज़िम्मेदारी सौंपी और उसे बताया कि उसे क्या क्या उठाकर ले जाना है। यों उनकी मर्दुमशुमारी रब के उस हुक्म के ऐन मुताबिक़ की गई जो उसने मूसा की मारिफ़त दिया था।

नापाक लोग ख़ैमागाह में नहीं रह सकते

5 रब ने मूसा से कहा, 2“इसराईलियों को हुक्म दे कि हर उस शख़्स को ख़ैमागाह से बाहर कर दो जिसको वबाई जिल्दी बीमारी है, जिसके ज़ख़मों से माए निकलता रहता है या जो किसी लाश को छूने से नापाक है। 3ख़ाह मर्द हो या औरत, सबको ख़ैमागाह के बाहर भेज देना ताकि वह ख़ैमागाह को नापाक न करें जहाँ मैं तुम्हारे दरमियान सुकूनत करता हूँ।” 4इसराईलियों ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को कहा था। उन्होंने रब के हुक्म के ऐन मुताबिक़ इस तरह के तमाम लोगों को ख़ैमागाह से बाहर कर दिया।

ग़लत काम का मुआवज़ा

5रब ने मूसा से कहा, 6“इसराईलियों को हिदायत देना कि जो भी किसी से ग़लत सुलूक करे वह मेरे साथ बेवफ़ाई करता है और क़ुसूरवार है, ख़ाह मर्द हो या औरत। 7लाज़िम है कि वह अपना गुनाह तसलीम करे और उसका पूरा मुआवज़ा दे बल्कि मुतअस्सिरा शख़्स का नुक़सान पूरा करने के अलावा 20 फ़ीसद ज़्यादा दे। 8लेकिन अगर वह शख़्स जिसका क़ुसूर किया गया था मर चुका हो और उसका कोई वारिस न हो जो यह मुआवज़ा वसूल कर सके तो फिर उसे

रब को देना है। इमाम को यह मुआवज़ा उस मेंढे के अलावा मिलेगा जो क़ुसूरवार अपने कफ़्फ़ारा के लिए देगा। 9-10नीज़ इमाम को इसराईलियों की क़ुरबानियों में से वह कुछ मिलना है जो उठानेवाली क़ुरबानी के तौर पर उसे दिया जाता है। यह हिस्सा सिर्फ़ इमामों को ही मिलना है।"

ज़िना के शक पर अल्लाह का फ़ैसला

11रब ने मूसा से कहा, 12"इसराईलियों को बताना, हो सकता है कि कोई शादीशुदा औरत भटककर अपने शौहर से बेवफ़ा हो जाए और 13किसी और से हमबिसतर होकर नापाक हो जाए। उसके शौहर ने उसे नहीं देखा, क्योंकि यह पोशीदगी में हुआ है और न किसी ने उसे पकड़ा, न इसका कोई गवाह है। 14अगर शौहर को अपनी बीवी की वफ़ादारी पर शक हो और वह ग़ैरत खाने लगे, लेकिन यक़ीन से नहीं कह सकता कि मेरी बीवी क़ुसूरवार है कि नहीं 15तो वह अपनी बीवी को इमाम के पास ले आए। साथ साथ वह अपनी बीवी के लिए क़ुरबानी के तौर पर जौ का डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा ले आए। इस पर न तेल उंडेला जाए, न बख़ूर डाला जाए, क्योंकि ग़ल्ला की यह नज़र ग़ैरत की नज़र है जिसका मक़सद है कि पोशीदा क़ुसूर ज़ाहिर हो जाए। 16इमाम औरत को क़रीब आने दे और रब के सामने खड़ा करे। 17वह मिट्टी का बरतन मुक़द्दस पानी से भरकर उसमें मक़दिस के फ़र्श की कुछ ख़ाक डाले। 18फिर वह औरत को रब को पेश करके उसके बाल खुलवाए और उसके हाथों पर मैदे की नज़र रखे। इमाम के अपने हाथ में कड़वे पानी का वह बरतन हो जो लानत का बाइस है।

19फिर वह औरत को क़सम खिलाकर कहे, 'अगर कोई और आदमी आपसे हम-बिसतर नहीं हुआ है और आप नापाक नहीं हुई हैं तो इस कड़वे पानी की लानत का आप पर कोई असर न हो। 20लेकिन अगर आप भटककर अपने शौहर से बेवफ़ा हो गई हैं और किसी और से हमबिसतर होकर नापाक हो गई हैं 21तो रब आपको आपकी क़ौम के सामने लानती बनाए। आप बाँझ हो जाएँ और आपका पेट फूल जाए। 22जब लानत का यह पानी आपके पेट में उतरे तो आप बाँझ हो जाएँ और आपका पेट फूल जाए।' इस पर औरत कहे, 'आमीन, ऐसा ही हो।'

23फिर इमाम यह लानत लिखकर काग़ज़ को बरतन के पानी में यों धो दे कि उस पर लिखी हुई बातें पानी में घुल जाएँ। 24बाद में वह औरत को यह पानी पिलाए ताकि वह उसके जिस्म में जाकर उसे लानत पहुँचाए। 25लेकिन पहले इमाम उसके हाथों में से ग़ैरत की क़ुरबानी लेकर उसे ग़ल्ला की नज़र के तौर पर रब के सामने हिलाए और फिर क़ुरबानगाह के पास ले आए। 26उस पर वह मुट्ठी-भर यादगारी की क़ुरबानी के तौर पर जलाए। इसके बाद वह औरत को पानी पिलाए। 27अगर वह अपने शौहर से बेवफ़ा थी और नापाक हो गई है तो वह बाँझ हो जाएगी, उसका पेट फूल जाएगा और वह अपनी क़ौम के सामने लानती ठहरेगी। 28लेकिन अगर वह पाक-साफ़ है तो उसे सज़ा नहीं दी जाएगी और वह बच्चे जन्म देने के क़ाबिल रहेगी।

29-30चुनाँचे ऐसा ही करना है जब शौहर ग़ैरत खाए और उसे अपनी बीवी पर ज़िना का शक हो। बीवी को क़ुरबानगाह के सामने खड़ा किया जाए और इमाम यह सब कुछ करे। 31इस सूरत में शौहर बेक़ुसूर ठहरेगा, लेकिन अगर उस की बीवी ने वाक़ई ज़िना किया हो तो उसे अपने गुनाह के नतीजे बरदाश्त करने पड़ेंगे।"

जो अपने आपको मख़सूस करते हैं

6 रब ने मूसा से कहा, 2"इसराईलियों को हिदायत देना कि अगर कोई आदमी या औरत मन्नत मानकर अपने आपको एक मुक़र्ररा वक़्त के लिए रब के लिए मख़सूस करे 3तो वह मै या कोई और नशा-आवर चीज़ न पिए। न वह अंगूर या किसी और चीज़ का सिरका पिए, न अंगूर का रस। वह अंगूर या किशमिश न खाए। 4जब तक वह मख़सूस है वह अंगूर की कोई भी

पैदावार न खाए, यहाँ तक कि अंगूर के बीज या छिलके भी न खाए। 5जब तक वह अपनी मन्नत के मुताबिक़ मख़सूस है वह अपने बाल न कटवाए। जितनी देर के लिए उसने अपने आपको रब के लिए मख़सूस किया है उतनी देर तक वह मुक़द्दस है। इसलिए वह अपने बाल बढ़ने दे। 6जब तक वह मख़सूस है वह किसी लाश के क़रीब न जाए, 7चाहे वह उसके बाप, माँ, भाई या बहन की लाश क्यों न हो। क्योंकि इससे वह नापाक हो जाएगा जबकि अभी तक उस की मख़सूसियत लंबे बालों की सूरत में नज़र आती है। 8वह अपनी मख़सूसियत के दौरान रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस है।

9अगर कोई अचानक मर जाए जब मख़सूस शख़्स उसके क़रीब हो तो उसके मख़सूस बाल नापाक हो जाएंगे। ऐसी सूरत में लाज़िम है कि वह अपने आपको पाक-साफ़ करके सातवें दिन अपने सर को मुँडवाए। 10आठवें दिन वह दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर लेकर मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर आए और इमाम को दे। 11इमाम इनमें से एक को गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर चढ़ाए और दूसरे को भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर। यों वह उसके लिए कफ़्फ़ारा देगा जो लाश के क़रीब होने से नापाक हो गया है। उसी दिन वह अपने सर को दुबारा मख़सूस करे 12और अपने आपको मुक़र्ररा वक़्त के लिए दुबारा रब के लिए मख़सूस करे। वह क़ुसूर की क़ुरबानी के तौर पर एक साल का भेड़ का बच्चा पेश करे। जितने दिन उसने पहले मख़सूसियत की हालत में गुज़ारे हैं वह शुमार नहीं किए जा सकते क्योंकि वह मख़सूसियत की हालत में नापाक हो गया था। वह दुबारा पहले दिन से शुरू करे।

13शरीअत के मुताबिक़ जब मख़सूस शख़्स का मुक़र्ररा वक़्त गुज़र गया हो तो पहले उसे मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर लाया जाए। 14वहाँ वह रब को भस्म होनेवाली क़ुरबानी के लिए भेड़ का एक बेऐब यकसाला नर बच्चा, गुनाह की क़ुरबानी के लिए एक बेऐब यकसाला भेड़ और सलामती की क़ुरबानी के लिए एक बेऐब मेंढा पेश करे। 15इसके अलावा वह एक टोकरी में बेख़मीरी रोटियाँ जिनमें बेहतरीन मैदा और तेल मिलाया गया हो और बेख़मीरी रोटियाँ जिन पर तेल लगाया गया हो मुताल्लिक़ा ग़ल्ला की नज़र और मै की नज़र के साथ 16रब को पेश करे। पहले इमाम गुनाह की क़ुरबानी और भस्म होनेवाली क़ुरबानी रब के हुज़ूर चढ़ाए। 17फिर वह मेंढे को बेख़मीरी रोटियों के साथ सलामती की क़ुरबानी के तौर पर पेश करे। इमाम ग़ल्ला की नज़र और मै की नज़र भी चढ़ाए। 18इस दौरान मख़सूस शख़्स मुलाक़ात के ख़ैमे पर अपने मख़सूस किए गए सर को मुँडवाकर तमाम बाल सलामती की क़ुरबानी की आग में फेंके।

19फिर इमाम मेंढे का एक पका हुआ शाना और टोकरी में से दोनों क़िस्मों की एक एक रोटी लेकर मख़सूस शख़्स के हाथों पर रखे। 20इसके बाद वह यह चीज़ें वापस लेकर उन्हें हिलाने की क़ुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाए। यह एक मुक़द्दस क़ुरबानी है जो इमाम का हिस्सा है। सलामती की क़ुरबानी का हिलाया हुआ सीना और उठाई हुई रान भी इमाम का हिस्सा हैं। क़ुरबानी के इख़्तिताम पर मख़सूस किए हुए शख़्स को मै पीने की इजाज़त है।

21जो अपने आपको रब के लिए मख़सूस करता है वह ऐसा ही करे। लाज़िम है कि वह इन हिदायात के मुताबिक़ तमाम क़ुरबानियाँ पेश करे। अगर गुंजाइश हो तो वह और भी पेश कर सकता है। बहरहाल लाज़िम है कि वह अपनी मन्नत और यह हिदायात पूरी करे।”

इमाम की बरकत

22रब ने मूसा से कहा, 23“हारून और उसके बेटों को बता देना कि वह इसराईलियों को यों बरकत दें,

24‘रब तुझे बरकत दे और तेरी हिफ़ाज़त करे।

25रब अपने चेहरे का मेहरबान नूर तुझ पर चमकाए और तुझ पर रहम करे।

26रब की नज़रे-करम तुझ पर हो, और वह तुझे
सलामती बख़्शे।'
27यों वह मेरा नाम लेकर इसराईलियों को
बरकत दें। फिर मैं उन्हें बरकत दूँगा।"

मक़दिस की मख़सूसियत के हदिये

7 जिस दिन मक़दिस मुकम्मल हुआ उसी
दिन मूसा ने उसे मख़सूसो-मुक़द्दस किया।
इसके लिए उसने ख़ैमे, उसके तमाम सामान,
क़ुरबानगाह और उसके तमाम सामान पर तेल
छिड़का। 2-3फिर क़बीलों के बारह सरदार
मक़दिस के लिए हदिये लेकर आए। यह वही
राहनुमा थे जिन्होंने मर्दुमशुमारी के वक़्त मूसा की
मदद की थी। उन्होंने छतवाली छ: बैलगाड़ियाँ
और बारह बैल ख़ैमे के सामने रब को पेश किए,
दो दो सरदारों की तरफ़ से एक बैलगाड़ी और हर
एक सरदार की तरफ़ से एक बैल।
4रब ने मूसा से कहा, 5"यह तोह्फ़े क़बूल
करके मुलाक़ात के ख़ैमे के काम के लिए
इस्तेमाल कर। उन्हें लावियों में उनकी ख़िदमत की
ज़रूरत के मुताबिक़ तक़सीम करना।" 6चुनाँचे
मूसा ने बैलगाड़ियाँ और बैल लावियों को दे
दिए। 7उसने दो बैलगाड़ियाँ चार बैलों समेत
जैरसोनियों को 8और चार बैलगाड़ियाँ आठ बैलों
समेत मिरारियों को दीं। मिरारी हारून इमाम के
बेटे इतमर के तहत ख़िदमत करते थे। 9लेकिन
मूसा ने क़िहातियों को न बैलगाड़ियाँ और न बैल
दिए। वजह यह थी कि जो मुक़द्दस चीज़ें उनके
सुपुर्द थीं वह उनको कंधों पर उठाकर ले जानी
थीं।
10बारह सरदार क़ुरबानगाह की मख़-
सूसियत के मौक़े पर भी हदिये ले आए। उन्होंने
अपने हदिये क़ुरबानगाह के सामने पेश किए।
11रब ने मूसा से कहा, "सरदार बारह दिन के
दौरान बारी बारी अपने हदिये पेश करें।" 12पहले
दिन यहूदाह के सरदार नहसोन बिन अम्मीनदाब
की बारी थी। उसके हदिये यह थे : 13चाँदी
का थाल जिसका वज़न डेढ़ किलोग्राम था और
छिड़काव का चाँदी का कटोरा जिसका वज़न
800 ग्राम था। दोनों ग़ल्ला की नज़र के लिए
तेल के साथ मिलाए गए बेहतरीन मैदे से भरे
हुए थे। 14इनके अलावा नहसोन ने यह चीज़ें
पेश कीं : सोने का प्याला जिसका वज़न 110
ग्राम था और जो बख़ूर से भरा हुआ था, 15एक
जवान बैल, एक मेंढा, भस्म होनेवाली क़ुरबानी
के लिए भेड़ का एक यकसाला बच्चा, 16गुनाह
की क़ुरबानी के लिए एक बकरा 17और सलामती
की क़ुरबानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच बकरे
और भेड़ के पाँच यकसाला बच्चे।
18-23अगले ग्यारह दिन बाक़ी सरदार भी यही
हदिये मक़दिस के पास ले आए। दूसरे दिन
इशकार के सरदार नतनियेल बिन ज़ुग़र की बारी
थी, 24-29तीसरे दिन ज़बूलून के सरदार इलियाब
बिन हेलोन की, 30-47चौथे दिन रूबिन के सरदार
इलीसूर बिन शदियूर की, पाँचवें दिन शमाऊन
के सरदार सलूमियेल बिन सूरीशद्दी की, छटे
दिन जद के सरदार इलियासफ़ बिन दऊएल की,
48-53सातवें दिन इफ़राईम के सरदार इलीसमा
बिन अम्मीहूद की, 54-71आठवें दिन मनस्सी के
सरदार जमलियेल बिन फ़दाहसूर की, नवें दिन
बिनयमीन के सरदार अबिदान बिन जिदाऊनी
की, दसवें दिन दान के सरदार अख़ियज़र बिन
अम्मीशद्दी की, 72-83ग्यारहवें दिन आशर के
सरदार फ़जियेल बिन अकरान की और बारहवें
दिन नफ़ताली के सरदार अख़ीरा बिन एनान की
बारी थी।
84इसराईल के इन सरदारों ने मिलकर
क़ुरबानगाह की मख़सूसियत के लिए चाँदी के 12
थाल, छिड़काव के चाँदी के 12 कटोरे और सोने
के 12 प्याले पेश किए। 85हर थाल का वज़न डेढ़
किलोग्राम और छिड़काव के हर कटोरे का वज़न
800 ग्राम था। इन चीज़ों का कुल वज़न तक़रीबन
28 किलोग्राम था। 86बख़ूर से भरे हुए सोने के
प्यालों का कुल वज़न तक़रीबन डेढ़ किलोग्राम था
(फ़ी प्याला 110 ग्राम)। 87सरदारों ने मिलकर
भस्म होनेवाली क़ुरबानी के लिए 12 जवान बैल,

12 मेंढे और भेड़ के 12 यकसाला बच्चे उनकी ग़ल्ला की नज़रों समेत पेश किए। गुनाह की क़ुरबानी के लिए उन्होंने 12 बकरे पेश किए
88और सलामती की क़ुरबानी के लिए 24 बैल,
60 मेंढे, 60 बकरे और भेड़ के 60 यकसाला बच्चे। इन तमाम जानवरों को क़ुरबानगाह की मख़सूसियत के मौक़े पर चढ़ाया गया।

89जब मूसा मुलाक़ात के ख़ैमे में रब के साथ बात करने के लिए दाख़िल होता था तो वह रब की आवाज़ अहद के संदूक़ के ढकने पर से यानी दो करूबी फ़रिश्तों के दरमियान से सुनता था।

शमादान पर चराग़

8 रब ने मूसा से कहा, 2"हारून को बताना, 'तुझे सात चराग़ों को शमादान पर यों रखना है कि वह शमादान का सामनेवाला हिस्सा रौशन करें'।"

3हारून ने ऐसा ही किया। जिस तरह रब ने मूसा को हुक्म दिया था उसी तरह उसने चराग़ों को रख दिया ताकि वह सामनेवाला हिस्सा रौशन करें। 4शमादान पाए से लेकर ऊपर की कलियों तक सोने के एक घड़े हुए टुकड़े का बना हुआ था। मूसा ने उसे उस नमूने के ऐन मुताबिक़ बनवाया जो रब ने उसे दिखाया था।

लावियों की मख़सूसियत

5रब ने मूसा से कहा, 6"लावियों को दीगर इसराईलियों से अलग करके पाक-साफ़ करना। 7इसके लिए गुनाह से पाक करनेवाला पानी उन पर छिड़ककर उन्हें हुक्म देना कि अपने जिस्म के पूरे बाल मुँडवाओ और अपने कपड़े धोओ। यों वह पाक-साफ़ हो जाएंगे। 8फिर वह एक जवान बैल चुनें और साथ की ग़ल्ला की नज़र के लिए तेल के साथ मिलाया गया बेहतरीन मैदा लें। तू ख़ुद भी एक जवान बैल चुन। वह गुनाह की क़ुरबानी के लिए होगा।

9इसके बाद लावियों को मुलाक़ात के ख़ैमे के सामने खड़ा करके इसराईल की पूरी जमात को वहाँ जमा करना। 10जब लावी रब के सामने खड़े हों तो बाक़ी इसराईली उनके सरों पर अपने हाथ रखें। 11फिर हारून लावियों को रब के सामने पेश करे। उन्हें इसराईलियों की तरफ़ से हिलाई हुई क़ुरबानी की हैसियत से पेश किया जाए ताकि वह रब की ख़िदमत कर सकें। 12फिर लावी अपने हाथ दोनों बैलों के सरों पर रखें। एक बैल को गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर और दूसरे को भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर चढ़ाओ ताकि लावियों का कफ़्फ़ारा दिया जाए।

13लावियों को इस तरीक़े से हारून और उसके बेटों के सामने खड़ा करके रब को हिलाई हुई क़ुरबानी के तौर पर पेश करना है। 14उन्हें बाक़ी इसराईलियों से अलग करने से वह मेरा हिस्सा बनेंगे। 15इसके बाद ही वह मुलाक़ात के ख़ैमे में आकर ख़िदमत करें, क्योंकि अब वह ख़िदमत करने के लायक़ हैं। उन्हें पाक-साफ़ करके हिलाई हुई क़ुरबानी के तौर पर पेश करने का सबब यह है 16कि लावी इसराईलियों में से वह हैं जो मुझे पूरे तौर पर दिए गए हैं। मैंने उन्हें इसराईलियों के तमाम पहलौठों की जगह ले लिया है। 17क्योंकि इसराईल में हर पहलौठा मेरा है, ख़ाह वह इनसान का हो या हैवान का। उस दिन जब मैंने मिसरियों के पहलौठों को मार दिया मैंने इसराईल के पहलौठों को अपने लिए मख़सूसो-मुक़द्दस किया। 18इस सिलसिले में मैंने लावियों को इसराईलियों के तमाम पहलौठों की जगह लेकर 19उन्हें हारून और उसके बेटों को दिया है। वह मुलाक़ात के ख़ैमे में इसराईलियों की ख़िदमत करें और उनके लिए कफ़्फ़ारा का इंतज़ाम क़ायम रखें ताकि जब इसराईली मक़दिस के क़रीब आएँ तो उनको वबा से मारा न जाए।"

20मूसा, हारून और इसराईलियों की पूरी जमात ने एहतियात से रब की लावियों के बारे में हिदायात पर अमल किया। 21लावियों ने अपने आपको गुनाहों से पाक-साफ़ करके अपने कपड़ों को धोया। फिर हारून ने उन्हें रब के सामने हिलाई हुई क़ुरबानी के तौर पर पेश किया और उनका

कफ़्फ़ारा दिया ताकि वह पाक हो जाएँ। 22इसके
बाद लावी मुलाक़ात के ख़ैमे में आए ताकि हारून
और उसके बेटों के तहत ख़िदमत करें। यों सब
कुछ वैसा ही किया गया जैसा रब ने मूसा को
हुक्म दिया था।

23रब ने मूसा से यह भी कहा, 24"लावी 25
साल की उम्र में मुलाक़ात के ख़ैमे में अपनी
ख़िदमत शुरू करें 25और 50 साल की उम्र में
रिटायर हो जाएँ। 26इसके बाद वह मुलाक़ात
के ख़ैमे में अपने भाइयों की मदद कर सकते
हैं, लेकिन ख़ुद ख़िदमत नहीं कर सकते। तुझे
लावियों को इन हिदायात के मुताबिक़ उनकी
अपनी अपनी ज़िम्मेदारियाँ देनी हैं।"

रेगिस्तान में ईदे-फ़सह

9 इसराईलियों को मिसर से निकले एक
साल हो गया था। दूसरे साल के पहले
महीने में रब ने दश्ते-सीना में मूसा से बात की।

2"लाज़िम है कि इसराईली ईदे-फ़सह को
मुक़र्ररा वक़्त पर मनाएँ, 3यानी इस महीने के
चौधवें दिन, सूरज के ग़ुरूब होने के ऐन बाद। उसे
तमाम क़वायद के मुताबिक़ मनाना।" 4चुनाँचे
मूसा ने इसराईलियों से कहा कि वह ईदे-फ़सह
मनाएँ, 5और उन्होंने ऐसा ही किया। उन्होंने ईदे-
फ़सह को पहले महीने के चौधवें दिन सूरज के
ग़ुरूब होने के ऐन बाद मनाया। उन्होंने सब कुछ
वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया
था।

6लेकिन कुछ आदमी नापाक थे, क्योंकि
उन्होंने लाश छू ली थी। इस वजह से वह उस
दिन ईदे-फ़सह न मना सके। वह मूसा और हारून
के पास आकर 7कहने लगे, "हमने लाश छू ली
है, इसलिए नापाक हैं। लेकिन हमें इस सबब से
ईदे-फ़सह को मनाने से क्यों रोका जाए? हम
भी मुक़र्ररा वक़्त पर बाक़ी इसराईलियों के साथ
रब की क़ुरबानी पेश करना चाहते हैं।" 8मूसा ने
जवाब दिया, "यहाँ मेरे इंतज़ार में खड़े रहो। मैं
मालूम करता हूँ कि रब तुम्हारे बारे में क्या हुक्म
देता है।"

9रब ने मूसा से कहा, 10"इसराईलियों को बता
देना कि अगर तुम या तुम्हारी औलाद में से कोई
ईदे-फ़सह के दौरान लाश छूने से नापाक हो या
किसी दूर-दराज़ इलाक़े में सफ़र कर रहा हो, तो
भी वह ईद मना सकता है। 11ऐसा शख़्स उसे ऐन
एक माह के बाद मनाकर लेले के साथ बेख़मीरी
रोटी और कड़वा साग-पात खाए। 12खाने में से
कुछ भी अगली सुबह तक बाक़ी न रहे। जानवर
की कोई भी हड्डी न तोड़ना। मनानेवाला ईदे-फ़सह
के पूरे फ़रायज़ अदा करे। 13लेकिन जो पाक
होने और सफ़र न करने के बावुजूद भी ईदे-फ़सह
को न मनाए उसे उस की क़ौम में से मिटाया
जाए, क्योंकि उसने मुक़र्ररा वक़्त पर रब को
क़ुरबानी पेश नहीं की। उस शख़्स को अपने गुनाह
का नतीजा भुगतना पड़ेगा। 14अगर कोई परदेसी
तुम्हारे दरमियान रहते हुए रब के सामने ईदे-फ़सह
मनाना चाहे तो उसे इजाज़त है। शर्त यह है कि
वह पूरे फ़रायज़ अदा करे। परदेसी और देसी के
लिए ईदे-फ़सह मनाने के फ़रायज़ एक जैसे हैं।"

मुलाक़ात के ख़ैमे पर बादल का सतून

15जिस दिन शरीअत के मुक़द्दस ख़ैमे को खड़ा
किया गया उस दिन बादल आकर उस पर छा
गया। रात के वक़्त बादल आग की सूरत में नज़र
आया। 16इसके बाद यही सूरते-हाल रही कि
बादल उस पर छाया रहता और रात के दौरान
आग की सूरत में नज़र आता। 17जब भी बादल
ख़ैमे पर से उठता इसराईली रवाना हो जाते।
जहाँ भी बादल उतर जाता वहाँ इसराईली अपने
डेरे डालते। 18इसराईली रब के हुक्म पर रवाना
होते और उसके हुक्म पर डेरे डालते। जब तक
बादल मक़दिस पर छाया रहता उस वक़्त तक
वह वहीं ठहरते। 19कभी कभी बादल बड़ी देर
तक ख़ैमे पर ठहरा रहता। तब इसराईली रब का
हुक्म मानकर रवाना न होते। 20कभी कभी बादल
सिर्फ़ दो-चार दिन के लिए ख़ैमे पर ठहरता। फिर

वह रब के हुक्म के मुताबिक़ ही ठहरते और रवाना होते थे। 21कभी कभी बादल सिर्फ़ शाम से लेकर सुबह तक ख़ैमे पर ठहरता। जब वह सुबह के वक़्त उठता तो इसराईली भी रवाना होते थे। जब भी बादल उठता वह भी रवाना हो जाते। 22जब तक बादल मुक़द्दस ख़ैमे पर छाया रहता उस वक़्त तक इसराईली रवाना न होते, चाहे वह दो दिन, एक माह, एक साल या इससे ज़्यादा अरसा मक़दिस पर छाया रहता। लेकिन जब वह उठता तो इसराईली भी रवाना हो जाते। 23वह रब के हुक्म पर ख़ैमे लगाते और उसके हुक्म पर रवाना होते थे। वह वैसा ही करते थे जैसा रब मूसा की मारिफ़त फ़रमाता था।

10 रब ने मूसा से कहा, 2“चाँदी के दो बिगुल घड़कर बनवा ले। उन्हें जमात को जमा करने और क़बीलों को रवाना करने के लिए इस्तेमाल कर। 3जब दोनों को देर तक बजाया जाए तो पूरी जमात मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर आकर तेरे सामने जमा हो जाए। 4लेकिन अगर एक ही बजाया जाए तो सिर्फ़ कुंबों के बुज़ुर्ग तेरे सामने जमा हो जाएँ। 5अगर उनकी आवाज़ सिर्फ़ थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो मक़दिस के मशरिक़ में मौजूद क़बीले रवाना हो जाएँ। 6फिर जब उनकी आवाज़ दूसरी बार थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो मक़दिस के जुनूब में मौजूद क़बीले रवाना हो जाएँ। जब उनकी आवाज़ थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो यह रवाना होने का एलान होगा। 7इसके मुक़ाबले में जब उनकी आवाज़ देर तक सुनाई दे तो यह इस बात का एलान होगा कि जमात जमा हो जाए।

8बिगुल बजाने की ज़िम्मेदारी हारून के बेटों यानी इमामों को दी जाए। यह तुम्हारे और आनेवाली नसलों के लिए दायमी उसूल हो। 9उनकी आवाज़ उस वक़्त भी थोड़ी देर के लिए सुना दो जब तुम अपने मुल्क में किसी ज़ालिम दुश्मन से जंग लड़ने के लिए निकलोगे। तब रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें याद करके दुश्मन से बचाएगा।

10इसी तरह उनकी आवाज़ मक़दिस में ख़ुशी के मौक़ों पर सुनाई दे यानी मुक़र्ररा ईदों और नए चाँद की ईदों पर। इन मौक़ों पर वह भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ और सलामती की क़ुरबानियाँ चढ़ाते वक़्त बजाए जाएँ। फिर तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें याद करेगा। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”

सीना पहाड़ से रवानगी

11इसराईलियों को मिसर से निकले एक साल से ज़ायद अरसा हो चुका था। दूसरे महीने के बीसवें दिन बादल मुलाक़ात के ख़ैमे पर से उठा। 12फिर इसराईली मुक़र्ररा तरतीब के मुताबिक़ दश्ते-सीना से रवाना हुए। चलते चलते बादल फ़ारान के रेगिस्तान में उतर आया।

13उस वक़्त वह पहली दफ़ा उस तरतीब से रवाना हुए जो रब ने मूसा की मारिफ़त मुक़र्रर की थी। 14पहले यहूदाह के क़बीले के तीन दस्ते अपने अलम के तहत चल पड़े। तीनों का कमाँडर नहसोन बिन अम्मीनदाब था। 15साथ चलनेवाले क़बीले इशकार का कमाँडर नतनियेल बिन ज़ुग़र था। 16ज़बूलून का क़बीला भी साथ चला जिसका कमाँडर इलियाब बिन हेलोन था। 17इसके बाद मुलाक़ात का ख़ैमा उतारा गया। जैरसोनी और मिरारी उसे उठाकर चल दिए। 18इन लावियों के बाद रूबिन के क़बीले के तीन दस्ते अपने अलम के तहत चलने लगे। तीनों का कमाँडर इलीसूर बिन शदियूर था। 19साथ चलनेवाले क़बीले शमाऊन का कमाँडर सलूमियेल बिन सूरीशद्दी था। 20जद का क़बीला भी साथ चला जिसका कमाँडर इलियासफ़ बिन दऊएल था। 21फिर लावियों में से क़िहाती मक़दिस का सामान उठाकर रवाना हुए। लाज़िम था कि उनके अगली मनज़िल पर पहुँचने तक मुलाक़ात का ख़ैमा लगा दिया गया हो। 22इसके बाद इफ़राईम के क़बीले के तीन दस्ते अपने अलम के तहत चल दिए। उनका कमाँडर इलीसमा बिन अम्मीहूद था। 23इफ़राईम के साथ चलनेवाले क़बीले मनस्सी का कमाँडर

जमलियेल बिन फ़दाहसूर था। 24बिनयमीन का क़बीला भी साथ चला जिसका कमाँडर अबिदान बिन जिदाऊनी था। 25आख़िर में दान के तीन दस्ते अक़बी मुहाफ़िज़ के तौर पर अपने अलम के तहत रवाना हुए। उनका कमाँडर अख़ियज़र बिन अम्मीशद्दी था। 26दान के साथ चलनेवाले क़बीले आशर का कमाँडर फ़जियेल बिन अकरान था। 27नफ़ताली का क़बीला भी साथ चला जिसका कमाँडर अख़ीरा बिन एनान था। 28इसराईली इसी तरतीब से रवाना हुए।

मूसा होबाब को साथ चलने पर मजबूर करता है

29मूसा ने अपने मिदियानी सुसर रऊएल यानी यितरो के बेटे होबाब से कहा, “हम उस जगह के लिए रवाना हो रहे हैं जिसका वादा रब ने हमसे किया है। हमारे साथ चलें! हम आप पर एहसान करेंगे, क्योंकि रब ने इसराईल पर एहसान करने का वादा किया है।” 30लेकिन होबाब ने जवाब दिया, “मैं साथ नहीं जाऊँगा बल्कि अपने मुल्क और रिश्तेदारों के पास वापस चला जाऊँगा।” 31मूसा ने कहा, “मेहरबानी करके हमें न छोड़ें। क्योंकि आप ही जानते हैं कि हम रेगिस्तान में कहाँ कहाँ अपने डेरे डाल सकते हैं। आप रेगिस्तान में हमें रास्ता दिखा सकते हैं। 32अगर आप हमारे साथ जाएँ तो हम आपको उस एहसान में शरीक करेंगे जो रब हम पर करेगा।”

अहद के संदूक़ का सफ़र

33चुनाँचे उन्होंने रब के पहाड़ से रवाना होकर तीन दिन सफ़र किया। इस दौरान रब का अहद का संदूक़ उनके आगे आगे चला ताकि उनके लिए आराम करने की जगह मालूम करे। 34जब कभी वह रवाना होते तो रब का बादल दिन के वक़्त उनके ऊपर रहता। 35संदूक़ के रवाना होते वक़्त मूसा कहता, “ऐ रब, उठ। तेरे दुश्मन तित्तर-बित्तर हो जाएँ। तुझसे नफ़रत करनेवाले तेरे सामने से फ़रार हो जाएँ।” 36और जब भी वह रुक जाता तो मूसा कहता, “ऐ रब, इसराईल के हज़ारों ख़ानदानों के पास वापस आ।”

तबेरा में रब की आग

11 एक दिन लोग ख़ूब शिकायत करने लगे। जब यह शिकायतें रब तक पहुँचीं तो उसे ग़ुस्सा आया और उस की आग उनके दरमियान भड़क उठी। जलते जलते उसने ख़ैमागाह का एक किनारा भस्म कर दिया। 2लोग मदद के लिए मूसा के पास आकर चिल्लाने लगे तो उसने रब से दुआ की, और आग बुझ गई। 3उस मक़ाम का नाम तबेरा यानी जलना पड़ गया, क्योंकि रब की आग उनके दरमियान जल उठी थी।

मूसा 70 राहनुमा चुनता है

4इसराईलियों के साथ जो अजनबी सफ़र कर रहे थे वह गोश्त खाने की शदीद आरज़ू करने लगे। तब इसराईली भी रो पड़े और कहने लगे, “कौन हमें गोश्त खिलाएगा? 5मिसर में हम मछली मुफ़्त खा सकते थे। हाय, वहाँ के खीरे, तरबूज़, गंदने, प्याज़ और लहसन कितने अच्छे थे! 6लेकिन अब तो हमारी जान सूख गई है। यहाँ बस मन ही मन नज़र आता रहता है।”

7मन धनिये के दानों की मानिंद था, और उसका रंग गूगल के गूँद की मानिंद था। 8-9रात के वक़्त वह ख़ैमागाह में ओस के साथ ज़मीन पर गिरता था। सुबह के वक़्त लोग इधर-उधर घुमते-फिरते हुए उसे जमा करते थे। फिर वह उसे चक्की में पीसकर या उखली में कूटकर उबालते या रोटी बनाते थे। उसका ज़ायक़ा ऐसी रोटी का-सा था जिसमें ज़ैतून का तेल डाला गया हो।

10तमाम ख़ानदान अपने अपने ख़ैमे के दरवाज़े पर रोने लगे तो रब को शदीद ग़ुस्सा आया। उनका शोर मूसा को भी बहुत बुरा लगा। 11उसने रब से पूछा, “तूने अपने ख़ादिम के साथ इतना बुरा सुलूक क्यों किया? मैंने किस काम से तुझे इतना नाराज़ किया कि तूने इन तमाम लोगों का

बोझ मुझ पर डाल दिया? 12क्या मैंने हामिला होकर इस पूरी क़ौम को जन्म दिया कि तू मुझसे कहता है, 'इसे उस तरह उठाकर ले चलना जिस तरह आया शीरख़ार बच्चे को उठाकर हर जगह साथ लिए फिरती है। इसी तरह इसे उस मुल्क में ले जाना जिसका वादा मैंने क़सम खाकर इनके बापदादा से किया है।' 13ऐ अल्लाह, मैं इन तमाम लोगों को कहाँ से गोश्त मुहैया करूँ? वह मेरे सामने रोते रहते हैं कि हमें खाने के लिए गोश्त दो। 14मैं अकेला इन तमाम लोगों की ज़िम्मेदारी नहीं उठा सकता। यह बोझ मेरे लिए हद से ज़्यादा भारी है। 15अगर तू इस पर इसरार करे तो फिर बेहतर है कि अभी मुझे मार दे ताकि मैं अपनी तबाही न देखूँ।"

16जवाब में रब ने मूसा से कहा, "मेरे पास इसराईल के 70 बुज़ुर्ग जमा कर। सिर्फ़ ऐसे लोग चुन जिनके बारे में तुझे मालूम है कि वह लोगों के बुज़ुर्ग और निगहबान हैं। उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे के पास ले आ। वहाँ वह तेरे साथ खड़े हो जाएँ, 17तो मैं उतरकर तेरे साथ हमकलाम हूँगा। उस वक़्त मैं उस रूह में से कुछ लूँगा जो मैंने तुझ पर नाज़िल किया था और उसे उन पर नाज़िल करूँगा। तब वह क़ौम का बोझ उठाने में तेरी मदद करेंगे और तू इसमें अकेला नहीं रहेगा। 18लोगों को बताना, 'अपने आपको मख़सूसो-मुक़द्दस करो, क्योंकि कल तुम गोश्त खाओगे। रब ने तुम्हारी सुनी जब तुम रो पड़े कि कौन हमें गोश्त खिलाएगा, मिसर में हमारी हालत बेहतर थी। अब रब तुम्हें गोश्त मुहैया करेगा और तुम उसे खाओगे। 19तुम उसे न सिर्फ़ एक, दो या पाँच दिन खाओगे बल्कि 10 या 20 दिन से भी ज़्यादा अरसे तक। 20तुम एक पूरा महीना ख़ूब गोश्त खाओगे, यहाँ तक कि वह तुम्हारी नाक से निकलेगा और तुम्हें उससे घिन आएगी। और यह इस सबब से होगा कि तुमने रब को जो तुम्हारे दरमियान है रद्द किया और रोते रोते उसके सामने कहा कि हम क्यों मिसर से निकले'।"

21लेकिन मूसा ने एतराज़ किया, "अगर क़ौम के पैदल चलनेवाले गिने जाएँ तो छः लाख हैं। तू किस तरह हमें एक माह तक गोश्त मुहैया करेगा? 22क्या गाय-बैलों या भेड़-बकरियों को इतनी मिक़दार में ज़बह किया जा सकता है कि काफ़ी हो? अगर समुंदर की तमाम मछलियाँ उनके लिए पकड़ी जाएँ तो क्या काफ़ी होंगी?"

23रब ने कहा, "क्या रब का इख़्तियार कम है? अब तू ख़ुद देख लेगा कि मेरी बातें दुरुस्त हैं कि नहीं।"

24चुनाँचे मूसा ने वहाँ से निकलकर लोगों को रब की यह बातें बताईं। उसने उनके बुज़ुर्गों में से 70 को चुनकर उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे के इर्दगिर्द खड़ा कर दिया। 25तब रब बादल में उतरकर मूसा से हमकलाम हुआ। जो रूह उसने मूसा पर नाज़िल किया था उसमें से उसने कुछ लेकर उन 70 बुज़ुर्गों पर नाज़िल किया। जब रूह उन पर आया तो वह नबुव्वत करने लगे। लेकिन ऐसा फिर कभी न हुआ।

26अब ऐसा हुआ कि इन सत्तर बुज़ुर्गों में से दो ख़ैमागाह में रह गए थे। उनके नाम इलदाद और मेदाद थे। उन्हें चुना तो गया था लेकिन वह मुलाक़ात के ख़ैमे के पास नहीं आए थे। इसके बावुजूद रूह उन पर भी नाज़िल हुआ और वह ख़ैमागाह में नबुव्वत करने लगे। 27एक नौजवान भागकर मूसा के पास आया और कहा, "इलदाद और मेदाद ख़ैमागाह में ही नबुव्वत कर रहे हैं।"

28यशुअ बिन नून जो जवानी से मूसा का मददगार था बोल उठा, "मूसा मेरे आक़ा, उन्हें रोक दें!" 29लेकिन मूसा ने जवाब दिया, "क्या तू मेरी ख़ातिर ग़ैरत खा रहा है? काश रब के तमाम लोग नबी होते और वह उन सब पर अपना रूह नाज़िल करता!" 30फिर मूसा और इसराईल के बुज़ुर्ग ख़ैमागाह में वापस आए।

31तब रब की तरफ़ से ज़ोरदार हवा चलने लगी जिसने समुंदर को पार करनेवाले बटेरों के ग़ोल धकेलकर ख़ैमागाह के इर्दगिर्द ज़मीन पर फेंक दिए। उनके ग़ोल तीन फ़ुट ऊँचे और ख़ैमागाह

के चारों तरफ़ 30 किलोमीटर तक पड़े रहे।
32उस पूरे दिन और रात और अगले पूरे दिन लोग
निकलकर बटेरें जमा करते रहे। हर एक ने कम
अज़ कम दस बड़ी टोकरियाँ भर लीं। फिर उन्होंने
उनका गोश्त ख़ैमे के इर्दगिर्द ज़मीन पर फैला दिया
ताकि वह ख़ुश्क हो जाए।
33लेकिन गोश्त के पहले टुकड़े अभी मुँह में थे
कि रब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा, और उसने
उनमें सख़्त वबा फैलने दी। 34चुनाँचे मक़ाम का
नाम क़ब्रोत-हत्तावा यानी 'लालच की क़ब्रें' रखा
गया, क्योंकि वहाँ उन्होंने उन लोगों को दफ़न
किया जो गोश्त के लालच में आ गए थे।
35इसके बाद इसराईली क़ब्रोत-हत्तावा से
रवाना होकर हसीरात पहुँच गए। वहाँ वह
ख़ैमाज़न हुए।

मरियम और हारून की मुख़ालफ़त

12 एक दिन मरियम और हारून मूसा के
ख़िलाफ़ बातें करने लगे। वजह यह
थी कि उसने कूश की एक औरत से शादी की थी।
2उन्होंने पूछा, "क्या रब सिर्फ़ मूसा की मारिफ़त
बात करता है? क्या उसने हमसे भी बात नहीं
की?" रब ने उनकी यह बातें सुनीं।
3लेकिन मूसा निहायत हलीम था। दुनिया में
उस जैसा हलीम कोई नहीं था। 4अचानक रब
मूसा, हारून और मरियम से मुख़ातिब हुआ, "तुम
तीनों बाहर निकलकर मुलाक़ात के ख़ैमे के पास
आओ।"
तीनों वहाँ पहुँचे। 5तब रब बादल के सतून में
उतरकर मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़ा
हुआ। उसने हारून और मरियम को बुलाया तो
दोनों आए। 6उसने कहा, "मेरी बात सुनो। जब
तुम्हारे दरमियान नबी होता है तो मैं अपने आपको
रोया में उस पर ज़ाहिर करता हूँ या ख़ाब में उससे
मुख़ातिब होता हूँ। 7लेकिन मेरे ख़ादिम मूसा की
और बात है। उसे मैंने अपने पूरे घराने पर मुक़र्रर
किया है। 8उससे मैं रूबरू हमकलाम होता हूँ।
उससे मैं मुअम्मों के ज़रीए नहीं बल्कि साफ़ साफ़
बात करता हूँ। वह रब की सूरत देखता है। तो फिर
तुम मेरे ख़ादिम के ख़िलाफ़ बातें करने से क्यों न
डरे?"
9रब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा, और वह चला
गया। 10जब बादल का सतून ख़ैमे से दूर हुआ तो
मरियम की जिल्द बर्फ़ की मानिंद सफ़ेद थी। वह
कोढ़ का शिकार हो गई थी। हारून उस की तरफ़
मुड़ा तो उस की हालत देखी 11और मूसा से कहा,
"मेरे आक़ा, मेहरबानी करके हमें इस गुनाह की
सज़ा न दें जो हमारी हमाक़त के बाइस सरज़द
हुआ है। 12मरियम को इस हालत में न छोड़ें। वह
तो ऐसे बच्चे की मानिंद है जो मुरदा पैदा हुआ हो,
जिसके जिस्म का आधा हिस्सा गल चुका हो।"
13तब मूसा ने पुकारकर रब से कहा, "ऐ
अल्लाह, मेहरबानी करके उसे शफ़ा दे।" 14रब
ने जवाब में मूसा से कहा, "अगर मरियम का बाप
उसके मुँह पर थूकता तो क्या वह पूरे हफ़्ते तक
शर्म महसूस न करती? उसे एक हफ़्ते के लिए
ख़ैमागाह के बाहर बंद रख। इसके बाद उसे वापस
लाया जा सकता है।"
15चुनाँचे मरियम को एक हफ़्ते के लिए
ख़ैमागाह के बाहर बंद रखा गया। लोग उस वक़्त
तक सफ़र के लिए रवाना न हुए जब तक उसे
वापस न लाया गया। 16जब वह वापस आई तो
इसराईली हसीरात से रवाना होकर फ़ारान के
रेगिस्तान में ख़ैमाज़न हुए।

मुल्के-कनान में इसराईली जासूस

13 फिर रब ने मूसा से कहा, 2"कुछ
आदमी मुल्के-कनान का जाय-
ज़ा लेने के लिए भेज दे, क्योंकि मैं उसे
इसराईलियों को देने को हूँ। हर क़बीले में से
एक राहनुमा को चुनकर भेज दे।"
3मूसा ने रब के कहने पर उन्हें दश्ते-फ़ारान से
भेजा। सब इसराईली राहनुमा थे। 4उनके नाम
यह हैं :
रूबिन के क़बीले से सम्मुअ बिन ज़क्कूर,
5शमाऊन के क़बीले से साफ़त बिन होरी,

6यहूदाह के क़बीले से कालिब बिन यफ़ुन्ना,
7इशकार के क़बीले से इजाल बिन यूसुफ़,
8इफ़राईम के क़बीले से होसेअ बिन नून,
9बिनयमीन के क़बीले से फ़लती बिन रफ़ू,
10ज़बूलून के क़बीले से जद्दियेल बिन सोदी,
11यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के क़बीले से जिद्दी बिन सूसी,
12दान के क़बीले से अम्मियेल बिन जमल्ली,
13आशर के क़बीले से सतूर बिन मीकाएल,
14नफ़ताली के क़बीले से नख़बी बिन वुफ़सी,
15जद के क़बीले से जियुएल बिन माकी।

16मूसा ने इन्हीं बारह आदमियों को मुल्क का जायज़ा लेने के लिए भेजा। उसने होसेअ का नाम यशुअ यानी 'रब नजात है' में बदल दिया।

17उन्हें रुख़सत करने से पहले उसने कहा, "दश्ते-नजब से गुज़रकर पहाड़ी इलाक़े तक पहुँचो। 18मालूम करो कि यह किस तरह का मुल्क है और उसके बाशिंदे कैसे हैं। क्या वह ताक़तवर हैं या कमज़ोर, तादाद में कम हैं या ज़्यादा? 19जिस मुल्क में वह बसते हैं क्या वह अच्छा है कि नहीं? वह किस क़िस्म के शहरों में रहते हैं? क्या उनकी चारदीवारियाँ हैं कि नहीं? 20मुल्क की ज़मीन ज़रख़ेज़ है या बंजर? उसमें दरख़्त हैं कि नहीं? और जुर्रत करके मुल्क का कुछ फल चुनकर ले आओ।" उस वक़्त पहले अंगूर पक गए थे।

21चुनाँचे इन आदमियों ने सफ़र करके दश्ते-सीन से रहोब तक मुल्क का जायज़ा लिया। रहोब लबो-हमात के क़रीब है। 22वह दश्ते-नजब से गुज़रकर हबरून पहुँचे जहाँ अनाक़ के बेटे अख़ीमान, सीसी और तलमी रहते थे। (हबरून को मिसर के शहर ज़ुअन से सात साल पहले तामीर किया गया था)। 23जब वह वादीए-इसकाल तक पहुँचे तो उन्होंने एक डाली काट ली जिस पर अंगूर का गुच्छा लगा हुआ था। दो आदमियों ने यह अंगूर, कुछ अनार और कुछ अंजीर लाठी पर लटकाए और उसे उठाकर चल पड़े। 24उस जगह का नाम उस गुच्छे के सबब से जो इसराईलियों ने वहाँ से काट लिया इसकाल यानी गुच्छा रखा गया।

25चालीस दिन तक मुल्क का खोज लगाते लगाते वह लौट आए। 26वह मूसा, हारून और इसराईल की पूरी जमात के पास आए जो दश्ते-फ़ारान में क़ादिस की जगह पर इंतज़ार कर रहे थे। वहाँ उन्होंने सब कुछ बताया जो उन्होंने मालूम किया था और उन्हें वह फल दिखाए जो लेकर आए थे। 27उन्होंने मूसा को रिपोर्ट दी, "हम उस मुल्क में गए जहाँ आपने हमें भेजा था। वाक़ई उस मुल्क में दूध और शहद की कसरत है। यहाँ हमारे पास उसके कुछ फल भी हैं। 28लेकिन उसके बाशिंदे ताक़तवर हैं। उनके शहरों की फ़सीलें हैं, और वह निहायत बड़े हैं। हमने वहाँ अनाक़ की औलाद भी देखी। 29अमालीक़ी दश्ते-नजब में रहते हैं जबकि हित्ती, यबूसी और अमोरी पहाड़ी इलाक़े में आबाद हैं। कनानी साहिली इलाक़े और दरियाए-यरदन के किनारे किनारे बसते हैं।"

30कालिब ने मूसा के सामने जमाशुदा लोगों को इशारा किया कि वह ख़ामोश हो जाएँ। फिर उसने कहा, "आएँ, हम मुल्क में दाख़िल हो जाएँ और उस पर क़ब्ज़ा कर लें, क्योंकि हम यक़ीनन यह करने के क़ाबिल हैं।" 31लेकिन दूसरे आदमियों ने जो उसके साथ मुल्क को देखने गए थे कहा, "हम उन लोगों पर हमला नहीं कर सकते, क्योंकि वह हमसे ताक़तवर हैं।" 32उन्होंने इसराईलियों के दरमियान उस मुल्क के बारे में ग़लत अफ़वाहें फैलाईं जिसकी तफ़तीश उन्होंने की थी। उन्होंने कहा, "जिस मुल्क में से हम गुज़रे ताकि उसका जायज़ा लें वह अपने बाशिंदों को हड़प कर लेता है। जो भी उसमें रहता है निहायत दराज़क़द है। 33हमने वहाँ देवक़ामत अफ़राद भी देखे। (अनाक़ के बेटे देवक़ामत के अफ़राद की औलाद थे)। उनके सामने हम अपने आपको टिड्डी जैसा महसूस कर रहे थे, और हम उनकी नज़र में ऐसे थे भी।"

लोग कनान में दाख़िल नहीं होना चाहते

14 उस रात तमाम लोग चीख़ें मार
मारकर रोते रहे। 2सब मूसा और
हारून के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने लगे। पूरी जमात ने
उनसे कहा, “काश हम मिसर या इस रेगिस्तान
में मर गए होते! 3रब हमें क्यों उस मुल्क में
ले जा रहा है? क्या इसलिए कि दुश्मन हमें
तलवार से क़त्ल करे और हमारे बाल-बच्चों को
लूट ले? क्या बेहतर नहीं होगा कि हम मिसर
वापस जाएँ?” 4उन्होंने एक दूसरे से कहा,
“आओ, हम राहनुमा चुनकर मिसर वापस चले
जाएँ।”

5तब मूसा और हारून पूरी जमात के सामने
मुँह के बल गिरे। 6लेकिन यशुअ बिन नून और
कालिब बिन यफ़ुन्ना बाक़ी दस जासूसों से फ़रक़
थे। परेशानी के आलम में उन्होंने अपने कपड़े
फाड़कर 7पूरी जमात से कहा, “जिस मुल्क में
से हम गुज़रे और जिसकी तफ़तीश हमने की वह
निहायत ही अच्छा है। 8अगर रब हमसे ख़ुश है तो
वह ज़रूर हमें उस मुल्क में ले जाएगा जिसमें दूध
और शहद की कसरत है। वह हमें ज़रूर यह मुल्क
देगा। 9रब से बग़ावत मत करना। उस मुल्क के
रहनेवालों से न डरें। हम उन्हें हड़प कर जाएंगे।
उनकी पनाह उनसे जाती रही है जबकि रब हमारे
साथ है। चुनाँचे उनसे मत डरें।”

10यह सुनकर पूरी जमात उन्हें संगसार करने
के लिए तैयार हुई। लेकिन अचानक रब का
जलाल मुलाक़ात के ख़ैमे पर ज़ाहिर हुआ, और
तमाम इसराईलियों ने उसे देखा। 11रब ने मूसा
से कहा, “यह लोग मुझे कब तक हक़ीर जानेंगे?
वह कब तक मुझ पर ईमान रखने से इनकार करेंगे
अगरचे मैंने उनके दरमियान इतने मोजिज़े किए
हैं? 12मैं उन्हें वबा से मार डालूँगा और उन्हें रूए-
ज़मीन पर से मिटा दूँगा। उनकी जगह मैं तुझसे
एक क़ौम बनाऊँगा जो उनसे बड़ी और ताक़तवर
होगी।”

13लेकिन मूसा ने रब से कहा, “फिर मिसरी
यह सुन लेंगे! क्योंकि तूने अपनी क़ुदरत से इन
लोगों को मिसर से निकालकर यहाँ तक पहुँचाया
है। 14मिसरी यह बात कनान के बाशिंदों को
बताएँगे। यह लोग पहले से सुन चुके हैं कि रब
इस क़ौम के साथ है, कि तुझे रूबरू देखा जाता
है, कि तेरा बादल उनके ऊपर ठहरा रहता है, और
कि तू दिन के वक़्त बादल के सतून में और रात
को आग के सतून में इनके आगे आगे चलता है।
15अगर तू एकदम इस पूरी क़ौम को तबाह कर
डाले तो बाक़ी क़ौमें यह सुनकर कहेंगी, 16‘रब
इन लोगों को उस मुल्क में ले जाने के क़ाबिल नहीं
था जिसका वादा उसने उनसे क़सम खाकर किया
था। इसी लिए उसने उन्हें रेगिस्तान में हलाक कर
दिया।’ 17ऐ रब, अब अपनी क़ुदरत यों ज़ाहिर
कर जिस तरह तूने फ़रमाया है। क्योंकि तूने कहा,
18‘रब तहम्मुल और शफ़क़त से भरपूर है। वह
गुनाह और नाफ़रमानी मुआफ़ करता है, लेकिन
हर एक को उस की मुनासिब सज़ा भी देता है।
जब वालिदैन गुनाह करें तो उनकी औलाद को
भी तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा के नतायज
भुगतने पड़ेंगे।’ 19इन लोगों का क़ुसूर अपनी
अज़ीम शफ़क़त के मुताबिक़ मुआफ़ कर। उन्हें
उस तरह मुआफ़ कर जिस तरह तू उन्हें मिसर से
निकलते वक़्त अब तक मुआफ़ करता रहा है।”

20रब ने जवाब दिया, “तेरे कहने पर मैंने उन्हें
मुआफ़ कर दिया है। 21इसके बावुजूद मेरी हयात
की क़सम और मेरे जलाल की क़सम जो पूरी
दुनिया को मामूर करता है, 22इन लोगों में से कोई
भी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होगा। उन्होंने मेरा
जलाल और मेरे मोजिज़े देखे हैं जो मैंने मिसर और
रेगिस्तान में कर दिखाए हैं। तो भी उन्होंने दस
दफ़ा मुझे आज़माया और मेरी न सुनी। 23उनमें
से एक भी उस मुल्क को नहीं देखेगा जिसका
वादा मैंने क़सम खाकर उनके बापदादा से किया
था। जिसने भी मुझे हक़ीर जाना है वह कभी
उसे नहीं देखेगा। 24सिर्फ़ मेरा ख़ादिम कालिब
मुख़्तलिफ़ है। उस की रूह फ़रक़ है। वह पूरे

दिल से मेरी पैरवी करता है, इसलिए मैं उसे उस मुल्क में ले जाऊँगा जिसमें उसने सफ़र किया है। उस की औलाद मुल्क मीरास में पाएगी। 25लेकिन फ़िलहाल अमालीक़ी और कनानी उस की वादियों में आबाद रहेंगे। चुनाँचे कल मुड़कर वापस चलो। रेगिस्तान में बहरे-क़ुलज़ुम की तरफ़ रवाना हो जाओ।"

26रब ने मूसा और हारून से कहा, 27"यह शरीर जमात कब तक मेरे ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाती रहेगी? उनके गिले-शिकवे मुझ तक पहुँच गए हैं। 28इसलिए उन्हें बताओ, 'रब फ़रमाता है कि मेरी हयात की क़सम, मैं तुम्हारे साथ वही कुछ करूँगा जो तुमने मेरे सामने कहा है। 29तुम इस रेगिस्तान में मरकर यहीं पड़े रहोगे, हर एक जो 20 साल या इससे ज़ायद का है, जो मर्दुमशुमारी में गिना गया और जो मेरे ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाया। 30गो मैंने हाथ उठाकर क़सम खाई थी कि मैं तुझे उसमें बसाऊँगा तुममें से कोई भी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होगा। सिर्फ़ कालिब बिन यफ़ुन्ना और यशुअ बिन नून दाख़िल होंगे। 31तुमने कहा था कि दुश्मन हमारे बच्चों को लूट लेंगे। लेकिन उन्हीं को मैं उस मुल्क में ले जाऊँगा जिसे तुमने रद्द किया है। 32लेकिन तुम ख़ुद दाख़िल नहीं होगे। तुम्हारी लाशें इस रेगिस्तान में पड़ी रहेंगी। 33तुम्हारे बच्चे 40 साल तक यहाँ रेगिस्तान में गल्लाबान होंगे। उन्हें तुम्हारी बेवफ़ाई के सबब से उस वक़्त तक तकलीफ़ उठानी पड़ेगी जब तक तुममें से आख़िरी शख़्स मर न गया हो। 34तुमने चालीस दिन के दौरान उस मुल्क का जायज़ा लिया। अब तुम्हें चालीस साल तक अपने गुनाहों का नतीजा भुगतना पड़ेगा। तब तुम्हें पता चलेगा कि इसका क्या मतलब है कि मैं तुम्हारी मुख़ालफ़त करता हूँ। 35मैं, रब ने यह बात फ़रमाई है। मैं यक़ीनन यह सब कुछ उस सारी शरीर जमात के साथ करूँगा जिसने मिलकर मेरी मुख़ालफ़त की है। इसी रेगिस्तान में वह ख़त्म हो जाएंगे, यहीं मर जाएंगे'।"

36-37जिन आदमियों को मूसा ने मुल्क का जायज़ा लेने के लिए भेजा था, रब ने उन्हें फ़ौरन मोहलक वबा से मार डाला, क्योंकि उनके ग़लत अफ़वाहें फैलाने से पूरी जमात बुड़बुड़ाने लगी थी। 38सिर्फ़ यशुअ बिन नून और कालिब बिन यफ़ुन्ना ज़िंदा रहे।

39जब मूसा ने रब की यह बातें इसराईलियों को बताईं तो वह ख़ूब मातम करने लगे। 40अगली सुबह-सवेरे वह उठे और यह कहते हुए ऊँचे पहाड़ी इलाक़े के लिए रवाना हुए कि हमसे ग़लती हुई है, लेकिन अब हम हाज़िर हैं और उस जगह की तरफ़ जा रहे हैं जिसका ज़िक्र रब ने किया है।

41लेकिन मूसा ने कहा, "तुम क्यों रब की ख़िलाफ़वरज़ी कर रहे हो? तुम कामयाब नहीं होगे। 42वहाँ न जाओ, क्योंकि रब तुम्हारे साथ नहीं है। तुम दुश्मनों के हाथों शिकस्त खाओगे, 43क्योंकि वहाँ अमालीक़ी और कनानी तुम्हारा सामना करेंगे। चूँकि तुमने अपना मुँह रब से फेर लिया है इसलिए वह तुम्हारे साथ नहीं होगा, और दुश्मन तुम्हें तलवार से मार डालेगा।"

44तो भी वह अपने ग़ुरूर में जुर्रत करके ऊँचे पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ बढ़े, हालाँकि न मूसा और न अहद के संदूक़ ही ने ख़ैमागाह को छोड़ा। 45फिर उस पहाड़ी इलाक़े में रहनेवाले अमालीक़ी और कनानी उन पर आन पड़े और उन्हें मारते मारते हुरमा तक तित्तर-बित्तर कर दिया।

कनान में क़ुरबानियाँ पेश करने का तरीक़ा

15 रब ने मूसा से कहा, 2"इसराईलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाख़िल होगे जो मैं तुम्हें दूँगा 3-4तो जलनेवाली क़ुरबानियाँ यों पेश करना :

अगर तुम अपने गाय-बैलों या भेड़-बकरियों में से ऐसी क़ुरबानी पेश करना चाहो जिसकी ख़ुशबू रब को पसंद हो तो साथ साथ डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी पेश करो जो एक लिटर ज़ैतून के तेल के साथ मिलाया गया हो। इसमें कोई फ़रक़

नहीं कि यह भस्म होनेवाली क़ुरबानी, मन्नत की क़ुरबानी, दिली ख़ुशी की क़ुरबानी या किसी ईद की क़ुरबानी हो।

5हर भेड़ को पेश करते वक़्त एक लिटर मै भी मै की नज़र के तौर पर पेश करना। 6जब मेंढा क़ुरबान किया जाए तो 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी साथ पेश करना जो सवा लिटर तेल के साथ मिलाया गया हो। 7सवा लिटर मै भी मै की नज़र के तौर पर पेश की जाए। ऐसी क़ुरबानी की ख़ुशबू रब को पसंद आएगी।

8अगर तू रब को भस्म होनेवाली क़ुरबानी, मन्नत की क़ुरबानी या सलामती की क़ुरबानी के तौर पर जवान बैल पेश करना चाहे 9तो उसके साथ साढ़े 4 किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी पेश करना जो दो लिटर तेल के साथ मिलाया गया हो। 10दो लिटर मै भी मै की नज़र के तौर पर पेश की जाए। ऐसी क़ुरबानी की ख़ुशबू रब को पसंद है। 11लाज़िम है कि जब भी किसी गाय, बैल, भेड़, मेंढे, बकरी या बकरे को चढ़ाया जाए तो ऐसा ही किया जाए।

12अगर एक से ज़ायद जानवरों को क़ुरबान करना है तो हर एक के लिए मुक़र्ररा ग़ल्ला और मै की नज़रें भी साथ ही पेश की जाएँ।

13लाज़िम है कि हर देसी इसराईली जलनेवाली क़ुरबानियाँ पेश करते वक़्त ऐसा ही करे। फिर उनकी ख़ुशबू रब को पसंद आएगी। 14यह भी लाज़िम है कि इसराईल में आरिज़ी या मुस्तक़िल तौर पर रहनेवाले परदेसी इन उसूलों के मुताबिक़ अपनी क़ुरबानियाँ चढ़ाएँ। फिर उनकी ख़ुशबू रब को पसंद आएगी। 15मुल्के-कनान में रहनेवाले तमाम लोगों के लिए पाबंदियाँ एक जैसी हैं, ख़ाह वह देसी हों या परदेसी, क्योंकि रब की नज़र में परदेसी तुम्हारे बराबर है। यह तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के लिए दायमी उसूल है। 16तुम्हारे और तुम्हारे साथ रहनेवाले परदेसी के लिए एक ही शरीअत है।”

फ़सल के लिए शुक्रगुज़ारी की क़ुरबानी

17रब ने मूसा से कहा, 18“इसराईलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाख़िल होगे जिसमें मैं तुम्हें ले जा रहा हूँ 19और वहाँ की पैदावार खाओगे तो पहले उसका एक हिस्सा उठानेवाली क़ुरबानी के तौर पर रब को पेश करना। 20फ़सल के पहले ख़ालिस आटे में से मेरे लिए एक रोटी बनाकर उठानेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश करो। वह गाहने की जगह की तरफ़ से रब के लिए उठानेवाली क़ुरबानी होगी। 21अपनी फ़सल के पहले ख़ालिस आटे में से यह क़ुरबानी पेश किया करो। यह उसूल हमेशा तक लागू रहे।

नादानिस्ता गुनाहों के लिए क़ुरबानियाँ

22हो सकता है कि ग़ैरइरादी तौर पर तुमसे ग़लती हुई है और तुमने उन अहकाम पर पूरे तौर पर अमल नहीं किया जो रब मूसा को दे चुका है 23या जो वह आनेवाली नसलों को देगा। 24अगर जमात इस बात से नावाक़िफ़ थी और ग़ैरइरादी तौर पर उससे ग़लती हुई तो फिर पूरी जमात एक जवान बैल भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश करे। साथ ही वह मुक़र्ररा ग़ल्ला और मै की नज़रें भी पेश करे। इसकी ख़ुशबू रब को पसंद होगी। इसके अलावा जमात गुनाह की क़ुरबानी के लिए एक बकरा पेश करे। 25इमाम इसराईल की पूरी जमात का कफ़्फ़ारा दे तो उन्हें मुआफ़ी मिलेगी, क्योंकि उनका गुनाह ग़ैरइरादी था और उन्होंने रब को भस्म होनेवाली क़ुरबानी और गुनाह की क़ुरबानी पेश की है। 26इसराईलियों की पूरी जमात को परदेसियों समेत मुआफ़ी मिलेगी, क्योंकि गुनाह ग़ैरइरादी था।

27अगर सिर्फ़ एक शख़्स से ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह हुआ हो तो गुनाह की क़ुरबानी के लिए वह एक यकसाला बकरी पेश करे। 28इमाम रब के सामने उस शख़्स का कफ़्फ़ारा दे। जब कफ़्फ़ारा दे दिया गया तो उसे मुआफ़ी हासिल होगी। 29यही उसूल परदेसी पर भी लागू है। अगर

उससे ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह हुआ हो तो वह मुआफ़ी हासिल करने के लिए वही कुछ करे जो इसराईली को करना होता है।

दानिस्ता गुनाहों के लिए सज़ाए-मौत

30लेकिन अगर कोई देसी या परदेसी जान-बूझकर गुनाह करता है तो ऐसा शख़्स रब की इहानत करता है, इसलिए लाज़िम है कि उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए। 31उसने रब का कलाम हक़ीर जानकर उसके अहकाम तोड़ डाले हैं, इसलिए उसे ज़रूर क़ौम में से मिटाया जाए। वह अपने गुनाह का ज़िम्मेदार है।”

32जब इसराईली रेगिस्तान में से गुज़र रहे थे तो एक आदमी को पकड़ा गया जो हफ़्ते के दिन लकड़ियाँ जमा कर रहा था। 33जिन्होंने उसे पकड़ा था वह उसे मूसा, हारून और पूरी जमात के पास ले आए। 34चूँकि साफ़ मालूम नहीं था कि उसके साथ क्या किया जाए इसलिए उन्होंने उसे गिरिफ़्तार कर लिया।

35फिर रब ने मूसा से कहा, “इस आदमी को ज़रूर सज़ाए-मौत दी जाए। पूरी जमात उसे ख़ैमागाह के बाहर ले जाकर संगसार करे।” 36चुनाँचे जमात ने उसे ख़ैमागाह के बाहर ले जाकर संगसार किया, जिस तरह रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

अहकाम की याद दिलानेवाले फुँदने

37रब ने मूसा से कहा, 38“इसराईलियों को बताना कि तुम और तुम्हारे बाद की नसलें अपने लिबास के किनारों पर फुँदने लगाएँ। हर फुँदना एक क़िरमिज़ी डोरी से लिबास के साथ लगा हो। 39इन फुँदनों को देखकर तुम्हें रब के तमाम अहकाम याद रहेंगे और तुम उन पर अमल करोगे। फिर तुम अपने दिलों और आँखों की ग़लत ख़ाहिशों के पीछे नहीं पड़ोगे बल्कि ज़िनाकारी से दूर रहोगे। 40फिर तुम मेरे अहकाम को याद करके उन पर अमल करोगे और अपने ख़ुदा के सामने मख़सूसो-मुक़द्दस रहोगे। 41मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ जो तुम्हें मिसर से निकाल लाया ताकि तुम्हारा ख़ुदा हूँ। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”

क़ोरह, दातन और अबीराम की सरकशी

16 1-2एक दिन क़ोरह बिन इज़हार मूसा के ख़िलाफ़ उठा। वह लावी के क़बीले का क़िहाती था। उसके साथ रूबिन के क़बीले के तीन आदमी थे, इलियाब के बेटे दातन और अबीराम और ओन बिन पलत। उनके साथ 250 और आदमी भी थे जो जमात के सरदार और असरो-रसूख़वाले थे, और जो कौंसल के लिए चुने गए थे। 3वह मिलकर मूसा और हारून के पास आकर कहने लगे, “आप हमसे ज़्यादती कर रहे हैं। पूरी जमात मख़सूसो-मुक़द्दस है, और रब उसके दरमियान है। तो फिर आप अपने आपको क्यों रब की जमात से बढ़कर समझते हैं?”

4यह सुनकर मूसा मुँह के बल गिरा। 5फिर उसने क़ोरह और उसके तमाम साथियों से कहा, “कल सुबह रब ज़ाहिर करेगा कि कौन उसका बंदा और कौन मख़सूसो-मुक़द्दस है। उसी को वह अपने पास आने देगा। 6ऐ क़ोरह, कल अपने तमाम साथियों के साथ बख़ूरदान लेकर 7रब के सामने उनमें अंगारे और बख़ूर डालो। जिस आदमी को रब चुनेगा वह मख़सूसो-मुक़द्दस होगा। अब तुम लावी ख़ुद ज़्यादती कर रहे हो।”

8मूसा ने क़ोरह से बात जारी रखी, “ऐ लावी की औलाद, सुनो! 9क्या तुम्हारी नज़र में यह कोई छोटी बात है कि रब तुम्हें इसराईली जमात के बाक़ी लोगों से अलग करके अपने क़रीब ले आया ताकि तुम रब के मक़दिस में और जमात के सामने खड़े होकर उनकी ख़िदमत करो? 10वह तुझे और तेरे साथी लावियों को अपने क़रीब लाया है। लेकिन अब तुम इमाम का ओहदा भी अपनाना चाहते हो। 11अपने साथियों से मिलकर तूने हारून की नहीं बल्कि रब की मुख़ालफ़त की है। क्योंकि हारून कौन है कि तुम उसके ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाओ?”

12फिर मूसा ने इलियाब के बेटों दातन और
अबीराम को बुलाया। लेकिन उन्होंने कहा, “हम
नहीं आएँगे। 13आप हमें एक ऐसे मुल्क से
निकाल लाए हैं जहाँ दूध और शहद की कसरत है
ताकि हम रेगिस्तान में हलाक हो जाएँ। क्या यह
काफ़ी नहीं है? क्या अब आप हम पर हुकूमत
भी करना चाहते हैं? 14न आपने हमें ऐसे मुल्क
में पहुँचाया जिसमें दूध और शहद की कसरत है,
न हमें खेतों और अंगूर के बाग़ों के वारिस बनाया
है। क्या आप इन आदमियों की आँखें निकाल
डालेंगे? नहीं, हम हरगिज़ नहीं आएँगे।”
15तब मूसा निहायत ग़ुस्से हुआ। उसने रब से
कहा, “उनकी क़ुरबानी को क़बूल न कर। मैंने
एक गधा तक उनसे नहीं लिया, न मैंने उनमें से
किसी से बुरा सुलूक किया है।”
16क़ोरह से उसने कहा, “कल तुम और तुम्हारे
साथी रब के सामने हाज़िर हो जाओ। हारून
भी आएगा। 17हर एक अपना बख़ूरदान लेकर
उसे रब को पेश करे।” 18चुनाँचे हर आदमी ने
अपना बख़ूरदान लेकर उसमें अंगारे और बख़ूर
डाल दिया। फिर सब मूसा और हारून के साथ
मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़े हुए।
19क़ोरह ने पूरी जमात को दरवाज़े पर मूसा और
हारून के मुक़ाबले में जमा किया था।
अचानक पूरी जमात पर रब का जलाल ज़ाहिर
हुआ। 20रब ने मूसा और हारून से कहा, 21“इस
जमात से अलग हो जाओ ताकि मैं इसे फ़ौरन
हलाक कर दूँ।” 22मूसा और हारून मुँह के बल
गिरे और बोल उठे, “ऐ अल्लाह, तू तमाम जानों
का ख़ुदा है। क्या तेरा ग़ज़ब एक ही आदमी के
गुनाह के सबब से पूरी जमात पर आन पड़ेगा?”
23तब रब ने मूसा से कहा, 24“जमात को बता
दे कि क़ोरह, दातन और अबीराम के डेरों से दूर हो
जाओ।” 25मूसा उठकर दातन और अबीराम के
पास गया, और इसराईल के बुज़ुर्ग उसके पीछे
चले। 26उसने जमात को आगाह किया, “इन
शरीरों के ख़ैमों से दूर हो जाओ! जो कुछ भी
उनके पास है उसे न छुओ, वरना तुम भी उनके
साथ तबाह हो जाओगे जब वह अपने गुनाहों के
बाइस हलाक होंगे।” 27तब बाक़ी लोग क़ोरह,
दातन और अबीराम के डेरों से दूर हो गए।
दातन और अबीराम अपने बाल-बच्चों समेत
अपने ख़ैमों से निकलकर बाहर खड़े थे। 28मूसा
ने कहा, “अब तुम्हें पता चलेगा कि रब ने मुझे यह
सब कुछ करने के लिए भेजा है। मैं अपनी नहीं
बल्कि उस की मरज़ी पूरी कर रहा हूँ। 29अगर यह
लोग दूसरों की तरह तबई मौत मरें तो फिर रब ने
मुझे नहीं भेजा। 30लेकिन अगर रब ऐसा काम
करे जो पहले कभी नहीं हुआ और ज़मीन अपना
मुँह खोलकर उन्हें और उनका पूरा माल हड़प कर
ले और उन्हें जीते-जी दफ़ना दे तो इसका मतलब
होगा कि इन आदमियों ने रब को हक़ीर जाना
है।”
31यह बात कहते ही उनके नीचे की ज़मीन
फट गई। 32उसने अपना मुँह खोलकर उन्हें,
उनके ख़ानदानों को, क़ोरह के तमाम लोगों को
और उनका सारा सामान हड़प कर लिया। 33वह
अपनी पूरी मिलकियत समेत जीते-जी दफ़न हो
गए। ज़मीन उनके ऊपर वापस आ गई। यों उन्हें
जमात से निकाला गया और वह हलाक हो गए।
34उनकी चीख़ें सुनकर उनके इर्दगिर्द खड़े तमाम
इसराईली भाग उठे, क्योंकि उन्होंने सोचा, “ऐसा
न हो कि ज़मीन हमें भी निगल ले।”
35उसी लमहे रब की तरफ़ से आग उतर आई
और उन 250 आदमियों को भस्म कर दिया जो
बख़ूर पेश कर रहे थे। 36रब ने मूसा से कहा,
37“हारून इमाम के बेटे इलियज़र को इत्तला दे
कि वह बख़ूरदानों को राख में से निकालकर रखे।
उनके अंगारे वह दूर फेंके। बख़ूरदानों को रखने
का सबब यह है कि अब वह मख़सूसो-मुक़द्दस हैं।
38लोग उन आदमियों के यह बख़ूरदान ले लें जो
अपने गुनाह के बाइस जान-बहक़ हो गए। वह उन्हें
कूटकर उनसे चादरें बनाएँ और उन्हें जलनेवाली
क़ुरबानियों की क़ुरबानगाह पर चढ़ाएँ। क्योंकि
वह रब को पेश किए गए हैं, इसलिए वह

मख़सूसो-मुक़द्दस हैं। यों वह इसराईलियों के लिए एक निशान रहेंगे।”

39चुनाँचे इलियज़र इमाम ने पीतल के यह बख़ूरदान जमा किए जो भस्म किए हुए आदमियों ने रब को पेश किए थे। फिर लोगों ने उन्हें कूटकर उनसे चादरें बनाईं और उन्हें क़ुरबानगाह पर चढ़ा दिया। 40हारून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा की मारिफ़त बताया था। मक़सद यह था कि बख़ूरदान इसराईलियों को याद दिलाते रहें कि सिर्फ़ हारून की औलाद ही को रब के सामने आकर बख़ूर जलाने की इजाज़त है। अगर कोई और ऐसा करे तो उसका हाल क़ोरह और उसके साथियों का-सा होगा।

41अगले दिन इसराईल की पूरी जमात मूसा और हारून के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने लगी। उन्होंने कहा, “आपने रब की क़ौम को मार डाला है।” 42लेकिन जब वह मूसा और हारून के मुक़ाबले में जमा हुए और मुलाक़ात के ख़ैमे का रुख़ किया तो अचानक उस पर बादल छा गया और रब का जलाल ज़ाहिर हुआ। 43फिर मूसा और हारून मुलाक़ात के ख़ैमे के सामने आए, 44और रब ने मूसा से कहा, 45“इस जमात से निकल जाओ ताकि मैं इसे फ़ौरन हलाक कर दूँ।” यह सुनकर दोनों मुँह के बल गिरे। 46मूसा ने हारून से कहा, “अपना बख़ूरदान लेकर उसमें क़ुरबानगाह के अंगारे और बख़ूर डालें। फिर भागकर जमात के पास चले जाएँ ताकि उनका कफ़्फ़ारा दें। जल्दी करें, क्योंकि रब का ग़ज़ब उन पर टूट पड़ा है। वबा फैलने लगी है।”

47हारून ने ऐसा ही किया। वह दौड़कर जमात के बीच में गया। लोगों में वबा शुरू हो चुकी थी, लेकिन हारून ने रब को बख़ूर पेश करके उनका कफ़्फ़ारा दिया। 48वह ज़िंदों और मुरदों के बीच में खड़ा हुआ तो वबा रुक गई। 49तो भी 14,700 अफ़राद वबा से मर गए। इसमें वह शामिल नहीं हैं जो क़ोरह के सबब से मर गए थे।

50जब वबा रुक गई तो हारून मूसा के पास वापस आया जो अब तक मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़ा था।

हारून की लाठी से कोंपलें निकलती हैं

17 रब ने मूसा से कहा, 2“इसराईलियों से बात करके उनसे 12 लाठियाँ मँगवा ले, हर क़बीले के सरदार से एक लाठी। हर लाठी पर उसके मालिक का नाम लिखना। 3लावी की लाठी पर हारून का नाम लिखना, क्योंकि हर क़बीले के सरदार के लिए एक लाठी होगी। 4फिर उनको मुलाक़ात के ख़ैमे में अहद के संदूक़ के सामने रख जहाँ मेरी तुमसे मुलाक़ात होती है। 5जिस आदमी को मैंने चुन लिया है उस की लाठी से कोंपलें फूट निकलेंगी। इस तरह मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ इसराईलियों की बुड़बुड़ाहट ख़त्म कर दूँगा।”

6चुनाँचे मूसा ने इसराईलियों से बात की, और क़बीलों के हर सरदार ने उसे अपनी लाठी दी। इन 12 लाठियों में हारून की लाठी भी शामिल थी। 7मूसा ने उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे में अहद के संदूक़ के सामने रखा। 8अगले दिन जब वह मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल हुआ तो उसने देखा कि लावी के क़बीले के सरदार हारून की लाठी से न सिर्फ़ कोंपलें फूट निकली हैं बल्कि फूल और पके हुए बादाम भी लगे हैं।

9मूसा तमाम लाठियाँ रब के सामने से बाहर लाकर इसराईलियों के पास ले आया, और उन्होंने उनका मुआयना किया। फिर हर एक ने अपनी अपनी लाठी वापस ले ली। 10रब ने मूसा से कहा, “हारून की लाठी अहद के संदूक़ के सामने रख दे। यह बाग़ी इसराईलियों को याद दिलाएगी कि वह अपना बुड़बुड़ाना बंद करें, वरना हलाक हो जाएंगे।”

11मूसा ने ऐसा ही किया। 12लेकिन इसराईलियों ने मूसा से कहा, “हाय, हम मर जाएंगे। हाय, हम हलाक हो जाएंगे, हम सब हलाक हो जाएंगे। 13जो भी रब के मक़दिस के

क़रीब आए वह मर जाएगा। क्या हम सब ही हलाक हो जाएंगे?”

इमामों और लावियों की ज़िम्मेदारियाँ

18 रब ने हारून से कहा, “मक़दिस तेरी, तेरे बेटों और लावी के क़बीले की ज़िम्मेदारी है। अगर इसमें कोई ग़लती हो जाए तो तुम क़ुसूरवार ठहरोगे। इसी तरह इमामों की ख़िदमत सिर्फ़ तेरी और तेरे बेटों की ज़िम्मेदारी है। अगर इसमें कोई ग़लती हो जाए तो तू और तेरे बेटे क़ुसूरवार ठहरेंगे। 2अपने क़बीले लावी के बाक़ी आदमियों को भी मेरे क़रीब आने दे। वह तेरे साथ मिलकर यों हिस्सा लें कि वह तेरी और तेरे बेटों की ख़िदमत करें जब तुम ख़ैमे के सामने अपनी ज़िम्मेदारियाँ निभाओगे। 3तेरी ख़िदमत और ख़ैमे में ख़िदमत उनकी ज़िम्मेदारी है। लेकिन वह ख़ैमे के मख़सूसो-मुक़द्दस सामान और क़ुरबानगाह के क़रीब न जाएँ, वरना न सिर्फ़ वह बल्कि तू भी हलाक हो जाएगा। 4यों वह तेरे साथ मिलकर मुलाक़ात के ख़ैमे के पूरे काम में हिस्सा लें। लेकिन किसी और को ऐसा करने की इजाज़त नहीं है। 5सिर्फ़ तू और तेरे बेटे मक़दिस और क़ुरबानगाह की देख-भाल करें ताकि मेरा ग़ज़ब दुबारा इसराईलियों पर न भड़के। 6मैं ही ने इसराईलियों में से तेरे भाइयों यानी लावियों को चुनकर तुझे तोह्फ़े के तौर पर दिया है। वह रब के लिए मख़सूस हैं ताकि ख़ैमे में ख़िदमत करें। 7लेकिन सिर्फ़ तू और तेरे बेटे इमाम की ख़िदमत सरंजाम दें। मैं तुम्हें इमाम का ओहदा तोह्फ़े के तौर पर देता हूँ। कोई और क़ुरबानगाह और मुक़द्दस चीज़ों के नज़दीक न आए, वरना उसे सज़ाए-मौत दी जाए।”

इमामों का हिस्सा

8रब ने हारून से कहा, “मैंने ख़ुद मुक़र्रर किया है कि तमाम उठानेवाली क़ुरबानियाँ तेरा हिस्सा हों। यह हमेशा तक क़ुरबानियों में से तेरा और तेरी औलाद का हिस्सा हैं। 9तुम्हें मुक़द्दसतरीन क़ुरबानियों का वह हिस्सा मिलना है जो जलाया नहीं जाता। हाँ, तुझे और तेरे बेटों को वही हिस्सा मिलना है, ख़ाह वह मुझे ग़ल्ला की नज़रें, गुनाह की क़ुरबानियाँ या क़ुसूर की क़ुरबानियाँ पेश करें। 10उसे मुक़द्दस जगह पर खाना। हर मर्द उसे खा सकता है। ख़याल रख कि वह मख़सूसो-मुक़द्दस है।

11मैंने मुक़र्रर किया है कि तमाम हिलाने-वाली क़ुरबानियों का उठाया हुआ हिस्सा तेरा है। यह हमेशा के लिए तेरे और तेरे बेटे-बेटियों का हिस्सा है। तेरे घराने का हर फ़रद उसे खा सकता है। शर्त यह है कि वह पाक हो। 12जब लोग रब को अपनी फ़सलों का पहला फल पेश करेंगे तो वह तेरा ही हिस्सा होगा। मैं तुझे ज़ैतून के तेल, नई मै और अनाज का बेहतरीन हिस्सा देता हूँ। 13फ़सलों का जो भी पहला फल वह रब को पेश करेंगे वह तेरा ही होगा। तेरे घराने का हर पाक फ़रद उसे खा सकता है। 14इसराईल में जो भी चीज़ रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस की गई है वह तेरी होगी। 15हर इनसान और हर हैवान का जो पहलौठा रब को पेश किया जाता है वह तेरा ही है। लेकिन लाज़िम है कि तू हर इनसान और हर नापाक जानवर के पहलौठे का फ़िद्या देकर उसे छुड़ाए।

16जब वह एक माह के हैं तो उनके एवज़ चाँदी के पाँच सिक्के देना। (हर सिक्के का वज़न मक़दिस के बाटों के मुताबिक़ 11 ग्राम हो)। 17लेकिन गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहले बच्चों का फ़िद्या यानी मुआवज़ा न देना। वह मख़सूसो-मुक़द्दस हैं। उनका ख़ून क़ुरबानगाह पर छिड़क देना और उनकी चरबी जला देना। ऐसी क़ुरबानी रब को पसंद होगी। 18उनका गोश्त वैसे ही तुम्हारे लिए हो, जैसे हिलानेवाली क़ुरबानी का सीना और दहनी रान भी तुम्हारे लिए हैं।

19मुक़द्दस क़ुरबानियों में से तमाम उठाने-वाली क़ुरबानियाँ तेरा और तेरे बेटे-बेटियों का हिस्सा हैं। मैंने उसे हमेशा के लिए तुझे दिया है।

यह नमक का दायमी अहद है जो मैंने तेरे और तेरी औलाद के साथ क़ायम किया है।”

लावियों का हिस्सा

20रब ने हारून से कहा, “तू मीरास में ज़मीन नहीं पाएगा। इसराईल में तुझे कोई हिस्सा नहीं दिया जाएगा, क्योंकि इसराईलियों के दरमियान मैं ही तेरा हिस्सा और तेरी मीरास हूँ। 21अपनी पैदावार का जो दसवाँ हिस्सा इसराईली मुझे देते हैं वह मैं लावियों को देता हूँ। यह उनकी विरासत है, जो उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत करने के बदले में मिलती है। 22अब से इसराईली मुलाक़ात के ख़ैमे के क़रीब न आएँ, वरना उन्हें अपनी ख़ता का नतीजा बरदाश्त करना पड़ेगा और वह हलाक हो जाएंगे। 23सिर्फ़ लावी मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत करें। अगर इसमें कोई ग़लती हो जाए तो वही क़ुसूरवार ठहरेंगे। यह एक दायमी उसूल है। उन्हें इसराईल में मीरास में ज़मीन नहीं मिलेगी। 24क्योंकि मैंने उन्हें वही दसवाँ हिस्सा मीरास के तौर पर दिया है जो इसराईली मुझे उठानेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश करते हैं। इस वजह से मैंने उनके बारे में कहा कि उन्हें बाक़ी इसराईलियों के साथ मीरास में ज़मीन नहीं मिलेगी।”

लावियों का दसवाँ हिस्सा

25रब ने मूसा से कहा, 26“लावियों को बताना कि तुम्हें इसराईलियों की पैदावार का दसवाँ हिस्सा मिलेगा। यह रब की तरफ़ से तुम्हारी विरासत होगी। लाज़िम है कि तुम इसका दसवाँ हिस्सा रब को उठानेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश करो। 27तुम्हारी यह क़ुरबानी नए अनाज या नए अंगूर के रस की क़ुरबानी के बराबर क़रार दी जाएगी। 28इस तरह तुम भी रब को इसराईलियों की पैदावार के दसवें हिस्से में से उठानेवाली क़ुरबानी पेश करोगे। रब के लिए यह क़ुरबानी हारून इमाम को देना। 29जो भी तुम्हें मिला है उसमें से सबसे अच्छा और मुक़द्दस हिस्सा रब को देना। 30जब तुम इसका सबसे अच्छा हिस्सा पेश करोगे तो उसे नए अनाज या नए अंगूर के रस की क़ुरबानी के बराबर क़रार दिया जाएगा। 31तुम अपने घरानों समेत इसका बाक़ी हिस्सा कहीं भी खा सकते हो, क्योंकि यह मुलाक़ात के ख़ैमे में तुम्हारी ख़िदमत का अज्र है। 32अगर तुमने पहले इसका बेहतरीन हिस्सा पेश किया हो तो फिर इसे खाने में तुम्हारा कोई क़ुसूर नहीं होगा। फिर इसराईलियों की मख़सूसो-मुक़द्दस क़ुरबानियाँ तुमसे नापाक नहीं हो जाएँगी और तुम नहीं मरोगे।”

सुर्ख़ गाय की राख

19 रब ने मूसा और हारून से कहा, 2“इसराईलियों को बताना कि वह तुम्हारे पास सुर्ख़ रंग की जवान गाय लेकर आएँ। उसमें नुक़्स न हो और उस पर कभी जुआ न रखा गया हो। 3तुम उसे इलियज़र इमाम को देना जो उसे ख़ैमे के बाहर ले जाए। वहाँ उसे उस की मौजूदगी में ज़बह किया जाए। 4फिर इलियज़र इमाम अपनी उँगली से उसके ख़ून से कुछ लेकर मुलाक़ात के ख़ैमे के सामनेवाले हिस्से की तरफ़ छिड़के। 5उस की मौजूदगी में पूरी की पूरी गाय को जलाया जाए। उस की खाल, गोश्त, ख़ून और अंतड़ियों का गोबर भी जलाया जाए। 6फिर वह देवदार की लकड़ी, ज़ूफ़ा और क़िरमिज़ी रंग का धागा लेकर उसे जलती हुई गाय पर फेंके। 7इसके बाद वह अपने कपड़ों को धोकर नहा ले। फिर वह ख़ैमागाह में आ सकता है लेकिन शाम तक नापाक रहेगा।

8जिस आदमी ने गाय को जलाया वह भी अपने कपड़ों को धोकर नहा ले। वह भी शाम तक नापाक रहेगा।

9एक दूसरा आदमी जो पाक है गाय की राख इकट्ठी करके ख़ैमागाह के बाहर किसी पाक जगह पर डाल दे। वहाँ इसराईल की जमात उसे नापाकी दूर करने का पानी तैयार करने के लिए महफ़ूज़ रखे। यह गुनाह से पाक करने के लिए इस्तेमाल

होगा। 10जिस आदमी ने राख इकट्ठी की है वह भी अपने कपड़ों को धो ले। वह भी शाम तक नापाक रहेगा। यह इसराईलियों और उनके दरमियान रहनेवाले परदेसियों के लिए दायमी उसूल हो।

लाश छूने से पाक हो जाने का तरीक़ा

11जो भी लाश छुए वह सात दिन तक नापाक रहेगा। 12तीसरे और सातवें दिन वह अपने आप पर नापाकी दूर करने का पानी छिड़ककर पाक-साफ़ हो जाए। इसके बाद ही वह पाक होगा। लेकिन अगर वह इन दोनों दिनों में अपने आपको यों पाक न करे तो नापाक रहेगा। 13जो भी लाश छूकर अपने आपको यों पाक नहीं करता वह रब के मक़दिस को नापाक करता है। लाज़िम है कि उसे इसराईल में से मिटाया जाए। चूँकि नापाकी दूर करने का पानी उस पर छिड़का नहीं गया इसलिए वह नापाक रहेगा।

14अगर कोई डेरे में मर जाए तो जो भी उस वक़्त उसमें मौजूद हो या दाख़िल हो जाए वह सात दिन तक नापाक रहेगा। 15हर खुला बरतन जो ढकने से बंद न किया गया हो वह भी नापाक होगा। 16इसी तरह जो खुले मैदान में लाश छुए वह भी सात दिन तक नापाक रहेगा, ख़ाह वह तलवार से या तबई मौत मरा हो। जो इनसान की कोई हड्डी या क़ब्र छुए वह भी सात दिन तक नापाक रहेगा।

17नापाकी दूर करने के लिए उस सुर्ख़ रंग की गाय की राख में से कुछ लेना जो गुनाह दूर करने के लिए जलाई गई थी। उसे बरतन में डालकर ताज़ा पानी में मिलाना। 18फिर कोई पाक आदमी कुछ ज़ूफ़ा ले और उसे उस पानी में डुबोकर मरे हुए शख़्स के ख़ैमे, उसके सामान और उन लोगों पर छिड़के जो उसके मरते वक़्त वहाँ थे। इसी तरह वह पानी उस शख़्स पर भी छिड़के जिसने तबई या ग़ैरतबई मौत मरे हुए शख़्स को, किसी इनसान की हड्डी को या कोई क़ब्र छूई हो। 19पाक आदमी यह पानी तीसरे और सातवें दिन नापाक शख़्स पर छिड़के। सातवें दिन वह उसे पाक करे। जिसे पाक किया जा रहा है वह अपने कपड़े धोकर नहा ले तो वह उसी शाम पाक होगा।

20लेकिन जो नापाक शख़्स अपने आपको पाक नहीं करता उसे जमात में से मिटाना है, क्योंकि उसने रब का मक़दिस नापाक कर दिया है। नापाकी दूर करने का पानी उस पर नहीं छिड़का गया, इसलिए वह नापाक रहा है। 21यह उनके लिए दायमी उसूल है। जिस आदमी ने नापाकी दूर करने का पानी छिड़का है वह भी अपने कपड़े धोए। बल्कि जिसने भी यह पानी छुआ है शाम तक नापाक रहेगा। 22और नापाक शख़्स जो भी चीज़ छुए वह नापाक हो जाती है। न सिर्फ़ यह बल्कि जो बाद में यह नापाक चीज़ छुए वह भी शाम तक नापाक रहेगा।”

चट्टान से पानी

20 पहले महीने में इसराईल की पूरी जमात दश्ते-सीन में पहुँचकर क़ादिस में रहने लगी। वहाँ मरियम ने वफ़ात पाई और वहीं उसे दफ़नाया गया।

2क़ादिस में पानी दस्तयाब नहीं था, इसलिए लोग मूसा और हारून के मुक़ाबले में जमा हुए। 3वह मूसा से यह कहकर झगड़ने लगे, “काश हम अपने भाइयों के साथ रब के सामने मर गए होते! 4आप रब की जमात को क्यों इस रेगिस्तान में ले आए? क्या इसलिए कि हम यहाँ अपने मवेशियों समेत मर जाएँ? 5आप हमें मिसर से निकालकर उस नाख़ुशगवार जगह पर क्यों ले आए हैं? यहाँ न तो अनाज, न अंजीर, अंगूर या अनार दस्तयाब हैं। पानी भी नहीं है!”

6मूसा और हारून लोगों को छोड़कर मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर गए और मुँह के बल गिरे। तब रब का जलाल उन पर ज़ाहिर हुआ। 7रब ने मूसा से कहा, 8“अहद के संदूक़ के सामने पड़ी लाठी पकड़कर हारून के साथ जमात को इकट्ठा कर। उनके सामने चट्टान से बात करो तो वह अपना पानी देगी। यों तू चट्टान में से जमात के

लिए पानी निकालकर उन्हें उनके मवेशियों समेत
पानी पिलाएगा।”
9मूसा ने ऐसा ही किया। उसने अहद के संदूक़
के सामने पड़ी लाठी उठाई 10और हारून के साथ
जमात को चट्टान के सामने इकट्ठा किया। मूसा ने
उनसे कहा, “ऐ बग़ावत करनेवालो, सुनो! क्या
हम इस चट्टान में से तुम्हारे लिए पानी निकालें?”
11उसने लाठी को उठाकर चट्टान को दो मरतबा
मारा तो बहुत-सा पानी फूट निकला। जमात और
उनके मवेशियों ने ख़ूब पानी पिया।
12लेकिन रब ने मूसा और हारून से कहा,
“तुम्हारा मुझ पर इतना ईमान नहीं था कि मेरी
क़ुद्दूसियत को इसराईलियों के सामने क़ायम
रखते। इसलिए तुम उस जमात को उस मुल्क
में नहीं ले जाओगे जो मैं उन्हें दूँगा।”
13यह वाक़िया मरीबा यानी ‘झगड़ना’ के पानी
पर हुआ। वहाँ इसराईलियों ने रब से झगड़ा किया,
और वहाँ उसने उन पर ज़ाहिर किया कि वह क़ुद्दूस
है।

अदोम इसराईल को गुज़रने नहीं देता

14क़ादिस से मूसा ने अदोम के बादशाह को
इत्तला भेजी, “आपके भाई इसराईल की तरफ़
से एक गुज़ारिश है। आपको उन तमाम मुसीबतों
के बारे में इल्म है जो हम पर आन पड़ी हैं।
15हमारे बापदादा मिसर गए थे और वहाँ हम
बहुत अरसे तक रहे। मिसरियों ने हमारे बापदादा
और हमसे बुरा सुलूक किया। 16लेकिन जब
हमने चिल्लाकर रब से मिन्नत की तो उसने
हमारी सुनी और फ़रिश्ता भेजकर हमें मिसर से
निकाल लाया। अब हम यहाँ क़ादिस शहर में हैं
जो आपकी सरहद पर है। 17मेहरबानी करके हमें
अपने मुल्क में से गुज़रने दें। हम किसी खेत या
अंगूर के बाग़ में नहीं जाएंगे, न किसी कुएँ का
पानी पिएँगे। हम शाहराह पर ही रहेंगे। आपके
मुल्क में से गुज़रते हुए हम उससे न दाईं और न
बाईं तरफ़ हटेंगे।”
18लेकिन अदोमियों ने जवाब दिया, “यहाँ से
न गुज़रना, वरना हम निकलकर आपसे लड़ेंगे।”
19इसराईल ने दुबारा ख़बर भेजी, “हम शाहराह
पर रहते हुए गुज़रेंगे। अगर हमें या हमारे जानवरों
को पानी की ज़रूरत हुई तो पैसे देकर ख़रीद लेंगे।
हम पैदल ही गुज़रना चाहते हैं, और कुछ नहीं
चाहते।”
20लेकिन अदोमियों ने दुबारा इनकार किया।
साथ ही उन्होंने उनके साथ लड़ने के लिए एक
बड़ी और ताक़तवर फ़ौज भेजी।
21चूँकि अदोम ने उन्हें गुज़रने की इजाज़त न
दी इसलिए इसराईली मुड़कर दूसरे रास्ते से चले
गए।

हारून की वफ़ात

22इसराईल की पूरी जमात क़ादिस से रवाना
होकर होर पहाड़ के पास पहुँची। 23यह पहाड़
अदोम की सरहद पर वाक़े था। वहाँ रब ने मूसा
और हारून से कहा, 24“हारून अब कूच करके
अपने बापदादा से जा मिलेगा। वह उस मुल्क
में दाख़िल नहीं होगा जो मैं इसराईलियों को
दूँगा, क्योंकि तुम दोनों ने मरीबा के पानी पर मेरे
हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी की। 25हारून और उसके
बेटे इलियज़र को लेकर होर पहाड़ पर चढ़ जा।
26हारून के कपड़े उतारकर उसके बेटे इलियज़र
को पहना देना। फिर हारून कूच करके अपने
बापदादा से जा मिलेगा।”
27मूसा ने ऐसा ही किया जैसा रब ने कहा।
तीनों पूरी जमात के देखते देखते होर पहाड़ पर
चढ़ गए। 28मूसा ने हारून के कपड़े उतरवाकर
उसके बेटे इलियज़र को पहना दिए। फिर हारून
वहाँ पहाड़ की चोटी पर फ़ौत हुआ, और मूसा
और इलियज़र नीचे उतर गए। 29जब पूरी जमात
को मालूम हुआ कि हारून इंतक़ाल कर गया है
तो सबने 30 दिन तक उसके लिए मातम किया।

कनानी मुल्के-अराद पर फ़तह

21 दश्ते-नजब के कनानी मुल्क अराद
के बादशाह को ख़बर मिली कि
इसराईली अथारिम की तरफ़ बढ़ रहे हैं। उसने
उन पर हमला किया और कई एक को पकड़कर
क़ैद कर लिया। 2तब इसराईलियों ने रब के सामने
मन्नत मानकर कहा, “अगर तू हमें उन पर फ़तह
देगा तो हम उन्हें उनके शहरों समेत तबाह कर
देंगे।” 3रब ने उनकी सुनी और कनानियों पर
फ़तह बख़्शी। इसराईलियों ने उन्हें उनके शहरों
समेत पूरी तरह तबाह कर दिया। इसलिए उस
जगह का नाम हुरमा यानी तबाही पड़ गया।

पीतल का साँप

4होर पहाड़ से रवाना होकर वह बहरे-क़ुलज़ुम
की तरफ़ चल दिए ताकि अदोम के मुल्क में से
गुज़रना न पड़े। लेकिन चलते चलते लोग बेसबर
हो गए। 5वह रब और मूसा के ख़िलाफ़ बातें करने
लगे, “आप हमें मिसर से निकालकर रेगिस्तान
में मरने के लिए क्यों ले आए हैं? यहाँ न रोटी
दस्तयाब है न पानी। हमें इस घटिया क़िस्म की
ख़ुराक से घिन आती है।”

6तब रब ने उनके दरमियान ज़हरीले साँप भेज
दिए जिनके काटने से बहुत-से लोग मर गए।
7फिर लोग मूसा के पास आए। उन्होंने कहा,
“हमने रब और आपके ख़िलाफ़ बातें करते हुए
गुनाह किया। हमारी सिफ़ारिश करें कि रब हमसे
साँप दूर कर दे।”

मूसा ने उनके लिए दुआ की 8तो रब ने मूसा
से कहा, “एक साँप बनाकर उसे खंबे से लटका
दे। जो भी डसा गया हो वह उसे देखकर बच
जाएगा।” 9चुनाँचे मूसा ने पीतल का एक साँप
बनाया और खंबा खड़ा करके साँप को उससे
लटका दिया। और ऐसा हुआ कि जिसे भी डसा
गया था वह पीतल के साँप पर नज़र करके बच
गया।

मोआब की तरफ़ सफ़र

10इसराईली रवाना हुए और ओबोत में अपने
ख़ैमे लगाए। 11फिर वहाँ से कूच करके ऐये-
अबारीम में डेरे डाले, उस रेगिस्तान में जो मशरिक़
की तरफ़ मोआब के सामने है। 12वहाँ से रवाना
होकर वह वादीए-ज़िरद में ख़ैमाज़न हुए। 13जब
वादीए-ज़िरद से रवाना हुए तो दरियाए-अरनोन के
परले यानी जुनूबी किनारे पर ख़ैमाज़न हुए। यह
दरिया रेगिस्तान में है और अमोरियों के इलाक़े
से निकलता है। यह अमोरियों और मोआबियों के
दरमियान की सरहद है। 14इसका ज़िक्र किताब
‘रब की जंगें’ में भी है,

“वाहेब जो सूफ़ा में है, दरियाए-अरनोन की
वादियाँ 15और वादियों का वह ढलान जो आर
शहर तक जाता है और मोआब की सरहद पर
वाक़े है।”

16वहाँ से वह बैर यानी ‘कुआँ’ पहुँचे। यह
वही बैर है जहाँ रब ने मूसा से कहा, “लोगों को
इकट्ठा कर तो मैं उन्हें पानी दूँगा।” 17उस वक़्त
इसराईलियों ने यह गीत गाया,

“ऐ कुएँ, फूट निकल! उसके बारे में गीत
गाओ,

18उस कुएँ के बारे में जिसे सरदारों ने खोदा,
जिसे क़ौम के राहनुमाओं ने असाए-शाही और
अपनी लाठियों से खोदा।”

फिर वह रेगिस्तान से मत्तना को गए, 19मत्तना
से नहलियेल को और नहलियेल से बामात को।
20बामात से वह मोआबियों के इलाक़े की उस
वादी में पहुँचे जो पिसगा पहाड़ के दामन में है।
इस पहाड़ की चोटी से वादीए-यरदन का जुनूबी
हिस्सा यशीमोन ख़ूब नज़र आता है।

सीहोन और ओज की शिकस्त

21इसराईल ने अमोरियों के बादशाह सीहोन
को इत्तला भेजी, 22“हमें अपने मुल्क में से
गुज़रने दें। हम सीधे सीधे गुज़र जाएंगे। न हम
कोई खेत या अंगूर का बाग़ छेड़ेंगे, न किसी
कुएँ का पानी पिएँगे। हम आपके मुल्क में से

सीधे गुज़रते हुए शाहराह पर ही रहेंगे।" 23लेकिन सीहोन ने उन्हें गुज़रने न दिया बल्कि अपनी फ़ौज जमा करके इसराईल से लड़ने के लिए रेगिस्तान में चल पड़ा। यहज़ पहुँचकर उसने इसराईलियों से जंग की। 24लेकिन इसराईलियों ने उसे क़त्ल किया और दरियाए-अरनोन से लेकर दरियाए-यब्बोक़ तक यानी अम्मोनियों की सरहद तक उसके मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लिया। वह इससे आगे न जा सके क्योंकि अम्मोनियों ने अपनी सरहद की हिसारबंदी कर रखी थी। 25इसराईली तमाम अमोरी शहरों पर क़ब्ज़ा करके उनमें रहने लगे। उनमें हसबोन और उसके इर्दगिर्द की आबादियाँ शामिल थीं।

26हसबोन अमोरी बादशाह सीहोन का दारुल-हुकूमत था। उसने मोआब के पिछले बादशाह से लड़कर उससे यह इलाक़ा दरियाए-अरनोन तक छीन लिया था। 27उस वाक़िये का ज़िक्र शायरी में यों किया गया है,

"हसबोन के पास आकर उसे अज़ सरे-नौ तामीर करो, सीहोन के शहर को अज़ सरे-नौ क़ायम करो।

28हसबोन से आग निकली, सीहोन के शहर से शोला भड़का। उसने मोआब के शहर आर को जला दिया, अरनोन की बुलंदियों के मालिकों को भस्म किया।

29ऐ मोआब, तुझ पर अफ़सोस! ऐ कमोस देवता की क़ौम, तू हलाक हुई है। कमोस ने अपने बेटों को मफ़रूर और अपनी बेटियों को अमोरी बादशाह सीहोन की क़ैदी बना दिया है।

30लेकिन जब हमने अमोरियों पर तीर चलाए तो हसबोन का इलाक़ा दीबोन तक बरबाद हुआ। हमने नुफ़ह तक सब कुछ तबाह किया, वह नुफ़ह जिसका इलाक़ा मीदबा तक है।"

31यों इसराईल अमोरियों के मुल्क में आबाद हुआ। 32वहाँ से मूसा ने अपने जासूस याज़ेर शहर भेजे। वहाँ भी अमोरी रहते थे। इसराईलियों ने याज़ेर और उसके इर्दगिर्द के शहरों पर भी क़ब्ज़ा किया और वहाँ के अमोरियों को निकाल दिया।

33इसके बाद वह मुड़कर बसन की तरफ़ बढ़े। तब बसन का बादशाह ओज अपनी तमाम फ़ौज लेकर उनसे लड़ने के लिए शहर इदरई आया। 34उस वक़्त रब ने मूसा से कहा, "ओज से न डरना। मैं उसे, उस की तमाम फ़ौज और उसका मुल्क तेरे हवाले कर चुका हूँ। उसके साथ वही सुलूक कर जो तूने अमोरियों के बादशाह सीहोन के साथ किया, जिसका दारुल-हुकूमत हसबोन था।" 35इसराईलियों ने ओज, उसके बेटों और तमाम फ़ौज को हलाक कर दिया। कोई भी न बचा। फिर उन्होंने बसन के मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लिया।

बलक़ बिलाम को इसराईल पर लानत भेजने के लिए बुलाता है

22 इसके बाद इसराईली मोआब के मैदानों में पहुँचकर दरियाए-यरदन के मशरिक़ी किनारे पर यरीहू के आमने-सामने ख़ैमाज़न हुए।

2मोआब के बादशाह बलक़ बिन सफ़ोर को मालूम हुआ कि इसराईलियों ने अमोरियों के साथ क्या कुछ किया है। 3मोआबियों ने यह भी देखा कि इसराईली बहुत ज़्यादा हैं, इसलिए उन पर दहशत छा गई। 4उन्होंने मिदियानियों के बुज़ुर्गों से बात की, "अब यह हुजूम उस तरह हमारे इर्दगिर्द का इलाक़ा चट कर जाएगा जिस तरह बैल मैदान की घास चट कर जाता है।"

5तब बलक़ ने अपने क़ासिद फ़तोर शहर को भेजे जो दरियाए-फ़ुरात पर वाक़े था और जहाँ बिलाम बिन बओर अपने वतन में रहता था। क़ासिद उसे बुलाने के लिए उसके पास पहुँचे और उसे बलक़ का पैग़ाम सुनाया, "एक क़ौम मिसर से निकल आई है जो रूए-ज़मीन पर छाकर मेरे क़रीब ही आबाद हुई है। 6इसलिए आएँ और इन लोगों पर लानत भेजें, क्योंकि वह मुझसे ज़्यादा ताक़तवर हैं। फिर शायद मैं उन्हें शिकस्त देकर मुल्क से भगा सकूँ। क्योंकि मैं जानता हूँ कि जिन्हें आप बरकत देते हैं उन्हें बरकत मिलती है

और जिन पर आप लानत भेजते हैं उन पर लानत आती है।”

7यह पैग़ाम लेकर मोआब और मिदियान के बुज़ुर्ग रवाना हुए। उनके पास इनाम के पैसे थे। बिलाम के पास पहुँचकर उन्होंने उसे बलक़ का पैग़ाम सुनाया। 8बिलाम ने कहा, “रात यहाँ गुज़ारें। कल मैं आपको बता दूँगा कि रब इसके बारे में क्या फ़रमाता है।” चुनाँचे मोआबी सरदार उसके पास ठहर गए।

9रात के वक़्त अल्लाह बिलाम पर ज़ाहिर हुआ। उसने पूछा, “यह आदमी कौन हैं जो तेरे पास आए हैं?” 10बिलाम ने जवाब दिया, “मोआब के बादशाह बलक़ बिन सफ़ोर ने मुझे पैग़ाम भेजा है, 11‘जो क़ौम मिसर से निकल आई है वह रूए-ज़मीन पर छा गई है। इसलिए आएँ और मेरे लिए उन पर लानत भेजें। फिर शायद मैं उनसे लड़कर उन्हें भगा देने में कामयाब हो जाऊँ’।” 12रब ने बिलाम से कहा, “उनके साथ न जाना। तुझे उन पर लानत भेजने की इजाज़त नहीं है, क्योंकि उन पर मेरी बरकत है।”

13अगली सुबह बिलाम जाग उठा तो उसने बलक़ के सरदारों से कहा, “अपने वतन वापस चले जाएँ, क्योंकि रब ने मुझे आपके साथ जाने की इजाज़त नहीं दी।” 14चुनाँचे मोआबी सरदार ख़ाली हाथ बलक़ के पास वापस आए। उन्होंने कहा, “बिलाम हमारे साथ आने से इनकार करता है।” 15तब बलक़ ने और सरदार भेजे जो पहलेवालों की निसबत तादाद और ओहदे के लिहाज़ से ज़्यादा थे। 16वह बिलाम के पास जाकर कहने लगे, “बलक़ बिन सफ़ोर कहते हैं कि कोई भी बात आपको मेरे पास आने से न रोके, 17क्योंकि मैं आपको बड़ा इनाम दूँगा। आप जो भी कहेंगे मैं करने के लिए तैयार हूँ। आएँ तो सही और मेरे लिए उन लोगों पर लानत भेजें।”

18लेकिन बिलाम ने जवाब दिया, “अगर बलक़ अपने महल को चाँदी और सोने से भरकर भी मुझे दे तो भी मैं रब अपने ख़ुदा के फ़रमान की ख़िलाफ़वरज़ी नहीं कर सकता, ख़ाह बात छोटी हो या बड़ी। 19आप दूसरे सरदारों की तरह रात यहाँ गुज़ारें। इतने में मैं मालूम करूँगा कि रब मुझे मज़ीद क्या कुछ बताता है।”

20उस रात अल्लाह बिलाम पर ज़ाहिर हुआ और कहा, “चूँकि यह आदमी तुझे बुलाने आए हैं इसलिए उनके साथ चला जा। लेकिन सिर्फ़ वही कुछ करना जो मैं तुझे बताऊँगा।”

बिलाम की गधी

21सुबह को बिलाम ने उठकर अपनी गधी पर ज़ीन कसा और मोआबी सरदारों के साथ चल पड़ा। 22लेकिन अल्लाह निहायत ग़ुस्से हुआ कि वह जा रहा है, इसलिए उसका फ़रिश्ता उसका मुक़ाबला करने के लिए रास्ते में खड़ा हो गया। बिलाम अपनी गधी पर सवार था और उसके दो नौकर उसके साथ चल रहे थे। 23जब गधी ने देखा कि रब का फ़रिश्ता अपने हाथ में तलवार थामे हुए रास्ते में खड़ा है तो वह रास्ते से हटकर खेत में चलने लगी। बिलाम उसे मारते मारते रास्ते पर वापस ले आया।

24फिर वह अंगूर के दो बाग़ों के दरमियान से गुज़रने लगे। रास्ता तंग था, क्योंकि वह दोनों तरफ़ बाग़ों की चारदीवारी से बंद था। अब रब का फ़रिश्ता वहाँ खड़ा हुआ। 25गधी यह देखकर चारदीवारी के साथ साथ चलने लगी, और बिलाम का पाँव कुचला गया। उसने उसे दुबारा मारा।

26रब का फ़रिश्ता आगे निकला और तीसरी मरतबा रास्ते में खड़ा हो गया। अब रास्ते से हट जाने की कोई गुंजाइश नहीं थी, न दाईं तरफ़ और न बाईं तरफ़। 27जब गधी ने रब का फ़रिश्ता देखा तो वह लेट गई। बिलाम को ग़ुस्सा आ गया, और उसने उसे अपनी लाठी से ख़ूब मारा।

28तब रब ने गधी को बोलने दिया, और उसने बिलाम से कहा, “मैंने आपसे क्या ग़लत सुलूक किया है कि आप मुझे अब तीसरी दफ़ा पीट रहे हैं?” 29बिलाम ने जवाब दिया, “तूने मुझे बेवुक़ूफ़ बनाया है! काश मेरे हाथ में तलवार होती तो मैं अभी तुझे ज़बह कर देता!” 30गधी

ने बिलाम से कहा, “क्या मैं आपकी गधी नहीं हूँ जिस पर आप आज तक सवार होते रहे हैं? क्या मुझे कभी ऐसा करने की आदत थी?” उसने कहा, “नहीं।”

31फिर रब ने बिलाम की आँखें खोलीं और उसने रब के फ़रिश्ते को देखा जो अब तक हाथ में तलवार थामे हुए रास्ते में खड़ा था। बिलाम ने मुँह के बल गिरकर सिजदा किया। 32रब के फ़रिश्ते ने पूछा, “तूने तीन बार अपनी गधी को क्यों पीटा? मैं तेरे मुक़ाबले में आया हूँ, क्योंकि जिस तरफ़ तू बढ़ रहा है उसका अंजाम बुरा है। 33गधी तीन मरतबा मुझे देखकर मेरी तरफ़ से हट गई। अगर वह न हटती तो तू उस वक़्त हलाक हो गया होता अगरचे मैं गधी को छोड़ देता।”

34बिलाम ने रब के फ़रिश्ते से कहा, “मैंने गुनाह किया है। मुझे मालूम नहीं था कि तू मेरे मुक़ाबले में रास्ते में खड़ा है। लेकिन अगर मेरा सफ़र तुझे बुरा लगे तो मैं अब वापस चला जाऊँगा।” 35रब के फ़रिश्ते ने कहा, “इन आदमियों के साथ अपना सफ़र जारी रख। लेकिन सिर्फ़ वही कुछ कहना जो मैं तुझे बताऊँगा।” चुनाँचे बिलाम ने बलक़ के सरदारों के साथ अपना सफ़र जारी रखा।

36जब बलक़ को ख़बर मिली कि बिलाम आ रहा है तो वह उससे मिलने के लिए मोआब के उस शहर तक गया जो मोआब की सरहद दरियाए-अरनोन पर वाक़े है। 37उसने बिलाम से कहा, “क्या मैंने आपको इत्तला नहीं भेजी थी कि आप ज़रूर आएँ? आप क्यों नहीं आए? क्या आपने सोचा कि मैं आपको मुनासिब इनाम नहीं दे पाऊँगा?” 38बिलाम ने जवाब दिया, “बहरहाल अब मैं पहुँच गया हूँ। लेकिन मैं सिर्फ़ वही कुछ कह सकता हूँ जो अल्लाह ने पहले ही मेरे मुँह में डाल दिया है।”

39फिर बिलाम बलक़ के साथ क़िरियत-हुसात गया। 40वहाँ बलक़ ने गाय-बैल और भेड़-बकरियाँ क़ुरबान करके उनके गोश्त में से बिलाम और उसके साथवाले सरदारों को दे दिया। 41अगली सुबह बलक़ बिलाम को साथ लेकर एक ऊँची जगह पर चढ़ गया जिसका नाम बामोत-बाल था। वहाँ से इसराईली ख़ैमागाह का किनारा नज़र आता था।

बिलाम की पहली बरकत

23 बिलाम ने कहा, “यहाँ मेरे लिए सात क़ुरबानगाहें बनाएँ। साथ साथ मेरे लिए सात बैल और सात मेंढे तैयार कर रखें।” 2बलक़ ने ऐसा ही किया, और दोनों ने मिलकर हर क़ुरबानगाह पर एक बैल और एक मेंढा चढ़ाया। 3फिर बिलाम ने बलक़ से कहा, “यहाँ अपनी क़ुरबानी के पास खड़े रहें। मैं कुछ फ़ासले पर जाता हूँ, शायद रब मुझसे मिलने आए। जो कुछ वह मुझ पर ज़ाहिर करे मैं आपको बता दूँगा।”

यह कहकर वह एक ऊँचे मक़ाम पर चला गया जो हरियाली से बिलकुल महरूम था। 4वहाँ अल्लाह बिलाम से मिला। बिलाम ने कहा, “मैंने सात क़ुरबानगाहें तैयार करके हर क़ुरबानगाह पर एक बैल और एक मेंढा क़ुरबान किया है।” 5तब रब ने उसे बलक़ के लिए पैग़ाम दिया और कहा, “बलक़ के पास वापस जा और उसे यह पैग़ाम सुना।” 6बिलाम बलक़ के पास वापस आया जो अब तक मोआबी सरदारों के साथ अपनी क़ुरबानी के पास खड़ा था। 7बिलाम बोल उठा,

“बलक़ मुझे अराम से यहाँ लाया है, मोआबी बादशाह ने मुझे मशरिक़ी पहाड़ों से बुलाकर कहा, ‘आओ, याक़ूब पर मेरे लिए लानत भेजो। आओ, इसराईल को बददुआ दो।’

8मैं किस तरह उन पर लानत भेजूँ जिन पर अल्लाह ने लानत नहीं भेजी? मैं किस तरह उन्हें बददुआ दूँ जिन्हें रब ने बददुआ नहीं दी?

9मैं उन्हें चट्टानों की चोटी से देखता हूँ, पहाड़ियों से उनका मुशाहदा करता हूँ। वाक़ई यह एक ऐसी क़ौम है जो दूसरों से अलग रहती है। यह अपने आपको दूसरी क़ौमों से मुमताज़ समझती है।

10कौन याक़ूब की औलाद को गिन सकता है
जो गर्द की मानिंद बेशुमार है।
कौन इसराईलियों का चौथा हिस्सा भी गिन सकता है?
रब करे कि मैं रास्तबाज़ों की मौत मरूँ,
कि मेरा अंजाम उनके अंजाम जैसा अच्छा हो।"

11बलक़ ने बिलाम से कहा, "आपने मेरे साथ
क्या किया है? मैं आपको अपने दुश्मनों पर
लानत भेजने के लिए लाया और आपने उन्हें
अच्छी-ख़ासी बरकत दी है।" 12बिलाम ने जवाब
दिया, "क्या लाज़िम नहीं कि मैं वही कुछ बोलूँ
जो रब ने बताने को कहा है?"

बिलाम की दूसरी बरकत

13फिर बलक़ ने उससे कहा, "आएँ, हम एक
और जगह जाएँ जहाँ से आप इसराईली क़ौम को
देख सकेंगे, गो उनकी ख़ैमागाह का सिर्फ़ किनारा
ही नज़र आएगा। आप सबको नहीं देख सकेंगे।
वहीं से उन पर मेरे लिए लानत भेजें।" 14यह
कहकर वह उसके साथ पिसगा की चोटी पर
चढ़कर पहरेदारों के मैदान तक पहुँच गया। वहाँ
भी उसने सात क़ुरबानगाहें बनाकर हर एक पर
एक बैल और एक मेंढा क़ुरबान किया। 15बिलाम
ने बलक़ से कहा, "यहाँ अपनी क़ुरबानगाह के
पास खड़े रहें। मैं कुछ फ़ासले पर जाकर रब से
मिलूँगा।"

16रब बिलाम से मिला। उसने उसे बलक़ के
लिए पैग़ाम दिया और कहा, "बलक़ के पास
वापस जा और उसे यह पैग़ाम सुना दे।" 17वह
वापस चला गया। बलक़ अब तक अपने सरदारों
के साथ अपनी क़ुरबानी के पास खड़ा था। उसने
उससे पूछा, "रब ने क्या कहा?" 18बिलाम ने
कहा, "ऐ बलक़, उठो और सुनो। ऐ सफ़ोर के
बेटे, मेरी बात पर ग़ौर करो।

19अल्लाह आदमी नहीं जो झूट बोलता है।
वह इनसान नहीं जो कोई फ़ैसला करके बाद में
पछताए। क्या वह कभी अपनी बात पर अमल
नहीं करता? क्या वह कभी अपनी बात पूरी नहीं
करता?

20मुझे बरकत देने को कहा गया है। उसने
बरकत दी है और मैं यह बरकत रोक नहीं सकता।

21याक़ूब के घराने में ख़राबी नज़र नहीं आती,
इसराईल में दुख दिखाई नहीं देता। रब उसका
ख़ुदा उसके साथ है, और क़ौम बादशाह की ख़ुशी
में नारे लगाती है।

22अल्लाह उन्हें मिसर से निकाल लाया, और
उन्हें जंगली बैल की ताक़त हासिल है।

23याक़ूब के घराने के ख़िलाफ़ जादूगरी
नाकाम है, इसराईल के ख़िलाफ़ ग़ैबदानी
बेफ़ायदा है। अब याक़ूब के घराने से कहा जाएगा,
'अल्लाह ने कैसा काम किया है!'

24इसराईली क़ौम शेरनी की तरह उठती और
शेरबबर की तरह खड़ी हो जाती है। जब तक वह
अपना शिकार न खा ले वह आराम नहीं करता,
जब तक वह मारे हुए लोगों का ख़ून न पी ले वह
नहीं लेटता।"

25यह सुनकर बलक़ ने कहा, "अगर आप उन
पर लानत भेजने से इनकार करें, कम अज़ कम
उन्हें बरकत तो न दें।" 26बिलाम ने जवाब दिया,
"क्या मैंने आपको नहीं बताया था कि जो कुछ
भी रब कहेगा मैं वही करूँगा?"

बिलाम की तीसरी बरकत

27तब बलक़ ने बिलाम से कहा, "आएँ, मैं
आपको एक और जगह ले जाऊँ। शायद अल्लाह
राज़ी हो जाए कि आप मेरे लिए वहाँ से उन पर
लानत भेजें।" 28वह उसके साथ फ़ग़ूर पहाड़ पर
चढ़ गया। उस की चोटी से यरदन की वादी का
जुनूबी हिस्सा यशीमोन दिखाई दिया। 29बिलाम
ने उससे कहा, "मेरे लिए यहाँ सात क़ुरबानगाहें
बनाकर सात बैल और सात मेंढे तैयार कर
रखें।" 30बलक़ ने ऐसा ही किया। उसने हर एक
क़ुरबानगाह पर एक बैल और एक मेंढा क़ुरबान
किया।

24 अब बिलाम को उस बात का पूरा यक़ीन हो गया कि रब को पसंद है कि मैं इसराईलियों को बरकत दूँ। इसलिए उसने इस मरतबा पहले की तरह जादूगरी का तरीक़ा इस्तेमाल न किया बल्कि सीधा रेगिस्तान की तरफ़ रुख़ किया 2जहाँ इसराईल अपने अपने क़बीलों की तरतीब से ख़ैमाज़न था। यह देखकर अल्लाह का रूह उस पर नाज़िल हुआ, 3और वह बोल उठा,

“बिलाम बिन बओर का पैग़ाम सुनो, उसके पैग़ाम पर ग़ौर करो जो साफ़ साफ़ देखता है,

4उसका पैग़ाम जो अल्लाह की बातें सुन लेता है, क़ादिरे-मुतलक़ की रोया को देख लेता है और ज़मीन पर गिरकर पोशीदा बातें देखता है।

5ऐ याक़ूब, तेरे ख़ैमे कितने शानदार हैं! ऐ इसराईल, तेरे घर कितने अच्छे हैं!

6वह दूर तक फैली हुई वादियों की मानिंद, नहर के किनारे लगे बाग़ों की मानिंद, रब के लगाए हुए ऊद के दरख़्तों की मानिंद, पानी के किनारे लगे देवदार के दरख़्तों की मानिंद हैं।

7उनकी बालटियों से पानी छलकता रहेगा, उनके बीज को कसरत का पानी मिलेगा। उनका बादशाह अजाज से ज़्यादा ताक़तवर होगा, और उनकी सलतनत सरफ़राज़ होगी।

8अल्लाह उन्हें मिसर से निकाल लाया, और उन्हें जंगली बैल की-सी ताक़त हासिल है। वह मुख़ालिफ़ क़ौमों को हड़प करके उनकी हड्डियाँ चूर चूर कर देते हैं, वह अपने तीर चलाकर उन्हें मार डालते हैं।

9इसराईल शेरबबर या शेरनी की मानिंद है। जब वह दबककर बैठ जाए तो कोई भी उसे छेड़ने की जुर्रत नहीं करता। जो तुझे बरकत दे उसे बरकत मिले, और जो तुझ पर लानत भेजे उस पर लानत आए।”

10यह सुनकर बलक़ आपे से बाहर हुआ। उसने ताली बजाकर अपनी हिक़ारत का इज़हार किया और कहा, “मैंने तुझे इसलिए बुलाया था कि तू मेरे दुश्मनों पर लानत भेजे। अब तूने उन्हें तीनों बार बरकत ही दी है। 11अब दफ़ा हो जा! अपने घर वापस भाग जा! मैंने कहा था कि बड़ा इनाम दूँगा। लेकिन रब ने तुझे इनाम पाने से रोक दिया है।”

12बिलाम ने जवाब दिया, “क्या मैंने उन लोगों को जिन्हें आपने मुझे बुलाने के लिए भेजा था नहीं बताया था 13कि अगर बलक़ अपने महल को चाँदी और सोने से भरकर भी मुझे दे दे तो भी मैं रब की किसी बात की ख़िलाफ़वरज़ी नहीं कर सकता, ख़ाह मेरी नीयत अच्छी हो या बुरी। मैं सिर्फ़ वह कुछ कर सकता हूँ जो अल्लाह फ़रमाता है। 14अब मैं अपने वतन वापस चला जाता हूँ। लेकिन पहले मैं आपको बता देता हूँ कि आख़िरकार यह क़ौम आपकी क़ौम के साथ क्या कुछ करेगी।”

बिलाम की चौथी बरकत

15वह बोल उठा,

“बिलाम बिन बओर का पैग़ाम सुनो, उसका पैग़ाम जो साफ़ साफ़ देखता है,

16उसका पैग़ाम जो अल्लाह की बातें सुन लेता और अल्लाह तआला की मरज़ी को जानता है, जो क़ादिरे-मुतलक़ की रोया को देख लेता और ज़मीन पर गिरकर पोशीदा बातें देखता है।

17जिसे मैं देख रहा हूँ वह इस वक़्त नहीं है। जो मुझे नज़र आ रहा है वह क़रीब नहीं है। याक़ूब के घराने से सितारा निकलेगा, और इसराईल से असाए-शाही उठेगा जो मोआब के माथों और सेत के तमाम बेटों की खोपड़ियों को पाश पाश करेगा।

18अदोम उसके क़ब्ज़े में आएगा, उसका दुश्मन सईर उस की मिलकियत बनेगा जबकि इसराईल की ताक़त बढ़ती जाएगी।

19याक़ूब के घराने से एक हुक्मरान निकलेगा जो शहर के बचे हुओं को हलाक कर देगा।”

बिलाम के आख़िरी पैग़ाम

20फिर बिलाम ने अमालीक़ को देखा और कहा,

“अमालीक़ क़ौमों में अव्वल था, लेकिन आख़िरकार वह ख़त्म हो जाएगा।”

21फिर उसने क़ीनियों को देखा और कहा,

“तेरी सुकूनतगाह मुस्तहकम है, तेरा चट्टान में बना घोंसला मज़बूत है।

22लेकिन तू तबाह हो जाएगा जब असूर तुझे गिरिफ़्तार करेगा।”

23एक और दफ़ा उसने बात की,

“हाय, कौन ज़िंदा रह सकता है जब अल्लाह यों करेगा?

24कित्तीम के साहिल से बहरी जहाज़ आएँगे जो असूर और इबर को ज़लील करेंगे, लेकिन वह ख़ुद भी हलाक हो जाएंगे।”

25फिर बिलाम उठकर अपने घर वापस चला गया। बलक़ भी वहाँ से चला गया।

मोआब इसराईलियों की आज़माइश करता है

25 जब इसराईली शित्तीम में रह रहे थे तो इसराईली मर्द मोआबी औरतों से ज़िनाकारी करने लगे। 2यह ऐसा हुआ कि मोआबी औरतें अपने देवताओं को क़ुरबानियाँ पेश करते वक़्त इसराईलियों को शरीक होने की दावत देने लगीं। इसराईली दावत क़बूल करके क़ुरबानियों से खाने और देवताओं को सिजदा करने लगे। 3इस तरीक़े से इसराईली मोआबी देवता बनाम बाल-फ़ग़ूर की पूजा करने लगे, और रब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा। 4उसने मूसा से कहा, “इस क़ौम के तमाम राहनुमाओं को सज़ाए-मौत देकर सूरज की रौशनी में रब के सामने लटका, वरना रब का इसराईलियों पर से ग़ज़ब नहीं टलेगा।” 5चुनाँचे मूसा ने इसराईल के क़ाज़ियों से कहा, “लाज़िम है कि तुममें से हर एक अपने उन आदमियों को जान से मार दे जो बाल-फ़ग़ूर देवता की पूजा में शरीक हुए हैं।”

6मूसा और इसराईल की पूरी जमात मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर जमा होकर रोने लगे। इत्तफ़ाक़ से उसी वक़्त एक आदमी वहाँ से गुज़रा जो एक मिदियानी औरत को अपने घर ले जा रहा था। 7यह देखकर हारून का पोता फ़ीनहास बिन इलियज़र जमात से निकला और नेज़ा पकड़कर 8उस इसराईली के पीछे चल पड़ा। वह औरत समेत अपने ख़ैमे में दाख़िल हुआ तो फ़ीनहास ने उनके पीछे पीछे जाकर नेज़ा इतने ज़ोर से मारा कि वह दोनों में से गुज़र गया। उस वक़्त वबा फैलने लगी थी, लेकिन फ़ीनहास के इस अमल से वह रुक गई। 9तो भी 24,000 अफ़राद मर चुके थे।

10रब ने मूसा से कहा, 11“हारून के पोते फ़ीनहास बिन इलियज़र ने इसराईलियों पर मेरा ग़ुस्सा ठंडा कर दिया है। मेरी ग़ैरत अपनाकर वह इसराईल में दीगर माबूदों की पूजा को बरदाश्त न कर सका। इसलिए मेरी ग़ैरत ने इसराईलियों को नेस्तो-नाबूद नहीं किया। 12लिहाज़ा उसे बता देना कि मैं उसके साथ सलामती का अहद क़ायम करता हूँ। 13इस अहद के तहत उसे और उस की औलाद को अबद तक इमाम का ओहदा हासिल रहेगा, क्योंकि अपने ख़ुदा की ख़ातिर ग़ैरत खाकर उसने इसराईलियों का कफ़्फ़ारा दिया।”

14जिस आदमी को मिदियानी औरत के साथ मार दिया गया उसका नाम ज़िमरी बिन सलू था, और वह शमाऊन के क़बीले के एक आबाई घराने का सरपरस्त था। 15मिदियानी औरत का नाम कज़बी था, और वह सूर की बेटी थी जो मिदियानियों के एक आबाई घराने का सरपरस्त था।

16रब ने मूसा से कहा, 17“मिदियानियों को दुश्मन क़रार देकर उन्हें मार डालना। 18क्योंकि उन्होंने अपनी चालाकियों से तुम्हारे साथ दुश्मन का-सा सुलूक किया, उन्होंने तुम्हें बाल-फ़ग़ूर की पूजा करने पर उकसाया और तुम्हें अपनी बहन मिदियानी सरदार की बेटी कज़बी के ज़रीए जिसे वबा फैलते वक़्त मार दिया गया बहकाया।”

दूसरी मर्दुमशुमारी

26 वबा के बाद रब ने मूसा और हारून के
बेटे इलियज़र से कहा,
2 "पूरी इसराईली जमात की मर्दुमशुमारी उनके
आबाई घरानों के मुताबिक़ करना। उन तमाम मर्दों
को गिनना जो 20 साल या इससे ज़ायद के हैं
और जो जंग लड़ने के क़ाबिल हैं।"

3-4 मूसा और इलियज़र ने इसराईलियों को
बताया कि रब ने उन्हें क्या हुक्म दिया है।
चुनाँचे उन्होंने मोआब के मैदानी इलाक़े में यरीहू
के सामने, लेकिन दरियाए-यरदन के मशरिक़ी
किनारे पर मर्दुमशुमारी की। यह वह इसराईली
आदमी थे जो मिसर से निकले थे।

5-7 इसराईल के पहलौठे रूबिन के क़बीले के
43,730 मर्द थे। क़बीले के चार कुंबे हनूकी,
फ़ल्लुवी, हसरोनी और करमी रूबिन के बेटों
हनूक, फ़ल्लू, हसरोन और करमी से निकले हुए
थे। 8 रूबिन का बेटा फ़ल्लू इलियाब का बाप था
9 जिसके बेटे नमुएल, दातन और अबीराम थे।

दातन और अबीराम वही लोग थे जिन्हें जमात
ने चुना था और जिन्होंने क़ोरह के गुरोह समेत
मूसा और हारून से झगड़ते हुए ख़ुद रब से झगड़ा
किया। 10 उस वक़्त ज़मीन ने अपना मुँह खोलकर
उन्हें क़ोरह समेत हड़प कर लिया था। उसके 250
साथी भी मर गए थे जब आग ने उन्हें भस्म कर
दिया। यों वह सब इसराईल के लिए इबरतअंगेज़
मिसाल बन गए थे। 11 लेकिन क़ोरह की पूरी
नसल मिटाई नहीं गई थी।

12-14 शमाऊन के क़बीले के 22,200 मर्द थे।
क़बीले के पाँच कुंबे नमुएली, यमीनी, यकीनी,
ज़ारही और साऊली शमाऊन के बेटों नमुएल,
यमीन, यकीन, ज़ारह और साऊल से निकले हुए
थे।

15-18 जद के क़बीले के 40,500 मर्द थे।
क़बीले के सात कुंबे सफ़ोनी, हज्जी, सूनी,
उज़नी, एरी, अरूदी और अरेली जद के बेटों
सफ़ोन, हज्जी, सूनी, उज़नी, एरी, अरूद और
अरेली से निकले हुए थे।

19-22 यहूदाह के क़बीले के 76,500 मर्द थे।
यहूदाह के दो बेटे एर और ओनान मिसर आने
से पहले कनान में मर गए थे। क़बीले के तीन
कुंबे सेलानी, फ़ारसी और ज़ारही यहूदाह के बेटों
सेला, फ़ारस और ज़ारह से निकले हुए थे।

फ़ारस के दो बेटों हसरोन और हमूल से
दो कुंबे हसरोनी और हमूली निकले हुए थे।
23-25 इशकार के क़बीले के 64,300 मर्द थे।
क़बीले के चार कुंबे तोलई, फ़ुव्वी, यसूबी और
सिमरोनी इशकार के बेटों तोला, फ़ुव्वा, यसूब
और सिमरोन से निकले हुए थे।

26-27 ज़बूलून के क़बीले के 60,500 मर्द
थे। क़बीले के तीन कुंबे सरदी, ऐलोनी और
यहलियेली ज़बूलून के बेटों सरद, ऐलोन और
यहलियेल से निकले हुए थे।

28 यूसुफ़ के दो बेटों मनस्सी और इफ़राईम के
अलग अलग क़बीले बने।

29-34 मनस्सी के क़बीले के 52,700 मर्द
थे। क़बीले के आठ कुंबे मकीरी, जिलियादी,
इयज़री, ख़लक़ी, असरियेली, सिकमी, समीदाई
और हिफ़री थे। मकीरी मनस्सी के बेटे मकीर
से जबकि जिलियादी मकीर के बेटे जिलियाद से
निकले हुए थे। बाक़ी कुंबे जिलियाद के छः बेटों
इयज़र, ख़लक़, असरियेल, सिकम, समीदा और
हिफ़र से निकले हुए थे।

हिफ़र सिलाफ़िहाद का बाप था। सिला-
फ़िहाद का कोई बेटा नहीं बल्कि पाँच बेटियाँ
महलाह, नुआह, हुजलाह, मिलकाह और तिरज़ा
थीं।

35-37 इफ़राईम के क़बीले के 32,500 मर्द
थे। क़बीले के चार कुंबे सूतलही, बकरी, तहनी
और ईरानी थे। पहले तीन कुंबे इफ़राईम के बेटों
सूतलह, बकर और तहन से जबकि ईरानी सूतलह
के बेटे ईरान से निकले हुए थे।

38-41 बिनयमीन के क़बीले के 45,600
मर्द थे। क़बीले के सात कुंबे बालाई, अश-

बेली, अख़ीरामी, सूफ़ामी, हूफ़ामी, अरदी और नामानी थे। पहले पाँच कुंबे बिनयमीन के बेटों बाला, अशबेल, अख़ीराम, सूफ़ाम और हूफ़ाम से जबकि अरदी और नामानी बाला के बेटों से निकले हुए थे।

42-43दान के क़बीले के 64,400 मर्द थे। सब दान के बेटे सूहाम से निकले हुए थे, इसलिए सूहामी कहलाते थे।

44-47आशर के क़बीले के 53,400 मर्द थे। क़बीले के पाँच कुंबे यिमनी, इसवी, बरीई, हिबरी और मलकियेली थे। पहले तीन कुंबे आशर के बेटों यिमना, इसवी और बरिया से जबकि बाक़ी बरिया के बेटों हिबर और मलकियेल से निकले हुए थे। आशर की एक बेटी बनाम सिरह भी थी।

48-50नफ़ताली के क़बीले के 45,400 मर्द थे। क़बीले के चार कुंबे यहसियेली, जूनी, यिसरी और सिल्लीमी नफ़ताली के बेटों यहसियेल, जूनी, यिसर और सिल्लीम से निकले हुए थे।

51इसराईली मर्दों की कुल तादाद 6,01,730 थी।

52रब ने मूसा से कहा, 53“जब मुल्के-कनान को तक़सीम किया जाएगा तो ज़मीन इनकी तादाद के मुताबिक़ देना है। 54बड़े क़बीलों को छोटे की निसबत ज़्यादा ज़मीन दी जाए। हर क़बीले का इलाक़ा उस की तादाद से मुताबिक़त रखे। 55-56क़ुरा डालने से फ़ैसला किया जाए कि हर क़बीले को कहाँ ज़मीन मिलेगी। लेकिन हर क़बीले के इलाक़े का रक़बा इस पर मबनी हो कि क़बीले के कितने अफ़राद हैं।”

57लावी के क़बीले के तीन कुंबे जैरसोनी, क़िहाती और मिरारी लावी के बेटों जैरसोन, क़िहात और मिरारी से निकले हुए थे। 58इसके अलावा लिबनी, हिब्रूनी, महली, मूशी और कोरही भी लावी के कुंबे थे। क़िहात अमराम का बाप था। 59अमराम ने लावी औरत यूकबिद से शादी की जो मिसर में पैदा हुई थी। उनके दो बेटे हारून और मूसा और एक बेटी मरियम पैदा हुए। 60हारून के बेटे नदब, अबीहू, इलियज़र और इतमर थे। 61लेकिन नदब और अबीहू रब को बख़ूर की नाजायज़ क़ुरबानी पेश करने के बाइस मर गए। 62लावियों के मर्दों की कुल तादाद 23,000 थी। इनमें वह सब शामिल थे जो एक माह या इससे ज़ायद के थे। उन्हें दूसरे इसराईलियों से अलग गिना गया, क्योंकि उन्हें इसराईल में मीरास में ज़मीन नहीं मिलनी थी।

63यों मूसा और इलियज़र ने मोआब के मैदानी इलाक़े में यरीहू के सामने लेकिन दरियाए-यरदन के मशरिक़ी किनारे पर इसराईलियों की मर्दुमशुमारी की। 64लोगों को गिनते गिनते उन्हें मालूम हुआ कि जो लोग दश्ते-सीन में मूसा और हारून की पहली मर्दुमशुमारी में गिने गए थे वह सब मर चुके हैं। 65रब ने कहा था कि वह सबके सब रेगिस्तान में मर जाएंगे, और ऐसा ही हुआ था। सिर्फ़ कालिब बिन यफ़ुन्ना और यशुअ बिन नून ज़िंदा रहे।

सिलाफ़िहाद की बेटियाँ

27 सिलाफ़िहाद की पाँच बेटियाँ महलाह, नुआह, हुजलाह, मिल-काह और तिरज़ा थीं। सिलाफ़िहाद यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के कुंबे का था। उसका पूरा नाम सिलाफ़िहाद बिन हिफ़र बिन जिलियाद बिन मकीर बिन मनस्सी बिन यूसुफ़ था। 2सिलाफ़िहाद की बेटियाँ मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर आकर मूसा, इलियज़र इमाम और पूरी जमात के सामने खड़ी हुईं। उन्होंने कहा, 3“हमारा बाप रेगिस्तान में फ़ौत हुआ। लेकिन वह क़ोरह के उन साथियों में से नहीं था जो रब के ख़िलाफ़ मुत्तहिद हुए थे। वह इस सबब से न मरा बल्कि अपने ज़ाती गुनाह के बाइस। जब वह मर गया तो उसका कोई बेटा नहीं था। 4क्या यह ठीक है कि हमारे ख़ानदान में बेटा न होने के बाइस हमें ज़मीन न मिले और हमारे बाप का नामो-निशान मिट जाए? हमें भी हमारे बाप के दीगर रिश्तेदारों के साथ ज़मीन दें।”

5मूसा ने उनका मामला रब के सामने पेश
किया 6तो रब ने उससे कहा, 7“जो बात
सिलाफ़िहाद की बेटियाँ कर रही हैं वह दुरुस्त
है। उन्हें ज़रूर उनके बाप के रिश्तेदारों के साथ
ज़मीन मिलनी चाहिए। उन्हें बाप का विरसा मिल
जाए। 8इसराईलियों को भी बताना कि जब भी
कोई आदमी मर जाए जिसका बेटा न हो तो उस
की बेटी को उस की मीरास मिल जाए। 9अगर
उस की बेटी भी न हो तो उसके भाइयों को उस
की मीरास मिल जाए। 10अगर उसके भाई भी न
हों तो उसके बाप के भाइयों को उस की मीरास
मिल जाए। 11अगर यह भी न हों तो उसके सबसे
क़रीबी रिश्तेदार को उस की मीरास मिल जाए।
वह उस की ज़ाती मिलकियत होगी। यह उसूल
इसराईलियों के लिए क़ानूनी हैसियत रखता है।
वह इसे वैसा मानें जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया
है।”

यशुअ को मूसा का जा-नशीन मुक़र्रर किया जाता है

12फिर रब ने मूसा से कहा, “अबारीम के
पहाड़ी सिलसिले के इस पहाड़ पर चढ़कर उस
मुल्क पर निगाह डाल जो मैं इसराईलियों को
दूँगा। 13उसे देखने के बाद तू भी अपने भाई
हारून की तरह कूच करके अपने बापदादा से
जा मिलेगा, 14क्योंकि तुम दोनों ने दश्ते-सीन
में मेरे हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी की। उस वक़्त
जब पूरी जमात ने मरीबा में मेरे ख़िलाफ़ गिला-
शिकवा किया तो तूने चट्टान से पानी निकालते
वक़्त लोगों के सामने मेरी क़ुद्दूसियत क़ायम न
रखी।” (मरीबा दश्ते-सीन के क़ादिस में चश्मा
है।)

15मूसा ने रब से कहा, 16“ऐ रब, तमाम जानों
के ख़ुदा, जमात पर किसी आदमी को मुक़र्रर कर
17जो उनके आगे आगे जंग के लिए निकले और
उनके आगे आगे वापस आ जाए, जो उन्हें बाहर
ले जाए और वापस ले आए। वरना रब की जमात
उन भेड़ों की मानिंद होगी जिनका कोई चरवाहा
न हो।”

18जवाब में रब ने मूसा से कहा, “यशुअ बिन
नून को चुन ले जिसमें मेरा रूह है, और अपना हाथ
उस पर रख। 19उसे इलियज़र इमाम और पूरी
जमात के सामने खड़ा करके उनके रूबरू ही उसे
राहनुमाई की ज़िम्मेदारी दे। 20अपने इख़्तियार में
से कुछ उसे दे ताकि इसराईल की पूरी जमात
उस की इताअत करे। 21रब की मरज़ी जानने के
लिए वह इलियज़र इमाम के सामने खड़ा होगा
तो इलियज़र रब के सामने ऊरीम और तुम्मीम
इस्तेमाल करके उस की मरज़ी दरियाफ़्त करेगा।
उसी के हुक्म पर यशुअ और इसराईल की पूरी
जमात ख़ैमागाह से निकलेंगे और वापस आएँगे।”

22मूसा ने ऐसा ही किया। उसने यशुअ को
चुनकर इलियज़र और पूरी जमात के सामने खड़ा
किया। 23फिर उसने उस पर अपने हाथ रखकर
उसे राहनुमाई की ज़िम्मेदारी सौंपी जिस तरह रब
ने उसे बताया था।

रोज़मर्रा की क़ुरबानियाँ

28 रब ने मूसा से कहा, 2“इसराई-
लियों को बताना, ख़याल रखो
कि तुम मुक़र्ररा औक़ात पर मुझे जलनेवाली
क़ुरबानियाँ पेश करो। यह मेरी रोटी हैं और इनकी
ख़ुशबू मुझे पसंद है। 3रब को जलनेवाली यह
क़ुरबानी पेश करना :

रोज़ाना भेड़ के दो यकसाला बच्चे जो बेऐब
हों पूरे तौर पर जला देना। 4एक को सुबह के
वक़्त पेश करना और दूसरे को सूरज के डूबने के
ऐन बाद। 5भेड़ के बच्चे के साथ ग़ल्ला की नज़र
भी पेश की जाए यानी डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन
मैदा जो एक लिटर ज़ैतून के कूटकर निकाले हुए
तेल के साथ मिलाया गया हो। 6यह रोज़मर्रा
की क़ुरबानी है जो पूरे तौर पर जलाई जाती है
और पहली दफ़ा सीना पहाड़ पर चढ़ाई गई। इस
जलनेवाली क़ुरबानी की ख़ुशबू रब को पसंद है।
7-8साथ ही एक लिटर शराब भी नज़र के तौर

पर क़ुरबानगाह पर डाली जाए। सुबह और शाम की यह क़ुरबानियाँ दोनों ही इस तरीक़े से पेश की जाएँ।

सबत यानी हफ़्ते की क़ुरबानी

9सबत के दिन भेड़ के दो और बच्चे चढ़ाना। वह भी बेऐब और एक साल के हों। साथ ही मै और ग़ल्ला की नज़रें भी पेश की जाएँ। ग़ल्ला की नज़र के लिए 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा तेल के साथ मिलाया जाए। 10भस्म होनेवाली यह क़ुरबानी हर हफ़्ते के दिन पेश करनी है। यह रोज़मर्रा की क़ुरबानियों के अलावा है।

हर माह के पहले दिन की क़ुरबानी

11हर माह के शुरू में रब को भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर दो जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे पेश करना। सब बग़ैर नुक़्स के हों। 12हर जानवर के साथ ग़ल्ला की नज़र पेश करना जिसके लिए तेल में मिलाया गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। हर बैल के साथ साढ़े 4 किलोग्राम, हर मेंढे के साथ 3 किलोग्राम 13और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना। भस्म होनेवाली यह क़ुरबानियाँ रब को पसंद हैं। 14इन क़ुरबानियों के साथ मै की नज़र भी क़ुरबानगाह पर डालना यानी हर बैल के साथ दो लिटर, हर मेंढे के साथ सवा लिटर और भेड़ के हर बच्चे के साथ एक लिटर मै पेश करना। यह क़ुरबानी साल में हर महीने के पहले दिन के मौक़े पर पेश करनी है। 15इस क़ुरबानी और रोज़मर्रा की क़ुरबानियों के अलावा रब को एक बकरा गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर पेश करना।

फ़सह की क़ुरबानियाँ

16पहले महीने के चौधवें दिन फ़सह की ईद मनाई जाए। 17अगले दिन पूरे हफ़्ते की वह ईद शुरू होती है जिसके दौरान तुम्हें सिर्फ़ बेख़मीरी रोटी खानी है। 18पहले दिन काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। 19रब के हुज़ूर भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर दो जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे पेश करना। सब बग़ैर नुक़्स के हों। 20हर जानवर के साथ ग़ल्ला की नज़र भी पेश करना जिसके लिए तेल के साथ मिलाया गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। हर बैल के साथ साढ़े 4 किलोग्राम, हर मेंढे के साथ 3 किलोग्राम 21और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना। 22गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर एक बकरा भी पेश करना ताकि तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया जाए। 23-24इन तमाम क़ुरबानियों को ईद के दौरान हर रोज़ पेश करना। यह रोज़मर्रा की भस्म होनेवाली क़ुरबानियों के अलावा हैं। इस ख़ुराक की ख़ुशबू रब को पसंद है। 25सातवें दिन काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना।

फ़सल की कटाई की ईद की क़ुरबानियाँ

26फ़सल की कटाई के पहले दिन की ईद पर जब तुम रब को अपनी फ़सल की पहली पैदावार पेश करते हो तो काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। 27-29उस दिन दो जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे क़ुरबानगाह पर पूरे तौर पर जला देना। इसके साथ ग़ल्ला और मै की वही नज़रें पेश करना जो फ़सह की ईद पर भी पेश की जाती हैं। 30इसके अलावा रब को एक बकरा गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर चढ़ाना।

31यह तमाम क़ुरबानियाँ रोज़मर्रा की भस्म होनेवाली क़ुरबानियों और उनके साथवाली ग़ल्ला और मै की नज़रों के अलावा हैं। वह बेऐब हों।

नए साल की ईद की क़ुरबानियाँ

29 सातवें माह के पंद्रहवें दिन भी काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। उस दिन नरसिंगे फूँके जाएँ। 2रब को भस्म होनेवाली क़ुरबानी पेश की जाए

जिसकी ख़ुशबू उसे पसंद हो यानी एक जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे। सब नुक़्स के बग़ैर हों। 3हर जानवर के साथ ग़ल्ला की नज़र भी पेश करना जिसके लिए तेल के साथ मिलाया गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। बैल के साथ साढ़े 4 किलोग्राम, मेंढे के साथ 3 किलोग्राम 4और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना। 5एक बकरा भी गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर पेश करना ताकि तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया जाए। 6यह क़ुरबानियाँ रोज़ाना और हर माह के पहले दिन की क़ुरबानियों और उनके साथ की ग़ल्ला और मै की नज़रों के अलावा हैं। इनकी ख़ुशबू रब को पसंद है।

कफ़्फ़ारा के दिन की क़ुरबानियाँ

7सातवें महीने के दसवें दिन मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। उस दिन काम न करना और अपनी जान को दुख देना। 8-11रब को वही क़ुरबानियाँ पेश करना जो इसी महीने के पहले दिन पेश की जाती हैं। सिर्फ़ एक फ़रक़ है, उस दिन एक नहीं बल्कि दो बकरे गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर पेश किए जाएँ ताकि तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया जाए। ऐसी क़ुरबानियाँ रब को पसंद हैं।

झोंपड़ियों की ईद की क़ुरबानियाँ

12सातवें महीने के पंद्रहवें दिन भी काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। सात दिन तक रब की ताज़ीम में ईद मनाना। 13ईद के पहले दिन रब को 13 जवान बैल, 2 मेंढे और 14 भेड़ के यकसाला बच्चे भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश करना। इनकी ख़ुशबू उसे पसंद है। सब नुक़्स के बग़ैर हों। 14हर जानवर के साथ ग़ल्ला की नज़र भी पेश करना जिसके लिए तेल से मिलाया गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। हर बैल के साथ साढ़े 4 किलोग्राम, हर मेंढे के साथ 3 किलोग्राम 15और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना। 16इसके अलावा एक बकरा भी गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर पेश करना। यह क़ुरबानियाँ रोज़ाना की भस्म होनेवाली क़ुरबानियों और उनके साथवाली ग़ल्ला और मै की नज़रों के अलावा हैं।

17-34ईद के बाक़ी छः दिन यही क़ुरबानियाँ पेश करनी हैं। लेकिन हर दिन एक बैल कम हो यानी दूसरे दिन 12, तीसरे दिन 11, चौथे दिन 10, पाँचवें दिन 9, छटे दिन 8 और सातवें दिन 7 बैल। हर दिन गुनाह की क़ुरबानी के लिए बकरा और मामूल की रोज़ाना की क़ुरबानियाँ भी पेश करना। 35ईद के आठवें दिन काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। 36रब को एक जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश करना। इनकी ख़ुशबू रब को पसंद है। सब नुक़्स के बग़ैर हों। 37-38साथ ही वह तमाम क़ुरबानियाँ भी पेश करना जो पहले दिन पेश की जाती हैं। 39यह सब वही क़ुरबानियाँ हैं जो तुम्हें रब को अपनी ईदों पर पेश करनी हैं। यह उन तमाम क़ुरबानियों के अलावा हैं जो तुम दिली ख़ुशी से या मन्नत मानकर देते हो, चाहे वह भस्म होनेवाली, ग़ल्ला की, मै की या सलामती की क़ुरबानियाँ क्यों न हों।”

40मूसा ने रब की यह तमाम हिदायात इसराईलियों को बता दीं।

मन्नत मानने के क़वायद

30 फिर मूसा ने क़बीलों के सरदारों से कहा, “रब फ़रमाता है,

2अगर कोई आदमी रब को कुछ देने की मन्नत माने या किसी चीज़ से परहेज़ करने की क़सम खाए तो वह अपनी बात पर क़ायम रहकर उसे पूरा करे।

3अगर कोई जवान औरत जो अब तक अपने बाप के घर में रहती है रब को कुछ देने की मन्नत माने या किसी चीज़ से परहेज़ करने की क़सम खाए 4तो लाज़िम है कि वह अपनी मन्नत या क़सम की हर बात पूरी करे। शर्त यह है कि

उसका बाप उसके बारे में सुनकर एतराज़ न करे।
5लेकिन अगर उसका बाप यह सुनकर उसे ऐसा
करने से मना करे तो उस की मन्नत या क़सम
मनसूख़ है, और वह उसे पूरा करने से बरी है।
रब उसे मुआफ़ करेगा, क्योंकि उसके बाप ने उसे
मना किया है।
6हो सकता है कि किसी ग़ैरशादीशुदा औरत
ने मन्नत मानी या किसी चीज़ से परहेज़ करने
की क़सम खाई, चाहे उसने दानिस्ता तौर पर या
बेसोचे-समझे ऐसा किया। इसके बाद उस औरत
ने शादी कर ली। 7शादीशुदा हालत में भी लाज़िम
है कि वह अपनी मन्नत या क़सम की हर बात
पूरी करे। शर्त यह है कि उसका शौहर इसके बारे
में सुनकर एतराज़ न करे। 8लेकिन अगर उसका
शौहर यह सुनकर उसे ऐसा करने से मना करे तो
उस की मन्नत या क़सम मनसूख़ है, और वह
उसे पूरा करने से बरी है। रब उसे मुआफ़ करेगा।
9अगर किसी बेवा या तलाक़शुदा औरत ने मन्नत
मानी या किसी चीज़ से परहेज़ करने की क़सम
खाई तो लाज़िम है कि वह अपनी हर बात पूरी
करे।
10अगर किसी शादीशुदा औरत ने मन्नत मानी
या किसी चीज़ से परहेज़ करने की क़सम खाई
11तो लाज़िम है कि वह अपनी हर बात पूरी करे।
शर्त यह है कि उसका शौहर उसके बारे में सुनकर
एतराज़ न करे। 12लेकिन अगर उसका शौहर उसे
ऐसा करने से मना करे तो उस की मन्नत या
क़सम मनसूख़ है। वह उसे पूरा करने से बरी है।
रब उसे मुआफ़ करेगा, क्योंकि उसके शौहर ने
उसे मना किया है। 13चाहे बीवी ने कुछ देने की
मन्नत मानी हो या किसी चीज़ से परहेज़ करने की
क़सम खाई हो, उसके शौहर को उस की तसदीक़
या उसे मनसूख़ करने का इख़्तियार है। 14अगर
उसने अपनी बीवी की मन्नत या क़सम के बारे में
सुन लिया और अगले दिन तक एतराज़ न किया
तो लाज़िम है कि उस की बीवी अपनी हर बात पूरी
करे। शौहर ने अगले दिन तक एतराज़ न करने से
अपनी बीवी की बात की तसदीक़ की है। 15अगर
वह इसके बाद यह मन्नत या क़सम मनसूख़ करे
तो उसे इस क़ुसूर के नतायज भुगतने पड़ेंगे।”
16रब ने मूसा को यह हिदायात दीं। यह ऐसी
औरतों की मन्नतों या क़समों के उसूल हैं जो
ग़ैरशादीशुदा हालत में अपने बाप के घर में रहती
हैं या जो शादीशुदा हैं।

मिदियानियों से जंग

31 रब ने मूसा से कहा, 2“मिदिया-
नियों से इसराईलियों का बदला ले।
इसके बाद तू कूच करके अपने बापदादा से जा
मिलेगा।”
3चुनाँचे मूसा ने इसराईलियों से कहा,
“हथियारों से अपने कुछ आदमियों को लैस करो
ताकि वह मिदियान से जंग करके रब का बदला
लें। 4हर क़बीले के 1,000 मर्द जंग लड़ने के
लिए भेजो।”
5चुनाँचे हर क़बीले के 1,000 मुसल्लह मर्द
यानी कुल 12,000 आदमी चुने गए। 6तब मूसा
ने उन्हें जंग लड़ने के लिए भेज दिया। उसने
इलियज़र इमाम के बेटे फ़ीनहास को भी उनके
साथ भेजा जिसके पास मक़दिस की कुछ चीज़ें
और एलान करने के बिगुल थे। 7उन्होंने रब के
हुक्म के मुताबिक़ मिदियानियों से जंग की और
तमाम आदमियों को मौत के घाट उतार दिया।
8इनमें मिदियानियों के पाँच बादशाह इवी, रक़म,
सूर, हूर और रबा थे। बिलाम बिन बओर को भी
जान से मार दिया गया।
9इसराईलियों ने मिदियानी औरतों और बच्चों
को गिरिफ़्तार करके उनके तमाम गाय-बैल, भेड़-
बकरियाँ और माल लूट लिया। 10उन्होंने उनकी
तमाम आबादियों को ख़ैमागाहों समेत जलाकर
राख कर दिया। 11-12फिर वह तमाम लूटा हुआ
माल क़ैदियों और जानवरों समेत मूसा, इलियज़र
इमाम और इसराईल की पूरी जमात के पास ले
आए जो ख़ैमागाह में इंतज़ार कर रहे थे। अभी
तक वह मोआब के मैदानी इलाक़े में दरियाए-
यरदन के मशरिक़ी किनारे पर यरीहू के सामने

ठहरे हुए थे। 13मूसा, इलियज़र और जमात के
तमाम सरदार उनका इस्तक़बाल करने के लिए
ख़ैमागाह से निकले।
14उन्हें देखकर मूसा को हज़ार हज़ार और
सौ सौ अफ़राद पर मुक़र्रर अफ़सरान पर ग़ुस्सा
आया। 15उसने कहा, “आपने तमाम औरतों को
क्यों बचाए रखा? 16उन्हीं ने बिलाम के मशवरे
पर फ़ग़ूर में इसराईलियों को रब से दूर कर दिया
था। उन्हीं के सबब से रब की वबा उसके लोगों
में फैल गई। 17चुनाँचे अब तमाम लड़कों को
जान से मार दो। उन तमाम औरतों को भी मौत
के घाट उतारना जो कुँवारियाँ नहीं हैं। 18लेकिन
तमाम कुँवारियों को बचाए रखना। 19जिसने भी
किसी को मार दिया या किसी लाश को छुआ है
वह सात दिन तक ख़ैमागाह के बाहर रहे। तीसरे
और सातवें दिन अपने आपको अपने क़ैदियों
समेत गुनाह से पाक-साफ़ करना। 20हर लिबास
और हर चीज़ को पाक-साफ़ करना जो चमड़े,
बकरियों के बालों या लकड़ी की हो।”
21फिर इलियज़र इमाम ने जंग से वापस
आनेवाले मर्दों से कहा, “जो शरीअत रब ने मूसा
को दी उसके मुताबिक़ 22-23जो भी चीज़ जल
नहीं जाती उसे आग में से गुज़ार देना ताकि पाक-
साफ़ हो जाए। उसमें सोना, चाँदी, पीतल, लोहा,
टीन और सीसा शामिल है। फिर उस पर नापाकी
दूर करने का पानी छिड़कना। बाक़ी तमाम चीज़ें
पानी में से गुज़ार देना ताकि वह पाक-साफ़ हो
जाएँ। 24सातवें दिन अपने लिबास को धोना तो
तुम पाक-साफ़ होकर ख़ैमागाह में दाख़िल हो
सकते हो।”

लूटे हुए माल की तक़सीम

25रब ने मूसा से कहा, 26“तमाम क़ैदियों और
लूटे हुए जानवरों को गिन। इसमें इलियज़र इमाम
और क़बायली कुंबों के सरपरस्त तेरी मदद करें।
27सारा माल दो बराबर के हिस्सों में तक़सीम
करना, एक हिस्सा फ़ौजियों के लिए और दूसरा
बाक़ी जमात के लिए हो। 28फ़ौजियों के हिस्से के
पाँच पाँच सौ क़ैदियों में से एक एक निकालकर
रब को देना। इसी तरह पाँच पाँच सौ बैलों, गधों,
भेड़ों और बकरियों में से एक एक निकालकर
रब को देना। 29उन्हें इलियज़र इमाम को देना
ताकि वह उन्हें रब को उठानेवाली क़ुरबानी के
तौर पर पेश करे। 30बाक़ी जमात के हिस्से के
पचास पचास क़ैदियों में से एक एक निकालकर
रब को देना, इसी तरह पचास पचास बैलों, गधों,
भेड़ों और बकरियों या दूसरे जानवरों में से भी एक
एक निकालकर रब को देना। उन्हें उन लावियों को
देना जो रब के मक़दिस को सँभालते हैं।”
31मूसा और इलियज़र ने ऐसा ही किया।
32-34उन्होंने 6,75,000 भेड़-बकरियाँ,
72,000 गाय-बैल और 61,000 गधे गिने।
35इनके अलावा 32,000 क़ैदी कुँवारियाँ
भी थीं। 36-40फ़ौजियों को तमाम चीज़ों का
आधा हिस्सा मिल गया यानी 3,37,500 भेड़-
बकरियाँ, 36,000 गाय-बैल, 30,500 गधे
और 16,000 क़ैदी कुँवारियाँ। इनमें से उन्होंने
675 भेड़-बकरियाँ, 72 गाय-बैल, 61 गधे और
32 लड़कियाँ रब को दीं। 41मूसा ने रब का यह
हिस्सा इलियज़र इमाम को उठानेवाली क़ुरबानी
के तौर पर दे दिया, जिस तरह रब ने हुक्म दिया
था। 42-47बाक़ी जमात को भी लूटे हुए माल का
आधा हिस्सा मिल गया। मूसा ने पचास पचास
क़ैदियों और जानवरों में से एक एक निकालकर
उन लावियों को दे दिया जो रब का मक़दिस
सँभालते थे। उसने वैसा ही किया जैसा रब ने
हुक्म दिया था।
48फिर वह अफ़सर मूसा के पास आए जो
लशकर के हज़ार हज़ार और सौ सौ आदमियों
पर मुक़र्रर थे। 49उन्होंने उससे कहा, “आपके
ख़ादिमों ने उन फ़ौजियों को गिन लिया है जिन
पर वह मुक़र्रर हैं, और हमें पता चल गया कि एक
भी कम नहीं हुआ। 50इसलिए हम रब को सोने
का तमाम ज़ेवर क़ुरबान करना चाहते हैं जो हमें
फ़तह पाने पर मिला था मसलन सोने के बाज़ूबंद,
कंगन, मुहर लगाने की अंगूठियाँ, बालियाँ और

हार। यह सब कुछ हम रब को पेश करना चाहते
हैं ताकि रब के सामने हमारा कफ़्फ़ारा हो जाए।”
51मूसा और इलियज़र इमाम ने सोने की तमाम
चीज़ें उनसे ले लीं। 52जो चीज़ें उन्होंने अफ़सरान
के लूटे हुए माल में से रब को उठानेवाली क़ुरबानी
के तौर पर पेश कीं उनका पूरा वज़न तक़रीबन
190 किलोग्राम था। 53सिर्फ़ अफ़सरान ने ऐसा
किया। बाक़ी फ़ौजियों ने अपना लूट का माल
अपने लिए रख लिया। 54मूसा और इलियज़र
अफ़सरान का यह सोना मुलाक़ात के ख़ैमे में ले
आए ताकि वह रब को उस की क़ौम की याद
दिलाता रहे।

दरियाए-यरदन के मशरिक़ी किनारे पर आबाद क़बीले

32 रूबिन और जद के क़बीलों के पास
बहुत-से मवेशी थे। जब उन्होंने देखा
कि याज़ेर और जिलियाद का इलाक़ा मवेशी
पालने के लिए अच्छा है 2तो उन्होंने मूसा,
इलियज़र इमाम और जमात के राहनुमाओं के
पास आकर कहा, 3-4“जिस इलाक़े को रब ने
इसराईल की जमात के आगे आगे शिकस्त दी है
वह मवेशी पालने के लिए अच्छा है। अतारात,
दीबोन, याज़ेर, निमरा, हसबोन, इलियाली,
सबाम, नबू और बऊन जो इसमें शामिल हैं हमारे
काम आएँगे, क्योंकि आपके ख़ादिमों के पास
मवेशी हैं। 5अगर आपकी नज़रे-करम हम पर
हो तो हमें यह इलाक़ा दिया जाए। यह हमारी
मिलकियत बन जाए और हमें दरियाए-यरदन को
पार करने पर मजबूर न किया जाए।”
6मूसा ने जद और रूबिन के अफ़राद से कहा,
“क्या तुम यहाँ पीछे रहकर अपने भाइयों को
छोड़ना चाहते हो जब वह जंग लड़ने के लिए आगे
निकलेंगे? 7इस वक़्त जब इसराईली दरियाए-
यरदन को पार करके उस मुल्क में दाख़िल
होनेवाले हैं जो रब ने उन्हें दिया है तो तुम क्यों
उनकी हौसलाशिकनी कर रहे हो? 8तुम्हारे
बापदादा ने भी यही कुछ किया जब मैंने उन्हें
क़ादिस-बरनीअ से मुल्क के बारे में मालूमात
हासिल करने के लिए भेजा। 9इसकाल की वादी
में पहुँचकर मुल्क की तफ़तीश करने के बाद
उन्होंने इसराईलियों की हौसलाशिकनी की ताकि
वह उस मुल्क में दाख़िल न हों जो रब ने उन्हें दिया
था। 10उस दिन रब ने ग़ुस्से में आकर क़सम खाई,
11‘उन आदमियों में से जो मिसर से निकल आए
हैं कोई उस मुल्क को नहीं देखेगा जिसका वादा
मैंने क़सम खाकर इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब
से किया था। क्योंकि उन्होंने पूरी वफ़ादारी से मेरी
पैरवी न की। सिर्फ़ वह जिनकी उम्र उस वक़्त 20
साल से कम है दाख़िल होंगे। 12बुज़ुर्गों में से सिर्फ़
कालिब बिन यफ़ुन्ना क़निज़्ज़ी और यशुअ बिन
नून मुल्क में दाख़िल होंगे, इसलिए कि उन्होंने
पूरी वफ़ादारी से मेरी पैरवी की।’ 13उस वक़्त
रब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा, और उन्हें 40
साल तक रेगिस्तान में मारे मारे फिरना पड़ा, जब
तक कि वह तमाम नसल ख़त्म न हो गई जिसने
उसके नज़दीक ग़लत काम किया था। 14अब तुम
गुनाहगारों की औलाद अपने बापदादा की जगह
खड़े होकर रब का इसराईल पर ग़ुस्सा मज़ीद बढ़ा
रहे हो। 15अगर तुम उस की पैरवी से हटोगे तो
वह दुबारा इन लोगों को रेगिस्तान में रहने देगा,
और तुम इनकी हलाकत का बाइस बनोगे।”
16इसके बाद रूबिन और जद के अफ़राद
दुबारा मूसा के पास आए और कहा, “हम
यहाँ फ़िलहाल अपने मवेशी के लिए बाड़े और
अपने बाल-बच्चों के लिए शहर बनाना चाहते हैं।
17इसके बाद हम मुसल्लह होकर इसराईलियों
के आगे आगे चलेंगे और हर एक को उस की
अपनी जगह तक पहुँचाएँगे। इतने में हमारे बाल-
बच्चे हमारे शहरों की फ़सीलों के अंदर मुल्क के
मुख़ालिफ़ बाशिंदों से महफ़ूज़ रहेंगे। 18हम उस
वक़्त तक अपने घरों को नहीं लौटेंगे जब तक
हर इसराईली को उस की मौरूसी ज़मीन न मिल
जाए। 19दूसरे, हम ख़ुद उनके साथ दरियाए-
यरदन के मग़रिब में मीरास में कुछ नहीं पाएँगे,

क्योंकि हमें अपनी मौरूसी ज़मीन दरियाए-यरदन के मशरिक़ी किनारे पर मिल चुकी है।"

20यह सुनकर मूसा ने कहा, "अगर तुम ऐसा ही करोगे तो ठीक है। फिर रब के सामने जंग के लिए तैयार हो जाओ 21और सब हथियार बाँधकर रब के सामने दरियाए-यरदन को पार करो। उस वक़्त तक न लौटो जब तक रब ने अपने तमाम दुश्मनों को अपने आगे से निकाल न दिया हो। 22फिर जब मुल्क पर रब का क़ब्ज़ा हो गया होगा तो तुम लौट सकोगे। तब तुमने रब और अपने हमवतन भाइयों के लिए अपने फ़रायज़ अदा कर दिए होंगे, और यह इलाक़ा रब के सामने तुम्हारा मौरूसी हक़ होगा। 23लेकिन अगर तुम ऐसा न करो तो फिर तुम रब ही का गुनाह करोगे। यक़ीन जानो तुम्हें अपने गुनाह की सज़ा मिलेगी। 24अब अपने बाल-बच्चों के लिए शहर और अपने मवेशियों के लिए बाड़े बना लो। लेकिन अपने वादे को ज़रूर पूरा करना।"

25जद और रूबिन के अफ़राद ने मूसा से कहा, "हम आपके ख़ादिम हैं, हम अपने आक़ा के हुक्म के मुताबिक़ ही करेंगे। 26हमारे बाल-बच्चे और मवेशी यहीं जिलियाद के शहरों में रहेंगे। 27लेकिन आपके ख़ादिम मुसल्लह होकर दरिया को पार करेंगे और रब के सामने जंग करेंगे। हम सब कुछ वैसा ही करेंगे जैसा हमारे आक़ा ने हमें हुक्म दिया है।"

28तब मूसा ने इलियज़र इमाम, यशुअ बिन नून और क़बायली कुंबों के सरपरस्तों को हिदायत दी, 29"लाज़िम है कि जद और रूबिन के मर्द मुसल्लह होकर तुम्हारे साथ ही रब के सामने दरियाए-यरदन को पार करें और मुल्क पर क़ब्ज़ा करें। अगर वह ऐसा करें तो उन्हें मीरास में जिलियाद का इलाक़ा दो। 30लेकिन अगर वह ऐसा न करें तो फिर उन्हें मुल्के-कनान ही में तुम्हारे साथ मौरूसी ज़मीन मिले।"

31जद और रूबिन के अफ़राद ने इसरार किया, "आपके ख़ादिम सब कुछ करेंगे जो रब ने कहा है। 32हम मुसल्लह होकर रब के सामने दरियाए-यरदन को पार करेंगे और कनान के मुल्क में दाख़िल होंगे, अगरचे हमारी मौरूसी ज़मीन यरदन के मशरिक़ी किनारे पर होगी।"

33तब मूसा ने जद, रूबिन और मनस्सी के आधे क़बीले को यह इलाक़ा दिया। उसमें वह पूरा मुल्क शामिल था जिस पर पहले अमोरियों का बादशाह सीहोन और बसन का बादशाह ओज हुकूमत करते थे। इन शिकस्तख़ुरदा ममालिक के देहातों समेत तमाम शहर उनके हवाले किए गए।

34जद के क़बीले ने दीबोन, अतारात, अरोईर, 35अतरात-शोफ़ान, याज़ेर, युगबहा, 36बैत-निमरा और बैत-हारान के शहरों को दुबारा तामीर किया। उन्होंने उनकी फ़सीलें बनाईं और अपने मवेशियों के लिए बाड़े भी। 37रूबिन के क़बीले ने हसबोन, इलियाली, क़िरियतायम, 38नबू, बाल-मऊन और सिबमाह दुबारा तामीर किए। नबू और बाल-मऊन के नाम बदल गए, क्योंकि उन्होंने उन शहरों को नए नाम दिए जो उन्होंने दुबारा तामीर किए।

39मनस्सी के बेटे मकीर की औलाद ने जिलियाद जाकर उस पर क़ब्ज़ा कर लिया और उसके तमाम अमोरी बाशिंदों को निकाल दिया। 40चुनाँचे मूसा ने मकीरियों को जिलियाद की सरज़मीन दे दी, और वह वहाँ आबाद हुए। 41मनस्सी के एक आदमी बनाम याईर ने उस इलाक़े में कुछ बस्तियों पर क़ब्ज़ा करके उन्हें हव्वोत-याईर यानी 'याईर की बस्तियाँ' का नाम दिया। 42इसी तरह उस क़बीले के एक और आदमी बनाम नूबह ने जाकर क़नात और उसके देहातों पर क़ब्ज़ा कर लिया। उसने शहर का नाम नूबह रखा।

इसराईल के सफ़र के मरहले

33 ज़ैल में उन जगहों के नाम हैं जहाँ जहाँ इसराईली क़बीले अपने दस्तों के मुताबिक़ मूसा और हारून की राहनुमाई में मिसर से निकलकर ख़ैमाज़न हुए थे। 2रब के हुक्म पर मूसा ने हर जगह का नाम क़लमबंद किया जहाँ

उन्होंने अपने ख़ैमे लगाए थे। उन जगहों के नाम यह हैं :

3पहले महीने के पंद्रहवें दिन इसराईली रामसीस से रवाना हुए। यानी फ़सह के दिन के बाद के दिन वह बड़े इख़्तियार के साथ तमाम मिसरियों के देखते देखते चले गए। 4मिसरी उस वक़्त अपने पहलौठों को दफ़न कर रहे थे, क्योंकि रब ने पहलौठों को मारकर उनके देवताओं की अदालत की थी।

5रामसीस से इसराईली सुक्कात पहुँच गए जहाँ उन्होंने पहली मरतबा अपने डेरे लगाए। 6वहाँ से वह एताम पहुँचे जो रेगिस्तान के किनारे पर वाक़े है। 7एताम से वह वापस मुड़कर फ़ी-हख़ीरोत की तरफ़ बढ़े जो बाल-सफ़ोन के मशरिक़ में है। वह मिजदाल के क़रीब ख़ैमाज़न हुए। 8फिर वह फ़ी-हख़ीरोत से कूच करके समुंदर में से गुज़र गए। इसके बाद वह तीन दिन एताम के रेगिस्तान में सफ़र करते करते मारा पहुँच गए और वहाँ अपने ख़ैमे लगाए। 9मारा से वह एलीम चले गए जहाँ 12 चश्मे और खजूर के 70 दरख़्त थे। वहाँ ठहरने के बाद 10वह बहरे-क़ुलज़ुम के साहिल पर ख़ैमाज़न हुए, 11फिर दश्ते-सीन में पहुँच गए।

12उनके अगले मरहले यह थे : दुफ़क़ा, 13-37अलूस, रफ़ीदीम जहाँ पीने का पानी दस्तयाब न था, दश्ते-सीना, क़ब्रोत-हत्तावा, हसीरात, रितमा, रिम्मोन-फ़ारस, लिबना, रिस्सा, क़हीलाता, साफ़र पहाड़, हरादा, मक़हीलोत, तहत, तारह, मितक़ा, हशमूना, मौसीरोत, बनी-याक़ान, होर-हज्जिदजाद, युतबाता, अबरूना, अस्यून-जाबर, दश्ते-सीन में वाक़े क़ादिस और होर पहाड़ जो अदोम की सरहद पर वाक़े है।

38वहाँ रब ने हारून इमाम को हुक्म दिया कि वह होर पहाड़ पर चढ़ जाए। वहीं वह पाँचवें माह के पहले दिन फ़ौत हुआ। इसराईलियों को मिसर से निकले 40 साल गुज़र चुके थे। 39उस वक़्त हारून 123 साल का था।

40उन दिनों में अराद के कनानी बादशाह ने सुना कि इसराईली मेरे मुल्क की तरफ़ बढ़ रहे हैं। वह कनान के जुनूब में हुकूमत करता था।

41-47होर पहाड़ से रवाना होकर इसराईली ज़ैल की जगहों पर ठहरे : ज़लमूना, फ़ूनोन, ओबोत, ऐये-अबारीम जो मोआब के इलाक़े में था, दीबोन-जद, अलमून-दिबलातायम और नबू के क़रीब वाक़े अबारीम का पहाड़ी इलाक़ा। 48वहाँ से उन्होंने यरदन की वादी में उतरकर मोआब के मैदानी इलाक़े में अपने डेरे लगाए। अब वह दरियाए-यरदन के मशरिक़ी किनारे पर यरीहू शहर के सामने थे। 49उनके ख़ैमे बैत-यसीमोत से लेकर अबील-शित्तीम तक लगे थे।

तमाम कनानी बाशिंदों को निकालने का हुक्म

50वहाँ रब ने मूसा से कहा, 51“इसराईलियों को बताना कि जब तुम दरियाए-यरदन को पार करके मुल्के-कनान में दाख़िल होगे 52तो लाज़िम है कि तुम तमाम बाशिंदों को निकाल दो। उनके तराशे और ढाले हुए बुतों को तोड़ डालो और उनकी ऊँची जगहों के मंदिरों को तबाह करो। 53मुल्क पर क़ब्ज़ा करके उसमें आबाद हो जाओ, क्योंकि मैंने यह मुल्क तुम्हें दे दिया है। यह मेरी तरफ़ से तुम्हारी मौरूसी मिलकियत है। 54मुल्क को मुख़्तलिफ़ क़बीलों और ख़ानदानों में क़ुरा डालकर तक़सीम करना। हर ख़ानदान के अफ़राद की तादाद का लिहाज़ रखना। बड़े ख़ानदान को निसबतन ज़्यादा ज़मीन देना और छोटे ख़ानदान को निसबतन कम ज़मीन। 55लेकिन अगर तुम मुल्क के बाशिंदों को नहीं निकालोगे तो बचे हुए तुम्हारी आँखों में ख़ार और तुम्हारे पहलुओं में काँटे बनकर तुम्हें उस मुल्क में तंग करेंगे जिसमें तुम आबाद होगे। 56फिर मैं तुम्हारे साथ वह कुछ करूँगा जो उनके साथ करना चाहता हूँ।”

मुल्के-कनान की सरहद्दें

34 रब ने मूसा से कहा, 2“इसराई-
लियों को बताना कि जब तुम उस
मुल्क में दाख़िल होगे जो मैं तुम्हें मीरास में दूँगा
तो उस की सरहद्दें यह होंगी :

3उस की जुनूबी सरहद दश्ते-सीन में अदोम
की सरहद के साथ साथ चलेगी। मशरिक़ में
वह बहीराए-मुरदार के जुनूबी साहिल से शुरू
होगी, फिर इन जगहों से होकर मग़रिब की तरफ़
गुज़रेगी : 4दर्राए-अक़्रब्बीम के जुनूब में से,
दश्ते-सीन में से, क़ादिस-बरनीअ के जुनूब में से
हसर-अद्दार और अज़मून में से। 5वहाँ से वह
मुड़कर मिसर की सरहद पर वाक़े वादीए-मिसर
के साथ साथ बहीराए-रूम तक पहुँचेगी। 6उस की
मग़रिबी सरहद बहीराए-रूम का साहिल होगा।
7उस की शिमाली सरहद बहीराए-रूम से लेकर
इन जगहों से होकर मशरिक़ की तरफ़ गुज़रेगी :
होर पहाड़, 8लबो-हमात, सिदाद, 9ज़िफ़रून
और हसर-एनान। हसर-एनान शिमाली सरहद
का सबसे मशरिक़ी मक़ाम होगा। 10उस की
मशरिक़ी सरहद शिमाल में हसर-एनान से शुरू
होगी। फिर वह इन जगहों से होकर जुनूब की
तरफ़ गुज़रेगी : सिफ़ाम, 11रिबला जो ऐन के
मशरिक़ में है और किन्नरत यानी गलील की झील
के मशरिक़ में वाक़े पहाड़ी इलाक़ा। 12इसके बाद
वह दरियाए-यरदन के किनारे किनारे गुज़रती हुई
बहीराए-मुरदार तक पहुँचेगी। यह तुम्हारे मुल्क
की सरहद्दें होंगी।”

13मूसा ने इसराईलियों से कहा, “यह वही
मुल्क है जिसे तुम्हें क़ुरा डालकर तक़सीम करना
है। रब ने हुक्म दिया है कि उसे बाक़ी साढ़े नौ
क़बीलों को देना है। 14क्योंकि अढ़ाई क़बीलों के
ख़ानदानों को उनकी मीरास मिल चुकी है यानी
रूबिन और जद के पूरे क़बीले और मनस्सी के
आधे क़बीले को। 15उन्हें यहाँ, दरियाए-यरदन के
मशरिक़ में यरीहू के सामने ज़मीन मिल चुकी है।”

मुल्क तक़सीम करने के ज़िम्मेदार आदमी

16रब ने मूसा से कहा, 17“इलियज़र इमाम
और यशुअ बिन नून लोगों के लिए मुल्क तक़सीम
करें। 18हर क़बीले के एक एक राहनुमा को भी
चुनना ताकि वह तक़सीम करने में मदद करे।
जिनको तुम्हें चुनना है उनके नाम यह हैं :

19यहूदाह के क़बीले का कालिब बिन यफ़ुन्ना,

20शमाऊन के क़बीले का समुएल बिन
अम्मीहूद,

21बिनयमीन के क़बीले का इलीदाद बिन
किस्लोन,

22दान के क़बीले का बुक़्क़ी बिन युगली,

23मनस्सी के क़बीले का हन्नियेल बिन अफ़ूद,

24इफ़राईम के क़बीले का क़मुएल बिन
सिफ़तान,

25ज़बूलून के क़बीले का इलीसफ़न बिन
फ़रनाक,

26इशकार के क़बीले का फ़लतियेल बिन
अज़्ज़ान,

27आशर के क़बीले का अख़ीहूद बिन शलूमी,

28नफ़ताली के क़बीले का फ़िदाहेल बिन
अम्मीहूद।”

29रब ने इन्हीं आदमियों को मुल्क को
इसराईलियों में तक़सीम करने की ज़िम्मा-
दारी दी।

लावियों के लिए शहर

35 इसराईली अब तक मोआब के मैदानी
इलाक़े में दरियाए-यरदन के मशरिक़ी
किनारे पर यरीहू के सामने थे। वहाँ रब ने मूसा से
कहा,

2“इसराईलियों को बता दे कि वह लावियों को
अपनी मिली हुई ज़मीनों में से रहने के लिए शहर
दें। उन्हें शहरों के इर्दगिर्द मवेशी चराने की ज़मीन
भी मिले। 3फिर लावियों के पास रहने के लिए
शहर और अपने जानवर चराने के लिए ज़मीन
होगी। 4चराने के लिए ज़मीन शहर के इर्दगिर्द
होगी, और चारों तरफ़ का फ़ासला फ़सीलों से

1,500 फ़ुट हो। 5चराने की यह ज़मीन मुरब्बा
शक्ल की होगी जिसके हर पहलू का फ़ासला
3,000 फ़ुट हो। शहर इस मुरब्बा शक्ल के बीच
में हो। यह रक़बा शहर के बाशिंदों के लिए हो
ताकि वह अपने मवेशी चरा सकें।

ग़ैरइरादी ख़ूनरेज़ी के लिए पनाह के शहर

6-7लावियों को कुल 48 शहर देना। इनमें से
छः पनाह के शहर मुक़र्रर करना। उनमें ऐसे लोग
पनाह ले सकेंगे जिनके हाथों ग़ैरइरादी तौर पर
कोई हलाक हुआ हो। 8हर क़बीला लावियों को
अपने इलाक़े के रक़बे के मुताबिक़ शहर दे। जिस
क़बीले का इलाक़ा बड़ा है उसे लावियों को ज़्यादा
शहर देने हैं जबकि जिस क़बीले का इलाक़ा छोटा
है वह लावियों को कम शहर दे।”

9फिर रब ने मूसा से कहा, 10“इसराईलियों
को बताना कि दरियाए-यरदन को पार करने के
बाद 11कुछ पनाह के शहर मुक़र्रर करना। उनमें
वह शख़्स पनाह ले सकेगा जिसके हाथों ग़ैरइरादी
तौर पर कोई हलाक हुआ हो। 12वहाँ वह इंतक़ाम
लेनेवाले से पनाह ले सकेगा और जमात की
अदालत के सामने खड़े होने से पहले मारा नहीं
जा सकेगा। 13इसके लिए छः शहर चुन लो।
14तीन दरियाए-यरदन के मशरिक़ में और तीन
मुल्के-कनान में हों। 15यह छः शहर हर किसी
को पनाह देंगे, चाहे वह इसराईली, परदेसी या
उनके दरमियान रहनेवाला ग़ैरशहरी हो। जिससे
भी ग़ैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो वह
वहाँ पनाह ले सकता है।

16-18अगर किसी ने किसी को जान-बूझकर
लोहे, पत्थर या लकड़ी की किसी चीज़ से मार
डाला हो वह क़ातिल है और उसे सज़ाए-मौत देनी
है। 19मक़तूल का सबसे क़रीबी रिश्तेदार उसे
तलाश करके मार दे। 20-21क्योंकि जो नफ़रत
या दुश्मनी के बाइस जान-बूझकर किसी को यों
धक्का दे, उस पर कोई चीज़ फेंक दे या उसे
मुक्का मारे कि वह मर जाए वह क़ातिल है और
उसे सज़ाए-मौत देनी है।

22लेकिन वह क़ातिल नहीं है जिससे दुश्मनी के
बाइस नहीं बल्कि इत्तफ़ाक़ से और ग़ैरइरादी तौर
पर कोई हलाक हुआ हो, चाहे उसने उसे धक्का
दिया, कोई चीज़ उस पर फेंक दी 23या कोई
पत्थर उस पर गिरने दिया। 24अगर ऐसा हुआ तो
लाज़िम है कि जमात इन हिदायात के मुताबिक़
उसके और इंतक़ाम लेनेवाले के दरमियान फ़ैसला
करे। 25अगर मुलज़िम बेक़ुसूर है तो जमात उस
की हिफ़ाज़त करके उसे पनाह के उस शहर में
वापस ले जाए जिसमें उसने पनाह ली है। वहाँ वह
मुक़द्दस तेल से मसह किए गए इमामे-आज़म की
मौत तक रहे। 26लेकिन अगर यह शख़्स इससे
पहले पनाह के शहर से निकले तो वह महफ़ूज़
नहीं होगा। 27अगर उसका इंतक़ाम लेनेवाले से
सामना हो जाए तो इंतक़ाम लेनेवाले को उसे मार
डालने की इजाज़त होगी। अगर वह ऐसा करे तो
बेक़ुसूर रहेगा। 28पनाह लेनेवाला इमामे-आज़म
की वफ़ात तक पनाह के शहर में रहे। इसके बाद
ही वह अपने घर वापस जा सकता है। 29यह
उसूल दायमी हैं। जहाँ भी तुम रहते हो तुम्हें हमेशा
इन पर अमल करना है।

30जिस पर क़त्ल का इलज़ाम लगाया गया हो
उसे सिर्फ़ इस सूरत में सज़ाए-मौत दी जा सकती
है कि कम अज़ कम दो गवाह हों। एक गवाह
काफ़ी नहीं है।

31क़ातिल को ज़रूर सज़ाए-मौत देना। ख़ाह
वह इससे बचने के लिए कोई भी मुआवज़ा दे
उसे आज़ाद न छोड़ना बल्कि सज़ाए-मौत देना।
32उस शख़्स से भी पैसे क़बूल न करना जिससे
ग़ैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो और जो
इस सबब से पनाह के शहर में रह रहा है। उसे
इजाज़त नहीं कि वह पैसे देकर पनाह का शहर
छोड़े और अपने घर वापस चला जाए। लाज़िम है
कि वह इसके लिए इमामे-आज़म की वफ़ात का
इंतज़ार करे।

33जिस मुल्क में तुम रहते हो उस की मुक़द्दस
हालत को नापाक न करना। जब किसी को उसमें
क़त्ल किया जाए तो वह नापाक हो जाता है।

जब इस तरह ख़ून बहता है तो मुल्क की मुक़द्दस
हालत सिर्फ़ उस शख़्स के ख़ून बहने से बहाल हो
जाती है जिसने यह ख़ून बहाया है। यानी मुल्क
का सिर्फ़ क़ातिल की मौत से ही कफ़्फ़ारा दिया
जा सकता है। 34उस मुल्क को नापाक न करना
जिसमें तुम आबाद हो और जिसमें मैं सुकूनत
करता हूँ। क्योंकि मैं रब हूँ जो इसराईलियों के
दरमियान सुकूनत करता हूँ।”

एक क़बीले की मौरूसी ज़मीन शादी से दूसरे क़बीले में मुंतक़िल नहीं हो सकती

36 एक दिन जिलियाद बिन मकीर बिन
मनस्सी बिन यूसुफ़ के कुंबे से निकले
हुए आबाई घरानों के सरपरस्त मूसा और उन
सरदारों के पास आए जो दीगर आबाई घरानों
के सरपरस्त थे। 2उन्होंने कहा, “रब ने आपको
हुक्म दिया था कि आप क़ुरा डालकर मुल्क को
इसराईलियों में तक़सीम करें। उस वक़्त उसने
यह भी कहा था कि हमारे भाई सिलाफ़िहाद की
बेटियों को उस की मौरूसी ज़मीन मिलनी है।
3अगर वह इसराईल के किसी और क़बीले के मर्दों
से शादी करें तो फिर यह ज़मीन जो हमारे क़बीले
का मौरूसी हिस्सा है उस क़बीले का मौरूसी
हिस्सा बनेगी और हम उससे महरूम हो जाएंगे।
फिर हमारा क़बायली इलाक़ा छोटा हो जाएगा।
4और अगर हम यह ज़मीन वापस भी ख़रीदें तो
भी वह अगले बहाली के साल में दूसरे क़बीले को
वापस चली जाएगी जिसमें इन औरतों ने शादी
की है। इस तरह वह हमेशा के लिए हमारे हाथ से
निकल जाएगी।”

5मूसा ने रब के हुक्म पर इसराईलियों को
बताया, “जिलियाद के मर्द हक़्क़-बजानिब हैं।
6इसलिए रब की हिदायत यह है कि सिलाफ़िहाद
की बेटियों को हर आदमी से शादी करने की
इजाज़त है, लेकिन सिर्फ़ इस सूरत में कि वह
उनके अपने क़बीले का हो। 7इस तरह एक
क़बीले की मौरूसी ज़मीन किसी दूसरे क़बीले में
मुंतक़िल नहीं होगी। लाज़िम है कि हर क़बीले का
पूरा इलाक़ा उसी के पास रहे।

8जो भी बेटी मीरास में ज़मीन पाती है उसके
लिए लाज़िम है कि वह अपने ही क़बीले के
किसी मर्द से शादी करे ताकि उस की ज़मीन
क़बीले के पास ही रहे। 9एक क़बीले की मौरूसी
ज़मीन किसी दूसरे क़बीले को मुंतक़िल करने की
इजाज़त नहीं है। लाज़िम है कि हर क़बीले का
पूरा मौरूसी इलाक़ा उसी के पास रहे।”

10-11सिलाफ़िहाद की बेटियों महलाह,
तिरज़ा, हुजलाह, मिलकाह और नुआह ने वैसा
ही किया जैसा रब ने मूसा को बताया था। उन्होंने
अपने चचाज़ाद भाइयों से शादी की। 12चूँकि वह
भी मनस्सी के क़बीले के थे इसलिए यह मौरूसी
ज़मीन सिलाफ़िहाद के क़बीले के पास रही।

13रब ने यह अहकाम और हिदायात
इसराईलियों को मूसा की मारिफ़त दीं जब वह
मोआब के मैदानी इलाक़े में दरियाए-यरदन के
मशरिक़ी किनारे पर यरीहू के सामने ख़ैमाज़न थे।

इस्तिसना

मूसा इसराईलियों से मुख़ातिब होता है

1 इस किताब में वह बातें दर्ज हैं जो मूसा
ने तमाम इसराईलियों से कहीं जब वह
दरियाए-यरदन के मशरिक़ी किनारे पर बयाबान
में थे। वह यरदन की वादी में सूफ़ के क़रीब
थे। एक तरफ़ फ़ारान शहर था और दूसरी तरफ़
तोफ़ल, लाबन, हसीरात और दीज़हब के शहर थे।
2अगर अदोम के पहाड़ी इलाक़े से होकर जाएँ तो
होरिब यानी सीना पहाड़ से क़ादिस-बरनीअ तक
का सफ़र 11 दिन में तय किया जा सकता है।
3इसराईलियों को मिसर से निकले 40 साल
हो गए थे। इस साल के ग्यारहवें माह के पहले दिन
मूसा ने उन्हें सब कुछ बताया जो रब ने उसे उन्हें
बताने को कहा था। 4उस वक़्त वह अमोरियों के
बादशाह सीहोन को शिकस्त दे चुका था जिसका
दारुल-हुकूमत हसबोन था। बसन के बादशाह
ओज पर भी फ़तह हासिल हो चुकी थी जिसकी
हुकूमत के मरकज़ अस्तारात और इदरई थे।
5वहाँ, दरियाए-यरदन के मशरिक़ी किनारे पर
जो मोआब के इलाक़े में था मूसा अल्लाह की
शरीअत की तशरीह करने लगा। उसने कहा,
6जब तुम होरिब यानी सीना पहाड़ के पास
थे तो रब हमारे ख़ुदा ने हमसे कहा, “तुम
काफ़ी देर से यहाँ ठहरे हुए हो। 7अब इस जगह
को छोड़कर आगे मुल्के-कनान की तरफ़ बढ़ो।
अमोरियों के पहाड़ी इलाक़े और उनके पड़ोस
की क़ौमों के पास जाओ जो यरदन के मैदानी
इलाक़े में आबाद हैं। पहाड़ी इलाक़े में, मग़रिब के
नशेबी पहाड़ी इलाक़े में, जुनूब के दश्ते-नजब में,
साहिली इलाक़े में, मुल्के-कनान में और लुबनान
में दरियाए-फ़ुरात तक चले जाओ। 8मैंने तुम्हें यह
मुल्क दे दिया है। अब जाकर उस पर क़ब्ज़ा कर
लो। क्योंकि रब ने क़सम खाकर तुम्हारे बापदादा
इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से वादा किया था
कि मैं यह मुल्क तुम्हें और तुम्हारी औलाद को
दूँगा।”

राहनुमा मुक़र्रर किए गए

9उस वक़्त मैंने तुमसे कहा, “मैं अकेला
तुम्हारी राहनुमाई करने की ज़िम्मेदारी नहीं उठा
सकता। 10रब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हारी तादाद
इतनी बढ़ा दी है कि आज तुम आसमान के
सितारों की मानिंद बेशुमार हो। 11और रब तुम्हारे
बापदादा का ख़ुदा करे कि तुम्हारी तादाद मज़ीद
हज़ार गुना बढ़ जाए। वह तुम्हें वह बरकत
दे जिसका वादा उसने किया है। 12लेकिन
मैं अकेला ही तुम्हारा बोझ उठाने और झगड़ों
को निपटाने की ज़िम्मेदारी नहीं उठा सकता।
13इसलिए अपने हर क़बीले में से कुछ ऐसे
दानिशमंद और समझदार आदमी चुन लो जिनकी
लियाक़त को लोग मानते हैं। फिर मैं उन्हें तुम पर
मुक़र्रर करूँगा।”

14यह बात तुम्हें पसंद आई। 15तुमने अपने में
से ऐसे राहनुमा चुन लिए जो दानिशमंद थे और
जिनकी लियाक़त को लोग मानते थे। फिर मैंने
उन्हें हज़ार हज़ार, सौ सौ और पचास पचास मर्दों
पर मुक़र्रर किया। यों वह क़बीलों के निगहबान
बन गए। 16उस वक़्त मैंने उन क़ाज़ियों से कहा,
“अदालत करते वक़्त हर एक की बात ग़ौर
से सुनकर ग़ैरजानिबदार फ़ैसले करना, चाहे दो
इसराईली फ़रीक़ एक दूसरे से झगड़ा कर रहे
हों या मामला किसी इसराईली और परदेसी के
दरमियान हो। 17अदालत करते वक़्त जानिबदारी
न करना। छोटे और बड़े की बात सुनकर दोनों
के साथ एक जैसा सुलूक करना। किसी से
मत डरना, क्योंकि अल्लाह ही ने तुम्हें अदालत
करने की ज़िम्मेदारी दी है। अगर किसी मामले
में फ़ैसला करना तुम्हारे लिए मुश्किल हो तो
उसे मुझे पेश करो। फिर मैं ही उसका फ़ैसला
करूँगा।” 18उस वक़्त मैंने तुम्हें सब कुछ बताया
जो तुम्हें करना था।

मुल्के-कनान में जासूस

19हमने वैसा ही किया जैसा रब ने हमें कहा
था। हम होरिब से रवाना होकर अमोरियों के
पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ बढ़े। सफ़र करते करते
हम उस वसी और हौलनाक रेगिस्तान में से गुज़र
गए जिसे तुमने देख लिया है। आख़िरकार हम
क़ादिस-बरनीअ पहुँच गए। 20वहाँ मैंने तुमसे
कहा, “तुम अमोरियों के पहाड़ी इलाक़े तक पहुँच
गए हो जो रब हमारा ख़ुदा हमें देनेवाला है।
21देख, रब तेरे ख़ुदा ने तुझे यह मुल्क दे दिया
है। अब जाकर उस पर क़ब्ज़ा कर ले जिस तरह
रब तेरे बापदादा के ख़ुदा ने तुझे बताया है। मत
डरना और बेदिल न हो जाना!”

22लेकिन तुम सब मेरे पास आए और कहा,
“क्यों न हम जाने से पहले कुछ आदमी भेजें
जो मुल्क के हालात दरियाफ़्त करें और वापस
आकर हमें उस रास्ते के बारे में बताएँ जिस पर
हमें जाना है और उन शहरों के बारे में इत्तला दें
जिनके पास हम पहुँचेंगे।” 23यह बात मुझे पसंद
आई। मैंने इस काम के लिए हर क़बीले के एक
आदमी को चुनकर भेज दिया। 24जब यह बारह
आदमी पहाड़ी इलाक़े में जाकर वादीए-इसकाल
में पहुँचे तो उस की तफ़तीश की। 25फिर वह
मुल्क का कुछ फल लेकर लौट आए और हमें
मुल्क के बारे में इत्तला देकर कहा, “जो मुल्क
रब हमारा ख़ुदा हमें देनेवाला है वह अच्छा है।”

26लेकिन तुम जाना नहीं चाहते थे बल्कि
सरकशी करके रब अपने ख़ुदा का हुक्म न माना।
27तुमने अपने ख़ैमों में बुड़बुड़ाते हुए कहा, “रब
हमसे नफ़रत रखता है। वह हमें मिसर से निकाल
लाया है ताकि हमें अमोरियों के हाथों हलाक
करवाए। 28हम कहाँ जाएँ? हमारे भाइयों ने हमें
बेदिल कर दिया है। वह कहते हैं, ‘वहाँ के लोग
हमसे ताक़तवर और दराज़क़द हैं। उनके बड़े बड़े
शहरों की फ़सीलें आसमान से बातें करती हैं। वहाँ
हमने अनाक़ की औलाद भी देखी जो देवक़ामत
हैं’।”

29मैंने कहा, “न घबराओ और न उनसे ख़ौफ़
खाओ। 30रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारे आगे आगे
चलता हुआ तुम्हारे लिए लड़ेगा। तुम ख़ुद देख
चुके हो कि वह किस तरह मिसर 31और रेगिस्तान
में तुम्हारे लिए लड़ा। यहाँ भी वह ऐसा ही करेगा।
तू ख़ुद गवाह है कि बयाबान में पूरे सफ़र के दौरान
रब तुझे यों उठाए फिरा जिस तरह बाप अपने
बेटे को उठाए फिरता है। इस तरह चलते चलते
तुम यहाँ तक पहुँच गए।” 32इसके बावुजूद तुमने
रब अपने ख़ुदा पर भरोसा न रखा। 33तुमने यह
बात नज़रंदाज़ की कि वह सफ़र के दौरान रात के
वक़्त आग और दिन के वक़्त बादल की सूरत में
तुम्हारे आगे आगे चलता रहा ताकि तुम्हारे लिए
ख़ैमे लगाने की जगहें मालूम करे और तुम्हें रास्ता
दिखाए।

34जब रब ने तुम्हारी यह बातें सुनीं तो उसे
ग़ुस्सा आया और उसने क़सम खाकर कहा,
35“इस शरीर नसल का एक मर्द भी उस अच्छे
मुल्क को नहीं देखेगा अगरचे मैंने क़सम खाकर

तुम्हारे बापदादा से वादा किया था कि मैं उसे उन्हें
दूँगा। 36सिर्फ़ कालिब बिन यफ़ुन्ना उसे देखेगा।
मैं उसे और उस की औलाद को वह मुल्क दूँगा
जिसमें उसने सफ़र किया है, क्योंकि उसने पूरे
तौर पर रब की पैरवी की।"

37तुम्हारी वजह से रब मुझसे भी नाराज़ हुआ
और कहा, "तू भी उसमें दाख़िल नहीं होगा।
38लेकिन तेरा मददगार यशुअ बिन नून दाख़िल
होगा। उस की हौसलाअफ़ज़ाई कर, क्योंकि वह
मुल्क पर क़ब्ज़ा करने में इसराईल की राहनुमाई
करेगा।" 39तुमसे रब ने कहा, "तुम्हारे बच्चे जो
अभी अच्छे और बुरे में इम्तियाज़ नहीं कर सकते,
वही मुल्क में दाख़िल होंगे, वही बच्चे जिनके बारे
में तुमने कहा कि दुश्मन उन्हें मुल्के-कनान में
छीन लेंगे। उन्हें मैं मुल्क दूँगा, और वह उस पर
क़ब्ज़ा करेंगे। 40लेकिन तुम ख़ुद आगे न बढ़ो।
पीछे मुड़कर दुबारा रेगिस्तान में बहरे-क़ुलज़ुम की
तरफ़ सफ़र करो।"

41तब तुमने कहा, "हमने रब का गुनाह किया
है। अब हम मुल्क में जाकर लड़ेंगे, जिस तरह
रब हमारे ख़ुदा ने हमें हुक्म दिया है।" चुनाँचे यह
सोचते हुए कि उस पहाड़ी इलाक़े पर हमला करना
आसान होगा, हर एक मुसल्लह हुआ। 42लेकिन
रब ने मुझसे कहा, "उन्हें बताना कि वहाँ जंग
करने के लिए न जाओ, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ
नहीं हूँगा। तुम अपने दुश्मनों के हाथों शिकस्त
खाओगे।"

43मैंने तुम्हें यह बताया, लेकिन तुमने मेरी न
सुनी। तुमने सरकशी करके रब का हुक्म न माना
बल्कि मग़रूर होकर पहाड़ी इलाक़े में दाख़िल
हुए। 44वहाँ के अमोरी बाशिंदे तुम्हारा सामना
करने निकले। वह शहद की मक्खियों के ग़ोल
की तरह तुम पर टूट पड़े और तुम्हारा ताक़्क़ुब
करके तुम्हें सईर से हुरमा तक मारते गए।

45तब तुम वापस आकर रब के सामने
ज़ारो-क़तार रोने लगे। लेकिन उसने तव-
ज्जुह न दी बल्कि तुम्हें नज़रंदाज़ किया। 46इसके
बाद तुम बहुत दिनों तक क़ादिस-बरनीअ में रहे।

रेगिस्तान में दुबारा सफ़र

2 फिर जिस तरह रब ने मुझे हुक्म दिया
था हम पीछे मुड़कर रेगिस्तान में बहरे-
क़ुलज़ुम की तरफ़ सफ़र करने लगे। काफ़ी देर
तक हम सईर यानी अदोम के पहाड़ी इलाक़े के
किनारे किनारे फिरते रहे।

2एक दिन रब ने मुझसे कहा, 3"तुम बहुत देर
से इस पहाड़ी इलाक़े के किनारे किनारे फिर रहे
हो। अब शिमाल की तरफ़ सफ़र करो। 4क़ौम
को बताना, अगले दिनों में तुम सईर के मुल्क
में से गुज़रोगे जहाँ तुम्हारे भाई एसौ की औलाद
आबाद है। वह तुमसे डरेंगे। तो भी बड़ी एहतियात
से गुज़रना। 5उनके साथ जंग न छेड़ना, क्योंकि
मैं तुम्हें उनके मुल्क का एक मुरब्बा फ़ुट भी नहीं
दूँगा। मैंने सईर का पहाड़ी इलाक़ा एसौ और उस
की औलाद को दिया है। 6लाज़िम है कि तुम
खाने और पीने की तमाम ज़रूरियात पैसे देकर
ख़रीदो।"

7जो भी काम तूने किया है रब ने उस पर
बरकत दी है। इस वसी रेगिस्तान में पूरे सफ़र के
दौरान उसने तेरी निगहबानी की। इन 40 सालों
के दौरान रब तेरा ख़ुदा तेरे साथ था, और तेरी
तमाम ज़रूरियात पूरी होती रहीं।

8चुनाँचे हम सईर को छोड़कर जहाँ हमारे भाई
एसौ की औलाद आबाद थी दूसरे रास्ते से आगे
निकले। हमने वह रास्ता छोड़ दिया जो ऐलात
और अस्यून-जाबर के शहरों से बहीराए-मुरदार
तक पहुँचाता है और मोआब के बयाबान की तरफ़
बढ़ने लगे। 9वहाँ रब ने मुझसे कहा, "मोआब के
बाशिंदों की मुख़ालफ़त न करना और न उनके
साथ जंग छेड़ना, क्योंकि मैं उनके मुल्क का कोई
भी हिस्सा तुझे नहीं दूँगा। मैंने आर शहर को लूत
की औलाद को दिया है।"

10पहले ऐमी वहाँ रहते थे जो अनाक़ की
औलाद की तरह ताक़तवर, दराज़क़द और तादाद
में ज़्यादा थे। 11अनाक़ की औलाद की तरह वह

रफ़ाइयों में शुमार किए जाते थे, लेकिन मोआबी उन्हें ऐमी कहते थे।

12इसी तरह क़दीम ज़माने में होरी सईर में आबाद थे, लेकिन एसौ की औलाद ने उन्हें वहाँ से निकाल दिया था। जिस तरह इसराईलियों ने बाद में उस मुल्क में किया जो रब ने उन्हें दिया था उसी तरह एसौ की औलाद बढ़ते बढ़ते होरियों को तबाह करके उनकी जगह आबाद हुए थे।

13रब ने कहा, "अब जाकर वादीए-ज़िरद को उबूर करो।" हमने ऐसा ही किया। 14हमें क़ादिस-बरनीअ से रवाना हुए 38 साल हो गए थे। अब वह तमाम आदमी मर चुके थे जो उस वक़्त जंग करने के क़ाबिल थे। वैसा ही हुआ था जैसा रब ने क़सम खाकर कहा था। 15रब की मुख़ालफ़त के बाइस आख़िरकार ख़ैमागाह में उस नसल का एक मर्द भी न रहा। 16जब वह सब मर गए थे 17तब रब ने मुझसे कहा, 18"आज तुम्हें आर शहर से होकर मोआब के इलाक़े में से गुज़रना है। 19फिर तुम अम्मोनियों के इलाक़े तक पहुँचोगे। उनकी भी मुख़ालफ़त न करना, और न उनके साथ जंग छेड़ना, क्योंकि मैं उनके मुल्क का कोई भी हिस्सा तुम्हें नहीं दूँगा। मैंने यह मुल्क लूत की औलाद को दिया है।"

20हक़ीक़त में अम्मोनियों का मुल्क भी रफ़ाइयों का मुल्क समझा जाता था जो क़दीम ज़माने में वहाँ आबाद थे। अम्मोनी उन्हें ज़मज़ुमी कहते थे, 21और वह देव-क़ामत थे, ताक़तवर और तादाद में ज़्यादा। वह अनाक़ की औलाद जैसे दराज़क़द थे। जब अम्मोनी मुल्क में आए तो रब ने रफ़ाइयों को उनके आगे आगे तबाह कर दिया। चुनाँचे अम्मोनी बढ़ते बढ़ते उन्हें निकालते गए और उनकी जगह आबाद हुए, 22बिलकुल उसी तरह जिस तरह रब ने एसौ की औलाद के आगे आगे होरियों को तबाह कर दिया था जब वह सईर के मुल्क में आए थे। वहाँ भी वह बढ़ते बढ़ते होरियों को निकालते गए और उनकी जगह आबाद हुए। 23इसी तरह एक और क़दीम क़ौम बनाम अव्वी को भी उसके मुल्क से निकाला गया। अव्वी ग़ज़्ज़ा तक आबाद थे, लेकिन जब कफ़तूरी कफ़तूर यानी क्रेते से आए तो उन्होंने उन्हें तबाह कर दिया और उनकी जगह आबाद हो गए।

सीहोन बादशाह से जंग

24रब ने मूसा से कहा, "अब जाकर वादीए-अरनोन को उबूर करो। यों समझो कि मैं हसबोन के अमोरी बादशाह सीहोन को उसके मुल्क समेत तुम्हारे हवाले कर चुका हूँ। उस पर क़ब्ज़ा करना शुरू करो और उसके साथ जंग करने का मौक़ा ढूँडो। 25इसी दिन से मैं तमाम क़ौमों में तुम्हारे बारे में दहशत और ख़ौफ़ पैदा करूँगा। वह तुम्हारी ख़बर सुनकर ख़ौफ़ के मारे थरथराएँगी और काँपेंगी।"

26मैंने दश्ते-क़दीमात से हसबोन के बादशाह सीहोन के पास क़ासिद भेजे। मेरा पैग़ाम नफ़रत और मुख़ालफ़त से ख़ाली था। वह यह था, 27"हमें अपने मुल्क में से गुज़रने दें। हम शाहराह पर ही रहेंगे और उससे न बाईं, न दाईं तरफ़ हटेंगे। 28हम खाने और पीने की तमाम ज़रूरियात के लिए मुनासिब पैसे देंगे। हमें पैदल अपने मुल्क में से गुज़रने दें, 29जिस तरह सईर के बाशिंदों एसौ की औलाद और आर के रहनेवाले मोआबियों ने हमें गुज़रने दिया। क्योंकि हमारी मनज़िल दरियाए-यरदन के मग़रिब में है, वह मुल्क जो रब हमारा ख़ुदा हमें देनेवाला है।"

30लेकिन हसबोन के बादशाह सीहोन ने हमें गुज़रने न दिया, क्योंकि रब तुम्हारे ख़ुदा ने उसे बे-लचक और हमारी बात से इनकार करने पर आमादा कर दिया था ताकि सीहोन हमारे क़ाबू में आ जाए। और बाद में ऐसा ही हुआ। 31रब ने मुझसे कहा, "यों समझ ले कि मैं सीहोन और उसके मुल्क को तेरे हवाले करने लगा हूँ। अब निकलकर उस पर क़ब्ज़ा करना शुरू करो।"

32जब सीहोन अपनी सारी फ़ौज लेकर हमारा मुक़ाबला करने के लिए यहज़ आया 33तो रब हमारे ख़ुदा ने हमें पूरी फ़तह बख़्शी। हमने सीहोन,

उसके बेटों और पूरी क़ौम को शिकस्त दी। 34उस
वक़्त हमने उसके तमाम शहरों पर क़ब्ज़ा कर
लिया और उनके तमाम मर्दों, औरतों और बच्चों
को मार डाला। कोई भी न बचा। 35हमने सिर्फ़
मवेशी और शहरों का लूटा हुआ माल अपने लिए
बचाए रखा।

36वादीए-अरनोन के किनारे पर वाक़े अरोईर
से लेकर जिलियाद तक हर शहर को शिकस्त
माननी पड़ी। इसमें वह शहर भी शामिल था
जो वादीए-अरनोन में था। रब हमारे ख़ुदा ने उन
सबको हमारे हवाले कर दिया। 37लेकिन तुमने
अम्मोनियों का मुल्क छोड़ दिया और न दरियाए-
यब्बोक़ के इर्दगिर्द के इलाक़े, न उसके पहाड़ी
इलाक़े के शहरों को छेड़ा, क्योंकि रब हमारे ख़ुदा
ने ऐसा करने से तुम्हें मना किया था।

बसन के बादशाह ओज की शिकस्त

3 इसके बाद हम शिमाल में बसन की तरफ़
बढ़ गए। बसन का बादशाह ओज अपनी
तमाम फ़ौज के साथ निकलकर हमारा मुक़ाबला
करने के लिए इदरई आया। 2रब ने मुझसे कहा,
“उससे मत डर। मैं उसे, उस की पूरी फ़ौज और
उसका मुल्क तेरे हवाले कर चुका हूँ। उसके साथ
वह कुछ कर जो तूने अमोरी बादशाह सीहोन के
साथ किया जो हसबोन में हुकूमत करता था।”

3ऐसा ही हुआ। रब हमारे ख़ुदा की मदद से
हमने बसन के बादशाह ओज और उस की तमाम
क़ौम को शिकस्त दी। हमने सबको हलाक कर
दिया। कोई भी न बचा। 4उसी वक़्त हमने उसके
तमाम शहरों पर क़ब्ज़ा कर लिया। हमने कुल
60 शहरों पर यानी अरजूब के सारे इलाक़े पर
क़ब्ज़ा किया जिस पर ओज की हुकूमत थी। 5इन
तमाम शहरों की हिफ़ाज़त ऊँची ऊँची फ़सीलों
और कुंडेवाले दरवाज़ों से की गई थी। देहात में
बहुत-सी ऐसी आबादियाँ भी मिल गईं जिनकी
फ़सीलें नहीं थीं। 6हमने उनके साथ वह कुछ
किया जो हमने हसबोन के बादशाह सीहोन के
इलाक़े के साथ किया था। हमने सब कुछ रब
के हवाले करके हर शहर को और तमाम मर्दों,
औरतों और बच्चों को हलाक कर डाला। 7हमने
सिर्फ़ तमाम मवेशी और शहरों का लूटा हुआ माल
अपने लिए बचाए रखा।

8यों हमने उस वक़्त अमोरियों के इन दो
बादशाहों से दरियाए-यरदन का मशरिक़ी इलाक़ा
वादीए-अरनोन से लेकर हरमून पहाड़ तक छीन
लिया। 9(सैदा के बाशिंदे हरमून को सिरयून
कहते हैं जबकि अमोरियों ने उसका नाम सनीर
रखा)। 10हमने ओज बादशाह के पूरे इलाक़े पर
क़ब्ज़ा कर लिया। इसमें मैदाने-मुरतफ़ा के तमाम
शहर शामिल थे, नीज़ सलका और इदरई तक
जिलियाद और बसन के पूरे इलाक़े।

11बादशाह ओज देवक़ामत क़बीले रफ़ाई का
आख़िरी मर्द था। उसका लोहे का ताबूत 13 से
ज़ायद फ़ुट लंबा और छः फ़ुट चौड़ा था और आज
तक अम्मोनियों के शहर रब्बा में देखा जा सकता
है।

यरदन के मशरिक़ में मुल्क की तक़सीम

12जब हमने दरियाए-यरदन के मशरिक़ी
इलाक़े पर क़ब्ज़ा किया तो मैंने रूबिन और जद
के क़बीलों को उसका जुनूबी हिस्सा शहरों समेत
दिया। इस इलाक़े की जुनूबी सरहद दरियाए-
अरनोन पर वाक़े शहर अरोईर है जबकि शिमाल
में इसमें जिलियाद के पहाड़ी इलाक़े का आधा
हिस्सा भी शामिल है। 13जिलियाद का शिमाली
हिस्सा और बसन का मुल्क मैंने मनस्सी के आधे
क़बीले को दिया।

(बसन में अरजूब का इलाक़ा है जहाँ पहले
ओज बादशाह की हुकूमत थी और जो रफ़ाइयों
यानी देवक़ामत अफ़राद का मुल्क कहलाता था।
14मनस्सी के क़बीले के एक आदमी बनाम याईर
ने अरजूब पर जसूरियों और माकातियों की सरहद
तक क़ब्ज़ा कर लिया था। उसने इस इलाक़े की
बस्तियों को अपना नाम दिया। आज तक यही
नाम हव्वोत-याईर यानी याईर की बस्तियाँ चलता
है।)

15मैंने जिलियाद का शिमाली हिस्सा मनस्सी
के कुंबे मकीर को दिया 16लेकिन जिलियाद
का जुनूबी हिस्सा रूबिन और जद के क़बीलों
को दिया। इस हिस्से की एक सरहद जुनूब में
वादीए-अरनोन के बीच में से गुज़रती है जबकि
दूसरी सरहद दरियाए-यब्बोक़ है जिसके पार
अम्मोनियों की हुकूमत है। 17उस की मग़रिबी
सरहद दरियाए-यरदन है यानी किन्नरत (गलील)
की झील से लेकर बहीराए-मुरदार तक जो पिसगा
के पहाड़ी सिलसिले के दामन में है।

18उस वक़्त मैंने रूबिन, जद और मनस्सी के
क़बीलों से कहा, "रब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हें मीरास
में यह मुल्क दे दिया है। लेकिन शर्त यह है कि
तुम्हारे तमाम जंग करने के क़ाबिल मर्द मुसल्लह
होकर तुम्हारे इसराईली भाइयों के आगे आगे
दरियाए-यरदन को पार करें। 19सिर्फ़ तुम्हारी
औरतें और बच्चे पीछे रहकर उन शहरों में इंतज़ार
कर सकते हैं जो मैंने तुम्हारे लिए मुक़र्रर किए
हैं। तुम अपने मवेशियों को भी पीछे छोड़ सकते
हो, क्योंकि मुझे पता है कि तुम्हारे बहुत ज़्यादा
जानवर हैं। 20अपने भाइयों के साथ चलते हुए
उनकी मदद करते रहो। जब रब तुम्हारा ख़ुदा उन्हें
दरियाए-यरदन के मग़रिब में वाक़े मुल्क देगा और
वह तुम्हारी तरह आराम और सुकून से वहाँ आबाद
हो जाएंगे तब तुम अपने मुल्क में वापस जा सकते
हो।"

मूसा को यरदन पार करने की इजाज़त नहीं मिलती

21साथ साथ मैंने यशुअ से कहा, "तूने अपनी
आँखों से सब कुछ देख लिया है जो रब तुम्हारे
ख़ुदा ने इन दोनों बादशाहों सीहोन और ओज से
किया। वह यही कुछ हर उस बादशाह के साथ
करेगा जिसके मुल्क पर तू दरिया को पार करके
हमला करेगा। 22उनसे न डरो। तुम्हारा ख़ुदा ख़ुद
तुम्हारे लिए जंग करेगा।"

23उस वक़्त मैंने रब से इल्तिजा करके कहा,
24"ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, तू अपने ख़ादिम को
अपनी अज़मत और क़ुदरत दिखाने लगा है। क्या
आसमान या ज़मीन पर कोई और ख़ुदा है जो तेरी
तरह के अज़ीम काम कर सकता है? हरगिज़
नहीं! 25मेहरबानी करके मुझे भी दरियाए-यरदन
को पार करके उस अच्छे मुल्क यानी उस बेहतरीन
पहाड़ी इलाक़े को लुबनान तक देखने की इजाज़त
दे।"

26लेकिन तुम्हारे सबब से रब मुझसे नाराज़
था। उसने मेरी न सुनी बल्कि कहा, "बस कर!
आइंदा मेरे साथ इसका ज़िक्र न करना। 27पिसगा
की चोटी पर चढ़कर चारों तरफ़ नज़र दौड़ा। वहाँ
से ग़ौर से देख, क्योंकि तू ख़ुद दरियाए-यरदन
को उबूर नहीं करेगा। 28अपनी जगह यशुअ को
मुक़र्रर कर। उस की हौसलाअफ़ज़ाई कर और उसे
मज़बूत कर, क्योंकि वही इस क़ौम को दरियाए-
यरदन के मग़रिब में ले जाएगा और क़बीलों में
उस मुल्क को तक़सीम करेगा जिसे तू पहाड़ से
देखेगा।"

29चुनाँचे हम बैत-फ़ग़ूर के क़रीब वादी में ठहरे।

फ़रमाँबरदारी की अशद्द ज़रूरत

4 ऐ इसराईल, अब वह तमाम अहकाम
ध्यान से सुन ले जो मैं तुम्हें सिखाता हूँ। उन
पर अमल करो ताकि तुम ज़िंदा रहो और जाकर
उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करो जो रब तुम्हारे बापदादा
का ख़ुदा तुम्हें देनेवाला है। 2जो अहकाम मैं तुम्हें
सिखाता हूँ उनमें न किसी बात का इज़ाफ़ा करो
और न उनसे कोई बात निकालो। रब अपने ख़ुदा
के तमाम अहकाम पर अमल करो जो मैंने तुम्हें
दिए हैं। 3तुमने ख़ुद देखा है कि रब ने बाल-फ़ग़ूर
से क्या कुछ किया। वहाँ रब तेरे ख़ुदा ने हर एक
को हलाक कर डाला जिसने फ़ग़ूर के बाल देवता
की पूजा की। 4लेकिन तुममें से जितने रब अपने
ख़ुदा के साथ लिपटे रहे वह सब आज तक ज़िंदा
हैं।

5मैंने तुम्हें तमाम अहकाम यों सिखा दिए हैं
जिस तरह रब मेरे ख़ुदा ने मुझे बताया। क्योंकि
लाज़िम है कि तुम उस मुल्क में इनके ताबे रहो

जिस पर तुम क़ब्ज़ा करनेवाले हो। 6इन्हें मानो
और इन पर अमल करो तो दूसरी क़ौमों को
तुम्हारी दानिशमंदी और समझ नज़र आएगी।
फिर वह इन तमाम अहकाम के बारे में सुनकर
कहेंगी, “वाह, यह अज़ीम क़ौम कैसी दानिशमंद
और समझदार है!” 7कौन-सी अज़ीम क़ौम के
माबूद इतने क़रीब हैं जितना हमारा ख़ुदा हमारे
क़रीब है? जब भी हम मदद के लिए पुकारते
हैं तो रब हमारा ख़ुदा मौजूद होता है। 8कौन-
सी अज़ीम क़ौम के पास ऐसे मुंसिफ़ाना अहकाम
और हिदायात हैं जैसे मैं आज तुम्हें पूरी शरीअत
सुनाकर पेश कर रहा हूँ?

9लेकिन ख़बरदार, एहतियात करना और वह
तमाम बातें न भूलना जो तेरी आँखों ने देखी हैं।
वह उम्र-भर तेरे दिल में से मिट न जाएँ बल्कि
उन्हें अपने बच्चों और पोते-पोतियों को भी बताते
रहना। 10वह दिन याद कर जब तू होरिब यानी
सीना पहाड़ पर रब अपने ख़ुदा के सामने हाज़िर
था और उसने मुझे बताया, “क़ौम को यहाँ मेरे
पास जमा कर ताकि मैं उनसे बात करूँ और वह
उम्र-भर मेरा ख़ौफ़ मानें और अपने बच्चों को मेरी
बातें सिखाते रहें।”

11उस वक़्त तुम क़रीब आकर पहाड़ के दामन
में खड़े हुए। वह जल रहा था, और उस की आग
आसमान तक भड़क रही थी जबकि काले बादलों
और गहरे अंधेरे ने उसे नज़रों से छुपा दिया।
12फिर रब आग में से तुमसे हमकलाम हुआ।
तुमने उस की बातें सुनीं लेकिन उस की कोई
शक्ल न देखी। सिर्फ़ उस की आवाज़ सुनाई दी।
13उसने तुम्हारे लिए अपने अहद यानी उन 10
अहकाम का एलान किया और हुक्म दिया कि
इन पर अमल करो। फिर उसने उन्हें पत्थर की दो
तख़्तियों पर लिख दिया। 14रब ने मुझे हिदायत
की, “उन्हें वह तमाम अहकाम सिखा जिनके
मुताबिक़ उन्हें चलना होगा जब वह दरियाए-
यरदन को पार करके कनान पर क़ब्ज़ा करेंगे।”

बुतपरस्ती के बारे में आगाही

15जब रब होरिब यानी सीना पहाड़ पर तुमसे
हमकलाम हुआ तो तुमने उस की कोई शक्ल न
देखी। चुनाँचे ख़बरदार रहो 16कि तुम ग़लत काम
करके अपने लिए किसी भी शक्ल का बुत न
बनाओ। न मर्द, औरत, 17ज़मीन पर चलनेवाले
जानवर, परिंदे, 18रेंगनेवाले जानवर या मछली
का बुत बनाओ। 19जब तू आसमान की तरफ़
नज़र उठाकर आसमान का पूरा लशकर देखे
तो सूरज, चाँद और सितारों की परस्तिश और
ख़िदमत करने की आज़माइश में न पड़ना। रब तेरे
ख़ुदा ने इन चीज़ों को बाक़ी तमाम क़ौमों को अता
किया है, 20लेकिन तुम्हें उसने मिसर के भड़कते
भट्टे से निकाला है ताकि तुम उस की अपनी क़ौम
और उस की मीरास बन जाओ। और आज ऐसा
ही हुआ है।

21तुम्हारे सबब से रब ने मुझसे नाराज़ होकर
क़सम खाई कि तू दरियाए-यरदन को पार करके
उस अच्छे मुल्क में दाख़िल नहीं होगा जो रब तेरा
ख़ुदा तुझे मीरास में देनेवाला है। 22मैं यहीं इसी
मुल्क में मर जाऊँगा और दरियाए-यरदन को पार
नहीं करूँगा। लेकिन तुम दरिया को पार करके उस
बेहतरीन मुल्क पर क़ब्ज़ा करोगे। 23हर सूरत में
वह अहद याद रखना जो रब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हारे
साथ बाँधा है। अपने लिए किसी भी चीज़ की
मूरत न बनाना। यह रब का हुक्म है, 24क्योंकि
रब तेरा ख़ुदा भस्म कर देनेवाली आग है, वह ग़यूर
ख़ुदा है।

25तुम मुल्क में जाकर वहाँ रहोगे। तुम्हारे बच्चे
और पोते-नवासे उसमें पैदा हो जाएंगे। जब इस
तरह बहुत वक़्त गुज़र जाएगा तो ख़तरा है कि तुम
ग़लत काम करके किसी चीज़ की मूरत बनाओ।
ऐसा कभी न करना। यह रब तुम्हारे ख़ुदा की
नज़र में बुरा है और उसे ग़ुस्सा दिलाएगा। 26आज
आसमान और ज़मीन मेरे गवाह हैं कि अगर तुम
ऐसा करो तो जल्दी से उस मुल्क में से मिट
जाओगे जिस पर तुम दरियाए-यरदन को पार

करके क़ब्ज़ा करोगे। तुम देर तक वहाँ जीते नहीं रहोगे बल्कि पूरे तौर पर हलाक हो जाओगे। 27रब तुम्हें मुल्क से निकालकर मुख़्तलिफ़ क़ौमों में मुंतशिर कर देगा, और वहाँ सिर्फ़ थोड़े ही अफ़राद बचे रहेंगे। 28वहाँ तुम इनसान के हाथों से बने हुए लकड़ी और पत्थर के बुतों की ख़िदमत करोगे, जो न देख सकते, न सुन सकते, न खा सकते और न सूँघ सकते हैं।

29वहीं तू रब अपने ख़ुदा को तलाश करेगा, और अगर उसे पूरे दिलो-जान से ढूँडे तो वह तुझे मिल भी जाएगा। 30जब तू इस तकलीफ़ में मुब्तला होगा और यह सारा कुछ तुझ पर से गुज़रेगा फिर आख़िरकार रब अपने ख़ुदा की तरफ़ रुजू करके उस की सुनेगा। 31क्योंकि रब तेरा ख़ुदा रहीम ख़ुदा है। वह तुझे न तर्क करेगा और न बरबाद करेगा। वह उस अहद को नहीं भूलेगा जो उसने क़सम खाकर तेरे बापदादा से बाँधा था।

रब ही हमारा ख़ुदा है

32दुनिया में इनसान की तख़लीक़ से लेकर आज तक माज़ी की तफ़तीश कर। आसमान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक खोज लगा। क्या इससे पहले कभी इस तरह का मोजिज़ाना काम हुआ है? क्या किसी ने इससे पहले इस क़िस्म के अज़ीम काम की ख़बर सुनी है? 33तूने आग में से बोलती हुई अल्लाह की आवाज़ सुनी तो भी जीता बचा! क्या किसी और क़ौम के साथ ऐसा हुआ है? 34क्या किसी और माबूद ने कभी जुर्रत की है कि रब की तरह पूरी क़ौम को एक मुल्क से निकालकर अपनी मिलकियत बनाया हो? उसने ऐसा ही तुम्हारे साथ किया। उसने तुम्हारे देखते देखते मिसरियों को आज़माया, उन्हें बड़े मोजिज़े दिखाए, उनके साथ जंग की, अपनी बड़ी क़ुदरत और इख़्तियार का इज़हार किया और हौलनाक कामों से उन पर ग़ालिब आ गया।

35तुझे यह सब कुछ दिखाया गया ताकि तू जान ले कि रब ख़ुदा है। उसके सिवा कोई और नहीं है। 36उसने तुझे नसीहत देने के लिए आसमान से अपनी आवाज़ सुनाई। ज़मीन पर उसने तुझे अपनी अज़ीम आग दिखाई जिसमें से तूने उस की बातें सुनीं। 37उसे तेरे बापदादा से प्यार था, और उसने तुझे जो उनकी औलाद हैं चुन लिया। इसलिए वह ख़ुद हाज़िर होकर अपनी अज़ीम क़ुदरत से तुझे मिसर से निकाल लाया। 38उसने तेरे आगे से तुझसे ज़्यादा बड़ी और ताक़तवर क़ौमें निकाल दीं ताकि तुझे उनका मुल्क मीरास में मिल जाए। आज ऐसा ही हो रहा है।

39चुनाँचे आज जान ले और ज़हन में रख कि रब आसमान और ज़मीन का ख़ुदा है। कोई और माबूद नहीं है। 40उसके अहकाम पर अमल कर जो मैं तुझे आज सुना रहा हूँ। फिर तू और तेरी औलाद कामयाब होंगे, और तू देर तक उस मुल्क में जीता रहेगा जो रब तुझे हमेशा के लिए दे रहा है।

यरदन के मशरिक़ में पनाह के शहर

41यह कहकर मूसा ने दरियाए-यरदन के मशरिक़ में पनाह के तीन शहर चुन लिए। 42उनमें वह शख़्स पनाह ले सकता था जिसने दुश्मनी की बिना पर नहीं बल्कि ग़ैरइरादी तौर पर किसी को जान से मार दिया था। ऐसे शहर में पनाह लेने के सबब से उसे बदले में क़त्ल नहीं किया जा सकता था। 43इसके लिए रूबिन के क़बीले के लिए मैदाने-मुरतफ़ा का शहर बसर, जद के क़बीले के लिए जिलियाद का शहर रामात और मनस्सी के क़बीले के लिए बसन का शहर जौलान चुना गया।

शरीअत का पेशलफ़्ज़

44दर्जे-ज़ैल वह शरीअत है जो मूसा ने इसराईलियों को पेश की। 45मूसा ने यह अहकाम और हिदायात उस वक़्त पेश कीं जब वह मिसर से निकल कर 46दरियाए-यरदन के मशरिक़ी किनारे पर थे। बैत-फ़ग़ूर उनके मुक़ाबिल था, और वह अमोरी बादशाह सीहोन के मुल्क में

ख़ैमाज़न थे। सीहोन की रिहाइश हसबोन में थी और उसे इसराईलियों से शिकस्त हुई थी जब वह मूसा की राहनुमाई में मिसर से निकल आए थे। 47उसके मुल्क पर क़ब्ज़ा करके उन्होंने बसन के मुल्क पर भी फ़तह पाई थी जिसका बादशाह ओज था। इन दोनों अमोरी बादशाहों का यह पूरा इलाक़ा उनके हाथ में आ गया था। यह इलाक़ा दरियाए-यरदन के मशरिक़ में था। 48उस की जुनूबी सरहद दरियाए-अरनोन के किनारे पर वाक़े शहर अरोईर थी जबकि उस की शिमाली सरहद सिरयून यानी हरमून पहाड़ थी। 49दरियाए-यरदन का पूरा मशरिक़ी किनारा पिसगा के पहाड़ी सिलसिले के दामन में वाक़े बहीराए-मुरदार तक उसमें शामिल था।

दस अहकाम

5 मूसा ने तमाम इसराईलियों को जमा करके कहा,

ऐ इसराईल, ध्यान से वह हिदायात और अहकाम सुन जो मैं तुम्हें आज पेश कर रहा हूँ। उन्हें सीखो और बड़ी एहतियात से उन पर अमल करो। 2रब हमारे ख़ुदा ने होरिब यानी सीना पहाड़ पर हमारे साथ अहद बाँधा। 3उसने यह अहद हमारे बापदादा के साथ नहीं बल्कि हमारे ही साथ बाँधा है, जो आज इस जगह पर ज़िंदा हैं। 4रब पहाड़ पर आग में से रूबरू होकर तुमसे हमकलाम हुआ। 5उस वक़्त मैं तुम्हारे और रब के दरमियान खड़ा हुआ ताकि तुम्हें रब की बातें सुनाऊँ। क्योंकि तुम आग से डरते थे और इसलिए पहाड़ पर न चढ़े। उस वक़्त रब ने कहा,

6“मैं रब तेरा ख़ुदा हूँ जो तुझे मुल्के-मिसर की ग़ुलामी से निकाल लाया। 7मेरे सिवा किसी और माबूद की परस्तिश न करना।

8अपने लिए बुत न बनाना। किसी भी चीज़ की मूरत न बनाना, चाहे वह आसमान में, ज़मीन पर या समुंदर में हो। 9न बुतों की परस्तिश, न उनकी ख़िदमत करना, क्योंकि मैं तेरा रब ग़यूर ख़ुदा हूँ। जो मुझसे नफ़रत करते हैं उन्हें मैं तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा दूँगा। 10लेकिन जो मुझसे मुहब्बत रखते और मेरे अहकाम पूरे करते हैं उन पर मैं हज़ार पुश्तों तक मेहरबानी करूँगा।

11रब अपने ख़ुदा का नाम बेमक़सद या ग़लत मक़सद के लिए इस्तेमाल न करना। जो भी ऐसा करता है उसे रब सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ेगा।

12सबत के दिन का ख़याल रखना। उसे इस तरह मनाना कि वह मख़सूसो-मुक़द्दस हो, उसी तरह जिस तरह रब तेरे ख़ुदा ने तुझे हुक्म दिया है। 13हफ़्ते के पहले छः दिन अपना काम-काज कर, 14लेकिन सातवाँ दिन रब तेरे ख़ुदा का आराम का दिन है। उस दिन किसी तरह का काम न करना। न तू, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा नौकर, न तेरी नौकरानी, न तेरा बैल, न तेरा गधा, न तेरा कोई और मवेशी। जो परदेसी तेरे दरमियान रहता है वह भी काम न करे। तेरे नौकर और तेरी नौकरानी को तेरी तरह आराम का मौक़ा मिलना है। 15याद रखना कि तू मिसर में ग़ुलाम था और कि रब तेरा ख़ुदा ही तुझे बड़ी क़ुदरत और इख़्तियार से वहाँ से निकाल लाया। इसलिए उसने तुझे हुक्म दिया है कि सबत का दिन मनाना।

16अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना जिस तरह रब तेरे ख़ुदा ने तुझे हुक्म दिया है। फिर तू उस मुल्क में जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देनेवाला है ख़ुशहाल होगा और देर तक जीता रहेगा।

17क़त्ल न करना।

18ज़िना न करना।

19चोरी न करना।

20अपने पड़ोसी के बारे में झूटी गवाही न देना।

21अपने पड़ोसी की बीवी का लालच न करना। न उसके घर का, न उस की ज़मीन का, न उसके नौकर का, न उस की नौकरानी का, न उसके बैल और न उसके गधे का बल्कि उस की किसी भी चीज़ का लालच न करना।”

22रब ने तुम सबको यह अहकाम दिए जब तुम सीना पहाड़ के दामन में जमा थे। वहाँ तुमने आग, बादल और गहरे अंधेरे में से उस की ज़ोरदार आवाज़ सुनी। यही कुछ उसने कहा और

बस। फिर उसने उन्हें पत्थर की दो तख़्तियों पर लिखकर मुझे दे दिया।

लोग रब से डरते हैं

23जब तुमने तारीकी से यह आवाज़ सुनी और पहाड़ की जलती हुई हालत देखी तो तुम्हारे क़बीलों के राहनुमा और बुज़ुर्ग मेरे पास आए। 24उन्होंने कहा, “रब हमारे ख़ुदा ने हम पर अपना जलाल और अज़मत ज़ाहिर की है। आज हमने आग में से उस की आवाज़ सुनी है। हमने देख लिया है कि जब अल्लाह इनसान से हमकलाम होता है तो ज़रूरी नहीं कि वह मर जाए। 25लेकिन अब हम क्यों अपनी जान ख़तरे में डालें? अगर हम मज़ीद रब अपने ख़ुदा की आवाज़ सुनें तो यह बड़ी आग हमें भस्म कर देगी और हम अपनी जान से हाथ धो बैठेंगे। 26क्योंकि फ़ानी इनसानों में से कौन हमारी तरह ज़िंदा ख़ुदा को आग में से बातें करते हुए सुनकर ज़िंदा रहा है? कोई भी नहीं! 27आप ही क़रीब जाकर उन तमाम बातों को सुनें जो रब हमारा ख़ुदा हमें बताना चाहता है। फिर लौटकर हमें वह बातें सुनाएँ। हम उन्हें सुनेंगे और उन पर अमल करेंगे।”

28जब रब ने यह सुना तो उसने मुझसे कहा, “मैंने इन लोगों की यह बातें सुन ली हैं। वह ठीक कहते हैं। 29काश उनकी सोच हमेशा ऐसी ही हो! काश वह हमेशा इसी तरह मेरा ख़ौफ़ मानें और मेरे अहकाम पर अमल करें! अगर वह ऐसा करेंगे तो वह और उनकी औलाद हमेशा कामयाब रहेंगे। 30जा, उन्हें बता दे कि अपने ख़ैमों में लौट जाओ। 31लेकिन तू यहाँ मेरे पास रह ताकि मैं तुझे तमाम क़वानीन और अहकाम दे दूँ। उनको लोगों को सिखाना ताकि वह उस मुल्क में उनके मुताबिक़ चलें जो मैं उन्हें दूँगा।”

32चुनाँचे एहतियात से उन अहकाम पर अमल करो जो रब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हें दिए हैं। उनसे न दाईं तरफ़ हटो न बाईं तरफ़। 33हमेशा उस राह पर चलते रहो जो रब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हें बताई है। फिर तुम कामयाब होगे और उस मुल्क में देर तक जीते रहोगे जिस पर तुम क़ब्ज़ा करोगे।

सबसे बड़ा हुक्म

6 यह वह तमाम अहकाम हैं जो रब तुम्हारे ख़ुदा ने मुझे तुम्हें सिखाने के लिए कहा। उस मुल्क में इन पर अमल करना जिसमें तुम जानेवाले हो ताकि उस पर क़ब्ज़ा करो। 2उम्र-भर तू, तेरे बच्चे और पोते-नवासे रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानें और उसके उन तमाम अहकाम पर चलें जो मैं तुझे दे रहा हूँ। तब तू देर तक जीता रहेगा। 3ऐ इसराईल, यह मेरी बातें सुन और बड़ी एहतियात से इन पर अमल कर! फिर रब तेरे ख़ुदा का वादा पूरा हो जाएगा कि तू कामयाब रहेगा और तेरी तादाद उस मुल्क में ख़ूब बढ़ती जाएगी जिसमें दूध और शहद की कसरत है।

4सुन ऐ इसराईल! रब हमारा ख़ुदा एक ही रब है। 5रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान और अपनी पूरी ताक़त से प्यार करना। 6जो अहकाम मैं तुझे आज बता रहा हूँ उन्हें अपने दिल पर नक़्श कर। 7उन्हें अपने बच्चों के ज़हननशीन करा। यही बातें हर वक़्त और हर जगह तेरे लबों पर हों ख़ाह तू घर में बैठा या रास्ते पर चलता हो, लेटा हो या खड़ा हो। 8उन्हें निशान के तौर पर और याददिहानी के लिए अपने बाज़ुओं और माथे पर लगा। 9उन्हें अपने घरों की चौखटों और अपने शहरों के दरवाज़ों पर लिख।

10रब तेरे ख़ुदा का वादा पूरा होगा जो उसने क़सम खाकर तेरे बापदादा इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब के साथ किया कि मैं तुझे कनान में ले जाऊँगा। जो बड़े और शानदार शहर उसमें हैं वह तूने ख़ुद नहीं बनाए। 11जो मकान उसमें हैं वह ऐसी अच्छी चीज़ों से भरे हुए हैं जो तूने उनमें नहीं रखीं। जो कुएँ उसमें हैं उनको तूने नहीं खोदा। जो अंगूर और ज़ैतून के बाग़ उसमें हैं उन्हें तूने नहीं लगाया। यह हक़ीक़त याद रख। जब तू उस मुल्क में कसरत का खाना खाकर सेर हो जाएगा

12तो ख़बरदार! रब को न भूलना जो तुझे मिसर
की ग़ुलामी से निकाल लाया।
13रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना। सिर्फ़ उसी
की इबादत करना और उसी का नाम लेकर क़सम
खाना। 14दीगर माबूदों की पैरवी न करना। इसमें
तमाम पड़ोसी अक़वाम के देवता भी शामिल हैं।
15वरना रब तेरे ख़ुदा का ग़ज़ब तुझ पर नाज़िल
होकर तुझे मुल्क में से मिटा डालेगा। क्योंकि वह
ग़यूर ख़ुदा है और तेरे दरमियान ही रहता है।
16रब अपने ख़ुदा को उस तरह न आज़माना
जिस तरह तुमने मस्सा में किया था। 17ध्यान से
रब अपने ख़ुदा के अहकाम के मुताबिक़ चलो,
उन तमाम हिदायात और क़वानीन पर जो उसने
तुझे दिए हैं। 18जो कुछ रब की नज़र में दुरुस्त
और अच्छा है वह कर। फिर तू कामयाब रहेगा, तू
जाकर उस अच्छे मुल्क पर क़ब्ज़ा करेगा जिसका
वादा रब ने तेरे बापदादा से क़सम खाकर किया
था। 19तब रब की बात पूरी हो जाएगी कि तू
अपने दुश्मनों को अपने आगे आगे निकाल देगा।
20आनेवाले दिनों में तेरे बच्चे पूछेंगे, “रब हमारे
ख़ुदा ने आपको इन तमाम अहकाम पर अमल
करने को क्यों कहा?” 21फिर उन्हें जवाब देना,
“हम मिसर के बादशाह फ़िरौन के ग़ुलाम थे,
लेकिन रब हमें बड़ी क़ुदरत का इज़हार करके
मिसर से निकाल लाया। 22हमारे देखते देखते
उसने बड़े बड़े निशान और मोजिज़े किए और
मिसर, फ़िरौन और उसके पूरे घराने पर हौलनाक
मुसीबतें भेजीं। 23उस वक़्त वह हमें वहाँ से
निकाल लाया ताकि हमें लेकर वह मुल्क दे
जिसका वादा उसने क़सम खाकर हमारे बापदादा
के साथ किया था। 24रब हमारे ख़ुदा ही ने हमें
कहा कि इन तमाम अहकाम के मुताबिक़ चलो
और रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानो। क्योंकि
अगर हम ऐसा करें तो फिर हम हमेशा कामयाब
और ज़िंदा रहेंगे। और आज तक ऐसा ही रहा
है। 25अगर हम रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर रहकर
एहतियात से उन तमाम बातों पर अमल करेंगे जो
उसने हमें करने को कही हैं तो वह हमें रास्तबाज़
क़रार देगा।”

दूसरी कनानी क़ौमों को निकालना है

7 रब तेरा ख़ुदा तुझे उस मुल्क में ले जाएगा
जिस पर तू जाकर क़ब्ज़ा करेगा। वह तेरे
सामने से बहुत-सी क़ौमें भगा देगा। गो यह सात
क़ौमें यानी हित्ती, जिरजासी, अमोरी, कनानी,
फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी तादाद और ताक़त
के लिहाज़ से तुझसे बड़ी होंगी 2तो भी रब तेरा
ख़ुदा उन्हें तेरे हवाले करेगा। जब तू उन्हें शिकस्त
देगा तो उन सबको उसके लिए मख़सूस करके
हलाक कर देना है। न उनके साथ अहद बाँधना
और न उन पर रहम करना। 3उनमें से किसी से
शादी न करना। न अपनी बेटियों का रिश्ता उनके
बेटों को देना, न अपने बेटों का रिश्ता उनकी
बेटियों से करना। 4वरना वह तुम्हारे बच्चों को मेरी
पैरवी से दूर करेंगे और वह मेरी नहीं बल्कि उनके
देवताओं की ख़िदमत करेंगे। तब रब का ग़ज़ब
तुम पर नाज़िल होकर जल्दी से तुम्हें हलाक कर
देगा। 5इसलिए उनकी क़ुरबानगाहें ढा देना। जिन
पत्थरों की वह पूजा करते हैं उन्हें चकनाचूर कर
देना, उनके यसीरत देवी के खंबे काट डालना और
उनके बुत जला देना।
6क्योंकि तू रब अपने ख़ुदा के लिए मख़सूसो-
मुक़द्दस है। उसने दुनिया की तमाम क़ौमों में से
तुझे चुनकर अपनी क़ौम और ख़ास मिलकियत
बनाया। 7रब ने क्यों तुम्हारे साथ ताल्लुक़ क़ायम
किया और तुम्हें चुन लिया? क्या इस वजह
से कि तुम तादाद में दीगर क़ौमों की निसबत
ज़्यादा थे? हरगिज़ नहीं! तुम तो बहुत कम
थे। 8बल्कि वजह यह थी कि रब ने तुम्हें प्यार
किया और वह वादा पूरा किया जो उसने क़सम
खाकर तुम्हारे बापदादा के साथ किया था। इसी
लिए वह फ़िद्या देकर तुम्हें बड़ी क़ुदरत से मिसर
की ग़ुलामी और उस मुल्क के बादशाह के हाथ
से बचा लाया। 9चुनाँचे जान ले कि सिर्फ़ रब तेरा
ख़ुदा ही ख़ुदा है। वह वफ़ादार ख़ुदा है। जो उससे

मुहब्बत रखते और उसके अहकाम पर अमल करते हैं उनके साथ वह अपना अहद क़ायम रखेगा और उन पर हज़ार पुश्तों तक मेहरबानी करेगा। 10लेकिन उससे नफ़रत करनेवालों को वह उनके रूबरू मुनासिब सज़ा देकर बरबाद करेगा। हाँ, जो उससे नफ़रत करते हैं, उनके रूबरू वह मुनासिब सज़ा देगा और झिजकेगा नहीं।

11चुनाँचे ध्यान से उन तमाम अहकाम पर अमल कर जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ ताकि तू उनके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारे। 12अगर तू उन पर तवज्जुह दे और एहतियात से उन पर चले तो फिर रब तेरा ख़ुदा तेरे साथ अपना अहद क़ायम रखेगा और तुझ पर मेहरबानी करेगा, बिलकुल उस वादे के मुताबिक़ जो उसने क़सम खाकर तेरे बापदादा से किया था। 13वह तुझे प्यार करेगा और तुझे उस मुल्क में बरकत देगा जो तुझे देने का वादा उसने क़सम खाकर तेरे बापदादा से किया था। तुझे बहुत औलाद बख़्शने के अलावा वह तेरे खेतों को बरकत देगा, और तुझे कसरत का अनाज, अंगूर और ज़ैतून हासिल होगा। वह तेरे रेवड़ों को भी बरकत देगा, और तेरे गाय-बैलों और भेड़-बकरियों की तादाद बढ़ती जाएगी। 14तुझे दीगर तमाम क़ौमों की निसबत कहीं ज़्यादा बरकत मिलेगी। न तुझमें और न तेरे मवेशियों में बाँझपन पाया जाएगा। 15रब हर बीमारी को तुझसे दूर रखेगा। वह तुझमें वह ख़तरनाक वबाएँ फैलने नहीं देगा जिनसे तू मिसर में वाक़िफ़ हुआ बल्कि उन्हें उनमें फैलाएगा जो तुझसे नफ़रत रखते हैं।

16जो भी क़ौमें रब तेरा ख़ुदा तेरे हाथ में कर देगा उन्हें तबाह करना लाज़िम है। उन पर रहम की निगाह से न देखना, न उनके देवताओं की ख़िदमत करना, वरना तू फँस जाएगा।

17गो तेरा दिल कहे, “यह क़ौमें हमसे ताक़तवर हैं। हम किस तरह इन्हें निकाल सकते हैं?” 18तो भी उनसे न डर। वही कुछ ज़हन में रख जो रब तेरे ख़ुदा ने फ़िरौन और पूरे मिसर के साथ किया। 19क्योंकि तूने अपनी आँखों से रब अपने ख़ुदा की वह बड़ी आज़मानेवाली मुसीबतें और मोजिज़े, उसका वह अज़ीम इख़्तियार और क़ुदरत देखी जिससे वह तुझे वहाँ से निकाल लाया। वही कुछ रब तेरा ख़ुदा उन क़ौमों के साथ भी करेगा जिनसे तू इस वक़्त डरता है। 20न सिर्फ़ यह बल्कि रब तेरा ख़ुदा उनके दरमियान ज़ंबूर भी भेजेगा ताकि वह भी तबाह हो जाएँ जो पहले हमलों से बचकर छुप गए हैं। 21उनसे दहशत न खा, क्योंकि रब तेरा ख़ुदा तेरे दरमियान है। वह अज़ीम ख़ुदा है जिससे सब ख़ौफ़ खाते हैं। 22वह रफ़्ता रफ़्ता उन क़ौमों को तेरे आगे से भगा देगा। तू उन्हें एकदम ख़त्म नहीं कर सकेगा, वरना जंगली जानवर तेज़ी से बढ़कर तुझे नुक़सान पहुचाएँगे।

23रब तेरा ख़ुदा उन्हें तेरे हवाले कर देगा। वह उनमें इतनी सख़्त अफ़रा-तफ़री पैदा करेगा कि वह बरबाद हो जाएंगे। 24वह उनके बादशाहों को भी तेरे क़ाबू में कर देगा, और तू उनका नामो-निशान मिटा देगा। कोई भी तेरा सामना नहीं कर सकेगा बल्कि तू उन सबको बरबाद कर देगा।

25उनके देवताओं के मुजस्समे जला देना। जो चाँदी और सोना उन पर चढ़ाया हुआ है उसका लालच न करना। उसे न लेना वरना तू फँस जाएगा। क्योंकि इन चीज़ों से रब तेरे ख़ुदा को घिन आती है। 26इस तरह की मकरूह चीज़ अपने घर में न लाना, वरना तुझे भी उसके साथ अलग करके बरबाद किया जाएगा। तेरे दिल में उससे शदीद नफ़रत और घिन हो, क्योंकि उसे पूरे तौर पर बरबाद करने के लिए मख़सूस किया गया है।

रब को न भूलना

8 एहतियात से उन तमाम अहकाम पर अमल करो जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ। क्योंकि ऐसा करने से तुम जीते रहोगे, तादाद में बढ़ोगे और जाकर उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करोगे जिसका वादा रब ने तुम्हारे बापदादा से क़सम खाकर किया था।

2वह पूरा वक़्त याद रख जब रब तेरा ख़ुदा रेगिस्तान में 40 साल तक तेरी राहनुमाई करता

रहा ताकि तुझे आजिज़ करके आज़माए और मालूम करे कि क्या तू उसके अहकाम पर चलेगा कि नहीं। 3उसने तुझे आजिज़ करके भूके होने दिया, फिर तुझे मन खिलाया जिससे न तू और न तेरे बापदादा वाक़िफ़ थे। क्योंकि वह तुझे सिखाना चाहता था कि इनसान की ज़िंदगी सिर्फ़ रोटी पर मुनहसिर नहीं होती बल्कि हर उस बात पर जो रब के मुँह से निकलती है।

4इन 40 सालों के दौरान तेरे कपड़े न घिसे न फटे, न तेरे पाँव सूजे। 5चुनाँचे दिल में जान ले कि जिस तरह बाप अपने बेटे की तरबियत करता है उसी तरह रब हमारा ख़ुदा हमारी तरबियत करता है।

6रब अपने ख़ुदा के अहकाम पर अमल करके उस की राहों पर चल और उसका ख़ौफ़ मान। 7क्योंकि वह तुझे एक बेहतरीन मुल्क में ले जा रहा है जिसमें नहरें और ऐसे चश्मे हैं जो पहाड़ियों और वादियों की ज़मीन से फूट निकलते हैं। 8उस की पैदावार अनाज, जौ, अंगूर, अंजीर, अनार, ज़ैतून और शहद है। 9उसमें रोटी की कमी नहीं होगी, और तू किसी चीज़ से महरूम नहीं रहेगा। उसके पत्थरों में लोहा पाया जाता है, और खुदाई से तू उस की पहाड़ियों से ताँबा हासिल कर सकेगा।

10जब तू कसरत का खाना खाकर सेर हो जाएगा तो फिर रब अपने ख़ुदा की तमजीद करना जिसने तुझे यह शानदार मुल्क दिया है। 11ख़बरदार, रब अपने ख़ुदा को न भूल और उसके उन अहकाम पर अमल करने से गुरेज़ न कर जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ। 12क्योंकि जब तू कसरत का खाना खाकर सेर हो जाएगा, तू शानदार घर बनाकर उनमें रहेगा 13और तेरे रेवड़, सोने-चाँदी और बाक़ी तमाम माल में इज़ाफ़ा होगा 14तो कहीं तू मग़रूर होकर रब अपने ख़ुदा को भूल न जाए जो तुझे मिसर की ग़ुलामी से निकाल लाया। 15जब तू उस वसी और हौलनाक रेगिस्तान में सफ़र कर रहा था जिसमें ज़हरीले साँप और बिच्छू थे तो वही तेरी राहनुमाई करता रहा। पानी से महरूम उस इलाक़े में वही सख़्त पत्थर में से पानी निकाल लाया। 16रेगिस्तान में वही तुझे मन खिलाता रहा, जिससे तेरे बापदादा वाक़िफ़ न थे। इन मुश्किलात से वह तुझे आजिज़ करके आज़माता रहा ताकि आख़िरकार तू कामयाब हो जाए।

17जब तुझे कामयाबी हासिल होगी तो यह न कहना कि मैंने अपनी ही क़ुव्वत और ताक़त से यह सब कुछ हासिल किया है। 18बल्कि रब अपने ख़ुदा को याद करना जिसने तुझे दौलत हासिल करने की क़ाबिलियत दी है। क्योंकि वह आज भी उसी अहद पर क़ायम है जो उसने तेरे बापदादा से किया था।

19रब अपने ख़ुदा को न भूलना, और न दीगर माबूदों के पीछे पड़कर उन्हें सिजदा और उनकी ख़िदमत करना। वरना मैं ख़ुद गवाह हूँ कि तुम यक़ीनन हलाक हो जाओगे। 20अगर तुम रब अपने ख़ुदा की इताअत नहीं करोगे तो फिर वह तुम्हें उन क़ौमों की तरह तबाह कर देगा जो तुमसे पहले इस मुल्क में रहती थीं।

मुल्क मिलने का सबब इसराईल की रास्ती नहीं है

9 सुन ऐ इसराईल! आज तू दरियाए-यरदन को पार करनेवाला है। दूसरी तरफ़ तू ऐसी क़ौमों को भगा देगा जो तुझसे बड़ी और ताक़तवर हैं और जिनके शानदार शहरों की फ़सीलें आसमान से बातें करती हैं। 2वहाँ अनाक़ी बसते हैं जो ताक़तवर और दराज़क़द हैं। तू ख़ुद जानता है कि उनके बारे में कहा जाता है, “कौन अनाक़ियों का सामना कर सकता है?” 3लेकिन आज जान ले कि रब तेरा ख़ुदा तेरे आगे आगे चलते हुए उन्हें भस्म कर देनेवाली आग की तरह हलाक करेगा। वह तेरे आगे आगे उन पर क़ाबू पाएगा, और तू उन्हें निकालकर जल्दी मिटा देगा, जिस तरह रब ने वादा किया है।

4जब रब तेरा ख़ुदा उन्हें तेरे सामने से निकाल देगा तो तू यह न कहना, “मैं रास्तबाज़ हूँ, इसी

लिए रब मुझे लायक़ समझकर यहाँ लाया और यह मुल्क मीरास में दे दिया है।" यह बात हरगिज़ दुरुस्त नहीं है। रब उन क़ौमों को उनकी ग़लत हरकतों की वजह से तेरे सामने से निकाल देगा। 5तू अपनी रास्तबाज़ी और दियानतदारी की बिना पर उस मुल्क पर क़ब्ज़ा नहीं करेगा बल्कि रब उन्हें उनकी शरीर हरकतों के बाइस तेरे सामने से निकाल देगा। दूसरे, जो वादा उसने तेरे बापदादा इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब के साथ क़सम खाकर किया था उसे पूरा होना है।

6चुनाँचे जान ले कि रब तेरा ख़ुदा तुझे तेरी रास्ती के बाइस यह अच्छा मुल्क नहीं दे रहा। हक़ीक़त तो यह है कि तू हटधर्म क़ौम है।

सोने का बछड़ा

7याद रख और कभी न भूल कि तूने रेगिस्तान में रब अपने ख़ुदा को किस तरह नाराज़ किया। मिसर से निकलते वक़्त से लेकर यहाँ पहुँचने तक तुम रब से सरकश रहे हो। 8ख़ासकर होरिब यानी सीना के दामन में तुमने रब को इतना ग़ुस्सा दिलाया कि वह तुम्हें हलाक करने को था। 9उस वक़्त मैं पहाड़ पर चढ़ गया था ताकि पत्थर की तख़्तियाँ यानी उस अहद की तख़्तियाँ मिल जाएँ जो रब ने तुम्हारे साथ बाँधा था। कुछ खाए-पिए बग़ैर मैं 40 दिन और रात वहाँ रहा।

10-11जो कुछ रब ने आग में से कहा था जब तुम पहाड़ के दामन में जमा थे वही कुछ उसने अपनी उँगली से दोनों तख़्तियों पर लिखकर मुझे दिया। 12उसने मुझसे कहा, "फ़ौरन यहाँ से उतर जा। तेरी क़ौम जिसे तू मिसर से निकाल लाया बिगड़ गई है। वह कितनी जल्दी से मेरे अहकाम से हट गए हैं। उन्होंने अपने लिए बुत ढाल लिया है। 13मैंने जान लिया है कि यह क़ौम कितनी ज़िद्दी है। 14अब मुझे छोड़ दे ताकि मैं उन्हें तबाह करके उनका नामो-निशान दुनिया में से मिटा डालूँ। उनकी जगह मैं तुझसे एक क़ौम बना लूँगा जो उनसे बड़ी और ताक़तवर होगी।"

15मैं मुड़कर पहाड़ से उतरा जो अब तक भड़क रहा था। मेरे हाथों में अहद की दोनों तख़्तियाँ थीं। 16तुम्हें देखते ही मुझे मालूम हुआ कि तुमने रब अपने ख़ुदा का गुनाह किया है। तुमने अपने लिए बछड़े का बुत ढाल लिया था। तुम कितनी जल्दी से रब की मुक़र्ररा राह से हट गए थे।

17तब मैंने तुम्हारे देखते देखते दोनों तख़्तियों को ज़मीन पर पटख़कर टुकड़े टुकड़े कर दिया। 18एक और बार मैं रब के सामने मुँह के बल गिरा। मैंने न कुछ खाया, न कुछ पिया। 40 दिन और रात मैं तुम्हारे तमाम गुनाहों के बाइस इसी हालत में रहा। क्योंकि जो कुछ तुमने किया था वह रब को निहायत बुरा लगा, इसलिए वह ग़ज़बनाक हो गया था। 19वह तुमसे इतना नाराज़ था कि मैं बहुत डर गया। यों लग रहा था कि वह तुम्हें हलाक कर देगा। लेकिन इस बार भी उसने मेरी सुन ली। 20मैंने हारून के लिए भी दुआ की, क्योंकि रब उससे भी निहायत नाराज़ था और उसे हलाक कर देना चाहता था।

21जो बछड़ा तुमने गुनाह करके बनाया था उसे मैंने जला दिया, फिर जो कुछ बाक़ी रह गया उसे कुचल दिया और पीस पीसकर पाउडर बना दिया। यह पाउडर मैंने उस चश्मे में फेंक दिया जो पहाड़ पर से बह रहा था।

22तुमने रब को तबेरा, मस्सा और क़ब्रोत-हत्तावा में भी ग़ुस्सा दिलाया। 23क़ादिस-बरनीअ में भी ऐसा ही हुआ। वहाँ से रब ने तुम्हें भेजकर कहा था, "जाओ, उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करो जो मैंने तुम्हें दे दिया है।" लेकिन तुमने सरकश होकर रब अपने ख़ुदा के हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी की। तुमने उस पर एतमाद न किया, न उस की सुनी। 24जब से मैं तुम्हें जानता हूँ तुम्हारा रब के साथ रवैया बाग़ियाना ही रहा है।

25मैं 40 दिन और रात रब के सामने ज़मीन पर मुँह के बल रहा, क्योंकि रब ने कहा था कि वह तुम्हें हलाक कर देगा। 26मैंने उससे मिन्नत करके कहा, "ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, अपनी क़ौम को तबाह न कर। वह तो तेरी ही मिलकियत

है जिसे तूने फ़िद्या देकर अपनी अज़ीम क़ुदरत से बचाया और बड़े इख़्तियार के साथ मिसर से निकाल लाया। 27अपने ख़ादिमों इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब को याद कर, और इस क़ौम की ज़िद, शरीर हरकतों और गुनाह पर तवज्जुह न दे। 28वरना मिसरी कहेंगे, 'रब उन्हें उस मुल्क में लाने के क़ाबिल नहीं था जिसका वादा उसने किया था, बल्कि वह उनसे नफ़रत करता था। हाँ, वह उन्हें हलाक करने के लिए रेगिस्तान में ले आया।' 29वह तो तेरी क़ौम हैं, तेरी मिलकियत जिसे तू अपनी अज़ीम क़ुदरत और इख़्तियार से मिसर से निकाल लाया।"

मूसा को नई तख़्तियाँ मिलती हैं

10 उस वक़्त रब ने मुझसे कहा, "पत्थर की दो और तख़्तियाँ तराशना जो पहली तख़्तियों की मानिंद हों। उन्हें लेकर मेरे पास पहाड़ पर चढ़ आ। लकड़ी का संदूक़ भी बनाना। 2फिर मैं इन तख़्तियों पर दुबारा वही बातें लिखूँगा जो मैं उन तख़्तियों पर लिख चुका था जो तूने तोड़ डालीं। तुम्हें उन्हें संदूक़ में महफ़ूज़ रखना है।"

3मैंने कीकर की लकड़ी का संदूक़ बनवाया और दो तख़्तियाँ तराशीं जो पहली तख़्तियों की मानिंद थीं। फिर मैं दोनों तख़्तियाँ लेकर पहाड़ पर चढ़ गया। 4रब ने उन तख़्तियों पर दुबारा वह दस अहकाम लिख दिए जो वह पहली तख़्तियों पर लिख चुका था। (उन्हीं अहकाम का एलान उसने पहाड़ पर आग में से किया था जब तुम उसके दामन में जमा थे।) फिर उसने यह तख़्तियाँ मेरे सुपुर्द कीं। 5मैं लौटकर उतरा और तख़्तियों को उस संदूक़ में रखा जो मैंने बनाया था। वहाँ वह अब तक हैं। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा रब ने हुक्म दिया था।

इमामों और लावियों की ख़िदमत

6(इसके बाद इसराईली बनी-याक़ान के कुओं से रवाना होकर मौसीरा पहुँचे। वहाँ हारून फ़ौत हुआ। उसे दफ़न करने के बाद उसका बेटा इलियज़र उस की जगह इमाम बना। 7फिर वह आगे सफ़र करते करते जुदजूदा, फिर युतबाता पहुँचे जहाँ नहरें हैं।

8उन दिनों में रब ने लावी के क़बीले को अलग करके उसे रब के अहद के संदूक़ को उठाकर ले जाने, रब के हुज़ूर ख़िदमत करने और उसके नाम से बरकत देने की ज़िम्मेदारी दी। आज तक यह उनकी ज़िम्मेदारी रही है। 9इस वजह से लावियों को दीगर क़बीलों की तरह न हिस्सा न मीरास मिली। रब तेरा ख़ुदा ख़ुद उनकी मीरास है। उसने ख़ुद उन्हें यह फ़रमाया है।)

10जब मैंने दूसरी मरतबा 40 दिन और रात पहाड़ पर गुज़ारे तो रब ने इस दफ़ा भी मेरी सुनी और तुझे हलाक न करने पर आमादा हुआ। 11उसने कहा, "जा, क़ौम की राहनुमाई कर ताकि वह जाकर उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करें जिसका वादा मैंने क़सम खाकर उनके बापदादा से किया था।"

रब का ख़ौफ़

12ऐ इसराईल, अब मेरी बात सुन! रब तेरा ख़ुदा तुझसे क्या तक़ाज़ा करता है? सिर्फ़ यह कि तू उसका ख़ौफ़ माने, उस की तमाम राहों पर चले, उसे प्यार करे, अपने पूरे दिलो-जान से उस की ख़िदमत करे 13और उसके तमाम अहकाम पर अमल करे। आज मैं उन्हें तुझे तेरी बेहतरी के लिए दे रहा हूँ।

14पूरा आसमान, ज़मीन और जो कुछ उस पर है, सबका मालिक रब तेरा ख़ुदा है। 15तो भी उसने तेरे बापदादा पर ही अपनी ख़ास शफ़क़त का इज़हार करके उनसे मुहब्बत की। और उसने तुम्हें चुनकर दूसरी तमाम क़ौमों पर तरजीह दी जैसा कि आज ज़ाहिर है। 16ख़तना उस की क़ौम का निशान है, लेकिन ध्यान रखो कि वह न सिर्फ़ ज़ाहिरी बल्कि बातिनी भी हो। आइंदा अड़ न जाओ।

17क्योंकि रब तुम्हारा ख़ुदा ख़ुदाओं का ख़ुदा
और रब्बों का रब है। वह अज़ीम और ज़ोरावर
ख़ुदा है जिससे सब ख़ौफ़ खाते हैं। वह जानिबदारी
नहीं करता और रिश्वत नहीं लेता। 18वह यतीमों
और बेवाओं का इनसाफ़ करता है। वह परदेसी से
प्यार करता और उसे ख़ुराक और पोशाक मुहैया
करता है। 19तुम भी उनके साथ मुहब्बत से पेश
आओ, क्योंकि तुम भी मिसर में परदेसी थे।
20रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मान और उस की
ख़िदमत कर। उससे लिपटा रह और उसी के नाम
की क़सम खा। 21वही तेरा फ़ख़र है। वह तेरा
ख़ुदा है जिसने वह तमाम अज़ीम और डरावने
काम किए जो तूने ख़ुद देखे। 22जब तेरे बापदादा
मिसर गए थे तो 70 अफ़राद थे। और अब रब
तेरे ख़ुदा ने तुझे सितारों की मानिंद बेशुमार बना
दिया है।

रब से मुहब्बत रख और उस की सुन

11 रब अपने ख़ुदा से प्यार कर और
हमेशा उसके अहकाम के मुताबिक़
ज़िंदगी गुज़ार। 2आज जान लो कि तुम्हारे बच्चों
ने नहीं बल्कि तुम्हीं ने रब अपने ख़ुदा से तरबियत
पाई। तुमने उस की अज़मत, बड़े इख़्तियार और
क़ुदरत को देखा, 3और तुम उन मोजिज़ों के गवाह
हो जो उसने मिसर के बादशाह फ़िरौन और उसके
पूरे मुल्क के सामने किए। 4तुमने देखा कि रब ने
किस तरह मिसरी फ़ौज को उसके घोड़ों और रथों
समेत बहरे-क़ुलज़ुम में ग़रक़ कर दिया जब वह
तुम्हारा ताक़्क़ुब कर रहे थे। उसने उन्हें यों तबाह
किया कि वह आज तक बहाल नहीं हुए।
5तुम्हारे बच्चे नहीं बल्कि तुम ही गवाह हो
कि यहाँ पहुँचने से पहले रब ने रेगिस्तान में
तुम्हारी किस तरह देख-भाल की। 6तुमने उसका
इलियाब के बेटों दातन और अबीराम के साथ
सुलूक देखा जो रूबिन के क़बीले के थे। उस दिन
ज़मीन ने ख़ैमागाह के अंदर मुँह खोलकर उन्हें
उनके घरानों, डेरों और तमाम जानदारों समेत
हड़प कर लिया।
7तुमने अपनी ही आँखों से रब के यह तमाम
अज़ीम काम देखे हैं। 8चुनाँचे उन तमाम अहकाम
पर अमल करते रहो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ
ताकि तुम्हें वह ताक़त हासिल हो जो दरकार होगी
जब तुम दरियाए-यरदन को पार करके मुल्क पर
क़ब्ज़ा करोगे। 9अगर तुम फ़रमाँबरदार रहो तो
देर तक उस मुल्क में जीते रहोगे जिसका वादा
रब ने क़सम खाकर तुम्हारे बापदादा से किया था
और जिसमें दूध और शहद की कसरत है।
10क्योंकि यह मुल्क मिसर की मानिंद नहीं है
जहाँ से तुम निकल आए हो। वहाँ के खेतों में तुझे
बीज बोकर बड़ी मेहनत से उस की आबपाशी
करनी पड़ती थी 11जबकि जिस मुल्क पर तुम
क़ब्ज़ा करोगे उसमें पहाड़ और वादियाँ हैं जिन्हें
सिर्फ़ बारिश का पानी सेराब करता है। 12रब तेरा
ख़ुदा ख़ुद उस मुल्क का ख़याल रखता है। रब
तेरे ख़ुदा की आँखें साल के पहले दिन से लेकर
आख़िर तक मुतवातिर उस पर लगी रहती हैं।
13चुनाँचे उन अहकाम के ताबे रहो जो मैं आज
तुम्हें दे रहा हूँ। रब अपने ख़ुदा से प्यार करो
और अपने पूरे दिलो-जान से उस की ख़िदमत
करो। 14फिर वह ख़रीफ़ और बहार की सालाना
बारिश वक़्त पर भेजेगा। अनाज, अंगूर और ज़ैतून
की फ़सलें पकेंगी, और तू उन्हें जमा कर लेगा।
15नीज़, अल्लाह तेरी चरागाहों में तेरे रेवड़ों के
लिए घास मुहैया करेगा, और तू खाकर सेर हो
जाएगा।
16लेकिन ख़बरदार, कहीं तुम्हें वरग़लाया न
जाए। ऐसा न हो कि तुम रब की राह से हट
जाओ और दीगर माबूदों को सिजदा करके उनकी
ख़िदमत करो। 17वरना रब का ग़ज़ब तुम पर आन
पड़ेगा, और वह मुल्क में बारिश होने नहीं देगा।
तुम्हारी फ़सलें नहीं पकेंगी, और तुम्हें जल्द ही उस
अच्छे मुल्क में से मिटा दिया जाएगा जो रब तुम्हें
दे रहा है।
18चुनाँचे मेरी यह बातें अपने दिलों पर नक़्श
कर लो। उन्हें निशान के तौर पर और याददिहानी
के लिए अपने हाथों और माथों पर लगाओ।

19उन्हें अपने बच्चों को सिखाओ। हर जगह और
हमेशा उनके बारे में बात करो, ख़ाह तू घर में बैठा
या रास्ते पर चलता हो, लेटा हो या खड़ा हो।
20उन्हें अपने घरों की चौखटों और अपने शहरों
के दरवाज़ों पर लिख 21ताकि जब तक ज़मीन
पर आसमान क़ायम है तुम और तुम्हारी औलाद
उस मुल्क में जीते रहें जिसका वादा रब ने क़सम
खाकर तुम्हारे बापदादा से किया था।

22एहतियात से उन अहकाम की पैरवी करो
जो मैं तुम्हें दे रहा हूँ। रब अपने ख़ुदा से प्यार
करो, उसके तमाम अहकाम पर अमल करो और
उसके साथ लिपटे रहो। 23फिर वह तुम्हारे आगे
आगे यह तमाम क़ौमें निकाल देगा और तुम ऐसी
क़ौमों की ज़मीनों पर क़ब्ज़ा करोगे जो तुमसे
बड़ी और ताक़तवर हैं। 24तुम जहाँ भी क़दम
रखोगे वह तुम्हारा ही होगा, जुनूबी रेगिस्तान से
लेकर लुबनान तक, दरियाए-फ़ुरात से बहीराए-
रूम तक। 25कोई भी तुम्हारा सामना नहीं कर
सकेगा। तुम उस मुल्क में जहाँ भी जाओगे वहाँ
रब तुम्हारा ख़ुदा अपने वादे के मुताबिक़ तुम्हारी
दहशत और ख़ौफ़ पैदा कर देगा। 26आज तुम
ख़ुद फ़ैसला करो। क्या तुम रब की बरकत या
उस की लानत पाना चाहते हो? 27अगर तुम रब
अपने ख़ुदा के उन अहकाम पर अमल करो जो
मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ तो वह तुम्हें बरकत देगा।
28लेकिन अगर तुम उनके ताबे न रहो बल्कि मेरी
पेशकरदा राह से हटकर दीगर माबूदों की पैरवी
करो तो वह तुम पर लानत भेजेगा।

29जब रब तेरा ख़ुदा तुझे उस मुल्क में ले
जाएगा जिस पर तू क़ब्ज़ा करेगा तो लाज़िम है कि
गरिज़ीम पहाड़ पर चढ़कर बरकत का एलान करे
और ऐबाल पहाड़ पर लानत का। 30यह दो पहाड़
दरियाए-यरदन के मग़रिब में उन कनानियों के
इलाक़े में वाक़े हैं जो वादीए-यरदन में आबाद हैं।
वह मग़रिब की तरफ़ जिलजाल शहर के सामने
मोरिह के बलूत के दरख़्तों के नज़दीक हैं। 31अब
तुम दरियाए-यरदन को पार करके उस मुल्क पर
क़ब्ज़ा करनेवाले हो जो रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें दे
रहा है। जब तुम उसे अपनाकर उसमें आबाद हो
जाओगे 32तो एहतियात से उन तमाम अहकाम
पर अमल करते रहो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ।

मुल्क में रब के अहकाम

12 ज़ैल में वह अहकाम और क़वा-
नीन हैं जिन पर तुम्हें ध्यान से अमल
करना होगा जब तुम उस मुल्क में आबाद होगे जो
रब तेरे बापदादा का ख़ुदा तुझे दे रहा है ताकि तू
उस पर क़ब्ज़ा करे। मुल्क में रहते हुए उम्र-भर
उनके ताबे रहो।

मुल्क में एक ही जगह पर मक़दिस हो

2उन तमाम जगहों को बरबाद करो जहाँ वह
क़ौमें जिन्हें तुम्हें निकालना है अपने देवताओं की
पूजा करती हैं, ख़ाह वह ऊँचे पहाड़ों, पहाड़ियों
या घने दरख़्तों के साये में क्यों न हों। 3उनकी
क़ुरबानगाहों को ढा देना। जिन पत्थरों की पूजा
वह करते हैं उन्हें चकनाचूर कर देना। यसीरत देवी
के खंबे जला देना। उनके देवताओं के मुजस्समे
काट डालना। ग़रज़ इन जगहों से उनका नामो-
निशान मिट जाए।

4रब अपने ख़ुदा की परस्तिश करने के लिए
उनके तरीक़े न अपनाना। 5रब तुम्हारा ख़ुदा
क़बीलों में से अपने नाम की सुकूनत के लिए
एक जगह चुन लेगा। इबादत के लिए वहाँ जाया
करो, 6और वहाँ अपनी तमाम क़ुरबानियाँ लाकर
पेश करो, ख़ाह वह भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ,
ज़बह की क़ुरबानियाँ, पैदावार का दसवाँ हिस्सा,
उठानेवाली क़ुरबानियाँ, मन्नत के हदिये, ख़ुशी से
पेश की गई क़ुरबानियाँ या मवेशियों के पहलौठे
क्यों न हों। 7वहाँ रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर अपने
घरानों समेत खाना खाकर उन कामयाबियों की
ख़ुशी मनाओ जो तुझे रब तेरे ख़ुदा की बरकत के
बाइस हासिल हुई हैं।

8उस वक़्त तुम्हें वह नहीं करना जो हम करते
आए हैं। आज तक हर कोई अपनी मरज़ी के
मुताबिक़ इबादत करता है, 9क्योंकि अब तक

तुम आराम की उस जगह नहीं पहुँचे जो तुझे रब तेरे ख़ुदा से मीरास में मिलनी है। 10लेकिन जल्द ही तुम दरियाए-यरदन को पार करके उस मुल्क में आबाद हो जाओगे जो रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें मीरास में दे रहा है। उस वक़्त वह तुम्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों से बचाए रखेगा, और तुम आराम और सुकून से ज़िंदगी गुज़ार सकोगे। 11तब रब तुम्हारा ख़ुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए एक जगह चुन लेगा, और तुम्हें सब कुछ जो मैं बताऊँगा वहाँ लाकर पेश करना है, ख़ाह वह भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ, ज़बह की क़ुरबानियाँ, पैदावार का दसवाँ हिस्सा, उठानेवाली क़ुरबानियाँ या मन्नत के ख़ास हदिये क्यों न हों। 12वहाँ रब के सामने तुम, तुम्हारे बेटे-बेटियाँ, तुम्हारे ग़ुलाम और लौंडियाँ ख़ुशी मनाएँ। अपने शहरों में आबाद लावियों को भी अपनी ख़ुशी में शरीक करो, क्योंकि उनके पास मौरूसी ज़मीन नहीं होगी।

13ख़बरदार, अपनी भस्म होनेवाली क़ुर-बानियाँ हर जगह पर पेश न करना 14बल्कि सिर्फ़ उस जगह पर जो रब क़बीलों में से चुनेगा। वहीं सब कुछ यों मना जिस तरह मैं तुझे बताता हूँ।

15लेकिन वह जानवर इसमें शामिल नहीं हैं जो तू क़ुरबानी के तौर पर पेश नहीं करना चाहता बल्कि सिर्फ़ खाना चाहता है। ऐसे जानवर तू आज़ादी से अपने तमाम शहरों में ज़बह करके उस बरकत के मुताबिक़ खा सकता है जो रब तेरे ख़ुदा ने तुझे दी है। ऐसा गोश्त हिरन और ग़ज़ाल के गोश्त की मानिंद है यानी पाक और नापाक दोनों ही उसे खा सकते हैं। 16लेकिन ख़ून न खाना। उसे पानी की तरह ज़मीन पर उंडेलकर ज़ाया कर देना।

17जो भी चीज़ें रब के लिए मख़सूस की गई हैं उन्हें अपने शहरों में न खाना मसलन अनाज, अंगूर के रस और ज़ैतून के तेल का दसवाँ हिस्सा, मवेशियों के पहलौठे, मन्नत के हदिये, ख़ुशी से पेश की गई क़ुरबानियाँ और उठानेवाली क़ुरबानियाँ। 18यह चीज़ें सिर्फ़ रब के हुज़ूर खाना यानी उस जगह पर जिसे वह मक़दिस के लिए चुनेगा। वहीं तू अपने बेटे-बेटियों, ग़ुलामों, लौंडियों और अपने क़बायली इलाक़े के लावियों के साथ जमा होकर ख़ुशी मना कि रब ने हमारी मेहनत को बरकत दी है। 19अपने मुल्क में लावियों की ज़रूरियात उम्र-भर पूरी करने की फ़िकर रख।

20जब रब तेरा ख़ुदा अपने वादे के मुताबिक़ तेरी सरहद्दें बढ़ा देगा और तू गोश्त खाने की ख़ाहिश रखेगा तो जिस तरह जी चाहे गोश्त खा सकेगा। 21अगर तेरा घर उस मक़दिस से दूर हो जिसे रब तेरा ख़ुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा तो तू जिस तरह जी चाहे अपने शहरों में रब से मिले हुए मवेशियों को ज़बह करके खा सकता है। लेकिन ऐसा ही करना जैसा मैंने हुक्म दिया है। 22ऐसा गोश्त हिरन और ग़ज़ाल के गोश्त की मानिंद है यानी पाक और नापाक दोनों ही उसे खा सकते हैं। 23अलबत्ता गोश्त के साथ ख़ून न खाना, क्योंकि ख़ून जानदार की जान है। उस की जान गोश्त के साथ न खाना। 24ख़ून न खाना बल्कि उसे ज़मीन पर उंडेलकर ज़ाया कर देना। 25उसे न खाना ताकि तुझे और तेरी औलाद को कामयाबी हासिल हो, क्योंकि ऐसा करने से तू रब की नज़र में सहीह काम करेगा।

26लेकिन जो चीज़ें रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस हैं या जो तूने मन्नत मानकर उसके लिए मख़सूस की हैं लाज़िम है कि तू उन्हें उस जगह ले जाए जिसे रब मक़दिस के लिए चुनेगा। 27वहीं, रब अपने ख़ुदा की क़ुरबानगाह पर अपनी भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ गोश्त और ख़ून समेत चढ़ा। ज़बह की क़ुरबानियों का ख़ून क़ुरबानगाह पर उंडेल देना, लेकिन उनका गोश्त तू खा सकता है।

28जो भी हिदायात मैं तुझे दे रहा हूँ उन्हें एहतियात से पूरा कर। फिर तू और तेरी औलाद ख़ुशहाल रहेंगे, क्योंकि तू वह कुछ करेगा जो रब तेरे ख़ुदा की नज़र में अच्छा और दुरुस्त है।

29रब तेरा ख़ुदा उन क़ौमों को मिटा देगा जिनकी तरफ़ तू बढ़ रहा है। तू उन्हें उनके मुल्क

से निकालता जाएगा और ख़ुद उसमें आबाद हो
जाएगा। 30लेकिन ख़बरदार, उनके ख़त्म होने
के बाद भी उनके देवताओं के बारे में मालूमात
हासिल न कर, वरना तू फँस जाएगा। मत कहना
कि यह क़ौमें किस तरीक़े से अपने देवताओं की
पूजा करती हैं? हम भी ऐसा ही करें। 31ऐसा मत
कर! यह क़ौमें ऐसे घिनौने तरीक़े से पूजा करती
हैं जिनसे रब नफ़रत करता है। वह अपने बच्चों
को भी जलाकर अपने देवताओं को पेश करते हैं।
32कलाम की जो भी बात मैं तुम्हें पेश करता हूँ
उसके ताबे रहकर उस पर अमल करो। न किसी
बात का इज़ाफ़ा करना, न कोई बात निकालना।

देवताओं की तरफ़ ले जानेवालों से सुलूक

13 तेरे दरमियान ऐसे लोग उठ खड़े
होंगे जो अपने आपको नबी या ख़ाब
देखनेवाले कहेंगे। हो सकता है कि वह किसी
इलाही निशान या मोजिज़े का एलान करें 2जो
वाक़ई वुजूद में आए। साथ साथ वह कहें, “आ,
हम दीगर माबूदों की पूजा करें, हम उनकी
ख़िदमत करें जिनसे तू अब तक वाक़िफ़ नहीं
है।” 3ऐसे लोगों की न सुन। इससे रब तुम्हारा
ख़ुदा तुम्हें आज़माकर मालूम कर रहा है कि क्या
तुम वाक़ई अपने पूरे दिलो-जान से उससे प्यार
करते हो। 4तुम्हें रब अपने ख़ुदा की पैरवी करना
और उसी का ख़ौफ़ मानना है। उसके अहकाम
के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारो, उस की सुनो, उस
की ख़िदमत करो, उसके साथ लिपटे रहो। 5ऐसे
नबियों या ख़ाब देखनेवालों को सज़ाए-मौत देना,
क्योंकि वह तुझे रब तुम्हारे ख़ुदा से बग़ावत करने
पर उकसाना चाहते हैं, उसी से जिसने फ़िद्या देकर
तुम्हें मिसर की ग़ुलामी से बचाया और वहाँ से
निकाल लाया। चूँकि वह तुझे उस राह से हटाना
चाहते हैं जिसे रब तेरे ख़ुदा ने तेरे लिए मुक़र्रर
किया है इसलिए लाज़िम है कि उन्हें सज़ाए-मौत
दी जाए। ऐसी बुराई अपने दरमियान से मिटा
देना।

6हो सकता है कि तेरा सगा भाई, तेरा बेटा
या बेटी, तेरी बीवी या तेरा क़रीबी दोस्त तुझे
चुपके से वरग़लाने की कोशिश करे कि आ, हम
जाकर दीगर माबूदों की पूजा करें, ऐसे देवताओं
की जिनसे न तू और न तेरे बापदादा वाक़िफ़
थे। 7ख़ाह इर्दगिर्द की या दूर-दराज़ की क़ौमों
के देवता हों, ख़ाह दुनिया के एक सिरे के या
दूसरे सिरे के माबूद हों, 8किसी सूरत में अपनी
रज़ामंदी का इज़हार न कर, न उस की सुन। उस
पर रहम न कर। न उसे बचाए रख, न उसे पनाह
दे 9बल्कि उसे सज़ाए-मौत दे। और उसे संगसार
करते वक़्त पहले तेरा हाथ उस पर पत्थर फेंके,
फिर ही बाक़ी तमाम लोग हिस्सा लें। 10उसे
ज़रूर पत्थरों से सज़ाए-मौत देना, क्योंकि उसने
तुझे रब तेरे ख़ुदा से दूर करने की कोशिश की,
उसी से जो तुझे मिसर की ग़ुलामी से निकाल
लाया। 11फिर तमाम इसराईल यह सुनकर डर
जाएगा और आइंदा तेरे दरमियान ऐसी शरीर
हरकत करने की जुर्रत नहीं करेगा।

12जब तू उन शहरों में रहने लगेगा जो रब तेरा
ख़ुदा तुझे दे रहा है तो शायद तुझे ख़बर मिल जाए
13कि शरीर लोग तेरे दरमियान से उभर आए हैं
जो अपने शहर के बाशिंदों को यह कहकर ग़लत
राह पर लाए हैं कि आओ, हम दीगर माबूदों की
पूजा करें, ऐसे माबूदों की जिनसे तुम वाक़िफ़ नहीं
हो। 14लाज़िम है कि तू दरियाफ़्त करके इसकी
तफ़तीश करे और ख़ूब मालूम करे कि क्या हुआ
है। अगर साबित हो जाए कि यह घिनौनी बात
वाक़ई हुई है 15तो फिर लाज़िम है कि तू शहर
के तमाम बाशिंदों को हलाक करे। उसे रब के
सुपुर्द करके सरासर तबाह करना, न सिर्फ़ उसके
लोग बल्कि उसके मवेशी भी। 16शहर का पूरा
माले-ग़नीमत चौक में इकट्ठा कर। फिर पूरे शहर
को उसके माल समेत रब के लिए मख़सूस करके
जला देना। उसे दुबारा कभी न तामीर किया जाए
बल्कि उसके खंडरात हमेशा तक रहें।

17पूरा शहर रब के लिए मख़सूस किया गया
है, इसलिए उस की कोई भी चीज़ तेरे पास

न पाई जाए। सिर्फ़ इस सूरत में रब का ग़ज़ब ठंडा हो जाएगा, और वह तुझ पर रहम करके अपनी मेहरबानी का इज़हार करेगा और तेरी तादाद बढ़ाएगा, जिस तरह उसने क़सम खाकर तेरे बापदादा से वादा किया है। 18लेकिन यह सब कुछ इस पर मबनी है कि तू रब अपने ख़ुदा की सुने और उसके उन तमाम अहकाम पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। वही कुछ कर जो उस की नज़र में दुरुस्त है।

पाक और नापाक जानवर

14 तुम रब अपने ख़ुदा के फ़रज़ंद हो। अपने आपको मुरदों के सबब से न ज़ख़मी करो, न अपने सर के सामनेवाले बाल मुँडवाओ। 2क्योंकि तू रब अपने ख़ुदा के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस क़ौम है। दुनिया की तमाम क़ौमों में से रब ने तुझे ही चुनकर अपनी मिलकियत बना लिया है।

3कोई भी मकरूह चीज़ न खाना।

4तुम बैल, भेड़-बकरी, 5हिरन, ग़ज़ाल, मृग,[a] पहाड़ी बकरी, महात,[b] ग़ज़ाले-अफ़्रीक़ा[c] और पहाड़ी बकरी खा सकते हो। 6जिनके खुर या पाँव बिलकुल चिरे हुए हैं और जो जुगाली करते हैं उन्हें खाने की इजाज़त है। 7ऊँट, बिज्जू या ख़रगोश खाना मना है। वह तुम्हारे लिए नापाक हैं, क्योंकि वह जुगाली तो करते हैं लेकिन उनके खुर या पाँव चिरे हुए नहीं हैं। 8सुअर न खाना। वह तुम्हारे लिए नापाक है, क्योंकि उसके खुर तो चिरे हुए हैं लेकिन वह जुगाली नहीं करता। न उनका गोश्त खाना, न उनकी लाशों को छूना।

9पानी में रहनेवाले जानवर खाने के लिए जायज़ हैं अगर उनके पर और छिलके हों। 10लेकिन जिनके पर या छिलके नहीं हैं वह तुम्हारे लिए नापाक हैं।

11तुम हर पाक परिंदा खा सकते हो। 12लेकिन ज़ैल के परिंदे खाना मना है : उक़ाब, दढ़ियल गिद्ध, काला गिद्ध, 13लाल चील, काली चील, हर क़िस्म का गिद्ध, 14हर क़िस्म का कौवा, 15उक़ाबी उल्लू, छोटे कानवाला उल्लू, बड़े कानवाला उल्लू, हर क़िस्म का बाज़, 16छोटा उल्लू, चिंघाड़ने-वाला उल्लू, सफ़ेद उल्लू, 17दश्ती उल्लू, मिसरी गिद्ध, क़ूक़, 18लक़लक़, हर क़िस्म का बूतीमार, हुदहुद और चमगादड़।[d]

19तमाम पर रखनेवाले कीड़े तुम्हारे लिए नापाक हैं। उन्हें खाना मना है। 20लेकिन तुम हर पाक परिंदा खा सकते हो।

21जो जानवर ख़ुद बख़ुद मर जाए उसे न खाना। तू उसे अपनी आबादी में रहनेवाले किसी परदेसी को दे या किसी अजनबी को बेच सकता है और वह उसे खा सकता है। लेकिन तू उसे मत खाना, क्योंकि तू रब अपने ख़ुदा के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस क़ौम है।

बकरी के बच्चे को उस की माँ के दूध में पकाना मना है।

अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा मख़सूस करना

22लाज़िम है कि तू हर साल अपने खेतों की पैदावार का दसवाँ हिस्सा रब के लिए अलग करे। 23इसके लिए अपना अनाज, अंगूर का रस,

[a]यह हिरन के मुशाबेह होता है लेकिन फ़ितरतन मुख़्तलिफ़ होता है। इसके सींग खोखले, बेशाख़ और अनझड़ होते हैं। antelope। याद रहे कि क़दीम ज़माने के इन जानवरों के अकसर नाम मतरूक हैं या उनका मतलब बदल गया है, इसलिए उनका मुख़्तलिफ़ तरजुमा हो सकता है।

[b]महात। दराज़क़द हिरनों की एक नौ जिसके सींग चक्करदार होते हैं। addax।

[c]ग़ज़ाले-अफ़्रीक़ा। चिकारों की तीन इक़साम में से कोई जो अपने लंबे और हलक़ादार सींगों की वजह से मुमताज़ है। oryx।

[d]याद रहे कि क़दीम ज़माने के इन परिंदों के अकसर नाम मतरूक हैं या उनका मतलब बदल गया है, इसलिए उनका मुख़्तलिफ़ तरजुमा हो सकता है।

ज़ैतून का तेल और मवेशी के पहलौठे रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर ले आना यानी उस जगह जो वह अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। वहाँ यह चीज़ें क़ुरबान करके खा ताकि तू उम्र-भर रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना सीखे।

24लेकिन हो सकता है कि जो जगह रब तेरा ख़ुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा वह तेरे घर से हद से ज़्यादा दूर हो और रब तेरे ख़ुदा की बरकत के बाइस मज़कूरा दसवाँ हिस्सा इतना ज़्यादा हो कि तू उसे मक़दिस तक नहीं पहुँचा सकता। 25इस सूरत में उसे बेचकर उसके पैसे उस जगह ले जा जो रब तेरा ख़ुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। 26वहाँ पहुँचकर उन पैसों से जो जी चाहे ख़रीदना, ख़ाह गाय-बैल, भेड़-बकरी, मै या मै जैसी कोई और चीज़ क्यों न हो। फिर अपने घराने के साथ मिलकर रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर यह चीज़ें खाना और ख़ुशी मनाना। 27ऐसे मौक़ों पर उन लावियों का ख़याल रखना जो तेरे क़बायली इलाक़े में रहते हैं, क्योंकि उन्हें मीरास में ज़मीन नहीं मिलेगी।

28हर तीसरे साल अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा अपने शहरों में जमा करना। 29उसे लावियों को देना जिनके पास मौरूसी ज़मीन नहीं है, नीज़ अपने शहरों में आबाद परदेसियों, यतीमों और बेवाओं को देना। वह आएँ और खाना खाकर सेर हो जाएँ ताकि रब तेरा ख़ुदा तेरे हर काम में बरकत दे।

क़र्ज़दारों की बहाली का साल

15 हर सात साल के बाद एक दूसरे के कर्ज़े मुआफ़ कर देना। 2उस वक़्त जिसने भी किसी इसराईली भाई को क़र्ज़ दिया है वह उसे मनसूख़ करे। वह अपने पड़ोसी या भाई को पैसे वापस करने पर मजबूर न करे, क्योंकि रब की ताज़ीम में क़र्ज़ मुआफ़ करने के साल का एलान किया गया है। 3इस साल में तू सिर्फ़ ग़ैरमुल्की क़र्ज़दारों को पैसे वापस करने पर मजबूर कर सकता है। अपने इसराईली भाई के तमाम क़र्ज़ मुआफ़ कर देना।

4तेरे दरमियान कोई भी ग़रीब नहीं होना चाहिए, क्योंकि जब तू उस मुल्क में रहेगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में देनेवाला है तो वह तुझे बहुत बरकत देगा। 5लेकिन शर्त यह है कि तू पूरे तौर पर उस की सुने और एहतियात से उसके उन तमाम अहकाम पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। 6फिर रब तुम्हारा ख़ुदा तुझे अपने वादे के मुताबिक़ बरकत देगा। तू किसी भी क़ौम से उधार नहीं लेगा बल्कि बहुत-सी क़ौमों को उधार देगा। कोई भी क़ौम तुझ पर हुकूमत नहीं करेगी बल्कि तू बहुत-सी क़ौमों पर हुकूमत करेगा।

7जब तू उस मुल्क में आबाद होगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देनेवाला है तो अपने दरमियान रहनेवाले ग़रीब भाई से सख़्त सुलूक न करना, न कंजूस होना। 8खुले दिल से उस की मदद कर। जितनी उसे ज़रूरत है उसे उधार के तौर पर दे। 9ख़बरदार, ऐसा मत सोच कि क़र्ज़ मुआफ़ करने का साल क़रीब है, इसलिए मैं उसे कुछ नहीं दूँगा। अगर तू ऐसी शरीर बात अपने दिल में सोचते हुए ज़रूरतमंद भाई को क़र्ज़ देने से इनकार करे और वह रब के सामने तेरी शिकायत करे तो तू क़ुसूरवार ठहरेगा। 10उसे ज़रूर कुछ दे बल्कि ख़ुशी से दे। फिर रब तेरा ख़ुदा तेरे हर काम में बरकत देगा। 11मुल्क में हमेशा ग़रीब और ज़रूरतमंद लोग पाए जाएंगे, इसलिए मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि खुले दिल से अपने ग़रीब और ज़रूरतमंद भाइयों की मदद कर।

ग़ुलामों को आज़ाद करने का फ़र्ज़

12अगर कोई इसराईली भाई या बहन अपने आपको बेचकर तेरा ग़ुलाम बन जाए तो वह छः साल तेरी ख़िदमत करे। लेकिन लाज़िम है कि सातवें साल उसे आज़ाद कर दिया जाए। 13आज़ाद करते वक़्त उसे ख़ाली हाथ फ़ारिग़ न करना 14बल्कि अपनी भेड़-बकरियों, अनाज, तेल और मै से उसे फ़ैयाज़ी से कुछ दे, यानी उन

चीज़ों में से जिनसे रब तेरे ख़ुदा ने तुझे बरकत दी है। 15याद रख कि तू भी मिसर में ग़ुलाम था और कि रब तेरे ख़ुदा ने फ़िद्या देकर तुझे छुड़ाया। इसी लिए मैं आज तुझे यह हुक्म देता हूँ।

16लेकिन मुमकिन है कि तेरा ग़ुलाम तुझे छोड़ना न चाहे, क्योंकि वह तुझसे और तेरे ख़ानदान से मुहब्बत रखता है, और वह तेरे पास रहकर ख़ुशहाल है। 17इस सूरत में उसे दरवाज़े के पास ले जा और उसके कान की लौ चौखट के साथ लगाकर उसे सुताली यानी तेज़ औज़ार से छेद दे। तब वह ज़िंदगी-भर तेरा ग़ुलाम बना रहेगा। अपनी लौंडी के साथ भी ऐसा ही करना।

18अगर ग़ुलाम तुझे छः साल के बाद छोड़ना चाहे तो बुरा न मानना। आख़िर अगर उस की जगह कोई और वही काम तनख़ाह के लिए करता तो तेरे अख़राजात दुगने होते। उसे आज़ाद करना तो रब तेरा ख़ुदा तेरे हर काम में बरकत देगा।

जानवरों के पहलौठे मख़सूस हैं

19अपनी गायों और भेड़-बकरियों के नर पहलौठे रब अपने ख़ुदा के लिए मख़सूस करना। न गाय के पहलौठे को काम के लिए इस्तेमाल करना, न भेड़ के पहलौठे के बाल कतरना। 20हर साल ऐसे बच्चे उस जगह ले जा जो रब अपने मक़दिस के लिए चुनेगा। वहाँ उन्हें रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर अपने पूरे ख़ानदान समेत खाना।

21अगर ऐसे जानवर में कोई ख़राबी हो, वह अंधा या लँगड़ा हो या उसमें कोई और नुक़्स हो तो उसे रब अपने ख़ुदा के लिए क़ुरबान न करना। 22ऐसे जानवर तू घर में ज़बह करके खा सकता है। वह हिरन और ग़ज़ाल की मानिंद हैं जिन्हें तू खा तो सकता है लेकिन क़ुरबानी के तौर पर पेश नहीं कर सकता। पाक और नापाक शख़्स दोनों उसे खा सकते हैं। 23लेकिन ख़ून न खाना। उसे पानी की तरह ज़मीन पर उंडेलकर ज़ाया कर देना।

फ़सह की ईद

16 अबीब के महीने[a] में रब अपने ख़ुदा की ताज़ीम में फ़सह की ईद मनाना, क्योंकि इस महीने में वह तुझे रात के वक़्त मिसर से निकाल लाया। 2उस जगह जमा हो जा जो रब अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। उसे क़ुरबानी के लिए भेड़-बकरियाँ या गाय-बैल पेश करना। 3गोश्त के साथ बेख़मीरी रोटी खाना। सात दिन तक यही रोटी खा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह तूने किया जब जल्दी जल्दी मिसर से निकला। मुसीबत की यह रोटी इसलिए खा ताकि वह दिन तेरे जीते-जी याद रहे जब तू मिसर से रवाना हुआ। 4लाज़िम है कि ईद के हफ़्ते के दौरान तेरे पूरे मुल्क में ख़मीर न पाया जाए।

जो क़ुरबानी तू ईद के पहले दिन की शाम को पेश करे उसका गोश्त उसी वक़्त खा ले। अगली सुबह तक कुछ बाक़ी न रह जाए। 5फ़सह की क़ुरबानी किसी भी शहर में जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देगा न चढ़ाना 6बल्कि सिर्फ़ उस जगह जो वह अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। मिसर से निकलते वक़्त की तरह क़ुरबानी के जानवर को सूरज डूबते वक़्त ज़बह कर। 7फिर उसे भूनकर उस जगह खाना जो रब तेरा ख़ुदा चुनेगा। अगली सुबह अपने घर वापस चला जा। 8ईद के पहले छः दिन बेख़मीरी रोटी खाता रह। सातवें दिन काम न करना बल्कि रब अपने ख़ुदा की इबादत के लिए जमा हो जाना।

फ़सल की कटाई की ईद

9जब अनाज की फ़सल की कटाई शुरू होगी तो पहले दिन के सात हफ़्ते बाद 10फ़सल की कटाई की ईद मनाना। रब अपने ख़ुदा को उतना पेश कर जितना जी चाहे। वह उस बरकत के मुताबिक़ हो जो उसने तुझे दी है। 11इसके लिए भी उस जगह जमा हो जा जो रब अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। वहाँ उसके हुज़ूर ख़ुशी मना। तेरे बाल-बच्चे, तेरे ग़ुलाम और लौंडियाँ और तेरे शहरों में

[a] मार्च ता अप्रैल।

रहनेवाले लावी, परदेसी, यतीम और बेवाएँ सब तेरी ख़ुशी में शरीक हों। 12इन अहकाम पर ज़रूर अमल करना और मत भूलना कि तू मिसर में ग़ुलाम था।

झोंपड़ियों की ईद

13अनाज गाहने और अंगूर का रस निकालने के बाद झोंपड़ियों की ईद मनाना जिसका दौरानिया सात दिन हो। 14ईद के मौक़े पर ख़ुशी मनाना। तेरे बाल-बच्चे, तेरे ग़ुलाम और लौंडियाँ और तेरे शहरों में बसनेवाले लावी, परदेसी, यतीम और बेवाएँ सब तेरी ख़ुशी में शरीक हों। 15जो जगह रब तेरा ख़ुदा मक़दिस के लिए चुनेगा वहाँ उस की ताज़ीम में सात दिन तक यह ईद मनाना। क्योंकि रब तेरा ख़ुदा तेरी तमाम फ़सलों और मेहनत को बरकत देगा, इसलिए ख़ूब ख़ुशी मनाना।

16इसराईल के तमाम मर्द साल में तीन मरतबा उस मक़दिस पर हाज़िर हो जाएँ जो रब तेरा ख़ुदा चुनेगा यानी बेख़मीरी रोटी की ईद, फ़सल की कटाई की ईद और झोंपड़ियों की ईद पर। कोई भी रब के हुज़ूर ख़ाली हाथ न आए। 17हर कोई उस बरकत के मुताबिक़ दे जो रब तेरे ख़ुदा ने उसे दी है।

क़ाज़ी मुक़र्रर करना

18अपने अपने क़बायली इलाक़े में क़ाज़ी और निगहबान मुक़र्रर कर। वह हर उस शहर में हों जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देगा। वह इनसाफ़ से लोगों की अदालत करें। 19न किसी के हुक़ूक़ मारना, न जानिबदारी दिखाना। रिश्वत क़बूल न करना, क्योंकि रिश्वत दानिशमंदों को अंधा कर देती और रास्तबाज़ की बातें पलट देती है। 20सिर्फ़ और सिर्फ़ इनसाफ़ के मुताबिक़ चल ताकि तू जीता रहे और उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करे जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देगा।

बुतपरस्ती की सज़ा

21जहाँ तू रब अपने ख़ुदा के लिए क़ुरबानगाह बनाएगा वहाँ न यसीरत देवी की पूजा के लिए लकड़ी का खंबा 22और न कोई ऐसा पत्थर खड़ा करना जिसकी पूजा लोग करते हैं। रब तेरा ख़ुदा इन चीज़ों से नफ़रत रखता है।

17 रब अपने ख़ुदा को नाक़िस गाय-बैल या भेड़-बकरी पेश न करना, क्योंकि वह ऐसी क़ुरबानी से नफ़रत रखता है।

2जब तू उन शहरों में आबाद हो जाएगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देगा तो हो सकता है कि तेरे दरमियान कोई मर्द या औरत रब तेरे ख़ुदा का अहद तोड़कर वह कुछ करे जो उसे बुरा लगे। 3मसलन वह दीगर माबूदों को या सूरज, चाँद या सितारों के पूरे लशकर को सिजदा करे, हालाँकि मैंने यह मना किया है। 4जब भी तुझे इस क़िस्म की ख़बर मिले तो इसका पूरा खोज लगा। अगर बात दुरुस्त निकले और ऐसी घिनौनी हरकत वाक़ई इसराईल में की गई हो 5तो क़ुसूरवार को शहर के बाहर ले जाकर संगसार कर देना। 6लेकिन लाज़िम है कि पहले कम अज़ कम दो या तीन लोग गवाही दें कि उसने ऐसा ही किया है। उसे सज़ाए-मौत देने के लिए एक गवाह काफ़ी नहीं। 7पहले गवाह उस पर पत्थर फेंकें, इसके बाद बाक़ी तमाम लोग उसे संगसार करें। यों तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा।

मक़दिस में आलातरीन अदालत

8अगर तेरे शहर के क़ाज़ियों के लिए किसी मुक़दमे का फ़ैसला करना मुश्किल हो तो उस मक़दिस में आकर अपना मामला पेश कर जो रब तेरा ख़ुदा चुनेगा, ख़ाह किसी को क़त्ल किया गया हो, उसे ज़ख़मी कर दिया गया हो या कोई और मसला हो। 9लावी के क़बीले के इमामों और मक़दिस में ख़िदमत करनेवाले क़ाज़ी को अपना मुक़दमा पेश कर, और वह फ़ैसला करें। 10जो फ़ैसला वह उस मक़दिस में करेंगे जो रब चुनेगा उसे मानना पड़ेगा। जो भी हिदायत वह दें उस पर

एहतियात से अमल कर। 11शरीअत की जो भी बात वह तुझे सिखाएँ और जो भी फ़ैसला वह दें उस पर अमल कर। जो कुछ भी वह तुझे बताएँ उससे न दाईं और न बाईं तरफ़ मुड़ना।

12जो मक़दिस में रब तेरे ख़ुदा की ख़िदमत करनेवाले क़ाज़ी या इमाम को हक़ीर जानकर उनकी नहीं सुनता उसे सज़ाए-मौत दी जाए। यों तू इसराईल से बुराई मिटा देगा। 13फिर तमाम लोग यह सुनकर डर जाएंगे और आइंदा ऐसी गुस्ताख़ी करने की जुर्रत नहीं करेंगे।

बादशाह के बारे में उसूल

14तू जल्द ही उस मुल्क में दाख़िल होगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देनेवाला है। जब तू उस पर क़ब्ज़ा करके उसमें आबाद हो जाएगा तो हो सकता है कि तू एक दिन कहे, “आओ हम इर्दगिर्द की तमाम क़ौमों की तरह बादशाह मुक़र्रर करें जो हम पर हुकूमत करे।” 15अगर तू ऐसा करे तो सिर्फ़ वह शख़्स मुक़र्रर कर जिसे रब तेरा ख़ुदा चुनेगा। वह परदेसी न हो बल्कि तेरा अपना इसराईली भाई हो। 16बादशाह बहुत ज़्यादा घोड़े न रखे, न अपने लोगों को उन्हें ख़रीदने के लिए मिसर भेजे। क्योंकि रब ने तुझसे कहा है कि कभी वहाँ वापस न जाना। 17तेरा बादशाह ज़्यादा बीवियाँ भी न रखे, वरना उसका दिल रब से दूर हो जाएगा। और वह हद से ज़्यादा सोना-चाँदी जमा न करे।

18तख़्तनशीन होते वक़्त वह लावी के क़बीले के इमामों के पास पड़ी इस शरीअत की नक़ल लिखवाए। 19यह किताब उसके पास महफ़ूज़ रहे, और वह उम्र-भर रोज़ाना इसे पढ़ता रहे ताकि रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना सीखे। तब वह शरीअत की तमाम बातों की पैरवी करेगा, 20अपने आपको अपने इसराईली भाइयों से ज़्यादा अहम नहीं समझेगा और किसी तरह भी शरीअत से हटकर काम नहीं करेगा। नतीजे में वह और उस की औलाद बहुत अरसे तक इसराईल पर हुकूमत करेंगे।

इमामों और लावियों का हिस्सा

18 इसराईल के हर क़बीले को मीरास में उसका अपना इलाक़ा मिलेगा सिवाए लावी के क़बीले के जिसमें इमाम भी शामिल हैं। वह जलनेवाली और दीगर क़ुरबानियों में से अपना हिस्सा लेकर गुज़ारा करें। 2उनके पास दूसरों की तरह मौरूसी ज़मीन नहीं होगी बल्कि रब ख़ुद उनका मौरूसी हिस्सा होगा। यह उसने वादा करके कहा है।

3जब भी किसी बैल या भेड़ को क़ुरबान किया जाए तो इमामों को उसका शाना, जबड़े और ओझड़ी मिलने का हक़ है। 4अपनी फ़सलों का पहला फल भी उन्हें देना यानी अनाज, मै, ज़ैतून का तेल और भेड़ों की पहली कतरी हुई ऊन। 5क्योंकि रब ने तेरे तमाम क़बीलों में से लावी के क़बीले को ही मक़दिस में रब के नाम में ख़िदमत करने के लिए चुना है। यह हमेशा के लिए उनकी और उनकी औलाद की ज़िम्मेदारी रहेगी।

6कुछ लावी मक़दिस के पास नहीं बल्कि इसराईल के मुख़्तलिफ़ शहरों में रहेंगे। अगर उनमें से कोई उस जगह आना चाहे जो रब मक़दिस के लिए चुनेगा 7तो वह वहाँ के ख़िदमत करनेवाले लावियों की तरह मक़दिस में रब अपने ख़ुदा के नाम में ख़िदमत कर सकता है। 8उसे क़ुरबानियों में से दूसरों के बराबर लावियों का हिस्सा मिलना है, ख़ाह उसे ख़ानदानी मिलकियत बेचने से पैसे मिल गए हों या नहीं।

जादूगरी मना है

9जब तू उस मुल्क में दाख़िल होगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे दे रहा है तो वहाँ की रहनेवाली क़ौमों के घिनौने दस्तूर न अपनाना। 10तेरे दरमियान कोई भी अपने बेटे या बेटी को क़ुरबानी के तौर पर न जलाए। न कोई ग़ैबदानी करे, न फ़ाल या शुगून निकाले या जादूगरी करे। 11इसी तरह मंत्र पढ़ना, हाज़िरात करना, क़िस्मत का हाल बताना या मुरदों की रूहों से राबिता करना सख़्त मना है। 12जो भी ऐसा करे वह रब की नज़र में क़ाबिले-

घिन है। इन्हीं मकरूह दस्तूरों की वजह से रब तेरा
ख़ुदा तेरे आगे से उन क़ौमों को निकाल देगा।
13इसलिए लाज़िम है कि तू रब अपने ख़ुदा के
सामने बेक़ुसूर रहे।

नबी का वादा

14जिन क़ौमों को तू निकालनेवाला है वह
उनकी सुनती हैं जो फ़ाल निकालते और ग़ैबदानी
करते हैं। लेकिन रब तेरे ख़ुदा ने तुझे ऐसा करने
की इजाज़त नहीं दी।

15रब तेरा ख़ुदा तेरे वास्ते तेरे भाइयों में से
मुझ जैसे नबी को बरपा करेगा। उस की सुनना।
16क्योंकि होरिब यानी सीना पहाड़ पर जमा होते
वक़्त तूने ख़ुद रब अपने ख़ुदा से दरख़ास्त की,
“न मैं मज़ीद रब अपने ख़ुदा की आवाज़ सुनना
चाहता, न यह भड़कती हुई आग देखना चाहता
हूँ, वरना मर जाऊँगा।” 17तब रब ने मुझसे कहा,
“जो कुछ वह कहते हैं वह ठीक है। 18आइंदा मैं
उनमें से तुझ जैसा नबी खड़ा करूँगा। मैं अपने
अलफ़ाज़ उसके मुँह में डाल दूँगा, और वह मेरी
हर बात उन तक पहुँचाएगा। 19जब वह नबी मेरे
नाम में कुछ कहे तो लाज़िम है कि तू उस की
सुन। जो नहीं सुनेगा उससे मैं ख़ुद जवाब तलब
करूँगा। 20लेकिन अगर कोई नबी गुस्ताख़ होकर
मेरे नाम में कोई बात कहे जो मैंने उसे बताने को
नहीं कहा था तो उसे सज़ाए-मौत देनी है। इसी
तरह उस नबी को भी हलाक कर देना है जो दीगर
माबूदों के नाम में बात करे।”

21शायद तेरे ज़हन में सवाल उभर आए कि हम
किस तरह मालूम कर सकते हैं कि कोई कलाम
वाक़ई रब की तरफ़ से है या नहीं। 22जवाब यह
है कि अगर नबी रब के नाम में कुछ कहे और वह
पूरा न हो जाए तो मतलब है कि नबी की बात रब
की तरफ़ से नहीं है बल्कि उसने गुस्ताख़ी करके
बात की है। इस सूरत में उससे मत डरना।

पनाह के शहर

19 रब तेरा ख़ुदा उस मुल्क में आबाद
क़ौमों को तबाह करेगा जो वह तुझे
दे रहा है। जब तू उन्हें भगाकर उनके शहरों और
घरों में आबाद हो जाएगा 2-3तो पूरे मुल्क को
तीन हिस्सों में तक़सीम कर। हर हिस्से में एक
मरकज़ी शहर मुक़र्रर कर। उन तक पहुँचानेवाले
रास्ते साफ़-सुथरे रखना। इन शहरों में हर वह
शख़्स पनाह ले सकता है जिसके हाथ से कोई
ग़ैरइरादी तौर पर हलाक हुआ है। 4वह ऐसे शहर
में जाकर इंतक़ाम लेनेवालों से महफ़ूज़ रहेगा।
शर्त यह है कि उसने न क़सदन और न दुश्मनी के
बाइस किसी को मार दिया हो।

5मसलन दो आदमी जंगल में दरख़्त काट रहे
हैं। कुल्हाड़ी चलाते वक़्त एक की कुल्हाड़ी दस्ते
से निकलकर उसके साथी को लग जाए और
वह मर जाए। ऐसा शख़्स फ़रार होकर ऐसे शहर
में पनाह ले सकता है ताकि बचा रहे। 6इसलिए
ज़रूरी है कि ऐसे शहरों का फ़ासला ज़्यादा न हो।
क्योंकि जब इंतक़ाम लेनेवाला उसका ताक़्क़ुब
करेगा तो ख़तरा है कि वह तैश में उसे पकड़कर
मार डाले, अगरचे भागनेवाला बेक़ुसूर है। जो कुछ
उसने किया वह दुश्मनी के सबब से नहीं बल्कि
ग़ैरइरादी तौर पर हुआ। 7इसलिए लाज़िम है कि
तू पनाह के तीन शहर अलग कर ले।

8बाद में रब तेरा ख़ुदा तेरी सरहदें मज़ीद बढ़ा
देगा, क्योंकि यही वादा उसने क़सम खाकर तेरे
बापदादा से किया है। अपने वादे के मुताबिक़ वह
तुझे पूरा मुल्क देगा, 9अलबत्ता शर्त यह है कि तू
एहतियात से उन तमाम अहकाम की पैरवी करे
जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। दूसरे अलफ़ाज़ में शर्त
यह है कि तू रब अपने ख़ुदा को प्यार करे और
हमेशा उस की राहों में चलता रहे। अगर तू ऐसा ही
करे और नतीजतन रब का वादा पूरा हो जाए तो
लाज़िम है कि तू पनाह के तीन और शहर अलग
कर ले। 10वरना तेरे मुल्क में जो रब तेरा ख़ुदा

तुझे मीरास में दे रहा है बेक़ुसूर लोगों को जान से मारा जाएगा और तू ख़ुद ज़िम्मेदार ठहरेगा।

11लेकिन हो सकता है कोई दुश्मनी के बाइस किसी की ताक में बैठ जाए और उस पर हमला करके उसे मार डाले। अगर क़ातिल पनाह के किसी शहर में भागकर पनाह ले 12तो उसके शहर के बुज़ुर्ग इत्तला दें कि उसे वापस लाया जाए। उसे इंतक़ाम लेनेवाले के हवाले किया जाए ताकि उसे सज़ाए-मौत मिले। 13उस पर रहम मत करना। लाज़िम है कि तू इसराईल में से बेक़ुसूर की मौत का दाग़ मिटाए ताकि तू ख़ुशहाल रहे।

ज़मीनों की हद्दें

14जब तू उस मुल्क में रहेगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में देगा ताकि तू उस पर क़ब्ज़ा करे तो ज़मीन की वह हद्दें आगे पीछे न करना जो तेरे बापदादा ने मुक़र्रर कीं।

अदालत में गवाह

15तू किसी को एक ही गवाह के कहने पर क़ुसूरवार नहीं ठहरा सकता। जो भी जुर्म सरज़द हुआ है, कम अज़ कम दो या तीन गवाहों की ज़रूरत है। वरना तू उसे क़ुसूरवार नहीं ठहरा सकता।

16अगर जिस पर इलज़ाम लगाया गया है इनकार करके दावा करे कि गवाह झूट बोल रहा है 17तो दोनों मक़दिस में रब के हुज़ूर आकर ख़िदमत करनेवाले इमामों और क़ाज़ियों को अपना मामला पेश करें। 18क़ाज़ी इसका ख़ूब खोज लगाएँ। अगर बात दुरुस्त निकले कि गवाह ने झूट बोलकर अपने भाई पर ग़लत इलज़ाम लगाया है 19तो उसके साथ वह कुछ किया जाए जो वह अपने भाई के लिए चाह रहा था। यों तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा। 20फिर तमाम बाक़ी लोग यह सुनकर डर जाएंगे और आइंदा तेरे दरमियान ऐसी ग़लत हरकत करने की जुर्रत नहीं करेंगे। 21क़ुसूरवार पर रहम न करना। उसूल यह हो कि जान के बदले जान, आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ के बदले हाथ, पाँव के बदले पाँव।

जंग के उसूल

20 जब तू जंग के लिए निकलकर देखता है कि दुश्मन तादाद में ज़्यादा हैं और उनके पास घोड़े और रथ भी हैं तो मत डरना। रब तेरा ख़ुदा जो तुझे मिसर से निकाल लाया अब भी तेरे साथ है। 2जंग के लिए निकलने से पहले इमाम सामने आए और फ़ौज से मुख़ातिब होकर 3कहे, “सुन ऐ इसराईल! आज तुम अपने दुश्मन से लड़ने जा रहे हो। उनके सबब से परेशान न हो। उनसे न ख़ौफ़ खाओ, न घबराओ, 4क्योंकि रब तुम्हारा ख़ुदा ख़ुद तुम्हारे साथ जाकर दुश्मन से लड़ेगा। वही तुम्हें फ़तह बख़्शेगा।”

5फिर निगहबान फ़ौज से मुख़ातिब हों, “क्या यहाँ कोई है जिसने हाल में अपना नया घर मुकम्मल किया लेकिन उसे मख़सूस करने का मौक़ा न मिला? वह अपने घर वापस चला जाए। ऐसा न हो कि वह जंग के दौरान मारा जाए और कोई और घर को मख़सूस करके उसमें बसने लगे। 6क्या कोई है जिसने अंगूर का बाग़ लगाकर इस वक़्त उस की पहली फ़सल के इंतज़ार में है? वह अपने घर वापस चला जाए। ऐसा न हो कि वह जंग में मारा जाए और कोई और बाग़ का फ़ायदा उठाए। 7क्या कोई है जिसकी मँगनी हुई है और जो इस वक़्त शादी के इंतज़ार में है? वह अपने घर वापस चला जाए। ऐसा न हो कि वह जंग में मारा जाए और कोई और उस की मंगेतर से शादी करे।”

8निगहबान कहें, “क्या कोई ख़ौफ़ज़दा या परेशान है? वह अपने घर वापस चला जाए ताकि अपने साथियों को परेशान न करे।” 9इसके बाद फ़ौजियों पर अफ़सर मुक़र्रर किए जाएँ।

10किसी शहर पर हमला करने से पहले उसके बाशिंदों को हथियार डाल देने का मौक़ा देना। 11अगर वह मान जाएँ और अपने दरवाज़े खोल दें तो वह तेरे लिए बेगार में काम करके तेरी

ख़िदमत करें। 12लेकिन अगर वह हथियार डालने से इनकार करें और जंग छिड़ जाए तो शहर का मुहासरा कर। 13जब रब तेरा ख़ुदा तुझे शहर पर फ़तह देगा तो उसके तमाम मर्दों को हलाक कर देना। 14तू तमाम माले-ग़नीमत औरतों, बच्चों और मवेशियों समेत रख सकता है। दुश्मन की जो चीज़ें रब ने तेरे हवाले कर दी हैं उन सबको तू इस्तेमाल कर सकता है। 15यों उन शहरों से निपटना जो तेरे अपने मुल्क से बाहर हैं।

16लेकिन जो शहर उस मुल्क में वाक़े हैं जो रब तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में दे रहा है, उनके तमाम जानदारों को हलाक कर देना। 17उन्हें रब के सुपुर्द करके मुकम्मल तौर पर हलाक करना, जिस तरह रब तेरे ख़ुदा ने तुझे हुक्म दिया है। इसमें हित्ती, अमोरी, कनानी, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी शामिल हैं। 18अगर तू ऐसा न करे तो वह तुम्हें रब तुम्हारे ख़ुदा का गुनाह करने पर उकसाएँगे। जो घिनौनी हरकतें वह अपने देवताओं की पूजा करते वक़्त करते हैं उन्हें वह तुम्हें भी सिखाएँगे।

19शहर का मुहासरा करते वक़्त इर्दगिर्द के फलदार दरख़्तों को काटकर तबाह न कर देना ख़ाह बड़ी देर भी हो जाए, वरना तू उनका फल नहीं खा सकेगा। उन्हें न काटना। क्या दरख़्त तेरे दुश्मन हैं जिनका मुहासरा करना है? हरगिज़ नहीं! 20उन दरख़्तों की और बात है जो फल नहीं लाते। उन्हें तू काटकर मुहासरे के लिए इस्तेमाल कर सकता है जब तक शहर शिकस्त न खाए।

नामालूम क़त्ल का कफ़्फ़ारा

21 जब तू उस मुल्क में आबाद होगा जो रब तुझे मीरास में दे रहा है ताकि तू उस पर क़ब्ज़ा करे तो हो सकता है कि कोई लाश खुले मैदान में कहीं पड़ी पाई जाए। अगर मालूम न हो कि किसने उसे क़त्ल किया है 2तो पहले इर्दगिर्द के शहरों के बुज़ुर्ग और क़ाज़ी आकर पता करें कि कौन-सा शहर लाश के ज़्यादा क़रीब है। 3फिर उस शहर के बुज़ुर्ग एक जवान गाय चुन लें जो कभी काम के लिए इस्तेमाल नहीं हुई। 4वह उसे एक ऐसी वादी में ले जाएँ जिसमें न कभी हल चलाया गया, न पौदे लगाए गए हों। वादी में ऐसी नहर हो जो पूरा साल बहती रहे। वहीं बुज़ुर्ग जवान गाय की गरदन तोड़ डालें।

5फिर लावी के क़बीले के इमाम क़रीब आएँ। क्योंकि रब तुम्हारे ख़ुदा ने उन्हें चुन लिया है ताकि वह ख़िदमत करें, रब के नाम से बरकत दें और तमाम झगड़ों और हमलों का फ़ैसला करें। 6उनके देखते देखते शहर के बुज़ुर्ग अपने हाथ गाय की लाश के ऊपर धो लें। 7साथ साथ वह कहें, “हमने इस शख़्स को क़त्ल नहीं किया, न हमने देखा कि किसने यह किया। 8ऐ रब, अपनी क़ौम इसराईल का यह कफ़्फ़ारा क़बूल फ़रमा जिसे तूने फ़िद्या देकर छुड़ाया है। अपनी क़ौम इसराईल को इस बेक़ुसूर के क़त्ल का क़ुसूरवार न ठहरा।” तब मक़तूल का कफ़्फ़ारा दिया जाएगा।

9यों तू ऐसे बेक़ुसूर शख़्स के क़त्ल का दाग़ अपने दरमियान से मिटा देगा। क्योंकि तूने वही कुछ किया होगा जो रब की नज़र में दुरुस्त है।

जंगी क़ैदी औरत से शादी

10हो सकता है कि तू अपने दुश्मन से जंग करे और रब तुम्हारा ख़ुदा तुझे फ़तह बख़्शे। जंगी क़ैदियों को जमा करते वक़्त 11तुझे उनमें से एक ख़ूबसूरत औरत नज़र आती है जिसके साथ तेरा दिल लग जाता है। तू उससे शादी कर सकता है। 12उसे अपने घर में ले आ। वहाँ वह अपने सर के बालों को मुँडवाए, अपने नाख़ुन तराशे 13और अपने वह कपड़े उतारे जो वह पहने हुए थी जब उसे क़ैद किया गया। वह पूरे एक महीने तक अपने वालिदैन के लिए मातम करे। फिर तू उसके पास जाकर उसके साथ शादी कर सकता है।

14अगर वह तुझे किसी वक़्त पसंद न आए तो उसे जाने दे। वह वहाँ जाए जहाँ उसका जी चाहे। तुझे उसे बेचने या उससे लौंडी का-सा सुलूक करने की इजाज़त नहीं है, क्योंकि तूने उसे मजबूर करके उससे शादी की है।

पहलौठे के हुक़ूक़

15हो सकता है किसी मर्द की दो बीवियाँ हों। एक को वह प्यार करता है, दूसरी को नहीं। दोनों बीवियों के बेटे पैदा हुए हैं, लेकिन जिस बीवी से शौहर मुहब्बत नहीं करता उसका बेटा सबसे पहले पैदा हुआ। 16जब बाप अपनी मिलकियत वसियत में तक़सीम करता है तो लाज़िम है कि वह अपने सबसे बड़े बेटे का मौरूसी हक़ पूरा करे। उसे पहलौठे का यह हक़ उस बीवी के बेटे को मुंतक़िल करने की इजाज़त नहीं जिसे वह प्यार करता है। 17उसे तसलीम करना है कि उस बीवी का बेटा सबसे बड़ा है, जिससे वह मुहब्बत नहीं करता। नतीजतन उसे उस बेटे को दूसरे बेटों की निसबत दुगना हिस्सा देना पड़ेगा, क्योंकि वह अपने बाप की ताक़त का पहला इज़हार है। उसे पहलौठे का हक़ हासिल है।

सरकश बेटा

18हो सकता है कि किसी का बेटा हटधर्म और सरकश हो। वह अपने वालिदैन की इताअत नहीं करता और उनके तंबीह करने और सज़ा देने पर भी उनकी नहीं सुनता। 19इस सूरत में वालिदैन उसे पकड़कर शहर के दरवाज़े पर ले जाएँ जहाँ बुज़ुर्ग जमा होते हैं। 20वह बुज़ुर्गों से कहें, “हमारा बेटा हटधर्म और सरकश है। वह हमारी इताअत नहीं करता बल्कि ऐयाश और शराबी है।” 21यह सुनकर शहर के तमाम मर्द उसे संगसार करें। यों तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा। तमाम इसराईल यह सुनकर डर जाएगा।

सज़ाए-मौत पानेवाले को उसी दिन दफ़नाना है

22जब तू किसी को सज़ाए-मौत देकर उस की लाश किसी लकड़ी या दरख़्त से लटकाता है 23तो उसे अगली सुबह तक वहाँ न छोड़ना। हर सूरत में उसे उसी दिन दफ़ना देना, क्योंकि जिसे भी दरख़्त से लटकाया गया है उस पर अल्लाह की लानत है। अगर उसे उसी दिन दफ़नाया न जाए तो तू उस मुल्क को नापाक कर देगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में दे रहा है।

मदद करने के लिए तैयार रहना

22 अगर तुझे किसी हमवतन भाई का बैल या भेड़-बकरी भटकी हुई नज़र आए तो उसे नज़रंदाज़ न करना बल्कि मालिक के पास वापस ले जाना। 2अगर मालिक का घर क़रीब न हो या तुझे मालूम न हो कि मालिक कौन है तो जानवर को अपने घर लाकर उस वक़्त तक सँभाले रखना जब तक कि मालिक उसे ढूँडने न आए। फिर जानवर को उसे वापस कर देना। 3यही कुछ कर अगर तेरे हमवतन भाई का गधा भटका हुआ नज़र आए या उसका गुमशुदा कोट या कोई और चीज़ कहीं नज़र आए। उसे नज़रंदाज़ न करना।

4अगर तू देखे कि किसी हमवतन का गधा या बैल रास्ते में गिर गया है तो उसे नज़रंदाज़ न करना। जानवर को खड़ा करने में अपने भाई की मदद कर।

क़ुदरती इंतज़ाम के तहत रहना

5औरत के लिए मर्दों के कपड़े पहनना मना है। इसी तरह मर्द के लिए औरतों के कपड़े पहनना भी मना है। जो ऐसा करता है उससे रब तेरे ख़ुदा को घिन आती है।

6अगर तुझे कहीं रास्ते में, किसी दरख़्त में या ज़मीन पर घोंसला नज़र आए और परिंदा अपने बच्चों या अंडों पर बैठा हुआ हो तो माँ को बच्चों समेत न पकड़ना। 7तुझे बच्चे ले जाने की इजाज़त है लेकिन माँ को छोड़ देना ताकि तू ख़ुशहाल और देर तक जीता रहे।

8नया मकान तामीर करते वक़्त छत पर चारों तरफ़ दीवार बनाना। वरना तू उस शख़्स की मौत का ज़िम्मेदार ठहरेगा जो तेरी छत पर से गिर जाए।

9अपने अंगूर के बाग़ में दो क़िस्म के बीज न बोना। वरना सब कुछ मक़दिस के लिए मख़सूसो-

मुक़द्दस होगा, न सिर्फ़ वह फ़सल जो तुमने अंगूर के अलावा लगाई बल्कि अंगूर भी।

10बैल और गधे को जोड़कर हल न चलाना।

11ऐसे कपड़े न पहनना जिनमें बनते वक़्त ऊन और कतान मिलाए गए हैं।

12अपनी चादर के चारों कोनों पर फुँदने लगाना।

इज़्ज़दिवाजी ज़िंदगी की हिफ़ाज़त

13अगर कोई आदमी शादी करने के थोड़ी देर बाद अपनी बीवी को पसंद न करे 14और फिर उस की बदनामी करके कहे, "इस औरत से शादी करने के बाद मुझे पता चला कि वह कुँवारी नहीं है" 15तो जवाब में बीवी के वालिदैन शहर के दरवाज़े पर जमा होनेवाले बुज़ुर्गों के पास सबूत[a] ले आएँ कि बेटी शादी से पहले कुँवारी थी। 16बीवी का बाप बुज़ुर्गों से कहे, "मैंने अपनी बेटी की शादी इस आदमी से की है, लेकिन यह उससे नफ़रत करता है। 17अब इसने उस की बदनामी करके कहा है, 'मुझे पता चला कि तुम्हारी बेटी कुँवारी नहीं है।' लेकिन यहाँ सबूत है कि मेरी बेटी कुँवारी थी।" फिर वालिदैन शहर के बुज़ुर्गों को मज़कूरा कपड़ा दिखाएँ।

18तब बुज़ुर्ग उस आदमी को पकड़कर सज़ा दें, 19क्योंकि उसने एक इसराईली कुँवारी की बदनामी की है। इसके अलावा उसे जुर्माने के तौर पर बीवी के बाप को चाँदी के 100 सिक्के देने पड़ेंगे। लाज़िम है कि वह शौहर के फ़रायज़ अदा करता रहे। वह उम्र-भर उसे तलाक़ नहीं दे सकेगा।

20लेकिन अगर आदमी की बात दुरुस्त निकले और साबित न हो सके कि बीवी शादी से पहले कुँवारी थी 21तो उसे बाप के घर लाया जाए। वहाँ शहर के आदमी उसे संगसार कर दें। क्योंकि अपने बाप के घर में रहते हुए बदकारी करने से उसने इसराईल में एक अहमक़ाना और बेदीन हरकत की है। यों तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा। 22अगर कोई आदमी किसी की बीवी के साथ ज़िना करे और वह पकड़े जाएँ तो दोनों को सज़ाए-मौत देनी है। यों तू इसराईल से बुराई मिटा देगा।

23अगर आबादी में किसी मर्द की मुला-क़ात किसी ऐसी कुँवारी से हो जिसकी किसी और के साथ मँगनी हुई है और वह उसके साथ हमबिसतर हो जाए 24तो लाज़िम है कि तुम दोनों को शहर के दरवाज़े के पास लाकर संगसार करो। वजह यह है कि लड़की ने मदद के लिए न पुकारा अगरचे उस जगह लोग आबाद थे। मर्द का जुर्म यह था कि उसने किसी और की मंगेतर की इसमतदरी की है। यों तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा।

25लेकिन अगर मर्द ग़ैरआबाद जगह में किसी और की मंगेतर की इसमतदरी करे तो सिर्फ़ उसी को सज़ाए-मौत दी जाए। 26लड़की को कोई सज़ा न देना, क्योंकि उसने कुछ नहीं किया जो मौत के लायक़ हो। ज़्यादती करनेवाले की हरकत उस शख़्स के बराबर है जिसने किसी पर हमला करके उसे क़त्ल कर दिया है। 27चूँकि उसने लड़की को वहाँ पाया जहाँ लोग नहीं रहते, इसलिए अगरचे लड़की ने मदद के लिए पुकारा तो भी उसे कोई न बचा सका।

28हो सकता है कोई आदमी किसी लड़की की इसमतदरी करे जिसकी मँगनी नहीं हुई है। अगर उन्हें पकड़ा जाए 29तो वह लड़की के बाप को चाँदी के 50 सिक्के दे। लाज़िम है कि वह उसी लड़की से शादी करे, क्योंकि उसने उस की इसमतदरी की है। न सिर्फ़ यह बल्कि वह उम्र-भर उसे तलाक़ नहीं दे सकता।

30अपने बाप की बीवी से शादी करना मना है। जो कोई यह करे वह अपने बाप की बेहुरमती करता है।

[a] यानी वह कपड़ा जिस पर नया जोड़ा सोया हुआ था।

मुक़द्दस इजतिमा में शरीक होने की शरायत

23 जब इसराईली रब के मक़दिस के पास जमा होते हैं तो उसे हाज़िर होने की इजाज़त नहीं जो काटने या कुचलने से ख़ोजा बन गया है। 2इसी तरह वह भी मुक़द्दस इजतिमा से दूर रहे जो नाजायज़ ताल्लुक़ात के नतीजे में पैदा हुआ है। उस की औलाद भी दसवीं पुश्त तक उसमें नहीं आ सकती।

3कोई भी अम्मोनी या मोआबी मुक़द्दस इजतिमा में शरीक नहीं हो सकता। इन क़ौमों की औलाद दसवीं पुश्त तक भी इस जमात में हाज़िर नहीं हो सकती, 4क्योंकि जब तुम मिसर से निकल आए तो वह रोटी और पानी लेकर तुमसे मिलने न आए। न सिर्फ़ यह बल्कि उन्होंने मसोपुतामिया के शहर फ़तोर में जाकर बिलाम बिन बओर को पैसे दिए ताकि वह तुझ पर लानत भेजे। 5लेकिन रब तेरे ख़ुदा ने बिलाम की न सुनी बल्कि उस की लानत बरकत में बदल दी। क्योंकि रब तेरा ख़ुदा तुझसे प्यार करता है। 6उम्र-भर कुछ न करना जिससे इन क़ौमों की सलामती और ख़ुशहाली बढ़ जाए।

7लेकिन अदोमियों को मकरूह न समझना, क्योंकि वह तुम्हारे भाई हैं। इसी तरह मिसरियों को भी मकरूह न समझना, क्योंकि तू उनके मुल्क में परदेसी मेहमान था। 8उनकी तीसरी नसल के लोग रब के मुक़द्दस इजतिमा में शरीक हो सकते हैं।

ख़ैमागाह में नापाकी

9अपने दुश्मनों से जंग करते वक़्त अपनी लशकरगाह में हर नापाक चीज़ से दूर रहना। 10मसलन अगर कोई आदमी रात के वक़्त एहतलाम के बाइस नापाक हो जाए तो वह लशकरगाह के बाहर जाकर शाम तक वहाँ ठहरे। 11दिन ढलते वक़्त वह नहा ले तो सूरज डूबने पर लशकरगाह में वापस आ सकता है।

12अपनी हाजत रफ़ा करने के लिए लशकरगाह से बाहर कोई जगह मुक़र्रर कर। 13जब किसी को हाजत के लिए बैठना हो तो वह इसके लिए गढ़ा खोदे और बाद में उसे मिट्टी से भर दे। इसलिए अपने सामान में खुदाई का कोई आला रखना ज़रूरी है।

14रब तेरा ख़ुदा तेरी लशकरगाह में तेरे दरमियान ही घुमता-फिरता है ताकि तू महफ़ूज़ रहे और दुश्मन तेरे सामने शिकस्त खाए। इसलिए लाज़िम है कि तेरी लशकरगाह उसके लिए मख़सूसो-मुक़द्दस हो। ऐसा न हो कि अल्लाह वहाँ कोई शर्मनाक बात देखकर तुझसे दूर हो जाए।

फ़रार हुए ग़ुलामों की मदद करना

15अगर कोई ग़ुलाम तेरे पास पनाह ले तो उसे मालिक को वापस न करना। 16वह तेरे साथ और तेरे दरमियान ही रहे, वहाँ जहाँ वह बसना चाहे, उस शहर में जो उसे पसंद आए। उसे न दबाना।

मंदिर में इसमतफ़रोशी मना है

17किसी देवता की ख़िदमत में इसमत-फ़रोशी करना हर इसराईली औरत और मर्द के लिए मना है। 18मन्नत मानते वक़्त न कसबी का अज्र, न कुत्ते के पैसे[a] रब के मक़दिस में लाना, क्योंकि रब तेरे ख़ुदा को दोनों चीज़ों से घिन है।

अपने हमवतनों से सूद न लेना

19अगर कोई इसराईली भाई तुझसे क़र्ज़ ले तो उससे सूद न लेना, ख़ाह तूने उसे पैसे, खाना या कोई और चीज़ दी हो। 20अपने इसराईली भाई से सूद न ले बल्कि सिर्फ़ परदेसी से। फिर जब तू मुल्क पर क़ब्ज़ा करके उसमें रहेगा तो रब तेरा ख़ुदा तेरे हर काम में बरकत देगा।

[a] यक़ीन से नहीं कहा जा सकता कि 'कुत्ते के पैसे' से क्या मुराद है। ग़ालिबन इसके पीछे बुतपरस्ती का कोई दस्तूर है।

अपनी मन्नत पूरी करना

21जब तू रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर मन्नत माने
तो उसे पूरा करने में देर न करना। रब तेरा ख़ुदा
यक़ीनन तुझसे इसका मुतालबा करेगा। अगर तू
उसे पूरा न करे तो क़ुसूरवार ठहरेगा। 22अगर
तू मन्नत मानने से बाज़ रहे तो क़ुसूरवार नहीं
ठहरेगा, 23लेकिन अगर तू अपनी दिली ख़ुशी से
रब के हुज़ूर मन्नत माने तो हर सूरत में उसे पूरा
कर।

दूसरे के बाग़ में से गुज़रने का रवैया

24किसी हमवतन के अंगूर के बाग़ में से गुज़रते
वक़्त तुझे जितना जी चाहे उसके अंगूर खाने की
इजाज़त है। लेकिन अपने किसी बरतन में फल
जमा न करना। 25इसी तरह किसी हमवतन के
अनाज के खेत में से गुज़रते वक़्त तुझे अपने
हाथों से अनाज की बालियाँ तोड़ने की इजाज़त
है। लेकिन दराँती इस्तेमाल न करना।

तलाक़ और दुबारा शादी

24 हो सकता है कोई आदमी किसी
औरत से शादी करे लेकिन बाद में
उसे पसंद न करे, क्योंकि उसे बीवी के बारे में
किसी शर्मनाक बात का पता चल गया है। वह
तलाक़नामा लिखकर उसे औरत को देता और
फिर उसे घर से वापस भेज देता है। 2इसके
बाद उस औरत की शादी किसी और मर्द से
हो जाती है, 3और वह भी बाद में उसे पसंद
नहीं करता। वह भी तलाक़नामा लिखकर उसे
औरत को देता और फिर उसे घर से वापस भेज
देता है। ख़ाह दूसरा शौहर उसे वापस भेज दे या
शौहर मर जाए, 4औरत के पहले शौहर को उससे
दुबारा शादी करने की इजाज़त नहीं है, क्योंकि
वह औरत उसके लिए नापाक है। ऐसी हरकत
रब की नज़र में क़ाबिले-घिन है। उस मुल्क को
यों गुनाहआलूदा न करना जो रब तेरा ख़ुदा तुझे
मीरास में दे रहा है।

मज़ीद हिदायात

5अगर किसी आदमी ने अभी अभी शादी की
हो तो तू उसे भरती करके जंग करने के लिए नहीं
भेज सकता। तू उसे कोई भी ऐसी ज़िम्मेदारी नहीं
दे सकता, जिससे वह घर से दूर रहने पर मजबूर
हो जाए। एक साल तक वह ऐसी ज़िम्मेदारियों से
बरी रहे ताकि घर में रहकर अपनी बीवी को ख़ुश
कर सके।

6अगर कोई तुझसे उधार ले तो ज़मानत के तौर
पर उससे न उस की छोटी चक्की, न उस की बड़ी
चक्की का पाट लेना, क्योंकि ऐसा करने से तू
उस की जान लेगा यानी तू वह चीज़ लेगा जिससे
उसका गुज़ारा होता है।

7अगर किसी आदमी को पकड़ा जाए जिसने
अपने हमवतन को इग़वा करके ग़ुलाम बना लिया
या बेच दिया है तो उसे सज़ाए-मौत देना है। यों तू
अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा।

8अगर कोई वबाई जिल्दी बीमारी तुझे लग
जाए तो बड़ी एहतियात से लावी के क़बीले के
इमामों की तमाम हिदायात पर अमल करना। जो
भी हुक्म मैंने उन्हें दिया उसे पूरा करना। 9याद कर
कि रब तेरे ख़ुदा ने मरियम के साथ क्या किया
जब तुम मिसर से निकलकर सफ़र कर रहे थे।

ग़रीबों के हुक़ूक़

10अपने हमवतन को उधार देते वक़्त उसके
घर में न जाना ताकि ज़मानत की कोई चीज़
मिले 11बल्कि बाहर ठहरकर इंतज़ार कर कि वह
ख़ुद घर से ज़मानत की चीज़ निकालकर तुझे दे।
12अगर वह इतना ज़रूरतमंद हो कि सिर्फ़ अपनी
चादर दे सके तो रात के वक़्त ज़मानत तेरे पास न
रहे। 13उसे सूरज डूबने तक वापस करना ताकि
क़र्ज़दार उसमें लिपटकर सो सके। फिर वह तुझे
बरकत देगा और रब तेरा ख़ुदा तेरा यह क़दम रास्त
क़रार देगा।

14ज़रूरतमंद मज़दूर से ग़लत फ़ायदा न
उठाना, चाहे वह इसराईली हो या परदेसी। 15उसे
रोज़ाना सूरज डूबने से पहले पहले उस की

मज़दूरी दे देना, क्योंकि इससे उसका गुज़ारा होता है। कहीं वह रब के हुज़ूर तेरी शिकायत न करे और तू क़ुसूरवार ठहरे।

16वालिदैन को उनके बच्चों के जरायम के सबब से सज़ाए-मौत न दी जाए, न बच्चों को उनके वालिदैन के जरायम के सबब से। अगर किसी को सज़ाए-मौत देनी हो तो उस गुनाह के सबब से जो उसने ख़ुद किया है।

17परदेसियों और यतीमों के हुक़ूक़ क़ायम रखना। उधार देते वक़्त ज़मानत के तौर पर बेवा की चादर न लेना। 18याद रख कि तू भी मिसर में ग़ुलाम था और कि रब तेरे ख़ुदा ने फ़िद्या देकर तुझे वहाँ से छुड़ाया। इसी वजह से मैं तुझे यह हुक्म देता हूँ।

19अगर तू फ़सल की कटाई के वक़्त एक पूला भूलकर खेत में छोड़ आए तो उसे लाने के लिए वापस न जाना। उसे परदेसियों, यतीमों और बेवाओं के लिए वहीं छोड़ देना ताकि रब तेरा ख़ुदा तेरे हर काम में बरकत दे। 20जब ज़ैतून की फ़सल पक गई हो तो दरख़्तों को मार मारकर एक ही बार उनमें से फल उतार। इसके बाद उन्हें न छेड़ना। बचा हुआ फल परदेसियों, यतीमों और बेवाओं के लिए छोड़ देना। 21इसी तरह अपने अंगूर तोड़ने के लिए एक ही बार बाग़ में से गुज़रना। इसके बाद उसे न छेड़ना। बचा हुआ फल परदेसियों, यतीमों और बेवाओं के लिए छोड़ देना। 22याद रख कि तू ख़ुद मिसर में ग़ुलाम था। इसी वजह से मैं तुझे यह हुक्म देता हूँ।

कोड़े लगाने की मुनासिब सज़ा

25 अगर लोग अपना एक दूसरे के साथ झगड़ा ख़ुद निपटा न सकें तो वह अपना मामला अदालत में पेश करें। क़ाज़ी फ़ैसला करे कि कौन बेक़ुसूर है और कौन मुजरिम। 2अगर मुजरिम को कोड़े लगाने की सज़ा देनी है तो उसे क़ाज़ी के सामने ही मुँह के बल ज़मीन पर लिटाना। फिर उसे इतने कोड़े लगाए जाएँ जितनों के वह लायक़ है। 3लेकिन उसको ज़्यादा से ज़्यादा 40 कोड़े लगाने हैं, वरना तेरे इसराईली भाई की सरे-आम बेइज़्ज़ती हो जाएगी।

बैल का मुँह न बाँधना

4जब तू फ़सल गाहने के लिए उस पर बैल चलने देता है तो उसका मुँह बाँधकर न रखना।

मरहूम भाई की बीवी से शादी करने का हुक्म

5अगर कोई शादीशुदा मर्द बेऔलाद मर जाए और उसका सगा भाई साथ रहे तो उसका फ़र्ज़ है कि बेवा से शादी करे। बेवा शौहर के ख़ानदान से हटकर किसी और से शादी न करे बल्कि सिर्फ़ अपने देवर से। 6पहला बेटा जो इस रिश्ते से पैदा होगा पहले शौहर के बेटे की हैसियत रखेगा। यों उसका नाम क़ायम रहेगा।

7लेकिन अगर देवर भाबी से शादी करना न चाहे तो भाबी शहर के दरवाज़े पर जमा होनेवाले बुज़ुर्गों के पास जाए और उनसे कहे, “मेरा देवर मुझसे शादी करने से इनकार करता है। वह अपना फ़र्ज़ अदा करने को तैयार नहीं कि अपने भाई का नाम क़ायम रखे।” 8फिर शहर के बुज़ुर्ग देवर को बुलाकर उसे समझाएँ। अगर वह इसके बावुजूद भी उससे शादी करने से इनकार करे 9तो उस की भाबी बुज़ुर्गों की मौजूदगी में उसके पास जाकर उस की एक चप्पल उतार ले। फिर वह उसके मुँह पर थूककर कहे, “उस आदमी से ऐसा सुलूक किया जाता है जो अपने भाई की नसल क़ायम रखने को तैयार नहीं।” 10आइंदा इसराईल में देवर की नसल “नंगे पाँववाले की नसल” कहलाएगी।

झगड़े में नाज़ेबा हरकतें

11अगर दो आदमी लड़ रहे हों और एक की बीवी अपने शौहर को बचाने की ख़ातिर मुख़ालिफ़ के अज़ुए-तनासुल को पकड़ ले 12तो लाज़िम है कि तू औरत का हाथ काट डाले। उस पर रहम न करना।

धोका न देना

13तोलते वक़्त अपने थैले में सहीह वज़न के
बाट रख, और धोका देने के लिए हलके बाट साथ
न रखना। 14इसी तरह अपने घर में अनाज की
पैमाइश करने का सहीह बरतन रख, और धोका
देने के लिए छोटा बरतन साथ न रखना। 15सहीह
वज़न के बाट और पैमाइश करने के सहीह बरतन
इस्तेमाल करना ताकि तू देर तक उस मुल्क में
जीता रहे जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देगा। 16क्योंकि
उसे हर धोकेबाज़ से घिन है।

अमालीक़ियों को सज़ा देना

17याद रहे कि अमालीक़ियों ने तुझसे क्या कुछ
किया जब तुम मिसर से निकलकर सफ़र कर रहे
थे। 18जब तू थकाहारा था तो वह तुझ पर हमला
करके पीछे पीछे चलनेवाले तमाम कमज़ोरों को
जान से मारते रहे। वह अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं
मानते थे। 19चुनाँचे जब रब तेरा ख़ुदा तुझे इर्दगिर्द
के तमाम दुश्मनों से सुकून देगा और तू उस मुल्क
में आबाद होगा जो वह तुझे मीरास में दे रहा है
ताकि तू उस पर क़ब्ज़ा करे तो अमालीक़ियों को
यों हलाक कर कि दुनिया में उनका नामो-निशान
न रहे। यह बात मत भूलना।

ज़मीन की पहली पैदावार रब को पेश करना

26 जब तू उस मुल्क में दाख़िल होगा जो
रब तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में दे रहा
है और तू उस पर क़ब्ज़ा करके उसमें आबाद हो
जाएगा 2तो जो भी फ़सल तू काटेगा उसके पहले
फल में से कुछ टोकरे में रखकर उस जगह ले जा
जो रब तेरा ख़ुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए
चुनेगा। 3वहाँ ख़िदमत करनेवाले इमाम से कह,
“आज मैं रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर एलान करता
हूँ कि उस मुल्क में पहुँच गया हूँ जिसका हमें देने
का वादा रब ने क़सम खाकर हमारे बापदादा से
किया था।”

4तब इमाम तेरा टोकरा लेकर उसे रब तेरे ख़ुदा
की क़ुरबानगाह के सामने रख दे। 5फिर रब अपने
ख़ुदा के हुज़ूर कह, “मेरा बाप आवारा फिरनेवाला
अरामी था जो अपने लोगों को लेकर मिसर में
आबाद हुआ। वहाँ पहुँचते वक़्त उनकी तादाद
कम थी, लेकिन होते होते वह बड़ी और ताक़तवर
क़ौम बन गए। 6लेकिन मिसरियों ने हमारे साथ
बुरा सुलूक किया और हमें दबाकर सख़्त ग़ुलामी
में फँसा दिया। 7फिर हमने चिल्लाकर रब अपने
बापदादा के ख़ुदा से फ़रियाद की, और रब ने
हमारी सुनी। उसने हमारा दुख, हमारी मुसीबत
और दबी हुई हालत देखी 8और बड़े इख़्तियार
और क़ुदरत का इज़हार करके हमें मिसर से
निकाल लाया। उस वक़्त उसने मिसरियों में
दहशत फैलाकर बड़े मोजिज़े दिखाए। 9वह हमें
यहाँ ले आया और यह मुल्क दिया जिसमें दूध
और शहद की कसरत है। 10ऐ रब, अब मैं तुझे
उस ज़मीन का पहला फल पेश करता हूँ जो तूने
हमें बख़्शी है।”

अपनी पैदावार का टोकरा रब अपने ख़ुदा
के सामने रखकर उसे सिजदा करना। 11ख़ुशी
मनाना कि रब मेरे ख़ुदा ने मुझे और मेरे घराने को
इतनी अच्छी चीज़ों से नवाज़ा है। इस ख़ुशी में
अपने दरमियान रहनेवाले लावियों और परदेसियों
को भी शामिल करना।

फ़सल का ज़रूरतमंदों के लिए हिस्सा

12हर तीसरे साल अपनी तमाम फ़सलों
का दसवाँ हिस्सा लावियों, परदेसियों, यती-
मों और बेवाओं को देना ताकि वह तेरे शहरों
में खाना खाकर सेर हो जाएँ। 13फिर रब अपने
ख़ुदा से कह, “मैंने वैसा ही किया है जैसा
तूने मुझे हुक्म दिया। मैंने अपने घर से तेरे
लिए मख़सूसो-मुक़द्दस हिस्सा निकालकर उसे
लावियों, परदेसियों, यतीमों और बेवाओं को दिया
है। मैंने सब कुछ तेरी हिदायात के ऐन मुताबिक़
किया है और कुछ नहीं भूला। 14मातम करते
वक़्त मैंने इस मख़सूसो-मुक़द्दस हिस्से से कुछ
नहीं खाया। मैं इसे उठाकर घर से बाहर लाते
वक़्त नापाक नहीं था। मैंने इसमें से मुरदों को

भी कुछ पेश नहीं किया। मैंने रब अपने ख़ुदा की
इताअत करके वह सब कुछ किया है जो तूने
मुझे करने को फ़रमाया था। 15चुनाँचे आसमान
पर अपने मक़दिस से निगाह करके अपनी क़ौम
इसराईल को बरकत दे। उस मुल्क को भी बरकत
दे जिसका वादा तूने क़सम खाकर हमारे बापदादा
से किया और जो तूने हमें बख़्श भी दिया है, उस
मुल्क को जिसमें दूध और शहद की कसरत है।”

तुम रब की क़ौम हो

16आज रब तेरा ख़ुदा फ़रमाता है कि इन
अहकाम और हिदायात की पैरवी कर। पूरे दिलो-
जान से और बड़ी एहतियात से इन पर अमल
कर।
17आज तूने एलान किया है, “रब मेरा ख़ुदा है।
मैं उस की राहों पर चलता रहूँगा, उसके अहकाम
के ताबे रहूँगा और उस की सुनूँगा।” 18और आज
रब ने एलान किया है, “तू मेरी क़ौम और मेरी
अपनी मिलकियत है जिस तरह मैंने तुझसे वादा
किया है। अब मेरे तमाम अहकाम के मुताबिक़
ज़िंदगी गुज़ार। 19जितनी भी क़ौमें मैंने ख़लक़
की हैं उन सब पर मैं तुझे सरफ़राज़ करूँगा और
तुझे तारीफ़, शोहरत और इज़्ज़त अता करूँगा।
तू रब अपने ख़ुदा के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस क़ौम
होगा जिस तरह मैंने वादा किया है।”

ऐबाल पहाड़ पर क़ुरबानगाह बनाना है

27 फिर मूसा ने बुज़ुर्गों से मिलकर क़ौम
से कहा, “तमाम हिदायात के ताबे
रहो जो मैं तुम्हें आज दे रहा हूँ। 2जब तुम दरियाए-
यरदन को पार करके उस मुल्क में दाख़िल होगे
जो रब तेरा ख़ुदा तुझे दे रहा है तो वहाँ बड़े
पत्थर खड़े करके उन पर सफेदी कर। 3उन पर
लफ़्ज़ बलफ़्ज़ पूरी शरीअत लिख। दरिया को पार
करने के बाद यही कुछ कर ताकि तू उस मुल्क
में दाख़िल हो जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देगा और
जिसमें दूध और शहद की कसरत है। क्योंकि रब
तेरे बापदादा के ख़ुदा ने यह देने का तुझसे वादा
किया है। 4चुनाँचे यरदन को पार करके पत्थरों को
ऐबाल पहाड़ पर खड़ा करो और उन पर सफेदी
कर।
5वहाँ रब अपने ख़ुदा के लिए क़ुरबानगाह
बनाना। जो पत्थर तू उसके लिए इस्तेमाल
करे उन्हें लोहे के किसी औज़ार से न
तराशना। 6सिर्फ़ सालिम पत्थर इस्तेमाल
कर। क़ुरबानगाह पर रब अपने ख़ुदा को
भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ पेश कर। 7सला-
मती की क़ुरबानियाँ भी उस पर चढ़ा। उन्हें वहाँ रब
अपने ख़ुदा के हुज़ूर खाकर ख़ुशी मना। 8वहाँ खड़े
किए गए पत्थरों पर शरीअत के तमाम अलफ़ाज़
साफ़ साफ़ लिखे जाएँ।”

ऐबाल पहाड़ पर से लानत

9फिर मूसा ने लावी के क़बीले के इमामों
से मिलकर तमाम इसराईलियों से कहा, “ऐ
इसराईल, ख़ामोशी से सुन। अब तू रब अपने
ख़ुदा की क़ौम बन गया है, 10इसलिए उसका
फ़रमाँबरदार रह और उसके उन अहकाम पर
अमल कर जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ।”
11उसी दिन मूसा ने इसराईलियों को हुक्म
देकर कहा, 12“दरियाए-यरदन को पार करने के
बाद शमाऊन, लावी, यहूदाह, इशकार, यूसुफ़
और बिनयमीन के क़बीले गरिज़ीम पहाड़ पर
खड़े हो जाएँ। वहाँ वह बरकत के अलफ़ाज़
बोलें। 13बाक़ी क़बीले यानी रूबिन, जद, आशर,
ज़बूलून, दान और नफ़ताली ऐबाल पहाड़ पर खड़े
होकर लानत के अलफ़ाज़ बोलें।
14फिर लावी तमाम लोगों से मुख़ातिब होकर
ऊँची आवाज़ से कहें,
15‘उस पर लानत जो बुत तराशकर या
ढालकर चुपके से खड़ा करे। रब को कारीगर के
हाथों से बनी हुई ऐसी चीज़ से घिन है।’
जवाब में सब लोग कहें, ‘आमीन!’
16फिर लावी कहें, ‘उस पर लानत जो अपने
बाप या माँ की तहक़ीर करे।’
सब लोग कहें, ‘आमीन!’

17‘उस पर लानत जो अपने पड़ोसी की ज़मीन
की हुदूद आगे पीछे करे।’
सब लोग कहें, ‘आमीन!’
18‘उस पर लानत जो किसी अंधे की राहनुमाई
करके उसे ग़लत रास्ते पर ले जाए।’
सब लोग कहें, ‘आमीन!’
19‘उस पर लानत जो परदेसियों, यतीमों या
बेवाओं के हुक़ूक़ क़ायम न रखे।’
सब लोग कहें, ‘आमीन!’
20‘उस पर लानत जो अपने बाप की बीवी से
हमबिसतर हो जाए, क्योंकि वह अपने बाप की
बेहुरमती करता है।’
सब लोग कहें, ‘आमीन!’
21‘उस पर लानत जो जानवर से जिंसी
ताल्लुक़ रखे।’
सब लोग कहें, ‘आमीन!’
22‘उस पर लानत जो अपनी सगी बहन, अपने
बाप की बेटी या अपनी माँ की बेटी से हमबिसतर
हो जाए।’
सब लोग कहें, ‘आमीन!’
23‘उस पर लानत जो अपनी सास से
हमबिसतर हो जाए।’
सब लोग कहें, ‘आमीन!’
24‘उस पर लानत जो चुपके से अपने हमवतन
को क़त्ल कर दे।’
सब लोग कहें, ‘आमीन!’
25‘उस पर लानत जो पैसे लेकर किसी बेक़ुसूर
शख़्स को क़त्ल करे।’
सब लोग कहें, ‘आमीन!’
26‘उस पर लानत जो इस शरीअत की बातें
क़ायम न रखे, न इन पर अमल करे।’
सब लोग कहें, ‘आमीन!’

फ़रमाँबरदारी की बरकतें

28 रब तेरा ख़ुदा तुझे दुनिया की
तमाम क़ौमों पर सरफ़राज़ करे-
गा। शर्त यह है कि तू उस की सुने और एहतियात
से उसके उन तमाम अहकाम पर अमल करे जो
मैं तुझे आज दे रहा हूँ। 2रब अपने ख़ुदा का
फ़रमाँबरदार रह तो तुझे हर तरह की बरकत
हासिल होगी। 3रब तुझे शहर और देहात में
बरकत देगा। 4तेरी औलाद फले-फूलेगी, तेरी
अच्छी-ख़ासी फ़सलें पकेंगी, तेरे गाय-बैलों और
भेड़-बकरियों के बच्चे तरक़्क़ी करेंगे। 5तेरा
टोकरा फल से भरा रहेगा, और आटा गूँधने का
तेरा बरतन आटे से ख़ाली नहीं होगा। 6रब तुझे
घर में आते और वहाँ से निकलते वक़्त बरकत
देगा।
7जब तेरे दुश्मन तुझ पर हमला करेंगे तो वह रब
की मदद से शिकस्त खाएँगे। गो वह मिलकर तुझ
पर हमला करें तो भी तू उन्हें चारों तरफ़ मुंतशिर
कर देगा।
8अल्लाह तेरे हर काम में बरकत देगा। अनाज
की कसरत के सबब से तेरे गोदाम भरे रहेंगे।
रब तेरा ख़ुदा तुझे उस मुल्क में बरकत देगा
जो वह तुझे देनेवाला है। 9रब अपनी क़सम
के मुताबिक़ तुझे अपनी मख़सूसो-मुक़द्दस क़ौम
बनाएगा अगर तू उसके अहकाम पर अमल करे
और उस की राहों पर चले। 10फिर दुनिया की
तमाम क़ौमें तुझसे ख़ौफ़ खाएँगी, क्योंकि वह
देखेंगी कि तू रब की क़ौम है और उसके नाम
से कहलाता है।
11रब तुझे बहुत औलाद देगा, तेरे रेवड़ बढ़ाएगा
और तुझे कसरत की फ़सलें देगा। यों वह तुझे उस
मुल्क में बरकत देगा जिसका वादा उसने क़सम
खाकर तेरे बापदादा से किया। 12रब आसमान
के ख़ज़ानों को खोलकर वक़्त पर तेरी ज़मीन
पर बारिश बरसाएगा। वह तेरे हर काम में बरकत
देगा। तू बहुत-सी क़ौमों को उधार देगा लेकिन
किसी का भी क़र्ज़दार नहीं होगा। 13रब तुझे
क़ौमों की दुम नहीं बल्कि उनका सर बनाएगा।
तू तरक़्क़ी करता जाएगा और ज़वाल का शिकार
नहीं होगा। लेकिन शर्त यह है कि तू रब अपने ख़ुदा
के वह अहकाम मानकर उन पर अमल करे जो मैं
तुझे आज दे रहा हूँ। 14जो कुछ भी मैंने तुझे करने
को कहा है उससे किसी तरह भी हटकर ज़िंदगी

न गुज़ारना। न दीगर माबूदों की पैरवी करना, न उनकी ख़िदमत करना।

नाफ़रमानी की लानतें

15लेकिन अगर तू रब अपने ख़ुदा की न सुने और उसके उन तमाम अहकाम पर अमल न करे जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ तो हर तरह की लानत तुझ पर आएगी। 16शहर और देहात में तुझ पर लानत होगी। 17तेरे टोकरे और आटा गूँधने के तेरे बरतन पर लानत होगी। 18तेरी औलाद पर, तेरे गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के बच्चों पर और तेरे खेतों पर लानत होगी। 19घर में आते और वहाँ से निकलते वक़्त तुझ पर लानत होगी। 20अगर तू ग़लत काम करके रब को छोड़े तो जो कुछ भी तू करे वह तुझ पर लानतें, परेशानियाँ और मुसीबतें आने देगा। तब तेरा जल्दी से सत्यानास होगा, और तू हलाक हो जाएगा।

21रब तुझमें वबाई बीमारियाँ फैलाएगा जिनके सबब से तुझमें से कोई उस मुल्क में ज़िंदा नहीं रहेगा जिस पर तू अभी क़ब्ज़ा करनेवाला है। 22रब तुझे मोहलक बीमारियों, बुख़ार और सूजन से मारेगा। झुलसानेवाली गरमी, काल, पतरोग और फफूँदी तेरी फ़सलें ख़त्म करेगी। ऐसी मुसीबतों के बाइस तू तबाह हो जाएगा। 23तेरे ऊपर आसमान पीतल जैसा सख़्त होगा जबकि तेरे नीचे ज़मीन लोहे की मानिंद होगी। 24बारिश की जगह रब तेरे मुल्क पर गर्द और रेत बरसाएगा जो आसमान से तेरे मुल्क पर छाकर तुझे बरबाद कर देगी।

25जब तू अपने दुश्मनों का सामना करे तो रब तुझे शिकस्त दिलाएगा। गो तू मिलकर उनकी तरफ़ बढ़ेगा तो भी उनसे भागकर चारों तरफ़ मुंतशिर हो जाएगा। दुनिया के तमाम ममालिक में लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे जब वह तेरी मुसीबतें देखेंगे। 26परिंदे और जंगली जानवर तेरी लाशों को खा जाएंगे, और उन्हें भगानेवाला कोई नहीं होगा। 27रब तुझे उन्हीं फोड़ों से मारेगा जो मिसरियों को निकले थे। ऐसे जिल्दी अमराज़ फैलेंगे जिनका इलाज नहीं है। 28तू पागलपन का शिकार हो जाएगा, रब तुझे अंधेपन और ज़हनी अबतरी में मुब्तला कर देगा। 29दोपहर के वक़्त भी तू अंधे की तरह टटोल टटोलकर फिरेगा। जो कुछ भी तू करे उसमें नाकाम रहेगा। रोज़ बरोज़ लोग तुझे दबाते और लूटते रहेंगे, और तुझे बचानेवाला कोई नहीं होगा।

30तेरी मँगनी किसी औरत से होगी तो कोई और आकर उस की इसमतदरी करेगा। तू अपने लिए घर बनाएगा लेकिन उसमें नहीं रहेगा। तू अपने लिए अंगूर का बाग़ लगाएगा लेकिन उसका फल नहीं खाएगा। 31तेरे देखते देखते तेरा बैल ज़बह किया जाएगा, लेकिन तू उसका गोश्त नहीं खाएगा। तेरा गधा तुझसे छीन लिया जाएगा और वापस नहीं किया जाएगा। तेरी भेड़-बकरियाँ दुश्मन को दी जाएँगी, और उन्हें छुड़ानेवाला कोई नहीं होगा। 32तेरे बेटे-बेटियों को किसी दूसरी क़ौम को दिया जाएगा, और तू कुछ नहीं कर सकेगा। रोज़ बरोज़ तू अपने बच्चों के इंतज़ार में उफ़क़ को तकता रहेगा, लेकिन देखते देखते तेरी आँखें धुँधला जाएँगी।

33एक अजनबी क़ौम तेरी ज़मीन की पैदावार और तेरी मेहनतो-मशक़्क़त की कमाई ले जाएगी। तुझे उम्र-भर ज़ुल्म और दबाव बरदाश्त करना पड़ेगा।

34जो हौलनाक बातें तेरी आँखें देखेंगी उनसे तू पागल हो जाएगा। 35रब तुझे तकलीफ़देह और लाइलाज फोड़ों से मारेगा जो तल्वे से लेकर चाँदी तक पूरे जिस्म पर फैलकर तेरे घुटनों और टाँगों को मुतअस्सिर करेंगे।

36रब तुझे और तेरे मुक़र्रर किए हुए बादशाह को एक ऐसे मुल्क में ले जाएगा जिससे न तू और न तेरे बापदादा वाक़िफ़ थे। वहाँ तू दीगर माबूदों यानी लकड़ी और पत्थर के बुतों की ख़िदमत करेगा। 37जिस जिस क़ौम में रब तुझे हाँक देगा वहाँ तुझे देखकर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे और वह तेरा मज़ाक़ उड़ाएँगे। तू उनके लिए इबरतअंगेज़ मिसाल होगा।

38तू अपने खेतों में बहुत बीज बोने के बावुजूद
कम ही फ़सल काटेगा, क्योंकि टिड्डे उसे खा
जाएंगे। 39तू अंगूर के बाग़ लगाकर उन पर ख़ूब
मेहनत करेगा लेकिन न उनके अंगूर तोड़ेगा, न
उनकी मै पिएगा, क्योंकि कीड़े उन्हें खा जाएंगे।
40गो तेरे पूरे मुल्क में ज़ैतून के दरख़्त होंगे तो भी
तू उनका तेल इस्तेमाल नहीं कर सकेगा, क्योंकि
ज़ैतून ख़राब होकर ज़मीन पर गिर जाएंगे।
41तेरे बेटे-बेटियाँ तो होंगे, लेकिन तू उनसे
महरूम हो जाएगा। क्योंकि उन्हें गिरिफ़्तार करके
किसी अजनबी मुल्क में ले जाया जाएगा।
42टिड्डियों के ग़ोल तेरे मुल्क के तमाम दरख़्तों
और फ़सलों पर क़ब्ज़ा कर लेंगे। 43तेरे दरमियान
रहनेवाला परदेसी तुझसे बढ़कर तरक़्क़ी करता
जाएगा जबकि तुझ पर ज़वाल आ जाएगा।
44उसके पास तुझे उधार देने के लिए पैसे होंगे
जबकि तेरे पास उसे उधार देने को कुछ नहीं होगा।
आख़िर में वह सर और तू दुम होगा।
45यह तमाम लानतें तुझ पर आन पड़ेंगी। जब
तक तू तबाह न हो जाए वह तेरा ताक़्क़ुब करती
रहेंगी, क्योंकि तूने रब अपने ख़ुदा की न सुनी
और उसके अहकाम पर अमल न किया। 46यों
यह हमेशा तक तेरे और तेरी औलाद के लिए
एक मोजिज़ाना और इबरतअंगेज़ इलाही निशान
रहेंगी।
47चूँकि तूने दिली ख़ुशी से उस वक़्त रब अपने
ख़ुदा की ख़िदमत न की जब तेरे पास सब कुछ
था 48इसलिए तू उन दुश्मनों की ख़िदमत करेगा
जिन्हें रब तेरे ख़िलाफ़ भेजेगा। तू भूका, प्यासा,
नंगा और हर चीज़ का हाजतमंद होगा, और
रब तेरी गरदन पर लोहे का जुआ रखकर तुझे
मुकम्मल तबाही तक ले जाएगा।
49रब तेरे ख़िलाफ़ एक क़ौम खड़ी करेगा जो
दूर से बल्कि दुनिया की इंतहा से आकर उक़ाब
की तरह तुझ पर झपट्टा मारेगी। वह ऐसी ज़बान
बोलेगी जिससे तू वाक़िफ़ नहीं होगा। 50वह सख़्त
क़ौम होगी जो न बुज़ुर्गों का लिहाज़ करेगी और
न बच्चों पर रहम करेगी। 51वह तेरे मवेशी और
फ़सलें खा जाएगी और तू भूके मर जाएगा। तू
हलाक हो जाएगा, क्योंकि तेरे लिए कुछ नहीं
बचेगा, न अनाज, न मै, न तेल, न गाय-बैलों
या भेड़-बकरियों के बच्चे। 52दुश्मन तेरे मुल्क
के तमाम शहरों का मुहासरा करेगा। आख़िरकार
जिन ऊँची और मज़बूत फ़सीलों पर तू एतमाद
करेगा वह भी सब गिर पड़ेंगी। दुश्मन उस मुल्क
का कोई भी शहर नहीं छोड़ेगा जो रब तेरा ख़ुदा
तुझे देनेवाला है।
53जब दुश्मन तेरे शहरों का मुहासरा करेगा
तो तू उनमें इतना शदीद भूका हो जाएगा कि
अपने बच्चों को खा लेगा जो रब तेरे ख़ुदा ने तुझे
दिए हैं। 54-55मुहासरे के दौरान तुममें से सबसे
शरीफ़ और शायस्ता आदमी भी अपने बच्चे को
ज़बह करके खाएगा, क्योंकि उसके पास कोई
और ख़ुराक नहीं होगी। उस की हालत इतनी बुरी
होगी कि वह उसे अपने सगे भाई, बीवी या बाक़ी
बच्चों के साथ तक़सीम करने के लिए तैयार नहीं
होगा। 56-57तुममें से सबसे शरीफ़ और शायस्ता
औरत भी ऐसा ही करेगी, अगरचे पहले वह इतनी
नाज़ुक थी कि फ़र्श को अपने तल्वे से छूने की
जुर्रत नहीं करती थी। मुहासरे के दौरान उसे इतनी
शदीद भूक होगी कि जब उसके बच्चा पैदा होगा
तो वह छुप छुपकर उसे खाएगी। न सिर्फ़ यह
बल्कि वह पैदाइश के वक़्त बच्चे के साथ ख़ारिज
हुई आलाइश भी खाएगी और उसे अपने शौहर
या अपने बाक़ी बच्चों में बाँटने के लिए तैयार नहीं
होगी। इतनी मुसीबत तुझ पर मुहासरे के दौरान
आएगी।
58ग़ारज़ एहतियात से शरीअत की उन तमाम
बातों की पैरवी कर जो इस किताब में दर्ज हैं,
और रब अपने ख़ुदा के पुरजलाल और बारोब
नाम का ख़ौफ़ मानना। 59वरना वह तुझ और
तेरी औलाद में सख़्त और लाइलाज अमराज़ और
ऐसी दहशतनाक वबाएँ फैलाएगा जो रोकी नहीं
जा सकेंगी। 60जिन तमाम वबाओं से तू मिसर में
दहशत खाता था वह अब तेरे दरमियान फैलकर
तेरे साथ चिमटी रहेंगी। 61न सिर्फ़ शरीअत की

इस किताब में बयान की हुई बीमारियाँ और
मुसीबतें तुझ पर आएँगी बल्कि रब और भी तुझ
पर भेजेगा, जब तक कि तू हलाक न हो जाए।
62अगर तू रब अपने ख़ुदा की न सुने तो
आख़िरकार तुममें से बहुत कम बचे रहेंगे, गो तुम
पहले सितारों जैसे बेशुमार थे। 63जिस तरह पहले
रब ख़ुशी से तुम्हें कामयाबी देता और तुम्हारी
तादाद बढ़ाता था उसी तरह अब वह तुम्हें बरबाद
और तबाह करने में ख़ुशी महसूस करेगा। तुम्हें
ज़बरदस्ती उस मुल्क से निकाला जाएगा जिस
पर तू इस वक़्त दाख़िल होकर क़ब्ज़ा करनेवाला
है। 64तब रब तुझे दुनिया के एक सिरे से लेकर
दूसरे सिरे तक तमाम क़ौमों में मुंतशिर कर देगा।
वहाँ तू दीगर माबूदों की पूजा करेगा, ऐसे देवताओं
की जिनसे न तू और न तेरे बापदादा वाक़िफ़ थे।
65उन ममालिक में भी न तू आरामो-सुकून
पाएगा, न तेरे पाँव जम जाएंगे। रब होने देगा कि
तेरा दिल थरथराता रहेगा, तेरी आँखें परेशानी के
बाइस धुँधला जाएँगी और तेरी जान से उम्मीद
की हर किरण जाती रहेगी। 66तेरी जान हर वक़्त
ख़तरे में होगी और तू दिन-रात दहशत खाते
हुए मरने की तवक़्क़ो करेगा। 67सुबह उठकर तू
कहेगा, 'काश शाम हो!' और शाम के वक़्त,
'काश सुबह हो!' क्योंकि जो कुछ तू देखेगा
उससे तेरे दिल को दहशत घेर लेगी।
68रब तुझे जहाज़ों में बिठाकर मिसर वापस
ले जाएगा अगरचे मैंने कहा था कि तू उसे
दुबारा कभी नहीं देखेगा। वहाँ पहुँचकर तुम अपने
दुश्मनों से बात करके अपने आपको ग़ुलाम के
तौर पर बेचने की कोशिश करोगे, लेकिन कोई
भी तुम्हें ख़रीदना नहीं चाहेगा।"

मोआब में रब के साथ नया अहद

29 जब इसराईली मोआब में थे तो रब ने
मूसा को हुक्म दिया कि इसराईलियों
के साथ एक और अहद बाँधे। यह उस अहद के
अलावा था जो रब होरिब यानी सीना पर उनके
साथ बाँध चुका था। 2इस सिलसिले में मूसा ने
तमाम इसराईलियों को बुलाकर कहा, "तुमने
ख़ुद देखा कि रब ने मिसर के बादशाह फ़िरौन,
उसके मुलाज़िमों और पूरे मुल्क के साथ क्या
कुछ किया। 3तुमने अपनी आँखों से वह बड़ी
आज़माइशें, इलाही निशान और मोजिज़े देखे
जिनके ज़रीए रब ने अपनी क़ुदरत का इज़हार
किया।
4मगर अफ़सोस, आज तक रब ने तुम्हें न
समझदार दिल अता किया, न आँखें जो देख सकें
या कान जो सुन सकें। 5रेगिस्तान में मैंने 40
साल तक तुम्हारी राहनुमाई की। इस दौरान न
तुम्हारे कपड़े फटे और न तुम्हारे जूते घिसे। 6न
तुम्हारे पास रोटी थी, न मै या मै जैसी कोई और
चीज़। तो भी रब ने तुम्हारी ज़रूरियात पूरी कीं
ताकि तुम सीख लो कि वही रब तुम्हारा ख़ुदा है।
7फिर हम यहाँ आए तो हसबोन का बादशाह
सीहोन और बसन का बादशाह ओज निकलकर
हमसे लड़ने आए। लेकिन हमने उन्हें शिकस्त दी।
8उनके मुल्क पर क़ब्ज़ा करके हमने उसे रूबिन,
जद और मनस्सी के आधे क़बीले को मीरास में
दिया। 9अब एहतियात से इस अहद की तमाम
शरायत पूरी करो ताकि तुम हर बात में कामयाब
हो।
10इस वक़्त तुम सब रब अपने ख़ुदा के
हुज़ूर खड़े हो, तुम्हारे क़बीलों के सरदार, तुम्हारे
बुज़ुर्ग, निगहबान, मर्द, 11औरतें और बच्चे। तेरे
दरमियान रहनेवाले परदेसी भी लकड़हारों से
लेकर पानी भरनेवालों तक तेरे साथ यहाँ हाज़िर
हैं। 12तू इसलिए यहाँ जमा हुआ है कि रब अपने
ख़ुदा का वह अहद तसलीम करे जो वह आज
क़सम खाकर तेरे साथ बाँध रहा है। 13इससे वह
आज इसकी तसदीक़ कर रहा है कि तू उस की
क़ौम और वह तेरा ख़ुदा है यानी वही बात जिसका
वादा उसने तुझसे और तेरे बापदादा इब्राहीम,
इसहाक़ और याक़ूब से किया था। 14-15लेकिन
मैं यह अहद क़सम खाकर न सिर्फ़ तुम्हारे साथ
जो हाज़िर हो बाँध रहा हूँ बल्कि तुम्हारी आनेवाली
नसलों के साथ भी।

बुतपरस्ती की सज़ा

16तुम ख़ुद जानते हो कि हम मिसर में किस
तरह ज़िंदगी गुज़ारते थे। यह भी तुम्हें याद है कि
हम किस तरह मुख़्तलिफ़ ममालिक में से गुज़रते
हुए यहाँ तक पहुँचे। 17तुमने उनके नफ़रतअंगेज़
बुत देखे जो लकड़ी, पत्थर, चाँदी और सोने के थे।
18ध्यान दो कि यहाँ मौजूद कोई भी मर्द, औरत,
कुंबा या क़बीला रब अपने ख़ुदा से हटकर दूसरी
क़ौमों के देवताओं की पूजा न करे। ऐसा न हो कि
तुम्हारे दरमियान कोई जड़ फूटकर ज़हरीला और
कड़वा फल लाए।

19तुम सबने वह लानतें सुनी हैं जो रब
नाफ़रमानों पर भेजेगा। तो भी हो सकता है कि
कोई अपने आपको रब की बरकत का वारिस
समझकर कहे, 'बेशक मैं अपनी ग़लत राहों से
हटने के लिए तैयार नहीं हूँ, लेकिन कोई बात
नहीं। मैं महफ़ूज़ रहूँगा।' ख़बरदार, ऐसी हरकत
से वह न सिर्फ़ अपने ऊपर बल्कि पूरे मुल्क पर
तबाही लाएगा।[a] 20रब कभी भी उसे मुआफ़
करने पर आमादा नहीं होगा बल्कि वह उसे
अपने ग़ज़ब और ग़ैरत का निशाना बनाएगा। इस
किताब में दर्ज तमाम लानतें उस पर आएँगी, और
रब दुनिया से उसका नामो-निशान मिटा देगा।
21वह उसे पूरी जमात से अलग करके उस पर
अहद की वह तमाम लानतें लाएगा जो शरीअत
की इस किताब में लिखी हुई हैं।

22मुस्तक़बिल में तुम्हारी औलाद और दूर-
दराज़ ममालिक से आनेवाले मुसाफ़िर उन
मुसीबतों और अमराज़ का असर देखेंगे जिनसे
रब ने मुल्क को तबाह किया होगा। 23चारों तरफ़
ज़मीन झुलसी हुई और गंधक और नमक से ढकी
हुई नज़र आएगी। बीज उसमें बोया नहीं जाएगा,
क्योंकि ख़ुदरौ पौदों तक कुछ नहीं उगेगा। तुम्हारा
मुल्क सदूम, अमूरा, अदमा और ज़बोईम की
मानिंद होगा जिनको रब ने अपने ग़ज़ब में तबाह
किया। 24तमाम क़ौमें पूछेंगी, 'रब ने इस मुल्क
के साथ ऐसा क्यों किया? उसके सख़्त ग़ज़ब की
क्या वजह थी?' 25उन्हें जवाब मिलेगा, 'वजह
यह है कि इस मुल्क के बाशिंदों ने रब अपने
बापदादा के ख़ुदा का अहद तोड़ दिया जो उसने
उन्हें मिसर से निकालते वक़्त उनसे बाँधा था।
26उन्होंने जाकर दीगर माबूदों की ख़िदमत की
और उन्हें सिजदा किया जिनसे वह पहले वाक़िफ़
नहीं थे और जो रब ने उन्हें नहीं दिए थे। 27इसी
लिए उसका ग़ज़ब इस मुल्क पर नाज़िल हुआ
और वह उस पर वह तमाम लानतें लाया जिनका
ज़िक्र इस किताब में है। 28वह इतना ग़ुस्से हुआ
कि उसने उन्हें जड़ से उखाड़कर एक अजनबी
मुल्क में फेंक दिया जहाँ वह आज तक आबाद
हैं।'

29बहुत कुछ पोशीदा है, और सिर्फ़ रब हमारा
ख़ुदा उसका इल्म रखता है। लेकिन उसने हम
पर अपनी शरीअत का इनकिशाफ़ कर दिया है।
लाज़िम है कि हम और हमारी औलाद उसके
फ़रमाँबरदार रहें।

तौबा के मुसबत नतीजे

30 मैंने तुझे बताया है कि तेरे लिए क्या
कुछ बरकत का और क्या कुछ लानत
का बाइस है। जब रब तेरा ख़ुदा तुझे तेरी ग़लत
हरकतों के सबब से मुख़्तलिफ़ क़ौमों में मुंतशिर
कर देगा तो तू मेरी बातें मान जाएगा। 2तब तू
और तेरी औलाद रब अपने ख़ुदा के पास वापस
आएँगे और पूरे दिलो-जान से उस की सुनकर उन
तमाम अहकाम पर अमल करेंगे जो मैं आज तुझे
दे रहा हूँ। 3फिर रब तेरा ख़ुदा तुझे बहाल करेगा
और तुझ पर रहम करके तुझे उन तमाम क़ौमों से
निकालकर जमा करेगा जिनमें उसने तुझे मुंतशिर
कर दिया था। 4हाँ, रब तेरा ख़ुदा तुझे हर जगह
से जमा करके वापस लाएगा, चाहे तू सबसे दूर
मुल्क में क्यों न पड़ा हो। 5वह तुझे तेरे बापदादा
के मुल्क में लाएगा, और तू उस पर क़ब्ज़ा करेगा।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : सेराब ज़मीन ख़ुश्क ज़मीन के साथ तबाह हो जाएगी।

फिर वह तुझे तेरे बापदादा से ज़्यादा कामयाबी
बख़्शेगा, और तेरी तादाद ज़्यादा बढ़ाएगा।
6ख़तना रब की क़ौम का ज़ाहिरी निशान है।
लेकिन उस वक़्त रब तेरा ख़ुदा तेरे और तेरी
औलाद का बातिनी ख़तना करेगा ताकि तू उसे
पूरे दिलो-जान से प्यार करे और जीता रहे। 7जो
लानतें रब तेरा ख़ुदा तुझ पर लाया था उन्हें
वह अब तेरे दुश्मनों पर आने देगा, उन पर जो
तुझसे नफ़रत रखते और तुझे ईज़ा पहुँचाते हैं।
8क्योंकि तू दुबारा रब की सुनेगा और उसके
तमाम अहकाम की पैरवी करेगा जो मैं तुझे आज
दे रहा हूँ। 9जो कुछ भी तू करेगा उसमें रब
तुझे बड़ी कामयाबी बख़्शेगा, और तुझे कसरत
की औलाद, मवेशी और फ़सलें हासिल होंगी।
क्योंकि जिस तरह वह तेरे बापदादा को कामयाबी
देने में ख़ुशी महसूस करता था उसी तरह वह तुझे
भी कामयाबी देने में ख़ुशी महसूस करेगा।
10शर्त सिर्फ़ यह है कि तू रब अपने ख़ुदा की
सुने, शरीअत में दर्ज उसके अहकाम पर अमल
करे और पूरे दिलो-जान से उस की तरफ़ रुजू
लाए।
11जो अहकाम मैं आज तुझे दे रहा हूँ न वह हद
से ज़्यादा मुश्किल हैं, न तेरी पहुँच से बाहर। 12वह
आसमान पर नहीं हैं कि तू कहे, 'कौन आसमान
पर चढ़कर हमारे लिए यह अहकाम नीचे ले आए
ताकि हम उन्हें सुन सकें और उन पर अमल कर
सकें?' 13वह समुंदर के पार भी नहीं हैं कि तू
कहे, 'कौन समुंदर को पार करके हमारे लिए यह
अहकाम लाएगा ताकि हम उन्हें सुन सकें और
उन पर अमल कर सकें?' 14क्योंकि यह कलाम
तेरे निहायत क़रीब बल्कि तेरे मुँह और दिल में
मौजूद है। चुनाँचे उस पर अमल करने में कोई भी
रुकावट नहीं है।

ज़िंदगी या मौत का चुनाव

15देख, आज मैं तुझे दो रास्ते पेश करता हूँ।
एक ज़िंदगी और ख़ुशहाली की तरफ़ ले जाता
है जबकि दूसरा मौत और हलाकत की तरफ़।
16आज मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि रब अपने ख़ुदा
को प्यार कर, उस की राहों पर चल और उसके
अहकाम के ताबे रह। फिर तू ज़िंदा रहकर तरक़्क़ी
करेगा, और रब तेरा ख़ुदा तुझे उस मुल्क में
बरकत देगा जिसमें तू दाख़िल होनेवाला है।
17लेकिन अगर तेरा दिल इस रास्ते से हटकर
नाफ़रमानी करे तो बरकत की तवक़्क़ो न कर।
अगर तू आज़माइश में पड़कर दीगर माबूदों को
सिजदा और उनकी ख़िदमत करे 18तो तुम ज़रूर
तबाह हो जाओगे। आज मैं एलान करता हूँ कि
इस सूरत में तुम ज़्यादा देर तक उस मुल्क में
आबाद नहीं रहोगे जिसमें तू दरियाए-यरदन को
पार करके दाख़िल होगा ताकि उस पर क़ब्ज़ा
करे।
19आज आसमान और ज़मीन तुम्हारे ख़िलाफ़
मेरे गवाह हैं कि मैंने तुम्हें ज़िंदगी और बरकतों का
रास्ता और मौत और लानतों का रास्ता पेश किया
है। अब ज़िंदगी का रास्ता इख़्तियार कर ताकि तू
और तेरी औलाद ज़िंदा रहे। 20रब अपने ख़ुदा
को प्यार कर, उस की सुन और उससे लिपटा
रह। क्योंकि वही तेरी ज़िंदगी है और वही करेगा
कि तू देर तक उस मुल्क में जीता रहेगा जिसका
वादा उसने क़सम खाकर तेरे बापदादा इब्राहीम,
इसहाक़ और याक़ूब से किया था।"

यशुअ को मूसा की जगह मुक़र्रर किया जाता है

31 मूसा ने जाकर तमाम इसराई-
लियों से मज़ीद कहा,
2"अब मैं 120 साल का हो चुका हूँ। मेरा
चलना-फिरना मुश्किल हो गया है। और वैसे भी
रब ने मुझे बताया है, 'तू दरियाए-यरदन को पार
नहीं करेगा।' 3रब तेरा ख़ुदा ख़ुद तेरे आगे आगे
जाकर यरदन को पार करेगा। वही तेरे आगे आगे
इन क़ौमों को तबाह करेगा ताकि तू उनके मुल्क
पर क़ब्ज़ा कर सके। दरिया को पार करते वक़्त
यशुअ तेरे आगे चलेगा जिस तरह रब ने फ़रमाया
है। 4रब वहाँ के लोगों को बिलकुल उसी तरह

तबाह करेगा जिस तरह वह अमोरियों को उनके बादशाहों सीहोन और ओज समेत तबाह कर चुका है। 5रब तुम्हें उन पर ग़ालिब आने देगा। उस वक़्त तुम्हें उनके साथ वैसा सुलूक करना है जैसा मैंने तुम्हें बताया है। 6मज़बूत और दिलेर हो। उनसे ख़ौफ़ न खाओ, क्योंकि रब तेरा ख़ुदा तेरे साथ चलता है। वह तुझे कभी नहीं छोड़ेगा, तुझे कभी तर्क नहीं करेगा।”

7इसके बाद मूसा ने तमाम इसराईलियों के सामने यशुअ को बुलाया और उससे कहा, “मज़बूत और दिलेर हो, क्योंकि तू इस क़ौम को उस मुल्क में ले जाएगा जिसका वादा रब ने क़सम खाकर उनके बापदादा से किया था। लाज़िम है कि तू ही उसे तक़सीम करके हर क़बीले को उसका मौरूसी इलाक़ा दे। 8रब ख़ुद तेरे आगे आगे चलते हुए तेरे साथ होगा। वह तुझे कभी नहीं छोड़ेगा, तुझे कभी नहीं तर्क करेगा। ख़ौफ़ न खाना, न घबराना।”

हर सात साल के बाद शरीअत की तिलावत

9मूसा ने यह पूरी शरीअत लिखकर इसराईल के तमाम बुज़ुर्गों और लावी के क़बीले के उन इमामों के सुपुर्द की जो सफ़र करते वक़्त अहद का संदूक़ उठाकर ले चलते थे। उसने उनसे कहा, 10-11“हर सात साल के बाद इस शरीअत की तिलावत करना, यानी बहाली के साल में जब तमाम क़र्ज़ मनसूख़ किए जाते हैं। तिलावत उस वक़्त करना है जब इसराईली झोंपड़ियों की ईद के लिए रब अपने ख़ुदा के सामने उस जगह हाज़िर होंगे जो वह मक़दिस के लिए चुनेगा। 12तमाम लोगों को मर्दों, औरतों, बच्चों और परदेसियों समेत वहाँ जमा करना ताकि वह सुनकर सीखें, रब तुम्हारे ख़ुदा का ख़ौफ़ मानें और एहतियात से इस शरीअत की बातों पर अमल करें। 13लाज़िम है कि उनकी औलाद जो इस शरीअत से नावाक़िफ़ है इसे सुने और सीखे ताकि उम्र-भर उस मुल्क में रब तुम्हारे ख़ुदा का ख़ौफ़ माने जिस पर तुम दरियाए-यरदन को पार करके क़ब्ज़ा करोगे।”

रब मूसा को आख़िरी हिदायात देता है

14रब ने मूसा से कहा, “अब तेरी मौत क़रीब है। यशुअ को बुलाकर उसके साथ मुलाक़ात के ख़ैमे में हाज़िर हो जा। वहाँ मैं उसे उस की ज़िम्मेदारियाँ सौंपूँगा।”

मूसा और यशुअ आकर ख़ैमे में हाज़िर हुए 15तो रब ख़ैमे के दरवाज़े पर बादल के सतून में ज़ाहिर हुआ। 16उसने मूसा से कहा, “तू जल्द ही मरकर अपने बापदादा से जा मिलेगा। लेकिन यह क़ौम मुल्क में दाख़िल होने पर ज़िना करके उसके अजनबी देवताओं की पैरवी करने लग जाएगी। वह मुझे तर्क करके वह अहद तोड़ देगी जो मैंने उनके साथ बाँधा है। 17फिर मेरा ग़ज़ब उन पर भड़केगा। मैं उन्हें छोड़कर अपना चेहरा उनसे छुपा लूँगा। तब उन्हें कच्चा चबा लिया जाएगा और बहुत सारी हैबतनाक मुसीबतें उन पर आएँगी। उस वक़्त वह कहेंगे, ‘क्या यह मुसीबतें इस वजह से हम पर नहीं आईं कि रब हमारे साथ नहीं है?’ 18और ऐसा ही होगा। मैं ज़रूर अपना चेहरा उनसे छुपाए रखूँगा, क्योंकि दीगर माबूदों के पीछे चलने से उन्होंने एक निहायत शरीर क़दम उठाया होगा।

19अब ज़ैल का गीत लिखकर इसराईलियों को यों सिखाओ कि वह ज़बानी याद रहे और मेरे लिए उनके ख़िलाफ़ गवाही दिया करे। 20क्योंकि मैं उन्हें उस मुल्क में ले जा रहा हूँ जिसका वादा मैंने क़सम खाकर उनके बापदादा से किया था, उस मुल्क में जिसमें दूध और शहद की कसरत है। वहाँ इतनी ख़ुराक होगी कि उनकी भूक जाती रहेगी और वह मोटे हो जाएंगे। लेकिन फिर वह दीगर माबूदों के पीछे लग जाएंगे और उनकी ख़िदमत करेंगे। वह मुझे रद्द करेंगे और मेरा अहद तोड़ेंगे। 21नतीजे में उन पर बहुत सारी हैबतनाक मुसीबतें आएँगी। फिर यह गीत जो उनकी औलाद को याद रहेगा उनके ख़िलाफ़ गवाही देगा। क्योंकि गो मैं उन्हें उस मुल्क में ले जा रहा हूँ जिसका वादा मैंने

क़सम खाकर उनसे किया था तो भी मैं जानता हूँ कि वह अब तक किस तरह की सोच रखते हैं।”

22मूसा ने उसी दिन यह गीत लिखकर इसराईलियों को सिखाया।

23फिर रब ने यशुअ बिन नून से कहा, “मज़बूत और दिलेर हो, क्योंकि तू इसराईलियों को उस मुल्क में ले जाएगा जिसका वादा मैंने क़सम खाकर उनसे किया था। मैं ख़ुद तेरे साथ हूँगा।”

24जब मूसा ने पूरी शरीअत को किताब में लिख लिया 25तो वह उन लावियों से मुख़ातिब हुआ जो सफ़र करते वक़्त अहद का संदूक़ उठाकर ले जाते थे। 26“शरीअत की यह किताब लेकर रब अपने ख़ुदा के अहद के संदूक़ के पास रखना। वहाँ वह पड़ी रहे और तेरे ख़िलाफ़ गवाही देती रहे। 27क्योंकि मैं ख़ूब जानता हूँ कि तू कितना सरकश और हटधर्म है। मेरी मौजूदगी में भी तुमने कितनी दफ़ा रब से सरकशी की। तो फिर मेरे मरने के बाद तुम क्या कुछ नहीं करोगे! 28अब मेरे सामने अपने क़बीलों के तमाम बुज़ुर्गों और निगहबानों को जमा करो ताकि वह ख़ुद मेरी यह बातें सुनें और आसमान और ज़मीन उनके ख़िलाफ़ गवाह हों। 29क्योंकि मुझे मालूम है कि मेरी मौत के बाद तुम ज़रूर बिगड़ जाओगे और उस रास्ते से हट जाओगे जिस पर चलने की मैंने तुम्हें ताकीद की है। आख़िरकार तुम पर मुसीबत आएगी, क्योंकि तुम वह कुछ करोगे जो रब को बुरा लगता है, तुम अपने हाथों के काम से उसे ग़ुस्सा दिलाओगे।”

30फिर मूसा ने इसराईल की तमाम जमात के सामने यह गीत शुरू से लेकर आख़िर तक पेश किया,

मूसा का गीत

32 ऐ आसमान, मेरी बात पर ग़ौर कर!
ऐ ज़मीन, मेरा गीत सुन!

2मेरी तालीम बूँदा-बाँदी जैसी हो, मेरी बात शबनम की तरह ज़मीन पर पड़ जाए। वह बारिश की मानिंद हो जो हरियाली पर बरसती है।

3मैं रब का नाम पुकारूँगा। हमारे ख़ुदा की अज़मत की तमजीद करो!

4वह चट्टान है, और उसका काम कामिल है। उस की तमाम राहें रास्त हैं। वह वफ़ादार ख़ुदा है जिसमें फ़रेब नहीं है बल्कि जो आदिल और दियानतदार है।

5एक टेढ़ी और कजरौ नसल ने उसका गुनाह किया। वह उसके फ़रज़ंद नहीं बल्कि दाग़ साबित हुए हैं।

6ऐ मेरी अहमक़ और बेसमझ क़ौम, क्या तुम्हारा रब से ऐसा रवैया ठीक है? वह तो तुम्हारा बाप और ख़ालिक़ है, जिसने तुम्हें बनाया और क़ायम किया।

7क़दीम ज़माने को याद करना, माज़ी की नसलों पर तवज्जुह देना। अपने बाप से पूछना तो वह तुझे बता देगा, अपने बुज़ुर्गों से पता करना तो वह तुझे इत्तला देंगे।

8जब अल्लाह तआला ने हर क़ौम को उसका अपना अपना मौरूसी इलाक़ा देकर तमाम इनसानों को मुख़्तलिफ़ गुरोहों में अलग कर दिया तो उसने क़ौमों की सरहदें इसराईलियों की तादाद के मुताबिक़ मुक़र्रर कीं।

9क्योंकि रब का हिस्सा उस की क़ौम है, याक़ूब को उसने मीरास में पाया है।

10यह क़ौम उसे रेगिस्तान में मिल गई, वीरानो-सुनसान बयाबान में जहाँ चारों तरफ़ हौलनाक आवाज़ें गूँजती थीं। उसने उसे घेरकर उस की देख-भाल की, उसे अपनी आँख की पुतली की तरह बचाए रखा।

11जब उक़ाब अपने बच्चों को उड़ना सिखाता है तो वह उन्हें घोंसले से निकालकर उनके साथ उड़ता है। अगर वह गिर भी जाएँ तो वह हाज़िर है और उनके नीचे अपने परों को फैलाकर उन्हें ज़मीन से टकरा जाने से बचाता है। रब का इसराईल के साथ यही सुलूक था।

12रब ने अकेले ही उस की राहनुमाई की।
किसी अजनबी माबूद ने शिरकत न की।

13उसने उसे रथ पर सवार करके मुल्क की
बुलंदियों पर से गुज़रने दिया और उसे खेत का
फल खिलाकर उसे चट्टान से शहद और सख़्त
पत्थर से ज़ैतून का तेल मुहैया किया।[a]
14उसने उसे गाय की लस्सी और भेड़-बकरी
का दूध चीदा भेड़ के बच्चों समेत खिलाया और
उसे बसन के मोटे-ताज़े मेंढे, बकरे और बेहतरीन
अनाज अता किया। उस वक़्त तू आला अंगूर की
उम्दा मै से लुत्फ़अंदोज़ हुआ।

15लेकिन जब यसूरून[b] मोटा हो गया तो
वह दोलत्तियाँ झाड़ने लगा। जब वह हलक़ तक
भरकर तनोमंद और फ़रबा हुआ तो उसने अपने
ख़ुदा और ख़ालिक़ को रद्द किया, उसने अपनी
नजात की चट्टान को हक़ीर जाना।
16अपने अजनबी माबूदों से उन्होंने उस की
ग़ैरत को जोश दिलाया, अपने घिनौने बुतों से उसे
ग़ुस्सा दिलाया।
17उन्होंने बदरूहों को क़ुरबानियाँ पेश कीं जो
ख़ुदा नहीं हैं, ऐसे माबूदों को जिनसे न वह और न
उनके बापदादा वाक़िफ़ थे, क्योंकि वह थोड़ी देर
पहले वुजूद में आए थे।

18तू वह चट्टान भूल गया जिसने तुझे पैदा
किया, वही ख़ुदा जिसने तुझे जन्म दिया।
19रब ने यह देखकर उन्हें रद्द किया, क्योंकि
वह अपने बेटे-बेटियों से नाराज़ था।
20उसने कहा, "मैं अपना चेहरा उनसे छुपा
लूँगा। फिर पता लगेगा कि मेरे बग़ैर उनका क्या
अंजाम होता है। क्योंकि वह सरासर बिगड़ गए
हैं, उनमें वफ़ादारी पाई नहीं जाती।
21उन्होंने उस की परस्तिश से जो ख़ुदा नहीं है
मेरी ग़ैरत को जोश दिलाया, अपने बेकार बुतों से
मुझे ग़ुस्सा दिलाया है। चुनाँचे मैं ख़ुद ही उन्हें ग़ैरत
दिलाऊँगा, एक ऐसी क़ौम के ज़रीए जो हक़ीक़त
में क़ौम नहीं है। एक नादान क़ौम के ज़रीए मैं उन्हें
ग़ुस्सा दिलाऊँगा।
22क्योंकि मेरे ग़ुस्से से आग भड़क उठी है जो
पाताल की तह तक पहुँचेगी और ज़मीन और उस
की पैदावार हड़प करके पहाड़ों की बुनियादों को
जला देगी।

23मैं उन पर मुसीबत पर मुसीबत आने दूँगा
और अपने तमाम तीर उन पर चलाऊँगा।
24भूक के मारे उनकी ताक़त जाती रहेगी,
और वह बुख़ार और वबाई अमराज़ का लुक़मा
बनेंगे। मैं उनके ख़िलाफ़ फाड़नेवाले जानवर और
ज़हरीले साँप भेज दूँगा।
25बाहर तलवार उन्हें बेऔलाद कर देगी, और
घर में दहशत फैल जाएगी। शीरख़ार बच्चे,
नौजवान लड़के-लड़कियाँ और बुज़ुर्ग सब उस की
गिरिफ़्त में आ जाएंगे।

26मुझे कहना चाहिए था कि मैं उन्हें चकनाचूर
करके इनसानों में से उनका नामो-निशान मिटा
दूँगा।
27लेकिन अंदेशा था कि दुश्मन ग़लत मतलब
निकालकर कहे, 'हम ख़ुद उन पर ग़ालिब आए,
इसमें रब का हाथ नहीं है'।"
28क्योंकि यह क़ौम बेसमझ और हिकमत से
ख़ाली है।
29काश वह दानिशमंद होकर यह बात समझें!
काश वह जान लें कि उनका क्या अंजाम है।
30क्योंकि दुश्मन का एक आदमी किस तरह
हज़ार इसराईलियों का ताक़्क़ुब कर सकता है?
उसके दो मर्द किस तरह दस हज़ार इसराईलियों
को भगा सकते हैं? वजह सिर्फ़ यह है कि उनकी
चट्टान ने उन्हें दुश्मन के हाथ बेच दिया। रब ने ख़ुद
उन्हें दुश्मन के क़ब्ज़े में कर दिया।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : चूसने दिया।

[b]यानी इसराईल।

31हमारे दुश्मन ख़ुद मानते हैं कि इसराईल की
चट्टान हमारी चट्टान जैसी नहीं है।
32उनकी बेल तो सदूम की बेल और अमूरा के
बाग़ से है, उनके अंगूर ज़हरीले और उनके गुच्छे
कड़वे हैं।
33उनकी मै साँपों का मोहलक ज़हर है।

34रब फ़रमाता है, "क्या मैंने इन बातों पर मुहर
लगाकर उन्हें अपने ख़ज़ाने में महफ़ूज़ नहीं रखा?
35इंतक़ाम लेना मेरा ही काम है, मैं ही
बदला लूँगा। एक वक़्त आएगा कि उनका पाँव
फिसलेगा। क्योंकि उनकी तबाही का दिन क़रीब
है, उनका अंजाम जल्द ही आनेवाला है।"

36यक़ीनन रब अपनी क़ौम का इनसाफ़
करेगा। वह अपने ख़ादिमों पर तरस खाएगा जब
देखेगा कि उनकी ताक़त जाती रही है और कोई
नहीं बचा।
37उस वक़्त वह पूछेगा, "अब उनके देवता
कहाँ हैं, वह चट्टान जिसकी पनाह उन्होंने ली?
38वह देवता कहाँ हैं जिन्होंने उनके बेहतरीन
जानवर खाए और उनकी मै की नज़रें पी लीं। वह
तुम्हारी मदद के लिए उठें और तुम्हें पनाह दें।
39अब जान लो कि मैं और सिर्फ़ मैं ख़ुदा हूँ।
मेरे सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है। मैं ही हलाक
करता और मैं ही ज़िंदा कर देता हूँ। मैं ही ज़ख़मी
करता और मैं ही शफ़ा देता हूँ। कोई मेरे हाथ से
नहीं बचा सकता।

40मैं अपना हाथ आसमान की तरफ़ उठाकर
एलान करता हूँ कि मेरी अबदी हयात की क़सम,
41जब मैं अपनी चमकती हुई तलवार को
तेज़ करके अदालत के लिए पकड़ लूँगा तो
अपने मुख़ालिफ़ों से इंतक़ाम और अपने नफ़रत
करनेवालों से बदला लूँगा।
42मेरे तीर ख़ून पी पीकर नशे में धुत हो जाएंगे,
मेरी तलवार मक़तूलों और क़ैदियों के ख़ून और
दुश्मन के सरदारों के सरों से सेर हो जाएगी।"

43ऐ दीगर क़ौमो, उस की उम्मत के साथ ख़ुशी
मनाओ! क्योंकि वह अपने ख़ादिमों के ख़ून का
इंतक़ाम लेगा। वह अपने मुख़ालिफ़ों से बदला
लेकर अपने मुल्क और क़ौम का कफ़्फ़ारा देगा।

44मूसा और यशुअ बिन नून ने आकर
इसराईलियों को यह पूरा गीत सुनाया।
45-46फिर मूसा ने उनसे कहा, "आज मैंने तुम्हें
इन तमाम बातों से आगाह किया है। लाज़िम है
कि वह तुम्हारे दिलों में बैठ जाएँ। अपनी औलाद
को भी हुक्म दो कि एहतियात से इस शरीअत
की तमाम बातों पर अमल करे। 47यह ख़ाली
बातें नहीं बल्कि तुम्हारी ज़िंदगी का सरचश्मा हैं।
इनके मुताबिक़ चलने के बाइस तुम देर तक उस
मुल्क में जीते रहोगे जिस पर तुम दरियाए-यरदन
को पार करके क़ब्ज़ा करनेवाले हो।"

मूसा का नबू पहाड़ पर इंतक़ाल

48उसी दिन रब ने मूसा से कहा, 49"पहा-
ड़ी सिलसिले अबारीम के पहाड़ नबू पर चढ़ जा
जो यरीहू के सामने लेकिन यरदन के मशरिक़ी
किनारे पर यानी मोआब के मुल्क में है। वहाँ
से कनान पर नज़र डाल, उस मुल्क पर जो
मैं इसराईलियों को दे रहा हूँ। 50इसके बाद
तू वहाँ मरकर अपने बापदादा से जा मिलेगा,
बिलकुल उसी तरह जिस तरह तेरा भाई हारून
होर पहाड़ पर मरकर अपने बापदादा से जा मिला
है। 51क्योंकि तुम दोनों इसराईलियों के रूबरू
बेवफ़ा हुए। जब तुम दश्ते-सीन में क़ादिस के
क़रीब थे और मरीबा के चश्मे पर इसराईलियों
के सामने खड़े थे तो तुमने मेरी क़ुद्दूसियत क़ायम
न रखी। 52इस सबब से तू वह मुल्क सिर्फ़ दूर से
देखेगा जो मैं इसराईलियों को दे रहा हूँ। तू ख़ुद
उसमें दाख़िल नहीं होगा।"

मूसा क़बीलों को बरकत देता है

33 मरने से पेशतर मर्दे-ख़ुदा मूसा ने
इसराईलियों को बरकत देकर 2कहा,

“रब सीना से आया, सईर[a] से उसका नूर
उन पर तुलू हुआ। वह कोहे-फ़ारान से रौशनी
फैलाकर रिबबोत-क़ादिस से आया, वह अपने
जुनूबी इलाक़े से रवाना होकर उनकी ख़ातिर
पहाड़ी ढलानों के पास आया।
3यक़ीनन वह क़ौमों से मुहब्बत करता है,
तमाम मुक़द्दसीन तेरे हाथ में हैं। वह तेरे पाँवों के
सामने झुककर तुझसे हिदायत पाते हैं।
4मूसा ने हमें शरीअत दी यानी वह चीज़ जो
याक़ूब की जमात की मौरूसी मिलकियत है।
5इसराईल के राहनुमा अपने क़बीलों समेत
जमा हुए तो रब यसूरून[b] का बादशाह बन गया।

6रूबिन की बरकत :
रूबिन मर न जाए बल्कि जीता रहे। वह तादाद
में बढ़ जाए।

7यहूदाह की बरकत :
ऐ रब, यहूदाह की पुकार सुनकर उसे दुबारा
उस की क़ौम में शामिल कर। उसके हाथ उसके
लिए लड़ें। मुख़ालिफ़ों का सामना करते वक़्त उस
की मदद कर।

8लावी की बरकत :
तेरी मरज़ी मालूम करने के क़ुरे बनाम ऊरीम
और तुम्मीम तेरे वफ़ादार ख़ादिम लावी के पास
होते हैं। तूने उसे मस्सा में आज़माया और मरीबा
में उससे लड़ा। 9उसने तेरा कलाम सँभालकर तेरा
अहद क़ायम रखा, यहाँ तक कि उसने न अपने
माँ-बाप का, न अपने सगे भाइयों या बच्चों का
लिहाज़ किया।
10वह याक़ूब को तेरी हिदायात और इसराईल
को तेरी शरीअत सिखाकर तेरे सामने बख़ूर और
तेरी क़ुरबानगाह पर भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ
चढ़ाता है।
11ऐ रब, उस की ताक़त को बढ़ाकर उसके
हाथों का काम पसंद कर। उसके मुख़ालिफ़ों की
कमर तोड़ और उससे नफ़रत रखनेवालों को ऐसा
मार कि आइंदा कभी न उठें।

12बिनयमीन की बरकत :
बिनयमीन रब को प्यारा है। वह सलामती से
उसके पास रहता है, क्योंकि रब दिन-रात उसे
पनाह देता है। बिनयमीन उस की पहाड़ी ढलानों
के दरमियान महफ़ूज़ रहता है।

13यूसुफ़ की बरकत :
रब उस की ज़मीन को बरकत दे। आसमान से
क़ीमती ओस टपके और ज़मीन के नीचे से चश्मे
फूट निकलें।
14यूसुफ़ को सूरज की बेहतरीन पैदावार और
हर महीने का लज़ीज़तरीन फल हासिल हो।
15उसे क़दीम पहाड़ों और अबदी वादियों की
बेहतरीन चीज़ों से नवाज़ा जाए।
16ज़मीन के तमाम ज़ख़ीरे उसके लिए खुल
जाएँ। वह उसको पसंद हो जो जलती हुई झाड़ी
में सुकूनत करता था। यह तमाम बरकतें यूसुफ़
के सर पर ठहरें, उसके सर पर जो अपने भाइयों
में शहज़ादा है।
17यूसुफ़ साँड के पहलौठे जैसा अज़ीम है,
और उसके सींग जंगली बैल के सींग हैं जिनसे
वह दुनिया की इंतहा तक सब क़ौमों को मारेगा।
इफ़राईम के बेशुमार अफ़राद ऐसे ही हैं, मनस्सी
के हज़ारों अफ़राद ऐसे ही हैं।

[a] अदोम।
[b] इसराईल।

18ज़बूलून और इशकार की बरकत :

ऐ ज़बूलून, घर से निकलते वक़्त ख़ुशी मना।
ऐ इशकार, अपने ख़ैमों में रहते हुए ख़ुश हो।
19वह दीगर क़ौमों को अपने पहाड़ पर आने
की दावत देंगे और वहाँ रास्ती की क़ुरबानियाँ पेश
करेंगे। वह समुंदर की कसरत और समुंदर की रेत
में छुपे हुए ख़ज़ानों को जज़ब कर लेंगे।

20जद की बरकत :

मुबारक है वह जो जद का इलाक़ा वसी कर दे।
जद शेरबबर की तरह दबककर किसी का बाज़ू
या सर फाड़ डालने के लिए तैयार रहता है।
21उसने अपने लिए सबसे अच्छी ज़मीन चुन
ली, राहनुमा का हिस्सा उसी के लिए महफ़ूज़
रखा गया। जब क़ौम के राहनुमा जमा हुए तो
उसने रब की रास्त मरज़ी पूरी की और इसराईल
के बारे में उसके फ़ैसले अमल में लाया।

22दान की बरकत :

दान शेरबबर का बच्चा है जो बसन से
निकलकर छलाँग लगाता है।

23नफ़ताली की बरकत :

नफ़ताली रब की मंज़ूरी से सेर है, उसे उस की
पूरी बरकत हासिल है। वह गलील की झील और
उसके जुनूब का इलाक़ा मीरास में पाएगा।

24आशर की बरकत :

आशर बेटों में सबसे मुबारक है। वह अपने
भाइयों को पसंद हो। उसके पास ज़ैतून का इतना
तेल हो कि वह अपने पाँव उसमें डुबो सके।
25तेरे शहरों के दरवाज़ों के कुंडे लोहे और
पीतल के हों, तेरी ताक़त उम्र-भर क़ायम रहे।

26यसूरून[a] के ख़ुदा की मानिंद कोई नहीं है,
जो आसमान पर सवार होकर, हाँ अपने जलाल में
बादलों पर बैठकर तेरी मदद करने के लिए आता
है।
27अज़ली ख़ुदा तेरी पनाहगाह है, वह अपने
अज़ली बाज़ू तेरे नीचे फैलाए रखता है। वह दुश्मन
को तेरे सामने से भगाकर उसे हलाक करने को
कहता है।
28चुनाँचे इसराईल सलामती से ज़िंदगी
गुज़ारेगा, याक़ूब का चश्मा अलग और महफ़ूज़
रहेगा। उस की ज़मीन अनाज और अंगूर की
कसरत पैदा करेगी, और उसके ऊपर आसमान
ज़मीन पर ओस पड़ने देगा।
29ऐ इसराईल, तू कितना मुबारक है। कौन
तेरी मानिंद है, जिसे रब ने बचाया है। वह तेरी
मदद की ढाल और तेरी शान की तलवार है। तेरे
दुश्मन शिकस्त खाकर तेरी ख़ुशामद करेंगे, और
तू उनकी कमरें पाँवों तले कुचलेगा।”

मूसा की वफ़ात

34 यह बरकत देकर मूसा मोआब
का मैदानी इलाक़ा छोड़कर यरी-
हू के मुक़ाबिल नबू पहाड़ पर चढ़ गया। नबू
पिसगा के पहाड़ी सिलसिले की एक चोटी था।
वहाँ से रब ने उसे वह पूरा मुल्क दिखाया जो
वह इसराईल को देनेवाला था यानी जिलियाद के
इलाक़े से लेकर दान के इलाक़े तक, 2नफ़ताली
का पूरा इलाक़ा, इफ़राईम और मनस्सी का
इलाक़ा, यहूदाह का इलाक़ा बहीराए-रूम तक,
3जुनूब में दश्ते-नजब और खजूर के शहर यरीहू
की वादी से लेकर ज़ुग़र तक। 4रब ने उससे कहा,
“यह वह मुल्क है जिसका वादा मैंने क़सम खाकर
इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से किया। मैंने
उनसे कहा था कि उनकी औलाद को यह मुल्क
मिलेगा। तू उसमें दाख़िल नहीं होगा, लेकिन मैं
तुझे यहाँ ले आया हूँ ताकि तू उसे अपनी आँखों
से देख सके।”
5इसके बाद रब का ख़ादिम मूसा वहीं मोआब
के मुल्क में फ़ौत हुआ, बिलकुल उसी तरह जिस

[a]इसराईल।

तरह रब ने कहा था। 6रब ने उसे बैत-फ़ग़ूर की
किसी वादी में दफ़न किया, लेकिन आज तक
किसी को भी मालूम नहीं कि उस की क़ब्र कहाँ
है।

7अपनी वफ़ात के वक़्त मूसा 120 साल का
था। आख़िर तक न उस की आँखें धुँधलाईं, न
उस की ताक़त कम हुई। 8इसराईलियों ने मोआब
के मैदानी इलाक़े में 30 दिन तक उसका मातम
किया।

9फिर यशुअ बिन नून मूसा की जगह खड़ा
हुआ। वह हिकमत की रूह से मामूर था, क्योंकि
मूसा ने अपने हाथ उस पर रख दिए थे।
इसराईलियों ने उस की सुनी और वह कुछ किया
जो रब ने उन्हें मूसा की मारिफ़त बताया था।

10इसके बाद इसराईल में मूसा जैसा नबी कभी
न उठा जिससे रब रूबरू बात करता था। 11किसी
और नबी ने ऐसे इलाही निशान और मोजिज़े
नहीं किए जैसे मूसा ने फ़िरौन बादशाह, उसके
मुलाज़िमों और पूरे मुल्क के सामने किए जब
रब ने उसे मिसर भेजा। 12किसी और नबी ने
इस क़िस्म का बड़ा इख़्तियार न दिखाया, न ऐसे
अज़ीम और हैबतनाक काम किए जैसे मूसा ने
इसराईलियों के सामने किए।